CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

m; 5
२५३६
दिनेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक....२५३६
दिनांक.....

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

२५३६

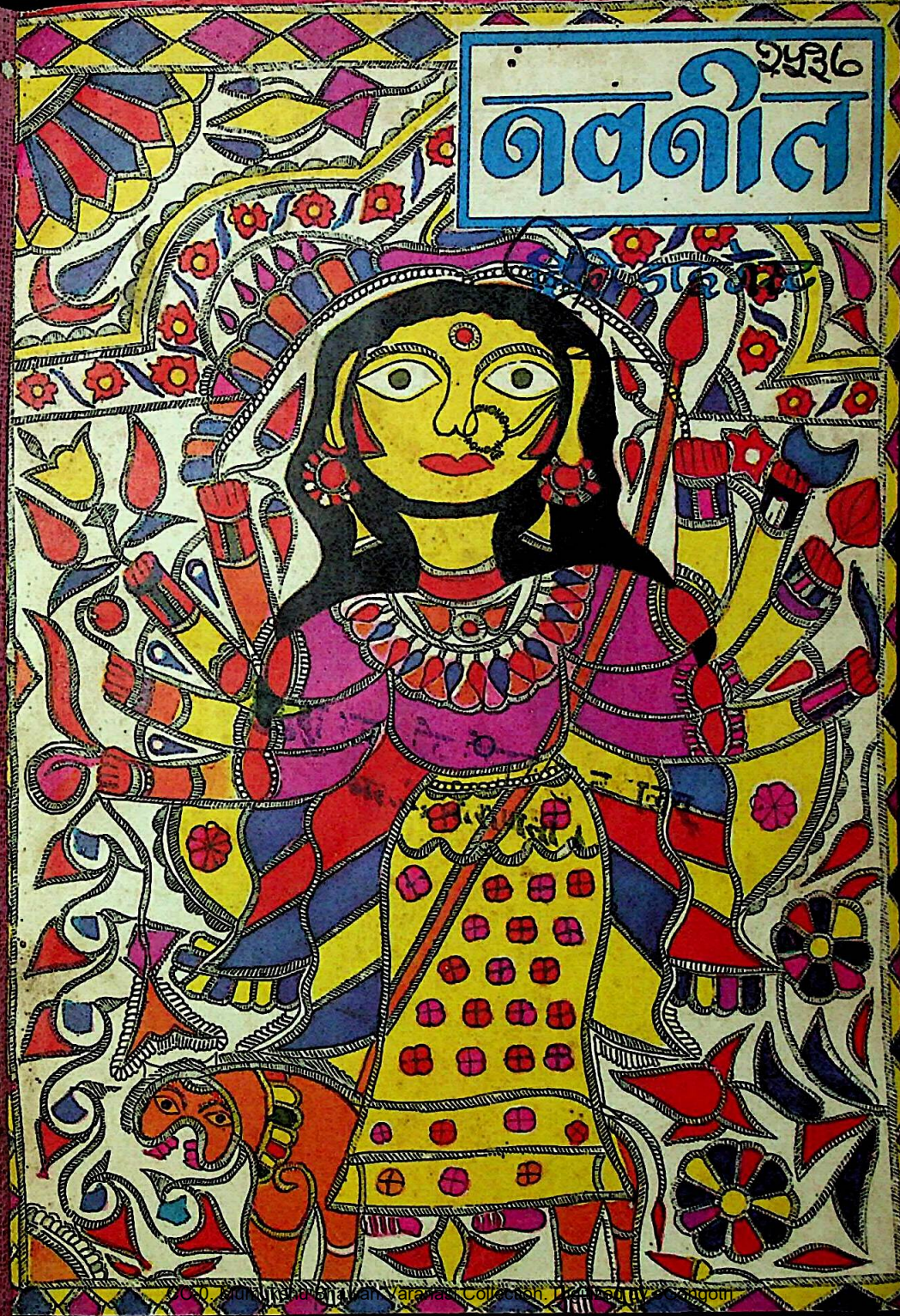

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नयी उमंग, नयी तरंग

सेन्चुरी के सूती कपड़ों के संग

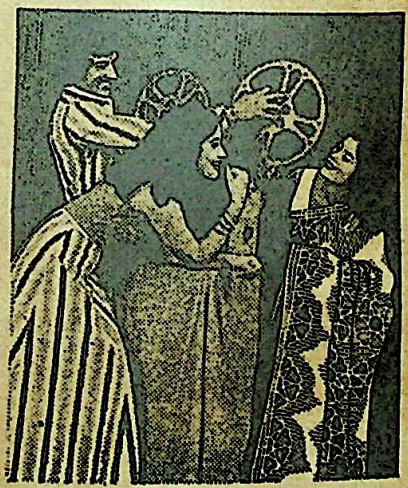

सेन्चुरी – 100% सूती कपड़ों के लिए।

दि सेन्चुरी स्पि. एण्ड मैन्यु.
कं. लि. बम्बई-४०० ०२५

Adroit-237-Hindi

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

आपकी तकलीफ क्या है ?

सरदर्द !

'ओवामिल' लीजिए।

'ओवामिल' जल्द ही वेदना हटाकर तुरंत आराम देती है।

'ओवामिल' की विश्वसनीय व शीघ्र वेदनाशामक गुणवत्ताके कारण डाक्टर हमेशा 'ओवामिल' की शिफारिस करते हैं।

'ओवामिल' सरदर्द, सर्दी-जुकाम, दांतका दर्द फ्लू और बदनका दर्द इनके लिए।

'ओवामिल' *अत्यंत प्रभावशाली वेदना शामक*

स्टॉमिक्स और जाई काजल के निर्माता:

वेस्टर्न इण्डिया केमिकल कम्पनी.

बम्बई-४०० ०६६.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

2936

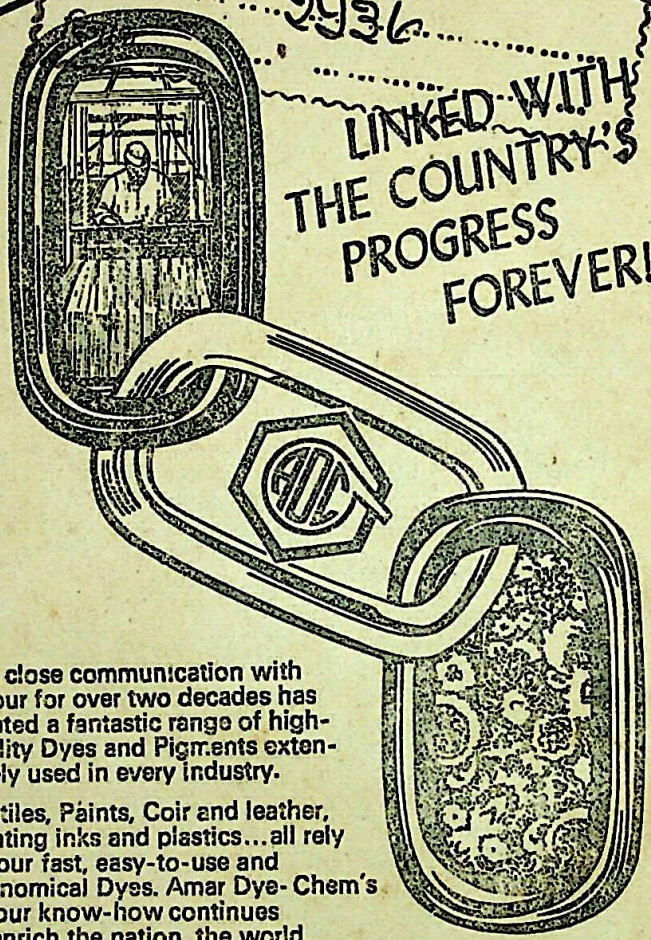

Our close communication with colour for over two decades has created a fantastic range of high-quality Dyes and Pigments extensively used in every industry.

Textiles, Paints, Coir and leather, Printing inks and plastics...all rely on our fast, easy-to-use and economical Dyes. Amar Dye-Chem's colour know-how continues to enrich the nation, the world.

MIRAT/ADC/203-A2

to enrich india's
– life with colour!

MEMBER

AMAR DYE-CHEM LTD.

RANG UDYAN MAHIM, BOMBAY-400 016

BRANCHES · AHMEDABAD · CALCUTTA · DELHI · AMRITSAR · JAIPUR · MADRAS · MADURAI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गल्फ़ से उपयुक्त भाव जोड़नेवाला
सुनहरा सिलसिला
सप्ताह में छब्बीस उड़ानें

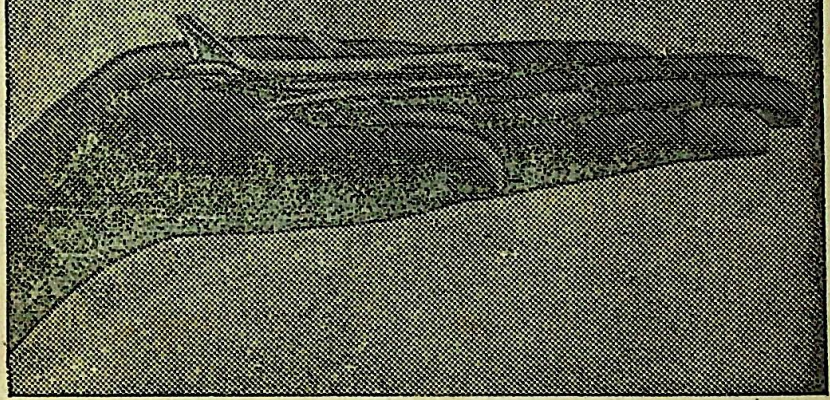

एयर-इंडिया से गल्फ़ के लिए उड़िए और अपने सपने साकार कीजिए. प्रति सप्ताह ४५०० से भी अधिक यात्रियों को हम पहुंचाते हैं ९ मंज़िलों पर: मस्कत, दुबाई, अबुधाबी, बहरैन, दौहा, बहरान, कुवैत, बग़दाद, ज़िद्दा. न भूलनेवाला मधुर अनुभव— यात्रियों का एक स्नेहसिक्त परिवार.

एयर-इंडिया

(AI-2271

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

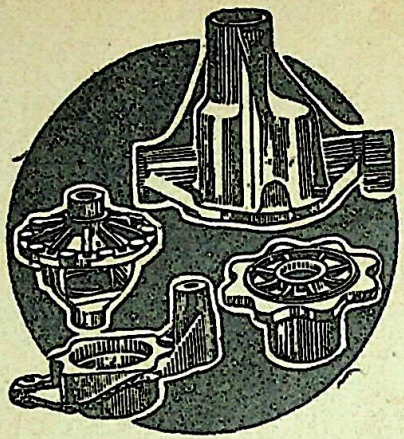

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाईनिंग कंपनी लिमिटेड

का आपको निमंत्रण है, आयात प्रतिस्थापन को सफल बनाइये

एस० जी० आइरन के कास्टिंग

कांसा, पीतल, गनमेटल या लौहेतर धातुओं तथा इस्पात के पुर्जों व हिस्सों का स्थान ले सकते हैं।

मैलिएबल आइरन के कास्टिंग

अनेक प्रकार की चीजों में इस्पात के कास्टिंग का काम दे सकते हैं।

एस.जी. आइरन और मैलिएबल आइरन के कास्टिंगों में उच्च भौतिक गुण होते हैं, वे खरीदने में सुगम, दृढ़ एवं तन्यतायुक्त होते हैं, उनमें घिसाव कम होता है।

संपर्क कीजिये :
फेरसफाउंड्री, पंचपाखाड़ी, पहला पोखरनलेन, थाना (महाराष्ट्र)
उच्च श्रेणी के फास्टिंग्स् व बचत के लिए डबल हैमर ब्रांड का आग्रह कीजिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके लिए सबूत

किसी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से सुपर रिन की चमकार ज़्यादा सफ़ेद

धोकर आज़माइए:
"धुलाई मिलाइए"

- दो एक जैसे मैले कपड़े लीजिए.
- एक को किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से धोइए.
- अब दूसरे कपड़े को सुपर रिन से धोइए.
- नतीजे मिलाइए.

अपनी आंखों देखिए. सचमुच सुपर रिन से आपके कपड़े किसी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से ज़्यादा सफ़ेद धुलते हैं. क्योंकि सुपर रिन में सबसे ज़्यादा सफ़ेदी के तत्व हैं.

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से अधिक सफ़ेदी की शक्ति से भरपूर

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'औरमो' छाप अमोनिया कागज़

(पैरा-डाइजो टाइप)

- चमकदार और सुन्दर छपाई
- बरतने और रखने में टिकाऊ
- जल्दी और अच्छे परिणाम
- कम खर्च और सस्ता

स्टैंडर्ड साइज के रोल और शीटस हर प्रकार की मीडियम फास्ट और सूपर फास्ट की स्पीड्स में मिलते हैं. रोशनी और नमी से बचाव के लिये पोलीथीन के ट्यूब और रैपरों में पैक किया हुआ होता है. यह देर तक खराब न होने वाला अच्छी क्वालिटी की छपाई के लिये गारन्टी किया हुआ है, क्योंकि औरमो का बेस पेपर भी ओरियंट पेपर मिल्स का बनाया हुआ है।

ओरियंट पेपर मिल्स लिमिटेड

ब्रजराज नगर, उडीसा

कपड़ों की उज्ज्व
धुलाई के लिये

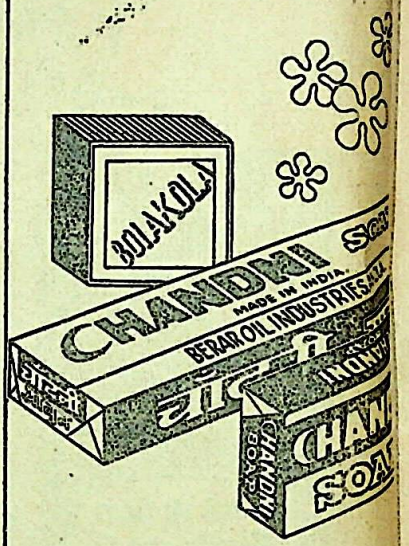

चाँदनी

साबुन

निर्माता -

बरार ऑयल इंडस्ट्रीज

अकोला (महाराष्ट्र)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल्द आराम पाने के लिए तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन लीजिए

तेज़ असर–एनासिन में वह दर्द-निवारक दवा ज़्यादा है, जिस की दुनिया-भर के डॉक्टर सिफ़ारिश करते हैं। इसी लिए एनासिन दर्द से जल्द आराम दिलाती है।

विश्वसनीय–एनासिन आपके डॉक्टर की दवाई की तरह दवाओं का नपा-तुला सम्मिश्रण है। इसी लिए एनासिन पर लाखों लोगों को पूरा भरोसा है।

एनासिन बदन के दर्द, दाँत के दर्द, सर्दी-जुकाम और फ़्लू की पीड़ा से भी जल्द आराम दिलाती है।

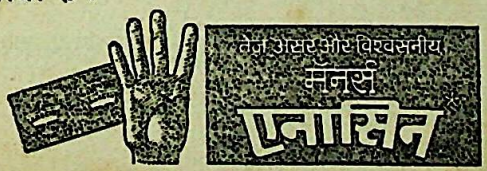

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा
जेफ़्री मॅनर्स के एनासिन विभाग की ओर से

*Regd. TM

A 22-111

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्रांगध्रा केमिकल वर्क्स लिमिटेड

'निर्मल,' तीसरी मंजिल, २४१ वैकवे रिक्लेमेशन
नरीमन पाइंट, बंबई ४०० ०२१

तार : SODACHEM

फोन : २९२४०७–२९३२९४
२९३२३५–२९३३३०

भारत में हैवी केमिकल्स के क्षेत्र में अग्रणी
अब अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी प्रस्तुत :

* अपग्रेडेड इलमनाइट *

(सिंथेटिक रूटाइल ९०-९२ TiO_2)

हमारे बनाये हुए रसायन :

* कास्टिक सोडा
* सोडा एश
* सोडियम बाइकार्बोनेट
* अमोनियम बाइकार्बोनेट
* केल्शियम क्लोराइड
* ट्राइक्लोरो एथिलीन
* लिक्विड क्लोरीन
* हाइड्रोक्लोरिक एसिड

* साल्ट *

लिंक चेन

जिसकी एक-एक कड़ी मजबूत, परखी हुई और
पूर्णतः विश्वसनीय है।

सभी उद्योगों व वाहनों में उपयुक्त

एलोय स्टील चेन एक विशेषता

इण्डियन लिंक चेन मैन्यु. लि., भाण्डुप, बंबई-४०००७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल ओडोमॉस ही दो तरह से आपकी निश्चित सुरक्षा करता है, मच्छरों को दूर भगाकर...

रातभर चैन की नींद सुलाता है!

ओडोमॉस जैसी सुरक्षा आपको अन्य किसी मच्छर-प्रतिरोधक से नहीं मिल सकती:

१

इसकी गंध मच्छरों को पास नहीं फटकने देती।

२

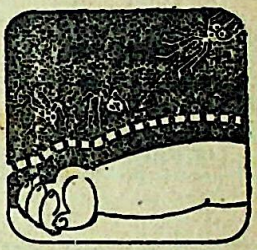

इसमें मिला अद्भुत तत्व रात भर आपकी त्वचा को एक आवरण देकर मच्छरों को दूर रखता है।

इसीलिए ओडोमॉस आज भारत में सर्वाधिक बिकने वाला मच्छर-प्रतिरोधक है।

मच्छरों के हमले से बचिये

ओडोमॉस

की सुरक्षा पाइये!

बलसारा
—सुखी जीवन के लिए आधुनिक साधन
BALBARA बलसारा ग्रुप ऑफ (इं.) लि.

CHAITRA-BLS-86 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुनिया भर की पसंद—
करोना खेल-कूद के जूते

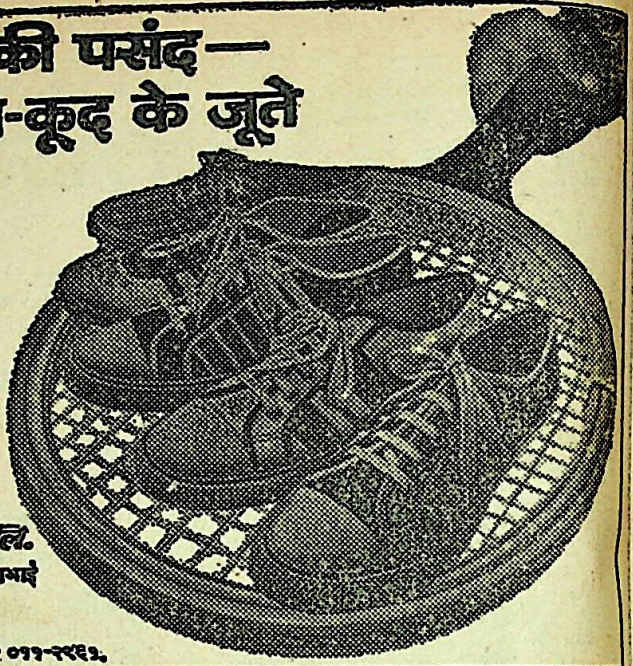

करोना साहू कं. लि.
रजिस्टर्ड ऑफिस: २२१, डॉ. दादाभाई
नौरोजी रोड, बम्बई ४०० ००१.
टेलिफोन: २६७८२१ (८ लाइन).
टेलिग्राम: करोनासाहू टेलेक्स: ०११-२५६३.

CHAITRA-CS-318

दि हिंदुस्तान शुगर मिल्स लिमिटेड

गोला गोकर्णनाथ, जिला-खीरी, (उत्तरप्रदेश)

शुभ्रश्वेत दानेदार शक्कर, रेक्टिफाइड और डिनेचर्ड स्पिरिट,
शुद्ध अल्कोहल और औद्योगिक उपयोग में आनेवाली अल्कोहल

के उत्पादक

रजिस्टर्ड कार्यालय :
५१ महात्मा गांधी मार्ग, फोर्ट,
बंबई-४०००२३
टेलीफोन : २५५७२१
टेलेक्स : ०११-२५६३
टेलिग्राम : श्री (SHREE)

उचित व्यापार संघटन के सदस्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरीरदर्द?
तो लीजिए
एक गिलास
पानी

और सिर्फ़ एक
सॉरिडॉन

RP.2159A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या पेट फूला होने से शरमाती हैं ?
डायटिंग कर-करके थक चुकी हैं ?
प्रसूति के बाद पेट फूला ही रहता है ?

इस जमाने में बहनों को अस्पतालों में प्रसूति करनी पड़ती है और देशी पद्धति के अनुसार वे सेंक नहीं ले पातीं। जिससे लगभग प्रसूति के बाद हर एक बहन का पेट शरीर के अनुपात से अधिक फूला हुआ दिखाई पड़ता है। युवा अवस्था में वे प्रौढ़ा-जैसी दिखने लगती हैं। कोमलता समाप्त हो जाती है। हाथ से कामकाज न करने के कारण अधिकांश सुखी परिवार की बहनों का पाचन अधूरा ही रहता है और गैस आदि की स्थायी तकलीफ बनी रहती है। शरीर वायु से फूला लगता है। 'कोमला' गोलियां इसका प्रभावशाली इलाज हैं। वर्षों पहले हुई प्रसूति के बाद भी यदि पेट फूला रहता हो तो भी 'कोमला' प्रभावकारक होती हैं। उसी प्रकार प्रत्येक प्रसूति के बाद 'कोमला' गोलियों का सेवन हर तरह से लाभकारी है और शरीर को एक जैसा रखता है।

धंधे के हिसाब से पुरुषों को सारे दिन गद्दे-तकिये में बैठा रहना पड़ता है। बैठे-बैठे ही कामकाज करते रहने से पाचन अधूरा ही रहता है। अजीर्ण और गैस स्थायी हो जाते हैं और शरीर के अनुपात में पेट आगे निकल आया लगता है। बेडौल दिखता है।

उपरोक्त स्त्री-पुरुषों, दोनों की तकलीफ के लिए गुजरात के सुप्रसिद्ध वैद्यराज श्री रसिकलाल के. सेठ के अनुभवी फार्मूले के आधार पर बनायी हुई 'कोमला' गोलियां अत्यंत विश्वसनीय और प्रभावकारी हैं। किसी भी प्रकार का साइड इफेक्ट अथवा रिएक्शन नहीं होता। भयमुक्त हैं। १२० गोलियों की डिब्बी का दाम १४ रुपये।

प्रत्येक औषध-विक्रेता के यहां उपलब्ध हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबसे शानदार पंखे उषा के हैं!

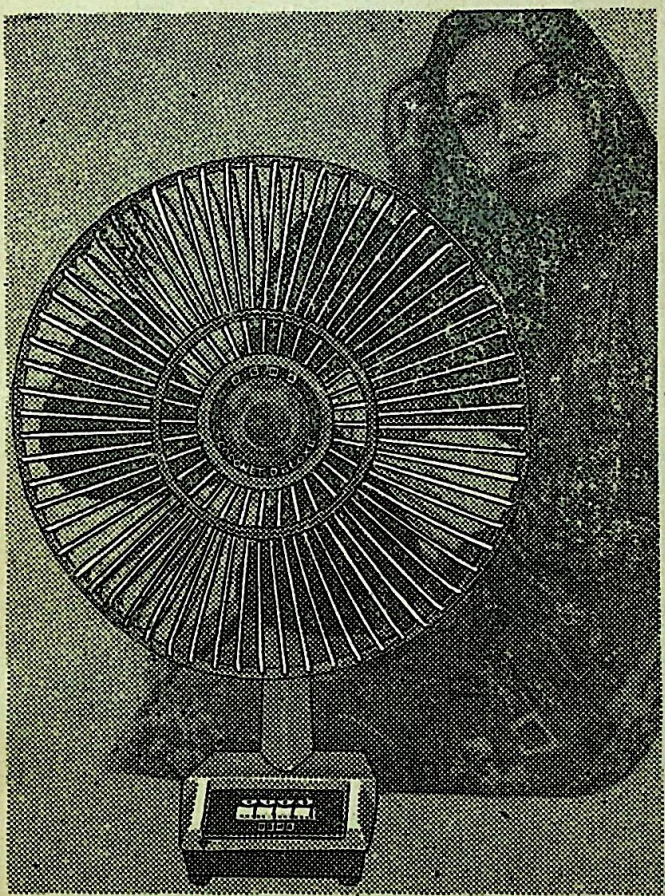

इसके प्रशंसक हैं!

उषा टेबलफ़ैन के नवीनतम डिज़ाइन : ठोक आकार वाले गार्ड्स; सही ढंग से बने ब्लेड, खूबसूरत पियानो-फिनिश के बटन और हर किनारे तक मनमोहक रंगों की एक जैसी चिकनी सतह।

उषा टेबलफ़ैन शानदार है; हर तरह की सजावट के अनुकूल और विविध आकर्षक रंगों में उपलब्ध। इतना होने पर भी आपके पास पहुंचने से पहले इनकी हर प्रकार से जांच कर ली जाती है।

उषा पंखे शानदार हैं बनावट में कार्य में रंग में।

उषा टेबल फ़ैन

JEW-348A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्वालियर के

क्षितिज पर नया सितारा...

MAPP-GRASIM-6 Hin

ग्रासीलीन से
बने कपड़े शीघ्र ही
सभी प्रमुख स्टोरों पर
उपलब्ध

Grasilene

सूटिंग्स/शर्टिंग्स
तथा अन्य कपड़े

वैज्ञानिक मिश्रित धागे ग्रासीलीन के बने।

Grasilene

कृत्रिम सामान्य विस्कोज
तथा अन्य प्राकृतिक रेशों से बना एक
आश्चर्यजनक उच्च कार्यकारिता वाला
मिश्रित धागा !

GR
GRASIM

दि ग्वालियर रेयन सिल्क मेन्युफ़ैक्चरिंग
(वीविंग) कम्पनी लिमिटेड
स्टेपल फ़ाइबर डिवीजन
बिरलाग्राम, नागदा (एम. पी.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

वर्ष २६ : अंक १०
अक्तूबर १९७७

संस्थापक
स्व. श्रीगोपाल नेवटिया
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

संपादक
नारायण दत्त
सहसंपादक
सुरेश सिन्हा
उपसंपादक
गिरिजाशंकर त्रिवेदी

व्यापार-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता
प्रबंधक
सोहनराज पारेख

इस अंक में

संपादक की डाक से
पत्र-वृष्टि १७
डा. जगदीश लथरा
सावधान, न्यूट्रान बम आ रहा है ! २१
हरिशंकर व्यास
समस्याओं से ग्रस्त इथियोपिया २३
र. द. श.
हरा कोना ३०
समुद्र ३३
क्लाइव लेविस
जीवन-तीर्थ ३४
नवनीत-परिवार
नमस्कार ३६
डा. सुरेशव्रत राय
रामकथा-मंदाकिनी ३७
केजिता
विज्ञान-बिंदु ४५
गुरबचन सिंह भुल्लर
आंखों की चमक (पंजाबी कहानी) ४८
वीरेंद्र मिश्र
गीत ५२
जयचंद्र विद्यालंकार
भारत का नवजागरण ५३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिवकुमार गोयल	आदर्श पत्रकार	.....	६०
डा. प्योत्र कापित्सा	वाक्यदीप	.....	६४
काका कालेलकर	पूर्ण गुरु	.....	६५
सुखबीर	एक बच्चा कई चेहरे (हिंदी कहानी)	.....	६६
डा. कुसुम भार्गव	वे केक क्यों नहीं खा लेते ?	.....	७१
नंदकिशोर मित्तल	आस्कर वाइल्ड : कलाचिंतन	.....	७५
पाब्लो नेरूदा	जलावतन (कविता)	.....	७८
प्यारेलाल श्रीमाल 'सरस पंडित'	ताल का जादू	.....	८०
डा. अरुणकुमार मिश्र	डी. एन. ए. से जातिवृत्त	.....	८४
इब्ने इंशा	पुरानी कहानियां : नयी तर्ज	.....	८८
विकास मिश्र	दर्द का विज्ञान	.....	९२
बलवीर सिंह	एक जीव : संपादक	.....	९४
कल्याणसुंदरम्, भंडारी, कौशिक	यादों के दायरे में	.....	९७
कुमार प्रशांत	राम, तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है	.....	१००
कुबेरनाथ राय	जीर्ण वस्त्र और पापहरा नदी	.....	१०४
रमेश मंत्री	चोरी का राष्ट्रीयकरण	.....	१०९
सत्य शुचि, प्रभु 'प्रहरी'	कविताएं	.....	११७
संतकुमार टंडन 'रसिक'	दरख्त बनाम मुकद्दमा (कविता)	.....	११९
रहबर	ग़ज़ल	.....	१२०
ग. प्र. प्रधान	लोकमान्य की विद्वत्ता	.....	१२१
डा. वि. श्री. वाकणकर	शैलचित्रों में सुप्त गाथाएं	.....	१२५
रामलखन सिंह	कोआला के देश में	.....	१४८
मित्र	कुछ इधर से, कुछ उधर से	.....	१५६
विशाख दत्त	दो क्षण हंस तो लें	.....	१५८

चित्र : हीथ, वसंत सर्वटे, ओके, शेणै, दत्त प्रसन्न राणे।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बंबई-४ में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

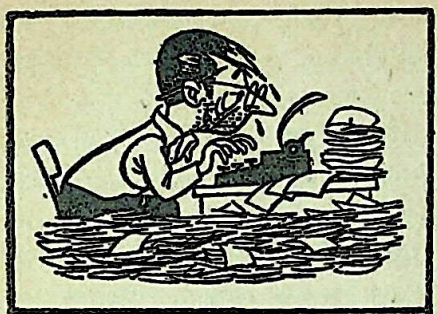

पत्र-वृष्टि

आचार्य विनोबाजी ने 'दानं संविभागः' का जो व्यापक और व्युत्पत्ति-मूलक अर्थ (सितंबर अंक) किया है, क्या वही श्रीमत् शंकराचार्य के मन में था? मुझे इसमें संदेह है। 'संविभाग' शब्द दान के अर्थ में संस्कृत में रूढ़ रहा है। 'वेणीसंहार' नाटक में युधिष्ठिर अपने कंचुकी से कहता है—'क्रियतामियं तपस्विनी चितासंविभागेन सह्यवेदना' (चितादान द्वारा इस बेचारी की वेदना को सह्य बनाओ)। यहां 'संविभाग' का अर्थ 'अपने में से काटकर देना' या 'समान भाग देना' संभव नहीं है।

आप्तवाक्यों के शब्दों का अर्थ-विस्तार करना और उनमें नये युगानुकूल अर्थ का आधान करना भारत में विचार-विकास का एक उपाय रहा है। किंतु क्या श्रीमत् शंकराचार्य ने वैसा आर्थिक-सामाजिक चिंतन किया था, जैसा विनोबाजी 'संविभाग' शब्द द्वारा ध्वनित कराते हैं? क्या समूचे शांकर विचार में ऐसे क्रांतिकारी समाजार्थिक चिंतन का कोई सुर है?

मेरी दृष्टि में तो यह भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का एक महाप्रश्न है कि अद्वैतवाद जैसा जबर्दस्त समत्ववादी विचार अध्यात्म की सीमा को लांघकर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक चिंतन को प्रभावित क्यों नहीं कर पाया! यूरोप के इतिहास में तो हम ऐसी विचार-जनित शृंखला-अभिक्रियाएं बार-बार देखते हैं। अनुश्रुति है कि स्वयं श्रीमत् शंकराचार्य को एक चांडाल ने स्पृश्यता-अस्पृश्यता के मामले में ताना दिया था और आचार्य ने 'गुरु' कहकर उस चांडाल की वंदना की और उस पर स्तोत्र रचा। किंतु वे बस वहीं क्यों रुक गये?

—नारायण दत्त, बंबई-३९

ooo

नक्सलपंथियों पर पिछले दिनों पुलिस ने जो अत्याचार किये (अगस्त अंक), उनका समर्थन कोई नहीं कर सकता। किंतु जब कोई पक्ष या पंथ हिंसा का अवलंबन करता है और उसे उचित सिद्ध करने पर उतर आता है, तब पुलिस की हिंसा को बल ही मिलता है। (आजादी के तुरंत बाद तेलंगाना के साम्यवादी कृषक-आंदोलन में भी यही हुआ था और यह स्मरणीय है कि तब सरदार पटेल देश के गृहमंत्री थे।) फिर नक्सलपंथियों ने लाल चीन और माओ के प्रति विशेष निष्ठा का प्रदर्शन करके आम भारतीयों की सहानुभूति भी खो दी थी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चंदे की दरें

(भारत में) एक वर्ष : २० रु., दो वर्ष : ३८ रु., तीन वर्ष : ५४ रु.। भारत में नवनीत का आजीवन सदस्यता-शुल्क ४०० रुपये है।

जिससे पुलिस को मनमानी करने की पूरी छूट मिल गयी।

—चारुदेव, वाराणसी, उ. प्र.

०००

स्वातंत्र्योत्तर भारत में पुलिस-अत्याचारों की कहानी वस्तुतः पुलिस तंत्र के लगातार निरंकुश और अमर्यादित होते जाने की कहानी है, जिसका चरम रूप प्रकट हुआ जेलों में नक्सलपंथियों और आपात-बंदियों पर ढाये गये जुल्मों में। बंदियों अथवा कैदियों पर इस बर्बरता का रोंगटे खड़े कर देने वाला वर्णन मेरी टाईलर ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'भारतीय जेलों में पांच साल' में विस्तार से किया है।

हमारी जेलें एक अलग राज्य-क्षेत्र हैं—एक अलग हिंदुस्तान। उसमें चलता है सिर्फ जंगल का कानून, डंडे का शासन—बात-बात पर लात तथा गाली, कैदियों की भीषण यंत्रणाएं, महिला कैदियों के साथ बलात्कार, किशोर कैदियों का जबरन अप्राकृतिक यौन उपयोग। और यदि कोई कैदी 'भयानक' हुआ तो उसे 'साफ' कर देना भी कोई मुश्किल काम नहीं, जिसकी कहानी नवनीत के अगस्त अंक में बड़े स्पष्ट रूप से पढ़ने को मिली। न जाने देश-भर में कितने और मल्लिकार्जुन राव तथा सत्यानंदम् पुलिस-मुठभेड़ के नाम पर साफ कर दिये गये।

—संतकुमार, जमशेदपुर

०००

श्री हरिदत्त वेदालंकार के लेख 'सत्तालिप्सा + कूटनीति + कामुकता — दिल्ली' (अगस्त-अंक) में साहित्यिक चारुता के साथ कश्मीर के इतिहास, भूगोल, राजनैतिक दांव-पेच, रानी की स्वेच्छाचारिता आदि ऐसे अनेक रूपों का सुंदर सामंजस्य हुआ है। कविराज कल्हण की राजतरंगिणी के तुलनात्मक घटना चक्रों का सोदाहरण वर्णन मनोरम है। बधाई।

—विश्वनाथ शास्त्री,
बैकुंठपुर, सुरगुजा, म.प्र.

०००

संदर्भ : अगस्त-अंक में श्री वचनेश त्रिपाठी का लेख 'प्रमाणपत्र दीजिये'। हर घटना के दो पहलू होते हैं। संभव है, पटना का कमिश्नर श्री दत्त को वास्तव में ही न पहचानता हो; अथवा वह कोई पुराना आई. सी. एस. हो, जो हर काम को निर्धारित विधि के अनुसार ही करना चाहता हो। दोनों ही परिस्थितियों में उसका प्रमाणपत्र मांगना क्षम्य है। स्वतंत्रता के आरंभिक काल में कोई भी भारतीय अफसर किसी स्वतंत्रता सेनानी को जान-बूझकर अपमानित करना न चाहता। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि अभी हाल में अनेक तथाकथित देशभक्तों के झूठे प्रमाणपत्रों पर आधारित पेंशन तथा ताम्रपत्र रद्द करने पड़े हैं। अतः पटना के कमिश्नर की सज-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गता सराहनीय मानी जानी चाहिये।

उचित यही था कि एक स्वानुशासित स्वतंत्रता सेनानी के नाते श्री दत्त अपना आवेदन-पत्र नियमानुसार भरकर देते। उनका भावावेश भी स्वाभाविक था; क्योंकि वे अपनी ख्याति के आधार पर साधारण नियमों का उल्लंघन करने गये और असफल रहे और इससे उनके आत्म-सम्मान को धक्का लगा—इस मानसिक दुर्बलता से बहुत कम लोग उबर पाते हैं।

असल में अतिविशिष्ट व्यक्तियों के अपने को सर्वसाधारण पर लागू होने वाले नियमों के दायरे से परे समझने के ही कारण देश वर्तमान स्थिति को पहुंचा है।

—श्यामलाल शर्मा, आगरा

[२]

सन ठीक तरह याद नहीं; परंतु आजादी के कुछ वर्ष बाद की बात है। बटुकेश्वरजी बिहार (शायद पटना) में रह रहे थे। वे हमारे घर भी आये। तब उन्होंने लोक-सभा सचिवालय द्वारा प्रकाशित एक अंग्रेजी पुस्तिका दिखायी। नाम था 'द बाम्ब इंसिडेन्ट'। स्वतंत्र भारत के उस सरकारी प्रकाशन में पुरानी सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में बैठे बहरे शासकों को बम के धड़ाके के माध्यम से भारतवासियों की आकांक्षाओं से परिचित कराने वाले देशभक्त भगतसिंह, बटुकेश्वर दत्त तथा उनके साथियों को पथभ्रष्ट आदि कहा गया था। बाद में शायद बटुकेश्वर दत्त को बिहार विधान परिषद् का सदस्य नामजद किया गया था।

श्री दत्त की मृत्यु के कुछ समय बाद जब एक बार मैंने उनका पूरा नाम—बटुकेश्वर दत्त—देश के एक प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री तथा इतिहास के आचार्य के सामने किसी सिलसिले में लिया तो वे मुंह बाये मेरी ओर देखते रहे। वे बी. के. दत्त के नाम से तो परिचित थे, परंतु 'बटुकेश्वर दत्त' से नहीं।

—कस्तूरचंद जैन, दिल्ली-७

[३]

अभी कुछ दिन पूर्व मुझे एक पुस्तक 'क्रांतिकारी भगवतीभाई' पढ़ते देख एक बालक ने कहा—'यह सब गप है। मैंने तो किसी भगवतीभाई का नाम आज तक सुना ही नहीं।' यदि हमारे बच्चों ने भगवतीचरण वोरा जैसों के नाम सुने नहीं, तो इसमें बच्चों का क्या दोष! जब आजादी के तुरंत बाद ही क्रांतिकारियों के नाम

लेखकों से

कृपया रचना भेजते समय उसके साथ पर्याप्त टिकट लगा लिफाफा अवश्य भेजा करें। अन्यथा रचना को न तो वापस किया जायेगा, न उसके विषय में पत्र-व्यवहार किया जायेगा। कृपया यह आशा भी न करें कि रचना हमारे यहां रखी रहेगी और बाद में डाक-टिकट भेजकर मंगवायी जा सकेगी। —संपादक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

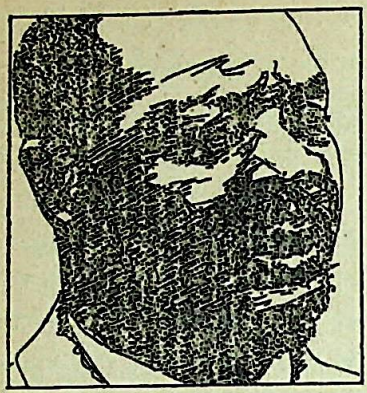

केंद्रीय अफ्रीकी साम्राज्य के 'सम्राट' बोकासा, जो क्रूरता और अमानवीय व्यवहार में युगांडा के अमीन से किसी तरह कम नहीं। बोकासा का जिक्र जून और सितंबर के अंकों में हो चुका है।

भुला दिये गये, तो आज की पीढ़ी की जबानों पर उनके नाम आयंगे ही कहां से !

—शुकदेवप्रसाद, इलाहाबाद—२

०००

अगस्त अंक में विज्ञान-बिंदु न पाकर दुःख हुआ। मेरे जैसे अल्पज्ञ को इस स्तंभ के माध्यम से कम से कम तकनीकी शब्दों में अधिक से अधिक वैज्ञानिक विकास की इस जानकारी मिलती है। स्तंभ की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

उसी अंक में भगतसिंह के ग्रंथों की कुमार प्रशांत कृत समीक्षा पढ़ी। यह बात थोड़ी अप्रासंगिक लगी कि भगतसिंह के बारे में कहते-कहते समीक्षक महोदय गांधी की चर्चा करने लगे। इसी तरह भगतसिंह के मार्क्सवादी होने के विषय में टिप्पणी करते हुए वे कहते हैं कि वे 'परंपरागत अर्थों में मार्क्सवादी' नहीं थे और 'यदि इतनी छोटी वय में शहीद न होते तो संभव था इतिहास एक और जयप्रकाश नारायण देखता। भगतसिंह का गहरा संवेदनशील मन उन्हें मार्क्सवाद की गलियों से घुमाकर गांधी तक पहुंचा सकता था।' इन पंक्तियों में 'परंपरागत मार्क्सवाद' का अर्थ क्या है, यह समीक्षक ने स्पष्ट नहीं किया है। इसके अलावा, इतिहास 'यदि और लेकिन' पर नहीं चलता। और यदि समीक्षक के 'यदि' को सही मान भी लिया जाये, तो भगतसिंह के अभिन्न सखा और सहयोगी यशपालजी का जीवन क्या दिखाता है? उनकी न केवल मार्क्सवाद से आस्था नहीं डिगी, बल्कि उन्होंने, 'गांधीवाद की शव-परीक्षा' भी की। भगतसिंह के अन्य सहयोगी का. शिव वर्मा उत्तर प्रदेश के प्रमुख मार्क्सवादी नेता हैं। भगतसिंह और उनके साथियों के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण दुराग्रहपूर्ण था। इसका कुछ परिचय नवंबर १९७० के नवनीत में छपे श्री मन्मथनाथ गुप्त के लेख से भी मिलता है।

—आनंद परुष, इलाहाबाद-२११००३

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता: नवनीत हिंदी डाइजेस्ट, ३४१, ताडदेव, बंबई-४०००३४
फोन : ३७२८४७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, आशीष बिल्डिंग, ३३५, बेलासिस रोड, ताडदेव, बंबई-४०००३४ फोन : ३९२८८७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सावधान, न्यूट्रान बम आ रहा है!

डा. जगदीश लूथरा

न्यूट्रान बम की चर्चा अब तक केवल वैज्ञानिक पत्रिकाओं में होती थी। मगर अब वह एक तथ्य बन चुका है और उसकी चर्चा दैनिक पत्रों में भी होने लगी है। अमरीकी राष्ट्रपति ने अभी इसके बाकायदा निर्माण की स्वीकृति नहीं दी है; हालांकि अमरीकी वैज्ञानिकों ने इसका भूमिगत परीक्षण कर लिया है।

न्यूट्रान बम की विशेषता यह है कि यह मकान आदि स्थावर संपत्ति के विध्वंस के बजाय आदमियों के संहार के लिए उपयोग किया जा सकता है। असल में यह न्यूक्लीय बमों की शृंखला में नवीनतम अस्त्र है। इसे न्यूट्रान-बम कहने का कारण यह है कि इसमें से तीव्र न्यूट्रान-पुंज निकलता है और यह न्यूट्रान-पुंज १ वर्गमील के क्षेत्र में तमाम मनुष्यों और पशु-पक्षियों को मौत का निवाला बना देता है, मगर इमारतों, पुलों आदि को कोई क्षति नहीं पहुंचाता।

क्या है यह न्यूट्रान बम ?

न्यूट्रान बम संलयन-बम है और हाइड्रोजन बम का गुटका-संस्करण (पाकेट एडिशन) है। इसे इस तरह बनाया गया होता है कि विस्फोट के दौरान इसमें से काफी मात्रा में न्यूट्रान निकलें। यह भी जरूरी है कि इसके निर्माण में न्यूट्रान-अवशोषकों का उपयोग न किया जाये।

वस्तुतः इसका बुनियादी डिजाइन १९५८ में ही तैयार हो गया था। परंतु इस पर जोर-शोर से काम शुरू हुआ १९७२ से; क्योंकि तब अमरीका ने यह महसूस किया कि रूस ने ऐसे टैंक बना लिये हैं, जो न्यूक्लीय बमबारी भी सफलतापूर्वक कर सकते हैं। (रूस के पास अमरीका के मुकाबले में तिगुने टैंक हैं।) न्यूट्रान-बम से निकले न्यूट्रानों से टैंक में बैठे सैनिकों की भी मृत्यु हो जायेगी।

न्यूट्रान-बम के डिजाइन के बारे में ज्यादा मालूम नहीं है। अमरीका अपनी सरकारी घोषणाओं में इसके लिए 'एन्हैन्स्ड रेडियेशन वारहेड' (विकिरण-स्फोटक शीर्ष) शब्द इस्तेमाल करता है और इसे परंपरागत गोला-बारूद का दर्जा देता है। अमरीका इस बात के लिए प्रयत्नशील है कि यह एक सामरिक अस्त्र (टैक्टिकल वैपन) का रूप ले ले और ८ इंची तोप से दागा जा सके। कहा जाता है कि ऐसा एक बम ६५ करोड़ रुपये का होगा। यानी तोप के एक गोले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की कीमत ६५ करोड़ रुपये।

जरा इसकी संहार शक्ति के बारें में जानें। भूमि के ऊपर ३०० फुट की ऊंचाई पर इसका विस्फोट करने पर ३००-४०० फुट के क्षेत्र में धमाका-तरंगों और गरमी से अपार क्षति होगी। एक मील के क्षेत्र में बंकरों और टैंकों में बैठे सैनिकों की भी मृत्यु हो जायेगी। परंतु टैंकों और इमारतों इत्यादि को कोई नुक्सान नहीं पहुंचेगा। ऐसा दावा किया जाता है कि मृत्यु तत्काल हो जायेगी, बल्कि विस्फोट की आवाज कान में पड़ने से भी पहले ही; क्योंकि न्यूट्रानों की गति ध्वनि की गति से तेज है। परंतु ऐसा नहीं है, विस्फोट के बाद तीन से पांच मिनट के अंदर आदमी अक्षम हो जायेगा और कुछ भी कर सकने की हालत में न रहेगा। हो सकता है कि आधे घंटे बाद उसे होश भी आ जाये और उसकी मृत्यु हफ्ते-भर बाद या साल-भर बाद हो। हां, ज्यादातर लोग तुरंत मर जायेंगे।

२०० लाख टी. एन. टी. क्षमता के हाइ-ड्रोजन बम से जो क्षति होती है वह इस प्रकार है—एक किलोमीटर के दायरे में जन-संहार और १० किलो मीटर के दायरे में धमाके से आदमियों और सामग्री का विध्वंस और आगजनी इत्यादि। जहां हाइड्रो-जन-बम में मुख्यतः धमाका ही संहारक है, न्यूट्रान-बम में न्यूट्रान ही संहार करते हैं, जो कि टैंक को भी भेदकर निकल सकते हैं।

न्यूट्रान-बम के पक्षधरों की दलील है कि १. इसमें और साधारण गोलाबारी में कोई विशेष अंतर नहीं है, २. मुख्यतः इसका उपयोग सैनिकों के विरुद्ध ही किया जायेगा, और ३. यह नापाम-बम से ज्यादा मान-वीय है, क्योंकि इसमें मृत्यु उतनी कष्टप्रद नहीं होगी।

इसके विरोधियों का कहना है कि १. इसके प्रयोग से बड़ी लड़ाई छिड़ सकती है, जिसमें परमाणु अस्त्रों का प्रयोग हो और २. इसमें मृत्यु से बचे लोगों की हालत बहुत खराब हो सकती है—शायद उन्हें जिंदगी-भर इसका परिणाम भुगतना पड़े।

देखें, क्या यह भी कई अन्य शस्त्रों की तरह गोदामों की शोभा बढ़ाता है या इसका कभी उपयोग भी होता है। न हो, इसी में मानव-समाज का हित है।

राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रुजवेल्ट का शासनकाल। भव्य पार्टी में श्रीमती एलीनर रूज-वेल्ट भी उपस्थित थीं। एक वृद्ध उठकर उनके पास आया और बोला—'मेरी पत्नी आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक है। इजाजत दें तो मैं उसे बुला लाऊं।'

श्रीमती रुजवेल्ट ने पूछा—'उनकी उम्र क्या है?' वृद्ध ने अत्यंत नम्रता से उत्तर दिया—'बयासी वर्ष।'

'ओह!' श्रीमती रूजवेल्ट स्वयं उठती हुई बोलीं—'वे तो मुझसे बारह वर्ष बड़ी हैं। वे क्यों मेरे पास आयें? मैं ही उनके पास चली चलती हूं।' —ऋषिमोहन श्रीवास्तव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्याओं से ग्रस्त इथियोपिया

हरिशंकर व्यास

अफ्रीकी एकता की मजबूत कड़ी तथा परस्पर-विरोधी विचारधाराओं के बीच सेतु के रूप में स्मरण किये जाने वाले और स्वयं एक युग, एक संस्था माने जाने वाले सम्राट हैले सिलासी को जब १२ सितंबर १९७४ को सेना ने सत्ताच्युत करके इथियोपिया में सैनिक शासन-तंत्र स्थापित किया, तो इथियोपियाई जनता ने सड़कों पर 'हैले सिलासी को फांसी दो' और 'हैले सिलासी लेबा-लेबा' (हैले सिलासी चोर है) जैसे नारों के साथ उसका स्वागत किया था। जनता को विश्वास था कि नयी सरकार देश को अकाल, महामारी, भ्रष्टाचार तथा सामंती व्यवस्था से मुक्त कराकर और विभिन्न पृथक्तावादी आंदोलनों का शांतिपूर्ण हल निकालकर इथियोपिया को नया क्रांतिकारी नेतृत्व प्रदान करेगी।

मगर अड़तीस महीनों के सैनिक शासन ने उन तमाम आशाओं पर पानी फेर दिया है और आज इथियोपिया न केवल विकट आर्थिक संकट एवं सत्ता-संघर्ष के दौर से गुजर रहा है, वरन् गृह-युद्ध की कगार पर खड़ा है।

प्रारंभ में इस क्रांति के संचालकों ने इसे शांतिपूर्ण और रक्त-विहीन क्रांति कहा था। लेकिन आज स्थिति यह है कि इथियोपिया युगांडा और कंबोडिया से कहीं ज्यादा रक्त-रंजित है। वहां हर महीने सैकड़ों की संख्या में नागरिकों को मौत के घाट उतारा जाता है। इस वर्ष अप्रैल के अंतिम सप्ताह में सेना ने लगभग ५०० छात्रों को गोली से उड़ा दिया। सरकारी समाचार-पत्र प्रायः प्रतिदिन 'प्रतिक्रियावादी', 'गैरकानूनी' तथा 'समाज-विरोधी' तत्त्वों के खातमे की सूचना देते रहते हैं। सिदामो प्रांत में इस वर्ष अब तक ३५० 'अवांछित व्यक्तियों' को मारा जा चुका है। पिछले तीन महीनों में असानी में २०० और शौआ में ७० 'क्रांति-विरोधियों' को गोली से उड़ा दिया गया।

इस साल अब तक इथियोपिया में चार हजार से भी ज्यादा राजनैतिक हत्याएं हुई हैं। (इरीट्रिया में हो रहा रक्तपात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसमें शामिल नहीं है।) एम्नेस्टी इंटर-नेशनल के अनुसार, इस समय वहां राज-नैतिक कैदियों की संख्या ८,००० है। वास्त-विक संख्या इससे बहुत अधिक होगी; क्योंकि प्रत्येक गांव और 'कृषक गुट' ने अपने पृथक् कैदखाने बना रखे हैं। २ अप्रैल को आदिश-अबाबा में सात आदमियों को सेना के गोलीमार-दस्ते ने खुले आम गोली से उड़ा दिया।

अस्थायी सैनिक प्रशासकीय परिषद् (जिसे दर्ग कहा जाता है) की आज्ञा पर आदिश-अबाबा में 'हत्यारों और क्रांति-विरोधी तत्त्वों' के उन्मूलन के लिए इस वर्ष व्यापक रूप से दो अभियान चलाये जा चुके हैं। सुरक्षा-टोलियां स्कूलों, कारखानों और विभिन्न मोहल्लों का दौरा करके 'शत्रुओं' को खोज निकालती हैं और उन्हें मौत के घाट उतारने वाले विशेष दस्तों के सुपुर्द करती रहती हैं।

देश के विभिन्न भागों में चल रहे छापा-मार आंदोलनों के कारण रक्तपात बहुत ज्यादा बढ़ गया है। सैनिक सरकार के विरुद्ध सबसे जोरों से सशस्त्र संघर्ष हो रहा है इरीट्रीया में। उत्तर में लाल सागर के किनारे स्थित मुस्लिम-बहुल इरीट्रिया प्रांत पिछली एक सदी से ईसाई-बहुल इथियोपिया से स्वतंत्र होने के लिए संघर्ष कर रहा है। १८९० से १९४१ तक पचास साल यह इटली के शासन में रहा। फिर ग्यारह साल ब्रिटेन ने इसका शासन संभाला। तत्पश्चात् १९५२ में राष्ट्रसंघ के एक आयोग की रिपोर्ट के आधार पर इसे इथियोपिया का संघीय घटक बनाया गया। इस व्यवस्था में इसे आंतरिक मामलों में पूर्ण स्वायत्तता दी गयी, जबकि विदेश एवं अंतरराज्यीय व्यापार, सुरक्षा और वित्त का दायित्व केंद्रीय सरकार के पास रहा।

मगर १९६२ में सम्राट् हैले सिलासी ने इरीट्रिया को पूर्ण रूप से इथियोपिया में मिला दिया। इसके विरोध में राष्ट्रवादी इरीट्रियायियों ने जो छापामार संघर्ष केंद्रीय सरकार के विरुद्ध प्रारंभ किया, वह पंद्रह वर्षों से लगातार चल रहा है।

इरीट्रिया के मुक्ति-मोर्चे (ई.एल.एफ.) और असंतुष्ट सेना के तालमेल से उत्पन्न स्थिति तथा १९७०-७३ के सूखे से ही सम्राट् हैले सिलासी को गद्दी से हाथ धोना पड़ा। लेकिन सैनिक सरकार भी अभी तक इरीट्रिया-समस्या को सुलझा नहीं पायी है। ५,००० वर्गमील वाले इस प्रांत का ८५ प्रतिशत इलाका और उसकी ३४ लाख की आबादी में से तीन लाख आदमी आज छापामारों के सीधे नियंत्रण में हैं। ई. एल. एफ. ने सूडान की सीमा पर स्थित टेसेनाई पर कब्जा कर लिया है, जिससे इसी वर्ष इथियोपिया को लगभग १ करोड़ ६० लाख डालर की फसल से हाथ धोना पड़ा है। उधर एक अन्य पृथक्तावादी संघ-टन ई. पी. एल. एफ. ने नाफ्का जिला-मुख्यालय पर कब्जा जमा रखा है। प्रांतीय राजधानी असमारा में भी रात को छापा-मार बड़ी संख्या में खुले घूमते रहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इरीट्रिया में सरकार के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष तीन अलग गुट चला रहे हैं। इनमें प्रमुख है अहमद नासार का इरीट्रिया मुक्ति मोर्चा (ई. एल. एफ.)। इसकी स्थापना १९६२ में इरीट्रिया के मुस्लिम राजनीतिज्ञों ने काहिरा में की। यह मुस्लिम बहुल है और इसे सीरिया, सऊदी अरब तथा अन्य अरब देशों का समर्थन प्राप्त है। इसमें लगभग २३ हजार छापामार हैं।

मार्क्सवादी कहलाने वाला इरीट्रिया जनता मुक्ति-मोर्चा (ई. पी. एल. एफ.) मूलतः इ. एल. एफ. से छिटका हुआ ईसाई गुट था; मगर अब उसके १७ हजार गेरिल्लों में आधे से ज्यादा मुसलमान हैं। यह नागरिकों में ई. एल. एफ. से ज्यादा सक्रिय है। इसके नेता हैं रामादन मोहम्मद नूर। इसी मोर्चे से निकले हुए एक और संघटन इरीट्रिया मुक्ति-मोर्चा लोकप्रिय मुक्ति शक्ति (ई. एल. एफ.—पी. एल. एफ.) को इराक से सहायता मिल रही है। ओस्मान सालिब के नेतृत्व में इसमें ५,०० छापामार हैं। इस मोर्चे की युद्ध शक्ति तो कम है, लेकिन प्रचार बहुत ज्यादा है।

छापामार-आंदोलन इरीट्रिया प्रांत के अलावा अमहारा, ओगादेन और टिगर प्रांतों में भी चल रहा है। जो पांच दल ये सशस्त्र संघर्ष चला रहे हैं, उनमें प्रमुख है इथियोपियन डेमोक्रैटिक यूनियन। इस मार्क्सवाद-विरोधी संघटन की स्थापना १९७५ में हुई थी। सैनिक सरकार से त्रस्त व्यावसायिक व्यक्ति तथा सैनिक इसमें आ मिले हैं। गोन्डार, टिगर तथा गोज्जाम प्रांतों में इसका अच्छा प्रभाव है। सूडान से इसे समर्थन तथा मिस्र और सऊदी अरब से सहानुभूति मिल रही है। इसमें १० हजार छापामार हैं। जनरल इमासू मेन्गेसा इसके नेता हैं।

दक्षिण-पूर्वी सीमाक्षेत्र व वाले प्रांत में एक और पृथक्तावादी संघटन पश्चिमी सोमाली मुक्ति मोर्चे का जोर है और उस क्षेत्र के अधिकांश भाग पर उसका नियंत्रण है। ओगादेन तथा अन्य सोमाली-बहुल क्षेत्रों को इथियोपिया से मुक्त करके सोमालिया में मिलाना इसका उद्देश्य है; लिहाजा सोमालिया इसे सभी तरह की सहायता दे रहा है।

टिगर प्रांत के निर्धन कृषकों पर टिगर जनता मुक्ति मोर्चे का अच्छा-खासा प्रभाव है। इस मार्क्सवादी संघटन का ई. पी. एल. एफ. से संबंध है। पिछले वर्ष ब्रिटेन के टेलर-परिवार तथा एक पत्रकार का अपहरण करने से यह संघटन अखबारों में काफी चर्चित रहा। दक्षिणी इरीट्रिया तथा बोलो प्रांत के पूर्वी क्षेत्र में अफार मुक्ति-मोर्चे का जोर है। यह छापामारों के बजाय राजनैतिक आंदोलनकारियों का गुट है। इसका संचालन भूतपूर्व अफार सुलतान अली मिराहा सऊदी अरब से और उसका पुत्र इनाफेर सोमालिया से कर रहे हैं।

राजधानी आदिश-अबाबा तथा देश के अन्य प्रमुख नगरों में इथियोपियन पीपल्स रेवोल्यूशनरी पार्टी ने सैनिक सरकार के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

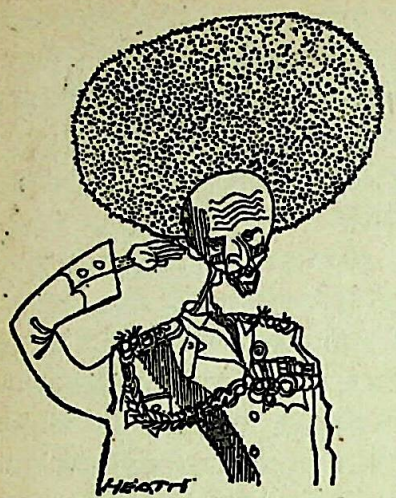

हैले सिलासी
['संडे टाइम्स' में हीथ का कैरिकेचर]

विरुद्ध जोरदार सशस्त्र संघर्ष चला रखा है। इसकी स्थापना हैले सिलासी की नीतियों के विरोध में लड़ाकू छात्रों और मजदूर नेताओं ने की थी।

दर्ग को इथियोपियाई सेना का पूर्ण समर्थन प्राप्त है, और यह सेना अफ्रीका में आधुनिक शस्त्रों से सुसज्जित सबसे विशाल सेना है। दर्ग की राजनैतिक शाखा आल इथियोपियन मूवमेंट एक ढंग से नागरिकों का 'पोलितब्यूरो' है, जिसमें यूरोप में शिक्षित मार्क्सवादी तथा भूतपूर्व शासक-वर्ग के नेताओं का दबदबा है।

छापामारों तथा विरोधियों को दबाने के लिए नियमित सेना के उपयोग के अलावा, पैंतालीस दिन का प्रशिक्षण देकर दो लाख किसानों की एक सेना भी बनायी गयी है। हाल में चेकोस्लोवाकिया, पूर्व जर्मनी तथा युगोस्लाविया से ए. के. ४७ नामक ४५ हजार राइफलें तथा अन्य छोटे हथियार विशेष रूप से खरीदे गये हैं। लीबिया के राष्ट्रपति कर्नल गदाफी ने ३१ रूस-निर्मित टी-३४ टैंक, सशस्त्र सैनिकों को ढोने वाले ४० वाहन और एंटीएअरक्राफ्ट बंदूकें दर्ग को प्रदान की हैं। इधर क्यूबा से लगभग २०० सैनिक सलाहकार भी आदिश-अबाबा पहुंच गये हैं। मगर इतनी सब सैन्य-क्षमता के बावजूद सैनिक सरकार को छापामारों को दबाने में सफलता नहीं मिल पा रही है। इरीट्रिया के केवल १५ प्रतिशत इलाके पर सेना का कब्जा है—शेष हिस्सा विद्रोहियों के हाथ में है।

इथियोपिया की वर्तमान स्थिति से अफ्रीका में महाशक्तियों के प्रभाव में भी काफी उतार-चढ़ाव आया है। एक समय था जब यह देश अमरीका का अभिन्न मित्र था। इसी कारण तो अमरीका उसे १९५२ से अब तक ३५ करोड़ डालर की आर्थिक और २७ करोड़ डालर की सैनिक सहायता दे चुका है। अर्थात् अमरीका ने संपूर्ण अफ्रीकी महाद्वीप को अब तक जितनी सहायता दी है, उसका आधे से ज्यादा हिस्सा इथियोपिया को मिला है। लेकिन सैनिक सरकार की स्थापना और उसके वामपंथी झुकाव से दोनों देशों के संबंधों में दरार पड़ गयी थी, जो कि अब राष्ट्रपति कार्टर द्वारा मानव-अधिकारों की चर्चा से और ज्यादा चौड़ी हो गयी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिणामतः दर्ग ने कागन्यू-स्थित अमरीकी संचार-अड्डे को समाप्त करने की तथा अप्रैल में इरीट्रिया की राजधानी असमारा से अमरीकी वाणिज्य दूतावास को बंद करने की आज्ञा देकर अमरीका के साथ मित्रता समाप्त कर दी। फिर राष्ट्रपति मेगिस्तू हैले मारिआम ने पांच दिन की रूस-यात्रा करके इथियोपिया को रूसी खेमे में डाल दिया।

रूस से मित्रता स्थापित करने के मूल में अनेक कारण हैं। इथियोपिया के पूर्व में सोमालिया, दक्षिण में केन्या और पश्चिम व उत्तर में सूडान हैं। ये सभी इथियोपिया के परंपरागत शत्रु हैं। इथियोपिया चाहता है कि रूस अपने 'मित्र' सोमालिया पर दवाव डालकर ओगादेन में विद्रोहियों को सहायता मिलना बंद करवा दे। रूस के सहयोग से अमरीका-समर्थक सूडान की गतिविधियों पर अंकुश लगवा पाने की आशा भी उसे थी। इसके अलावा, मानव-अधिकारों के प्रश्न को लेकर राष्ट्रपति कार्टर ने हथियारों की पूर्ति जो बंद कर दी, उसकी भरपाई वह रूस से करवाना चाहता है।

सोवियत संघ ने मौका न चूकते हुए इथियोपिया से मित्रता कायम की और सबसे पहले सोमालिया एवं इथियोपिया में आपसी समझौता करवाने के लिए क्यूबा के राष्ट्रपति फीदेल कास्त्रो को गुप्त रूप से दक्षिणी यमन की राजधानी अदन भिजवाया और दोनों देशों के नेताओं में वार्तालाप द्वारा सीमा-विवाद सुलझाने की कोशिश करवायी। लेकिन सोमालिया के राष्ट्रपति सियाद बारेह ने इस रूसी प्रयत्न को पूर्णतया नाकाम कर दिया। रूस द्वारा इथियोपिया को ज्यादा महत्त्व दिये जाने से खीजकर उन्होंने ६,००० रूसी सैनिक-सलाहकारों को सोमालिया छोड़ने का आदेश दे दिया। इससे वह देश अब एकदम पश्चिमी खेमे में आ गया है।

सोमालिया १९६० के मध्य में रूस की तरफ झुका था; क्योंकि उसकी 'विशाल सोमालिया' महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति में अन्य किसी ने सहायता देने की तत्परता नहीं प्रकट की। इस 'विशाल सोमालिया' में वह इथियोपिया के ओगादेन, उत्तर-पूर्व केन्या और जिबूती को पाना चाहता है।

इथियोपिया को समर्थन देकर इस क्षेत्र की राजनीति में भाग लेने का कदम रूस ने चार कारणों से उठाया है :

१. सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण लाल सागर पर नियंत्रण रखना। (ध्यान रहे यूरोप ९० प्रतिशत तेल इसी मार्ग से आयात करता है।)

२. दो करोड़ ८० लाख की आबादी वाले शक्तिशाली एवं महत्त्वपूर्ण अफ्रीकी देश इथियोपिया की वामपंथी सैनिक सरकार को सैद्धांतिक सफलता के लिए सहायता देना।

३. अंगोला, मोजांबीक, दक्षिण यमन, लीबिया तथा इथियोपिया को एक गुट में बांधकर अफ्रीकी देशों की वामपंथी शक्तियों का राजनैतिक एकीकरण करना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४. अन्य अफ्रीकी देशों पर अमरीका के घटते प्रभाव का लाभ उठाना।

इस नये समीकरण के आधार पर रूस अब इथियोपिया के मस्साबा और अस्साब बंदरगाहों का उपयोग अपने नौ-सैनिक अड्डों के रूप में कर रहा है। सोमालिया से संबंध खराब होने से उसे अब बेरबेरा बंदरगाह की सुविधा नहीं मिलेगी। दक्षिण यमन वैसे तो रूसी खेमे में है; लेकिन सऊदी अरब तथा खाड़ी के अन्य देश सोमालिया के बाद अब दक्षिण यमन को भी आर्थिक सहायता देकर उसे रूसी खेमे से बाहर निकल आने के लिए उकसा रहे हैं। अरब देश काफी समय से लाल सागर को 'अरब झील' बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। इसीलिए हाल में सऊदी अरब ने दक्षिण यमन तथा सोमालिया को ३०-४० करोड़ डालर की सहायता भी दी है।

इथियोपिया और रूस अभिन्न मित्र तो बन गये हैं; लेकिन इथियोपिया की गृह-युद्ध-जैसी वर्तमान स्थिति को देखते हुए इस मित्रता का भविष्य बहुत निश्चित नहीं है। इथियोपिया की सैनिक सरकार के भीतर चल रहे सत्ता-संघर्ष और अर्थ-व्यवस्था की डांवांडोल स्थिति से यह अनिश्चितता गहरी हो जाती है। सैनिक शासन आरंभ होने के बाद से ब्रिगेडियर मेगिस्तू हैले मारिआम छठे राष्ट्रपति हैं। इसी वर्ष फरवरी में ब्रिगेडियर जनरल तैफरी बांटी को मारकर वे राष्ट्रपति बने; जबकि ब्रिगेडियर बांटी ने अमान आंडोम को मारकर शासन संभाला था।

फरवरी में हुए सत्ता-परिवर्तन से कर्नल मेगिस्तू और लेफ्टिनेंट कर्नल अतनाफू अबाते की स्थिति सुदृढ़ हुई है। यों तो ये दोनों एक दूसरे के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी हैं; लेकिन संकट के समय अपनी स्थिति बचाने के लिए उन्होंने आपस में सहयोग किया। अब १६ सदस्यों की परिषद् और ८० सदस्यों की जनरल असेम्बली में इन दोनों का कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं बचा है। मेगिस्तू को समाजवादी क्रांतिकारी एवं समाजवादी देशों की तरफ झुकाव वाला माना जाता है। लेकिन सैनिक सत्ताधारियों का आपसी विवाद विदेश-नीति या विचारधारा के बजाय सत्ता पर अधिक केंद्रित है।

दिसंबर में 'मार्क्सवादी-लेनिनवादी नेतृत्व' की एक नयी प्रणाली की घोषणा की गयी थी, जिसमें १६ सदस्यों की स्थायी कमेटी, ३२ सदस्यों की केंद्रीय कमेटी तथा जनरल असेम्बली के मध्य अधिकारों के बंटवारे की बात कही गयी। लेकिन व्यवहार में सभी अधिकार कर्नल मेगिस्तू के हाथ में है—वही राष्ट्रपति, प्रधान-मंत्री और सेनापति हैं। किंतु सत्ता पर पूर्ण नियंत्रण के बावजूद आंतरिक स्थिति के कारण उनकी स्थिति डांवांडोल ही है।

सैनिक सरकार की आर्थिक उपलब्धियां बहुत ही निराशाजनक रही हैं। समाजवाद के नारे को क्रियान्वित करने में उसे असफलता ही मिली है। भूमि-सुधार का कार्यक्रम बड़े जोर-शोर से जारी किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया था; लेकिन उसमें हुई जोर-जवर्दस्ती के कारण उत्तरी प्रांतों में उसके विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष चल रहा है। ६,००० छात्रों की सहायता से अशिक्षा-उन्मूलन का जो अभियान चलाया गया था, वह भी विफल ही रहा है। उसमें लगभग एक हजार लड़कों की मृत्यु हो गयी। आदिश-अवावा विश्व-विद्यालय १९७४ की क्रांति के वाद बंद हुआ, अभी तक पूर्ण रूप से खुला नहीं है।

राष्ट्रसंघ के अनुसार, इथियोपिया विश्व के दस निर्धनतम देशों में से है। आवादी के ९० प्रतिशत का निर्वाह कृषि पर निर्भर है। प्रति व्यक्ति आय केवल ७३ डालर प्रति वर्ष है। अनेक प्रांतों में पिछले पांच वर्षों से अकाल की स्थिति है। कुछ दिन पूर्व बोलो, टिगर, शौआ तथा अरुसी प्रांतों के कुछ भागों से भुखमरी की अनेक वारदातों की खवरें मिली हैं। १९७३-७४ के अकाल के दौरान इन्हीं प्रांतों में एक लाख से भी ज्यादा लोग मरे थे। १९७४ की क्रांति के वाद सरकार ने देश में एकदम समाजवाद लाने के लिए सबसे पहला कदम उठाया उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का, जिसका औद्योगिक विकास और उत्पादन पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

औद्योगिक विकास में प्रमुख बाधा है इरीट्रिया में पंद्रह वर्षों से चल रहा गृहयुद्ध, इथियोपिया के आधे से ज्यादा उद्योग इरीट्रिया में हैं। गृहयुद्ध तथा विमानों द्वारा की जा रही बमबाजी से खानों, कारखानों और खेतों में काम चलना कठिन होता जा रहा है। जापान के सहयोग से स्थाई के डावरवां तांवा-खान प्रायोजना शुरू होने के कुछ ही दिन वाद वंद हो गयी। प्रई करके संसाधनों में इथियोपिया निर्धन कि पहले नीली नील नदी के स्रोत वाला वनस्पति न बहुत ही उपजाऊ है। तेल, गैस, एवं अन्य खनिजों के भी प्रचुर करने के लिए

इथियोपिया के अर्थतंत्र ६०० लिटर इरीट्रिया, ओगादेन और र छिड़की जाये। ट्रिया उद्योग, कृषि और बीमारी फैलाने मुख्य लालसागरीय वंदरगाह के लिए एक-मास्सावा के कारण महत्त्वपूर्ण योडान का देन खनिज पदार्थों के कारण उप- जिबूती, जो २७ जून को फ्रांस से स्व हुआ है, वंदरगाह और रेलमार्ग के कारण इथियोपिया के लिए महत्त्वपूर्ण है। और ये तीनों ही क्षेत्र झगड़े की जड़ हैं।

यह तो भविष्य में ही मालूम होगा कि सैनिक सरकार इथियोपिया को इन संकटों से उबार पायेगी या नहीं। अभी तो, इथियोपियाई जनता को वड़ी विकट स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। पिछले तीन वर्षों के अनुभव के आधार पर यही लगता है कि दर्ग इस विकट स्थिति से देश को उबार नहीं पायेगा। लेकिन सैनिक शासन का देश में कोई प्रतिस्थापन भी तो नहीं है। देश में विद्यमान सभी राजनैतिक संघटनों में तीव्र मतभेद है और राजशाही के पुनः कायम होने के भी कोई आसार नहीं हैं।

—३१७, गंगा, जवाहरलाल नेहरू वि. वि.,
नयी दिल्ली-५७

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरा बनोना

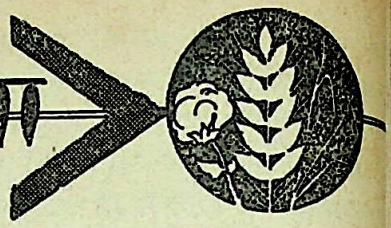

घटते
इस
अब इथि
बंदरगाहों
अड्डों के रूप
संबंध खराब के बरेली, रामपुर और
बंदरगाह की सुर्ख के गांवों में पिछले पांच
यमन वैसे तो रूस किसानों के जीवन में एक
अरब तथा खाड़ी का दौर शुरू हो गया है।
के बाद अब दरि हैं चिंता है कि खेत में क्या
सहायता देकर गायें और न यह सिरदर्द
निकल अनेत से उगायी फसल को सही
देश पर कहां बेचें।

ये किसान खरीफ के मौसम में बेखटके सोयाबीन उगाते हैं। जितनी पैदावार होती है, सारी की सारी कोई २०० रुपये प्रति कुंतल के हिसाब से बरेली का एक नामी कारखाना खरीद लेता है। अमरीका के नेव केमिकल इंस्टिट्यूट और पंत नगर के कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से स्थापित इस कारखाने के उद्देश्य विशुद्ध पौष्टिक हैं—सोयाबीन के प्रोटीन-बहुल आहार बनाकर उनका प्रसार करना। ५० प्रतिशत प्रोटीन वाला 'न्यूट्रीनगेट', दूध छुड़ाने के बाद बच्चों को खिलाने के लिए 'प्रोटीन प्लस' तथा 'प्रोटीन सैक' और शक्ति-आहार या 'न्यूट्रीआहार' व 'सोया सत्तू' तक सभी व्यंजन शहरों में ही नहीं गांवों में भी लोकप्रिय हो रहे हैं।

इस तरह यह संस्था भी फल-फूल रही है और सोयाबीन उगाने वाले किसान भी। इससे प्रेरित होकर कुछ अन्य संस्थाओं ने भी 'सोया-आहार' बनाकर बेचना शुरू किया है। जब मैं पंत नगर से निकलने वाली किसानों की एक पत्रिका का संपादन करता था, तो अक्सर ऐसी चिट्ठियां आती थीं, जिनमें पूछा जाता था कि हमने सोयाबीन उगायी है, अब उसे बेचें कहां। इसके जवाब में हमने बड़ी मेहनत से पूछ-पूछकर सारे देश से कोई चार-पांच खरीदारों की सूची बनाकर कई बार छापी।

'अब स्थिति ऐसी नहीं है,' किसानों के बीच सोयाबीन के सुप्रसिद्ध प्रचारक श्री रवींद्रनाथ त्रिखा मुझे बताते हैं। बरेली की सोयाबीन प्रोडक्ट्स रिसर्च एसोसिएशन ने इस युवा विशेषज्ञ को पंत नगर से उधार लिया है। सन १९७४ में इनके कार्यक्षेत्र में कुल २५ हेक्टर में सोयाबीन उगायी गयी थी, जो कि पिछले साल तक १०० हेक्टर में फैल गयी थी और इस साल दुगुनी होकर २०० हेक्टर हो जाने का अनुमान है।

ऐसी व्यवस्था की गयी है कि हर कार्यकर्ता कम से कम १५० किसानों को सोया-कृषि में दीक्षित करे और ५०० कुंतल सोया-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बीन संस्था को मुहैया करे। मिट्टी की जांच, बीज, खाद, पानी, कीटनाशी और फफूंदनाशी दवा आदि की तकनीकी सलाह के अलावा जरूरतमंद किसानों को बिना ब्याज कर्जा भी दिया जाता है, ताकि कार्य-क्रम में कोई रुकावट न आये।

हर साल सोयाबीन उत्पादन प्रति-योगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। पिछले साल बदायूं जिले के जगत विकास-खंड के श्री आबिद रजा ने अपने खेत में ३,०१० किलोग्राम प्रति हेक्टर की उपज लेकर ५०० रुपये का पहला इनाम जीता। इस जिले में सोयाबीन की औसत उपज १,६०० किलोग्राम प्रति हेक्टर है। श्री त्रिखा ने बताया कि सोयाबीन की खेती पर औसत खर्चा १,५०० रुपये प्रति हेक्टर बैठता है, जिससे डेढ़ से दो हजार रुपये प्रति हेक्टर मुनाफा होता है।

श्री त्रिखा के शब्दों में सोयाबीन की उत्तम खेती के गुर ये हैं : 'मिट्टी दुमट हो, गहरा हल चलाकर दो या तीन बार "डिस्किंग" कर ली जाये। बीज पर एक से दो किलो कल्चर प्रति हेक्टर लगाया जाये। बोने से पहले बीज पर साढ़े चार ग्राम थिराम दवा का लेप किया जाये। किस्म हो "ब्रैग" या "अंकुर"। बुआई ड्रिल से ज्यादा से ज्यादा ४ सेंटिमीटर गहरे में की जाये और पौधों के बीच कोई ५ सेंटि-मीटर तथा कतारों के बीच ४५ सेंटिमीटर दूरी रखी जाये। इस तरह प्रति हेक्टर कोई ७५ किलोग्राम बीज बोया जाये।

'इसका ध्यान रखा जाये कि बुआई के बाद खेत में पानी खड़ा न रहे। बुआई के २० और ३५ दिन बाद दो निराई करके खरपतवार उखाड़ दिया जाये, ताकि पहले चार हफ्तों में कोई बेकार की वनस्पति न जम सके।

'इल्लियों का सफाया करने के लिए सवा लिटर थायोडान दवा ६०० लिटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टर छिड़की जाये। पीले मोजैक वाइरस की बीमारी फैलाने वाली सफेद मक्खी को मारने के लिए एक-एक लिटर मेटासिस्टो और थायोडान का

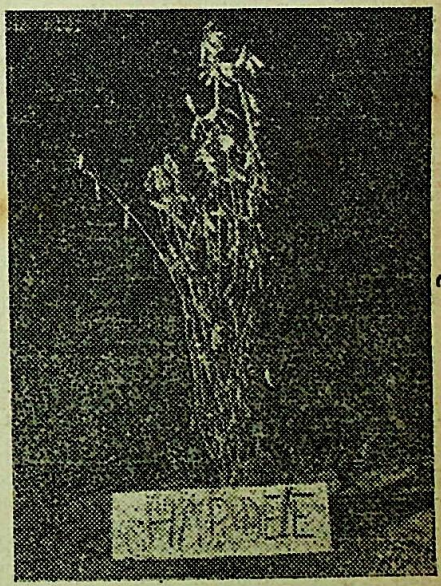

सोयाबीन की हार्डी किस्म जिसकी हरी फलियों ने दक्षिण भारतीय व्यंजनों में पौष्टिकता भी भर दी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिश्रण एक हजार लिटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टर बुआई के बाद २० वें, ३० वें और ४० वें दिन छिड़का जाये।

'और अंत में सारे पत्ते झड़ने पर पकी फलियों से लदे पौधों की कटाई और दाने अलग करने के लिए हल्की गहाई, हाथ से या मशीन से की जाये। तो दो हजार रुपये प्रति हेक्टर का मुनाफा निश्चित है।'

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सोयाबीन की खेती में अब कोई समस्या नहीं रह गयी है। सबसे बड़ी समस्या है अच्छा अंकुरण देने वाली रोगरोधी किस्मों की। पंत नगर कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक और अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना के संचालक डा. मोहनचंद्र सक्सेना ने बताया कि पंत नगर में दुनिया-भर से सोयाबीन की ४,१९८ किस्में और ५ जंगली जातियां संकलित की गयी हैं। अमरावती में २,००० किस्मों का संग्रह है। इनके अलावा जबलपुर, पूना, बेंगलूर, दिल्ली और लुधियाना में भी सोयाबीन की उन्नत किस्मों पर अनुसंधान जारी है।

सोयाबीन के विशाल संग्रह में से पीले मोजैक वाइरस का रोधी स्रोत खोजकर अब रोगरोधी किस्म पर परीक्षण [illegible] रहे हैं। एक नयी किस्म पी के-७१-२१ 'ब्लैग' को पछाड़कर ३० कुंतल प्रति हे[illegible] उपज दी है और मोटे दाने के अथवा पी[illegible] मोजैक से बचे रहने की शक्ति प्रदर्शि[illegible] की है। यह १२० दिन में पकती है। ज[illegible] (१०५ दिन में) पकने वाली किस्म यू. [illegible] एस. एम-९ उत्तर भारत के पहाड़ी क्षेत्र[illegible] आशा जगा रही है। जब तक पीला मो[illegible] या रतुआ धावा बोले, तब तक इ[illegible] फसल पक जाती है।

डा. सक्सेना ने सबसे स्वादिष्ट [illegible] चार यह दिया कि सोयाबीन का दूध, [illegible] स्क्रीम, कैंडी, 'पनीर' आदि बनाने [illegible] विधियां पक्की कर ली गयी हैं और दक्षि[illegible] भारतीय उपमा, हुसली (गुगरी), [illegible] और सांबार में 'हार्डी' किस्म की सोया[illegible] की हरी फलियां मिलाने से ये पौष्टिक [illegible] जाते हैं। 'जे एस-२' और 'कोकर' किस[illegible] को आलू में मिलाकर टिकिया बना स[illegible] हैं। 'हार्डी' के सूखे बीजों की 'इडली' [illegible] 'चटनी' के क्या कहने! हमारे देहाती भाइ[illegible] ने उपग्रह दूरदर्शन पर सोयाबीन के व्यं[illegible] बनाने के कार्यक्रम देख-देखकर बड़े चटखा[illegible] भरे।

—र. द.

आप शोर मचायें कि ऊंचे पदों पर भ्रष्टाचार चल रहा है, पर यह न सोचें कि [illegible] आपके आस-पास क्या चल रहा है, यह चल नहीं सकता। रेल-कर्मचारियों को इस [illegible] भी विचार करना चाहिये कि बुकिंग-दफ्तरों में और खुद उनकी अपनी यूनियनों में [illegible] चल रहा है।

— जार्ज फर्नां[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन

समुद्र

एक मछली थी। वह मछलियों की रानी के पास गयी और बोली—'समुद्र क्या होता है मुझे बताइये।'

रानी बोली—'तुम्हारा जीना ही समुद्र है। तुम्हारी प्रत्येक गतिविधि समुद्र है। तुम्हारा अस्तित्व समुद्र है। समुद्र तुम्हारे भीतर है, उसी तरह तुम्हारे बाहर भी सर्वत्र है। तुम समुद्र के ही बनाये हुए हो और तुम्हारा अंत भी समुद्र में ही है। तुम्हीं समुद्र हो। समुद्र से तुम पूरी आवेष्ठित हो।

[एक जैन रूपक-कथा]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

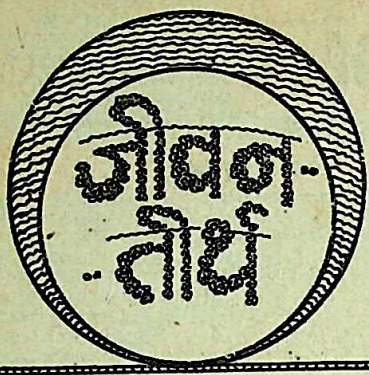

क्लाइव लेविस

एक दुर्गुण ऐसा है, जिससे संसार में कोई भी मनुष्य मुक्त नहीं है। उसे दूसरों में देखकर हर मनुष्य घृणा करता है, पर शायद ही कभी सोचता है कि वह खुद भी उसका शिकार है। लोगों को अपने अन्य कई दुर्गुणों को स्वीकार करने में संकोच नहीं होता, परंतु इस एक दुर्गण को वे शायद ही कभी स्वीकार करते हैं।

वह दुर्गुण है—अहंकार। ईसाई धर्म के अनुसार, अहंकार सबसे बड़ा पाप है और उसकी तुलना में लालच, गुस्सा, बेईमानी आदि दुर्गुण बहुत छोटे हैं। अहंकार ने ही शैतान को वास्तव में शैतान बनाया। अहंकार समस्त दुर्गुणों को जन्म देता है।

अगर आप जानना चाहते हों कि आप कितने अहंकारी हैं, तो खुद अपने आपसे पूछिये—'जब लोग मेरी ओर ध्यान नहीं देते, या महत्त्व को मानने से इन्कार करते हैं, तो मुझे कितना बुरा लगता है ?' जितना ही ज्यादा बुरा लगता हो, समझिये कि अहंकार का अंश आपमें उतना ही ज्यादा है। हर व्यक्ति का अहंकार दूसरे व्यक्ति के अहंकार से टक्कर लेना चाहता है। अन्य दुर्गुणों की तुलना में अहंकार में प्रतिस्पर्धा का यह भाव बुनियादी तौर पर पाया जाता है।

अहंकार की तुष्टि किसी चीज को पाने से नहीं, बल्कि उस चीज को किसी दूसरे की अपेक्षा ज्यादा पाने से होती है। प्रायः कहा जाता है कि लोग अपनी अमीरी, बुद्धिमत्ता या सुंदरता पर अहंकार करते हैं। यह गलत है। लोग अहंकार करते हैं दूसरों से बढ़कर अमीर, बुद्धिमान या सुंदर होने पर। तुलना की भावना ही हमें अहंकारी बनाती है और हम यह सोचकर खुश होते हैं कि हम दूसरों से श्रेष्ठ हैं।

लोभ में आदमी पैसा पाना चाहता है ताकि ज्यादा अच्छे घर में रह सके, ज्यादा अच्छी चीजें जुटा सके, ज्यादा अच्छा खा-पी सके। परंतु लोभ एक सीमा पर आकर रुक जाता है। पांच हजार रुपये महीना कमाने वाला आदमी दस हजार क्यों कमाना चाहता है ? ज्यादा सुख-सुविधाओं के लोभ के कारण नहीं; क्योंकि पांच हजार रुपये में वह सभी आवश्यक सुख-सुविधाएं प्राप्त कर सकता है। तो फिर दस हजार रुपये कमाने की इच्छा के पीछे कौन-सा कारण है ? वह है अहंकार—यह इच्छा कि मैं किसी दूसरे व्यक्ति से ज्यादा अमीर कहलाऊं, और यह भी कि मैं उससे ज्यादा शक्तिशाली भी बनूं।

अहंकार ही प्रत्येक देश में और प्रत्येक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर में दुःखों का मूल कारण है। अन्य दुर्गुण कभी-कभी लोगों को एक-दूसरे के नजदीक लाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं; परंतु अहंकार उन्हें हमेशा एक-दूसरे से दूर रखता है, उनमें दुश्मनी पैदा करता है। वास्तव में, अहंकार है ही दुश्मनी। वह मनुष्य से ही नहीं, ईश्वर से भी दुश्मनी पैदा करता है।

ईश्वर मनुष्य की तुलना में हर प्रकार से श्रेष्ठ और महान है। जब तक मनुष्य ईश्वर के सामने अपने आपको नगण्य नहीं समझता, उसे जान नहीं सकता। मनुष्य का अहंकार ही उसे ईश्वर से दूर रखता है। जो अहंकारी व्यक्ति ईश्वर को जानने का दावा करते हैं, वे शायद ऐसे कल्पित ईश्वर की बात करते हैं, जो उन्हें दूसरे मनुष्यों से अधिक अच्छा और श्रेष्ठ समझता है। अगर हमारा धार्मिक जीवन दूसरों से श्रेष्ठ होने का एहसास हमारे मन में पैदा करे, तो समझ लीजिये कि हमने ईश्वर से मुंह मोड़ लिया है।

अहंकार के जरिये कई बार हम साधारण दुर्गुणों से मुक्ति पा सकते हैं। जब मनुष्य यह सोचता है कि उसकी बुजदिली, गुस्सा या कमीनगी उसे दूसरों की नजर में छोटा बनाती है, तो वह उनसे छुटकारा पा जाता है। परंतु तब वह सबसे बड़े दुर्गुण अहंकार का शिकार बनकर जीने लगता है, और अहंकार उसमें कई और दुर्गुण पैदा कर देता है।

किसी के मुंह से अपनी प्रशंसा सुनकर मिलने वाली खुशी अहंकार नहीं है। इस खुशी में कई बार यह एहसास भी पैदा होता है कि हमने किसी को खुशी दी है। कभी-कभी आदमी दूसरों की प्रशंसा पाने के लिए विशेष प्रयत्न करता है और हर समय उसी प्रयत्नों में लगा रहता है। यह चीज इस बात की ओर संकेत करती है कि उसमें बचपन अभी बाकी है और वह हर समय किसी न किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किये रखना चाहता है। यह अच्छी चीज नहीं है, फिर भी वह मनुष्य दूसरे लोगों को महत्त्व दे रहा होता है, ताकि वे उसे महत्त्व दें। किंतु असली अहंकार तब शुरू होता है, जब मनुष्य दूसरों को इस तरह नजरअंदाज करने लगता है कि उसे इस बात की परवाह ही नहीं रह जाती कि वे उसके बारे में क्या सोचते हैं।

जो व्यक्ति अपने मन में नम्रता पैदा करना चाहता हो, उसके लिए इस दिशा में पहला कदम यह है कि वह महसूस करे कि मैं अहंकारी हूं। और यह पहला कदम बहुत ही बड़ा और बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इससे पहले और कुछ नहीं किया जा सकता। अगर हम समझते हों कि हममें अहंकार नाममात्र को भी नहीं है, तो समझ लीजिये, कि हम अहंकारी हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

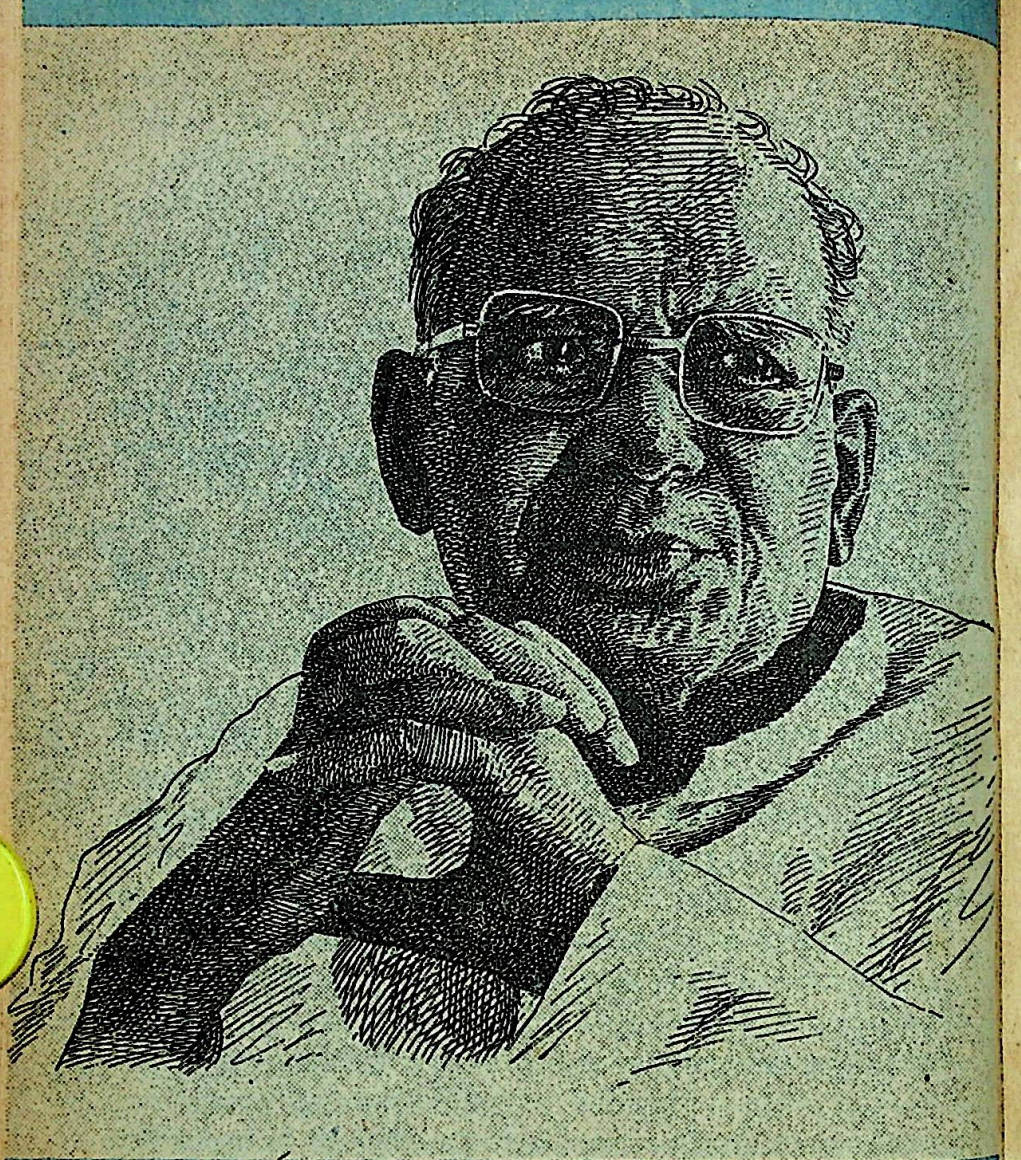

दिष्ट्या सर्वस्य लोकस्य प्रवृद्धं दारुणं तमः। अपावृत्तं त्वया .....

– जो दारुण अंधकार छा गया था, सबके सौभाग्य से तुमने उसे दूर किया।

– वाल्मीकि-रामायण [७.१२२.३]

श्री जयप्रकाश नारायण

को ७६ वें वर्ष में प्रवेश पर नवनीत के नमस्कार!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामकथा-मंदाकिनी

डॉ. सुरेशव्रत राय

क्रौंचवध की घटना से करुणाप्लुत आदि-कवि वाल्मीकि के कंठ से रामकथा की जो सरिता भारत की काव्यभूमि में प्रवाहित हुई, वह महानद बनकर आज भी भारतीय चेतना को सींच रही है। भारत की हर भाषा में हर पीढ़ी में कवियों ने अपनी प्रतिभा से उस महाप्रवाह को परिपुष्ट किया है और उससे अपने आपको रसाप्लुत और कृतार्थ किया है।

संस्कृत में वाल्मीकि के बाद भास, कालिदास, भवभूति, राजशेखर, दिङ्नाग, मुरारि, जयदेव, भोज, मल्लिनाथ, चिदंबर, कुमारदास, धनंजय, भट्टिस्वामी, हरदत्त सूरि, दैवज्ञ सूर्य, भट्ट भीम आदि कवियों और महाकवियों ने रामकथा को अपनी कृतियों का उपजीव्य बनाकर कृतकृत्यता अनुभव की है। वाल्मीकि-रामायण के अलावा रघुवंश, उत्तररामचरित, प्रतिमा, अभिषेक, रावणवध, जानकीहरण, अनर्घराघव, प्रसन्नराघव, कुंदमाला, रामायणमंजरी, महावीरचरित, रावणवध, राघवाभ्युदय, राघवनैषधीय, राघवार्जुनीय, राघवपांडवीय, राघवयादवपांडवीय, यादवराघवीय, रामचंद्रोदय, उदारराघव, हनुमन्नाटक, महाहनुमन्नाटक, चंपूरामायण आदि महाकाव्यों, रूपकों और चंपूकाव्यों में रामकथा पल्लवित हुई है।

लौकिक काव्यों के अलावा महाभारत में तो रामकथा का सार समाविष्ट है ही; भागवत, विष्णु, हरिवंश, वायु, अग्नि, कूर्म, ब्रह्म, स्कंद, ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्मांड, नारसिंह, शिव, देवीभागवत, कालिका आदि पुराणों में भी किसी न किसी रूप में रामकथा अवश्य प्रस्तुत की गयी है। इनके अलावा अध्यात्मरामायण, अद्भुतरामायण, आनंदरामायण आदि हैं, जिन्होंने भाषा-रामायणों को विशेष रूप से प्रभावित किया है।

संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत की काव्य-परंपरा को भी रामकथा ने प्रभावित किया। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व विमलसूरि द्वारा विरचित 'पउमचरिय' प्राकृत

सेतुबंध का दृश्य कंबोडियाई शिल्प में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राम-सीता [इंडोनीशिया]

चरित-काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। वह रामायण के जैन संस्करण का प्राचीनतम रूप है। बाद में संस्कृत में जो अन्य जैन रामायण निबद्ध हुए, उनमें 'पद्मचरित' और 'पद्मपुराण' प्रमुख हैं, जो कि श्वेतांबर संप्रदाय में विशेष लोकप्रिय हैं। आठवीं सदी में स्वयंभू द्वारा आरंभ किया गया दूसरा 'पउमचरिय' (जिसे स्वयंभू के पुत्र त्रिभुवन स्वयंभू ने पूरा किया) तेरह हजार कदवाकों का विशाल ग्रंथ है। इनके अतिरिक्त प्रवरसेन का 'सेतुबंध', महेश्वर का 'सियाचरियम्' भी राम कथा-काव्य हैं।

जातक-कथाओं में राम को गौतम बुद्ध का पूर्वरूप मानते हुए रामकथा के कुछ प्रसंग बौद्ध सिद्धांतों के अनुसार वर्णित किये गये हैं। 'सुत्तपिटक' के 'खुद्दकनिकाय' में आने वाले 'दसरत्थ' और 'अनामक' जातक इसी कोटि के हैं। 'दसरत्थ' जातक में राम स्थितप्रज्ञ हैं, पिता के देहांत का समाचार मिलने पर वे लक्ष्मण और सीता की तरह शोकातुर नहीं होते। 'अनामक' में प्रकट रूप से तो रामकथा नहीं है; मात्र वनवास, सीता-हरण, जटायु-वध, वाली-सुग्रीव-युद्ध, अग्नि-परीक्षा आदि प्रसंगों का सांकेतिक उल्लेख मिलता है।

तुलसी का 'रामचरितमानस' हिंदीभाषियों के लिए महान साहित्य-ग्रंथ भी है और धर्मग्रंथ भी। हिंदीभाषी भारत में या बाहर जहां कहीं भी गये हैं, तुलसी-रामायण को भी ले गये हैं। 'गीतावली', 'बरवैरामायण' और 'रामललानहछू' में भी तुलसी ने रामकथा का ही आश्रय लिया है।

वल्लभ-संप्रदाय में दीक्षित संत सूरदास कृष्णभक्ति को समर्पित थे; किंतु रामकथा ने उन्हें भी आह्लादित किया और उनके राम-विषयक पद मर्मस्पर्शी भावाभिव्यक्ति और साहित्यिक सौंदर्य की दृष्टि से अद्वितीय हैं। रीति-कालीन आचार्य-कवियों में से केशव की 'रामचंद्रिका' में रामकथा समस्त काव्यालंकारों के साथ गूंथी गयी है। इनके अतिरिक्त नाभादास, सेनापति, रामप्रियाशरण, जानकीराज किशोरीशरण,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रघुराजसिंह ने भी रामकथा को काव्यबद्ध किया है।

आधुनिक हिंदी कवियों में मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' में और निराला ने 'राम की शक्तिपूजा' में जैसे अपनी काव्यशक्ति को तुला पर चढ़ा दिया है। गुप्तजी ने तो साकेत में कह ही दिया है—'राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है / कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।' हरिऔध, रामचरित उपाध्याय, बल्देव मिश्र, रमानाथ ज्योतिषी को भी रामकथा से काव्य-प्रेरणा मिली। सत्यनारायण कविरत्न का 'उत्तर-रामचरित' भवभूति की कृति का अनुवाद है; किंतु उच्च साहित्यिक प्रतिभा का परिचायक है।

तुलसी ने रामकथा के नाट्य-प्रयोग की जो परंपरा चलायी, उसकी प्रेरणा से सत्रहवीं शताब्दी में बलभद्र दीक्षित ने 'जानकी-परिणय' तथा महादेव ने 'अद्भुत-रामायण' नाटक प्रस्तुत किये। उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में भारतेंदु की प्रेरणा से 'सीता-स्वयंवर' (देवकीनंदन त्रिपाठी), 'रामलीला-विहार' (मधुकर), 'रामलीला' (दामोदर शास्त्री), 'राधेश्याम-रामायण' (राधेश्याम कथावाचक) की रचना हुई। इनमें से अधिकांश नाटक ख्याल और माच शैली में हैं।

सम्राट अकबर को रामकथा ने इतना मुग्ध किया था कि उसकी प्रेरणा से मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूंनी ने १५८९ ई. में वाल्मीकि-रामायण का फारसी में पद्यानुवाद किया और फैजी ने गद्यानुवाद। उर्दू में मुल्ला मसीह कृत 'रामायण मसीही', लाला अमानतराय लालपुरी विरचित 'रामायण', चंद्रभान बेदिल का 'उर्दू रामायण', अमरसिंह प्रणीत 'अमर प्रकाश' तथा नजीर और चकबस्त के रामकथा-संबंधी शेर विशेष लोकप्रिय हैं।

मैथिली में पंडित चंदा झा का 'मैथिली रामायण', रामलोचनशरण और आचार्य शरणजी के 'मैथिली रामचरितमानस' तुलसी के 'मानस' की महत्त्वपूर्ण अनुकृतियां हैं। दुर्गाप्रसाद शंकर सिंह ने तुलसी की ही रामकथा को भोजपुरी में प्रस्तुत किया है। 'रामचंद्रोदय' ब्रजभाषा में है। हिंदी की सभी बोलियों-उपबोलियों में रामकथा के अनेक भावपूर्ण प्रसंगों पर सुंदर गेय पद हैं, जिनकी संख्या हजारों में है।

सिक्खों के दसवें गुरु गोविंद सिंह ने पंजाबी में रामायण रचा और जसोदानंदन ने राम की सेना से लव-कुश के युद्ध के प्रकरण पर ८८ छंदों में 'लव-कुश दिल पौड़िया' लिखा। गुरुमुखी लिपि में रामायण के अनेक संस्करण हैं। वसुमल जैरामदास ने 'मानस' का सिंधी में गद्यानुवाद तो किया ही, सन १८९७ में उनके ग्रंथ का मंच पर अभिनय भी हुआ। कश्मीरी में प्रकाशराम ने सन १७६० में १,७८६ छंदों में रामायण लिखा। उसका फारसी लिप्यंतर १९२० में श्रीनगर से और अंग्रेजी सारानुवाद १९३० में रायल एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त कश्मीर में लोकप्रिय है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अठारहवीं सदी के अंत में दिवाकर प्रकाश भट्ट द्वारा रचित कश्मीरी 'रामायण', जिसमें वाल्मीकि-रामायण की कथा को शिव-पार्वती-संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सोलहवीं शताब्दी में प्रसिद्ध संत एकनाथ ने मराठी में 'भावार्थ-रामायण' का प्रणयन किया, जिसकी कथा 'अध्यात्म-रामायण' तथा 'आनंद-रामायण' से मेल खाती है। श्रीधर ने सरल किंतु प्रभावशाली शैली में 'रामविजय' में रामकथा संजोयी। मोरोपंत की रामकथा जनता में बहुत लोकप्रिय हुई। पिछले दो दशकों से ग. दि. माडगूळकर के 'गीत-रामायण' की महाराष्ट्र-भर में धूम है।

गुजरात में तुलसी का 'मानस' लगभग उतना ही पूजित है, जितना कि हिंदी प्रदेश में। गिरिधरदास कृत 'रामायण' तथा भालण कवि विरचित 'रामविवाह' एवं 'बाल रामचरित' भी विशेष जनप्रिय हैं।

बंगला की रामकाव्य-परंपरा में रघुनंदन गोस्वामी का 'रामरसायन', चंद्रावती का 'रामायण', रामानंद की 'रामलीला', कविचंद्र का 'अंगदेर बैर', जगतराम का 'रामायण' तो प्रसिद्ध ही हैं। परंतु रामभक्ति-साहित्य के प्रवर्तक माने जाते हैं कृत्तिवास, जिन्होंने तुलसी की भांति 'नाना पुराणनिगमागम-सम्मतं' की प्रक्रिया से वाल्मीकि-रामायण, जैमिनीयाश्वमेध, अद्भुत रामायण, अध्यात्म-रामायण के अलावा पुराणों, काव्यकृतियों एवं दंतकथाओं से भी सामग्री और भाव लेकर अपना 'रामायण' निबद्ध किया—'बाल्मीकि बंदिया कृत्तिवास बिचक्षण, शुभक्षणे रचित भाषा रामायण'। उन्होंने 'शिवरामयुद्ध' भी लिखा।

जैसे तुलसी के लिए सब जग 'सीयराममय' है, उसी तरह कृत्तिवास के लिए भी जगत में राम के अतिरिक्त कुछ नहीं है; इसलिए उनका आग्रह है :

रामनाम जप भाई, अन्य कर्म पिछे,
सर्ब धर्म कर्म रामनाम बिना मिछे।
मृत्युकाले जदि नर राम बलि डाके,
बिमाने पड़िया गाय सेइ देबलोके॥

उनकी अटल आस्था है :

श्रीराम स्मरिया जेवा महारण्ये जाय।
धनुर्बाण लगे राम पश्चाते बेड़ाय॥

चौदहवीं शताब्दी में माधवकंदली ने वाल्मीकि-रामायण के आधार पर असमिया में महाकाव्य की रचना की और कहा—"एतेक जानियो रामत भजियो तजियो समस्त काम / संसार सागर सुखे होबा पार, डाकि बोलो राम नाम।"

सोलहवीं सदी तक तो सारा ही असम 'नमो नमो रघुपते केशव' कीर्तन से गूंजने लगा। असम के वैष्णव-धर्म की एक विशेषता यह है कि उसमें राम और कृष्ण में भेद नहीं है। शंकरदेव ने 'सप्तकांड रामायण' में राम-शरणागति की भाव-विभोर होकर घोषणा की है :

रामे मोर इष्टदेव, रामके से करो सेव
गति मोर राम-चरन।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामे धर्म, रामे कर्म रामे से बांधव मर्म
जानि लै लो राम-शरन ।।

कहते हैं कि माधवकंदली-कृत रामायण के प्रारंभिक और अंतिम अंश अनुपलब्ध हो गये थे, उन्हें शंकरदेव और माधवदेव ने पूरा किया। शंकरदेव ने सोलहवीं सदी में 'रामविजय' नाटक और 'रामभावना' की रचना की, जिनमें राम को परब्रह्म प्रतिपादित किया गया है।

रघुनाथ महंत के 'गीतिरामायण' में ऐसे गीत हैं, जिनमें राम को ईश्वरीय अवतार के बजाय मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ये गीत ओजापल्ली गान के रूप में प्रचलित हैं। दुर्गावर का 'गीति रामायण' भी लोकगीतों की शैली में है। 'कीर्तनिया-रामायण' (अनंत ठाकुर आता), 'सीता-वनवास' (गंगाराम राय), 'अश्वमेध-यज्ञ' (भवदेव), 'अंगद-रावण' (असमवासी कृत्तिवास पंडित), 'गणक-चरित्र' (धनंजय), 'पाताल-प्रवेश' और 'महिरावण-वध' (अनंत कंदली) तथा कीर्तनघोषा एवं नामघोषा के रामचरित्र-परक पद भी उल्लेखनीय हैं।

सन १५०० के आस-पास चैतन्य के समकालीन भक्तकवि बलरामदास ने विभिन्न पौराणिक स्रोतों से सामग्री लेकर उड़िया में रामायण प्रस्तुत किया। उनका 'जगन्मोहन' या 'दंडी रामायण' बहुत लोकप्रिय हैं। 'विचित्र-रामायण' और 'विलंकारामायण' भी उड़िया के लोकप्रिय रामायण हैं।

वाल्मीकि के पश्चात् हिंदू परंपरा में रामकथा को शायद सबसे पहले विस्तार से प्रस्तुत किया नौवीं शती के तमिल कवि कंबन् ने अपने 'कंब-रामायण' में, जो कि वाल्मीकि के आदिकाव्य का अनुवाद न होकर स्वतंत्र महाकाव्य है। कंबन् इस कृति से 'कविचक्रवर्ती' कहलाये। उन्होंने राम को दिव्य, शरणागत-वत्सल, स्थितप्रज्ञ और सर्वगुणसंपन्न मर्यादा-पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया है।

तेलुगु में रामकाव्य की परंपरा ग्यारहवीं सदी से प्रारंभ हुई। गोन बुद्धारेड्डी का 'रंगनाथ रामायण', नन्नय का 'राघवाभ्युदय', तिक्कन का 'निर्वचनोत्तर-रामायण' हुलक्कि भास्कर द्वारा प्रारंभ किया गया 'भास्कर-रामायण', कवयित्री मोल्ला का 'मोल्ल-रामायण', मिडिकि सिंगन्ना का

राम को कंधे पर उठाये हनुमान
[मृत्तिका शिल्प, बंशावटी, प. बंगाल]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'वासिष्ठ-रामायण', अप्पलराजु रामभद्र का 'रामाभ्युदय', कंकंटि पापराजु का 'उत्तर-रामायण' इस परंपरा के मुख्य काव्य हैं। भद्राचलम् के भक्त रामदास का 'दाशरथि-शतक' एवं अनेक 'कीर्तन' तथा कर्नाटक संगीत के महान वाग्गेयकार संत-गायक त्यागराज के सैकड़ों 'कीर्तन' भी रामकाव्य की परंपरा में ही आते हैं। (ये कीर्तन खयाल की तरह की शास्त्रीय संगीत-कृतियां हैं।)

उन्नीसवीं शताब्दी में वाल्मीकि-रामायण के कई तेलुगु रूपांतर हुए, जिनमें वाविलिकोनु सुब्बाराव-कृत 'श्रीमदांध्र वाल्मीकि-रामायण' तथा श्रीपाद कृष्ण-मूर्ति शास्त्री कृत 'श्रीकृष्ण-रामायण' प्रमुख हैं। तुलसी-रामायण और कंब-रामायण का भी तेलुगु में अनुवाद हुआ है।

इस शताब्दी में रामकथा पर आश्रित महानतम तेलुगु कृति है डा. विश्वनाथ सत्यनारायण का 'रामायण-कल्पवृक्षमु', जिस पर उन्हें ज्ञानपीठ-पुरस्कार दिया गया। इसका कथासूत्र पूरी तरह वाल्मीकि के अनुसार है; मगर संस्कृत और तेलुगु की राम-विषयक साहित्य-कृतियों का सारा भाव-सौरभ इसमें सिमट आया है।

कन्नड में रामकाव्यों का आरंभ तेलुगु से भी पहले ही हो गया था। कंबन् के समकालीन जैन कवि पोन्न (९५० ई.) ने कन्नड में रामकथा को गूंथा। ११०० ई. में नागचंद्र ने 'रामचंद्र-चरित-पुराण' (पंप रामायण) की रचना की, जिसकी कथा तो वाल्मीकि-रामायण पर आधारित है, मगर जिसमें जैन सिद्धांतों के प्रतिपादन का प्रयास परिलक्षित होता है। सोलहवीं शताब्दी में तोरवे-निवासी नरहरि का रचा 'तोरवे-रामायण' भी विशेष लोकप्रिय है। 'मैरावण-काळग' में महिरावण द्वारा राम-लक्ष्मण के अपहरण और हनुमान द्वारा महिरावण के वध का वर्णन है। तिरुमल वैद्य और योगेंद्र के 'उत्तर-रामायण' भी उल्लेखनीय हैं।

तेलुगु के 'रामायण-कल्पवृक्षमु' की भांति कन्नड का महान आधुनिक रामकाव्य है 'श्रीरामायण-दर्शनम्', जिसके लिए डा. के. वी. पुट्टप्पा (कुवेंपु) को ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। भाषा की भव्यता और भावों की उदात्तता इस काव्यग्रंथ की विशेषता है।

मलयालम् में तिरुवितांकुर (ट्रावंकोर) के नरेश ने चौदहवीं शताब्दी में (एक अन्य मतानुसार दसवीं और तेरहवीं शताब्दी के बीच) वाल्मीकि के युद्धकांड पर आधारित पद्यकाव्य 'रामचरितम्' रचा। १३वीं शताब्दी में अपिपिळ्ळै आशन् द्वारा प्रणीत 'रामकथा पाट्टु', चौदहवीं शताब्दी के निकट कन्नस्स पणिक्कर और राम पणिक्कर द्वारा रचित रामायण के मलयालम् संस्करण तथा पूनम कवि कृत 'रामायण-चम्पू' महत्त्वपूर्ण हैं। 'कन्नस्स-रामायण' और 'केरलवर्म-रामायण' को वाल्मीकि-रामायण का स्वतंत्र अनुवाद कहा जा सकता है।

नेपाली (गोरखाली) में गत शताब्दी में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भानुभक्त ने वाल्मीकि-रामायण का स्वतंत्र अनुवाद करके नेपाली के आदिकवि का पद पाया।

इन कृतियों के अलावा समूचे देश में राम-जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर सहस्रों अत्यंत भावपूर्ण और सुकुमार गीत और लोकगीत हैं।

रामायण-कथा भारत की सीमा को लांघकर पूर्व में जावा तक पहुंची और स्थानीय रंग में ढलकर आज तक जीवंत रूप में जन-मानस को समृद्ध और संस्कार-वान बना रही है। सो यह उचित ही था कि पहला विश्व रामायण-सम्मेलन इंडोनीशिया में हुआ।

यूरोप की अधिकांश भाषाओं में वाल्मीकि-रामायण के अविकल या संक्षिप्त अनुवाद हुए हैं, जिनमें श्री बारान्निकोव-कृत रूसी अनुवाद सर्वाधिक चर्चित है।

सचमुच सरस्वती सहस्र मुखों से राम-कथा गा रही है—न वह गाते थकती है, न श्रोता ही सुनते थकते हैं। आदि कवि ने ठीक ही तो कहा था :

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति ॥

—जब तक पृथ्वी पर पहाड़ रहेंगे, नदियां रहेंगी, तब तक रामायण-कथा लोगों में प्रचलित रहेगी।

—३६७, अतरसुइया, इलाहाबाद

★

कर्तव्य-पालन

काकिनाडा कांग्रेस (१९२२) में खादी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था। प्रदर्शनी के द्वार पर एक कमसिन स्वयंसेविका नियुक्त थी।

प्रदर्शनी का टिकट-दर दो आने रखा गया था। एक व्यक्ति द्वार पर बिना टिकट दिखाये अंदर प्रवेश करने लगा। यह देखकर स्वयंसेविका ने उसे अंदर जाने से रोक दिया और उससे टिकट मांगा। उस व्यक्ति ने अपनी जेब टटोली और यह बुदबुदाते हुए जाने लगा कि इस वक्त मेरे पास पैसे नहीं हैं, कल देख लूंगा।

समीप ही एक वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता खड़े थे। उन्होंने स्वयंसेविका से पूछा—'तुम जानती हो ये कौन हैं?' उत्तर मिला—'हां, ये पं. जवाहरलाल हैं, पर मुझे कहा गया है कि किसी को भी बिना टिकट लिये अंदर प्रवेश न करने दूं। मैं तो नियम पालन कर रही हूं।'

पंडितजी यह सुनकर उस स्वयंसेविका के पास गये और उसकी पीठ थपथपाते हुए उसे बधाई दी। फिर उन नेता से बोले—'लड़की ठीक ही तो कह रही है। हां, यदि आपके पास दो आने हों तो दीजिये, ताकि मैं प्रदर्शनी देख सकूं।'

और पंडितजी ने टिकट खरीदकर ही प्रदर्शनी देखी।

वह स्वयंसेविका थीं श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख जो आगे चलकर संसद्-सदस्या, योजना आयोग की सदस्या और समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा आदि बनीं। —सुरेंद्र श्रीवास्तव

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

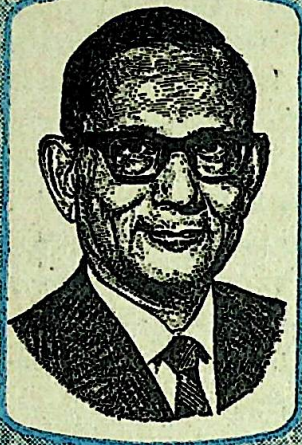

श्रीगोपाल नेवटिया कहानी-प्रतियोगिता

नवनीत के संस्थापक स्वर्गीय श्री श्रीगोपालजी नेवटिया की स्मृति में इस वर्ष भी एक साहित्यिक प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है।

इस बार रचनाओं का स्वरूप होगा कहानी—पारिवारिक संबंधों पर आधारित कहानी।

पुरस्कार तीन होंगे :
प्रथम ५०० रु., द्वितीय ३०० रु., तृतीय २०० रु.।

शब्दसीमा : ३,००० शब्दों तक।

कहानी पहुंचने की अंतिम तारीख :
३० अक्तूबर १९७७

कहानी भेजने का पता :

श्रीगोपाल नेवटिया कहानी-प्रतियोगिता
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१ ताडदेव, बंबई-४०००३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* केजिता

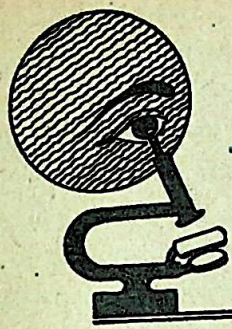

विज्ञान-बिंदु

प्रसिद्ध ब्रिटिश शरीरक्रिया-विज्ञानी एवं आक्सफर्ड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा. व्हाइटब्रिज ने हाल ही में अपने एक भाषण में जन-सामान्य में प्रचलित इस धारणा का खंडन किया है कि कम रोशनी में पढ़ने से आंखें कमजोर हो जाती हैं। उनका कहना है कि जब तक दृष्टि-तंत्रिकाएं सामान्य हैं, कम प्रकाश में पढ़ने से दृष्टि-तंत्रिका की क्षमता पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता। उन्होंने कहा—'मैं नहीं जानता कि यह आम धारणा कैसे दुनिया-भर में प्रचलित हो गयी है।'

उन्होंने यह भी बताया कि जो बच्चे भेंगे पैदा होते हैं, यदि जन्म के बाद डेढ़ से लेकर तीन वर्ष की अवधि में आपरेशन करा दिया जाये, तो वे भेंगेपन से मुक्त हो सकते हैं। यदि यह अवधि निकल गयी, तो फिर पूरे जीवन उनका इस दोष से मुक्त हो पाना संभव नहीं है।

प्रो. व्हाइटब्रिज के भाषण का विषय था—मानव-शरीर क्रिया-विज्ञान में विज्ञान की उपलब्धियां एवं विफलताएं। इसमें उन्होंने कहा कि प्रकृति के इस रहस्य का कारण अभी तक समझा नहीं जा सका है कि मानव-शरीर में उसने विभिन्न अवयवों या अंशों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की व्यवस्था क्यों की है। विभिन्न जीव-जातियों के लिए भी व्यवस्था एक समान नहीं है।

उदाहरण से इसे समझाते हुए उन्होंने बताया कि यदि मेंढक की प्रकाशिक-तंत्रिका (आप्टिक नर्व) को काट दिया जाये, तो वह कुछ समय में फिर से विकसित होकर अपनी पूर्वस्थिति में आ जाती है; परंतु मनुष्य में ऐसा नहीं हो पाता। मनुष्य में प्रकाशिक-तंत्रिका का ही नहीं, उसके केंद्रीय तंत्रिका-तंत्र (नर्वस सिस्टम) की किसी भी तंत्रिका का ऐसा पुनर्विकास नहीं होता। चिकित्सा-विज्ञान भी इस स्थिति को बदलने में अभी तक असमर्थ ही रहा है। अभी तो ऐसा भी नहीं लगता कि आगामी पांच-सात वर्षों में वह इस स्थिति को बदल पायेगा।

प्रो. व्हाइटब्रिज का यह दृढ़ मत है कि मानव शरीर की संरचना और क्रियाविधि अपने आपमें जैसी भी है, उसके साथ खिल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाड़ नहीं किया जाना चाहिये। यदि शरीर का संचालन एवं संरक्षण प्रकृति के विधान के अनुसार किया जाये, तो अनेक प्रकार की शारीरिक आपत्तियों से मनुष्य अपने आपको बचाये रख सकता है।

उदाहरणार्थ, देखने के लिए मानव-शरीर में दो आंखों की व्यवस्था है। दोनों आंखों से एक साथ देखा जाना चाहिये। यदि किसी मनुष्य को कोई ऐसा काम करना पड़ता हो, जिसमें लगातार एक आंख को बंद रखकर दूसरी से देखने की आवश्यकता पड़े, तो इसकी काफी संभावना रहेगी कि दीर्घ काल तक ऐसा करने से उसकी एक आंख की प्रकाशिक-तंत्रिका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े और वह नष्ट ही हो जाये।

बिल्ली के बच्चों पर किये गये परीक्षणों से इस आशंका की पुष्टि भी हुई है। एक परीक्षण में बिल्ली के कुछ बच्चों की एक आंख काफी समय तक बंद रखी गयी। फिर देखा गया कि उनकी बंद आंख की प्रकाशिक तंत्रिका का मस्तिष्क से संबंध टूट गया।

यदि जीवन के प्रारंभिक महीनों में बच्चे की एक आंख को काफी समय तक बंद रखा जाये, तो अनुमान है कि लगभग दो वर्ष की अवधि में उसकी प्रकाशिक-तंत्रिका का मस्तिष्क से संबंध टूट जायेगा।

पत्ता भी असली-नकली

अब तो स्कूल के बच्चे भी यह जानते हैं कि पेड़-पौधे सूरज की रोशनी का इस्तेमाल करके कार्बन डाइआक्साइड गैस को कार्बोहाइड्रेटों में परिवर्तित करते हैं और सूर्य के प्रकाश से विद्युत का उत्पादन भी करते हैं। इस क्रिया को प्रकाश-संश्लेषण (फोटोसिंथेसिस) कहते हैं। सुनने में सीधी-सी लगने वाली यह क्रिया वास्तव में इतनी जटिल है कि यह कैसे निष्पन्न होती है, इसे अभी पूरी तरह समझा नहीं जा सका है। तमाम वनस्पतियों और वानस्पतिक खाद्य पदार्थों के उत्पादन का रहस्य इस एक क्रिया की अज्ञात क्रियाविधि (मेकैनिज्म) में छिपा हुआ है।

यदि यह क्रिया मानव की पकड़ में आ जाये, तो विद्युत-उत्पादन के लिए सूर्य के प्रकाश को कच्ची सामग्री के रूप में काम में लाया जा सकेगा। तब खाद्य और जैव पदार्थों की सृष्टि कारखानों में बड़े पैमाने पर करना संभव हो जायेगा तथा ईंधन के रूप में इस्तेमाल किये जाने के लिए हाइड्रोजन गैस भी सहज ही प्राप्त हो सकेगी। और भी अनेक जटिल प्रक्रियाएं, जो अभी प्रयोगशालाओं की भी पहुंच के परे हैं, कारखानों में संपन्न की जा सकेंगी।

इस दिशा में आशा की किरण के दर्शन होने लगे हैं। अमरीका की आरगोन नेशनल लेबोरेटरी के रसायन-विभाग के वरिष्ठ विज्ञानी डा. जोसेफ काट्ज़ ने हाल में कहा है कि उनकी प्रयोगशाला एक कृत्रिम पत्ती के संश्लेषण में सफल हो गयी है। पर इसकी सूचना देते हुए उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया है कि यह प्रकाश-संश्लेषण को प्रयोगशाला में दुहरा सकने की दिशा में अभी पहला कदम ही है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस कदम को इसके शोधकर्ताओं ने 'बायोमिमेटिक एप्रोच' यानी 'जैव अनुकरण प्रयास' की संज्ञा दी है। इस नयी विधि से निर्मित कृत्रिम पत्ती धूप की उपस्थिति में आधा वोल्ट बिजली का उत्पादन करती है।

यह विधि पूरी तरह विकसित हो जाये, तो दुनिया को आहार और ऊर्जा इन दो विकट समस्याओं को हल करने में बहुत मदद मिल सकेगी।

नशाबंदी—नसबंदी

एक मान्यता यह है कि शराब और अन्य नशीले पदार्थों की लत का असली कारण मनुष्य के बाहर नहीं, अपितु उसके मस्तिष्क में होता है और एक विशेष प्रकार की साइको-सर्जरी द्वारा इस लत से मनुष्य को छुटकारा दिलाया जा सकता है। इस सर्जरी के परीक्षण विश्व के अनेक देशों में चल रहे हैं।

मद्रास के सेंट्रल हास्पिटल में भी इस उपचारात्मक आपरेशन के सफल परीक्षण हुए हैं। लगभग ७० नशेबाजों पर साइको-सर्जिकल आपरेशन किये गये और उनमें से लगभग पचास व्यक्ति नशे की लत से पूरी तरह मुक्त हो चुके हैं। शेष मरीजों की हालत में भी सुधार के चिह्न स्पष्ट हैं।

इन परीक्षणों पर प्रकाश डालते हुए प्रसिद्ध न्यूरो सर्जन डा. वी. बाल सुब्रमणियम् ने बताया है कि मस्तिष्क का एक विशेष केंद्र जब अपसामान्य उत्तेजना का शिकार हो जाता है, तो मनुष्य को शराब पीने या नशा करने की प्रबल इच्छा होती है। चूंकि यह आदेश उसे स्वयं अपने मस्तिष्क से प्राप्त होता है, इसलिए इसका विरोध करने की शक्ति उसमें नहीं रहती और वह लाचार होकर उसका पालन करता है। यदि इस केंद्र को 'डिस्कनेक्ट' कर दिया जाये, तो मस्तिष्क मनुष्य को वह आदेश नहीं दे पाता। इस डिस्कनेक्शन आपरेशन को 'स्टीरियोटोड सिग्युलोमोटोमी' कहते हैं।

आजकल ऐसे बहुत-से शोध-परिणाम सामने आ रहे हैं, जिनसे अनेक मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों के संबंध में नये और पेचीदा सवाल उठ खड़े होते हैं। वही स्थिति यहां भी है। नशाबंदी हमारे संविधान के निर्देशक सिद्धांतों में से है। क्या किसी नये कानून के मातहत सभी शराबियों या नशेबाजों को उनकी इच्छा के विरुद्ध ऐसा मस्तिष्क-आपरेशन करके उन्हें नशामुक्त कराने जैसी कोई चीज हमारे समाज को स्वीकार्य होगी? नसबंदी के मामले में जोर-जबर्दस्ती का जो परिणाम हुआ, उसे देखते हुए ऐसे कार्यक्रम की संभावना बहुत ही कम है।

यों भी मस्तिष्क मानव-शरीर का केंद्र-बिंदु है। क्या उसके साथ छेड़-छाड़ से नयी पेचीदगियां नहीं पैदा हो जायेंगी, जिनसे व्यक्ति अपनी पहचान ही खो बैठे?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंजाबी कहानी :

आंखों की चमक

गुरबचन सिंह भुल्लर

मैं दफ्तर से अभी-अभी घर पहुंचा हूं। मेरी पत्नी ने दरवाजा खोला है। उसकी आंखों में एक अजीब-सी चमक है। यह चमक न जाने कितनी ही मुद्दत के बाद दिखाई दी है। चारों तरफ हर एक वस्तु की कमी और महंगाई के वातावरण में आंखों की चमक भी कम होने के साथ-साथ महंगी होती जा रही है।

'क्या बात है? तुम बड़ी चहक रही हो!' मैं उसकी आंखों की चमक से अपनी आंखें भी चमकाने के लिए पूछता हूं।

'सांस तो लो, मैं चाय बना लाऊं।' वह मेरी व्यग्रता को, बेकरारी को बनाये रखने के लिए बड़ी चंचल अदा के साथ कहती है और रसोईघर में चली जाती है।

मैं कमीज और पैंट उतारकर पास ही पड़ी कुर्सी की पीठ पर दे मारता हूं और चौकड़ी मारकर चारपाई पर बैठ जाता हूं। मैं अपनी पत्नी की आंखों की चमक के बारे में कोई अटकल, कोई अंदाजा लगाना चाहता हूं।

जब भी मैं दफ्तर से लौटता हूं, मेरी पत्नी की यही कोशिश होती है कि वह तुरंत ही मुझे किसी चिंता में न उलझाये। वह दफ्तरी काम की थकावट को भली भांति जानती है। पर फिर भी, चाय का प्याला मेरे हाथ में थमाते वक्त कई बार उसके मुंह से निकल ही जाता है—'नहाने का साबुन लेने गयी थी, कहीं भी नहीं मिला,'..... या 'राशन का आटा तो मिला नहीं, इसलिए चक्की वाले से लायी हूं, कमबख्त ने सवा दो रुपये किलो दिया है,'.....या 'न तो घी मिला और न रिफाइन्ड तेल, हारकर सरसों का तेल ही ले आयी हूं!' ऐसे मौके पर मेरी पत्नी की आंखों में एक अजीब-सी कालिख होती है।

मैं अपनी पत्नी की आंखों की आज की चमक के बारे में सोचने लगता हूं।

शायद उसे रिश्तेदारी में से कोई खुशखबरी मिली हो। मैं कई दिनों से इकट्ठी हो रही डाक देखने लगता हूं। कोई भी चिट्ठी हाथ नहीं लगती। साथ ही मेरी पत्नी की आंखों में पायी गयी चमक इस किस्म की खबर के मुकाबले ज्यादा तीव्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। ..... शायद कोई लाटरी निकली हो। .....

'मैं पूछता हूं कोई लाटरी-वाटरी निकली है क्या ?' मैं कमरे के अंदर से ही आवाज देता हूं।

'बस लाटरी ही समझो।' वह पतीला धोकर पानी डालते हुए जवाब देती है और मेरी बेखबरी बनी रहने देती है।

इस शहर में जहां रहन-सहन के स्तर की प्रतिस्पर्धा चल रही है, लाटरी भी जीवन का एक बहुत बड़ा सहारा है। और मेरी पत्नी भी मिसेस सोडी, मिसेस शर्मा और मिसेस चावला की तरह सपने देखने वाली औरतों की तरह ही आंखें बंद करके, ईश्वर का नाम लेकर टिकटों की गड्डी खोलती है और टिकट बेचने वाले को सामने आया टिकट फाड़ने के लिए कहती है। कभी वह स्नेहपाल या चेतना का हाथ लगवा-कर टिकट खरीदती है और फिर उन टिकटों के परिणामों का बड़ी व्यग्रता से इंतजार करने लगती है।

हमें दिल्ली आये अभी कुछ ही साल हुए हैं और हमारे समाने वे सभी समस्याएं और उमंगें हैं, जो बाहर से आये किसी भी व्यक्ति के सामने होती हैं। जिस मकान में हम किरायेदार हैं, उसके मालिक ने एक सूची तैयार करके हमें दे रखी है, जिसमें बताया गया है कि हम कौन-से काम कर सकते हैं और कौन-से काम नहीं कर सकते। सूची में यह हिदायत भी दी गयी है कि हम बाजार का पिसा हुआ गरम मसाला ही खायें और चटनी न खायें, क्योंकि अगर हम मसाला कूटेंगे या चटनी पीसेंगे तो उसकी रसोईघर का फर्श टूटेगा। कई बार मेरी पत्नी हैरान होकर कहती है—'यह मालिक-मकान भी ईश्वर ने एक अजीब चीज बनायी है !'

मैं उसके चिढ़े हुए मन को शांत करने के लिए कहता हूं—'भई, कइयों ने पेट काट-कर, कइयों ने कर्ज लेकर, कुछ ने हेराफेरी करके और बहुतों ने काले धन से मकान बनाये हैं। उन्हें शर्तें लगाने का हक है।'

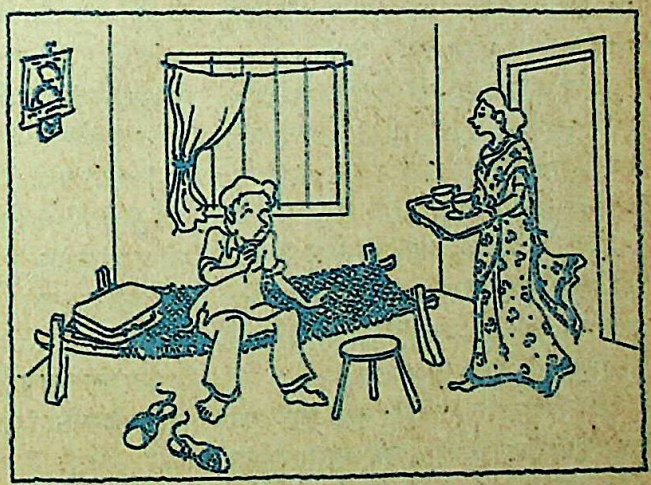

अनुवाद : संगारा सिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह ठंडी सांस लेकर कहती है—'आप चाहे कहीं से भी पैसे लाइये और डी. डी. ए. का फार्म भरिये। किराये के महल से तो अपनी झोपड़ी ही अच्छी है। मैं तो पुदीने की चटनी खाने को भी तरस गयी हूं।'

हो सकता है, लाटरी निकली हो और मेरी पत्नी एक छोटा-सा मकान बनवाने के स्वप्न देख रही हो। अपना मकान, जिसमें वह स्वतंत्रता के साथ रह सके और जब भी चाहे पुदीने की चटनी पीसकर खा सके। छोटे-से बाड़े में फूल-पौधों की क्यारियां। कितना शौक है फूलों का हमारी लाड़ली बच्ची चेतना को! हम बीच में लटके हुए हैं। नीचे मालिक-मकान और ऊपर दूसरा किरायेदार। गमले रखने के लिए भी तो हमारे पास कोई स्थान नहीं है। छह साल की बेचारी चेतना अक्सर कहती है—'पिताजी, यह मकान छोड़ दीजिये। कोई नीचे वाला मकान ले लीजिये। मैं बाड़े में खुद फूल लगाया करूंगी—रंग-बिरंगे फूल!'

और अब शायद मेरी पत्नी की आंखों में उभरे हुए मकान के बाड़े में चेतना द्वारा लगाये गये फूल भी महक रहे हैं।

फिर छोटी-मोटी चीजें भी आ ही जायेंगी। आजकल कितनी ही ऐसी चीजें हैं जो छोटे-से दुकानदार से लेकर धन्नासेठ तक हर एक के घर में जरूरी-सी मानी जाती हैं—मिक्सी से लेकर फ्रिज तक।

टेलिविजन ने तो और कई घरों की तरह हमारे घर में भी अच्छा-खासा बखेड़ा पैदा कर रखा है। बच्चे कहते हैं—और कुछ दो न दो, टी. वी. जरूर ले दो। हर गरीब मगर होशियार पिता की तरह मैं बात टाल देता हूं—'बच्चो, मुझे और तुम्हारी मम्मी को तो टी. वी. का कोई शौक है नहीं; और तुम्हें कोई रोक नहीं ... खन्ना अंकल का टी. वी. अपना ही तो है।'

एक दिन ऐसे मौके पर स्नेहपाल ने आंखें गीली करके कहा था—'वे अपनी मर्जी से टी. वी. चलाते हैं और अपनी मर्जी से किसी भी प्रोग्राम को बुरा बताकर टी. वी. बंद कर देते हैं।' फिर गुस्से में बड़बड़ाता हुआ वह कमरे से बाहर चला गया था। और मेरी पत्नी ने कहा था—'बहुत मजबूरी है—स्नेह बहुत ही भावुक लड़का है। कल वह भारत-इंग्लैंड मैच देखने गया, तो मिसेज खन्ना ने यह कहकर टाल दिया कि मैच में क्या रखा है बेटा, अपनी टीम की पिटाई ही तो हो रही है। और स्नेह घर लौटकर कितनी देर बड़बड़ाता रहा।'

चलो, पत्नी का मकान बनेगा, तो चेतना के फूल भी लग जायेंगे और स्नेह का टी. वी. भी आ जायेगा।

'हद हो गयी। इतनी देर? अभी चाय नहीं बनी?' मैं रसोईघर में घुसी हुई पत्नी को आवाज़ देता हूं।

'बस, दूध डाल दिया है। उबलने वाली है। अभी लायी।' वह शिकायत करती है कि तेल को पता नहीं क्यों आग लग गयी है। स्टोव की बत्तियां जलकर बुझ जाती हैं और धुआं छोड़ती हैं। पर आज उसके बोल पहले की तरह थके हुए, मरे हुए नहीं हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५३६

मुमुक्षु भवन पुस्तकालय
वाराणसी

मुझे एक दिलचस्प घटना याद आयी न पसंद देती है। आम तौर पर मेरे दफ्तर से लौटने पर मैं एक प्याला ही बनता है। मेरी पत्नी को चाय गरम करती है, इसलिए वह शाम को चाय नहीं पीती। पर आज अपनी खुशी के कारण उसका भी चाय पीने को दिल हो आया।

मैं एक प्याला उसके हाथों में थमाता हूं और दूसरे प्याले से खुद चाय पीता हूं। आज चाय बहुत ही स्वादिष्ट बनी है और मैं बड़ी बेसब्री से पत्नी से कहता हूं—'अब कुछ बताओ भी।'

'तुम बूझो, भला क्या बात हो सकती है ऐसी ?' उसकी आंखें शरारत से और भी चमक उठती हैं।

मैं दफ्तर की सारी थकावट भूल जाता हूं। महसूस होता है कि उसकी आंखों की चमक दिये की लौ की तरह मेरी आंखों में भी प्रवेश करती जा रही है।

'भई, पहेलियां मत बुझाओ।' मैं गुस्से का नाटक रचते हुए कहता हूं।

'आज दुपहर को मैं मिसेस मेहता के पास गयी थी। मेरे बैठे ही कप्तान मेहता की कैंटीन से भेजे हुए चार-चार किलो के घी के दो डिब्बे आ गये। एक मैं उठा लायी हूं।' वह बताती है।

मैं चाय का घूंट भरता हूं। पड़ी-पड़ी चाय कुछ कड़वी-सी हो गयी है। ठंडी भी हो गयी है। मेरी आंखों की चमक एकदम गायब हो जाती है।

दिल्ली आकर राशन-कार्ड बनवाने के चक्कर में कई हफ्ते बाजार से महंगा राशन ही ले-लेकर खाया और अंत में बड़ी मुश्किल से कार्ड बना। पहली बार बड़ी खुशी से मेरी पत्नी थैले लेकर राशन लेने गयी। वह घर लौटी, तो उसकी आंखों की चमक बिलकुल गायब थी। बल्कि उसकी आंखों में आंसू थे। वह चुपचाप बड़ी ही बेदिली के साथ चारपाई पर बैठ गयी। मैं डर रहा था कि कहीं किसी राहगीर ने कोई चुभने वाला मजाक तो नहीं कर दिया, कहीं बाकी पैसे तो नहीं गुम हो गये, कहीं ...

मेरी पत्नी एक थैले में से बाकी खाली थैले, आटे वाला लिफाफा, सूजी, मैदे, चावल और चीनी की पुड़ियां चारपाई पर रखती हुई सिसक उठी—'कहां गांव के घर में अनाज से भरी हुई बोरियां खोला करती थी, और कहां अब ये राशन की पुड़ियां खोला करूंगी !'

वह रोये जा रही थी और मैं हंसे जा रहा था। वह हर साल फरवरी-मार्च में कहती है, जरा-जरा-सी पुड़ियों के लिए लाइनों में खड़ा होना बहुत मुश्किल है, कहीं से साल-भर का गेहूं ले आओ। पर फिर वही प्रश्न खड़ा हो जाता है—'कहां से लायें ?' और अप्रैल-मई भी बीत जाता है।

मेरी पत्नी एक स्टूल खींचकर मेरी चारपाई के पास लाकर चाय के दो प्याले उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीत

तर्पण हैं हम कि जिसे देख हंसी दुनिया
तोड़ा है अपने को बार-बार हमने
एक जगह पर कैसे रह सकते थे हम
छोड़ा है शहरों को बार-बार हमने

प्यार मिला तो ठहर गये
रास न आये समझौते
लीकों पर चल नहीं सके
पांव फकीरों के जो थे
सबके सब कैसे अपना पाते हमको
रूढ़ि पर लगाया था कोलतार हमने
चलते फिरते साधू हम तो
आज कहीं रहे कल कहीं
फूल नहीं गमलों के हम वो
तालाबों के कमल नहीं
ठहर जल में कैसे बह सकते थे हम
जी डाला जीवन को धार-धार हमने

देख मुखौटे मंजिल के
जब हम झांके सागर में
दो आंसू थे छलक उठे
नैया वाली गागर में
इतनी यात्राओं के बाद जहां पहुंचे
अपने को ही पाया द्वार द्वार हमने
मंजिल हम हो नहीं सके
गीतों के चरण ही रहे
पोशाकें लड़ती देखीं
तब हम निर्वसन ही रहे
झूठे सम्मोहन को ओढ़ नहीं पाये
सपने खुद कर डाले तार-तार हमने

— वीरेंद्र मिश्र —
कृष्णकुंज, दादाभाई क्रास लेन ३, बंबई-४०००५६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत का नवजागरण

— जयचंद्र विद्यालंकार

लेखक की आंशिक आत्मकथा 'राष्ट्रीय इतिहास का अनुशीलन' की भूमिका से उद्धृत।

★

प्रेरणा का उदय

अपने राष्ट्र के अतीत जीवन का अथवा इतिहास का अध्ययन-मनन हमें बड़ी बारीकी से करना चाहिये—इस प्रेरणा का उदय प्रायः हमारे आधुनिक पुनर्जागरण के साथ-साथ ही हुआ। उस पुनर्जागरण का आरंभ हुआ पश्चिम यूरोपियों की मार हम पर पड़ने से। वह मार तो पड़ने लगी थी सोलहवीं सदी के आरंभ से ही, जबकि यूरोपी हमारे समुद्र पर एकाधिकार जमाने लगे; पर उसका दूसरा और अधिक विकट दौर शुरू हुआ था अठारहवीं सदी के मध्य से, जब कि वे भारत की भूमि को भी जीत-कर हमें गुलाम बनाने की चेष्टा करने लगे।

उस दूसरे दौर के प्रायः सौ बरस पहले से भारत के अनेक प्रांतों में एक किस्म का पुनरुत्थान हो रहा था। महाराष्ट्र से उठ-कर वह पुनरुत्थान की लहर बुंदेलखंड और ब्रजभूमि होती हुई पंजाब और नेपाल तक पहुंची थी। 'गंगा के कांठे, सिंध, गुजरात, आंध्र और तमिल मैदानों में अर्थात् भारत-वर्ष के सबसे उपजाऊ प्रांतों में वह पुनरु-त्थान प्रकट नहीं हुआ।' नये पुनर्जागरण की लहर भी महाराष्ट्र से ही उठी।

अठारहवीं सदी के मध्य में यूरोपी आक्र-मण का दूसरा दौर जब शुरू हो रहा था, तभी भारत के मुगल साम्राज्य की बागडोर भी मराठा दरबार के हाथ आ गयी थी, और यों समूचे भारत के नेतृत्व की जिम्मे-दारी महाराष्ट्र के पेशवा पर थी। १७५६ ई. में पेशवा बालाजीराव ने कोंकण तट के अपने एक विद्रोही सरदार को दबाने के लिए बंबई के अंग्रेजों से सहायता मांगने की आत्मघाती भूल की। मराठा सेना के सामने वह सरदार समर्पण कर चुका, तभी क्लाइव और वाट्सन मांगी 'सहायता' लेकर आ गये और उन्होंने उसके विजयदुर्ग पर अंग्रेजी झंडा फहरा दिया।

उस दुर्ग के भीतर तब मराठा राज्य का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक अधिकारी हरि दामोदर नवलकर अपने युवक बेटे रघुनाथ के साथ था। इन बाप-बेटों ने आपस में उस स्थिति पर विचार किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि यूरोपियों का मुकाबला हम भारतीय तब तक न कर सकेंगे, जब तक हम उनके नये विज्ञान और शिल्प को सीख नहीं लेते। यह पहचान भारत की पुनर्जागरण-धारा का मूल स्रोत थी।

हरि दामोदर को उसी बरस झांसी का सूबेदार बनाकर भेजा गया, जहां १७६५ में उसकी मृत्यु के बाद से १७९६ तक उस पद पर उसका बेटा रघुनाथ रहा। रघुनाथ हरि ने स्वयं अंग्रेजी सीखी और उसके द्वारा भौतिकी (फिजिक्स) और रसायन (केमिस्ट्री) के नये विज्ञान पढ़े। उसने झांसी में एक वेधशाला (आब्ज़र्वेटरी), एक परखशाला (लैबोरेटरी) और एक पुस्तकालय स्थापित किये और उनके विकास के लिए खुले हाथों खर्च किया। उस पुस्तकालय में भारत के सुदूर प्रांतों से हस्तलिखित पोथियां मंगा-मंगाकर संग्रह की जातीं। रघुनाथ हरि की उन संस्थाओं को हम आज नहीं देख पाते; क्योंकि १८५८ में झांसी को सर करते हुए अंग्रेज सेनापति सर ह्यू रोज ने उन्हें तोप के गोलों से भूनकर जमींदोज कर दिया था। किंतु इनमें से प्रत्येक संस्था कहां थी, सो स्थानीय जनता को अभी तक याद है। (महारानी लक्ष्मीबाई इसी रघुनाथ हरि नवलकर के सबसे छोटे भाई की पुत्र-वधू थी।)

भारत को अपने अतीत का ठीक-ठीक

राजा राममोहन राय

रूप भी पहचानना चाहिये, इस बात को स्पष्ट रूप से रघुनाथ हरि ने समझा था कि नहीं, सो हम अभी नहीं जानते। पर प्राचीन पोथियों के संग्रह और संभाल के लिए उसने जो निष्ठा और तत्परता दिखायी, उससे जान पड़ता है कि इतिहास के महत्त्व को भी उसने पहचाना था।

झांसी में पनपते हुए जागरण-प्रेरित विचार कानपुर, प्रयाग, बनारस आदि के मराठा-बस्तियों में फैलते और उनकी भनक विशेषकर बनारस से और पोथियों की तलाश करने वाले दूतों द्वारा, भारत के दूर के प्रांतों में भी पहुंचती। १७९६ ई० में जब रघुनाथ हरि स्वर्ग सिधारा, तब तक भारत का मुख्य भाग स्वतंत्र था और अंग्रेजों द्वारा पददलित बंगाल में राममोहन राय २२ बरस के हो चुके थे। राममोहन पर झांसी की हवा का असर हुआ इसकी पूरी-पूरी संभावना है। अंग्रेजों की देखा-देखी भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राधाकांत देव जैसे बंगाली विद्वान अपने पुरातत्त्व की खोज में सत्रह सौ अस्सियों से ही लग चुके थे।

राममोहन ने रघुनाथ हरि के पहचाने इस सत्य को दोहराया या फिर से देखा कि यूरोप के नवीन ज्ञान को अपनाये विना भारतीयों की गति नहीं है; साथ ही यह भी कहा कि भारत की जनता तक वह ज्ञान जनता की भाषाओं में भारत के पुराने ज्ञान के साथ समन्वित होकर ही पहुंच सकता है। भारत के इतिहास का पुनरुद्धार इस समन्वय की बुनियाद है।

राममोहन के जीवन-काल (१७७४-१८३३) में ही भारत का मुख्य भाग अंग्रेजों के अधीन हो गया। महाराष्ट्र में सीधा अंग्रेजी शासन जिस पीढ़ी ने आता देखा, उसमें राममोहन के छोटे समकालीन बाळशास्त्री जांभेकर (१८१२-४६) थे। वे राममोहन के विचारों से प्रभावित हुए, और भारत के पुराने ज्योतिष तथा आधुनिक ज्योतिष का तुलनात्मक अध्ययन कर उन्होंने मराठी में ज्योतिषशास्त्र पर ग्रंथ लिखा, जो भारतीय वाङ्मय में आधुनिक विज्ञान की हमारे जानते पहली कृति है। बाळशास्त्री ने प्राचीन इतिहास की खोज में भी भाग लिया और अपने शिष्य दादाभाई नौरोजी (१८२४-१९१७) को प्रेरणा दी कि भारत के आर्थिक जीवन का अध्ययन कर उस पर प्रकाश डालें। इसका यह अर्थ है कि बाळशास्त्री ने अपने देश के अतीत और विद्यमान जीवन के समचे अनुशीलन

गोपाल हरि देशमुख 'लोकहितवादी'

की आवश्यकता देखी-समझी थी।

जागरण की दूसरी धारा

रघुनाथ हरि का जाग उठना भारत को सिर पर खड़े चोरों के फंदे से बचा न सका। देश ऐसी गहरी मोहनिद्रा में पड़ा था कि उसे जल्दी-जल्दी जगाकर गुलाम बनने से बचा लेना संभव न हुआ। और महाराष्ट्र की जिस पहली पीढ़ी ने अंग्रेजों की गुलामी का जुआ अपने गले में जन्म से पड़ा देखा, उसमें फिर रघुनाथ हरि का एक समानधर्मा पैदा हुआ।

अंतिम पेशवा का सेनापति बापू गोखले १८१८ के तीसरे अंग्रेज-मराठा-युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देकर भी देश की स्वतंत्रता को बचा न सका था। बापू गोखले के पेशकार हरिपंत देशमुख थे। १८२३ में उनके एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम उन्होंने गोपाल रखा। हरिपंत अपने उस बेटे को अपनी आंखों देखी और दूसरी अनेक घटनाओं की कहानी सुनाया करते, जिनसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

दीपावली विशेषांक

'तम से मुझे ज्योति की ओर ले जाओ' की प्रार्थना करने वाले इस देश के लिए इस वर्ष ज्योति-पर्व दीपावली विशेष आह्लादक और अर्थपूर्ण है। कारण, ज्योति ही जीवन है, ज्योति ही व्यक्ति और राष्ट्र की सच्ची लक्ष्मी है और वह सतत जागरूकता से रक्षणीय है, इसका गहरा अनुभव, दृढ़-संकल्प इस वर्ष पिछले दिनों देश ने पाया है।

नवनीत का प्रत्येक अंक ही ज्योति की ओर बढ़ने का एक विनम्र मगर संकल्पपूर्ण प्रयत्न होता है—और दीपावली विशेषांक विशेषतः।

दीपावली इस वर्ष ११ नवंबर को है और नवनीत का संपादकीय विभाग इस समय विशेषांक की तैयारी में रात को देर तक चिराग जलाकर व्यस्त रहता है।

कहते हैं, सौंदर्य सर्वाधिक सम्मोहक तब होता है, जब वह कुछ खुला और कुछ छिपा हो; इसी तरह कुशल गृहिणी भोज के सब पकवानों का पता अतिथियों को पहले से नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगने देती—हां, व्यंजनों की महक से उनकी भोजन-रसिकता को गुदगुदाती है।

दीपावली अंक के व्यंजनों की महक आप भी लीजिये :

* ताकि राष्ट्र को ऐसी कालरात्रि फिर न देखना पड़े :
देश में प्रजातंत्र को जीवंत-ज्वलंत वस्तु बनाने के लिए विशिष्ट विचारकों के कुछ सुझाव।

* इस समय मेरी कलम की नोक पर :
हिंदी के विभिन्न लेखक इस समय किस पुस्तक की रचना में लीन हैं।

* 'सिद्धार्थ' के लेखक नोबेल पुरस्कार-जयी हर्मन हेस का महानतम उपन्यास—पुस्तक-संक्षेप में।

* देश को चाहिये एक नयी टेक्नोलाजी : प्रमुख भारतीय विज्ञानियों से एक चर्चा।

* आर्थिक और सामाजिक प्रश्नों पर विशेष लेख।

* सदा की तरह जीवन-आस्था को पुष्ट करने वाले संस्मरण।

*रसपूर्ण कविताएं—मर्मस्पर्शी कहानियां-उद्बोधक लघुकथाएं।

पृष्ठ २५६ मूल्य ३ रुपये ६० पैसे

अपने न्यूज-एजेंट से अभी अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

व्यवस्थापक,
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड
आशीष बिल्डिंग, ३३५, बेलासिस रोड,
ताडदेव, बंबई-४०००३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाराष्ट्र के अपनी स्वतंत्रता गंवाते वक्त और उससे ठीक पहले के सामाजिक और राजनीतिक पतन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश पड़ता। होनहार गोपाल उन दशाओं और उनके कारणों पर बराबर विचार करता। युवक होते तक अपने देश की दुर्दशा के मूल कारणों और उन्हें दूर करने के उपायों के बारे में उसके विचार स्पष्ट, परिपक्व और शृंखलाबद्ध हो गये। १८४८-४९ में उसने मराठी साप्ताहिक 'प्रभाकर' में 'लोकहितवादी' नाम से लेखमाला लिखकर उन विचारों को देश के सामने रखा।

उन लेखों में गहरी वेदना है अपने देश की गुलामी और दुर्दशा के लिए, और तड़पन है स्वतंत्र वायु में सांस लेने की। जैसा

स्वामी दयानंद

कि स्वर्गीय शं. द. जावडेकर ने लिखा है 'लोकहितवादी' के ये स्वतंत्रतावादी विचार तत्कालीन बंगाली सुधारकों के विचारों से ..... अधिक प्रगत दिखाई देते हैं' ..... 'सर्वांगीण सुधारणा के (ये) सर्वव्यापक और सर्वस्पर्शी विचार लोगों के सामने रखकर उन्हें अपनी राजकीय और आर्थिक अवनति पर से आंखें खोलकर ऊपर उठने का मार्ग दिखाने का कार्य ..... यदि किसी ने ठीक ठीक किया तो..... लोकहितवादी ने है और ये विचार 'अपने देश की आर्थिक और राजकीय परिस्थिति को लक्ष्य में रखकर पनपे थे तथा इन 'तात्त्विक विचारों' की तह में 'मूलग्राही दृष्टि और बेधड़क वृत्ति' है।

ये फुटकर विचार नहीं हैं, पूरा तत्त्व दर्शन है भारत के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक पतन के कारणों का और उन्हें दूर करने के उपायों का; और उस दर्शन को जन्म दिया है एक अत्यंत संवेदनाशील सहज-स्वाधीन हिम्मत वाले दिल ने और स्पष्टदर्शी सूक्ष्मदर्शी मन ने। स्वदेशी और ब्रिटिश माल-बहिष्कार के मंत्र पहले-पहल इन्हीं लेखों में उच्चारे गये और 'स्वभाषा के अभिमान की ललकार भी भारतीयों को पहले पहल इन्हीं में दी गयी। कहना चाहिए कि बीसवीं शताब्दी में भारत का राष्ट्रीय स्वतंत्रता का संघर्ष इन्हीं की नींव पर खड़ा हुआ।

गोपाल हरि देशमुख जैसा समूचे राष्ट्रीय जीवन का तत्त्वदर्शी विवेचक क्या राष्ट्रीय इतिहास के महत्त्व को देखने से चक सकता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था? उनसे पहले बाळशास्त्री जांभेकर और डा० भाऊ दाजी लाड नयी ऐतिहासिक खोज का परिचय महाराष्ट्र को दे चुके थे, और 'लोकहितवादी' ने स्वयं इतिहास के अनेक ग्रंथ लिखे, जिनमें उनकी सहज-सरल भाषा और जोरदार शैली में लिखी 'ऐतिहासिक गोष्ठ' के तीन खंड बहुत प्रसिद्ध हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा की कल्पना

आयु में गोपालराव देशमुख से एक बरस छोटे एक और महापुरुष हुए गुजरात के मूलशंकर-दयानंद। इनकी जीवन-कहानी एक तरह से सुपरिचित है। अपने देश की जहालत और दुर्दशा से व्याकुल हो बाईस बरस की आयु में वे ज्ञान की तलाश में घर से निकले और सन १८४७ में नर्मदा के किनारे महाराष्ट्र संन्यासियों की एक मंडली से मिले, उसके नेता पूर्णानंद सरस्वती से संन्यास-दीक्षा ली और दयानंद नाम पाया। इसके बाद भी पूर्णानंद और उनके साथियों के संपर्क में रहे, जिनका इन पर अपनी जीवन-यात्रा की पहली मंजिल में विशेष प्रभाव पड़ता रहा। १८४८-४९ में जब 'लोकहितवादी' की लेखमाला ने मराठी शिक्षित वर्ग का ध्यान खींचा, तब इस साधु-मंडली के साथ दयानंद के भावुक विचारशील मन को भी उसने प्रभावित किया होगा।

सन १८५५ में दयानंद हरद्वार के कुंभ-मेले पर पूर्णानंद से मिलने जा रहे थे, तब उत्तर भारत की जनता में स्वतंत्र होने के लिए उभार आ रहा था। ग्वालियर के जयाजीराव शिंदे से जनता आशा करती थी कि वह उसका नेतृत्व करे; पर शिंदे का रुख उलटा था। बारह बरस बाद उसी इलाके में दयानंद ने साधु-मंडलियों में ऐसा एक 'मंत्र' सुना था :

कंपनी किसकी जोरू ? सिंधिया किसका साला ?

पी प्याला, मार भाला .....

इस तरह के 'मंत्र' या नारे १८५५-५७ में ही चले होंगे, और इनसे प्रकट होता है कि उत्तर भारत की जनता अंग्रेजी शासन को चुनौती देने को किस प्रकार उठा चाहती थी। बहुत संभव है, दयानंद सरस्वती ने भी इसी समस्या पर विचार-परामर्श के लिए हरद्वार का रास्ता पकड़ा था। पर इनके प्रश्न सुनकर बूढ़े पूर्णानंद ने कहा—इन प्रश्नों पर हमारे शिष्य विरजानंद ने विशेष विचार किया है, उनके पास मथुरा जाओ। यदि दर्शन या व्याकरण आदि के प्रश्न होते, तो पूर्णानंद ने उन्हें स्वयं सुलझा दिया होता; प्रकटतः प्रश्न किसी नये विषय के थे। दयानंद ने हरद्वार से गढ़वाल जाने का संकल्प कर रखा था; उस यात्रा से लौटकर मथुरा जाना तय किया।

किंतु गढ़वाल से गढ़मुक्तेसर लौट, आगे दक्खिन-पच्छिम जाने के बजाय ये दक्खिन-पूरब चले गये मथुरा के बजाय कानपुर; और आगे पांच बरस तक विरजानंद के पास जाने का अपना संकल्प टाले रखा।

[शेष पृष्ठ १४२ पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदर्श पत्रकार

शिवकुमार गोय

गांधीजी आदर्श पत्रकार भी थे। पत्रकारिता को उन्होंने जन-जागरण और राष्ट्र के पुनर्निर्माण के साधन के रूप में अपनाया था। इस दृष्टि से वे सुरेंद्रनाथ बनर्जी, जी. सुब्रह्मण्य अय्यर, अरविंद घोष, मतिलाल घोष, लोकमान्य तिलक, गणेशशंकर विद्यार्थी की श्रेणी के पत्रकार थे, जिनके लिए पत्रकारिता एक मिशन थी।

उन्होंने 'इंडियन ओपीनियन,' अंग्रेजी साप्ताहिक 'यंग इंडिया,' हिंदी तथा गुजराती साप्ताहिक 'नवजीवन,' 'हरिजन' तथा 'हरिजन सेवक' का संपादन किया था। ये पत्र उनके निर्भीक, निष्पक्ष व प्रेरक संपादकीयों के कारण केवल भारत में ही नहीं, विदेशों में भी पढ़े जाते थे।

इन पत्रों के प्रकाशन का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा था—'इन अखबारों के जरिये मैंने सत्याग्रह की शिक्षा जनता को यथाशक्ति देना शुरू किया। पहले "यंग इंडिया" व "नवजीवन" की थोड़ी-सी प्रतियां ही छपा करती थीं; किंतु कुछ ही दिनों में बढ़ते-बढ़ते ४० हजार के आस-पास पहुंच गयीं।'

पत्रकारिता के क्षेत्र में गांधीजी ने स्वतंत्र लेखन के जरिये प्रवेश किया था। सन १८८८ में जब वे कानून की शिक्षा प्राप्त करने लंदन पहुंचे, तब उनकी उम्र केवल १९ वर्ष थी। उन्होंने वहां के प्रसिद्ध 'टेलिग्राफ' एवं 'डेली न्यूज' आदि दैनिक पत्रों में भारत के विषय में लिखना शुरू किया। लंदन की वेजिटेरियन सोसायटी के मुख पत्र 'वेजिटेरियन' में उन्होंने शाकाहार, भारतीय पर्व तथा भारतीयों के जीवन पर अनेक लेख लिखे। इसमें उनका पहला लेख 'भारतीय शाकाहार' ७ फरवरी १८९१ के अंक में प्रकाशित हुआ। फिर उन्होंने इस पत्र में नियमित रूप से स्तंभ लिखना शुरू किया।

दक्षिण अफ्रीका में निवास के दौरान उन्होंने भारतीयों के साथ बरते जाने वाले भेदभावों पर प्रकाश डालने के लिए वहां से टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदू, अमृत बाजार पत्रिका, स्टेट्समैन आदि भारतीय पत्रों को लेख एवं इंटरव्यू भेजे। इस सिलसिले में वे अनेक वरिष्ठ पत्रकारों के निकट संपर्क में भी आये।

सन १९०४ में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका से 'इंडियन ओपीनियन' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। दक्षिण अफ्रीका व अन्य देशों के प्रवासी भारतीयों की आवाज संसार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के कोने-कोने में पहुंचाने और प्रवासी भारतीयों में राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने के उद्देश्य से उन्होंने इसका प्रकाशन आरंभ किया था। 'इंडियन ओपीनियन' एक साथ ही हिंदी, गुजराती, उर्दू और अंग्रेजी इन चार भाषाओं में निकाला गया। लेकिन साधनों की कमी आड़े आयी और हिंदी तथा उर्दू संस्करण ज्यादा दिनों तक नहीं चल सके।

जब सन १९१३ में तमिल और हिंदी भाषी लोग सत्याग्रह में कूद पड़े और गोलियों का निशाना बनने लगे, तो गांधीजी ने अनुभव किया कि 'इंडियन ओपीनियन' में इस प्रकार के बलिदानों के समाचार तमिल व हिंदी में प्रकाशित होने चाहिये, ताकि उन्हें पढ़कर अन्य तमिल व हिंदीभाषी लोगों में चेतना आये। उन्होंने ३१ दिसंबर १९१३ के 'इंडियन ओपीनियन' में लिखा—'सत्याग्रह का संघर्ष जैसा इस बार चला और इस समय चल रहा है, तवारीख में शायद ही उसकी मिसाल मिले। उसका सच्चा श्रेय इस देश में बसने वाले हिंदी और तमिलभाषी भाइयों और बहनों को है। उनका आत्मबलिदान सबसे बढ़-चढ़कर है। उनमें कितने तो गोरे सिपाहियों की गोली के शिकार बन चुके हैं। उनके सम्मान और स्मृति के रूप में हमने इस पत्र में तमिल तथा हिंदी में समाचार देने का निश्चय किया है।'

गांधीजी ने 'इंडियन ओपीनियन' में भारत, ब्रिटेन, तथा अन्य देशों के समाचार व न्यूज-लेटर भेजने के लिए संवाददाता भी नियुक्त किये। श्री दादाभाई नौरोजी तथा श्री गोपाल कृष्ण गोखले को उन्होंने पत्र लिखा कि कृपया 'इंडियन ओपीनियन' के लिए कुछ संवाददाता तैयार करें, जो अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी व तमिल में साप्ताहिक न्यूज-लेटर या समाचार भेज सकें।

वे हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि इस अखबार के जरिये लोगों को प्रवासी भारतीयों की समस्याओं के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, धर्म, पर्व, भारतीय वीर-वीरांगनाओं, भारतीय संतों एवं कवियों के विषय में भी जानकारी प्राप्त हो। उन्होंने इसमें ताल्सताय, लिंकन, मैजिनी, ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे देश-विदेश के महापुरुषों के जीवन और कार्यों का परिचय भी प्रस्तुत किया।

भारत में उन्होंने जो पहला पत्र निकाला, वह था 'सत्याग्रह'। इसे उन्होंने बिना रजिस्ट्रेशन कराये ही ७ अप्रैल १९१९ को बंबई से शुरू किया। इस साप्ताहिक के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रथम अंक से ही उन्होंने बदनाम रौलेट एक्ट का डटकर विरोध किया। निर्भीक विचारों व समाचारों के कारण थोड़े समय में ही 'सत्याग्रह' देश-भर में लोकप्रिय हो गया। जब होम-रूल लीग की बंबई शाखा ने अंग्रेजी में साप्ताहिक 'यंग इंडिया' के प्रकाशन की योजना बनायी, तो गांधीजी से उसका संपादक बनने का अनुरोध किया। गांधीजी ने इसे स्वीकार कर लिया। उसी प्रकाशन के अंतर्गत ७ अक्तूबर १९१९ से गुजराती मासिक 'नवजीवन' का प्रकाशन भी प्रारंभ हुआ। गांधीजी इन दोनों पत्रों के संपादक थे तथा श्री महादेव देसाई एवं श्री शंकरलाल बैंकर प्रकाशक तथा मुद्रक।

गांधीजी निर्भीक ही नहीं निष्पक्ष पत्रकार भी थे—पूर्वग्रह से सर्वथा मुक्त। १९२० में 'यंग इंडिया' ही असहयोग आंदोलन का मुखपत्र था। फिर भी उसके १८ दिसंबर १९२० के अंक में उन्होंने लिखा—'यंग इंडिया के स्तंभ असहयोग आंदोलन के विरुद्ध मत व्यक्त करने वालों के लिए सदैव खुले हुए हैं।'

सन १९३२ में गांधीजी सविनय अवज्ञा आंदोलन के सिलसिले में जेल में बंद थे। उन दिनों उन्होंने अस्पृश्यता-निवारण के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता अनुभव की और इस उद्देश्य से अलग से एक पत्र निकालने का निश्चय किया। ८ जनवरी १९३३ को उन्होंने उद्योगपति श्री घनश्यामदास बिरला को पत्र लिखकर 'हरिजन' निकालने की इच्छा व्यक्त की। ११ फरवरी १९३३ को 'हरिजन' का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। श्री आर. वी. शास्त्री संपादक नियुक्त किये गये। इसके प्रथम अंक में 'मंदिर के द्वार हरिजनों के लिए खोले जाने' का समाचार दिया गया। मुख्य संपादकीय भी अस्पृश्यता के विरुद्ध था। गांधीजी पत्र का संचालन पूना जेल से करते रहे।

'हरिजन' शीघ्र ही हरिजन-आंदोलन, अस्पृश्यता-निवारण तथा ग्रामोद्योग का संदेशवाहक बन गया। इस पत्र को राजनीति से अलग ही रखा गया और इसमें गांवों की समस्याओं व प्रगति से संबंधित सामग्री का ही समावेश होता था।

२४ सितंबर १९३८ के 'हरिजन' में गांधीजी ने लिखा—'हरिजन समाचारपत्र नहीं है। अपितु यह आम जनता का विचार पत्र है। इसका उद्देश्य आम जनता की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करना तथा सामाजिक क्रांति की दिशा में चेतना उत्पन्न करना है।'

सरकार ने १८ अक्तूबर १९३९ को 'हरिजन' को चेतावनी दी कि वह सत्याग्रह आदि के समाचार उसे दिखाये बिना प्रकाशित न करे। २४ अक्तूबर को गांधीजी ने लिखा—'यदि प्रेस-सलाहकार को सत्याग्रह संबंधी प्रत्येक सामग्री भेजी जाने लगी, तो प्रेस की स्वतंत्रता समाप्त हो जायेगी। समाचारपत्रों की स्वतंत्रता हमारा परम अधिकार है। अतः हम इस प्रकार के आदेश को नहीं मान सकते।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रिटिश सरकार की तानाशाही के आगे झुकने की अपेक्षा गांधीजी ने पत्रों का प्रकाशन स्थगित कर देना उचित समझा। १० नवंबर १९३८ के 'हरिजन' में उन्होंने 'पाठकों से विदा' शीर्षक लेख में लिखा—'मैं आप लोगों से साप्ताहिक वार्तालाप करने से वंचित हो रहा हूं। पत्र का स्थगन एक सत्याग्रही द्वारा गलत सरकारी आदेश के प्रति सम्मानजनक विरोध है।'

'नवजीवन' का प्रकाशन उन्होंने आजादी का संदेश जन-जन तक पहुंचाने तथा भारतीय जनता में चेतना उत्पन्न करने के उद्देश्य से आरंभ किया था। अतः उन्होंने लिखा—'मैंने "नवजीवन" चलाने का बीड़ा उठाया है। मैं इस कार्य में गुजराती जनता का आशीर्वाद चाहता हूं, तथा विद्वानों से पत्र में लेख आदि भेजने का आग्रह तथा जनता से इसका प्रचार करने में मदद मांगता हूं।'

गांधीजी व्यवसायी पत्रकार नहीं थे। इसलिए उन्होंने पत्र को विज्ञापन से सर्वथा मुक्त रखा तथा घोषणा की—'इस साप्ताहिक में विज्ञापन बिलकुल नहीं लिये जायेंगे। दक्षिण अफ्रीका में "इंडियन ओपीनियन" निकालने पर मुझे अनुभव हुआ कि विज्ञापनों से जनता को कोई लाभ नहीं पहुंचता। विज्ञापनों का खर्च भी तो अंततः जनता पर ही पड़ता है तथा नैतिक-अनैतिक अनेक प्रकार के विज्ञापन जनता की निगाह में पड़ते हैं, जिनका असर अच्छा नहीं होता।' ५ जुलाई १९१९ के 'यंग इंडिया' में उन्होंने लिखा—'जब तक "यंग इंडिया" की ओर से सामग्री और नीति की देखरेख की अनुमति मुझे मिली हुई है, तब तक मैं इसके माध्यम से देश के सामने एक ऐसे कार्य की योजना प्रस्तुत करना चाहता हूं, जिसे मैं बुनियादी महत्त्व का मानता हूं।'

उन्होंने स्पष्ट किया—'पत्र के स्तंभों में ऐसी सामग्री जिसका न लेखकों को और न मुझे ही कोई विशेष ज्ञान हो, देने की अपेक्षा उपयोगी, प्रामाणिक सामग्री का दिया जाना अच्छा है।'

गांधीजी आदर्शवादी थे। पत्रकार के पद को वे बहुत जिम्मेदारी व गरिमा का मानते थे। इस संबंध में उन्होंने स्पष्ट लिखा—'मैं यह मानता हूं कि किसी भी सुसंचालित पत्र में गैरजिम्मेदार और गलत सूचनाओं पर आधारित आलोचना कदापि नहीं होनी चाहिये।'

जब कभी ब्रिटिश सरकार ने भारतीय समाचारपत्रों पर अंकुश लगाकर उनकी स्वतंत्रता को समाप्त करने का प्रयास किया, गांधीजी ने उस कदम का डटकर विरोध किया। ब्रिटिश सरकार के १९१० के समाचारपत्र कानून का विरोध करने के लिए २४ जून १९१९ को इंडियन प्रेस एसोसिएशन के तत्त्वाधान में बंबई में 'बाम्बे क्रानिकल' के संपादक श्री बी. जी. हार्निमैन की अध्यक्षता में हुई एक सभा में गांधीजी ने कहा—'कहा गया था कि इस कानून का उपयोग केवल अपराधी पत्रकारों के विरुद्ध होगा, किंतु "न्यू इंडिया"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाक्यदीप

जहां संदेह समाप्त हो जाते हैं, वहां विज्ञान भी समाप्त हो जाता है।

* बुद्धिमान मनुष्य निश्चय ही प्रगतिशील मनुष्य होता है।

* कोई जरूरी नहीं कि कोई विशिष्ट विज्ञानी विशिष्ट व्यक्तित्व वाला भी हो; मगर विशिष्ट अध्यापक सदा विशिष्ट व्यक्तित्व वाला होता है।

* अच्छा काम दूसरे के हाथ से नहीं किया जा सकता।

* जो लोग काम बहुत करते हैं पर सोचते बहुत कम हैं, वे काम के नहीं होते।

* नकारात्मक खोजें भी खोजें होती हैं।

* गलतियां होना गलत विज्ञान नहीं है, मगर गलतियां कबूल न करना गलत विज्ञान है।

* जीनियस की भूलें भी उसकी सफलताओं जितनी ही उत्थानकारी होती हैं।

—डा. प्योत्र कापित्सा

[सुविख्यात रूसी भौतिकीविद्]

के मामले में अब तक जो हुआ, उससे कहा जा सकता है कि यह वचन एक भ्रम था।

'श्रीमती एनी बेसेंट पर हुए आक्रमण से भी यह भ्रम दूर हो गया है। अब इस कानून के अंतर्गत प्रतिष्ठित पत्रकारों पर जुल्म किया जा रहा है। तब हम इसे सुरक्षित कैसे रह सकते हैं?'

गांधीजी संपादकों के कर्तव्य के प्रति बहुत सजग और आग्रही थे तथा मानते थे कि उन्हें अपने लेखकों पर पूर्ण नियंत्रण व संयम रखना चाहिये। इसलिए उन्होंने कहा—'मैं अपने समाचारपत्रों के लेखकों एवं पत्रकारों से कहता हूं कि उन्हें जो कुछ कहना है, खुल्लमखुल्ला कहें। यह हमारा अधिकार व कर्तव्य है। किंतु हमें यह कार्य शिष्टता व संयम की मर्यादाओं के भीतर रहकर करना है।'

पत्रकारों के कर्तव्य पर प्रकाश डालते हुए गांधीजी ने 'हिंद स्वराज्य' में लिखा था—'किसी भी समाचारपत्र का पहला काम है, लोगों के भावों को समझकर प्रकट करना। दूसरा लोगों में जिन भावनाओं की आवश्यकता हो उन्हें जाग्रत करना और तीसरा लोगों में अगर कोई दोष हो तो उन्हें किसी भी मुसीबत की परवाह न कर निर्भीकता से सबके सामने रख देना।

इस प्रकार गांधीजी के लिए पत्रकारिता स्वराज्य-प्राप्ति का एवं जनता में चेतना उत्पन्न करने का पवित्र साधन था, न कि निरा व्यवसाय। —'जीवन विहार'

पार्लमेंट स्ट्रीट, नयी दिल्ली-११००

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्ण गुरु

—काका कालेलकर

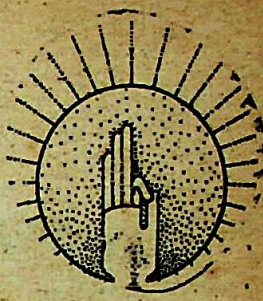

सामाजिक जीवन का कमोबेश विकास अनेक पशु-पक्षियों में भी देखने में आता है। जलचर सृष्टि में भी वह होगा ही; परंतु हमने अब तक उसका अध्ययन नहीं किया। मनुष्य की विशेषता यह है कि कुदरत से सुविधा पाते समय जो अनुभव इकट्ठा होता है, उसे नयी पीढ़ी को अर्पण करके पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रगति साधना उसके लिए संभव होता है। इस प्रकार इकट्ठा हुआ अनुभव नयी पीढ़ी को देने के लिए उसने शिक्षण की व्यवस्था योजी और उसमें से गुरु-शिष्य का संबंध पैदा हुआ। यह संबंध ज्यादा महत्त्व का मालूम होने पर गुरु का माहात्म्य बढ़ा।

हमारा सांस्कृतिक स्वभाव ही ऐसा है कि हम आदर्श को ऊपर चढ़ाते-चढ़ाते ठेठ छप्पर तक ले जाते हैं और उससे भी संतोष न होने पर उसे आसमान तक ले जाते हैं। गुरु के बिना ज्ञान नहीं, गुरु के बिना मोक्ष नहीं—ऐसा कहते-कहते हम 'गुरु ही परमेश्वर है' यह कहने तक आगे बढ़े। गुरु की प्रगति कहां तक है, यह देखना हमारा काम नहीं; गुरु को परमेश्वर मानकर चलना है; गुरु तो ईश्वर से भी श्रेष्ठ है—यह भावना पनपी। 'गुरु गोविंद दोनों खड़े किसके लागूं पाय', यह पंक्ति सब जानते ही हैं। गुरु के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है, यह दलील हमारे यहां सर्वमान्य हुई। गुरु को ही ईश्वर मानिये, उसकी सेवा कीजिये, उसे सर्वस्व अर्पण कीजिये, इत्यादि बातें भी अपने आप आ गयीं।

गांधीजी ने इस भूमिका का विरोध किये बिना सारा प्रस्थान ही बदल दिया। गुरु को ही ईश्वर मानो, गुरुः साक्षात् परब्रह्म—इसका अर्थ करते हुए उन्होंने कहा—'परमेश्वर ही सच्चा और संपूर्ण गुरु हो सकता है'; अन्य गुरु तो केवल विद्यागुरु हैं। सच्चा गुरु मिलने के बाद मोक्ष की साधना करना भी शेष नहीं रहता।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

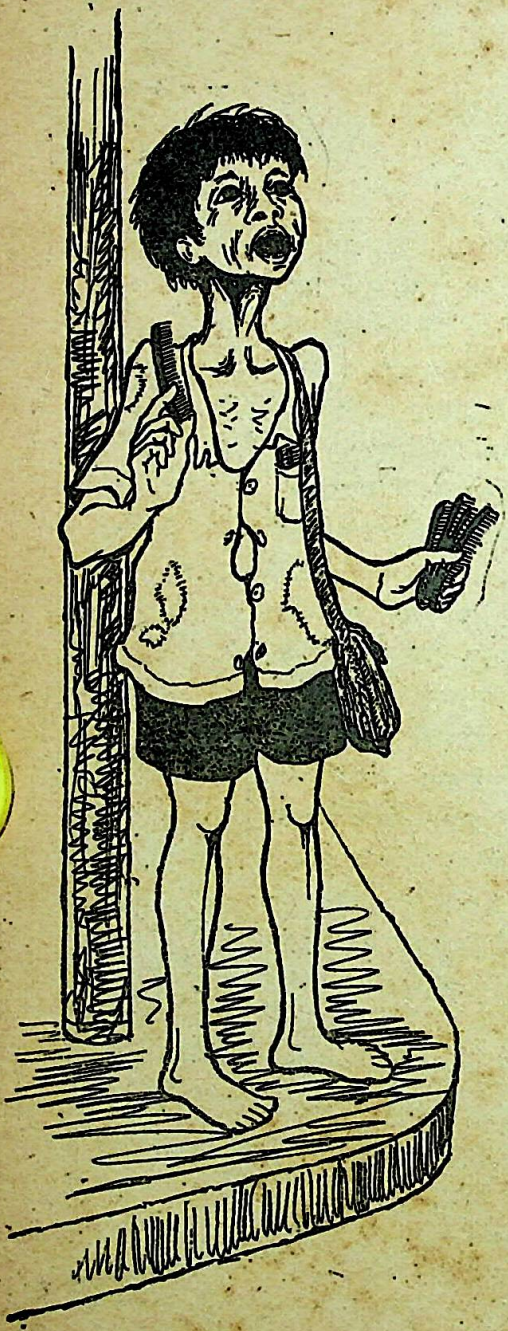

एक बच्चा कई चेहरे

• सुखवं

उम्र के चौदहवें वर्ष में उसने अभी जवा की दहलीज पर पांव रखा ही था। बंदूक की एक अंधी गोली उसके सीने छेद गयी और बाजार के उस चौक में, ज एक बहुत बड़ा जुलूस पुलिस की दह में इधर-उधर बिखर रहा था, वह स पर गिर पड़ा, जहां कुछ और जख्मी पुर और स्त्रियों की लाशें पड़ी हुई थीं। अ तक जुलूस के बिखर रहे आदमियों में किसी-किसी का नारा आतिशबाजी तरह आसमान में उठ जाता और चा ओर के वातावरण की भयानकता जैसे उठती। ..... कुछ देर के बाद वहां पुलिस थी, पुलिस की जीपें थीं, गोलियों बिंधी हुई दस लाशें थीं, और दहशत-भ नजरें थीं, और खून था और उसकी था—उम्र के चौदहवें वर्ष में उसने अ जवानी की दहलीज पर पांव रखा ही था

कुछ देर पहले वह इस चौक में ख अपनी तीखी आवाज में कंघियां बेच र था। वह बहुत खुश था कि आज उस

अक्तूब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अढ़ाई रुपये का माल बिक गया था, और रात को वह अपनी छोटी बहन के साथ 'अलबेला' फिल्म देखने जाने वाला था। तभी किसी शोर मचाती, बिफरी हुई नदी की तरह सामने से एक जुलूस आया था, उसमें से उठ रहे नारों से आसमान गूंजने लगा था, और देखते-देखते सारा चौक जुलूस के आदमियों से भर गया था। एक बाढ़ थी कि चारों ओर समा नहीं रही थी और सीमाएं टूटने की हद तक आ गयी थीं। तभी सामने से पुलिस की जीपें दौड़ती हुई आयी थीं, उनमें से धड़धड़ करते सिपाही उतरे थे, और फिर जैसे बम फटते हैं, जुलूस में से सैकड़ों कंठों के नारे आसमान तक को छेद गये थे। एक दहशत फैली थी, जोश उठा था, लाठियां उभरी थीं, हलचल हुई थी, सिर फटे थे, खून बहा था ..... और फिर जब गोली चली थी तो वह अपनी कंघियां संभाले एक दुकान के पायदान पर खड़ा आंखें फाड़े यह सब देख ही रहा था कि उसकी चीख निकली थी और वह वहीं धम्म से गिर पड़ा था—बंदूक की एक अंधी गोली उसके सीने को छेद गयी थी। .....

और आज जब मैं इसकी इस मौत के बारे में सोचता हूं, तो मुझे रह-रहकर स्टीफन स्पेंडर की वह कविता याद आती है, जिसमें एक ऐसे ही लड़के की मौत का वर्णन है, और स्पेंडर कहता है कि वह अभी इतना छोटा और इतना अनजान था कि बंदूक की आंखों में खटक तक नहीं सकता था। वह तो सिर्फ एक चुंबन के योग्य बालक था! .....

हालांकि मुझे इसका नाम नहीं मालूम, लेकिन मैं इसे काफी अरसे से जानता हूं, इसकी तीखी आवाज को पहचानता हूं। इसे मैंने रोज इस चौक में सड़क के किनारे खड़े होकर कंघियां बेचते देखा है। सिर के सूखे बालों के नीचे इसका वह चेहरा मैं कभी नहीं भूल सकता, जिस पर बचपन की मुस्कराहट बड़ी गंभीर बनी हुई थी और दो आंखों में उस दर्द की छाया थी, जो मुस्कराहटों के कत्ल होने पर पैदा होती है। हां, जब बचपन अपनी क्रीड़ाएं छोड़कर रोटी कमाने की चिंता में लग जाता है, तो उसकी मुस्कराहट और उसकी दो आंखों की रोशनी इसी प्रकार अपने सपनों का संसार खो बैठती है। सरदियों की ठिठुरी हुई रातों में मैंने इसे फटी हुई कमीज और निकर में सिकुड़े हुए यहां कंघियां बेचते देखा है। बरसात में भी कई बार इसने भीगी हुई इसी कमीज और निकर में यहां खड़े होकर कंघियां बेची हैं। सिर्फ गरमियों के दिन इसे रास आते थे—क्या हुआ अगर सड़क पर धूप में खड़े-खड़े इसका शरीर तप उठता था और तब कई बार इसकी इच्छा होती कि यहां से दौड़ जाये और किसी गहरी बावड़ी के पानी में डुबकी लगाकर देर तक बैठा रहे। .....

लेकिन आज इस चौक में शोक की छाया है और इसकी तीखी आवाज कहीं सुनाई नहीं देती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन इस चौक में खड़े होकर कंघियां बेचना ही इसका धंधा नहीं था। मुझे याद आता है कि मैंने इसे और भी कई जगह देखा है—यही आवाज, यही चेहरा, यही आंखें और यही मुस्कराहट मैं पहले भी देख चुका हूं।

शायद तब भी मैंने इसे देखा था, जब मैं इन्हीं सड़कों पर अपनी बेकारी की गर्दिश में गुजरा करता था और भूख को मारने के लिए एक घटिया-से होटल में चाय पीने को बैठता था। तब उस होटल में यह अपनी ऊंघती हुई आंखों में से झांकता हुआ मेरे पास आता था और चाय का आर्डर लेकर कुछ ही देर में अपने मैले-कुचैले हाथों में चाय का कप उठाये मेज पर रख जाता था। तब भी यही कमीज और यही निकर इसका लिबास था, और कंधे पर एक मैला-सा कपड़ा होता था, जिससे यह मेज को साफ करता था। मुझे लगता था कि जिस तरह इसका सिर और पांव नंगे हैं, उसी तरह इसका जीवन भी नंगा है। और मैं चाय के घूंट भरता हुआ अपनी उस बेकारी में सोचता कि क्या यह इसी तरह कंधे पर मैला-सा कपड़ा रखे जिंदगी के दिन काटता रहेगा?

शायद उन दिनों भी मैंने इसे देखा जब हमारी इस 'चाल' के सामने यह मंजली इमारत बन रही थी और यहां करने वालों का शोर मचा रहता था। से शाम तक मजदूर इमारत बनाने में रहते। अपने बेकार समय में कभी अपने छोटे-से कमरे में बैठा हुआ मैं इमारत तरफ देखने लग जाता—खासकर उन दूरों को, जो सिरों पर तसलों में ईंटें, पत्थ रेत आदि ढो रहे होते। वे इन चीजों किसी मशीन की तरह इमारत की चो पांचवीं या छठी मंजिल पर पहुंचा रहे हों उन मजदूरों में पुरुषों के मुकाबले में स्त्रि और लड़कों की संख्या ज्यादा होती क्योंकि स्त्रियों की मजदूरी पुरुषों की म दूरी से आधी थी। पर वे स्त्रियां लड़के काम प्रायः पुरुषों जितना ही क थे। पुरुष मजदूर सिर्फ कुछ-एक थे, खास-खास कामों पर लगे हुए थे। .....

हां, तो वहीं मैं इसे देखता था। कमीज और यही निकर पहने और सिर और नंगे पांव सुबह से शाम तक सिर पर तसला उठाये ईंटें ढोता रहता। इसका बाप भी यहां काम करता था, इस मां भी यहां काम करती थी। दुपहर समय आधे घंटे की छुट्टी होती, तो यह मां-बाप के साथ दूसरे मजदूरों के बी बैठकर खाना खा रहा होता।

तब मुझे अपना बचपन याद आता, मैं स्कूल में पढ़ता था और दुपहर की छु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में दोस्तों के साथ चाट वगैरह चटपटी चीजें खाता और अंत में पिपरमिंट या टाफी चूसता हुआ लड़कों के साथ खेलता। लेकिन अब वह बचपन नहीं रहा था। अब मुझे अपना और अपने बूढ़े माता-पिता का पेट भरने के लिए रोजगार की कड़वाहटें चखनी पड़ रही थीं। और तब यह भी अपने मां-बाप के साथ बैठा, रोटी के सूखे निवाले चबाता हुआ बचपन की उम्र में रोजगार की कड़वाहटें चख रहा था। लेकिन ईंट या पत्थर ढोने का ऐसा काम रोज-रोज थोड़े ही मिलता है। इस बार उनका सौभाग्य था कि बाप के साथ उसे भी काम मिल गया था, और साथ में इसकी मां को भी, और तीनों एक ही जगह काम पर लगे हुए थे।.....

लेकिन इससे पहले शायद मैंने इसे तब देखा था, जब यह हमारी इस इमारत में दूध देने आया करता था। उन दिनों यह निकर के बजाय घुटनों तक ऊंची मारकीन की मैली-सी धोती पहने होता था, जो कई स्थानों पर मोटे-मोटे टांकों से सिली हुई होती थी। इसके कपड़ों से या सच पूछो तो इसके शरीर में से हमेशा गोबर की हल्की-हल्की-सी गंध आती रहती। यह किसी दूध वाले भैया के तबेले में काम करता था—उसकी भैंसों को नहलाता, उनका गोबर उठाता, उनका दाना-पानी करता। सुबह मुंह-अंधेरे और दोपहर ढले, दिन में दो बार यह दूध के छोटे-बड़े दो-दो, तीन-तीन डिब्बे दोनों हाथों में लटकाये घर-घर दूध देने जाता और उन घरों के बाशिंदे इसके शरीर में से आती गोबर की गंध के कारण इसकी तरफ से मुंह फेर लेते। सुबह यह दूध देने इतनी जल्दी आता कि अपनी उस गुलाबी नींद में से उठने का मेरा मन न होता; लेकिन इसके बार-बार पुकारने पर आखिर उठना ही पड़ता। और जब मैं दूध ले रहा होता, तो कई बार मुझे लगता, जैसे इसकी ऊंघती हुई आंखें कह रही हैं, कह रही हैं ..... मैं फिर बत्ती बुझाकर बिस्तर पर लेट जाता और अपनी गुलाबी नींद में खो जाता।

फिर, जब मैं म्युनिसिपैलिटी के उस छोटे-से स्कूल में पढ़ाने लगा, तो मैंने देखा कि उन दिनों यह वहां लगा हुआ था। बड़े आराम की नौकरी थी वह। सुबह दस बजे से शाम के पांच बजे तक इसे काम करना पड़ता था और वह भी किसी-किसी समय, हमेशा नहीं। वह काम था—स्कूल के कंपाउंड में दो बार झाड़ू देना, छुट्टी होने के बाद कमरों की सफाई करना, विद्यार्थियों के पीने के लिए ड्रमों में पानी भरना, और ऐसे ही दूसरे और छोटे-मोटे काम। स्कूल के पिछवाड़े ही यह अपनी मां के साथ टीन की छोटी-सी कोठरी में रहता था, जो शायद स्कूल की तरफ से इन्हें दी गयी थी। कभी कोई काम न होता, तो यह बैठा-बैठा उकता जाता। तब कभी इसकी छोटी बहन वहां आ जाती और यह उसके साथ खेलने लगता, या कभी अपना 'खजाना' खोलकर बैठ जाता—रंग-बिरंगे कागजों के टुकड़े, फटी हुई तस्वीरें, छोटी-छोटी सलेटियां, टाफियों-चाकलेटों के चमकदार कागज, टूटी हुई निबें, ऐसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही अन्य छोटी-छोटी चीजें।

लेकिन जब दुपहर की छुट्टी होती और लड़के-लड़कियां शोर मचाते हुए कक्षाओं में से निकलते और खेल-कूद में लग जाते, यह एक तरफ स्टूल पर बैठा उन्हें खेलते हुए देखता रहता। इससे पहले उस स्कूल में एक और नौकर था, जो सुना है कि वहां चालीस वर्ष नौकरी पर रहा था और अगर एक दुर्घटना में मर न गया होता, तो और पांच-छह साल नौकरी करके रिटायर होता। उसके मरने के बाद शायद उसकी जगह ही यह आया था। और मैं सोचता था कि यह भी उसी की तरह स्कूल में झाड़ू देते, पानी भरते और शिक्षकों के लिए बाजार से पान और सिगरेटें लाते हुए चालीस वर्ष यहां काट देगा। ..... लेकिन नहीं, यह वहां ज्यादा दिन नहीं रहा। शायद यह खुद ही वहां से भाग गया था, या इसे निकाल दिया गया था, क्योंकि हेडमास्टर के पास कई बार शिकायतें पहुंच चुकी थीं कि यह काम करने के बजाय विद्यार्थियों के साथ खेलता रहता है।

और फिर मैंने इसे तब देखा, जब यह लोकल स्टेशनों के प्लैटफार्मों पर हाथ में लकड़ी का डिब्बा, पालिश की डिबियां और ब्रश उठाये बूट-पालिश किया करता था, या लोकल गाड़ियों में पिपरमिंट और टाफियां बेचा करता था। या फिर तब देखा था.....

लेकिन इस चौक में खड़े होकर कंघियां बेचते हुए इसे मैं काफी अरसे से देखता आ रहा था, और सोचता था कि बचपन, जो जवानी की दहलीज पर पांव रख रहा था, आज किन रास्तों से गुजर रहा है! बचपन का वह फूल आज किस वातावरण में खिल रहा है। लेकिन वह फूल अधिक समय तक खिला न रह सका। जवानी की दहलीज पर पांव रखते-रखते यह एक अंधी गोली का निशाना बन गया।.....

और अब फिर-फिर से स्पेंडर मेरी जबान पर आता है और कहता है :

बहार की ऋतु थी, जब बंदूकें गोलियों की आवाजों में बातें कर रही थीं; लेकिन वह लड़का जो अंजीर के वृक्ष के नीचे मरा पड़ा है, अभी इतना छोटा और इतना अनजान था कि बंदूक की आंखों में खटक तक नहीं सकता था। वह तो सिर्फ चुंबन के योग्य बालक था। जब वह जीवित था, तो फैक्टरियों के भोंपुओं ने उसे कभी नहीं बुलाया न ही होटलों के दरवाजे उसके अंदर आने के लिए खुले। उसका नाम कभी समाचार-पत्रों में नहीं छपा। दुनिया की दीवार उसी तरह खड़ी रही, जबकि उसकी जिंदगी सट्टा-बाजार की किसी अफवाह की तरह भटकती रही। और देखो, इस लड़के की बेमोल जिंदगी को देखो—होटलों के हिसाब और नयी फाइलों की नजर से बेमोल जिंदगी। दस हजार गोलियों में से एक गोली एक मनुष्य को मारती है। लेकिन मैं पूछता हूं कि अंजीर के वृक्ष के नीचे मरे पड़े एक इतने छोटे और इतने अनजान लड़के की मौत के लिए क्या इतना सारा खर्च उचित था?

—बी १९, सन एंड सी,
जयप्रकाश रोड, बंबई-४०० ०६१

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे केक क्यों नहीं खा लेते?

डा. कुसुम भार्गव

राजमहल को चारों ओर से भूखी प्रजा ने घेर लिया था। विलासी राजा मदिरा पिये मदहोश पड़ा था। उच्च सरकारी अधिकारी महारानी से प्रार्थना कर रहे थे कि आप महल की छत पर चढ़कर एक बार तो प्रजा को देख लीजिये और उसे सांत्वना दीजिये, अन्यथा अनर्थ हो सकता है।

महारानी छत पर गयी। उसने भूखी प्रजा की विशाल भीड़ को देखा और अधिकारियों से पूछा कि ये क्या चाहते हैं। उत्तर मिला, इनके पास खाने को रोटी नहीं है। महारानी ने चट से उत्तर दिया कि इनसे पूछो कि अगर रोटी नहीं है, तो ये केक क्यों नहीं खा लेते? उस विलासी नारी को यह पता ही नहीं था कि जिसके पास खाने को रोटियां नहीं, उसका रसोईघर मिठाइयों और केकों से नहीं भरा होता।

अच्छा ही हुआ कि सरकारी अधिकारियों ने महारानी का संदेश जनता तक नहीं पहुंचाया, वरना उसे सुनकर भूखी और उतावली जनता शायद उसी क्षण उस हृदयहीन महारानी के चिथड़े कर डालती। मगर ऐसे संवेदनशून्य शासक की रक्षा कौन और कब तक कर सकता है, जिसे अपनी प्रजा के कष्टों का बोध ही न हो, जो केवल विलासिता में जी रहा हो।

वह महल था फ्रांस के राजा लुई सोलहवें का और उसे घेरकर खड़ी भीड़ महज रोटियों की भूखी न थी; उसके हृदय में वाल्तेयर और रूसो ने नागरिक-अधिकारों और लोकतंत्र की भूख जागृत कर दी थी। उस भीड़ के हाथों में रूसो की पुस्तकें थीं और वह स्वेच्छाचारी राजतंत्र को मिटाने के लिए आतुर हो उठी थी।

रोटियों के अभाव में जनता को केक खाने की सलाह देने वाली महारानी थी लुई की पत्नी मारी आंत्वानेत। आस्ट्रिया के सम्राट लियोपोल्ड की छोटी बहन मारी ने पंद्रह वर्ष की आयु में फ्रांस के सम्राट लुई १६ वें के साथ विवाह किया था। यह विवाह उसकी सत्ता की भूख को तो शांत कर सका, पर उसके उफनते यौवन और उद्दाम वासना से छलकते हृदय की प्यास को नहीं बुझा पाया। वह शीघ्र ही स्वीडन के काउंट एक्सेल फेरसेन के प्रेमपाश में बंध गयी तथा पुंश्चली का जीवन बिताने लगी।

मारी को फ्रांस की जनता के सुख-दुःख में तनिक भी दिलचस्पी न थी। वह तो उसके पसीने की कमाई से भरे गये राजकोश को अपने ऐयाशी-भरे जीवन पर लुटा रही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। प्रजा से यह तथ्य छिपा न था और उसका असंतोष विस्फोटक स्थिति में पहुंच चुका था।

लुई १६ वां हवा के रुख को पहचान रहा था। १७८९ में ही वह समझ गया था कि अब अंत करीब आ गया है। उस वर्ष फ्रांस में जनता का रोष उफन पड़ा था और उसने बास्तील के शाही सैनिक दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। यदि लुई चाहता, तो वह उसी समय अपनी कुलटा महारानी मारी और अपने तीनों बच्चों को लेकर फ्रांस से भाग सकता था। एक ओर मारी का भाई लियोपोल्ड उन्हें आस्ट्रिया में शरण देने के लिए तैयार था; दूसरी ओर मारी का चहेता काउंट एक्सेल उन्हें स्वीडन ले जाना चाहता था। मगर लुई कुछ निर्णय कर ही न सका।

उसे अब भी विश्वास था कि अंततः उसकी प्रजा उसके प्रति परंपरागत आस्था प्रकट करेगी और वह फ्रांस की गद्दी पर बैठा रह सकेगा।

स्थिति जब पूरी तरह बेकाबू हो गयी, तब लुई १६ वें को होश आया और उसने मारी तथा उसके चहेते काउंट एक्सेल के आग्रह पर १७९० में पेरिस से भागने का निश्चय किया। लुई ने नौकर का भेस धरा और मारी ने नौकरानी का, और दोनों अपने महल के पिछले दरवाजे से निकलकर अंधकार में विलीन हो गये। उन्हें विश्वास था कि महल के कर्मचारी उनके प्रति वफादार हैं। पर उनके भागने के कुछ समय बाद ही महल के कर्मचारियों ने यह खबर क्रांतिकारियों को दे दी और यह भी बता दिया कि वे किस वेश में महल से भागे हैं।

क्रांतिकारी सजग हो गये और लुई तथा मारी ज्यों ही वेरेनीज पहुंचे, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। क्रांतिकारी उन्हें राजधानी ले आये और उन पर आरोप लगाया कि वे अपना सिंहासन सुरक्षित रखने के लिए आस्ट्रिया के सम्राट की मदद मांगने जा रहे थे।

पेरिस में यह खबर पहुंचते ही कि शाही परिवार को कैद करके वहां लाया जा रहा है, सब लोग अपने घरों से निकलकर सड़क के दोनों ओर खड़े हो गये। मगर वे सब एकदम चुप थे। जब राजा-रानी उनके सामने से गुजरे, तो न तो किसी ने उन्हें धिक्कारा, न किसी ने उनका जय-जयकार ही किया। इतनी विशाल भीड़ और इतनी अनुशासित! सचमुच बहुत अजीब लग रहा था। लेकिन असली बात थी कि भीड़ डरी हुई थी। क्रांति के नेताओं ने पेरिस के सार्वजनिक स्थलों पर बड़े-बड़े पोस्टर लगवा दिये थे कि जो कोई राजा का जय-जयकार करेगा, उसे कोड़े लगाये जायेंगे और जो उसका अपमान करेगा, उसे फांसी पर लटका दिया जायेगा।

शाही परिवार को तुलेरीज महल में नजरबंद कर दिया गया। मगर १७९२ में जब जनता की भीड़ ने महल पर धावा बोल दिया और वह लुई तथा मारी के रक्त की प्यासी हो उठी, तो उन्हें उनके बच्चों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहित टैंपल जेल भेज दिया गया। लुई को वहीं से अदालत ले जाया गया और १७९३ की जनवरी में उसकी गरदन गिलोटीन के नीचे रखकर धड़ से अलग कर दी गयी।

चंद महीने बाद मारी आंत्वानेत को उसके बच्चों से अलग कर दिया गया तथा साधारण कैदियों की जेल कीसियरजेरी में बंद कर दिया गया। उस समय वह केवल ३७ वर्ष की थी। मगर दो सप्ताह के भीतर उसके सारे बाल सफेद हो गये। फिर भी उसने जेल-जीवन धैर्यपूर्वक झेला।

मारी को भी क्रांतिकारी अदालत के सामने खड़ा किया गया और उस पर आरोप लगाया गया कि उसने फ्रांस की युद्ध-योजना शत्रु को बता दी है। यह तो सभी को पता था कि मारी का अंत क्या होगा; मारी स्वयं भी इससे परिचित थी। अदालत ने उसे गिलोटीन द्वारा मौत की सजा सुना दी।

मारी की जिंदगी का आखिरी दिन आ पहुंचा। १६ अक्तूबर १७९३ को सवेरे ही क्रांतिकारियों की ओर से नियुक्त प्रमुख जल्लाद हेनरी सैम्सन उसकी कोठरी में तेजी से घुसा। उसने मारी के बाल मुट्ठी में पकड़कर उसे इतने जोर से झटका दिया कि वह फर्श पर जा गिरी। सैम्सन ने जेब से कैंची निकाली और उसकी खूबसूरत मगर सफेद लटें काटकर अपनी जेब में रख लीं। फिर उसने उसके दोनों हाथ पीठ के पीछे बांध दिये।

इस वेश में मारी को जेल से बाहर लाया गया, और लकड़ी के एक छकड़े पर लाद

मारी आंत्वानेत

'हुई अंत नत जिसकी ग्रीवा' (बच्चन)

दिया गया। छकड़े पर लकड़ी की एक बेंच थी। मारी उस पर बैठ गयी। पर कैसा गजब था! इस स्थिति में भी उसमें महारानी-जैसी गरिमा टपक रही थी। छकड़े को एक घोड़ा खींच रहा था। चारों ओर अपार भीड़ थी और छकड़ा चूं-चूं-चर्र-मर्र करता आगे बढ़ता जा रहा था।

सूरज निकल आया था, फिर भी सवेरे का मौसम ठंडा था। सड़क के किनारे खड़े लोग नारे लगा रहे थे—'फ्रांसीसी गणतंत्र जिंदाबाद' और 'स्वेच्छाचारिता मुर्दाबाद'। रास्ते के मकानों के बाशिंदे खिड़कियों में से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मारी को धिक्कार रहे थे। कोई उस पर थूक देता, तो कोई उसे देखकर सीटी बजाता। न किसी के चेहरे पर समवेदना थी, न किसी की आंखों में आंसू।

सिर झुकाये मारी अपने स्वेच्छाचारपूर्ण जीवन के अंतिम चरण में प्राप्त उस अपमान को धैर्यपूर्वक सहन कर रही थी। लेकिन जब भीड़ में से किसी ने आवाज कसी कि अब थोड़ी ही देर में यह मुसीबत हमारे सिर पर से खत्म हो जायेगी, तो उससे रहा न गया। उसने धीरे-से ओंठ खोले और एक ऐसा वाक्य कहा, जिसे उसकी राजनैतिक मेधा का प्रमाण, शाप अथवा भविष्यवाणी कुछ भी कहा जा सकता है। वह बोली—'मेरी मुसीबतें तो थोड़ी देर में हमेशा के लिए खत्म हो जायेंगी; लेकिन तुम्हारी नहीं। तुम्हारी मुसीबतें तो अब शुरू होंगी।'

मारी लोकतंत्र और गणतंत्र से सर्वथा अपरिचित थी। न जाने कैसे उसे यह बोध हुआ कि राजतंत्र में मुसीबत की जिम्मेदारी राजा की होती है, लेकिन लोकतंत्र तो जनता का सिरदर्द होता है। और, मारी का यह वाक्य फ्रांस के लिए ही नहीं, संसार के प्रत्येक लोकतंत्र के लिए सही सिद्ध हुआ। फ्रांस ने अपनी उस मुसीबत से बचने की कोशिश की, तो उसे तीन नैपोलियन मिले और अंततः उसने यह सीख लिया कि लोकतंत्र की जिम्मेदारी निवाहे बिना लोकतंत्र को कायम नहीं रखा जा सकता।

जिस जगह आजकल पेरिस का 'प्लेस दे ला कन्कोर्द' है, वहां गिलोटीन लगाया गया था। जेल से वहां तक पहुंचने में छकड़े ने पूरा एक घंटा लिया। जब मारी गिलोटीन के समीप पहुंची, तो जल्लाद सैम्सन का दिल भर आया, उसके मन में करुणा न जाने कहां से फूट पड़ी। वह पदच्युत महारानी का वध करने से तो इन्कार नहीं कर सकता था; लेकिन उसकी यंत्रणा को कम कर सकता था। उसने निश्चय किया कि मारी को जल्दी से जल्दी गंड़ासे के नीचे पहुंचा दे।

मारी को खुद बहुत जल्दी थी अपने उस पति से मिलने की, जिसे वह जीवन में निरंतर धोखा देती रही थी। वह इतनी फुर्ती से गिलोटीन के मंच पर चढ़ी कि उसका एक जूता निकलकर गिर गया। ऊपर पहुंचकर उसने धीरे-से कोई प्रार्थना की और बहुत तेज आवाज में जनता को एक संदेश दिया—'मेरे बच्चो, अलविदा! मैं तुम्हारे पिता से मिलने जा रही हूं।'

उसका वाक्य मुश्किल से पूरा हुआ था कि सैम्सन ने उसकी गरदन गिलोटीन के चौखटे पर टिका दी और पल-भर में ऊपर से गंड़ासा गिरा और मारी की शाही गरदन एक ही झटके में साफ हो गयी। सिर चौखटे के एक ओर गिरा तथा धड़ दूसरी ओर। मृत्यु में ही नहीं, जीवन में भी मारी के सिर और धड़ की दिशाएं विपरीत ही रही थीं। यदि उसने विवेक से जीवन जिया होता, तो उसके लिए शायद यह घड़ी न आती, हालांकि फ्रांस की मुक्ति का पर्व नहीं टल सकता था।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आस्कर वाइल्ड: कला-चिंतन

नंदकिशोर मित्तल

परिवेश

१६ अक्तूबर १८५४ को जनमे आस्कर वाइल्ड ने विद्यार्थी-जीवन में ही अपनी प्रतिभा से लोगों को चकित कर दिया था। अपनी कहानियों, उपन्यासों, नाटकों और कविताओं में उन्होंने कला के मान्य घेरों को तोड़कर, काव्यमयता को नये आयाम दिये हैं। पर कला के मूलभूत तकाजों की उन्होंने कभी अवहेलना नहीं की। जितना उन्हें काव्यगत सौंदर्य से लगाव था, उतना ही उन्हें जीवन और जिजीविषा से प्यार था।

सन १८९० के आस-पास वे अपनी ख्याति के चरम बिंदु पर थे। वह ऐसा समय था, जब यूरोप औद्योगिक क्रांति के दौर से गुजर रहा था। उस समय मनुष्य कई तरह के विचारों के चौराहे पर खड़ा था। रूढ़ियों और मान्य धारणाओं के दायरे टूट रहे थे। ऐसे में वाइल्ड ने समाजवाद को युग की आकांक्षा बताते हुए लेख लिखा। उसमें उन्होंने कहा :

'आज समाजवाद सबसे बड़ी आवश्यकता इसलिए है कि इसके आने के बाद व्यक्ति दूसरों के लिए नहीं जियेगा। आज इस नियति से कोई नहीं बच सकता। किंतु समाजवाद मनुष्य को उसकी इस नियति से मुक्त कर देगा ..... संपत्ति पर व्यक्तिगत स्वामित्व अनैतिकता है..... आदमी आज तक सुख-दुःख को नहीं, जिंदगी को खोजता रहा है। अब वह किसी को सताये बिना, किसी के सहारे के बिना, खुद अपने प्रयत्नों से प्राप्त हो सकेगी ..... ऐसी स्थिति की तलाश यूनानियों को भी थी। मगर वह उनके विचारों तक ही सीमित रही, वे उसे पा नहीं सके। कारण, वे गुलाम रखते थे और उन्हें पालते थे। इसकी तलाश पुनर्जागरण-काल में भी हुई। पर कला के अलावा, वे जीवन में इसे नहीं पा सके। कारण, उनके पास भी गुलाम थे और वे उन्हें भूखों मारते थे। हमारा यह समाजवाद पूर्ण होगा, जिससे व्यक्ति अपनी पूर्णता को पा सकेगा।'

वाइल्ड की कल्पना की यह स्थिति मनुष्य कभी प्राप्त कर पायेगा या नहीं, यह एक अलग बात है। किंतु इस पैम्फलेट के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशित होते ही ब्रिटेन के उच्च-वर्गीय लोग, जो संपत्ति पर व्यक्तिगत अधिकार को ईश्वरीय व्यवस्था मानते थे, वाइल्ड के दुश्मन हो गये। इस वर्ग की ओर से उनकी रचनाओं पर प्रहार होने लगे। मगर इससे उनकी ख्याति में कमी नहीं आयी। अलबत्ता वे एक विवादास्पद व्यक्ति हो गये।

परंतु आगे चलकर इन लोगों ने उन्हें गैरकानूनी सेक्स के अपराध के एक मुकद्दमे में उलझा दिया, और उनसे बदला ले लिया। मुकद्दमे के दौरान उन्हें पूरी तरह बदनाम किया गया। उन्हें तीन साल की सजा हुई और उनका सार्वजनिक एवं साहित्यिक जीवन समाप्त हो गया। मृत्यु-पर्यंत वे उस गुमनामी और बदनामी के अंधेरे में खोये रहे। किंतु जब यह शोर थमा और उनके साहित्य का पुनराकलन हुआ, वे अंग्रेजी साहित्य की एक महान प्रतिभा स्वीकार किये गये। यह कम आश्चर्य की बात नहीं कि आज के युवा संत श्री दत्ता बाल को वाइल्ड के उपन्यास 'प्रोर्ट्रेट ऑफ़ डोरियन ग्रे' में आध्यात्मिकता का एक पहलू नजर आता है।

विचार

कलाकार सौंदर्य का सर्जक है।

कला का लक्ष्य कलाकार को छिपाना और कला को प्रकट करना है।

आलोचक वह है, जो सुंदरता को दूसरी तरह से अनूदित करता है, या अपने प्रभावों को नये रूप में प्रस्तुत करता है।

आलोचना चाहे श्रेष्ठतम हो या बुरी से बुरी, उसका रूप अपने आपमें आत्मकथा सा होता है।

वे लोग जो सुंदरता में कुरूपता ढूंढ़ते हैं, वे भ्रष्ट होने के साथ-साथ फूहड़ भी हैं। यह एक मूलभूत दोष है।

जो सुंदरता में सौंदर्य ढूंढ़ते हैं, वे संस्कार-शाली हैं। उन्हीं के लिए आशा है।

इन चुने हुए लोगों के लिए सुंदरता केवल सौंदर्य है।

पुस्तकें नैतिक या अनैतिक नहीं होतीं। पुस्तकें या तो अच्छी लिखी हुई होती हैं, या बुरी लिखी हुई। बस, बात इतनी-सी है।

मनुष्य का नैतिक जीवन कलाकार के विषय-वस्तु का एक अंग हो सकता है। लेकिन कला की नैतिकता एक अपूर्ण माध्यम का पूर्णता से प्रयोग करने में है।

कलाकार कुछ सिद्ध नहीं करना चाहता। जो वस्तुएं सत्य हैं, क्या उन्हें कोई प्रमाणित कर सकता है?

किसी प्रकार के नैतिक आचरण से कलाकार को कोई सहानुभूति नहीं होती। किन्हें मान्य आचारों से कलाकार की सहानुभूति अक्षम्य है। ये उसे रूढ़ और जड़ बनाते हैं।

कलाकार विकृत नहीं होता। वह हर वस्तु को अभिव्यक्ति दे सकता है।

भाषा और विचार कलाकार के लिए कला के औजार हैं।

गुण और दोष, अच्छाई या बुराई कलाकार के लिए केवल विषय-वस्तु के अवयव हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप की दृष्टि से हर कला संगीतज्ञ का संगीत है। अनुभूति और प्रभाव की दृष्टि से हर कला अभिनेता का कौशल है।

हर कला सतह भी है और प्रतीक भी। जो सतह की गहराई में उतरते हैं, वे इस जोखिम के लिए खुद जिम्मेदार हैं। जो प्रतीक को पढ़ना चाहते हैं, उसके खतरों के लिए वे खुद जिम्मेदार हैं।

कला जीवन को नहीं, अपने चाहने वालों को प्रतिबिंबित करती है।

एक ही कृति के बारे में तरह-तरह के विभिन्न विचार मिलना उसकी शक्ति, उसकी अद्भुतता और उसकी ताज़गी (नयेपन) का प्रमाण है।

आलोचकों में जब मतभेद होता है, तो समझ लेना चाहिये कि कलाकार में निजत्व और कृतित्व में एकता है, संगति है।

सारी कलाओं का (भौतिक दृष्टि से) कोई उपयोग नहीं।

मैंने अपने जीवन को अपनी प्रतिभा दे दी है। मैंने अपनी बुद्धि और कौशल को अपनी कला में उतार दिया है।

कला का प्रारंभ अमूर्त अलंकरण से होता है। प्रारंभ में वह शुद्ध कल्पनाशीलता और आनंद है, जिसका यथार्थ में कोई अस्तित्व नहीं। यह प्रारंभिक अवस्था है।

इसके बाद इसकी अद्भुतता से जीवन आकर्षित होता है। इसके वैचित्र्य से चकित होता है। इस प्रकार यह अपने प्रशंसकों के क्षेत्र में प्रवेश करती है।

कला जीवन को कच्चे माल के एक हिस्से के रूप में काम में लाती है; उसकी पुनर्रचना करती है, उसे ताजे और नये आकार देती है, जो हमारी हकीकत, हमारी घटनाओं और सपनों से बिलकुल निरपेक्ष होते हैं। यह निरपेक्षता ही कला और हमारे यथार्थ के बीच काव्यमय सौंदर्य की एक अभेद्य दीवार है। मगर यह एक व्यवस्था है।

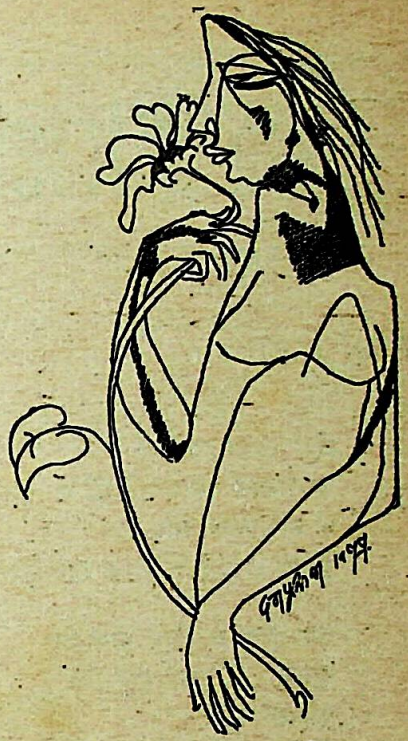

चित्र : दत्तप्रसन्न राणे

मगर एक तीसरी अवस्था भी है। जब काव्य पर हम हावी होने लगते हैं (हमारी मान्यताएं हावी होने लगती हैं), तब हम कला को निर्जन में भगा देते हैं। यह सही मानी में पतन है। आज हम इससे पीड़ित हैं। —१०८, स्टॉक एक्सचेंज, फोर्ट, बंबई-१

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जलावतन

पाब्लो नेरूदा

ऊंची लंबी रातों में
जुल्मो-जबर के उन दिनों में
मैं जलावतन बना
पुलिस से बचता, भटक रहा था।

एक हाथ से दूसरे हाथ तक
एक द्वार से दूसरे द्वार तक
गुजरता हुआ
मैं सिर छिपाने के लिए कुछ घरों में दाखिल हुआ।

एक दंपति ने अपने घर का दरवाजा खोला
उस दंपति से मेरा कोई पूर्व-परिचय नहीं था।
पत्नी जून के महीने की तरह सुनहरी थी
पति ऊंचे-लंबे कद का इंजीनियर था।
मैंने उनके साथ शराब पी, खाना खाया
और फिर धीरे-धीरे
उनका एक गुप्त रहस्य मुझ पर खुला।
उन्होंने बताया :
'हम एक-दूसरे से अलग हो चुके थे
हमेशा-हमेशा के लिए हम एक गलतफहमी के शिकार हो चुके थे;
पर आज आपका स्वागत करने के लिए हमने सुलह की,
आज आपकी प्रतीक्षा में हम एक साथ मिलकर बैठे।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

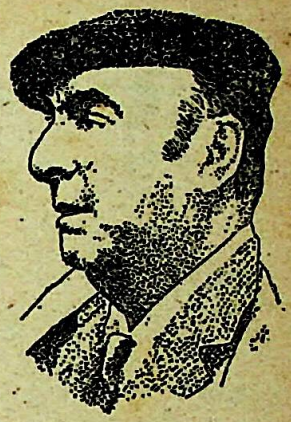

मैं जलावतन बना भटकता रहा
पुलिस मेरे पीछे लगी रही
और लोग मुझे अपने घरों में पनाह देते रहे।

एक बार फिर
एक और रात में से गुजरते हुए
मैं एक मछुआरे के घर में दाखिल हुआ
उसकी मां मेरी प्रतीक्षा कर रही थी।
उसने कहा—'मुझे कल तक पता नहीं था।
जब मेरे बेटे ने आपके बारे में बताया,
तो आपका नाम किसी ठंडी आग की तरह
मेरे शरीर में कांप उठा।
तब मैंने उससे कहा :
"पर बेटा, हम उन्हें क्या आराम दे सकते हैं?"
जवाब में बेटे ने कहा—
"वे हममें से ही हैं, हम गरीबों में से
वे हमें हिकारत की नजर से नहीं देखेंगे
न हमारी गरीबी पर हंसेंगे ही
वे तो हमारी जिंदगी का सिर ऊंचा उठाते हैं
उसकी रक्षा करते हैं।"
और तब मैंने कहा :
"तो बेटा, आज से यह घर उनका हुआ।"'

[एक लंबी कविता का अंश]

अनुवाद : सुखबीर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताल का जादू

—प्यारेलाल श्रीमाल 'सरस पं

प्राचीन काल से भारतीय संगीत में मृदंग का प्रयोग होता आ रहा है। मध्यकाल में जब ध्रुपद का डंका बज रहा था, संगत मृदंग पर ही की जाती थी। किंतु खयाल-गायन के प्रचार में आते ही मृदंग को पीछे धकेलकर तबला राजदरबारों में गूंजने लगा। वादकों ने अपने-अपने ढंग से कठोर साधना करके तबला-वादन के क्षेत्र में विशिष्ट शैलियां (बाज) प्रचलित कीं। इस प्रकार तबले के विभिन्न घरानों का का सूत्रपात हुआ। जिस शैली में तबले की चांटी और स्याही के बोलों की बहुलता है, वह 'दिल्ली घराना' कहलाता है और जिसमें मृदंग-जैसे खुले बोलों की बहुलता है, वह 'पूरब घराना'। दिल्ली व पूरब के अतिरिक्त बनारस, पंजाब, अजराड़ा आदि घराने भी तबले के प्रसिद्ध घराने हैं।

लखनऊ के नवाब ने नामी तबलिये कल्लू खां के शिष्य मौदू खां तथा बख्शू खां को दिल्ली दरबार से लखनऊ बुलवाया था। इन दोनों भाइयों ने लखनऊ आने के बाद तबले में पखावज के बोलों का मिश्रण करके एक नये घराने की नींव डाली, जिसे अब 'पूरब' (लखनऊ) घराना कहा जाता है। इनके एक भाई मक्कू खां दिल्ली में ही रहे और दिल्ली घराने को आगे बढ़ाते पूरब घराने में खलीफा आबिदहुसैन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्हीं खां साहब के शागिर्द थे उस्ताद जहांगीर जिनका देहावसान गत वर्ष हुआ।

जहांगीर खां ने ग्यारह वर्ष की आ तबला सीखना आरंभ किया। उनके गुरु थे उस्ताद मुबारकअली खां अर्फ बादवाले, जिनसे उन्होंने लगभग नौ तालीम पायी थी। इसके बाद उन्होंने हा साहब मुरादाबादवाले के शागिर्द बने निवासी उस्ताद छुन्नू खां से पांच-छह तक सीखा। बहादुरशाह जफ़र के फीरोजशाह जफर दिल्लीवाले से भी उन्ह तालीम पायी थी। इस कारण उनका घराना पूरब होते हुए भी उन्हें दिल्ली, राड़ा आदि घरानों पर समान अधि था। साथ ही उन्हें नाचकरण बाज को गणेश, लक्ष्मी आदि कठिन एवं अप्रचलि तालों में बजाने का भी खूब अभ्यास था

उस्ताद को देश के जिन प्रसिद्ध गायक वादकों तथा नृत्यकारों की संगत करने अवसर मिला, उनमें उस्ताद रज्जबअ खां, इनायतहुसैन खां सितारिये, आदि हुसैन खां ध्रुपदिये, उस्ताद बाबू खां,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अली खां तथा मुराद खां बीनकार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सामान्यतः तबला-वादकों की जिन लतों और आदतों के कारण यह कला सामाजिक दृष्टि में हेय समझी जाने लगी थी, उनसे उस्ताद जहांगीर खां सर्वथा मुक्त थे और अपने निर्व्यसन एवं मिलनसार स्वभाव से भी उन्होंने इस विद्या की प्रतिष्ठा में उसी तरह वृद्धि की, जैसे अपनी कला की खूबियों से।

यों वे गंभीर स्वभाव के थे; किंतु तबला मुस्कराते हुए बजाते थे। प्रायः देखा जाता है कि कोई तबलिया बार-बार जोरों से सिर हिलाता है, मानो कोई देव बदन में आ गया हो; कोई इतना बेढंगा मुंह बनाता है, जैसे कड़वा चिरायता पी लिया हो; कोई कंधे इस प्रकार उछालता है, जैसे नृत्य कर रहा हो। परंतु जहांगीर खां को अनावश्यक रूप से हिलना-डुलना नापसंद था। 'सम' आने पर जोरदार 'धा' बजाकर दोनों हाथ ऊंचे करने आदि का जो अभिनय तबला-वादक अपनी धाक जमाने के लिए करते हैं, वह भी उन्हें पसंद नहीं था। उनका हाथ तबले से लगा ही रहता था। कभी ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि तबले और हाथ का संबंध टूटा है।

उस्ताद वैसे विशेष तेज-तैयार तो नहीं बजाते थे, किंतु जो भी बजाते बड़ा साफ-सुथरा बजाते थे। बोल एकदम स्पष्ट होते थे। क्लिष्ट से क्लिष्ट बोलों का स्पष्ट निकास वे उसी प्रसन्न मुद्रा से निकालते थे। यह उनकी अपनी विशेषता थी, जो श्रोताओं

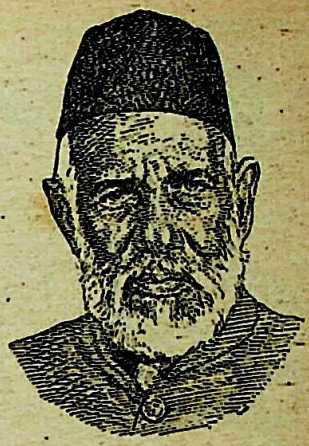

उस्ताद जहांगीर खां

को बरबस आकृष्ट कर लेती थी।

स्मरण-शक्ति प्रखर होने से चारों घरानों के बोलों का उनके पास विशाल भंडार था। पूरब की गतों के तो वे बादशाह थे। जितना सहज एवं सरल व्यक्तित्व, उतनी ही क्लिष्ट गतें—अजीब विरोधाभास था। एक गत का नमूना देखिये—कृधिकृधि नान् नान् तकिट-धान तकिटधान् धातृकधिकिट कता गदि-गिन गदिगिन गदिगिन धातृकधिकिट कता गदिगिन धातृकधिकिट कता गदिगिन धा।

तिरकिट, धिनगिन, धिरधिरकिटतक आदि वर्णों की अनेक गतें उनके पास थीं। उनका बायें का दाब-घांस विलक्षण था। इसी कारण धगत्तकिटतक, तिरकिटतक, धित्तड़ाआन, धिरधिरकिटतक जैसे बायें के बोलों का उनकी गतों में विशेष प्रयोग रहता था।

पक्के गणितज्ञ भी थे वे; इस कारण तुरंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

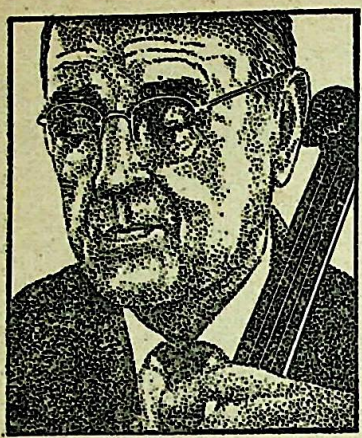

मैं प्रतिदिन नया जन्म लेता हूं। प्रतिदिन मुझे नयी शुरूआत करनी पड़ती है। पिछले अस्सी वर्षों से मैंने हर नया दिन इसी प्रकार शुरू किया है। यह यांत्रिक किस्म की दिनचर्या नहीं है, बल्कि मेरे प्रतिदिन के जीवन के लिए यह बुनियादी तौर पर जरूरी है। मैं पियानो के पास जाता हूं और बाख की कुछ संगीत-कृतियां बजाता हूं। यह एक प्रकार से अपने घर-परिवार के लिए मेरी शुभकामना होती है। परंतु साथ ही इसके द्वारा मैं संसार को नयी नजर से भी देखता हूं, जिसका कि एक छोटा-सा अंग होने की मुझे खुशी है। और इसके द्वारा मैं जीवन-रूपी आश्चर्य के प्रति सचेत होता हूं और मुझे लगता है कि मनुष्य होना कितना बड़ा चमत्कार है। संगीत मेरे लिए कभी एक-सा नहीं होता, कभी नहीं। वह रोज मेरे लिए नया बनकर आता है—अद्वितीय और विस्मयकारी।

—स्व. पाब्लो कासाल्स

फरमाइश पूरी कर देते थे और नये-नये ढंग के बोलों का निर्माण भी करते रहते थे। इस संबंध में जयपुर घराने के प्रसिद्ध नृत्यकार श्री दुर्गाप्रसाद कत्थक से प्रायः उनकी नोकझोंक चला करती। उस्ताद जो बोल बनाते, तुरंत उसका जवाबी बोल बनाकर दुर्गाप्रसाद सुना देते; और जो बोल दुर्गाप्रसाद बनाकर लाते, उसका तत्काल जोड़ बनाकर ये सुना देते थे।

वैसे दोनों में आपस में अपार स्नेह था। दुर्गाप्रसादजी उस्ताद को अपने गुरु के बराबर आदर देते थे। एक बार दोनों को मिले बहुत दिन हो गये। उस्ताद लकड़ी टेकते हुए जा पहुंचे दुर्गाप्रसादजी के घर। जैसे ही दुर्गाप्रसादजी चरण-स्पर्श करने को झुके उस्ताद ने मुंह फिरा लिया और बोले—'तुम इतने दिनों से क्यों नहीं आये? भई दुर्गाप्रसाद, तुमसे मुहब्बत हो गयी है।' जब दुर्गाप्रसादजी ने न आ पाने का कारण बताया तभी उस्ताद बैठे। फिर कहने लगे—'अच्छा, एक ऐसा चक्करदार बोल बनाओ, जिसमें पहले पल्ले की तीनों धा खाली हों, फिर दूसरे पल्ले की तीनों धा पांचवीं मात्रा पर और तीसरे पल्ले की तीनों धा सम पर आयें।' इस प्रश्न का सही उत्तर मिलने पर उस्ताद खिल उठे, बोले—'दुर्गाप्रसाद, बहुत अच्छा जेहन पाया है। अल्लाह तुम्हें खुश रखे।'

उस्ताद को कभी किसी की निंदा करते नहीं देखा गया। अगर उनके सामने कोई किसी कलाकार की निंदा करने लगता तो वे उठकर चले जाते थे। अगर किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का गाना-बजाना उन्हें न जंचता और कोई उनसे पूछ बैठता, तो कहते—'दुनिया में कोई खराब नहीं है। सब अपनी जगह ठीक हैं।'

उस्ताद का जन्म ११ जनवरी १८६९ को बनारस में हुआ था। पिता का नाम था अहमद खां। सन १९११ में जब वे (उस्ताद) इंदौर आये तो, उनकी वादन-कुशलता पर मुग्ध होकर महाराज तुकोजी-राव होल्कर ने उन्हें अपने आश्रय में रख लिया। दरबार में वे अनेक गुणियों के संपर्क में आये और साधना करते-करते उन्होंने देश के उत्कृष्ट तबला-वादकों में अपना स्थान बना लिया। इंदौर के दरबार में उन्होंने ख्याति के साथ पर्याप्त धन एवं संपदा भी अर्जित की थी। १९१८ में वे लगभग एक लाख रुपये की धनराशि साथ लेकर बनारस रवाना हुए। दुर्भाग्य से पूरी रकम रेल में चोरी चली गयी और उन्हें खाली हाथ इंदौर लौटना पड़ा। इसके बाद फिर कभी उन्होंने इंदौर से जाने का नाम नहीं लिया।

उनकी संगीत-सेवा को दृष्टि में रखते हुए इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (म. प्र.) ने उन्हें 'डाक्टर ऑफ म्यूजिक' की मानद उपाधि से विभूषित किया। १९५९ में उन्हें राष्ट्रपति डा. राजेंद्र-प्रसाद ने हिंदुस्तानी संगीत के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया और १९६३ में राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन् ने उन्हें 'पद्मश्री' से अलंकृत किया।

अपने ग्रंथ 'मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ' की तैयारी के सिलसिले में १९७३ में मैं उस्ताद जहांगीर खां से उनके निवास पर मिला था। तब वे पूर्ण स्वस्थ थे। उनके स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन का राज उनसे जानना चाहा, तो बोले—'मैं न बीड़ी पीता हूं न सिगरेट, न भंग और न शराब, इसी से तंदुरुस्त हूं।' शिष्यों की संख्या पूछने पर बताया—'होंगे कोई चार-पांच सौ। चतुरलाल, शेख दाऊद, नारायणराव इंदूरकर, हफीज खां, धूलजी खां, अमीरहुसैन खां, महबूब खां वगैरह के नाम तो याद रहते हैं, बाकी बहुत लोगों के नाम याद नहीं। कइयों की तो मैं शक्ल भी भूल गया हूं।'

'सादा जीवन, उच्च विचार' उस्ताद जहांगीर खां के जीवन का मूलमंत्र था। रियासतों के विलय के बाद उन्हें आवास तथा आजीविका की तकलीफ भी झेलनी पड़ी। परंतु पूरब घराने के इस सितारे को मैंने सदैव संतुष्ट एवं प्रसन्नचित्त ही पाया। वैसे बाद में मध्य प्रदेश शासन ने उनके रहने के लिए घर और आजीविका हेतु आर्थिक सहायता की व्यवस्था कर दी थी।

कुछ महीनों तक रुग्णावस्था भोगकर ११ मई १९७६ को तबला-जगत के इस अद्वितीय कलाकार ने १०७ वर्ष की परिपक्व अवस्था में इहलीला समाप्त की।

—रंगमहल, नयी पेठ, उज्जैन, म. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डी. एन. ए. से जातिवृत्त

डा. अरुणकुमार मिश्र

जातिवृत्त (फाइलोजेनी) का अर्थ है—विकास की दृष्टि से जीवों का तारतम्य अर्थात् उनकी निम्नता (अविकसितता) या उच्चता (विकसितता) का निर्धारण।

जीवों का वर्गीकरण करने वाले को प्रायः जातिवृत्त का निर्णय करना होता है। जीवों को पहचानने और उन्हें नाम देने के साथ ही उनका वर्गीकरण करना होता है; पौधों और प्राणियों के विकास की व्याख्या करनी होती है। इन सबमें जातिवृत्त का निर्णय करना महत्त्वपूर्ण होता है।

जातिवृत्त का निर्णय कैसे होता है ? डी. एन. ए. से इसमें क्या मदद मिल सकती है ? आइये, विचार करें।

जीव की निम्नता या उच्चता को दरशाने वाले गुण निश्चित किये गये हैं। वे अनेक हैं तथा विभिन्न प्रकार के हैं। यहां उनका विस्तृत वर्णन करना कठिन है। परंतु इतना कहना काफी है कि जीवों में मनुष्य सबसे उच्च है। उससे नीचे बंदर, फिर गाय-हाथी-घोड़ा, फिर चूहा इत्यादि आते हैं। इनसे नीचे हैं अंडा देने वाले—चिड़िया, गिरगिट, सांप आदि। उनसे भी नीचे मेंढ़क, मछलियां। फिर केंचुआ, घोंघा इत्यादि। और सबसे नीचे हैं कोरी आंखों न दिखाई देने वाले सूक्ष्मजीव—अमीबा

पौधों में धान, गेहूं सबसे उच्च माने जाते हैं। फिर आम, अमरूद आदि। उनसे नीचे हैं फर्न। फिर कुकरमुत्ता (गोबर छत्ता)। फिर पानी में जमी काई। [चित्र-

विकास की ये सीढ़ियां डार्विन, लैमार्क हक्स्ले इत्यादि ने स्पष्ट कर दी थीं। पौधों में यह वर्गीकरण पत्तों, फलों, फूलों की बनावट इत्यादि को ध्यान में रखकर किया जाता है; प्राणियों में हृदय, फेफड़े आदि की रचना, भ्रूण का विकास देखकर।

जब दो जीवों में काफी फर्क हो, जातिवृत्त का निर्णय करना आसान होता है। लीची तथा काई में लीची उच्च वनस्पति है यह साधारण आदमी भी बता सकता है।

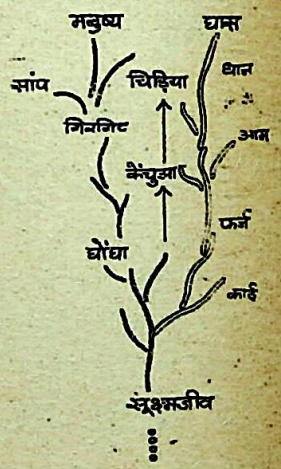

चित्र—१ : तीर विकास-दिशा का सूचक है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगर लीची तथा ताड़ में ताड़ उच्च तथा लीची निम्न है, यह वनस्पतिविद् ही कह सकते हैं। एक-सदृश पौधों में ऐसा निर्णय सहज ही नहीं किया जा सकता। धान और गेहूं, टमाटर और बैंगन में विकास का निर्णय अनेक लंबे, कठिन प्रयोगों के बाद ही हो सकता है। यही बात एक-सदृश प्राणियों के बारे में भी है।

विकास की अवस्था ज्ञात करने के लिए अक्सर पौधों और प्राणियों के बाहरी गुण ही ध्यान में रखे जाते हैं। बिना विस्तृत प्रयोग किये, मात्र सहज दृष्टि के आधार पर जीवों का वर्गीकरण कर दिया जाता है। प्रसिद्ध ब्रिटिश वैज्ञानिक रदरफोर्ड ने इसलिए एक भाषण में कहा था कि विज्ञान दो तरह के होते हैं—फिजिक्स और फिलैटेली (डाक-टिकट जमा करना)। फिर अपनी बात का खुलासा करते हुए उन्होंने कहा था कि फिजिक्स में किसी भी क्रिया के पीछे की नियामक शक्तियों का पता लगाते हैं। पर कुछ वैज्ञानिक तो बस कीड़ों, पत्तियों को जमा करते हैं, उन्हें सुखाते, फिर चिपकाते हैं—इसलिए इसे मैं फिलैटेली (टिकट जमा करना) कहता हूं। यह उस जमाने के जीव-विज्ञानियों पर व्यंग्य था।

तब से जीव-विज्ञान ने बहुत प्रगति कर ली है। बाहरी रूपरेखा के अलावा, जीवों के शरीर की भीतरी बनावट भी अब देखी जाती है। प्राणियों और वनस्पतियों में स्थित रासायनिक पदार्थों का विश्लेषण करके उनका वर्गीकरण किया जाता है।

चित्र—२

फिर होता है जातिवृत्त या विकास-प्रावस्था का निर्णय।

रासायनिक तरीकों से वर्गीकरण अभी भी शैशव में ही है। सन १९७३ के नोबेल-पुरस्कार से सम्मानित अमरीकी वैज्ञानिक एन्फिसन ने बारह बरस पहले एक पुस्तक लिखी थी—'रासायनों के आधार पर विकास की व्याख्या'। विभिन्न जीवों में पाये गये प्रोटीनों के आधार पर उन्होंने विकास का क्रमयोजन किया था। इस विषय में बहुत-सा काम हुआ है।

परंतु १९६२ में वाट्सन, क्रिक तथा विल्किंस को मिले नोबेल-पुरस्कार से डी. एन. ए. रसायन चर्चा तथा प्रयोग का सबसे महत्त्वपूर्ण विषय बन गया।

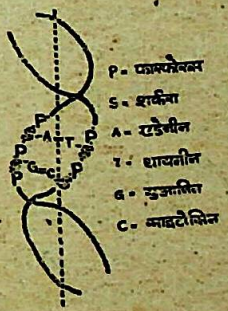

चित्र—३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

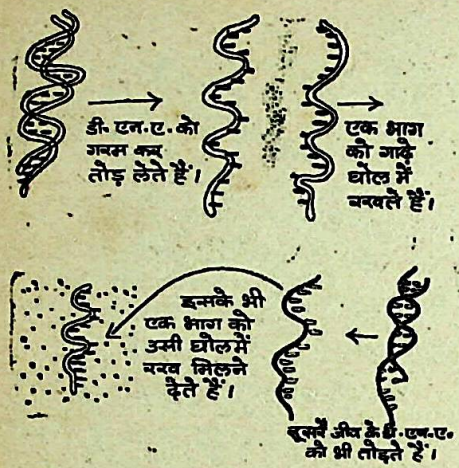

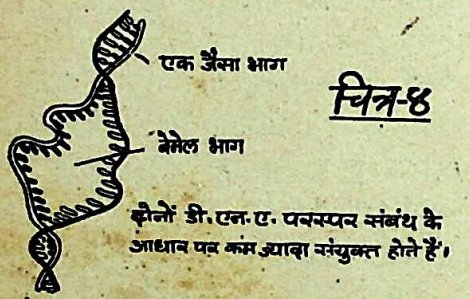

चित्र-४

न्यूक्लीय अम्ल या डी. एन. ए. का पता मिशर ने १८८९ में लगाया था। ये जीवों की कोशिकाओं में न्यष्टि (न्यूक्लियस) तथा गुणसूत्रों (क्रोमोसोम) में स्थित होते हैं, यह भी बहुत पहले ही मालूम हो गया था। १९४४ में एवरी ने अपने सहयोगियों के साथ यह ज्ञात किया कि डी. एन. ए. ही हर जीव में सब गुणों का वाहक तथा जीवन का आधार है। १९५३ में वाट्सन तथा क्रिक ने डी. एन. ए. की विस्तृत संरचना बतायी। फिर तो असंख्य वैज्ञानिकों ने इस विषय में कार्य शुरू कर दिया। कार्नबर्ग, नीरेनबर्ग तथा खोराना के डी. एन. ए. संश्लेषण हाल में बड़ी चर्चा रही है। डी. एन. ए. कार्यविधि की विस्तृत विवेचना लो १९६५ में की। [चित्र-२]

मैकार्टी ने अपने सहयोगियों के १९६४ में सर्वप्रथम इस विषय में कि विधियां बतायीं, जिससे वर्गीकरण में एन. ए. को आधार बनाया जा सके। विषय में होयंर और बोल्टन के साथ कर उन्होंने एक लेख लिखा, जो अमरीक प्रसिद्ध विज्ञान पत्रिका 'सायंस' में में छपा। तब वे वाशिंग्टन के कार्नेगी में थे। अगले वर्ष (१९६५) में उन्होंने विषय में दो और शोधपत्र प्रस्तुत कि अब तो अनेक वैज्ञानिक इस विषय में करते हैं।

डी.एन.ए. की सर्पिल सीढ़ी वाली घु दार रचना का ज्ञान अब सामान्य क [चित्र-३]। इसकी बगल वाली घुमाव भुजाओं में शर्करा तथा फास्फोरस के गो रहते हैं। बीच के डंडे वाले स्थान में नीन (A), गुआनिन (G), साइटो (C), तथा थायमिन (T) नाम के न यन दो-दो के जोड़ों में सजे रहते हैं। नि तम से उच्चतम तक प्रत्येक जीव डी. एन. ए. में ये सब रसायन बिल एक जैसे होते हैं। फिर विभिन्न जीवों डी. एन. ए. की परस्पर तुलना कैसे हो

डी. एन. ए. के भीतर A–T, G– C–G तथा T–A. के जोड़ों के क्रम फर्क ही विभिन्न जीवों के विभिन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का कारण है। इसलिए दो जीवों में इन रसायनों (जिन्हें आधार जोड़े—बेस पेयर—कहते हैं) के क्रम में क्या फर्क है, यह जानना जातिवृत्त के निर्णय में बड़ा सहायक होता है। कारण, सारे गुणों का मूल स्रोत डी.एन. ए. ही है और जीवों के विकास का इतिहास उनके डी.एन.ए. में लिखा होता है।

तुलना इस प्रकार की जाती है। एक जीव के डी. एन. ए. को विशेष विधियों से पृथक् कर लिया जाता है। फिर उसे परखनली में गरम करते हैं, जिससे वह (डी.एन.ए.) दो भागों में बंट जाता है। दोनों टुकड़ों को विशेष रसायन द्वारा रेडियो-सक्रिय बना दिया जाता है, जिससे आगे उन्हें पहचानने में सुविधा हो। फिर उन्हें गाढ़े घोल (एगर) में डुबाकर रख लिया जाता है। दूसरे जीव के डी.एन.ए. को भी इन्हीं विधियों से गुजारने के बाद, पहले जीव के डी. एन. ए. के टुकड़ों के साथ उसी गाढ़े घोल में अनेक घंटों के लिए छोड़ दिया जाता है।

डी. एन. ए. शृंखलाओं की यह विशेषता है कि वे आपस में जुड़कर पूर्ण डी. एन. ए. बन जाते हैं। दो विभिन्न जीवों की डी. एन. ए. शृंखलाएं गाढ़े घोल में एक साथ रखे जाने पर मिलकर पूर्ण डी. एन. ए. बनने की कोशिश करती हैं। इस मेल का अनपात दोनों जीवों की आपसी निकटता पर निर्भर होता है। इस क्रिया को डी. एन. ए.-संकरण (डी. एन. ए.-हाइब्रिडाइजेशन) कहते हैं [चित्र ४]।

मेल के प्रतिशत के आधार पर जीवों के संबंध तथा जातिवृत्त का निर्णय किया जाता है। इस प्रकार के अनेक प्रयोग हुए हैं। परंतु अभी पर्याप्त तथ्य जुट नहीं पाये हैं।

इस प्रकार के सबसे अधिक तथ्य वाइरस तथा बैक्टीरिया से प्राप्त हुए हैं। उसके बाद प्राणियों में—खासकर रीढ़ वाले स्तनपोषी जंतुओं में। पौधों में इस विषय में बहुत कम काम हुआ है। सरसों तथा राई, गेहूं तथा जौ इत्यादि पौधों पर ऐसे प्रयोग सफलता के साथ किये गये हैं।

अभी भी यह तरीका सैद्धांतिक अधिक, व्यावहारिक कम है। पर निश्चित विधियां स्थापित हो जाने के बाद जब इस विषय में थोड़ा अनुसंधान और हो जायेगा, तब जातिवृत्त-निर्णय की बहुत सच्ची और प्रभावशाली विधि हमारे हाथ लग जायेगी। तभी हम जीव-विज्ञान के ज्ञान को सम्यक और स्पष्ट रूप से समझ पायेंगे।

—बेला रोड, दरभंगा-८४० ४००

★

दुकान के दोनों कर्मचारियों का वेतन डेढ़ सौ रुपया मासिक था। तनख्वाह देने की तारीख पर दुकानदार ने कहा—'आज पैसे कुछ कम हैं। आज जितने की जरूरत हो ले लें। बाकी हिसाब कल हो जायेगा।'

'कोई बात नहीं', दोनों कर्मचारी बोले—'आप हमें सिर्फ डेढ़-डेढ़ सौ आज दे दें। बाकी .....'

—गीतारानी श्रीवास्तव

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुरी कलीदें बड़ी बातें

इत्तफाक में बरकत है

एक बड़े मियां, जिन्होंने अपनी जिंदगी में बहुत कुछ कमाया-बनाया था, आखिर बीमार हुए, मृत्युरोग में गिरफ्तार हुए। उन्हें कोई फिक्र थी तो बस यही कि उनके पांचों बेटों की आपस में नहीं बनती थी; गाढ़ी क्या, पतली भी नहीं छनती थी। लड़ते रहते थे। कभी किसी बात पर इत्तफाक न होता था, हालांकि इत्तफाक में बड़ी बरकत है। आखिर बड़े मियां ने एकता और इत्तफाक की खूबियां बेटों के दिल में उतारने के लिए एक तरकीब सोची। उन्हें अपने पास बुलाया और कहा—'देखो, अब मैं कुछ ही दम का मेहमान हूं। सब जाकर एक-एक लकड़ी लाओ।'

एक ने कहा—'लकड़ी? आप लकड़ियों का क्या करेंगे?'

दूसरे ने आहिस्ता से कहा—'बड़े मियां का दिमाग खराब हो रहा है। लकड़ी नहीं, शायद ककड़ी कह रहे हैं। ककड़ी खाने को जी चाहता होगा।'

तीसरे ने कहा—'नहीं। कुछ सरदी है। शायद आग जलाने को लकड़ियां मांग रहे होंगे।'

चौथे ने कहा—'बाबूजी, कोयले लाऊं?'

पांचवें ने कहा—'नहीं, उपले लाता हूं। वे ज्यादा अच्छे रहेंगे।'

बाप ने कराहते हुए कहा—'अरे नालायको! मैं जो कहता हूं, वह करो। जंगल से लकड़ियां लाओ, जंगल से।'

एक बेटे ने कहा—'यह भी अच्छी रही। जंगल यहां कहां? और महकमा जंगल वाले लकड़ी कहां काटने देते हैं।'

दूसरे ने कहा—'अपने आपे में नहीं हैं बाबूजी।.....बक रहे हैं जुनून में क्या कुछ।'

तीसरे ने कहा—'भई, लकड़ियों की बात अपनी समझ में तो नहीं आयी।'

चौथे ने कहा—'बड़े मियां ने उम्र-भर एक ही तो ख्वाहिश की है। उसे पूरा करने में क्या हर्ज है?'

पांचवें ने कहा—'अच्छा मैं जाता हूं टाल पर से लकड़ियां लाता हूं।'

चुनांचे वह टाल पर गया। टाल वाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा—'खान साहब ! जरा पांच लकड़ियां तो देना। अच्छी मजबूत हों।'

टाल वाले ने लकड़ियां दीं। हर एक खासी मोटी और मजबूत थी। बाप ने देखा तो उसका दिल बैठ गया। यह बताना भी मतलब के खिलाफ था कि लकड़ियां क्यों मंगवायी हैं और उससे क्या नैतिक परिणाम निकालने का इरादा है। आखिर बेटों से कहा—'अब तुम लोग इन लकड़ियों का गट्ठा बांध दो।'

बेटों में फिर खुसर-फुसर होने लगी—'गट्ठा ? वह क्यों ? अब रस्सी कहां से लायें। भई, बहुत तंग किया इस बुड्ढे ने।' आखिर एक ने अपने पाजामे में से इजारबंद निकाला और गट्ठा बांधा।

बड़े मियां ने कहा—'अब इस गट्ठे को तोड़ो।'

बेटों ने कहा—'लो भई, यह भी अच्छी रही ! कैसे तोड़ें ! कुल्हाड़ा कहां से लायें।'

बाप ने कहा—'कुल्हाड़े से नहीं, हाथों से तोड़ो। घुटने से तोड़ो।'

बाप का हुक्म सिर आंखों पर। पहले एक ने कोशिश की। फिर दूसरे ने। फिर तीसरे ने। फिर चौथे ने। फिर पांचवें ने। लकड़ियों का बाल बांका न हुआ। सबने कहा—'बाऊजी ! हमसे नहीं टूटता यह लकड़ियों का गट्ठा।'

बाप ने कहा—'अच्छा ! अब इन लकड़ियों को अलग-अलग कर दो। इनकी रस्सी खोल दो।'

एक ने जलकर कहा—'रस्सी कहां है ? मेरा इजारबंद है। अगर आपको खुलवाना था तो गट्ठा बंधवाया ही क्यों था। लाओ भई, कोई पेंसिल देना। मैं इजारबंद डाल लूं पाजामे में।'

बाप ने बुजुर्गाना स्नेह से उसकी बात को नजरअंदाज करते हुए कहा—'अच्छा ! अब इन लकड़ियों को तोड़ो। एक-एक करके तोड़ो।'

लकड़ियां मोटी-मोटी और मजबूत थीं। बहुत कोशिश की। किसी से नहीं टूटीं। आखिर में बड़े भाई की बारी थी। उसने एक लकड़ी पर घुटने का पूरा जोर डाला और तड़ाक की आवाज आयी।

बाप ने नसीहत करने के लिए आंखें एकदम खोल दीं। क्या देखता है कि बड़ा बेटा बेहोश पड़ा है। लकड़ी सलामत पड़ी है। आवाज बेटे के घुटने की हड्डी टूटने की

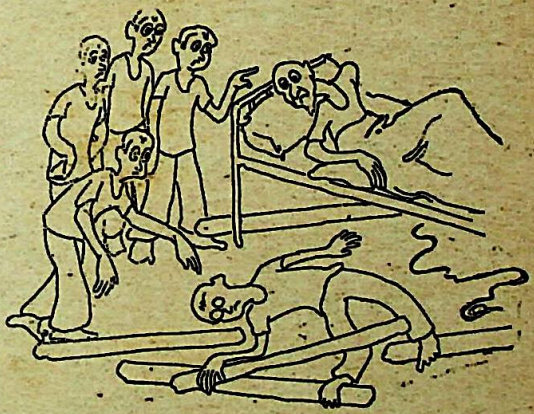

कम से कम एक बात पर तो सब एकमत हुए !

अनुवाद : सुरजीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। एक लड़के ने कहा—'यह बुड्ढा बहुत जाहिल है।'

एक ने कहा—'अड़ियल ! जिद्दी !'

तीसरे ने कहा—'खूसट ! सनकी ! अक्ल से पैदल ! घामड़ !'

चौथे ने कहा—'सारे बुड्ढे ऐसे ही होते हैं। कमबख्त मरता भी नहीं।'

बुड्ढे ने इत्मीनान की सांस ली कि बेटे कम से कम एक बात पर एकमत तो हुए। उसके बाद आंखें बंद कीं और बड़ी शांति से जान दे दी।

०००

प्यासा कौवा

एक प्यासे कौए को एक जगह पानी का मटका पड़ा नजर आया। बहुत खुश हुआ वह। लेकिन यह देखकर उसे निराशा हुई कि पानी बहुत नीचे, केवल मटके की तली में थोड़ा-सा है। सवाल यह था कि पानी को कैसे ऊपर लाये, अपनी चोंच तर करे।

संयोग से उसने लुकमान की कथाएं पढ़ रखी थीं। पास ही बहुत-से कंकड़ पड़े थे।

'धत् तेरे लुकमान की !'

उसने उठाकर एक-एक कंकड़ मटके डालना शुरू किया। कंकड़ डालते-डालते सुबह से शाम हो गयी। वह प्यासा तो ही, निढाल हो गया। मटके के अंदर डाली, तो क्या देखता है कि कंकड़ ही हैं। सारा पानी कंकड़ों ने पी लिया है। अख्तियार उसके मुंह से निकला—'धत् लुकमान की !' फिर बेसुध होकर पर गिर गया और मर गया।

अगर वह कौआ कहीं से एक आता, तो मटके के मुंह पर बैठा-बैठा को चूस लेता। अपने दिल की मुराद कर पाता। हरगिज जान से न जाता।

०००

चिड़ा और चिड़िया

एक थी चिड़िया। एक था चिड़ा। चि लायी दाल का दाना। चिड़ा चावल का दाना। उससे खिचड़ी पकी दोनों ने पेट भरकर खायी। आपस में हो, तो एक-एक दाने की खिचड़ी भी हो जाती है।

चिड़ा बैठा ऊंघ रहा था कि उसके में शंका आयी कि चावल का दाना होता है, दाल का दाना छोटा होता इसलिए दूसरे दिन खिचड़ी पकी, तो ने कहा—'इसमें छप्पन हिस्से मुझे दे। लीस हिस्से तू ले। ऐ भागवान ! पसंद या नापसंद कर। असलियत से आंख बंद कर।' चिड़े ने अपनी चोंच में से नुक्ते भी निकाले और बीबी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डाले। बीबी हैरान हुई, बल्कि रो-रोकर हलकान हुई कि इसके साथ तो मेरा जनम का साथ था। लेकिन कर भी क्या सकती बेचारी थी!

दूसरे दिन फिर चिड़िया दाल का दाना लायी और चिड़ा चावल का दाना लाया। दोनों ने अलग-अलग हंडिया चढ़ायी। खिचड़ी पकायी। क्या देखते हैं कि दो ही दाने हैं। चिड़े ने चावल का दाना खाया। चिड़िया ने दाल का दाना खाया। चिड़े को खाली चावल से पेचिश हो गयी। चिड़िया को खाली दाल से कब्ज हो गयी। दोनों एक हकीम के पास गये, जो एक बिल्ला था। उसने दोनों के सिरों पर स्नेह से हाथ फेरा और फेरता ही चला गया—देखा तो ये दो मुश्त पर।

यह कहानी बहुत पुराने जमाने है।

हकीम ने दोनों के सिरों पर स्नेह से हाथ फेरा और फेरता ही चला गया।

आजकल तो चावल एक्सपोर्ट हो जाता है और दाल महंगी है—इतनी कि वे लड़कियां जो मौलवी इस्माईल मेरठी के जमाने में दाल बघारा करती थीं, आजकल सिर्फ शेखी बघारती हैं।

★

एक चित्रकार ने सुंदर पहाड़ी स्थान पर एक भोले-भाले युवक को झरने में पैर डालकर बैठे देखकर कहा—'मित्र, मैं तुम्हें इसी तरह पेंट करना चाहता हूं। इसके तुम्हें पचीस रुपये दूंगा। बोलो, मंजूर है?'

उस युवक को असमंजस में सिर खुजलाते देखकर चित्रकार ने फिर कहा—'अरे बाबा, तुम्हें करना ही क्या है? बैठे-ठाले मुफ्त का रुपया मिल जायेगा।' युवक बोला—'यह तो सही है; लेकिन मैं सोच रहा हूं कि घर जाकर मैं कम्बख्त पेंट को छुड़ाऊंगा कैसे?'

ooo

मकान-मालिक ने कारीगर से पूछा—'इस कमरे में पेंट करना है। क्या लोगे?'

'चालीस रुपया रोज।' कारीगर ने उदासीन भाव से कहा।

मकान-मालिक को गुस्सा आ गया। बोला—'हुंह! चालीस रुपया रोज तो मैं मकबूल फिदा हुसैन को भी देने वाला नहीं।'

'बाबू साहब! अगर आपका वह शख्स मकबूल फिदा जो भी है—इससे कम मांगता है, तो वह यूनियन का मेंबर नहीं होगा, कोई ऐरा-गैरा होगा।' —विवेक मेहरोत्रा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्द का विज्ञान

विकास मिश्र

'दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना' यह शायर का कल्पना-विलास है। मगर रूसी विज्ञानी इवान पाव्लोव ने पिछली संदी में एक प्रयोग में दिखाया था कि हद से गुजरे बिना भी दर्द कभी-कभी स्वयं सुख वन सकता है।

पाव्लोव के 'कंडिशन्ड रिफ्लेक्स' संबंधी परीक्षण विज्ञान के इतिहास का अंग हैं। बार-बार रोटी का टुकड़ा देते समय घंटी बजाकर उन्होंने कुछ कुत्तों की ऐसी आदत डाल दी थी कि घंटी की आवाज सुनते ही उनके (कुत्तों के) मुंह से लार टपकने लगती।

इसी अध्ययन के दौरान उन्होंने एक तनिक भिन्न परीक्षण किया। रोटी का टुकड़ा देने के पूर्व वे कुत्तों के पंजे में बिजली का क्षणिक झटका देते थे। शुरू में तो कुत्तों की प्रतिक्रिया बड़ी उग्र होती थी। मगर धीरे-धीरे आश्चर्यजनक परिवर्तन नजर आया। अब झटका लगने पर कुत्ते दर्द प्रकट करने के बजाय लार चुआते व दुम हिलाते हुए खाने के कटोरे की ओर देखने लगते थे।

कोलिन ब्लैकमोर ने कुछ समय पूर्व बी. बी. सी. पर प्रसारित एक भाषण-माला में एक विशेष संदर्भ में इन प्रयोगों का जिक्र किया है। अपने भाषण में उन्होंने बताया

शायद मनुष्यों में भी यह तय क सांस्कृतिक तत्त्वों का महत्त्वपूर्ण हाथ दर्द किन अवस्थाओं में और किस मा पहुंचकर संवेद्य बनता है। उदाहरणार्थ, पंक्चर का उपयोग चीन में पिछले २ वर्षों से रोग-निवारण के लिए हो र 'सांस्कृतिक क्रांति' के बाद तो कई व रेशनों में विसंज्ञक (एनेस्थीसिया) में केवल उसी का उपयोग होता है। त से ही वहां लोगों को एक्युपंक्चर के वि और विधियों के बारे में बताया जाता

कुछ लोग शायद कहेंगे, एक्युपंक्च चीनियों का दर्द मिटना या घटना सांस्क कंडिशनिंग है, पाव्लोव के कुत्तों के कं निंग जैसा ही। मगर यह भी संभव एक्युपंक्चर तथा अन्य दर्द-शामक सांस्क साधन सीधे-सादे शरीरशास्त्रीय तत्त आधारित हों।

वर्षों से यह बात विदित है कि दर्द दवा 'मार्फीन' तथा उससे निर्मित मस्तिष्क में पहुंचकर तंत्रिकाओं की काओं से जुड़ जाती हैं और दर्द के को अथवा उसकी अनुभूति को घटाती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब मस्तिष्क में 'एन्केफेलीन' नामक एक पदार्थ का पता चला है जो वहां प्राकृतिक रूप में बनती है और रासायनिक दृष्टि से छोटा-सा पेप्टाइड अणु है। यह भी मार्फीन की तरह ही काम करता है और दर्द घटाता है। बल्कि शायद यह कहना ठीक होगा कि बाह्य पदार्थ मार्फीन दिमाग में पहुंचकर आंतरिक पदार्थ एन्केफेलीन की तरह ही काम करता है। यानी एन्केफेलीन मानो एक प्राकृतिक मंदक (ओपिएट) है, एक ऐसा दर्द-हारक जिसे मस्तिष्क अपनी दर्द-अनुभूति को मंद करने के लिए स्वयं बना लेता है।

इधर हाल में चीनी विज्ञानियों ने घोषित किया है कि खरगोश पर एक्युपंक्चर का प्रयोग करने पर उसके मस्तिष्क में एक ऐसा पदार्थ तैयार होता है, जिसे निकालकर इंजेक्शन के जरिये दूसरे खरगोश में पहुंचाया जाये, तो दर्द और असुविधा के प्रति उसकी सहिष्णुता बढ़ जाती है। संभव है कि यह पदार्थ एन्केफेलीन ही हो और एक्युपंक्चर की सूइयों की प्रतिक्रिया के रूप में मस्तिष्क-तंत्रिकाओं में से निकलती हो।

जूते उतारना सीखिये

थकान और तनाव से छुटकारा पाने का एक बहुत ही आसान उपाय कुछ डाक्टर बताते हैं—'जब भी और जहां भी मौका मिले, जूते उतार डालिये।'

एक बहुत बड़े अस्पताल के प्रमुख डाक्टर ने एक बार कहा था—'मैं हमेशा लोगों को जूते उतारने के लिए कहा करता हूं। एक स्त्री, जो बहुत बड़ी दुकान की मैनेजर थी, मेरे पास आकर शिकायत करने लगी कि मेरी टांगों में ऐसा तनाव रहता है कि रात को मैं सो तक नहीं सकती। मैंने उससे यही कहा कि जब भी मौका मिले, जूते उतार दिया करो। अब उसे बहुत अच्छी नींद आती है।

एक अस्थि-विशेषज्ञ डाक्टर का कहना है—'इस बात में बहुत बड़ी सचाई है कि जब पांव दर्द करते हैं, तो सारा शरीर ही दर्द करने लगता है। इसे मजाक नहीं समझना चाहिये कि जूते हमारी बहुत-सी तकलीफों की जड़ हैं।'

एक और डाक्टर का कहना है—'लोग तनावों का शिकार बने रहते हैं। मेरी सलाह है कि उन्हें प्रतिदिन कुछ समय नंगे पांव घूमना चाहिये। तनाव से बचने का यह ऐसा तरीका है कि आप महसूस ही नहीं करते कि आप प्रयत्नपूर्वक आराम कर रहे हैं।'

सो आपके मन में जब भी जूते उतारने की इच्छा पैदा हो, उसे उसी समय पूरा कीजिये। प्रकृति का अपनी बात कहने का यह अपना ढंग है; और प्रकृति आपके मुकाबले में कहीं ज्यादा सयानी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक जीव : संपादक

बलवीर सिंह

रिपोर्टर एक बड़े राजनैतिक नेता से मिलकर दफ्तर लौटा, तो संपादक ने पूछा—'क्यों, कैसा रहा इंटरव्यू ? क्या-क्या कहा उन्होंने ?'

'उन्होंने मुझसे बातचीत की ही नहीं। बस, दो-एक रस्मी बातें कहकर लौटा दिया।'

'ठीक है, ठीक है।' संपादक ने आदेश दिया—'पूरे दो कालम की रिपोर्ट तैयार कर डालो।'

०

अमरीकी पत्रिका 'मैक्काल' के संपादक के कमरे में फ्रेम में जड़ा एक पत्र दीवार पर टंगा हुआ है। उसमें लिखा है :

'महोदय, मेरी पत्नी मुझसे तलाक लेने ही वाली थी कि उसने आपका संपादकीय पढ़ा, जिसमें आपने तलाक से टूटे परिवारों की बुराइयों का जिक्र किया था। उसे पढ़ने के बाद वह तलाक का इरादा छोड़कर मुझसे मानो चिपक ही गयी है और सारी जिंदगी मेरा साथ निभाने को तैयार है। कृपया, मुझे पत्रिका भेजना बंद कर दें, अब मैं उसका ग्राहक नहीं रहना चाहता।'

०

एक लड़की ने किसी पत्रिका में अपनी कहानी भेजी। कहानी इतने रद्दी अक्षरों में लिखी हुई थी कि उसे पढ़ पाना आसान न था। संपादक ने जैसे-तैसे तीन-चार पढ़कर लेखिका को लिखा—'आपने बड़िया कहानी लिखी है। उसे पत्रिका छापने में मुझे खुशी होगी। लेकिन उसे तरह पढ़ पाना आसान नहीं है। बेहतर कि आप उसे टाइप करके भेजें !'

जवाब में लड़की ने लिखा—'अगर टाइप करना जानती, तो क्या कहानी लिखने में अपना समय बरबाद करती ?'

०

लेस्टर मार्केल एक समाचार-पत्र रविवार-संस्करण का संपादक था। वह लेखकों से एक ही लेख को कई-कई नये ढंग से लिखवाया करता था और कहीं जाकर उसे संतोष होता था। इस पर उसे बड़ा गर्व था।

एक दिन उप-संपादकों से इस बात जिक्र करते हुए वह बोला—'एक बार इंग्लैंड की महान अर्थशास्त्री बार्बरा को एक लेख लिखने के लिए कहा उनसे वह लेख पूरे पांच बार लिखवाया।'

'सच्ची बात है', सहायक संपादक कहा—'और उस लेख के पांचों रूप अखबार में छापे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर तरह से मुसीबत

इस पत्रिका को चलाना कोई मनोरंजन नहीं है।.....हम अगर चुटकुले छापते हैं, तो पाठक कहते हैं कि आप मूर्ख हैं; अगर हम चुटकुले नहीं छापते, तो वे कहते हैं कि आप जरूरत से ज्यादा गंभीर हैं। हम अगर दफ्तर में ज्यादा कार्यव्यस्त रहते हैं, तो हमारे बॉस शिकायत करते हैं कि आपको समाचारों की खोज में बाहर जाना चाहिये। अगर हमें बाहर देर लग जाती है, तो बॉस एतराज करते हैं कि आप दफ्तर छोड़कर कहां चले गये थे ? आपके लिए इतने सारे फोन और मिलने वाले लोग आते रहे।

अगर हम बाहर से आने वाली रचनाएं नहीं छापते, तो कहा जाता है कि आपको प्रतिभा की पहचान नहीं है। और हम उन्हें छापते हैं, तो एतराज किया जाता है कि पत्रिका में कचरा छापा जाता है। किसी की रचना में काट-छांट करने पर हम जरूरत से ज्यादा मीनमेख निकालने वाले कहलाते हैं; और काट-छांट न करने पर कहा जाता है कि आप या तो अंधे हैं या ऊंघते रहते हैं।

अगर हम अन्य पत्रिकाओं में से रचनाएं लेकर छापते हैं, तो कहा जाता है कि आप आलसी हैं और खुद लिखने से जी चुराते हैं। अगर हम खुद लिखते हैं, तो इल्जाम लगाया जाता है कि आपको तो सिर्फ अपनी ही लिखी चीजें पसंद आती हैं।

अब शायद कोई कहे कि यह रचना हमने किसी दूसरी पत्रिका से ली है। जी हां, ली है।

—'कूरियर' का संपादक-मंडल

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

वेस्ट वर्जीनिया के एक संपादक ने अखबार में दस डालर के एक जाली नोट का फोटो छापा और लोगों को उसके बारे में आगाह किया। उसी दिन एक आदमी वह फोटो काटकर एक दुकान में गया। वहां से उसने लगभग दस डालर का सामान खरीदा और काउंटर पर दस डालर के नोट के उस फोटो की कतरन देकर चलता बना।

o

डामन रुनियोन एक दिन कोलोरैडो (अमरीका) के एक अखबार में नौकरी मांगने गया। नौकरी के लिए यह उसकी पहली कोशिश थी। वह संपादक के कमरे के बाहर बैठा था कि चपरासी ने आकर उससे कहा—'साहब आपका विजिटिंग-कार्ड चाहते हैं।'

रुनियोन के पास विजिटिंग-कार्ड नहीं था। (प्रसिद्धि प्राप्त करने के बाद भी उसने कभी विजिटिंग-कार्ड नहीं बनवाया।) वह कहने ही वाला था कि मेरे पास विजिटिंग-कार्ड नहीं है, तभी उसे अपनी जेब में पड़ी ताश की याद आ गयी। उसने ताश की गड्डी निकाली और उसमें से हुकुम का इक्का निकालकर चपरासी को देते हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा—'यह ले जाकर दे दो साहब को।'

संपादक ने हुकुम का इक्का देखा, तो उसी समय रुनियोन को बुलाकर नौकरी पर रख लिया और फिर दुपहर का खाना अपने साथ खाने की दावत दी।

०

क्लब में एक प्रसिद्ध समाचार-पत्र के मालिक से एक सज्जन कहने लगे—'मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। आज सुबह मेरे दो बच्चे बेहद शोर मचा रहे थे, आ अखबार ने उन्हें एकदम चुप करा दिया।

अखबार-मालिक ने बड़े उत्साह से पूछ 'कौन-सा लेख था वह, जिसने यह करि कर दिखाया?'

'लेख ने नहीं, बल्कि खुद अखबार करिश्मा कर दिखाया। मैंने उसे गोल क दोनों बच्चों के दो-दो लगाये और वे ए दम चुप हो गये।' सज्जन ने उत्तर दिया।

जब मैं 'संसार' अखबार का संपादक नियुक्त हुआ, एक जल्सा हुआ और पंडित गोवि वल्लभ पंत उसमें आये। अपने भाषण में उन्होंने संपादकों की कलम की शक्ति और प्र के बारे में बोलते हुए कहा—'अगर वे बार-बार लिखें कि गोविंदवल्लभ पंत बौना आदमी तो मैं आपको सचमुच बौना नजर आने लगूंगा।'

—गोपीनाथ अ

०००

आलिवर हरफोर्ड हाजिर जवाबी के मामले में अपन जवाब आप ही थे!

एक बार इस अमरीकी साहित्यकार को भी पत्रिका निकालने का चस्का सताने ल और उन्होंने प्रवेशांक निकाल ही डाला! परंतु अगले अंक के लिए आर्थिक संकट आ हुआ। इस पर वे खुद ही विज्ञापन जुटाने के लिए कमर कसकर खड़े हो गये और सेंचु कंपनी के चेयरमैन विलियन एल्सवर्थ के पास गये।

एल्सवर्थ ने पत्रिका देखी और विज्ञापन देने में असमर्थता व्यक्त की। हरफोर्ड न देने की वजह उनसे पूछी तो वे बोले—'क्योंकि यह पत्रिका चलेगी नहीं।'

'चलेगी क्यों नहीं?' हरफोर्ड ने प्रश्न किया।

'अजी! आप खुद ही इसमें तंग आ जायेंगे।' एल्सवर्थ का उत्तर था। फौरन फोर्ड ने अपने सबसे पैने शस्त्र हाजिर-जवाबी का उपयोग किया—'तंग तो श्रीमन् मैं सेंचु कंपनी से भी आ गया हूं; पर वह तो बंद नहीं हुई?'

..... और कुछ ही क्षणों में उनके हाथों में सेंचुरी का विज्ञापन था।

—दुर्गाशंकर त्रि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यादों के दायरे में

कोडाइ-कानल, जहां मैं आजकल रहता हूं, समुद्र-तट से सात हजार फुट की ऊंचाई पर बसी सुंदर पर्वत-पुरी है। वहां एक रात को लगभग १०।। बजे मैं एक भोज में भाग लेकर घर लौट रहा था।

भोज के समय पानी बरस रहा था, मगर अब हल्की बूंदें पड़ रही थीं। सरदी से कंप-कंपी छूट रही थी। ऐसे में सड़कों की बत्तियां भी बुझ गयीं, जो कि इस शहर में कोई नयी बात नहीं है। कहने को तो सड़कें तारकोल से पुती हुई और पक्की थीं; लेकिन एक-दो वर्षों से मरम्मत न किये जाने के कारण उनमें गहरी लीकें और कीचड़-भरे धोखा देने वाले गड्ढे बन गये थे।

कुछ मिनटों में फुहार तो कम होने लगी; पर बहुत घने कुहरे ने मुझे अपने आलिंगन में ले लिया। मैंने अपनी टार्च निकाली। लेकिन हाय, वह निर्जीव निकली।

'एक के पीछे एक कितनी असुविधाएं, तांता बांधकर!' मैं भुनभुनाया। अंग्रेजी की एक लोकोक्ति स्मरण हो आयी—'मिस-फॉरचून नेवर कम्स एलोन।' साथ ही याद आया एक किस्सा। 'फारचून' (सौभाग्य) नामक सज्जन के सात बेटियां थीं। उनकी जान-पहचान का एक युवक सबसे बड़ी बेटी से प्रेम करने लगा। जब भी वे दोनों टहलने निकलते, एक-दो छोटी बहनें जबर्दस्ती उनके साथ हो लिया करतीं। युवक मन ही मन खीजकर सोचा करता था—'मिस फॉर-चून नेवर कम्स एलोन।'

किस्से पर सोचते हुए सहसा हंसी आ गयी और तब एकाएक मैंने महसूस किया कि अंधेरा इतना भयंकर तो नहीं है, जितना कि मैं समझ रहा था। काफी रोशनी थी और राह कुछ-कुछ दिखती थी। कैसे हुआ यह?

हां, अब समझ में आया। जिस पहाड़ी की ढाल पर मैं चल रहा था, उसके पीछे भी पहाड़ियां थीं, और उन पर अमीरों के बंगले थे। उन्हीं में से किसी की बत्तियों की रोशनी कुहरे की ऊपरी सतह को आलोकित कर रही थी और प्रकाश प्रतिक्षिप्त होकर गीली सड़क को कुछ-कुछ प्रकाशित कर रहा था।

तभी अंग्रेजी कवि मिल्टन का एक शब्द-प्रयोग मेरे मन में अचानक कौंध गया—'डार्क-नेस विज़िबल'.....दृष्टिगोचर होने वाला अंधकार। हम कालेज के विद्यार्थी उस शब्द-प्रयोग पर बहस किया करते थे। अब 'दृष्टि-गोचर होने वाला अंधेरा' इत्तफाक से मेरे अनुभव में आ चुका था। उसी अंधेरे के सहारे मैं मजे में घर आ पहुंचा। व्यर्थ ही झुंझलाया था मैं तो, जबकि फुहार-कुहरा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मम्मी को पप्पा से... पप्पा को मम्मी से

हमको पारले ग्लुको से प्यार है

बच्चे बच्चे की ज़बान पर

पारले ग्लुको
स्वाद में निराले..
शक्ति से भरपूर

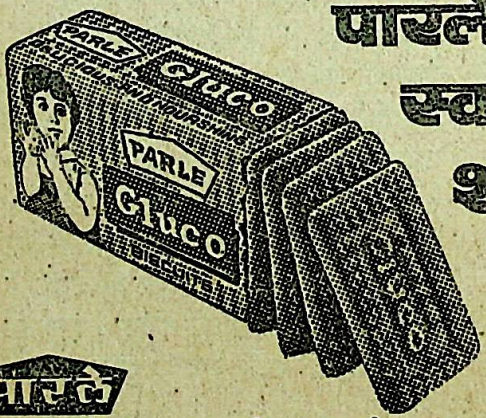

दूध, गेहूं, शक्कर और ग्लूकोज़ के शक्तिदायक तत्वों से भरे हैं ये पारले ग्लुको बिस्किट.

वर्ल्ड सिलेक्शन पारितोषिक विजेता

पारले

ग्लु को – भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्किट

everest

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंधकार सभी मेरी सुविधा का कुछ न कुछ ध्यान रख रहे थे।

—एम. एस. कल्याणसुंदरम्,
कोडाइ-कानल, तमिलनाडु

०००

मौसेरा भाई

एक दिन हमारी माताजी ने दुकानदार से ३० किलो गेहूं तुलवाये और यह कहकर घर आ गयीं कि मेरा लड़का आकर ले जायेगा। थोड़ी देर बाद जब मैं दुकान पर पहुंचा, तो दुकानदार ने एक लड़के को दिखाते हुए मुझसे पूछा—क्या यह आपका भाई है? मैंने उस लड़के को देखा, तो वह बेहद डरा हुआ जान पड़ा। मैंने दुकानदार से पूछा कि आखिर बात क्या है। बोले कि यह लड़का अपने को आपका भाई बताकर गेहूं मांग रहा था। मैंने इसे आज तक नहीं देखा था; इसलिए मैंने गेहूं दिये नहीं। मुझे उस लड़के पर दया आ गयी।

मैंने दुकानदार से कहा कि यह मेरा मौसेरा भाई है। यह सुनकर वह लड़का तो मेरा मुंह देखने लगा और दुकानदार ने मुझसे माफी मांगी। मैं लड़के को साथ लेकर दुकान से निकला। मगर वह मुझे चकमा देकर भाग खड़ा हुआ। खैर.....

कुछ दिन बाद माताजी फिर गेहूं लेने गयीं और तुलवाकर वहीं छोड़ आयीं। जब मैं उसे लेने दुकान पर पहुंचा, तो दुकानदार बोला—'गेहूं तो आपका मौसेरा भाई ले गया।' सुनकर मेरे मुंह से अनायास निकला—'ऐं!' मुझे दुकानदार को सब बात बतानी पड़ी, ताकि मौसेरा भाई आगे और मेहरबानी न करे।

— अरुण कुमार भंडारी, मेरठ

०००

एकलव्य अभी मरा नहीं

पांच वर्ष पहले एक दिन मालेरकोटला से करनाल आते हुए मैं अंबाला छावनी पर करनाल की गाड़ी में बैठा हुआ था। तभी एक नौजवान टिकट-चेकर डिब्बे में आया और टिकट चेक करने लगा। मेरे पास आकर उसने टिकट मांगा और मैंने टिकट उसकी ओर बढ़ा दिया। उसने मेरी ओर देखा और बिना कुछ कहे मेरा टिकट हाथ में ही लिये गाड़ी से उतर गया। मैं चिंतित कि टिकट तो सही है, फिर उसने ऐसा क्यों किया? तभी वह टिकट-चेकर एक चाय वाले को साथ लिये वापस आया और उसने चाय और बिस्कुट मेरे सामने पेश किये।

मुझे हैरान देखकर फिर बोला—'गुरुजी! आपने मुझे पहचाना नहीं? मैं.....हूं, अमुक सन में मैंने आपके चरणों में बैठकर मैट्रिक पास की थी। आपके आशीर्वाद से सम्मानपूर्वक रोटी कमा रहा हूं। छात्रों के प्रति आप जो सद्भाव रखते थे और उनका जो मार्गदर्शन करते थे, वह भूलने की चीज नहीं है। मेरा सौभाग्य है कि आज आपके दर्शन हो गये। अब मेरा आतिथ्य स्वीकार करने की कृपा करें।' डिब्बे में बैठे सभी यात्री मुग्धभाव से इस दृश्य को देख रहे थे।

— जगदीश कौशिक, करनाल, हरियाणा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नरेंद्र कोहली के रामकथा-विषयक उपन्या
'दीक्षा' और 'अवसर' को पढ़कर .....

राम, तुम्हारा चरित स्वयं काव्य है

कुमार प्रशांत

जब जेल में था, तब 'दीक्षा' एवं 'अवसर' के बारे में सुना था। उस समय लेखकों की कलम इतनी भयभीत और सावधान थी कि सुनकर आश्चर्य हुआ था कि श्री नरेंद्र कोहली ने यह सब लिखने का साहस कैसे किया। अब उनकी दोनों कृतियां पढ़ने के बाद उनका साहस और बड़ा मालूम देता है। बाङ्ला देश से इस उपन्यास के लिए प्रेरणा पाने की बात सच भी हो सकती है और तब के माहौल के लिए एक ओट भी; क्योंकि यह प्रश्न तो सहज उठता है कि सीमा पार बाङ्ला देश की घटनाओं से जल उठने वाला लेखक क्या बिहार-आंदोलन और संपूर्ण क्रांति की लपट से सिंक भी नहीं पाया? सच को सच कहने के कारण यह पूरा देश जिस बुरी तरह कुचला गया, क्या उसने लेखक को कोई 'दीक्षा' नहीं दी लेखक ने लिखा भी है—'मुझे अपने देश घटित अनेक घटनाओं का रामकथा घटनाओं के साथ ताल-मेल बैठता दि पड़ने लगा।' क्या थीं वे घटनाएं? अब लेखक उनके बारे में स्पष्ट लिख सं

इन दोनों कृतियों में साहस का पुट है, जो आजकल सामान्यतया हिं लेखकों में नहीं होता है। इसलिए लेख का साधुवाद करता हूं। इन दोनों कृति ने लेखक को सामयिक घटनाओं के जोड़ने की कोशिश की है, और वह कोशि इतनी मजबूत है कि दूसरी कई कृतियों जनक हो सकती है। इसके लिए भी कोहली जी को धन्यवाद है।

पूरी उपन्यास-शृंखला ('संघर्ष की और 'युद्ध' नाम से दो उपन्यास और बाकी हैं) रामकथा को नये रूप में प्र करने की कोशिश है। रामकथा का रूप भारतीय मन में वाल्मीकि-राम

पराग प्रकाशन, ३/११४, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली-३२; २४२ और २३९ पृष्ठ; १६ रुपये प्रत्येक।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामायण की अमरता इसमें है कि हर युग और हर पीढ़ी का पाठक उसमें अपनी व्यष्टि-गत और समष्टि-गत अनुभूतियों और समस्याओं की झलक देखता है। कोहलीजी ने 'दीक्षा' और 'अवसर' में इस सत्य को बहुत प्रभावपूर्वक हृदयंगम कराया है। तुलसी के बजाय वाल्मीकि का अनुसरण करने से इसमें उन्हें विशेष मदद मिली है; क्योंकि तुलसी से बहुत ही पूर्वकालीन होते हुए भी वाल्मीकि आधुनिक चेतना के अधिक निकट हैं। ● किंतु वाल्मीकि-रामायण का भी परिवेश पौराणिक है। शायद कोहलीजी के आधुनिक मन को वह स्वीकार नहीं। फंतासी की तरह उसे भी अंगीकार करने में हर्ज क्या था? उससे एक लाभ भी होता। पौराणिक परिवेश हटाने से रामकथा को किसी विशेष काल में स्थापित करना आवश्यक हो गया और कोहलीजी अनजाने में उसे १९७० वाले दशक में ले आये। उनका इंद्र इसी दशक का कोई भ्रष्ट-दुष्ट कांग्रेसी मंत्री है, उनका गौतम कोई बेचारा वाइस-चांसलर। भाषा भी सभी पात्र इसी प्रकार की बोलते हैं—'दिनमान' से प्रभावित अंग्रेजी-आश्रित हिंदी। भले ही इस दशक की परिस्थितियों ने ही लेखक को रामायण-युग और वर्तमान युग की समताओं का दर्शन कराया हो, मगर समताओं को स्थूल घटनाओं के बजाय अनुभूति पर अवलंबित रखा जाये तो रचना अखबारी किस्म की समसामयिकता से आसानी से उबर सकती है। क्या 'सीता विवासनपटो करुणं कुतस्ते' इस एक वाक्य में ब्राह्मण भवभूति सीता-निर्वासन और शंबूक-वध के साथ-साथ आर्य संस्कृति के स्त्री-शूद्र-विषयक समूचे अन्याय का भी खंडन नहीं कर देता? ● रामकथा के अन्य लेखकों की भांति कोहलीजी ने भी अनेक नयी उद्भावनाएं की हैं, जिनमें अहल्या-प्रकरण एवं सीताजन्म-कथा सबसे सार्थक और कौशलपूर्ण हैं। कैकेयी-राम-संबंधों और राम-वनगमन को उन्होंने अधिक तर्क-संगत बनाया है। राक्षसों के नरमांस-भक्षण को रस्मी अर्थ देना गहरी सूझ है। किंतु शिव-धनुष को न्यूक्लीय अस्त्र-सा बताना महज कौतुक है; क्योंकि न्यूक्लीय-अस्त्र बनाने वाली सभ्यता के उत्पादन, यातायात एवं संवाद-प्रेषण के साधन भी बहुत उन्नत होते हैं। टेक्नालाजी इस मानी में अविभाज्य होती है। ● निषादों-वानरों-रीछों के मित्र राम को आदिम जातियों का हित-रक्षक दरसाना सर्वथा उचित है। किंतु ऋषियों के आश्रम निश्चय ही आर्यसत्ता के प्रसार के साधन थे। 'अग्रतश्चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः। इदं ब्राह्म-मिदं क्षात्रं शापादपि शरादपि॥' जैसी उक्तियों में उस सत्य की स्मृति जीवित है। ● राम को जीवन-दर्शन देने वाले विश्वामित्र वर्णातीत मानव-समानता के उद्घोषक कैसे बन गये? वे तो ब्राह्मण-श्रेष्ठता को पूरी तरह स्वीकार करके अपना सर्वस्व लगाकर क्षत्रियत्व से 'ऊपर उठकर' ब्राह्मण बने थे। शायद अगले दो खंडों में कोहलीजी इसका समाधान कर रहे हों। ● 'दीक्षा' और 'अवसर' ने मुझे उन खंडों का प्रतीक्षक बना दिया है। —नारायण दत्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा अंकित हुआ है। अतः वाल्मीकि-रामायण की कई स्थापनाओं को लेखक बदलता है और उसके लिए अपने तर्क भी देता है। राम के जीवन में किसी कृतिकार को सामयिक समस्याओं के नये संकेत मिलने लगें, तो आश्चर्य की कोई बात नहीं। राम-कथा में इतना प्राणतत्त्व अब भी है ही। मैथिलीशरण ने ठीक ही तो लिखा है—'राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है.....।' ०००

रामकथा के इस नये संस्करण में जो स्थापनाएं हैं उनके माध्यम से लेखक कहना क्या चाहता है? दशरथ को इतना कामी, लक्ष्मण को इतना प्रगल्भ (उसका शिशुत्व नहीं, उजड्डपन झलकता है) आदि दिखाने से क्या किसी समस्या का हल मिलता है? या कि प्रतिमा-भंजन का सुख लेखक के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण हो गया है? प्रतिमा-भंजन अपने आपमें लेखकीय धर्म का अंग नहीं है, ऐसा तो कोई नहीं कहेगा; किंतु प्रतिमा-भंजन अपने आपमें लेखन नहीं है। राजाओं के लिए तब बहुविवाह बहुत सामान्य चीज थी। वे उनकी प्रतिष्ठा का, समाज में आदर का प्रतीक थीं। राजा से अपना स्नेह प्रदर्शित करने के लिए अपनी लड़की उसे दे डालना कोई बहुत बड़ी घटना नहीं थी—कम से कम, राजा की कामेच्छा का प्रमाण तो नहीं थी। स्त्री भेंट देने, खरीदने या बेचने की वस्तु नहीं है, इसे हमारा समाज आज भी पूरी तरह कहां स्वीकार कर सका है?

राम और उनके छोटे भाइयों का समवयस्क होना यदि लेखक को स्वीकार्य नहीं है, तो पुत्रेष्टि-यज्ञ की कल्पना को मान देने से सारी समस्या हल हो जाती। चारों भाई अलग-अलग माताओं से हुए। राम सबसे बड़ी रानी के पुत्र हैं, बाकी देर से हुए। उम्र का अंतर स्वाभाविक है। इस बात की स्थापना के लिए दशरथ को इतना नीचे उतारने की आवश्यकता नहीं थी। क्या राम का अपने भाइयों से पितातुल्य व्यवहार वय के कारण होता?

इस प्रयास में कि रामकथा को नया बनाना है, बहुत कुछ आरोपित आधुनिकता में लेखक फंस गया है। विश्वामित्र और राम का संवाद—और यही क्यों, सारे संवाद लगता है बीसवीं शताब्दी के दो शिक्षकों का वार्तालाप है। सारे शब्द आज के हैं, उस वक्त की गमक नहीं है। ०००

इन सबके बावजूद इन दोनों उपन्यासों को मैं पठनीय उपन्यासों की सूची में लेता हूं। कारण, इनके पीछे एक ईमानदार लेखक की तीव्रता है। उसके प्रश्न सचमुच बेचैन करते हैं और उसका विश्लेषण पाठक को कुछ सांत्वना भी देता है। अहल्या प्रसंग, शिव-धनुष के स्वरूप की कल्पना आदि तो मुग्ध कर देते हैं। सीता के जन्म और स्वयंवर के बारे में भी लेखक की स्थापनाएं विश्वसनीय लगती हैं।

प्राचीन ग्रंथों की, नये संदर्भों में किस प्रकार छानबीन क्या स्वस्थ प्रक्रिया है, ऐसा प्रश्न कई लोग उठाते हैं। मैं कहता हूं कि प्राचीनता जब तक नवीनता को प्रेरित करती है, तब तक वह प्राचीनता अर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। वह प्राचीनता के आवरण में छिपी नवीनता है। रामायण, महाभारत, गीता आदि ऐसे महाग्रंथ हैं, जो आज भी जिज्ञासुओं को अपनी ओर खींच लेते हैं। नये संदर्भ से इनकी छानबीन न केवल लेखकीय कौशल है, बल्कि आवश्यक भी है; चूंकि कसौटी पर चढ़कर ये फिर नयी हो जाती हैं।

नरेंद्र कोहली ने रामकथा को यह नया संदर्भ देकर, राम को एक बार फिर सामयिक बना दिया है। उनका राम जब साधारण आदमी की तरह सोचता है, प्रतिक्रियाएं करता है, अपनी रक्षा-योजना बनाता है, सीता को रिझाने की कोशिश करता है, तो ज्यादा प्रिय और विश्वसनीय लगता है। और यह सब वाल्मीकि की भावना से मेल खाता है। तुलसीदास ने राम को इतना ईश्वर बना दिया है कि साधारण आदमी के लिए वहां कोई अवकाश ही नहीं है। 'दीक्षा' और 'अवसर' के राम तथा दूसरे पात्र आदमी हैं और समस्याओं से घिरे हैं। समस्याएं भी कैसी ? जिनसे पूरा देश पिछले दिनों पूरे १९ महीनों तक त्रस्त रहा था। 'व्यक्ति-रावण से अधिक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति-रावण है। विरोध उस दुष्ट प्रवृत्ति और भ्रष्ट व्यवस्था का है, जिसका अधिनायकत्व रावण कर रहा है.....राक्षसत्व प्रकृति का अनगढ़ और आदिम रूप है, प्रत्येक युग उसका अपने ढंग से विरोध करता है। ये धनुर्धर उसका विरोध करने वाले न तो पहले व्यक्ति हैं न अंतिम होंगे। यह संघर्ष तो चिरंतन है; कभी तीव्र होता है, कभी मंद; कहीं केंद्रित होता है; कहीं विकेंद्रित..... ("अवसर" पृष्ठ १२८)।'

यहां रामकथा आधुनिक संदर्भ से जुड़ जाती है। लोकतंत्र में भी लोक और तंत्र की कशमकश कभी तीव्र होती है, कभी मंद; पर चलती वह रहती है। उसी कशमकश से समाज को निकालने की चिंता, आज क्रांतिशास्त्रियों के सम्मुख है। सत्य को छोड़कर आजादी मिले तो मैं उसकी ओर ताकूंगा भी नहीं, कहकर गांधी ने उसी बड़े मूल्य का संकेत किया था। इन उपन्यासों के राम उसी मूल्य के रक्षक इंसान हैं।

'"राज्य का अनुदान!" वाल्मीकि गहरी चिंता में पड़ गये, "अनेक बार सोचा है, राम! पर राज्याश्रय कलाकार की कला का काल है, पुत्र ..... कला का मूलधर्म अन्याय का विरोध है। कला जब सत्ता और धन के आश्रय में चली जाती है, तो अपने मूल धर्म से च्युत हो जाती है..... कलाकार विद्रोही होता है, और शासन विद्रोह नहीं चाहता। कलाकार और शासन सहमत हों तो कलाकार को ईमानदार न समझो।"' (पृष्ठ १३८-३९, अवसर)।

राज्याश्रित कला की यह उलझन और भी जटिल है; किंतु इसका मूल वाल्मीकि ने ठीक पकड़ा है। कला को बाजार से उठाये बगैर इस उलझन का अंत संभव नहीं है।

नरेंद्र कोहली के इन दो उपन्यासों के आगे की कड़ी प्रतीक्षित है। शायद चारों मिलकर कुछ और कहने को मजबूर करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुबेरनाथ राय

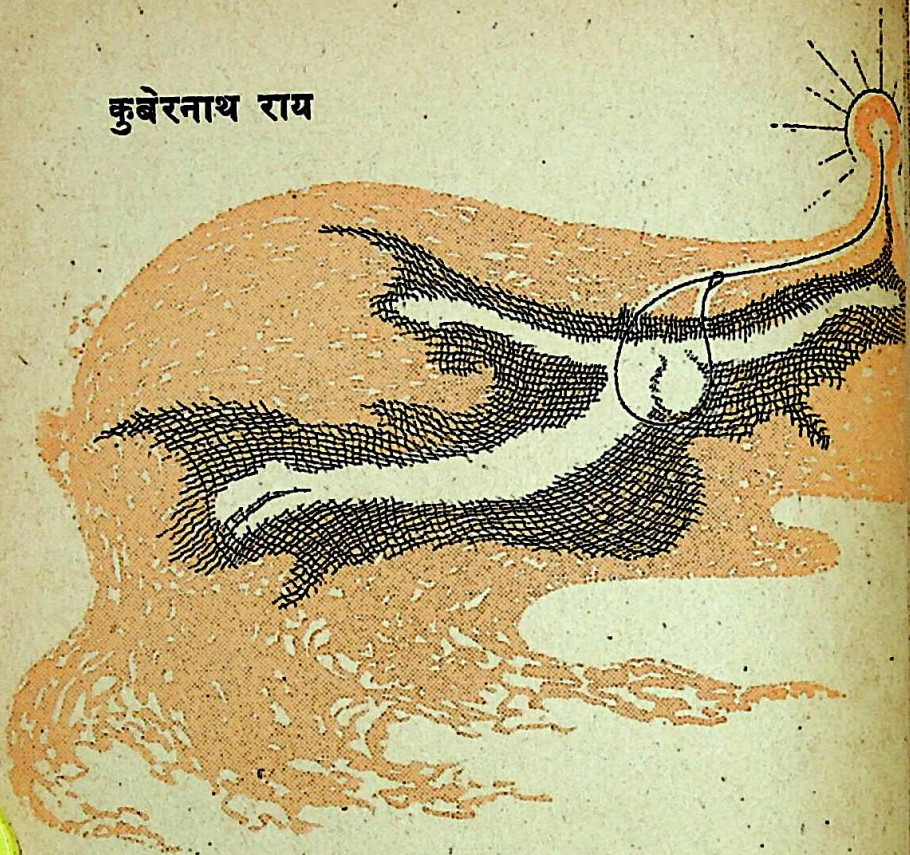

जीर्ण वस्त्र और पापहरा नदी

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय .....

एक श्लोक मन में उभरता है। वही श्लोक तट के महीरुह-यक्ष के पत्ते बोलते हैं। 'पत्रे पत्रे देवानाम्'। पत्ते-पत्ते पर देवता हैं और उन देवताओं की मिली-जुली एक श्लोक बन जाती हैं –'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय .....'। वही श्लोक नदी क्षुरधार लहरों के उद्गान में भी बज रहा है। सारी नदी काल की अद्भुत जल बनकर मुखर है – 'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय .....' अर्थात् जैसे हम जीर्ण वस्त्र त्याग करके नवीन वस्त्र धारण करते हैं, वैसे ही यह 'देही', यह जीवात्मा भी जीर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का त्याग करके नये प्रारब्ध और नये शरीर को धारण करती रहती है।

जीवात्मा जीर्ण वस्त्र को तट पर डाल देती है; सारे कर्मों का साक्षी अविचल अश्वत्थ श्लोक बोलता है और जीवात्मा उस 'ऊर्ध्वमूलम् अधःशाखं' साक्षी अश्वत्थ से ही नया प्रारब्ध और नया परिधान ग्रहण कर पुनः जन्मांतर की क्षुरधार नदी में प्रवेश कर जाती है अगले घाट, अगले तीर्थ, अगली तटभूमि पर विहार करने के लिए। वह अगली तटभूमि पर किसी खूंटे से अपने को पशु की भांति बांधकर कुछ काल तक उसके चारों ओर तेली के बैल की तरह चक्रीय विहार करती है, एक नितांत ही बंधी हुई क्षुद्र परिधि के भीतर; और तब एक दिन ऐसा भी आता है, जब जीवात्मा बंधन-रज्जु और जीर्ण वस्त्र का परित्याग कर इस खूंटे से तुड़ाकर भाग जाती है जन्मांतर-प्रवाह पर मुक्तबाहु-संतरण करती हुई।

नदी जन्मांतर की क्षुरधार नदी है। उसके इस तट पर लौकिक जगत है; बंधे हुए पक्के या कच्चे घाट बने हुए हैं, जहां जीवन का 'तीर्थ' जुड़ता है, मेला लगता है और जहां 'कर्मों के साक्षी यक्ष-पुरुष महीरुह-रूप धारण करके खड़े हैं। परंतु नदी के उस पार अलौकिक की आलोकमयी भूमि है, जहां पर जाकर आवागमन नहीं होता, भव-बंधन का कंठ-कुठार अपने आप भू-पतित हो जाता है, और जीवात्मा अनिर्वाच्य विश्राम का शांत-बिंदु लब्ध कर जाती है।

जीवात्मा बाहु-संतरण करके उस पार जाना चाहती है। परंतु कर्मफल का कंठ-कुठार जो उसके गले से लटक रहा है, उसे उधर जाने नहीं देता और नदी का बांका प्रवाह पुनः उसे इसी पार किसी नये घाट पर ला पटकता है। वह भ्रांतिवश उसी घाट के किसी खूंटे से अपने को बांध लेती है और सोचती है कि नदी ही बांध दी गयी है। पर नदी तो मुक्त है, सहस्रफण है, और वह फुंफकारती हुई आगे बढ़ जाती है; और जीवात्मा पंचायतन परिधान धारण करके कर्मरत हो जाती है उसी खूंटे के चारों ओर।

महीरुह-रूपधारी तट का साक्षी पुरुष बार-बार अपने पत्तों की सांसों के माध्यम से श्लोक बोलता है, चेतावनी देता है—'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय .....' परंतु जीवात्मा अपने परिघूर्णन की क्रीड़ा में इतना मौज पाती है कि सुनती नहीं। तो भी पत्ते श्लोक बोलते रहते हैं और नदी की लहरें फन काढ़कर फुंफकार भरती हुई इसी श्लोक की आवृत्ति करती हैं। जीवात्मा के लिए वह खूंटा इतना मोहक हो उठता है, वह क्रीड़ा इतनी सुखद लगती है कि वह श्लोक को सुनकर भी सुन नहीं पाती। परंतु एक दिन बंधन-रज्जु अपने आप टूट जाता है, जीर्ण वस्त्र अपने आप खिसककर गिर पड़ता है और जीवात्मा पुनः नदी में कूद जाती है गले से लटकते हुए कंठ-कुठार के साथ। और फिर वही लीला।

मैं जानता हूं, पिताजी अपने जीवन के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतिम दशक में साक्षी-महीरुह की चेता-वनी सुन रहे थे, नदी के उद्गान का मर्म समझ रहे थे; परंतु बंधन-रज्जु की गांठ पर परिवार, समाज और शासन की तमोगुणी व्यवस्थाएं निरंतर पानी ढालकर उसे दृढ़ करती रहीं और वे 'पाश' को तोड़कर 'पशु' से 'पशुपति'-भाव को लब्ध नहीं कर सके।

अंतिम काल में उनके अंदर एक वैराग्य-तृषा अवश्य थी। काशी, वृंदावन और हर-द्वार से उन्होंने इस विषय पर पत्र-व्यवहार प्रारंभ कर दिया था। परंतु समय नहीं रहा, मृत्यु जीवन के पीतपत्र पर अपना हस्ताक्षर कर चुकी थी। अनेक दमित इच्छाओं की तरह यह वैराग्य-तृषा भी एक दमित वासना बनकर उनके अगले भव-जीवन के कंठ-कुठार का एक अंग बन गयी। इस समय वे पितृलोक की 'स्वधा' से संयुक्त हो गये हैं, मरणोत्तर जीवन का स्वाद ले रहे हैं।

धरती पर तो छह-छह स्वाद हैं, परंतु पितृलोक का स्वाद फीका-सादा-अलोना है, अतिक्त है, अनम्ल है। धरती पर तिक्तता है, तीक्ष्ण अम्लता है, तो साथ ही अपूर्व लावण्य भी है। परंतु पितृलोक उदास और फीका है। वहां के स्वाद अपने अपकर्म, निष्कर्म और सत्कर्म के अनुसार कटु, कषाय और मधुर हैं। वह सिर्फ तीन रसों का लोक है। हमारी धरती ही को षड्रस होने का सौभाग्य है। इसी से तो माया का खूंटा षड्रसों की लीला-धुरी बन जाता है। पिताजी को अंतिम काल में इस षड्रस-धरती के प्रति वैराग्य हो गया था, यद्यपि यह वासना अंतर्निहित ही रही और अ दमित होकर जन्मांतर की 'लिबिडो' गयी, जन्मांतर की बीज-शक्ति हो जिसकी नये जन्म में अभिव्यक्ति होगी।

इस समय तो पिताजी पितरों के लोक में कटु, कषाय और मधुर की 'मैरेय' अर्थात् 'काकटेल' का पान रहे होंगे। पान समाप्त करके ही प्र होगी पुनः क्षुरधार नदी के प्रवाह पर तीर्थ-घाट की यात्रा। 'पीत्वा चाम्बरी पुनरायाति पुनः पुनः।' आत्मा अंबर के का पान करके पुनः भवलोक में उतर है। यह अंबर का पीयूष ही पितरों का है। इसे पान करके आत्मा पूर्वजन्म 'लिबिडो' का कंठ-कुठार लटकाये धरती पर लौट आती है।

आज पिताजी की मृत्यु के बाद की महालया है। मैं अपनी पापहरा नदी के पर बैठा चिंतन कर रहा हूं। मैंने कु 'पवित्री' को कटिसूत्र, कान, उंगलियां अंजुलि इन चार स्थानों पर धारण कर है। मेरी अंजुरी में तिल-अक्षत और ज मेरे मस्तक में 'अस्तित्व' की चिंता और हुई बातों की अनेक खंडित स्मृतियां उतरा रही हैं, जिन्हें श्रीमद्भागवत गरुडपुराण जैसे काव्यों के कवियों ने कल्पना-चक्षुओं से देख करके लिखा है।

सतह पर उतरायी हुई अनेक स्मृ में से एक है कठोपनिषद् की कथा। केता मृत्यु के द्वार पर अतिथि की जाता है और 'विद्या' मांग लाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृत्यु के देवता से। सच्ची विद्या वही है जिसके दाने मृत्यु अपने पसर से उठाकर हमारी फैली अंजुरी में डाल देती है। सच्ची विद्या मृत्यु के साथ 'उपनिषद्' अर्थात् नजदीक बैठने का ही दूसरा नाम है। परंतु मृत्यु जिस जीवन के कान में यह विद्या फुसफुसा जाती है, वह विद्या मृत्यु की नहीं, 'महाजीवन' की विद्या है—यह भी एक अद्भुत बात है। ऐसी मृत्यु जो गुरु बनकर बोलने लगती है, मुमूर्षा का नहीं, जिजीविषा का पाठ पढ़ाती है। तब अनुभव होने लगता है कि जन्म और मृत्यु महाजीवन के ही दो चेहरे हैं—'यस्य छाया अमृतं यस्य मृत्युः .....' का बोध मन में साफ-साफ उदित हो जाता है।

मैं कौन? इसका उत्तर पाना अतिशय कठिन है। मौन, ध्यान और 'जेन' में उतरो—शायद वहां कुछ हाथ लगे। परंतु मैं क्या? उत्तर स्पष्ट है—एक भांड, एक मृत्पात्र। मैं माटी, मैं मृत्तिका, मैं गंधवती माटी जो शब्दहीन होकर भी शब्द बोलती है गात्र-वीणा बनकर; जो रूपहीन होकर भी बहुरूपी बनती है देह बनकर; जो रसहीन होकर भी रसवती बनती है हृदय बनकर; और सबसे बढ़कर आश्चर्य यह कि जो अचित् होकर भी चिन्मय का आधान बनती है जीवात्मा बनकर। आश्चर्यमयी है यह मृत्तिका, यह एक मुट्ठी गंधवती! यह सब कैसे संभव होता है? इस सारी भोजविद्या को, सारे इंद्रजाल को कौन खेलता है? कौन है वह मायावी, कौन है, वह शौभनिक? इन सारे प्रश्नों का उत्तर मैं पाना चाहता हूं।

इस महालया के दिन, पितरों का विसर्जन करते हुए मेरे मन में पिताजी की स्मृति के साथ-साथ ये प्रश्न उदित हो रहे हैं। आज ही पितर-गण अपनी 'स्वधा' को लब्ध कर पुनः सोम-मंडल में लौट जायेंगे और अगले संवत्सर के पितृपक्ष की प्रतीक्षा करेंगे। जो व्यतीत हैं, जो पितर बनकर पूज्य अतीत बने हैं, वे आज अपनी छाया से धरती को मुक्त कर रहे हैं और सृष्टि के कण-कण में दशप्रहरण-धारिणी देवी का आविर्भाव अनुभूत-सा होने लगा है, संपुटित जीवन की 'जय' पुनः विसंपुटित होकर पांखुरी-प्रति-पांखुरी खुलने लगी है। एक, दो, तीन..... करके नौ पांखुरियां। एक-एक पांखुरी पर एक-एक देवी और अंत में दसवीं पांखुरी पर दसवीं महाविद्या 'विजया' का अवतरण। तथा 'रूपं देहि यशो देहि जयं देहि द्विषो जहि' की सृष्टिव्यापी अद्भुत प्रार्थना!

जीवन और जन्म का उत्सव प्रारंभ होने वाला है। जो मृत हैं, जो पितर हैं, वे अपनी लब्ध 'स्वधा' का पान कर तृप्ति और सुख से, जो जीवित हैं और जो जन्म लेंगे उनकी जय-जयकार बोलते हुए अपने सोमपथ पर चले जा रहे हैं। देह-देह के स्नायु-मंडल में देवी की रंग-बिरंगी पाल-सजी नौकाएं डांड़ मारती हुई तीर की तरह छूटने लगी हैं और स्नायु-मंडल के अंदर विहार करती उन इच्छाओं और कामनाओं की मायावी नौकाओं के अंदर दशप्रहरण-धारिणी देवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही आकर अवगुंठन के भीतर बैठ गयी है। जो जीवित हैं, जो जन्म लेने वाले हैं, उनके लिए देह-देह के स्नायु-मंडल में अद्भुत अरूप बांसुरी बजती हुई ये पाल सजी रंगीन नौकाएं संचरण करने लगी हैं।

यह महालया एक अद्भुत दिवस है पितरों की तृप्ति का, जीवितों के ऋत का और अजनमे के अमृत का विवरण करने वाला अद्भुत दिवस और अद्भुत रात्रि। इसका एक चेहरा है 'वर', दूसरा है 'अभय', तीसरा है 'आश्वासन'। अतः इस महालया-वेला में मैं काल-भिल्ल के सनसनाते क्रीड़ा-तीरों के बीच बैठा हुआ अतीत से 'वर' मांगता हूं, वर्तमान से 'अभय' मांगता हूं और भविष्य से 'आश्वासन' मांगता हूं।

साथ ही, मैं अनुभव करता हूं कि मृत्यु से कोई बच नहीं सकता। बल्कि एक अनुभवी कवि ने, जो आजीवन काममधु की उपासना का काव्य रचता रहा, यहां तक कह डाला है कि 'मरण' ही प्रकृति है, जीवन तो 'विकृति' मात्र है। मैं उतनी दूरी तक मरण को महत्त्व नहीं देता। तो भी आज मैं अनुभव करता हूं कि यह अनिवार्य है, इससे कोई बच नहीं सकता; परंतु इसे महाजीवन का रूप दिया जा सकता है और इससे प्रार्थना की जा सकती है। विषाद और धिक्कार नहीं, कोमल कंठ से प्रार्थना! जिससे यह शांत-सुंदर-छंदोबद्ध हो उठे! जिससे यह जीवन की पराजय न बनकर उसी की एक भिन्न विधा, एक भिन्न छंद का रूप धारण कर ले।

तब मृत्यु को जीतने का अर्थ क्या है? क्यों वेदांत ललकारता है—'बेटा, मृत्यु विजय प्राप्त कर ले?' मुझे तो लगता कि मृत्यु को जीतने का एकमात्र अर्थ मृत्यु से जुड़ी मानसिक विकलता को, मृत्यु जुड़े भय और पश्चात्ताप को जीतना; से लिपटे हुए मृत्यु के महासर्प के प्रति घिन और ग्लानि से अपने को अंतिम तक मुक्त रख पाना; अपने को जीवन और मृत्यु-क्षण दोनों अवस्थाओं में 'शिवं निर्विकारम्' रख पाना; और को अखंडित तथा अविरुद्ध रूप से बोध के साथ अंतिम क्षण तक जोड़े रख

जैसे महाकाल के कंठ से संलग्न पार्वती और शीश पर फुफकारता हुआ भुजंग दोनों साथ-साथ रहते हैं, वैसे ही को क्षयी काम और भय से मुक्त रख ही मृत्यु को जीतना है। ऐसा हो जाना काल के भी बाप महाकाल जैसा बन है। मृत्यु को जीतना एक शारीरिक शुद्ध मानसिक तथ्य है। स्थूल शरीर तो पात होगा ही एक दिन। परंतु पात के भय से अपने व्यक्तित्व को कुंठ क्षुद्र, दग्ध और दीन होने से बचा लेना मृत्यु को अंगूठा दिखाना है। ऐसी अवस्था में शरीर-पात हो जाने पर भी मृत्यु जाती है। आत्मक्षय, लिबिडो और वासनाओं की चल नहीं पाती।

जीवन और मृत्यु दोनों अवस्थाओं अस्तित्व को निर्मल, प्रसन्न, अपराजित पापबोध से मुक्त रख पाना ही सदेह नि

[शेष पृष्ठ १२४ पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चोरी का राष्ट्रीयकरण

· रमेश मंत्री ·

चित्र : वसंत सर्वटे

निजी क्षेत्र में कोई धंधा सफलता से चल निकला कि नहीं उसका राष्ट्रीयकरण कर दिया जायेगा—यह अब निश्चित-सी बात है। फौलाद, बीमा, बैंक जैसे धंधों का राष्ट्रीयकरण हो यह तो ठीक है। मगर उस दिन जो खबर मैंने पढ़ी, वह निःसंदेह सरासर अनपेक्षित, धक्का देने वाली और राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था में आमूलाग्र परिवर्तन करने वाली थी। बड़े-बड़े अक्षरों में छपा था :

चोरी का राष्ट्रीयकरण

राष्ट्रपति का अध्यादेश

अर्थ-मंत्री का राष्ट्र के नाम भाषण!

अब से निजी क्षेत्र में किसी के भी यहां चोरी करना निषिद्ध!

सरकारी परिचय-पत्र वाले अधिकृत चोरों की नियुक्ति की जायेगी!

नयी दिल्ली, १५ तारीख। कल रात ११ बजे राष्ट्रपति ने विशेष अध्यादेश जारी करके देश में चोरी के धंधे का राष्ट्रीयकरण किये जाने की घोषणा की है। इस नये अध्यादेश के अनुसार, अब से निजी तौर पर चोरी करना दंडनीय और कारावास-योग्य अपराध माना जायेगा। चोर, पक्का चोर और डाकू इन तीन श्रेणियों में अधिकारियों की नियुक्तियां अब से सरकार के अर्थ-विभाग द्वारा की जायेंगी। इन्हें वेतन, महंगाई-भत्ता, प्राविडेंट फंड, पेन्शन आदि समस्त सुविधाएं मिलेंगी। नियुक्तियां करते समय पिछड़ी जातियों और अनुसूचित जातियों को वरीयता दी जायेगी। इसके अलावा, चोरी में मिले माल के १५ प्रतिशत माल की कीमत उन्हें बोनस के रूप में मिलेगी।

'अभी तो चोरी की आमदनी पर सरकार को आयकर नहीं मिलता है और राष्ट्र की भारी आर्थिक हानि होती है। इसे रोककर इस महत्त्वपूर्ण व्यवसाय के धन की धारा राष्ट्र के विकास-कार्यों की ओर मोड़ना इस राष्ट्रीयकरण का मुख्य उद्देश्य है।' ऐसा अर्थमंत्री टी. टी. रावण्णाचारी ने कहा है। जिनके रेडियो न चुरा लिये गये हों, वे इस विषय में अर्थ मंत्री का भाषण कल (१६ तारीख) सुबह ८.३० बजे आकाशवाणी के सभी केंद्रों

मराठी से अनुवाद : गिरिजाशंकर त्रिवेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर सुन सकेंगे। दूरदर्शन पर रविवार सुबह 'हास-परिहास' के अंतर्गत इस कार्य-क्रम का प्रक्षेपण होगा। .....

यह समाचार पढ़कर मुझे आश्चर्य का आघात लगा। उसके तनिक शांत होने पर मुझे लगा कि अब इस देश में आश्चर्य भी किस-किस चीज का किया जाये? यहां तो अब कुछ भी घटित हो सकता है।

परंतु मेरी मित्र-मंडली में तो चर्चा इस मुद्दे पर हुई कि इस सारे मामले में हम कहां हैं? मैं उत्तेजना में भरकर बोला—'अरे वश्या, हमारे बच्चे सारी जिंदगी नौकरी करते रह जाते हैं, इसमें कुछ थ्रिल नहीं। सिर्फ तनख्वाह, महंगाई भत्ता, साहब की लातें और ग्रैच्युइटी—क्या यह कोई जिंदगी है? हमें इस नये क्रांतिकारी राष्ट्रीयकरण का लाभ उठाना चाहिये।' जैसे मैंने सबके मन की बात कही थी।

सो हम भी सरकार-मान्य चोर बनें, यह हमने एकमत होकर निर्णय किया। लेकिन इसमें हमारी पत्नियों का समर्थन मिलना कठिन है, यह मुझे घर आने पर ही पता चला। यों ही टोह लेने के लिए मैं बोला—'सुनती हो, इस नौकरी से तो ऊब हो गयी है। इच्छा होती है कि कोई नया धंधा करें, जिसमें खूब पैसा मिले। यानी गाड़ी, टी. वी., फ्लैट .....'

'ओऽहोऽ! धंधा करने वाले की सूरत तो देखूं जरा!' पति के प्रति हमेशा अविश्वास प्रकट करने वाली श्रीमतीजी बोलीं—'तुम से धंधा होने से रहा! दुकान शुरू करके घर में बारह बजे तक लंबी तान कर सोओगे, फिर दोपहर को दुकान का दरवाजा खोलोगे भी तो चार मुस्टंडे दोस्त जुटाकर सिगरेट फूंकते हुए रमी या रम का अड्डा जमाओगे। इससे अच्छा चोरी-चकारी ही करो, तो पैसा तो मिलेगा!'

मैं एकदम आनंद-विभोर हो उठा क्योंकि श्रीमतीजी को पटाने से पहले कोई मामला पट जाये ऐसा, विवाह के बाद इतने वर्षों में यह पहला ही अनुभव था। मैं उत्साह में भरकर बोला—'बिल्कुल ठीक कहती हो तुम! यही तो मैं तुम्हें बताना चाहता था। मैंने भी निश्चय कर लिया है चोरी करने का।'

हाथ का बरतन चट्-से नीचे गिराकर वे कुछ समय बिलकुल अवाक् रहीं। मैंने झुककर बरतन उठाया और उनके हाथ में पकड़ाया। उन्होंने पुनः उसे नीचे गिरा दिया। अब के मैंने उसे नहीं उठाया। उनके मुखभाव से लगा कि मेरी एकाएक चोर बनने की महत्त्वाकांक्षा उन्हें पसंद नहीं आयी है।

'क्यों? उसमें क्या हुआ? अरे, चोरी अब चोरी-छिपे करने का धंधा नहीं रह गयी है। अब तो चोरी का राष्ट्रीयकरण हो गया है। सुनते हैं श्रेष्ठ चोरों को पद्मश्री आदि खिताब भी देने की योजना है सरकार की।' मैं आत्मसमर्थन करने लगा।

'अच्छे-खासे ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर चोरी-डकैती के विचार आते हैं तुम्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन में ? ओ मां, यह कैसी आफत !' कहकर वे पर्जन्यास्त्र का आवाहन करते हुए बोलीं—'सामने के घर की गुलाबबाई को तुम चोरी से देखते हो, यह तक मुझे बर्दाश्त नहीं होता। और अब तुम सीधे चोरी करने की बात कर रहे हो ?'

बमुश्किल हंसी लाकर मैं बोला—'धत्तेरे की ! तुम सच समझ बैठीं ? मैं तो मजाक कर रहा था।'

'मजाक कैसा जी !' जानकार नजरों से तोलती हुई श्रीमतीजी बोलीं—'पिछले महीने के आखिर में आटे के डब्बे में पेंदी तक हाथ डालकर मेरा छिपाया हुआ पांच रुपये का नोट उड़ा लिया तुमने ! यह शायद भावी योजना की ट्रेनिंग रही होगी।'

'छी-छी ! वे पांच रुपये ..... ? मैंने सहज ही आटे में हाथ डाला, तो मेरे हाथ से टकरा गये। सोचा, चक्की वाले की भूल से आ गये होंगे। उसे उसी को लौटा दूं।'

'हां-हां। ..... पर चक्की वाले का वह नोट फिर उस सिगरेट वाले के पास कैसे चला गया ?'

'मैं क्या करता !' मासूमियत का नाटक करते हुए मैं बोला—'चक्की से पहले..... अरे हां, ...तुम्हारी माताजी को तुम्हारी कुशल-मंगल का पत्र लिखना है ना ?' मेरा अनुभव है कि मायके का जिक्र छेड़ देने से मतभेद शीघ्र दूर हो जाता है।

दूसरे दिन पता चला कि मेरे अन्य मित्रों के घरेलू अनुभव भी लगभग ऐसे ही रहे। फिर भी हमने हिम्मत न हारकर शांतिपूर्वक काम करने का यानी चुप बैठे रहने का निश्चय किया। मगर कुछ ही दिन बाद हमारी आशा में नये कल्ले फूटे एक सरकारी विज्ञापन में विशेषज्ञ चोरों से आवेदन-पत्रों की मांग की गयी थी :

आवश्यकता है

केंद्र सरकार के अर्थ-विभाग में निम्न पद रिक्त हैं :

चोर, प्रथम श्रेणी : वेतन १,८००-५०-२-७५ ई. बी. २,५०० । इसके अलावा महंगाई-भत्ता। प्राविडेंड फंड आदि सभी सुविधाएं। चोरी के माल में से १० प्रतिशत माल बतौर बोनस।

योग्यता : चोरी का लगभग १५ साल का अनुभव। कम से कम दो बार जेल जाने का प्रमाणपत्र आवश्यक। जेल से

'इस महत्त्वपूर्ण व्यवसाय का धन राष्ट्र के विकास-कार्यों की ओर मोड़ना .....'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'अरे! सचमुच के चोर आये हैं .....'

भाग निकलने का प्रमाण प्रस्तुत करने वाले को प्राथमिकता दी जायेगी।

चोर, द्वितीय श्रेणी: वेतन १,२००-४०-२-ई. बी. ५०-१८००। इसके अलावा अन्य सुविधाएं प्रथम श्रेणी के अनुसार।

योग्यता : चोरी का लगभग १० साल का अनुभव, कम से कम एक बार दंडित।

चोर, तृतीय श्रेणी : वेतन ८००-२५-२ ई. बी. ३५-१,२००। प्रथम श्रेणी के समान अन्य सुविधाएं।

योग्यता: लगभग ५ साल का चोरी का अनुभव। छोटी-मोटी चोरियां नहीं गिनी जायेंगी। लगातार चोरी के व्यवसाय में रहने का प्रमाण आवश्यक।

डाकू, प्रथम श्रेणी : वेतन ३,५००-१०० ई. बी. २-५ ५०००। प्रथम श्रेणी के के अनुसार अन्य सुविधाएं।

योग्यता : डाका का लगभग २० साल अनुभव। शैक्षणिक योग्य आवश्यक नहीं। आगामी १ जनवरी तक से अधिक न होनी चाहि पांच बार जेल और एक फांसी जरूरी। दो बार की सजा प्राप्त उम्मीद पर विशेष ध्यान दि जायेगा। पिछड़ी जाति और आदिम जाति को प्राथमिकता।

डाकू, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी: क्रमश: २,५०० से ३,५०० और १,५ से २,५००। अन्य सुविधाएं चोर श्रेणी और ३ के अनुसार।

टिप्पणी : इन सब कर्मचारियों रात की ड्यूटी पर काम करना होगा किसी भी राज्य में नियुक्ति और तबा के लिए तैयार रहना पड़ेगा। नौकरी दौरान गिरफ्तारी होने पर कोर्ट-कच का खर्च स्वयं वहन करना पड़ेगा।

सरकार की इस योजना के सम में समाचारपत्रों, नेताओं और संस्था में होड़-सी लग गयी। सभी का कह था कि सरकार ने इस एक योजना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेक पक्षी मार दिये हैं। चोरी की आय का देश के विकास के लिए उपयोग होगा और इस तरह जिनके यहां चोरी होगी, उन नागरिकों को देश-सेवा करने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा चोरी और डाके के व्यवसाय जो अभी छितरे हुए रूप में हैं, सुदृढ़ नींव पर संघटित होंगे। अभी तो चोरों-डाकुओं को ढलती उम्र में अवहेलना, गरीबी और सामाजिक अवमानना सहनी पड़ती है। परंतु राष्ट्रीयकरण की बदौलत अब उन्हें वृद्धावस्था में किसी प्रकार की चिंता न करनी पड़ेगी। अब वे अपने बच्चों को इस व्यवसाय की उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड-अमरीका भेज सकेंगे ..... इत्यादि-इत्यादि।

जो अनुभवी चोर थे, उनके लिए तो इस योजना से खूब सुविधा हो गयी। मगर इस व्यवसाय में नया प्रवेश पाना चाहने वाले हम सरीखे उम्मीदवारों का क्या होगा, असली प्रश्न तो यह था। किंतु जनता के हर वर्ग का हित चाहने वाली सरकार ने इस प्रश्न का भी बढ़िया हल निकाल लिया है, यह बात एक सप्ताह के भीतर ही एक और विज्ञापन से मेरे ध्यान में आयी। विज्ञापन इस प्रकार था:

शर्विलक विश्वविद्यालय[1]

देश में निष्णात चोर और डाकू तैयार करने के उद्देश्य से शर्विलक विश्वविद्यालय की स्थापना करके उसमें चौर्यशास्त्र की उपाधि-परीक्षा का तीन वर्ष का पाठ्यक्रम आरंभ किया गया है। जिन्हें छोटी-मोटी चोरियां करना, जेब कतरना जैसे सीमित लक्ष्य साधने हों, उनके लिए चौर्यशास्त्र का छह महीने का सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम भी शुरू किया गया है। दोनों पाठ्यक्रमों की पढ़ाई रात को ९ से २ बजे तक होगी। फिलहाल, जिन्हें विभिन्न पुलिस-थानों ने अधिकृत चोर माना हो अथवा जिनके चित्र 'वांटेड' की सूची में लगाये जा चुके हों, वे पार्ट-टाइम डिप्लोमा कोर्स कर सकेंगे। फीस में जाली या घर में तैयार किये हुए नोट, वापस लौटे हुए चेक आदि स्वीकार नहीं किये जायेंगे। विश्वविद्यालय के प्रांगण में विद्यार्थियों को 'प्रैक्टिकल्स' करने की मनाही है। 'होमवर्क' उन्हें विश्वविद्यालय प्रांगण के बाहर दूसरे किसी के घर करना होगा।

मगर मेरी यह आशा कि चोरी का राष्ट्रीयकरण होते ही घर-घर में धड़ाधड़ चोरियां होने लगेंगी, गलत सिद्ध हुई। उलटे चोरियों की मात्रा घट गयी। यह बात बहुत बाद में मेरे ध्यान में आयी कि किसी भी सरकारी योजना से कुल उत्पादन में कमी ही होती है। सरकारी अधिकारियों की अकार्यक्षमता के प्रति नाराजगी व्यक्त करने वाले पत्र भी समाचार-पत्रों में छपने लगे। एक नमूना:

क्या संबंधित अधिकारी ध्यान देंगे?

मैं जोगेश्वरी में मजासवाडी के पास रहता हूं। पहले हमारी कालोनी में हर

१. शर्विलक=संस्कृत नाटक मृच्छकटिक में आने वाला कलासिद्ध चोर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शर्विलक विश्वविद्यालय के कुलपति

महीने कुछ नहीं तो दस-बारह चोरियां होती ही थीं। पर हाल में राष्ट्रीयकरण होने के बाद से चोरियां लगभग बंद ही हो गयी हैं। भारत की यह प्राचीन कला उपेक्षित होकर कहीं नष्ट ही न हो जाये, यह खतरा महसूस होने लगा है। क्या संबंधित अधिकारी इस ओर ध्यान देंगे?

—ग. म. रेळे

प्रतिदिन पुलिस-स्टेशनों पर जाकर अपराधों और अपराधियों की खबरें जुटाने वाले संवाददाताओं की मुसीबत हो गयी। अब उन्हें खबरें ही नहीं मिलती थीं। खबरों की खातिर स्वयं चोरी करने का विचार उनके मन में आने लगा। सरकारी लालफीताशाही के कारण अनेक चोर-डाकू कामचोर बन गये। रात को लोगों के घर जाकर ईमानदारी से चोरी करना छोड़ वे तो मजे से लंबी तान सोने लगे। समाज में 'सेन्सेशन' नाम की चीज ही नहीं रही।

चोरी के धंधे में ऐसी मंदी आ जाने पर भी हम कुछ असावधान हो गये। एक अचानक एक रात ढाई बजे दो चोर हमारे घर पधारे। उन्होंने दरवाजे की घंटी बजायी। बिना किसी आशंका मैंने दरवाजा खोल दिया। उन्होंने नमस्कार करके अपना परिचय दिया—'क्षमा कीजिये! आपकी नींद में खलल डाला। क्या हम अंदर आकर चोरी कर सकते हैं? हम दोनों चतुर्थ श्रेणी के चोर हैं।'

'आइये, आइये! अहोभाग्य हमारे' कहते हुए मैंने मुस्कराकर उनका स्वागत किया। श्रीमतीजी को आवाज देकर कहा 'अजी सोती ही रहोगी क्या? चोर साहब गरीबखाने पर तशरीफ लाये हैं। चाय-नाश्ता तो तैयार करो।'

श्रीमतीजी हड़बड़ी में उठीं। बंद कमरे से दीवानखाने में झांककर उन्होंने देखा और बोलीं—'अरे, सचमुच के चोर आये हैं! कल सारी कालोनी में चोरी के लिए बढ़िया खबर तैयार हो गयी। यहां इतने सारे मकानों के रहते हमारे ही घर आयें, क्या यह सौभाग्य नहीं? वह मुई जौहरिन जब देखो तब हीरे की बालियां दिखाकर मुझे तंग करती रहती है। अब मैं उसके सामने ऊंची करके कह सकूंगी कि देवीजी, हमारे घर चोरी करने योग्य कुछ था, तभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चोर हमारे यहीं आये.....'

तभी उन दोनों चोरों में से एक का ध्यान श्रीमतीजी की खुसर-फुसर की ओर गया और वह बड़ी विनम्रता से बोला—'भाभीजी नमस्ते!'

'नमस्ते!' श्रीमतीजी ने आगे बढ़कर पूछा—'आप लोग क्या लेंगे?'

'चांदी के बरतन, ट्रांजिस्टर, सौ रुपये तक नकद—ऐसी ही चीज़ें हम लेते हैं।'

'नहीं ..... मैं पूछ रही थी कि चाय लेंगे या काफी?' श्रीमतीजी ने अपना आशय स्पष्ट किया।

'अच्छा। ..... चाय चलेगी। मगर आप नाहक इतनी तकलीफ क्यों उठा रही हैं?' चोर नंबर-२ विनयपूर्वक बोला।

मैंने अपनी शंका को वाणी दी—'क्या आप लोग सोने के जेवर नहीं चुराते?'

'नहीं। हम चतुर्थ श्रेणी के चोर हैं न! तरक्की मिलने पर हम हजार रुपये तक नकद और सोने के जेवर चुरा सकेंगे।'

उनका यह निवेदन श्रीमतीजी को कुछ पसंद नहीं आया। मुझे रसोईघर में बुलाकर बड़बड़ायीं—'धत्तेरे की! क्या यही है हमारी साख? सिर्फ चौथी श्रेणी के चोर हमारे घर में! मैं इन्हें सिर्फ चाय दूंगी। आगे जब बड़े चोर आयेंगे, तो नाश्ता, बिस्कुट दूंगी। पास-पड़ोस में मेरी रत्ती-भर भी इज्जत नहीं रह जायेगी इस चोरी से। मैंने तो सोचा था, कल सबसे कहूंगी कि मेरी हीरे की बालियां चोरी चली गयीं। मगर इन मुओं को तो सोना चुराने का भी अधिकार नहीं। इस देश में कभी सरकारी कामकाज सुधरेगा भी या नहीं, कौन जाने!'

श्रीमतीजी चाय बनाने लगीं और मैं सम्माननीय शर्विलकों से गप्पें मारने लगा। मैंने पूछा—'आपने परीक्षा वगैरह दी है क्या?'

'हां। मैं बी. ए. हूं और मेरा यह सहयोगी मित्र एम. एस-सी. है।'

'न-न', अपनी बात को पुनः स्पष्ट करते हुए मैंने पूछा—'मेरा मतलब है, चोरी के काम की परीक्षा दी है क्या?'

'हमने प्रश्नपत्र चुराकर ही उपाधियां प्राप्त की हैं।' चोर नंबर-१ ने कहा। वे अपना उल्लेख नंबर एक, नंबर दो, मेरा सहयोगी, मेरा मित्र आदि शब्दों से ही कर रहे थे। कारण, उन्हें अपना सही नाम बताने की इजाजत नहीं थी। राष्ट्रीयकरण के बाद चोरों और पुलिस के आपसी संबंध क्या हैं, यह जानने की भी मुझे बड़ी उत्सुकता थी। मैंने पूछा—'भाई, आपके चोरी करते वक्त अगर मैं पुलिस को बुला लूं तो क्या होगा?'

इस पर दोनों ने घोर आश्चर्य व्यक्त किया। दोनों में जो अगुआ था, वह बोला—'अजी, आप पागल हो गये हैं क्या? अगर आप पुलिस को बुलायेंगे तो सरकारी काम में अड़चन डालने के जुर्म में गिरफ्तार कर लिये जायेंगे।'

अरे बाबा! क्या सचमुच! यह बात, तो मेरे जेहन में ही नहीं आयी थी। चोरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का राष्ट्रीयकरण हो जाने से उसे सरकार से पूरा संरक्षण मिल गया है, इसका मुझे यकीन हो गया। राष्ट्रीयकरण होने के पहले चोरों से नागरिकों का बचाव करने की आवश्यकता थी। मगर अब नागरिकों से चोरों को कोई परेशानी न हो, सिर्फ इसकी सतर्कता बरती जा रही थी?

चाय-पानी होने के बाद, कानून का पालन करने वाले एक विनम्र नागरिक के नाते मैं सरकारी कर्मचारियों को यथा-शक्ति सहयोग देने लगा। मैंने उनसे पूछा—'अब आप चोरी का शुभारंभ करेंगे क्या?'

'हां-हां, करते हैं न!' कहकर वे दोनों उठे। वे अपने साथ खाली थैले लाये थे। मुझसे बोले—'आप अपनी जगह बैठे रहें। हम स्वयं घर की तलाशी लेकर, जो चाहिये वे चीजें ले लेंगे।'

सो मैं और श्रीमतीजी दीवानखाने में बैठे रहे। उन दोनों ने पहले दीवानखाने की ही वस्तुओं को जांचा-परखा। मेज के पास एक ट्रांजिस्टर था। बहुत ही सस्ता। उसे हिलाकर एक चोर ने पूछा—'क्यों मिस्टर, ऐसा निकम्मा ट्रांजिस्टर क्यों रखते हैं घर में? जरा कीमती खरीदिये न! ऐसा माल चुराकर ले गये तो हमारे साहब हमें नौकरी से निकाल देंगे।'

ठीक ही था उनका कहना। मैं अपराध-भावना से बोला—'माफ कीजियेगा। आपकी सहूलियत के लिए अब मैं अपना जीवन-स्तर ऊंचा उठाने का अवश्य प्रयत्न करूंगा।'

श्रीमतीजी ने तो हमारी प्रतिष्ठा संभालने का प्रयत्न उस परिस्थिति में शुरू कर दिया था। बोलीं—'मेरे सोने के हैं। पर आपको तो उन्हें का अधिकार नहीं है न? अगली जरा वरिष्ठ श्रेणी के चोर भेजियेगा।'

'हां भाभीजी, हम तो चौथी श्रेणी हैं। यही नहीं, अभी अप्रेंटिस के काम सीख रहे हैं। तीन महीने के प्रोबे पीरियड में हमें छोटी-मोटी चोरियां पड़ती हैं।' नंबर-२ ने सोने के कंगन में अपनी असमर्थता व्यक्त की।

दीवानखाने में कुछ भी न पाकर अंदर जाने लगे। तब श्रीमतीजी ने मन का प्रश्न पूछ बैठीं—'आपकी को देखने से कोई हर्ज न होगा न? पहले कभी किसी चोर को चोरी देखा नहीं है।'

'तो देखिये न; मगर कौन-सी कहां रखी है, यह बताने की सख्त है।' अगुआ-चोर ने कहा—'आप राष्ट्रसंघ के निरीक्षकों की तरह निरीक्षण कर सकते हैं।'

फिर नंबर-१ ने शर्लाक होम्स की रौब से नंबर-२ से कहा—'रसोईघर औरतें सारी कीमती चीजें आटे में रखती हैं। हां! वह देखो, चाक है—गेहूं का आटा .....'

'उतारता हूं डब्बा नीचे।' बोला।

'निरा मूर्ख है तू। ..... अरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डब्बे में गेहूं का आटा हो, यह नामुमकिन है। दुनिया की भले ही और कोई चीज उसमें हो, मगर गेहूं का आटा उसमें हरगिज नहीं होगा। उधर देखा, मिर्च का पाउडर लिखा है। गेहूं का आटा उसमें होगा। उसे नीचे उतार।' अगुए ने हुक्म दिया।

असिस्टेंट चोर ने स्टूल लेकर डब्बा उतारने की कोशिश की। पर डब्बा उसके सिर पर उलट गया और उसका सारा शरीर आटे से नहा गया। क्षण-भर में वह संगमरमर का पुतला-सा दीखने लगा। मेरी और श्रीमतीजी की हंसी रोके न रुक रही थी। पहले के चोरों में ऐसी करामातें कहां होती थीं! राष्ट्रीयकरण के लाभ हमें स्पष्ट दीखने लगे।

'मिर्च का पाउडर' शीर्षकधारी आटे के डब्बे में सिवा आटे के कुछ भी नहीं था। यह देखकर अगुआ चोर नाराज हो गया। हमसे बोला—'आपको अपनी वस्तुएं इस तरह रखनी चाहिये कि वे चोरों को आसानी से मिल जायें। उसके लिए आवश्यक हो तो हम संविधान में भी परिवर्तन करायेंगे। फिर भी तब तक हम वस्तुएं खुद ढूंढ़ निकालेंगे। कठोर परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है।' और वह असिस्टेंट चोर को कठोर परिश्रम करने की ताकीद करके खुद आराम-कुर्सी पर आसीन हो गया।

बहुत देर तक खोजने पर उन्हें मेरी पैंट की जेब से साढ़े आठ रुपये, पाजामे की जेब से पचास पैसे, श्रीमतीजी के पर्स

निर्माण

कैलेंडरों की तारीखें
खा जाती हैं
आदमी को
आदमी बनाने के लिए।

—सत्य शुचि
४/२३८, शाहपुर मोहल्ला,
माल्यान मंदिर के पास,
ब्यावर, राज.

•

सवाल

जब कवि से
सभी घबराते हैं
तो फिर
कवि-सम्मेलन में
किसलिए आते हैं?

•

फैशन

आजकल
बड़े बालों का फैशन
इतना बढ़ रहा है कि
जटाधारी साधुओं को
सिर मुंडाना पड़ रहा है।

—प्रभु 'प्रहरी'
ईतवारा दरवाजा किला,
राजगढ़, म. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से एक रुपये का खुरखुरा नोट, दो रुपये का खस्ताहाल नोट, दस-दस पैसे के पांच सिक्के, पचीस पैसे का एक खोटा सिक्का, तीन सेफ्टी पिनें, सिर पर लगाने की चार क्लिपें, घड़ी का पुराना पट्टा, ठाकुरजी का सिंदूर और बस के चार पुराने टिकट प्राप्त हुए। इन चीजों की ओर घोर निराशा से दृष्टिपात करते हुए दोनों चोर साहबान हमारी तरफ भर्त्सना-भरी नजर फेंककर बोले—'क्या है यह, आप सर्विस-वर्विस करते हैं कि.....?'

'क्षमा कीजियेगा। महीने के आखिरी दिन हैं न? पर अगले हफ्ते आयेंगे, तो आपको निराश नहीं होना पड़ेगा।' मैं अफसोस के अंदाज में बोला।

'अगले हफ्ते की बात क्या कहते हैं श्रीमानजी! हमारी अप्रेंटिसशिप की मियाद तो कल पूरी हो रही है। इन तीन महीनों में हम केवल सात चोरियां कर पाये और उन सबमें कुल मिलाकर पचास रुपये से भी कम की रकम बनी। अब तो हमारा कन्फर्मेशन होने से रहा। चोर नंबर-१ एकदम रुआंसा हो गया।

इससे श्रीमतीजी की एकदम चमत्कारी मनोदशा हो गयी। हमारे घर आये चोर खाली हाथ लौटेंगे तो नौकरी से हाथ धो बैठेंगे, इस खयाल से उन्हें चारुदत्त की तरह घोर क्लेश हुआ। बोलीं—'ऐसा न कहो भैया! परसों वेतन मिलने पर मेरी सहेली सुशी मुझसे लिये हुए पंद्रह रुपये लौटायेगी। वे तुम ले लेना। और दूध वाले के पैसे इस महीने नहीं चुकायेंगे। इस चालीस रुपये हो जायेंगे। बस, आप सिर्फ दो दिन ठहर जाइये।'

'भाभीजी, हम आपके शुक्रगुजार कभी हम आत्मकथा लिखेंगे, तो इस दयालुता का जिक्र उसमें जरूर चोर नंबर-२ सांत्वना देता हुआ बोले

अब तो श्रीमतीजी की वेदना तोड़कर वह निकलने को हो गयी वे बोलीं—'मगर, जब चोरी ही नहीं तो अखबार में हमारा फोटो और घर का फोटो कैसे छपेगा? कुछ पहले पूना में किसी का खून हो गया तो जहां देखो, बस उसी के फोटो। हमारा? चुनाव के समय मैंने इनसे भी था कि अजी, कांग्रेस छोड़ दो, तो छप जायेगा; मगर सुनें तब न! मामूली-सी सिगरेट तो इनसे छोड़ते बनती, फिर कांग्रेस क्या छोड़ेंगे?'

अपनी राजनैतिक निष्ठा पर हुए आक्रमण से मुझे एकदम गुस्सा आ ऐसा वैयक्तिक चरित्रहनन वस्तुतः निषिद्ध है, यह जानते हुए मैंने श्रीमती का प्रतिरोध करते हुए कहा—'अरे, कभी किसी दल में था ही नहीं, फिर कांग्रेस छोड़ने को क्यों कहती हो?'

'यही तो बात है। मैं कहती हूं अगर फोटो छपता हो, तो किसी में दो दिन रहकर उसे छोड़ देने में क्या है?' श्रीमतीजी ने अपना तर्क प्रस्तुत किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब हमारी इस राजनैतिक जुगल-बंदी में चोर साहबान भी उलझ गये। बोले—'भाइयो और बहनो, आज हम यहां किसलिए इकट्ठे हुए हैं, यह आपको पता ही है। चोरी-जैसे मुख्य विषय पर से हम राजनीति जैसे विषयांतर पर उतरने लगे, यह दुर्भाग्य की बात है। इसलिए मैं इस प्रकरण को यहीं समाप्त करता हूं। नंबर-२! चलो, हम फुटकर चीजें चुराने के बजाय डायरी कोरी ही रखते हुए अब चलें।'

असिस्टेंट चोर डायरी निकालकर दिखाते हुए बोला—'पर साहब, घर में घुसते ही मैंने एंट्री कर ली थी। अब तो पचास रुपये से ज्यादा की चोरी करनी ही होगी।'

'लो, हुई न फजीहत।' चोर नंबर-१ बोला—'अच्छा, तेरे पास नकद कितना है, निकाल! मैं उसमें अपने पास की चीजें मिलाता हूं।'

दोनों महानुभावों ने अपने-अपने पास का रोकड़, घड़ी का पट्टा, फाउंटनपेन, सिगरेट-लाइटर जैसी चीजें हमारी वस्तुओं में मिलायीं। चूंकि उनकी घड़ियां सौ रुपयों से ज्यादा की थीं, इसलिए उन्होंने घड़ियों के पट्टे ही दिये। नंबर-१ के पास ग्यारह रुपये मिले और नंबर-२ के पास बीस रुपये साठ पैसे। उन्होंने वह सारा माल थैले में भर लिया और जाते हुए अपना विजिटिंग कार्ड देते हुए बोले—'कभी आवश्यकता हो, तो हमें सेवा का अवसर दीजियेगा।'

मैंने विजिटिंग कार्ड देखा। उस पर उनका नाम, पता और फोन नंबर भी था। उसे पढ़कर मैं आश्चर्य में भरकर बोला—'भाई, चोर लोग तो अपना नाम पता देते नहीं न?'

'यू आर राइट', मुझसे विदाई का हाथ मिलाते हुए चोर नंबर-१ बोला—'कार्ड पर का नाम, पता और फोन नंबर सब नकली हैं, गुडबाइ!'

भोर के धुंधलके में अदृश्य हो रही उस जोड़ी को साश्रु नयनों से निहारते हुए हमने हाथ ऊंचे करके उन्हें विदा दी।

★

दरख्त बनाम मुकद्दमा

कचहरी का
वह अधेड़ दरख्त
आज आंधी में टूट गया
जो उस दिन
एक नन्हे पौधे की शक्ल में
लगाया गया था
जिस दिन
मेरे मुकद्दमे की पहली पेशी थी।
ओ न्याय-देवता!
मेरे मुकद्दमे का दरख्त
क्या सदा तरुण ही रहेगा?
मेरे टूटने के बाद ही टूटेगा?
उसे गिराने वाली आंधी
कब तक तुम्हारी मुट्ठी में
बंद रहेगी?

—संतकुमार टंडन 'रसिक'

११, सरायमीरखां, लोकनाथ, इलाहाबाद-३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग़ज़ल

मौजों का जब लिया है सहारा कभी-कभी
ओझल हुआ नजर से किनारा कभी-कभी।

दीवानगी में अपने-पराये की कैद क्या ?
लेते हैं वे भी नाम हमारा कभी-कभी।

खोये हैं जिनकी याद में वे रूबरू खड़े
करते हैं खूब हम ये नज़ारा कभी-कभी।

ओंठों पै आयी बात पीके मुस्करा दिये,
होता है इस तरह भी इशारा कभी-कभी।

आते हैं किस अदा से वो मनकर करीबतर
है उनका रूठना भी गवारा कभी-कभी।

सहरानवर्दियों[1] की हकीकत न पूछिये,
खामोशियों ने हमको पुकारा कभी-कभी।

मरहम की जुस्तजू[2] नहीं रहबर को दोस्तो,
जख्मों को नाखुनों से संवारा कभी-कभी।

—रहबर—

१. जंगलों में मारे-मारे फिरना, २. खोज, तलाश।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोकमान्य की विद्वत्ता

ग. प्र. प्रधान

राजनीति आपाधापी-भरी कार्यशीलता का क्षेत्र है, जब कि विद्या-व्यासंग के लिए आवश्यक होता है गहरा चिंतन और शांतिपूर्ण मनन। इन दो क्षेत्रों के इस भारी अंतर के कारण राजनीति और विद्या-व्यासंग प्राय: एक साथ नहीं चल पाते। मगर इसके कुछ अपवाद भी हैं और लोकमान्य तिलक एक उज्ज्वल अपवाद थे।

लोकमान्य तिलक हर भारतीय के हृदय में स्वतंत्रता के मंत्रदाता के रूप में बसे हुए हैं, जिन्होंने पहले पहल हमें यह महान सत्य अनुभव कराया कि स्वतंत्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। तरुणाई से लेकर बुढ़ापे तक उनका समस्त जीवन भारत को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने के महान ध्येय की साधना में बीता। वे ब्रिटिश हुकूमत के अन्याय और दमन के विरुद्ध निरंतर जूझते रहे और अपने उत्कट त्याग एवं अनवरत परिश्रम द्वारा देश में नवजागरण लाने में सफल हुए।

परंतु उस अंतहीन परिश्रम के बीच भी लोकमान्य अपनी कुछ शक्ति का विनियोग शोधकार्य में भी कर सके और प्रखर विद्वान और महान लेखक के रूप में उन्होंने अंतर-राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की।

वे वैदिक साहित्य के विलक्षण अध्येता थे और वैदिक सभ्यता के काल-निर्धारण के प्रश्न में उन्हें गहरी दिलचस्पी थी। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्स मुल्लर ने वेदों के काल का पता लगाने के लिए भाषाशास्त्रीय पद्धति का अवलंबन किया था। तिलक ने एक अन्य ही पद्धति अपनायी। पौराणिक एवं भाषाशास्त्रीय समताओं के आधार पर निष्कर्ष निकालने के बजाय उन्होंने वेदों में मिलने वाले बहुत-सारे ज्योतिष संबंधी उल्लेखों का बारीकी से अध्ययन किया।

राजनीति में बहुत व्यस्त रहते हुए भी चार वर्षों तक वे वेदों की प्राचीनता के संबंध में गवेषणा करते रहे और १८९२ में लंदन में हुई नौवीं प्राच्यविद्या-परिषद के लिए उन्होंने एक शोध लेख तैयार किया। इसे उन्होंने १८९३ में 'ओरायन' नाम से पुस्तक-रूप में छपवाया।

इस पांडित्यपूर्ण ग्रंथ में तिलक ने यह सिद्ध किया कि यूनानी पुराणों में वर्णित 'ओरायन' और कुछ नहीं 'आग्रहायणी' है, जिसका दूसरा नाम 'मृगशीर्ष' है। उन्होंने यह भी दरशाया कि ऋग्वेद में ऐसा वर्णन आता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि वसंत-संपात में मृगशीर्ष सूर्य के निकट था। वेदांग ज्योतिष की सहायता से उन्होंने हिसाब लगाया कि वसंत-संपात मृगशीर्ष नक्षत्र में कब पड़ता रहा होगा और वे इस परिणाम पर पहुंचे कि ४,००० से २,५०० ई. पू. के बीच की अवधि वह काल है। यही उनके मत में वैदिक युग था।

'ओरायन' ने सारे विश्व में विद्वानों को मुग्ध कर लिया। डा. ब्लूमफील्ड ने लिखा—'मैं कबूल करता हूं कि "ओरायन" के लेखक ने सभी महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर मुझे पूरी तरह विश्वास करा दिया है।'

तिलक ने 'ओरायन' के उपोद्घात के आरंभ में लिखा था—'यह संभव नहीं प्रतीत होता कि मेरी इतर व्यस्तताएं भविष्य में मुझे इस विषय पर समय लगाने देंगी।' मगर १८९८ में उन्हें मिली जेलसजा मानो छद्म रूप में वरदान बनकर आयी। उसने उन्हें अपने प्रिय विषय में गहरी डुबकी लगाने का अवसर प्रदान किया।

प्रो. मैक्स मुल्लर ने अपने द्वारा संपादित ऋग्वेद की एक प्रति जेल में तिलक के पास भेजी थी। उसे पढ़ते हुए तिलक को 'सूर्योदयात् प्राक् बहूनि अहानि आसन्' इस ऋचा की मैक्स मुल्लर कृत व्याख्या से संतोष नहीं हुआ। इसका सही अर्थ ढूंढ़ने के लिए वे व्यग्रता से प्रयत्न करते रहे। तब अचानक उनके मन में यह खयाल कौंध गया कि यह पंक्ति केवल उत्तर ध्रुव के निकटवर्ती ध्रुवीय प्रदेश में लिखी गयी हो सकती है, जहां सूर्योदय से पूर्व अनेक दिनों का अंधकार रहता है। यह एक गजब के विचार आरंभ था।

मगर तिलक का मानस वैज्ञानिक का था, जो कि शोधकार्य के लिए बहुत होता है। यदि इस विचार का समर्थन वाले प्रमाण न मिलते, तो निश्चय इसे तिलांजलि दे देते। जेल से छूट बाद सार्वजनिक कार्य के बोझ के बीच वे फुरसत का समय इस खोज कार्य में रहे और इसके लिए उन्होंने विशेष स्थान किया।

सन १९०२ की गरमियों में उन्होंने आर्क्टिक होम ऑफ द वेदाज़' लिखा। दिनों वे अपने सिंहगढ़ के मकान में थे वहां उन्होंने इसे श्री गोपालराव गोगटे बोलकर लिखवाया। श्री गोगटे ने संस्मरणों में लिखा है—'तिलक मुझे दिन १४-१५ घंटे तक श्रुत लेख देते। बार वे नयी उद्भावनाओं में इस तल्लीन जाते कि मुझे कई-कई घंटे इंतजार करना पड़ता, तब कहीं श्रुतलेख आगे चलता उन दिनों वे घर में शायद ही किसी से बोलते होंगे। सिंहगढ़ से रवाना होने घड़ी तक वे काम करते ही रहे। जब पूरी हो गयी, तो उन्हें तृप्ति हुई।'

'द आर्क्टिक होम ऑफ द वेदाज' तिलक ने मानव के आद्य इतिहास से रखने वाली नवीनतम भूतत्त्वीय एवं पुरातत्त्वीय खोजों के आधार पर अपने स्थापित किये। उसकी भूमिका में लिखा—'इस दिशा में दीर्घकाल तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने के बाद, धीरे-धीरे एकत्र हुए वैदिक एवं अवेस्तीय प्रमाणों ने मुझे बलात् इस निष्कर्ष पर पहुंचाया है कि वेदों के ऋषि दो हिमयुगों के बीच के काल में ध्रुवीय प्रदेश में रहा करते थे।'

वेद-कालीन ज्योतिष में तिलक की अपूर्व अंतर्दृष्टि थी और उन्होंने वेदांग ज्योतिष पर विस्तार से लिखा।

६ दिसंबर १९०४ को बंबई के ग्रैजुएट्स एसोसिएशन के तत्त्वावधान में हुई एक सभा में तिलक ने खाल्दी और भारतीय वेदों के संबंध में भाषण किया। इसमें उन्होंने यह अभिधारणा प्रस्तुत की कि खाल्दी और वैदिक सभ्यताएं समकालीन थीं। उन्होंने यह भी कहा कि उन दोनों के बीच संवाद-संपर्क रहा होगा।

तेरह महीनों के अपने इंग्लैंड-निवास के दौरान वे राजनीति में अत्यधिक व्यस्त रहे और उन्होंने वहां का शायद ही कोई दर्शनीय स्थान देखा। फिर भी अपनी वदिक गवेषणा के लिए उन्होंने अनेक घंटे पुस्तकालयों में बिताये। खाल्दी और अशुर सभ्यताओं पर प्रकाश डालने वाली सामग्री भोजपत्र की पांडुलिपियों से नकल करने के लिए उन्होंने एक सेक्रेटरी वेतन देकर रखा था।

अनेक सज्जनों ने लोकमान्य-विषयक संस्मरणों में उनकी विद्वता और गजब की स्मरण-शक्ति का उल्लेख किया है। पेण के श्री शंकरभट ने, जो कि स्वयं बहुत बड़े विद्वान थे, लिखा है—'किसी वैदिक विषय की चर्चा के प्रसंग में मैंने तिलक से पूछा कि **सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद् ब्रह्मणो विदुः** यह पंक्ति यास्क के निरुक्त में भी मिलती है और भगवद्गीता में भी। इसे यास्क ने गीता से लिया है कि व्यास ने निरुक्त से? तिलक ने फौरन उत्तर दिया कि दोनों में से किसी ने भी एक दूसरे से नहीं लिया है, बल्कि दोनों ने उपनिषद् से लिया है, और उन्होंने तत्काल मुझे उपनिषद् का वह स्थल दिखा भी दिया।'

लोकमान्य तिलक को गणित के स्वाध्याय के लिए बहुत कम फुरसत मिल पाती थी; मगर उनकी आविष्कारक बुद्धि गणित की अमूर्त संकल्पनाओं पर विचार करने के लिए सदा ही समय निकाल लेती थी। गणित के माने हुए विद्वान प्रो. एम. एल. चंद्रात्रेय ने मुझे बताया—'सन १९१९ में एक दिन तिलक ने मुझे बुलवाया। मुझसे उन्होंने अवकलन गणित (डिफरेन्शल कैल्क्युलस) के बारे में बातचीत की और मैंने पाया कि अपने स्वतंत्र चिंतन से वे इन्डिविज़िबल्स की पद्धति पर आ पहुंचे हैं। इस विषय के नवीनतम शोधकार्य को पढ़ने का समय उनके पास नहीं था; इसलिए उन्हें पता नहीं था कि यह पद्धति पहले ही स्थापित हो चुकी है। गणित में उनकी अंतर्दृष्टि से मैं बहुत प्रभावित हुआ।'

लोकमान्य कहा करते थे—'अगर मैं स्वतंत्र भारत में पैदा हुआ होता, तो किसी विश्वविद्यालय में गणित का प्राध्यापक होता और अपना जीवन गणित को समर्पित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह शिकायत करना व्यर्थ है कि अखबारों में अच्छे कामों के मुकाबले में गुनाहों और बुराइयों का ज्यादा जिक्र होता है। बल्कि हमें यह सोचकर संतुष्ट होना चाहिये कि बुराई को आज भी इस काबिल समझा जाता है कि उसका जिक्र हो और उसके संबंध में समाचार छपें।

वह दिन बहुत ही मनहूस होगा, जब अच्छाइयां इतनी बिरली हो जायेंगी कि अखबारों में उनके बारे में खबरें छपने लगेंगी। —कार्डिनल हीनान

ooooooooooooooooooooooooo

कर देता।' एक बार अपने एक शिष्य के साथ बातचीत में उन्होंने कहा था—'गणित में कविता है; हां, हममें उसका आस्वादन करने की शक्ति होनी चाहिये।'

लोकमान्य की रुचि केवल चंद लोगों के मतलब की शास्त्रीय गवेषणाओं में ही नहीं थी। उन्हें दर्शन में गहरी आसक्ति थी। अपने दार्शनिक विचार वे अपने देशवासियों तक पहुंचाना चाहते थे। अपना महाग्रंथ 'गीतारहस्य' उन्होंने कर्म और फलासक्ति-रहित प्रयत्न का तत्त्वज्ञान लोगों को झाने के लिए ही लिखा था। मांडले में लिखित यह ग्रंथ मानो उनकी चेतना प्राणरस था। भगवद्गीता उनके प्रेरणा का अजस्र स्रोत थी और वे गीता संदेश अपने देशवासियों तक पहुंचा उनमें प्राण भरना चाहते थे। 'गीतारह एक कोरे महापंडित की कृति नहीं है।

संसार तिलक को एक व्यावहा राजनीतिज्ञ के रूप में जानता है। म जन्मजात आदर्शवादी थे और अप बदलती हुई भ्रांतियों एवं निराशाओं आप्लुत इस संसार में शाश्वत सत्य खोज लेना चाहते थे। निजी जीवन सार्वजनिक जीवन दोनों में उन्हें व्यथाओं और यहां तक कि निराशा भी सताया होगा; परंतु भगवद्गीता सहायता से वे अपने को कर्म-बंधन से कर सके और जीवन में तात्त्विक प्राप्त कर सके। इस तरह 'गीतार उनकी आस्था की अभिव्यक्ति, का सुफल और अनुभव का सार था।

['आकाशवा

[पृष्ठ १०८ का शेष]

या मोक्ष का सुख पाना है। मरने पर निर्वाण या मोक्ष का स्वाद कैसा होता है, कौन जाने? परंतु अखंड-अविद्ध आंतरिक निर्मलता और प्रसन्नता ही सदेह मोक्षसुख है।

मुझे लगता है कि इस महालया के दिन अपने गांव की पश्चिमी सीमा पर बहती हुई इस निर्मल पापहरा नदी के तट पर, बहुत काल से स्थित चलदल अश्व पत्तों का 'टलपल-टलपल' संगीत सु श्लोक दुहरा रहा है :

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि दे

—नलबारी कालेज, पो. नलबारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शैलचित्रों में सुप्त गाथाएं

– डा. वि. श्री. वाकणकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूस की रात। कंपकंपाती ठंड। फिर भी सभी कोरकू बालक विशाल शैलाश्रय के सभागृह में इकट्ठे हो गये। वहां बड़-दादा वार्ता कहने वाले थे। कंजरू, दगड़ू, भूरिया, कालू और मटरू सबके सब वानर सदृश उछल-कूद करते, किलकारियां भरते आकर बैठ गये थे। बालसभा के कुछ सदस्यों का आना अभी शेष था। कंजरू सबसे बड़ा था। वह साभर-सींग का टोला लेकर वाजनी शिला के पास गया और शिला पर सप्तस्वर बजाने लगा। पंडापुर से किल-कारियां आने लगीं। घने अंधकार में मशाल के उजाले में और भी दस-बारह बालकों की टोली आती दिखाई दी। हर एक के हाथ में तीर-कामठ था।

तभी आये बड़दादा। उन्होंने सबको शांत करने के लिए वाजनी शिला पर छह ठोके लगाये और फिर नीचे बैठकर अरणी-से आग जलायी। बालक स्तब्ध थे। धुआं उठना प्रारंभ हुआ। सब बालक बड़दादा की अपूर्व शक्ति को विस्मयपूर्वक देख रहे थे। कुछ ही समय में बीच की लकड़ियां आग पकड़कर लाल-पीले रंग की लपटों से दीप्त हो उठीं। बड़दादा ने अपनी बात शुरू की :

'हां तो कंजरू हम कल ही तो राम-छज्जा से लौटे हैं। वहां मैंने हाथी टोल के पूरब की एक गुफा में तुम्हें एक चित्र बताया था, क्या वह याद है ?'

'हां बड़दादा, वहां तो गाभिन नीलगवा के दो चित्र थे। एक के पेट में एक और दूसरी के पेट में दो नान-नान-से बछ[illegible] कंजरू को अपनी स्मरण-शक्ति प[illegible] भरोसा था। लेकिन बीच में ही म[illegible] उठा—'पर बड़दादा, ऊके आगे तो [illegible] अजीब चित्र हतो नीलगवा के पेट[illegible] को नानो ! ऐसा हुई सके है का ?'

'हां, मटरू, नाना के नाना पां[illegible] बरस जिये थे। जब हम तुम्हारे [illegible] थे, तब उन्होंने हमें इस चित्र के बारे[illegible] कहानी सुनायी थी, जो उनके नाना[illegible] कही थी। वही, आज मैं तुम्हें भी बता[illegible] वह चित्र, जो तुमने देखा था, ह[illegible] पुरखों ने पीढ़ियों पहले बनाया था। कहते हैं, चुड़ैलों ने बनाया है। चित्रों को पुतरिया कहते हैं। कुछ [illegible] राम-लखन और सीतामाई कुछ दि[illegible] ठहरे थे और सीतामाई ने ये चित्र बना[illegible]

'सुनो रे ! बात की बात, न [illegible] की खुरापात ! एक समय की बात है[illegible] इस जंगल में उन दिनों बड़ो हत्ती (म[illegible] एलिफस, एटिकस, इंडिकस) और [illegible] गवाओं (नीलगायों) का बड़ा डे[illegible] हत्तियों के डर से नीलगवाएं इन भाट[illegible] में ही ज्यादातर रहती थीं। ए[illegible] हत्तियों का एक झुंड जब यहां [illegible] झाड़ खाने के लिए घुस आया, तो सब[illegible] गवाएं भाग खड़ी हुईं। पर एक छोटी[illegible] भाग न सकी। उन हत्तियों में से एक[illegible] हत्ती उसके पास गया और उसे सूं[illegible] राता रहा। पहले तो वह डरी, प[illegible] धीरे दोनों में गहरी दोस्ती हो गई[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दन यह हत्ती-दल रायसेन के जंगलों को चल दिया और उस नीलगवा को भी वह हत्ती अपने साथ ले गया। कहते हैं, उन दोनों में आपस में इतना प्रेम हो गया कि वे साथ-साथ ही रहने लगे और फिर कुछ ही

गर्भवती नीलगाय

दिनों में नीलगवा गाभिन हुई। उससे एक हत्ती जन मा। उसी का चित्र वहां की एक गुफा में वना है, जो मैंने यात्रा में तुम्हें बताया था।

'आज सवेरे हम जहां गये थे, वहां भीमबेटका के पुराने इतिहास की एक खासमखास घटना का चित्र देखा था। मेरे नाना कहते थे, यह घटना तो हमारे यहां पीढ़ियों से सुनायी जा रही है।

'भीमबेटका में अपने पुरखों का जन्म जंगली सांड़ से हुआ है, यह माना जाता था। उनका यहां अखंड राज्य था। उन्हीं की याद में हम इस टोल के आगे भेले (इकट्ठे) होकर हर वरस नाचते हैं। यही सांड़ हमें बरसात से भरपूर करता है। यह शत्रुओं पर टूट पड़ता है। एक बार कर्क जाति के लोगों ने पश्चिम दिशा से भारी झुंड बांधकर हमला बोल दिया था। इन्हें कर्क इसीलिए कहते थे कि इनके सिरों पर सांड़ का पूरा ढांचा लगा रहता था और शत्रु से बचाव के समय वे आंकड़ों की तरह दो तरफ से हमला करते थे और ऐसे ही उन्होंने बड़ी तादाद में तीर-कामठे से लाखाज्वार के दक्षिण और आकलपुर की खाई से हमला किया था। उन दिनों हमारे ज्यादातर पुरखे अमरगढ़ की ओर चल दिये थे। सिर्फ हमारे ही कुछ लोगों ने जंगली सांड़ (वनवृषभ) का आह्वान करके कर्कों को ऐसा हराया कि वे भाग खड़े हुए। वाद में उन्हें पूरी तरह से नष्ट भी कर दिया गया। तभी ही यह चित्र उस जीत की याद में बनाया गया, और उस पुराने जमाने की कहानी वह हजारों पीढ़ियों से कह रहा है।

'कहानियों का यह तांता लंबे समय से चलता आ रहा है। पर शायद मैं ही एक ऐसा था जो पुरखों की कहानियों को सुनने, याद रखने और दूसरों को सुनाने के अलावा उनके बारे में सोचता भी था। कई बार गुफा में बने चित्रों को देखता, तो सोचता कि कर्कोटकों का यहां निवास रहा है और हो सकता है उनके पुरखों ने इन्हें बनाया हो। मंगलू काका से मेरी अच्छी पटती थी। सो वे कई वार मुझे जंगल में ले जाते और जड़ी-बूटियों की पहचान बताते थे और यह भी कि किन बीमारियों में उनका उपयोग होता है।

'सुनो' एक बार की बात है। अपने दोस्त वास्त्या के साथ मैं जंगल में जा रहा था कि वास्त्या का पैर किसी नुकीले पत्थर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से कट गया। वह चीखने लगा। उसकी चीख सुनकर मंगलू काका दौड़ते आये और एक स्थान पर जाकर एक वनस्पति का आवाहन किया और उसे रोग दूर करने के लिए बुलावा भेजा। दूसरे दिन, दिन डूबने के पहले मंगलू काका मुर्गे की टांग, कौए का पंख और जंगल के दो-चार फल आदि लेकर वनस्पति के पास पहुंचे। वहां उन्होंने ये सब चीजें रख दीं और पत्थर की कुदाल से उसकी जड़ें खोदकर निकालीं और उन्हें चमड़े की थैली में बंद कर दिया। पंडापुर के पश्चिम की गुफा में पड़ा वास्त्या कराह रहा था। वहां जाकर मंगलू काका ने थैली को खोल दिया। पत्ते कूटकर उनका रस निचोड़ा और उसके जख्म को धोकर वह पिसी हुई चटनी बांध दी। फिर उसे लिटाकर मुंह में एक मंत्र फूंका और मोरपंखी झाड़ू से झाड़ना शुरू किया। थोड़े ही समय में वास्त्या सो गया।

'मुझे मंगलू काका "मारुत्या" कहते थे। बोले—मारुत्या, यह वनस्पति गाडर लिपटी है और इसमें घाव ठीक करने की ताकत है। सचमुच वास्त्या चार घंटे के बाद उठा तो हंसता हुआ खड़ा हो गया। वास्त्या चित्र बहुत अच्छे बनाता था और मंगलू काका का अनन्य साथी था। वहीं उसने गेरू से, अपने इलाज का चित्र खींच दिया। वह सो रहा है और मंगलू काका झूम-झूमकर झाड़ू बुहार रहे हैं।

'एक दिन मैं और वास्त्या हिरन का शिकार करके लौटे ही थे कि मंगलू काका ने हमें आज्ञा दी कि अपनी-अपनी थैली में पांच दिन के लिए महुआ भर हम दोनों मुर्दा गुफा में अपने-अपने से मिले और कहा कि मंगलू काका हमें देव के मेले में ले जाना चाहते हैं। दोनों के ही राजी हो गये, पर हमारी ने रोना-धोना शुरू कर दिया। मां से कहा कि रोती क्यों हो मां! कोड़ी दिन में हम लौट आयेंगे। तू पर रोज हमारे नाम से सफेद माटी छापा करना, तो माडादेव हमारी करेगा।

'रो-धोकर जब घर की औरतें कुछ हो गयीं, तो हमें जामुन झिरी में क गया। गेरू से हमारे शरीर पर चि की गयी और मंगल-गान के लिए हमें पुर की झिरी पर ले गये। वहां जब को दो मुर्गे चढ़ाये गये। इतने में काका तरकस और तीर-कामठ के ती लेकर आ गये। सबने झुककर उनके छुए। फिर सबने भुने हुए महुए का किया और फिर हम उनके साथ की ओर चल पड़े।

'जंगली सांड़ों (वनवृषभों) से भरे में हम बड़ी सावधानी से मंगलू काका चल रहे थे। बांस के तरकस में कई जो जहर में बुझे थे। हम भी अच्छे थे, सो जानवर का डर नहीं था। ढलते-ढलते हम विंध्या से उतरकर में आ गये और नर्मदा के उत्तर तट दूर विजासनी माता की टोल पर पहुंच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारों ओर घना सागवान का जंगल था और बीच में ही छोटी टेकरी पर थी यह गुफा।

'मंगलू काका हमें नर्मदा के किनारे ले गये। नदी के किनारे से उन्होंने दो-दो विदारी कंद उखाड़कर हमें दिये। रेती में उन्हें दबाकर ऊपर रानगौरी (कंडे) से ढंक दिया और देखते-देखते अरणी रगड़कर आग पैदा की। कुछ ही देर में कंद भुन गये और उन्होंने उनमें से चावल जैसे पके दाने हमें खाने को दिये। अभी तक हम बीस योजन चल चुके थे। सो भूख भी खूब लगी थी। ऐसे में वे कंद बड़े स्वादिष्ट लगे। खाकर पानी पीकर हम विजासनी गुफा में सोने के लिए गये। सूखी लकड़ियां इकट्ठी करके आग जलायी और ठंडी चट्टानों पर सो गये। आज़ हम कहानी सुनने-सुनाने की हालत में नहीं थे।

'दूसरे दिन सूरज निकलने पर उठे। मंगलू काका ने एक बूटी हमें कमर में बांधने को दी और कहा कि इस बूटी की गंध तुम्हें मगर से बचायेगी। गंध इतनी तेज थी कि आसपास की हवा उससे भर गयी थी। हम बेतवा में नहाने के आदी थे। वह तो छोटी-सी नदी है। पर नर्मदा को देखकर मन कांप गया! हमारी घबराहट मंगलू काका समझ गये और नदी के किनारे हमें बैठाकर जंगल में गायब हो गये। थोड़ी देर में वे नौ-दस तूंबे लेकर आये और कुछ बेलें बटकर रस्सी बनायी। फिर चार-चार तूंबे हमारी कमर और छाती पर बांध दिये। जब वे तूंबे लेने गये थे, तभी एक बहुत बड़ा मगर नर्मदा में दिखाई दिया था। जड़ी का असर देखने के लिए मैंने उसका एक टुकड़ा मगर पर फेंका। वह तुरंत ही घबराकर पानी में डुबकी लगा गया। मन में उपजे विश्वास और तूंबों के सहारे हम आराम से नर्मदा-पार पहुंच गये।

'मंगलू काका ने नर्मदा मैया को प्रणाम किया और हमें भी वैसा करने को कहा। फिर हम दक्षिण की ओर एक योजन दूर पर दिख रही पहाड़ी की ओर चल पड़े। थोड़ी देर बाद हम आदमगढ़ पहुंचे, वहां दो ओझा तीर-कामठे चढ़ाये दौड़कर एक चट्टान पर चढ़ते दिखाई दिये। चट्टान पर से ही उन्होंने हमें ललकारा। तब मंगलू काका ने एक ऐसी किलकारी मारी कि वे दोनों उछल पड़े, दौड़ते हुए आये और मंगलू काका के पैरों पड़ गये। दोनों ने उनके हाथ छुए और हमारी कुशल पूछी, हमारे सिर चूमे। फिर हम सब वहां की महिष-शिला की ओर गये।

'हम लोग मंगलू काका के पीछे-पीछे चल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहे थे। वहां पहुंचते ही हमने चट्टान पर बड़ा भारी हत्ती, उससे भी बड़े भैंसे और गौर के चित्र देखे। नीलगवा और हिरन के भी चित्र थे। हम इस चट्टान को देखकर दंग रह गये। यहां ओझाओं ने हमें बड़ी चट्टान पर बैठाया और कहा कि यहां पितरों के काल में एक बहुत बड़ा राच्छस रहता था, उसे भैंसासुर कहते थे। वह जंगल में खूब ऊधम मचाया करता था। हमारे वंश में कई पीढ़ियों पहले एक जुझारू लड़की हुई, वह रण-कौशल में सारे विंध्य में मशहूर थी। उसने ही इस भैंसे का चित्र बनवाया था, जिससे कि भैंसासुर को मंत्र से हराया जा सके। सो यह भैंसा उसी जमाने से बना हुआ है। अश्मक इलाके में इसे "म्हसोबा" कहते हैं। ऐसे ही ये हत्ती, गौर, हिरन आदि के मंत्रित चित्र हैं, जो हजारों उत्तरायण-दक्षिणायन बीत चुकने पर भी वैसे के वैसे ही हैं।

'मुझे याद है, उसके बाद हम दो बड़ी-बड़ी नदियों को पार करके महादेव पहाड़ों के तले पहुंचे। वहां पहुंचने में हमें करीब दो कोड़ी दिन लगे। फिर हम जंबू नाले से होते हुए ऊपर गये। वहां कड़ाके की ठंडी थी। नाले में ऊंडी (गहरी) खाई थी। इधर-उधर मैदान थे, जिनमें गौर व जंगली सांड़ों के झुंड घूमते थे। पर्वत की ऊंची चोटी पर नींबू के झाड़ हैं। उस जगह को निम्बुभोज नाम से जाना जाता है। यहां भी हमें गोरी गोंड जाति के लोग मिले। वे तीर-कामठे के साथ-साथ भी रखते थे। हमें अचरज हुआ कि मंगलू काका की कीर्ति सब दूर फैली सब उन्हें प्रणाम करते हैं और वे जगह-जगह किसी को मंत्र से, कि जड़ी-बूटियों से झाड़-झूड़कर स्वस्थ

'निम्बुभोज के पास एक गहरा है, जहां पानी का बहाव खुटता यहीं वह जंबूद्वीप में बदलता है। यहां देव की पिंडी है। उसकी हम सब की। फिर पूरब की ओर चल पड़े घड़ी में माडादेव पहुंचे। वहां सैकड़ कोरक (कर्कोटक), मानकर जाति अपनी सुंदर छोकरियों, लुगाइयों मैयाओं के साथ आये थे। वे दो पंक्ति नाच रहे थे। यह दृश्य देखकर मुझे याद भीमबेटका का वह चित्र, जिसमें गुफा की दीवार पर शिकारियों बना है। उसमें नर्तकों के बीच एक सांड़ बंधा है। शायद वह बलि फिर हमने एक वृक्ष से मंतरा हुआ एक बड़े-से तूंबे में निकाला, फिर में चढ़ाया। पूजा के लिए एक चौकोर बनाया गया, जो मैंने कई गुफाओं देखा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

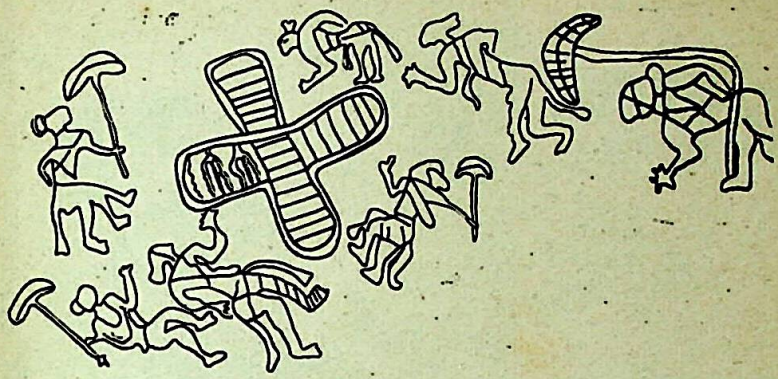

'मेरी आयु अभी १७-१८ बरस की थी; पर वास्त्या तो भरी जवानी की देहरी पर था। इसलिए मंगलू काका ने एक गोंड कुटुंब (जो अपने को राजगोंड कहलाते थे) की सुंदर, सुडौल और उभरे स्तन वाली क्वांरी लड़की को देखा और उससे वास्त्या का संबंध बना दिया। यह कुटुंब इमली खड्ड में रहता था। हमें वहां ले जाया गया और वास्त्या का वहां बाकायदा ब्याव रचा दिया गया। ब्याव के बाद वास्त्या ने वहां एक दीवार पर अपना और अपनी बीवी का चित्र बनाया। यह मेरी भाभी मेरी ही उम्र की थी और बहुत ही मीठा बोलती थी। वास्त्या से मैंने कहा कि भाभी का पूरे कद का चित्र बना। तब उसने बड़ी बारीकी से लाल-सफेद रंग से उसका सुंदर चित्र वहां बनाया।

'चित्र बनने के बाद बड़ा महादेव की ओर उसका पूरा परिवार, संबंधी और हम चल पड़े। इतने बड़े पर्वत पर चढ़ते मैं तो थक ही गया था। पर जब वहां पहुंचकर सतपुड़ा को देखा और देखे वे गड़े हुए हजारों त्रिशूल, तो सारी थकान छूमंतर हो गयी। मंगलू काका ने यहां जमकर पूजा की, मंत्र पढ़े और परंपरागत वेशभूषा व शिरोभूषा पहनकर झूम-झूमकर नाचे। इस बुढ़ापे में उनकी यह फुर्ती देखकर मुझे बहुत अचरज हुआ। मैं भी खूब नाचा। बाद में महुए की शराब पीकर हम लोटपोट हो गये।

रात को पूनम का चांद उठा ही था कि ढोल-मजीरे बज उठे और फिर सभी पुरुषों का सामूहिक नाच-गान शुरू हुआ। हमारी

ज्यादातर स्त्रियां आधे तन को ही ढंकती थीं। उनका वह झूम-झूमकर नाचना और गाना मेरे जैसे को भी उत्तेजित करता रहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे खुशी है कि
मैंने मुन्ने को

फ़ैरेक्स®

देना शुरू किया.

मेरा डाक्टर कहता है:
"तीसरे महीने से बच्चे को
सिर्फ़ दूध पूरा नहीं पड़ता.
इसे फ़ैरेक्स की
ज़रूरत है."

डॉक्टर क्यों फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश करते हैं?
यह मुन्ने की कोमल पाचनशक्ति के लिए संतुलित और उचित आहार है.

किस तरह फ़ैरेक्स मुन्ने की ज़रूरत के लिए पूर्णतया संतुलित है?
फ़ैरेक्स में आपके मुन्ने के दिमाग़ और शरीर के विकास के लिए पचने में आसान प्रोटीन तथा शक्ति के लिए कार्बोहाइड्रेट है. सिर्फ़ फ़ैरेक्स में पर्याप्त आयरन है, जिससे आपके मुन्ने का खून स्वस्थ रहता है. साथ ही फ़ैरेक्स में इतना कैल्शियम, फ़ॉस्फ़ोरस और विटामिन डी2 है जो मुन्ने की हड्डियों तथा दांतों को मज़बूत बनाने के लिए पर्याप्त है.

तीसरे महीने से ही क्यों?
अगर आप इसे अभी से फ़ैरेक्स देती हैं तो बाद में यह "बड़ों के" भोजन को ठीक तरह से चबाकर पचा सकेगा.

क्या उबले आलू मसलकर देना ठीक रहेगा?
आप अपने मुन्ने को कोई ठोस आहार देने से पहले सोच लें: तीन महीने का होने पर भी उसकी पाचन शक्ति कोमल रहती है. इसीलिए उसे ऐसा ठोस शिशु आहार चाहिए, जिसे वह आसानी से पचा सके. इसके अलावा, प्रचलित आहार हमेशा संतुलित नहीं होते, जो आपके मुन्ने की कैल्शियम फ़ॉस्फ़ोरस और विटामिन डी2 की महत्वपूर्ण आवश्यकताएं पूरी कर सकें.

इसे कब बड़ों का भो[illegible] देना चाहिए?
जब ये डगमगाते क़द[illegible] रखना शुरू करें. लेकिन फ़ैरेक्स देना बंद मत क[illegible] जब तक आपका मुन्ना ३ साल का न हो जाए, [illegible] भोजन में ज़रासी तर[illegible] और ढेर सारे प्यार के [illegible] फ़ैरेक्स मिलाइए.

मुन्ने का पहला ठोस आहार: अंग अंग जल्द विकास के लिए.
लिंटास - GF. 57-[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और फिर नयी भौजाई तो नाचने में अपना आपा ही खो बैठी थी। कभी वह वास्त्या को लेकर नाचती, तो कभी मुझे। चांद जब डूबती दिशा की ओर उतर गया, तो नाच-गान थमा। जगह-जगह अलाव जलाये गये और सब उनके आस-पास ढुलक पड़े गहरी नींद में।

'पांच कोड़ी दिन होने के पहले ही हम पंडापुर लौटे। आते समय अमरगढ़ के कुंड पर रुके। वहां हम झरने की ऊपर वाली पहाड़ी पर ठहरे, और पुरखों की याद में पत्थर का एक रोंप (स्मृति-पत्थर) बनाया। दूसरे दिन हमारे पहुंचने की खबर दी गयी कारी तलाई

वालों को। उन्होंने हमारा जमकर स्वागत किया और फिर महुए की रोटी खाकर हम विनायका पहुंचे। वहां मंगलू काका ने हमारे कुलदेवता कुमोद्भव यक्ष की पूजा करवायी। यह यक्ष सुमेरु और सतिये (स्वस्तिक) के आसन पर बिराजमान है और रोमश (बालों वाले शरीर का) है। इसे हमने दो जंगली मुर्गे भेंट किये और गेरू से उनका चित्र बनाया। कुछ समय के बाद विनायका के टूटे किले से होते हुए हम पंडापुर पहुंचे। वहां कुंड के पास हमारे सारे कुटुंबी नाच-गा रहे थे। हमारे पहुंचते ही उन्होंने किलकारियों से हमारा स्वागत किया और फिर हम सबने अभी पकाये

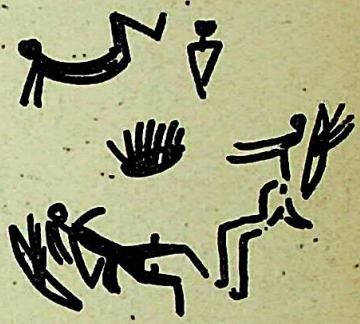

सांभर के मांस और महुए का भोज किया। फिर वास्त्या और उसकी लाड़ी (नववधू) को गाने-बजाने के साथ रंगमहल पहुंचा दिया गया, जहां उन्हें सुहागरात बितानी थी। वहीं वास्त्या ने मंडप में अपना और अपनी लाड़ी का सुंदर चित्र बनाया है।

'इस जत्रा के बाद मंगलू काका ने मुझे और भी अपनापन दिया और धीरे-धीरे मुझे सांप, बिच्छू, भूत-प्रेत, ब्रह्मराक्षस, डाकिन आदि का असर उतारने के मंत्र

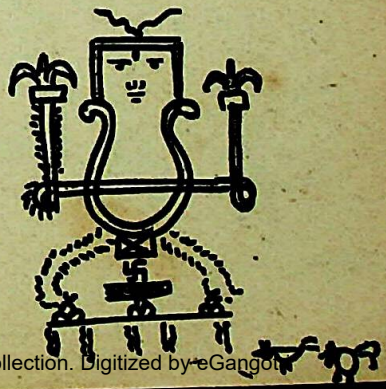

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पढ़ाये। पर साथ ही आचरण के कठोर नियमों का पालन करने का भी बंधन डाला। कई गुफाओं में ले जाकर उन्होंने मुझे उन पुराने चित्रों का मतलब बताया।

'एक दिन वे मुझे जामुनझिरी के पूरब में स्थित वराहगिरी ले गये और वहां बना डूकर का लंबा-चौड़ा चित्र दिखाया बोले—

ये वराह भगवान हैं। बहुत पीढ़ी पहले पृथ्वी पर भयंकर अत्याचार हो रहे थे, तब इन्होंने धरती मां को उससे उबारा था। इसीलिए पीढ़ियों से हम इनकी पूजा करते आ रहे हैं।

'एक दिन मंगलू काका हमें लाखाज्वार ले गये और वहां बने बहुत बड़े मगरमच्छ (महामत्स्य) का चित्र बताया। उसके एक सींग था और बोले कि बेटा, यह महामत्स्य है, जिसने हमारे पुरखों को महाप्रलय के

समय बचाया था। ऐसे ही एक दिन बेटका के पश्चिम की एक गुफा में जंगली सांड़ (वनवृषभ) और कूर्म मानुस (कूर्म-मानव) बताया और कि ये सभी पूजने योग्य हैं। पुराने इन्होंने हमारे पुरखों को उबारा उनकी रक्षा की थी। पता नहीं कि कितने पहले से इनकी पूजा जा रही है। जब जाति पर बहुत बड़ा संकट आये, तो पूजा करनी चाहिये। जंगली (वनवृषभ) ही अग्नि है, भी पूजनीय है।

'काका ने मुझे यह भी कि जब हम जंगली सांड़ और पशु का चित्र आंकते हैं, तो दो से आंकते हैं। एक तो उसे पूजनीय कर चित्र बनाया जाता है। तब आकार काफी बड़ा होता है। गुफा को ही लो। उसकी दक्षिणी

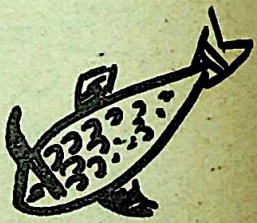

पर दरवाजे के पूरब में असली शेर ही बड़ा एक शेर बना है। बीच विशाल गेंडा है। पश्चिम में एक सांड़ (वनवृषभ) भी बना है। जब के चित्र छोटे आकार में बनाते हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

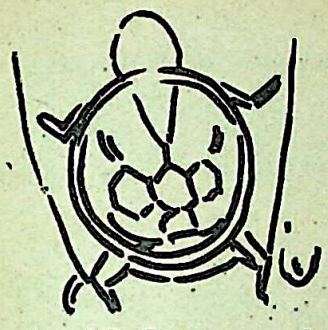

लब यह होता है कि शिकार भरपूर मिले। वशीकरण मंत्र से इनको मंतराकर ही शिकार पर जाना चाहिये।

'गरमियों की एक जेठी अमावस्या को मंगलू काका मुझे एक गुफा में ले गये। वहां हमें करीब पंद्रह हाथ नीचे उतरना पड़ा हाडको वाली गुफा में। वहां उन्होंने मुझे ऐसी-ऐसी गहराइयां दिखायीं, जिनमें जानवरों की हड्डियां ही हड्डियां भरी थीं। निचली तह में मनुष्य की खोपड़ी जैसा, मगर काले रंग का भारी सिर रखा था। मुझे छूकर उन्होंने कसम खिलायी कि जो भी मंत्र वगैरह उन्होंने मुझे सिखाये हैं, मैं उन्हें आने वाली पीढ़ी से नहीं छिपाऊंगा; मैं इनसे निजी लाभ नहीं लूंगा, न अपने सगे-संबंधियों के लाभ के लिए इसका दुरुपयोग करूंगा। माडादेव की शपथ लेकर उन्होंने मुझसे यह प्रतिज्ञा करवायी। व्यक्ति-आचार दीक्षा पहले ही हो गयी थी। मेरे सिर से वह पुरानी खोपड़ी छुआकर मेरे हाथ पर हाथ रखकर उन्होंने मुझे असीसा। फिर वे मुझे गुफा के बाहर लाये और दुर्गा गुफा के निकट ले गये।

वहां दूसरे ओझा और पुरोहित, जिनकी संख्या करीब आधी कौड़ी से ऊपर थी, इकट्ठा हुए थे। मुझे तूंबे से एक द्रव पिलाया गया और वे सब ओझा एक कतार में नाचे। हर एक के सिर पर विचित्र मुखौटा था। नाचने के बाद मंगलू काका मेरे सिर पर हाथ रखकर कुछ बुदबुदाये। मुझे अचरज हुआ कि देखते-देखते ही वे जमीन पर ढुलक पड़े। यह देख मेरी छाती फटने-सी लगी।

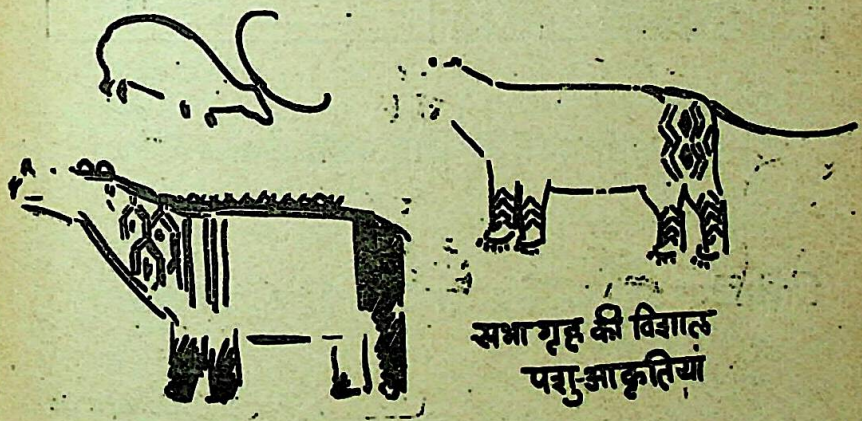

सभा गृह की विशाल पशु-आकृतियां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रानीपाल

सर्वोत्तम सफ़ेदी के लिए

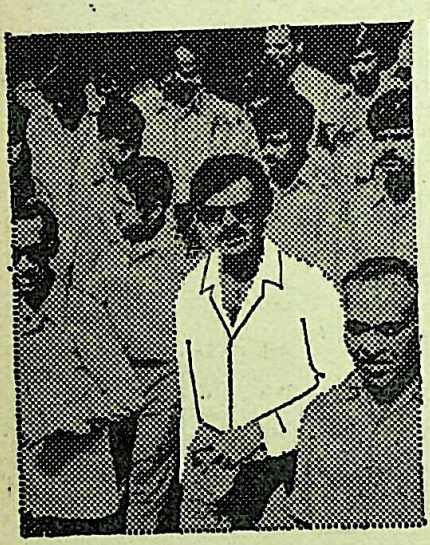

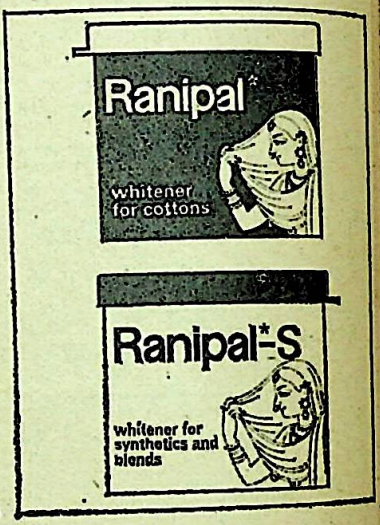

सूती वस्त्रों के लिए रानीपाल

सिन्थेटिक और ब्लैंडिड वस्त्रों के लिए रानीपाल-एस

Shilpi-SG-1a/77

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने उन्हें होश में लाने की बड़ी कोशिश की। वास्त्या ने मुझे सोमपान के, ओझाओं के झुंड बनाकर कतार में नाचने के और मृतक को मंत्रित करने के चित्र बताये थे; पर उनका अर्थ अब मैं समझ पा रहा था।

'मंगलू काका को हम नीचे मुर्दों वाली टोल में ले गये। उन्हें एक खड्डे में शांति से सुलाया। उन पर लाल मिट्टी डाली, दो सीपें उनके भोजन के रूप में उनके मुंह के पास रखीं और उनके गले में जो माला थी उसके एक-दो मनके तो वहां रहने दिये गये, बाकी की माला पिरोकर मेरे गले में डाल दी गयी। मंगलू काका का एक दांत कई बरस पहले टूट गया था। वे उसे चमड़े की एक छोटी थैली में बांधकर गले में लटका रखते थे, वह भी वहीं रहने दिया गया। पास में पुरखों के पत्थर के तीर भी रख दिये और फिर कंकरीली मिट्टी से उन्हें ढंक दिया गया। फिर बड़े ही दुखी मन से सब अपनी-अपनी गुफा में चले गये। मैं वहीं बैठा रहा।

'मंगलू काका की हर बात चित्र की तरह मुझे याद आ रही थी। उनका कहा हुआ हर वाक्य मेरे जीवन का आसरा था। जो वे करते थे अब वह मुझे करना होगा और वे जो कहते थे वह मुझे कहना होगा।

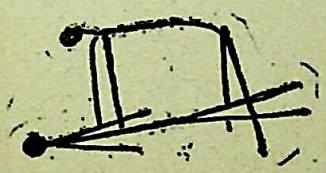

नया वेदू (अभिमंत्रक) आयु में छोटा है, पर उसकी वह धरोहर जो उसे मंगलू काका से मिली है, किसी के पास नहीं है। अकेले की अपनी है। दूसरे दिन भिनसारे वाजनी शिला के ठोके पड़े और ढोल बजाते लोगों के झुंड जुट पड़े। फिर एक विशाल सम्मेलन हुआ, जो सभागृह में आयोजित था। कोई पंडापुर से, कोई मियांपुर से तो कोई आगछे से, कोई विनायका से तो कोई आकलपुर से आया। सब लोग जब भीमबेटका की ओर चल पड़े, तो मधुपालक पहले ही वहां पहुंच गये और उन्होंने लंबे बांस से मधुमक्खियों के छत्ते तोड़कर शहद निकाल लिया। मक्खियों पर मंत्र का प्रभाव था, सो बिना काटे वे जंगल की ओर चल दीं।

'सभागृह की वाजनी शिला पर जाति के बड़े पंचों ने बारी-बारी से ठोके बजाये और हर एक ने आकर मेरा हाथ पकड़कर ऊंची शिला पर मुझे खड़ा कर दिया। मेरे सिर पर हाथ रखकर हर एक ने मेरे सम्मान की शपथ ली और बाद में सभागृह के मध्य एक शृंग गेंडे के चित्र को नमस्कार किया; फिर जंगली सांड़, मोर और तीर कामठी वाले आदमी के चित्रों को नमस्कार करके वे अपने स्थान पर जा बैठे। फिर वास्त्या ने पंचों के चित्र दीवार पर आंके, जिनमें वे लोग दोनों हाथ ऊपर उठाकर मुझे असीस दे रहे हैं।

'सो उस दिन पुरानी परंपरा के वेदू का राज्य समाप्त हुआ। नये का प्रारंभ। मैंने भी रीति-रिवाज के अनुसार सबको असीस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

kores

अच्छी छाप का प्रतीक

कोरेस परमैकलिन सिल्क रिबन : अधिक स्याही के कारण साफ सुथरी छाप

कोरेस इन्टरप्लास्टिक कार्बन : दाग-धब्बों से रहित, स्वच्छ कापियों के लिये वैक्स इंक की कोटिंग और प्लास्टिक की सुरक्षात्मक पर्त

कोरेस ड्राईटाइप स्टेन्सिल : सही, साफ छाप के लिये बिना खामी के लंबे फाइबर टिश्यू से बनी हुयी

जल्दी सूखने वाली सुपरइमल्स डूप्लीकेटिंग नं. के. ७५० और ७५१

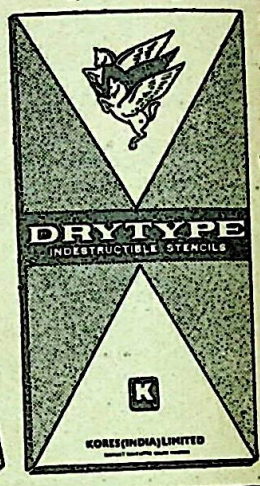

कोरेस (इंडिया) लि.
बम्बई ४०० ०१८
भारतभर में शाखायें

बवासीर

शुरू होते ही इलाज़ कीजिये विश्वसनीय

हडेन्सा मरहम

लगाइये

-ऑपरेशन की नौबत न आने

जालिम लोशन

दाद खुजली की पेटेन्ट दवा

- चमड़ी की गहराई में पहुंचकर कीटाणु का नाश करता है
- सड़ी गली खराब चमड़ी को कागज की तरह निकाल फेंकता है
- 'जालिम लोशन' लगाते ही दाद खुजली की परेशानी मिट जाती
- कपड़ों पर दाग नहीं लगता

हर जगह मिलती है

ORICHEM BAO (INDIA)

n, Digitized by eGangotri

दिया और वहां से हत्तीखोह के पास बने देवी मां के चित्र को नमस्कार करने गया। वहीं वास्त्या ने खूब सजी-सजायी देवी मां की मूर्ति बनायी, जो इस देश में और कहीं नहीं है। वहां से मैं कपि गुफा गया, जहां वास्त्या की लाड़ी गर्भवती थी और मुझे वेदू के रूप में उसे असीस देने थे। वास्त्या ने उसका चित्र पास की गुफा में अंकित कर दिया। अपना समागम, गर्भवती, नग्नदेवी (भट्टारिका) और मां का आशीर्वाद आदि के चित्र उसने वहां बना दिये, जो उसके प्रति उनकी आत्मीयता दरसाते हैं।

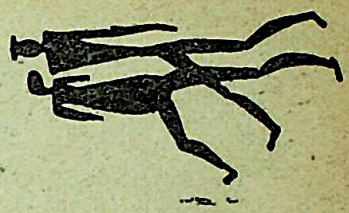

'कुछ बरस बाद हमारी पहाड़ियों में एक नयी बीमारी आयी। बच्चों को खूब बुखार आता और फिर बड़े-बड़े फोड़े निकल आते और तेज बुखार और जलन में कराहते उनकी मृत्यु हो जाती। उन्हें सामूहिक तौर पर पत्थर के नीचे गाड़ दिया जाता या गाड़कर चारों ओर कांटेदार झाड़ियों का घेरा बना दिया जाता। बड़ी बाजनी शिला वाले टोल में इन दिनों एक परिवार रहता था। उसके तीन बच्चे एक साथ ही मर गये। मैंने "यह माता का प्रकोप है" कहकर मंत्र-तंत्र किया, पर कुछ नहीं हो पाया। फिर शीघ्र ही उन्हें पास की गुफा के सामने जमीन में गाड़ दिया गया। वास्त्या ने वह सारा मामला गुफा की दीवार पर गेरू से अमर कर दिया।

'पुराने चित्रों पर नये चित्र बनाने का रिवाज पता नहीं कब से चला आया है। पुराने चित्रों में गहरा लाल रंग रहता था। उनमें जानवर सुडौल होते थे और उनकी गति बेजोड़ होती थी। सबसे पुराने चित्र गहरे हरे रंग से बनाये जाते थे। लेकिन अब कुछ साल पहले से लाल-सफेद दोनों रंगों का उपयोग होने लगा है। पहले के चित्र बहुत बड़े होते थे। बलवान पशुओं के प्रति आदमी का भय और आश्चर्य उनसे पता चलता है। पर बाद में हमारे पुरखों ने पत्थर के तीरों से उन पशुओं पर विजय पा ली। सो उनका डर जाता रहा और चित्रों में पशुओं के आकार भी छोटे कर दिये गये।'

इतना सुनाकर बड़दादा ने उस रात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चकाचौंध हटाइए

पढ़ते हों, सीते-पिरोते हों, काम करते हों,
या केवल आराम करते हों—
आपको चाहिए फ़िलिप्स अर्जेण्टा.
सफ़ेद दूधिया बल्ब. शानदार
जगमगाती रोशनी, साथ ही सौम्य भी.
जो न तीव्र गहरी छाया बनाए
न आँखों में चकाचौंध पैदा करे.

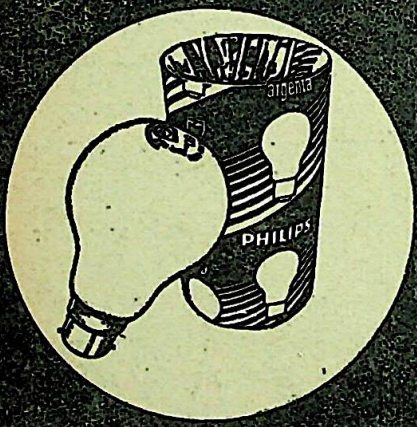

फ़िलिप्स अर्जेण्टा दूधिया बल्ब

क़ीमत की पूरी वसूली

फ़िलिप्स

फ़िलिप्स इंडिया लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की सभा समाप्त की और सबको कहा कि अब जाकर सो जाओ।

०००

दूसरे दिन जब सूरज उगा, बड़दादा ने सबको जगाया और अपने-अपने कुटुंबियों में भेजा। उन्होंने वादा किया था कि वे आज रात को जब चंद्रमा वृश्चिक के मध्य होगा, एक नयी कहानी सुनायेंगे। यह कहानी भी लोकगीत के रूप में परंपरा से चली आयी है और न जाने किस युग से गायी जा रही है। मटरू की मां नाचती बहुत सुंदर है। उसे उसके पिता पचमढ़ी के जम्बूद्वीप से ब्याह के लाये थे। यह गीत वही सुनाती है और फिर सब स्त्रियां हाथों में हाथ डाले आधे गोल में एक पग आगे एक पग पीछे रखती हुई, तालियों के और बाजनी शिला के ठोकों पर गाती हैं :

माडादेव आयो है खैखटरी विजै के हेत ।।ध्रु।।
गौरदेव आयो है खैखटरी विजै के हेत
गजगौर आयो है खैखटरी विजै के हेत
मार-मार धायो है खैखटरी भगायो है
।।माडा।।

यही कुछ पंक्तियां झूम-झूमकर गायी जाती हैं और यही एक गीत घड़ी-दो घड़ी चलता रहता है। गीत के अर्थ को अधिकांश लोग भूल गये हैं, पर बड़दादा को वह याद है। उनकी जाति का ओझा एक बार उनके यहां आया था और मिट्टी का सांड बनाकर उसने मरी खैखटरी (केकड़ा) का प्रसाद उसे चढ़ाया था और वह भी ढोलक की ताल पर यही गीत गाता था। दादाबा ने उससे पूछा था कि इसका क्या अर्थ है, तब जो उसे सुनने को मिला था, वही वे आज बच्चों को सुनायेंगे और इस कहानी का गुफा में बना चित्र भी बच्चों को बतायेंगे।

दोपहर को वे दुर्गा मां के मंदिर में पहुंचे, तो वहां उन्होंने दुर्गा की सोलह भुजाओं वाली विकराल प्रतिमा के सामने एक नये ओझा को झूमते देखा। ढोल की आवाज पर सब-कोरकू, गोंड, मानकर—धीरे-धीरे इकट्ठे हो रहे थे। ओझा झूम-झमकर हुंकार भरता वालों को उड़ा रहा था। उसके हाथ में एक भाला था और मटरू को याद आया कि उसने ऐसा ही एक चित्र किसी गुफा में देखा था, और फिर याद आया कि विनायका से भीमबेटका आने के मार्ग में, जिसे अपने लोग रंगमहल कहते हैं, उसके पास वाली पुतरी करार में ऐसा ही नर्तक बनाया गया है। आज दुर्गा मां के प्रसाद के लिए मीयांपुर के राजगोंड सांभर लाये हैं। पंडापुर के मानकर चीतल लाये हैं और आंकलपुर राजगोंड नीलगाय लाये हैं। कुछ ही देर में एक और समूह उत्तर से आया। वे लोग कंधे पर एक मोटा जंगली सूअर लटकाकर लाये। मटरू को याद आया, उसने तो ऐसा दृश्य भी चित्र में देखा है और फिर उसे याद आया कि गजगौर वाली टोल के पास जो चित्रित चट्टान है, उस पर उसने यह चित्र देखा है।

एक और ओझा की फां-फूं चल रही है और दूसरी ओर दुर्गा मां की टोल के

[शेष पृष्ठ १४७ पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[पृष्ठ ५९ का शेष]

प्रकटतः किसी महत्त्व के कार्य से इस बीच इनका संपर्क हुआ था, जो इन्हें कानपुर खींच ले गया था। कानपुर के पास बिठूर में तब इनके समवयस्क नानासाहब धोंडोपंत और उनके साथी भारत की स्वतंत्रता के लिए एक बड़े प्रयत्न का आरंभ और उसके लिए योग्य सहयोगियों की खोज कर रहे थे। साधु-संन्यासियों के सहयोग का उनके लिए विशेष मूल्य था। उनके उस प्रयत्न का आधार रघुनाथ हरि के जगाये लोगों का इस स्थूल सत्य को देख-पहचान लेना था कि भारत को अंग्रेजों ने भारतीय सैनिकों द्वारा ही गुलाम बना रखा है।

दस मास कानपुर और बनारस के बीच आते-जाते रहने के बाद दयानंद नर्मदा-प्रदेश को चल दिये—उस नर्मदा-प्रदेश अर्थात् बुंदेलखंड को जो शिवाजी और छत्रसाल के वक्त से महाराष्ट्र और उत्तर भारत के बीच कड़ी रहा था और जिसका अब फिर गंगा-कांठे और महाराष्ट्र के प्रयत्नों को जोड़ने के लिए बड़ा महत्त्व था। अगले तीन साल के अपने चरित का ब्योरा दयानंद ने कभी किसी को नहीं दिया। पर इसी बीच ये कन्याकुमारी तक गये यह निश्चित है; क्योंकि इन्होंने एक बार यह कहा कि मैं हिमालय से कन्याकुमारी तक घूमा हूं। पर इनके जीवन-वृत्तांतों में सातारा के दक्खिन जाने की बात और कहीं नहीं आती।

सन १८५७-५९ वाला प्रयत्न अंतिम रूप से विफल होने के बाद दयानंद विरजानंद के पास पहुंचे। विरजानंद प्रज्ञाचक्षु साधु थे, जिनसे तीसरे अंग्रेज-भारत (१८१८) में तथा उसके बाद की शताब्दियों में अंग्रेजी राज के विरुद्ध वाले ब्रज और उत्तरी राजस्थान के सरदारों ने प्रेरणा पायी थी। १८ वाले प्रयत्न के विफल होने के बाद विफलता के कारणों और उन्हें दू के उपायों पर विचार करने की आव थी, और दयानंद ठीक तभी, जान वैसा विचार करने के लिए ही, कि के पास पहुंचे। आगे उन्होंने जो कु उससे भी यह सिद्ध होता है।

इस तरह दयानंद भारत के पुनर्जागरण की पहली धारा के नि घनिष्ठ संपर्क में आये। और उस महान प्रयत्न के विफल होने पर, जो हम अभी देखेंगे, उन्होंने ठीक वह मार्ग जो उसे फिर से चलाने के लिए चाहिये था।

अढ़ाई बरस विरजानंद के साथ विमर्श करने के बाद १८६३ में दयान अपनी यात्रा पर निकले। इस बार में वे राममोहन राय के अनुयायियों में भी आये। पच्छिम भारत में वे हरि देशमुख से मिले और उनकी और सहयोग से आर्यसमाज और कारिणी सभा की स्थापना की। राव के विचारों को दयानंद ने अपने सामाजिक सुधारों की योजना में पू लिया था। दूसरी तरफ गोपालराव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि दयानंद जैसा तेजस्वी और अटल धुन वाला व्यक्ति ही उन विचारों को जनता तक पहुंचाकर चरितार्थ करने का रास्ता बना सकता है। इसलिए उन्होंने दयानंद को अपना नेता स्वीकार किया।

सन १८५७-५९ का भारत का स्वतंत्रता-युद्ध सफल क्यों नहीं हुआ था? गहराई से विचार करने पर इसका एक ही उत्तर मिलता है कि उस 'युद्ध में संचालन की एक-सूत्रता नहीं थी, युद्ध की सुविचारित योजना नहीं थी; प्रत्येक सेना-दल और जनता को समयानुसार उसके निश्चित कार्य का आदेश देने वाली कोई अधिकारी शक्ति नहीं थी, यथेष्ट नेतृत्व नहीं था। अंग्रेजों के हाथ बिकी हुई भारतीय सेना के बड़े भाग को क्रांतिकारियों ने अपनी तरफ मिला लिया था; किंतु उस सेना के ठीक-ठीक संचालन का उपाय नहीं किया था।

'तो क्या भारतीयों में सेना-संचालन की योग्यता नहीं थी? यह प्रश्न आने पर हमारा ध्यान बख्तखां, मौलवी अहमदशाह, लक्ष्मी-बाई और तात्या टोपे की ओर जाता है। उनके चरित्रों से सूचित है कि उनमें ऊंचे दर्जे की सामरिक प्रतिभा सहज ही विद्यमान थी। पर उस प्रतिभा को ठीक प्रशिक्षण और विकास का अवसर नहीं मिला था, तथा उन प्रतिभाशाली व्यक्तियों को यथेष्ट अधिकार सौंपकर उनसे पूरे युद्ध का संचालन शुरू से नहीं कराया गया था। इस युद्ध का आयोजन करने वालों ने भारत में अंग्रेजों की सामरिक शक्ति के इस एक

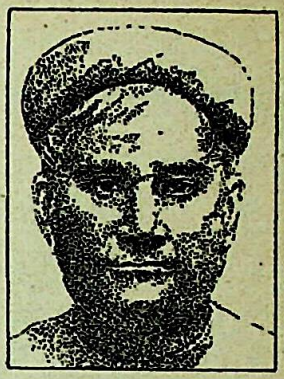

बंकिमचंद्र चटर्जी

तत्त्व को ठीक पहचान लिया था कि वह भारतीय सैनिकों से ही बनी है; पर इस दूसरे तत्त्व की ओर उनका ध्यान नहीं गया था कि यरोपी सेना-संचालन नये किस्म का है, वह बड़ा नियमित और सुशृंखल है, वैसा संचालन करने के लिए उपयुक्त व्यक्तियों को उचित शिक्षण और अभ्यास का अवसर मिलना चाहिये तथा उस प्रकार के अभ्यस्त व्यक्तियों द्वारा ही सेना का संचालन होना चाहिये। इस तत्त्व को न पहचानना और इसके अनुकूल आचरण न होना भारत के पहले स्वाधीनता-युद्ध की विफलता का असल कारण था।'

एक हार से कोई राष्ट्र मर नहीं जाता, अर्थात् स्थायी रूप से पददलित होकर पड़ नहीं जाता। यदि भारतीय राष्ट्र में जान बाकी थी तो उसे अपनी इस हार के कारणों को समझ-बूझकर उनका प्रतिकार और उपाय करना चाहिये था। दयानंद के चरित से प्रकट होता है कि भारत ने वैसा किया;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साण्डू

विमफिक्स

(चाँदीके वर्कवाली टैबलेट्स)

जवानीकी जोशीली चेतनाको

सदैव बनाये रखनेके लिये

- सप्त धातुवर्धक अतिपौष्टिक द्रव्योंसे युक्त
- जीवनका संपूर्ण आनंद उठानेके लिये
- संपूर्णतया निर्भय

द. कृ. साण्डू ब्रदर्स चेम्बूर प्रा. लि.

वि. ना. पुरव मार्ग, चेम्बूर-बम्बई ७१.

आयुर्वेदकी सेवामें ७६ गौरवशाली वर्ष

DKS/03/9AM

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि हम यह पक्के तौर से जानते हैं कि दयानंद ने अपने शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा को यह प्रेरणा दी थी कि विदेशों से, विशेषकर ब्रितानिया के नये उठते प्रतिद्वंद्वी जर्मनी से, संपर्क स्थापित कर क्रांतिकारी भारतीय युवकों के लिए समारिक विज्ञान और अन्य विज्ञान और शिल्प सीखने का प्रबंध करें; साथ ही हम श्यामजी तथा दयानंद के दूसरे एक शिष्य कृष्णसिंह बारहट को फिर से क्रांतिकारी संघटन करता देखते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा की कल्पना

दयानंद की दूसरी विशेष देन थी राष्ट्रीय शिक्षा की कल्पना। भारत को आधुनिक जगत का सब नया ज्ञान अपनी जनता के लिए अपनी भाषाओं में अपने पुराने ज्ञान के साथ समन्वित करके लाना होगा, यह विचार तो रघुनाथ हरि और राममोहन के वक्त से चला आता था। पर इसके लिए अपना राष्ट्रीय शिक्षा का संघटन करना होगा, यह सूझ दयानंद की थी। और जान पड़ता है, इस आदर्श को चरितार्थ करने का काम उन्होंने विशेषकर अपने पंजाबी शिष्य मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद) को सौंपा। नये सामरिक ज्ञान की आवश्यकता को दयानंद ने विशेष रूप से देखा था। वास्तव में उस ज्ञान को पाना भी आधुनिक जगत के नये ज्ञान को पाने का एक अंश ही था। यों राष्ट्र की इन दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयत्न एक ही प्रयत्न के दो पहलू थे।

और इन प्रयत्नों से जो आत्मविश्वास पैदा हुआ उसी की बदौलत ऐसे वक्त में जब कि सारा देश अपनी गहरी हार से पस्त पड़ा था और किसी को चूं करने की हिम्मत न थी, दयानंद ने फिर यह पुकार उठायी कि 'कोई कितना ही करे परंतु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।'

राष्ट्रीय इतिहास का अनुशीलन भारत राष्ट्र के अपने पुराने ज्ञान को सुलझाने और नये ज्ञान को पाकर पुराने के साथ समन्वित करने के प्रयत्न का बुनियादी अंश है। जिन लोगों ने राष्ट्र की नये ज्ञान की आवश्यकता को संपूर्ण रूप से देखा-समझा, वे इस बुनियादी आवश्यकता को भी देखे बिना न रह सकते थे। इसीलिए दयानंद के साथियों-शिष्यों को हम राष्ट्रीय इतिहास के अनुशीलन के लिए विशेष प्रयत्नशील देखते हैं। मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और कृष्णसिंह बारहट मथुरा में दयानंद के संपर्क में आये। इन दोनों तथा कविराजा श्यामलदास ने ही दयानंद को मेवाड़ बुलवाया था। तीनों की इतिहास में रुचि सुविदित है। श्यामलदास का 'वीरविनोद' (लग. १८८५) तो किसी आधुनिक राजस्थानी द्वारा राजस्थानी इतिहास के पुनरुद्धार का पहला बड़ा प्रयत्न था। श्यामलदास ने ही गौरीशंकर हीराचंद ओझा को इतिहास के कार्य में लगाया, जिन्हें बाद में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने मेवाड़ का दीवान रहते हुए प्रोत्साहित किया।

विदेश जाने पर पेरिस में श्यामजी ने सिल्वैं लेवी को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी, जो बाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब उत्साह नहीं तो कुछ नहीं

दुर्भाग्य
निरन्तर चिन्ता
कार्याधिक्य
जीर्ण अपचन
स्नायुदौर्बल्य के सामान्य लक्षण हैं
विस्मृति
भय
मिथ्या भावना
आत्महत्या के विचार
मतिभ्रम
इसके भयंकर परिणाम हैं

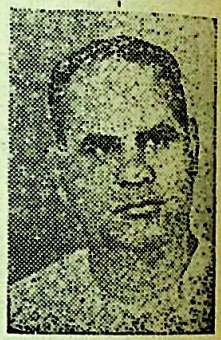

यदि आप स्नायुदौर्बल्य से ग्रसित हैं, तो
परामर्श करें :

कविराज पं. दुर्गादत्त शर्मा, वैद्य-वाचस्पति

(कृपया अंग्रेजी अथवा हिन्दी में पत्र-व्यवहार कीजिये।)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में अपने जमाने के यूरोप के प्रमुख प्राच्य-वेत्ता माने गये और जिन्होंने साठ बरस की आयु के बाद चीनी भाषा भी सीखी। इंग्लैंड में श्यामजी के शिष्य विनायक दामोदर सावरकर ने भारत के स्वतंत्रता-युद्ध का इतिहास लिखा। काशी प्रसाद जायसवाल को भी इतिहास की खोज में अपना जीवन लगाने की प्रेरणा श्यामजी से ही मिली—ऐसी प्रेरणा जो उनके जीवन के अंतिम दिन तक मंद न पड़ी।

दयानंद के समकालीन बंकिमचंद चटर्जी और विष्णुशास्त्री चिपलूणकर थे। राष्ट्रीय प्रश्नों पर उनकी विचार-धारा दयानंद से बहुत मिलती है। उन दोनों ने भी पूर्ण स्वतंत्रता के आदर्श को दयानंद के प्रायः साथ-साथ देश के सामने रखा। राष्ट्रीय इतिहास के अनुशीलन को उन्होंने भी राष्ट्र के पुनरुत्थान का आवश्यक उपाय माना। बंकिमचंद्र ने तो राष्ट्रीय इतिहास के अनुशीलकों के लिए जो रास्ता बताया, वह उनके गहरे विचार और दूरदृष्टि का सूचक है।

उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम चौथाई

oooooooooooooooooooooooooo

गांधीजी रेल से यात्रा कर रहे थे। एक स्टेशन पर वे गाड़ी के दरवाजे पर जा खड़े हुए। जब गाड़ी चली, तो उनके एक पांव की चप्पल खिसककर नीचे गिर पड़ी। इस पर उन्होंने दूसरी चप्पल भी उतारी और पहली चप्पल की ओर फेंक दी।

एक यात्री ने यह सब देखा और गांधीजी से इस व्यवहार का कारण पूछा। गांधीजी का उत्तर था—'गिरी चप्पल को वापस प्राप्त करना मेरे लिए संभव नहीं रह गया था। वह जिस किसी को भी मिलती, उसके लिए भी बेकार होती। दोनों चप्पल मिलने पर शायद किसी के काम ही आ जायें।'

oooooooooooooooooooooooooo

से ऐसी कृतियां प्रकट होने लगीं, जिनसे सूचित हुआ कि उद्बुद्ध भारत अपने अतीत, अपने सांस्कृतिक दाय और अपनी विद्यमान स्थिति को ठीक-ठीक समझने का जतन करने लगा है। तब से भारतीय दृष्टि से भारत के संपूर्ण समन्वयात्मक इतिहास की मांग भी उठने लगी।

[पृष्ठ १४१ का शेष]

पश्चिम में लाखाज्वार के रास्ते वाले मैदान में सामूहिक भोजन के लिए लाये गये जानवरों को भूना जा रहा है। कुछ क्षणों में तूंबों में लायी गयी महुवा की दारू के दौर चलने लगे और फिर दुर्गा टोल के दक्षिण में मैदान में पुनः ढोल दमक उठे और स्तूप के दक्षिण की दीवार पर अभी भी बैठे लोग नृत्य का अवगाहन कर रहे थे और बीच में किलकारियां भर रहे थे और अब सूर्य डूबती दिशा को जा रहा था।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीगोपाल नेवटिया लेख-प्रतियोगिता (१९७६) में प्राप्त एक लेख

कोआला के देश में

रामलखन सिंह

कैन्बरा की आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी के अनेक छात्रावासों में से एक का नाम है 'ब्रूश हॉल'। और उसी में मेरे रहने के लिए एक कमरा आरक्षित किया जा चुका है, यह जानकारी विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने मुझे पहले से ही भेज दी थी। जब कैन्बरा हवाई अड्डे पर उतरकर टैक्सी वाले से कहा कि 'ब्रूश हाल' चलना है, तो उसने भी रंचमात्र विलंब किये बिना सामान रख लिया था। इससे मैंने अनुमान लगाया था कि यह कैन्बरा का सुपरिचित स्थल होगा। किंतु लगभग आधे घंटे तक दौड़ने के बाद टैक्सी नगर में प्रविष्ट हुई और एक इमारत के सामने रुक गयी, तो वहां टहलती हुई कुछ लड़कियों को देखकर मुझे सोचना पड़ा कि शायद मेरा अनुमान गलत था। तब मैंने ड्राइवर से पूछा—'क्या इसी नाम का लड़कियों का भी छात्रावास है?' मेरा आशय समझते हुए वह मुस्करा दिया और बोला—'नहीं, यहां लड़के-लड़कियां एक ही छात्रावास में रहते हैं।'

उसके बाद अपना आश्चर्य दबाते हुए मैंने सामान उतारकर, सामने खड़ी एक लड़की तक जाकर कहा था—'क्षमा कीजियेगा..... क्या आप बता सकेंगी कि मुझे अपने कमरे का नंबर जानने और उसे खुलवाने के लिए किससे मिलना चाहिये?'

उसने कुछ कहे बिना मुझे सामने के बरामदे में लगे नोटिस बोर्ड तक ले जाकर मेरा नाम पूछा था, 'सिंग-सिंग' कहते हुए वहां टंगी लिस्ट में ऊपर से नीचे देखने लगी थी। नाम मिल जाने पर उसके सामने लिखा नंबर पढ़कर नीचे बने काउंटर पर फैले लिफाफों से उस नंबर का लिफाफा उठाकर उसे फाड़ते हुए कहा था—'यह रही तुम्हारे कमरे की चाबी और यह रहा तुम्हारे नाम वार्डन का स्वागत-पत्र!'

धन्यवाद देता हुआ मैं नोटिस बोर्ड पर ही टंगे नक्शे में उस नंबर के कमरे की दिशा का अनुमान लगाने लगा, तो वह साथ चल दी थी—'कम आन! मैं तुम्हें पहुंचा दूंगी।'

कमरे पर पहुंचकर जब मैंने वार्डन का पत्र पढ़ा, तो जानकारी मिली कि नये छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि आने के दिन ही वे वार्डन से मिल लें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलने जाने पर वार्डन के कार्यालय-कक्ष में हाफ पैंट और कमीज पहने हुए जो सज्जन मिले, उन्होंने गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए बताया कि मैं ही वार्डन हूं, फिर एक काला गाउन मुझे देते हुए कहा था कि सप्ताह के कार्य-दिवसों में इसे पहनकर ही मेस में 'डिनर' के लिए आने का नियम है। वैसे कुछ छात्र इस नियम को नहीं निभाते और उन्हें कुछ दंड भी नहीं दिया जाता, इसलिए चाहो तो उनके जैसा भी कर सकते हो। किंतु जिस दिन किसी को 'हाई टेबल' पर बैठने बुलाया जाये, उस दिन उसे अवश्य ही गाउन पहनकर आना पड़ता है। साथ ही वे मुझे उस सांझ के लिए हाई टेबल का न्योता दे बैठे थे।

फिर उन्हीं ने बताया था कि उसके लिए डिनर के नियमित समय (६ बजे सायं) से लगभग पंद्रह मिनट पहले मेस के ऊपर स्थित वार्डन के गेस्टरूम में एकत्र होना पड़ता है। वहां उस सांझ हाई टेबल पर बैठने के लिए आमंत्रित लगभग पंद्रह छात्र-छात्राओं को वार्डन की ओर से शराब, बियर या फल का रस पिलाया जाता है और ६ बजते ही सभी नीचे उतरकर मेस के एक किनारे बने ऊंचे चबूतरे पर रखी लंबी-चौड़ी मेज के चारों ओर बैठ जाते हैं। बाकी सब नीचे लगी मेजों पर बैठकर खाते हैं। ऊंची मेज पर भी कांच के फ्लास्क में शराब भरी रखी रहती है, जिसे खाना खाते समय वे सभी पीते रहते हैं। यह नित्य का नियम है और वार्डन बारी-बारी छात्र-छात्राओं को इस मेज पर बैठकर खाने के लिए आमंत्रित करते रहते हैं।

पहले ही दिन प्रदान किये गये इस गौरवपूर्ण निमंत्रण को स्वीकार करके जब मैं उठा, तो वार्डन ने कुछ पुस्तिकाएं देते हुए कहा था, इनमें कैन्बरा एवं इस विश्वविद्यालय के विषय में जानकारी दी गयी है, जो तुम्हारे लिए उपयोगी होगी।

लौटकर जब मैं अपने कमरे में पहुंचा, तो उन्हीं पुस्तिकाओं को उलट-सुलटकर देखने लगा। उनसे यह जानकारी मिली कि आस्ट्रेलिया की यह नयी राजधानी विश्व के इने-गिने साफ-सुथरे नगरों में से एक है। कौतूहलवश मैं टहलता हुआ उस नगर की छवि देखने निकल पड़ा। देखकर लगा कि यह कोई नगर नहीं, बल्कि एक सीमाहीन पार्क है, जिसमें सड़कें व मकान बनाने-भर के लिए घास की परत उधेड़कर स्थान निकाल लिया गया है। कहीं हथेली-भर भी ऐसी जमीन नहीं दिखाई पड़ रही थी, जो तराशी हुई हरी घास से अथवा योजनाबद्ध रीति से रोपित वृक्षों से ढंकी न हो। मकान भी अधिकांशतः इकमंजिले ही थे, जो सुविधा से पेड़ों के झुरमुट में छिप जायें।

हरियाली की गोद में लिपटे उस अत्याधुनिक नगर की प्राकृतिक छटा पर मुग्ध मैं जब होस्टल लौटा, तो मैंने सबसे पहले वार्डन की दी हुई पुस्तिका में यह खोजा था कि इस नगर की सीमाओं में कितने वृक्ष हैं और जब यह संख्या अस्सी लाख पढ़ने को मिली, मैं चकित था। साथ ही जब यह भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

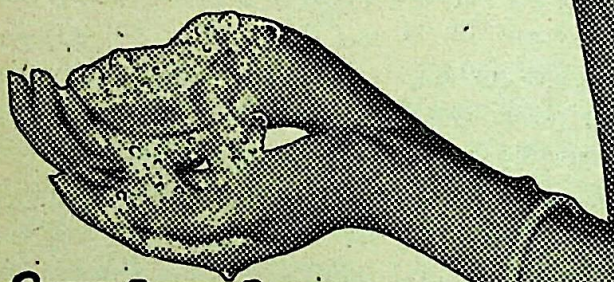

कितना भरपूर झाग
कितनी मनमोहक सुगंध
और क़ीमत कितनी कम

सिर्फ़
रु. १.00
(कर अतिरिक्त)

टर्किश बाथ

कम क़ीमतवाला...
ज़्यादा चलनेवाला-साबुन

गोदरेज
का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पढ़ा कि इस नगर की कुल जनसंख्या सिर्फ १ लाख ९० हजार है, तो यह समझ पाना आसान हो गया था कि आस्ट्रेलियाई अपनी राजधानी कैन्बरा को 'गार्डन सिटी' क्यों कहते हैं।

उत्तर भारत का जाड़ा बिताकर ४ मार्च को मैं आस्ट्रेलिया के दक्षिण में बसे हुए इस नगर में पहुंचा था। तब वहां गरमी का मौसम बीत चला था; फिर भी लोग अभी गरमी की ही वेश-भूषा में थे—अधिकांश छात्र हाफपैंट और बनियान में और छात्राएं मिनी स्कर्ट में। पहनावे एवं शृंगार की दृष्टि से एक-दो प्रतिशत ही अपने व्यक्तित्व के प्रति जागरूक लग रहे थे। शेष को इसमें कोई रुचि नहीं थी कि देखने वाले उनके विषय में क्या सोचते हैं। पैबंद लगी पैंट अथवा लहंगे (पेटीकोट) पहने तो अनेक थे। किसी-किसी के ही बाल ढंग से संवरे हुए दिखाई पड़ते थे। लंबे बाल रखना तो आस्ट्रेलियाई पुरुषों का स्वभाव ही हो गया है। नाई की दुकानों पर अधिक संख्या महिलाओं की ही दिखती थी।

इन्हें देखकर मुझे आभास हुआ था कि बनारस, ऋषिकेश अथवा दिल्ली की सड़कों पर घूमता देखकर जिन्हें हम हिप्पी समझ बैठते हैं, उनमें से अधिकांश ऐसे ही छात्र होते हैं, जिन्हें सज-संवरकर रहने की प्रवृत्ति से चिढ़ हो गयी है। इसका एक कारण मेरी समझ में यह आया कि इनमें से गरीब कोई भी नहीं है, इसलिए कपड़ों से दूसरों को प्रभावित करने की बात ही नहीं उठती। यह निष्कर्ष मैंने डेविड की उस बात से निकाला था जो उसने कुछ ही दिन बाद आयोजित एक पार्टी में मुझसे कही थी—'पार्टी में जितने भी लोग सूट-टाई में ह, उनमें से नब्बे प्रतिशत एशियाई देशों के छात्र होंगे। बेचारों को डर जो रहता है कि कहीं लोग उन्हें गरीब न समझ लें।'

डेविड भी ब्रूश हाल में ही रहता था और मेरा मित्र बन गया था; क्योंकि अगले वर्ष वह भारत-भ्रमण पर निकलने की सोच रहा था और कभी-कभी मुझसे यहां की जानकारी लिया करता था। उसे सबसे अधिक कौतूहल होता था भारत की यात्रा कर चुके एक अन्य आस्ट्रेलियाई छात्र के इस कथन पर कि भारतीय रेलगाड़ियों के (अब दूसरे) दर्जे के डिब्बे कभी नहीं भरते, चाहे यात्रियों की संख्या कितनी भी हो। प्रारंभ में मैं इस कथन का आशय नहीं समझ सका तो उसने पूरी बात यों बतायी थी :

'स्मिथ कह रहा था कि मैं जब भी टिकट-खिड़की पर जाकर पूछता था कि क्या टिकट मिलेगा, तो बुकिंग क्लर्क आश्चर्य से कहता था, क्यों नहीं? टिकट तो सभी को मिलता है। ..... मेरा आशय सीट से था। मैं यह स्पष्ट करता तो क्लर्क हंस पड़ता था ..... उसकी चिंता क्यों करते हो? जब टिकट होगा तो सीट मिलेगा ही। और जब मैं टिकट लेकर ट्रेन के पास जाता था, तो वहां पैर रखने का भी स्थान न देखकर गार्ड से कहता था, देखिये मुझे बुकिंग क्लर्क ने टिकट देते समय कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उच्च स्तर के प्रति अनन्य निष्ठा
के लिए सुविख्यात

जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इंडस्ट्रीज लि.

१९५, चर्चगेट रिक्लेमेशन
बंबई–४०० ०२०

फोन : २९४४४५, टेलेक्स: ०११–२४५८
ग्राम : ZENPIPES

अत्युत्तम स्टील पाइपों, औद्योगिक
छुरियों और विशेष फौलाद के
निर्माता।

दि इंडियन टूल
मैन्यूफैक्चर्स लि.

१०१, सायन रोड, सायन,
बंबई-४०० ०२२

सुनिश्चित होकर चुनाव
कीजिये

'डॅगर' ट्विस्ट ड्रिल्स रीमर्स,
कटर्स, टैप्स, टूलबिट्स
और माइक्रोमीटर्स

डॅगेलाय कार्बाइड
टूल्स और टिप्स

डॅगर-साके गियरहॉब्स
और गियरशेपिंग कटर्स

I T

प्रिसिशन का प्रतीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था कि सीट तो मिलेगी ही। लेकिन यहां तो कहीं दिखाई नहीं पड़ रही है। गार्ड हंसते हुए समझाता था, ठीक ही कहा था। आप किसी तरह अंदर घुस जाइये, फिर देखिये स्थान मिलता है या नहीं। ..... "लेकिन अंदर जायें कैसे, दरवाजे तक तो लोग बैठे हैं?" ..... "इस पर क्यों परेशान होते हैं? एक रुपया कुली को दीजिये वह आपको अंदर पहुंचा देगा।" ..... और सचमुच ही एक रुपया लेकर कुली मुझे खिड़की के रास्ते भीतर पहुंचा देता था। फिर किसी न किसी तरह स्थान मिल ही जाता था—कभी खड़े होने का, तो कभी बैठने का और कभी-कभी पड़ोसी के कंधों से टिककर सोने का भी। .....'

उसका यह विवरण सुनकर मैं सोचने लगा था कि वास्तव में होता तो ऐसा ही है, किंतु मैंने कभी इस कमाल को क्यों नहीं पहचाना? तभी डेविड ने उत्साह से कहा था कि मैं भी यह जादू देखना चाहता हूं कि चाहे जितने लोग हों, उन्हें टिकट भी मिलता है और स्थान भी!

इस पर मैं कुछ कहूं इसके पहले ही डेविड ने बात अपनी ओर मोड़ ली थी—'एक हम आस्ट्रेलियाई हैं कि देश में इतनी कम जनसंख्या होने पर भी बच्चे पैदा करने से डरते हैं! तुमने तो देखा ही होगा ब्रूश हाल के सामूहिक स्नानघरों में टंगी हुई वे स्वचलित पेटियां, जिनमें बीस सेंट का सिक्का डालते ही निरोध का पैकेट निकल आता है?' कहते-कहते वह हंसने लगा था—'और यूनिवर्सिटी कैम्पस में उपलब्ध सुविधाओं की वह सूची भी तुमने पढ़ी होगी, जिसमें असावधानी से ठहर जाने वाले गर्भ से बचने के लिए डाक्टरी सहायता भी सम्मिलित है ..... ?'

उस क्षण मैं यह तय न कर सका था कि वह व्यंग्य कर रहा है या विनोद? किंतु यह अवश्य कहा था मैंने—'वास्तव में यह कौतूहल की ही बात है कि जहां लगभग सभी अविवाहित छात्र-छात्राएं ही रहते हों, वहां निरोध की इतनी खपत हो। मेरे लिए यह वैसा ही जादू है, जैसे कभी न भरने वाले भारतीय रेल के डिब्बे तुम्हारे लिए!'

सुनकर वह हो-हो करके हंसने लगा था, फिर 'अभी आया' कहते हुए सामने के काउंटर से अपने लिए बियर खरीदने चला गया था। नाज करने की एक चीज है इनके पास—क्रीड़ाप्रेम। ऐसी छात्र-छात्रा तो खोजने से कोई ही मिलेगी, जिसे किसी न किसी खेल का शौक न हो। रात में हाकी खेली जाती, मैंने यहीं देखी थी। समूचे फील्ड को बिजली की रोशनी से चमकाकर हाकी खेलते देखकर जब मैंने एक दिन डेविड से कहा था कि यह तो बिजली की बरबादी है, तो वह बोला था—'नो वरीज़ मैन!' (कोई फिक्र नहीं)।

सैकड़ों मील चले जाने पर भी बस्ती देखने को नहीं मिलेगी; क्योंकि भारत से ढाई गुना क्षेत्रफल वाले इस देश की जनसंख्या मात्र १ करोड़ ३० लाख है और उसका ज्यादातर हिस्सा गिने-चुने चार-पांच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"परिवार बढ़ा पर धुलाई ख़र्च में कोई बढ़ौती नहीं"

इसका राज़ है
नैट डिटरजेन्ट पाउडर

मुझे डर-सा था कि पप्पू के जन्म के बाद घर का धुलाई ख़र्च काफ़ी बढ़ जायेगा किन्तु ऐसा नहीं हुआ। मैंने नैट डिटरजेन्ट पाउडर का प्रयोग करना शुरू किया। नैट की धुलाई बढ़िया से बढ़िया क्वालिटी के डिटरजेन्ट पाउडर के बराबर है। पर इसकी क़ीमत उससे कम है क्योंकि नैट पॉली पैक में उपलब्ध है। क़ीमत केवल पाउडर की ही है—कार्डबोर्ड के बक्सों का ख़र्च नहीं।

नैट डिटरजेन्ट पाउडर
क्वालिटी के अनुसार क़ीमत बहुत कम

क्वालिटी का चिन्ह

कुसुम प्रोडक्ट्स लिमिटेड, कलकत्ता–७०० ००१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नगरों–सिडनी, एडेलेड, मेलबोर्न, ब्रिस्वेन पर्थ आदि–में रहता है। शेष भाग में तो बस भेड़ों के, गाय-बैलों के बाड़े अथवा गेहूं के फार्म दिखाई पड़ेंगे। मध्य आस्ट्रेलिया का भाग रेगिस्तानी अवश्य है; किंतु खनिज पदार्थों के भंडारों से भरपूर है। जनसंख्या की कमी के कारण यहां मजदूर बहुत महंगे हैं। अधिकांश छात्र-छात्राएं छुट्टियों के दिनों में कार्य करते हैं और एक दिन में पंद्रह से बीस आस्ट्रेलियाई डालर (डेढ़ सौ से दो सौ रुपये) तक आसानी से कमा लेते हैं। होस्टल में बैरे का काम भी वहां की छात्राएं करती हैं और एक घंटे में तीन-चार डालर कमा लेती हैं।

मोटर-कार इनके लिए अनिवार्य आवश्यकताओं में से है। उसके बिना इन्हें सैर-सपाटे के लिए बाहर निकलने में असुविधा होती है; और सैर-सपाटा इनके जीवन का अनिवार्य अंग है। सप्ताह में पांच दिन ये लोग सुबह से शाम तक मशीन की तरह काम करेंगे और अंतिम दो दिनों में अपना परिवार समेटकर शहर से बाहर भागते हुए मिलेंगे–जंगलों की ओर, पशु-विहारों की ओर, नदी या झील या सागरतट की ओर। किसलिए? प्रकृति से संपर्क रखने के लिए, पशु-पक्षियों के बीच नितांत अनौपचारिक जीवन जीने के लिए, लगभग या पूरी तरह निर्वसन होकर धूप सेंकने के लिए, बर्फ में फिसलने के लिए, अथवा ऐसा कुछ भी करने के लिए जिसमें अनुशासन के बजाय स्वैर व्यवहार चलता हो।

छुट्टियां घर से बाहर बिताने की प्रवृत्ति आस्ट्रेलियाइयों में इतनी व्यापक है कि यह अपने आपमें एक उद्योग बन गया है। आप किसी से भी बात करें, वह अपने यहां पाये जाने वाले पेड़ों, पशु-पक्षियों एवं नैसर्गिक सौंदर्य से भरपूर स्थलों की विचित्रताएं गिनाने लगेगा।

मुझे इस पर आश्चर्य हुआ था कि वे लोग कंगारू से अधिक 'कोआला' को अपने देश का प्रतिनिधि-पशु मानते हैं। पेड़ों पर ही रहने वाले इस छोटे-से रोएंदार भालू के प्रति उनकी यह ममता कुछ अंशों तक तर्क-संगत भी है। 'कोआला' विश्व का ऐसा एकमात्र चौपाया जीव है, जो यूकलिप्स की पत्तियों पर हीं पलता है और जीवन-भर बिना एक बूंद पानी बाहर से पिये ही जीवित रहता है। इस दृष्टि से यह आस्ट्रेलिया की शुष्क जलवायु का सही प्रतिनिधित्व करता है।

इसीलिए जब स्वदेश लौटते समय मैंने यहां के स्मृतिस्वरूप कोई उपहार लेना चाहा, तो डेविड ने मुझसे बिना पूछे ही एक कोआला भालू खरीदकर भेंट कर दिया था। अपने मूल आकार से हुबहू मेल खाता, और अपनी ही खाल में मढ़ा हुआ यह मृत जीव आज भी मुझे आस्ट्रेलिया के वन क्षेत्रों में बिताये गये अवकाश के उन दिनों की याद दिलाता है, जहां 'कोआला' पेड़ों की डाल पर फुदका करते थे।

–नेशनल पार्क, दुधवा, लखीमपुर-
खीरी, उ. प्र.

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

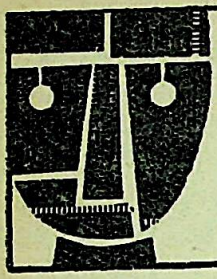

• मित्र

कुछ इधर से कुछ उधर से

'सवेरा' होटल के मालिक श्री गजानन का खून हो गया। पुलिस ने शक में लक्ष्मण, लालजी, भीकाभाई, कालू और शंकर को गिरफ्तार कर लिया। थानेदार को पांचों ने तीन-तीन बातें बतायीं। थानेदार यह समझ गया कि पांचों में से प्रत्येक तीन बातों में दो सही और एक गलत बोल रहा है। थानेदार जरा मंद बुद्धि का है। क्या आप उसकी सहायता कर सकते हैं कि किसकी कौन-सी बात झूठी है? हां, यह बताना भी नहीं भूलियेगा कि आप नतीजे पर पहुंचे कैसे, नहीं तो थानेदार परेशानी में पड़ जायेगा।

लक्ष्मण—'मैंने गजानन का खून नहीं किया। मैंने कभी भी किसी का खून नहीं किया। कालू ने खून किया है!'

लालजी—'मैंने गजानन का खून नहीं किया। मेरे पास कोई चाकू नहीं है। बाकी सबके पास है!'

भीकाभाई—'मुझे खून के बारे में कोई जानकारी नहीं। मैं शंकर से कभी नहीं मिला। शंकर दोषी है!'

कालू—'मैं बेकसूर हूं। शंकर दोषी है। लक्ष्मण ने मेरे बारे में झूठी बात कही है!'

शंकर—'खून हुआ, इसकी जानकारी मुझे नहीं है। लालजी खूनी है। मैं सच बोल रहा हूं, इसकी गवाही भीका दे सकता है। मैं भीकाभाई को दस साल से जानता हूं।'

२. नीचे दिये गये खेल से आप किसी दोस्त के जन्म का महीना और उम्र बता सकते हैं?

दोस्त को महीने की संख्या को दुगुना करके उसमें ५ जोड़ने को कहें और फिर परिणाम को ५० से गुणा करने को। गुणनफल में से साल में जितने दिन होते हैं उतने यानी ३६५ दिन घटाने को कहें। शेष में उससे अपनी उम्र जोड़ने को कहें और उसके बाद उसमें ११५ और जोड़ने को कहें। इसके बाद जो उत्तर आता है आप उससे अपने दोस्त की उम्र और जन्म का महीना बता सकते हैं।

उदाहरण के लिए आपके दोस्त की उम्र १६ साल है और जुलाई के महीने में जन्म हुआ है, तो उसे इस प्रकार करना होगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७
× २
१४
+ ५
१९
× ५०
९५०
— ३६५
५८५
+ १६
६०१
११५
७१६

अब इसमें बायीं तरफ की संख्या (७) महीना बताती है और दायीं तरफ की (१६) उम्र।

३. रामलाल ईंटों के व्यापारी हैं। उनके पास एक तराजू है। खाली बैठे उन्हें यह खयाल आया कि एक ईंट का वजन जानना चाहिये। उनके पास ७५० ग्राम की एक वजनी ईंट भी थी, जो दूसरी ईंटों से अलग थी। उन्होंने तराजू से ईंट का वजन निकालने की कोशिश की। स्थिति इस प्रकार थी :

यानी ईंट का वजन पौन किलो और पौनी ईंट के बराबर आया। बिना कागज-पेंसिल के क्या आप झटपट ईंट का वजन बता सकते हैं?

अगस्त अंक का उत्तर

१. दलों की सीट-संख्या जनता-९०, कांग्रेस-५५ और निर्दलीय-१५।

२. १४ सेकेंड

३.

	वेदी		चंद्रशेखर	
	विकेट	रन	विकेट	रन
पहली पारी-	२८	६०	२८	६०
दूसरी पारी-	४	३६	१	२७
कुल—	३२	९६	२९	८७
औसत -	३ रन प्रति विकेट		३ रन प्रति विकेट	

* एक बार अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक जी. के. चेस्टरटन से किसी ने पूछा—'क्या कोई आदमी केवल जेब में हाथ डालकर घूमते रहने से अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत कर सकता है?' 'अवश्य' सहज मुस्कान के साथ चेस्टरटन ने उत्तर दिया—'पर अपनी जेब में नहीं, दूसरों की जेब में।'

—सत्यनारायण नाटे

* सर्कस का एक रिंग-मास्टर रात को शो खत्म होने के बहुत देर बाद भी अपने तंबू में नहीं पहुंचा, तो उसकी पत्नी उसे ढूंढ़ने निकली। काफी खोज के बाद उसने पति को एक बंद कठघरे में शेरों के साथ आराम से सोते पाया। यह देख गुस्से से आग बबूला हो वह चीखी—'अच्छा! मुझसे डरकर यहां छिपे हुए हो?.....कायर!'

—जोजफ आर्थर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

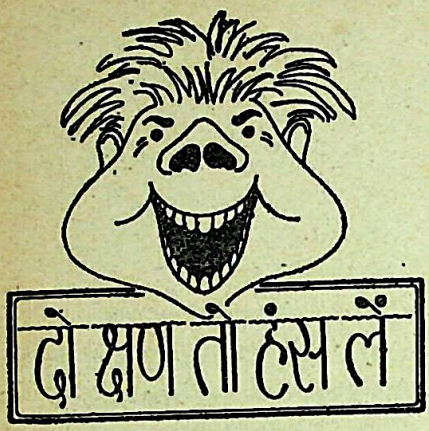

विशाख दत्त

पत्नी ने बड़े नाज-नखरे के साथ पति से कहा—'अगले रविवार को हमारे विवाह की पचीसवीं बरसगांठ है। आपका क्या सुझाव है कि उसे किस रूप में मनायें?'

'दोनों पांच मिनट का मौन रखें तो कैसा रहे?' पति ने सुझाव दिया।

०

श्री 'क' का वजन पचीस पौंड बढ़ गया था और उनकी कमर के घेरे में पांच इंच विकास हो गया था। वे अपने डाक्टर के पास पहुंचे। डाक्टर ने उन्हें क्या-क्या नहीं खाना है इसकी लंबी सूची दी और फिर नीली गोलियों की एक शीशी देते हुए कहा—'ये गोलियां खानी नहीं हैं। प्रतिदिन इन्हें दस बार फर्श पर बिखेर दें और झुक-कर हाथों से उठायें।'

०

कहते हैं, साम्यवादी देश अल्बानिया में अगर कोई मजदूर पांच मिनट पहले कारखाने पहुंच जाये तो उस पर आरोप लगाया जाता है कि निश्चय ही वह तोड़-फोड़ करने समय से पहले चला आया। अगर वह पांच मिनट विलंब से पहुंचे तो आरोप लगाया जाता है कि वह समाजवादी राज्य का विरोधी है और उत्पादन-कार्य में बाधा पहुंचाना चाहता है। और यदि वह ठीक समय पर पहुंचे?..... तो उससे जवाब तलब किया जाता है कि तुम्हारे पास घड़ी कहां से आयी?

०

आपकी इच्छाशक्ति कितनी मजबूत है, इसे जांचने की एक निश्चित युक्ति यह है कि श्रीमतीजी जब खरीदारी से लौटें तो उनसे यह पूछने से अपने को रोकने की चेष्टा करें कि कितना रुपया खर्च कर आयीं।

०

एक बंबइया पिता ने 'पुत्री' शब्द की परिभाषा की है—'मिनी स्कर्ट और मंहगी खर्च'।

०

नर्सरी स्कूल में चित्रकला के पीरियड के अंत में सब बच्चे 'बहनजी' को स्लेट पर अपने बनाये चित्र दिखा रहे थे। गट्टू ने खाली स्लेट आगे कर दी और बहनजी को बताया कि उसने नाव की तस्वीर बनायी है।

'तो कहां गयी नाव?'

'डूब गयी।'

०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

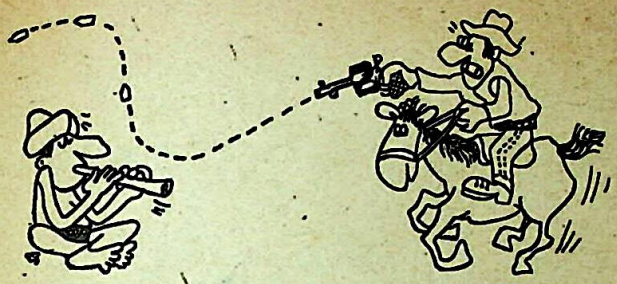

'क्या आपका अपनी पत्नी से कभी मत-भेद नहीं होता ?' सुखी पति से पत्रकार ने पूछा।

'होता है, अक्सर होता है ..... मगर मैं पत्नी को बताता नहीं हूं।' सुखी पति ने उत्तर दिया।

०

ताजे आंकड़े—'सहारनपुर में हाल में किये गये एक सर्वेक्षण से पता चला कि शहर के दंपतियों में से आधे पुरुष हैं।'

०

फिल्म-निर्देशक ने हीरो के 'डबल' को जीने से छलांग मारने से झिझकते देखकर स्वयं कूदकर दिखाया और फर्श पर लेटे-लेटे कहा—'अब समझ गये न कैसे कूदना है ..... अब जीने पर चढ़ो और छलांग मारो। मगर उससे पहले जरा किसी डाक्टर को फोन कर दो, मेरी पसली टूट गयी है।'

०

दो नवविवाहिता सहेलियां एक दूसरे के पति के बारे में पूछताछ कर रही थीं। एक ने बताया—'मेरे पति फूलों के बड़े प्रेमी हैं। अक्सर स्वप्न में बड़बड़ाते रहते हैं—केतकी! .....केतकी!'

०

पिता : तीन साल से मैट्रिक में फेल हो रहे हो! तुम्हारी पढ़ाई पर इतना पैसा खर्चने का क्या फायदा हुआ ?

पुत्र : फायदा तो हुआ है, पिताजी। अब अम्मा दिन-भर मेरी प्रतिभाशालिता की डींग नहीं हांका करतीं।

०

पिताजी समझा रहे थे—'रमेश, तुम समय बहुत बेकार करते हो। समय धन है—टाइम इज़ मनी।'

रमेश ने उत्तर दिया—'समय अगर धन है, तो वह नये पैसे जैसा कोई छोटा-सा सिक्का होगा।'

०

अध्यापिकाजी छात्राओं को कक्षा का ग्रुप फोटो खरीदने के लिए प्रोत्साहित कर रही थीं। बोलीं—'वर्षों बाद इसे देखकर याद कर सकोगी ..... यह कमला है, अब दो बच्चों की मां है .....वह सिंधु है, अब अमरीका में बस गयी है ..... यह विद्या है, इसका पति बहुत बड़ा व्यापारी है.....'

वे आगे बोलें इससे पहले ही एक छात्रा बोल उठी—'ये हमारी अध्यापिकाजी हैं, बेचारी पांच साल पहले भगवान को प्यारी हो गयीं।'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

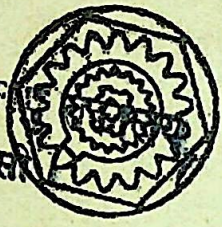

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाने के लिए विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां 'ब्रोच' उत्पादन परमावश्यक होता है। डॅगर-फोर्स्ट टूल लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये 'ब्रोच' से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.,
पहला पोखरण रास्ता,
थाना (बंबई)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जियाजी

आपके प्रिय परिवार के लिये अनुपम परिधान

...ती आपके लिए
...ने 'ड्रीम' ब्लाउसेस और
...वनिंग कॉटन फोब्रेक्स...
...ती टिप टनी और प्यारे बच्चों की
...ने के लिए बेहतरीन मिक्स के
...प्रिंट्स। सभी के लिए
...नुन रंगों और नयी निराली
...टों में अनेक प्रकार के
...नों बूनिंग, प्रिंटिंग और
...न डिजाइन।

...वाणीराज कॉटन
...ल लिमिटेड
...कार
...न (प.ब.)

...-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नील गगन में उड़ते पंछी

सुंदर सा नीला आसमान...
हवा में उड़ते ये पंछी.
इनकी ही तरह हम भी आज़ाद
इन मुलायम साड़ियों में...
जिनके रंग और डिज़ाइन
कुदरत के हसीन रंगों से मेल खाते
और जिनकी खूबसूरती
हवा में उड़ते हुए इन पंछियों से भी
ज़्यादा खूबसूरत है.

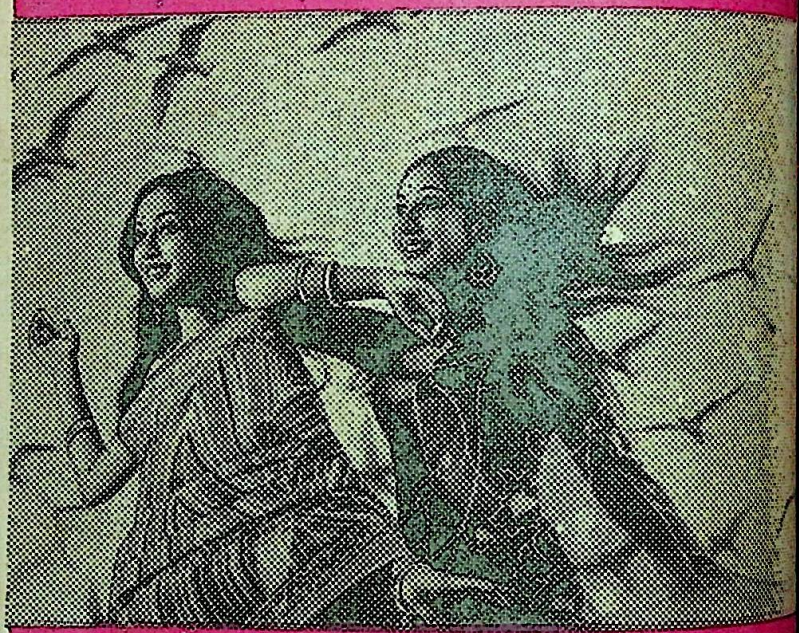

इनकी साड़ियां...जी हां, मफतलाल की

मफतलाल कपड़ों के विविध रूप

सूटिंग्स • शर्टिंग्स • साड़ियां
• ड्रेस मॅटीरियल्स • शर्ट्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

नवनीत

हिंदी डाइजेस्ट

दिसंबर १९७५

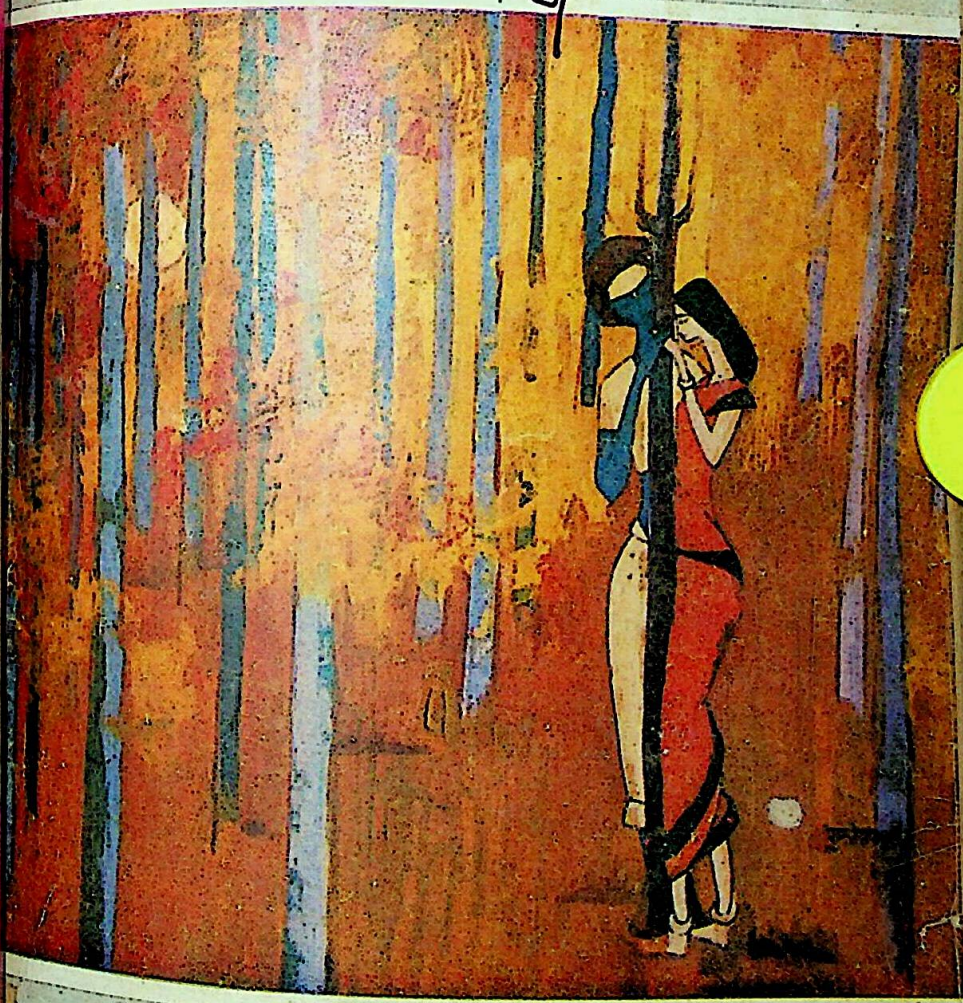

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल्य रु. २--५०

नयी उमंग, नयी तरंग

सेन्चुरी के सूती कपड़ों के संग

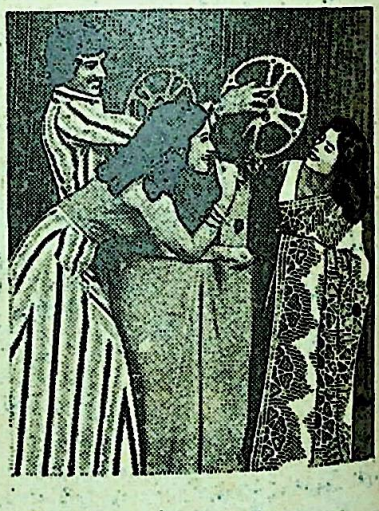

सेन्चुरी – १००% सूती कपड़ों के लिए।

दि सेन्चुरी स्पि. एण्ड मैन्यु.
कं. लि. बम्बई-४०० ०२५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मत समझिए कि यह कोई अचार की मामूली बरणी है यह तो बेडेकर के सर्वोत्तम उत्पादनों में से एक है

सुगन्ध और सुस्वाद के लिए सुपरिचित यह उत्पादन ६९ वर्षों के लम्बे अरसे से भारत के घर-घर में मशहूर है

सुरुचिपूर्ण महिलाएँ तो बेडेकर उत्पादनों की तारीफ़ करते नहीं थकतीं। बेडेकर के कई उत्पादन हैं जैसे अचार, मसाले, पापड़ व चटनी जो अपनी विशुद्धता और उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं। बेडेकर के सभी

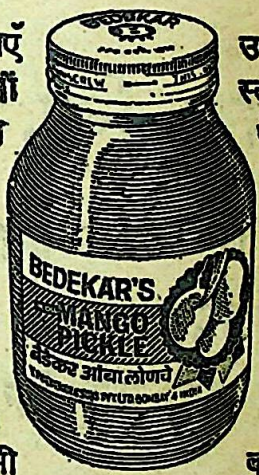

उत्पादन अन्तराष्ट्रीय स्तर की लीक-प्रूफ़ पैकेजिंग में मिलते हैं। बेडेकर के उँचे दर्जे के उत्पादन यानी आपकी पहली पसन्द।

व्यापारिक पूछताछ :
व्ही. पी. बेडेकर एण्ड सन्स प्रा. लि.
बम्बई-४ (भारत)

बेडेकर

बेडेकर अचार • बेडेकर मसाले • बेडेकर पापड़ • बेडेकर चटनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०,००० रु० = ७७,६१६ रु०

अपनी बचत ८ गुना कीजिए !

१०,००० रु० २१ वर्ष में

७७,६१६ रु० हो जाते हैं

खरीदिए [illegible]

राष्ट्रीय बचत पत्र [illegible]

पंचम निर्गम

अधिकतम ब्याज कमाइये
इससे अधिक ब्याज
आपको कहीं नहीं मिलता

राष्ट्रीय बचत संगठन

पोस्ट बाक्स नं० ९६, नागपुर

davp 75/229

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एयर-इंडिया प्रस्तुत करती है सप्ताह में पैंसठ उड़ानें—५ महाद्वीपों के लिए.

यूरोप

यूरोप के लिए सप्ताह में १३ उड़ानें
लंदन! नौ ७४७ विमानों को आपका इंतजार है. इनमें से तीन, शुक्रवार, शनिवार और मंगलवार को, तेज गतिवाले हैं. अन्य छह में आपको रोम, पेरिस या फ्रैंकफर्ट हो कर जाने की सुविधा मिलती है. इसके अलावा दो ७०७ विमान जिनेवा हो कर. मॉस्को! दो ७०७ विमान.

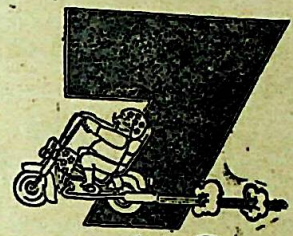

न्यूयॉर्क

न्यू यॉर्क के लिए सप्ताह में ७ उड़ानें
हर दिन ७४७ विमान की एक उड़ान. मध्य पूर्व और यूरोप होते हुए. हमारे विशेष एक्सकर्शन फेयर के अन्तर्गत न्यू यॉर्क जा कर वापस लौटने का किराया आम तौर पर लगनेवाले एकतरफा किराये से भी कम पड़ता है.

मध्य पूर्व

मध्य पूर्व के लिए सप्ताह में २२ उड़ानें
बेरूत! पाँच ७४७ विमान उड़ान भरने को तैयार. कुवैत! चार ७४७ तथा दो ७०७ विमानों में से आप मनपसंद चुनाव कर सकते हैं. दुबई के लिए चार ७०७ विमानों में से कोईसा भी चुनिए. बहरैन तथा मस्कत के लिए तीन उड़ानें तथा आबू धाबी, कैरो और तेहरान में से प्रत्येक के लिए दो उड़ानें. इसके अलावा अदन, दौहा या दहरान में से प्रत्येक के लिए एक ७०७ विमान.

साथ ही हर सप्ताह:
६ उड़ानें
जापान के लिए हाँग कौंग हो कर—
४ टोकियो के लिए
२ ओसाका के लिए. १० उड़ानें
दक्षिण पूर्व एशिया के लिए—
६ बैंकॉक के लिए और
४ सिंगापुर के लिए.
२ उड़ानें
ऑस्ट्रेलिया के लिए
३ उड़ानें
पूर्व अफ्रीका के लिए
२ उड़ानें
मॉरिशस के लिए.

एयर-इंडिया
आपकी मनपसंद एयरलाइन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिनव

हिन्द पॉकेट बुक्स

इनामी प्रतियोगिता में भाग लेकर बड़े-बड़े इनाम प्राप्त कीजिए

पहला इनाम : **मोटर साईकल**
दूसरा इनाम : **रेफ्रीजरेटर**
तीसरा इनाम : **टेलिविज़न**
चौथा इनाम : **रिकार्ड प्लेयर**

पांचवां स्थान पाने वाले बीस व्यक्तियों को हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा संचालित घरेलू लाइब्रेरी योजना का सदस्य बनाकर एक वर्ष के लिए प्रत्येक मास 12 रुपये मूल्य की पुस्तकें मुफ्त भेंट की जाएंगी।

आपको क्या करना है?

- सामने के पृष्ठ पर दिए गए छः प्रश्नों के उत्तर देते समय कोष्ठकों □ में ✓ का चिह्न लगाएं।
- केवल दस शब्दों में यह कथन या स्लोगन लिखें कि हिन्द पॉकेट बुक्स आपको क्यों पसन्द हैं।

नियम

1. प्रत्येक प्रतियोगी को हिन्द पॉकेट बुक्स के किसी भी विक्रेता से कोई-सी तीन पुस्तकें खरीदकर कैशमीमो अपने हल के साथ अवश्य भेजना होगा।
2. एक से अधिक हल भी भेजे जा सकते हैं, परन्तु हर हल के साथ तीन हिन्द पॉकेट बुक्स की कैशमीमो अवश्य लगी होनी चाहिए अन्यथा हल पर विचार नहीं किया जाएगा।
3. घरेलू लाइब्रेरी योजना के सदस्य भी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं, परन्तु उन्हें अपनी मासिक किस्त की पुस्तकों के अतिरिक्त तीन पुस्तकें और मंगवानी होंगी।
4. इस प्रतियोगिता में हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि० के कार्यकर्ता भाग नहीं ले सकते।
5. प्रतियोगिता का निर्णय संस्था द्वारा नियुक्त जजों का पेनल करेगा जो सर्वमान्य होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हल भेजने की अन्तिम तारीख 15 दिसम्बर, 1975

अपना हल भेजने के लिए प्रतियोगिता कूपन यहां से काटें या अपने नगर के पुस्तक-विक्रेता से प्राप्त करें।

प्रतियोगिता कूपन

1. हिन्द पॉकेट बुक्स के संबंध में केवल दस शब्दों में यह कथन (स्लोगन) लिखिए कि हिन्द पॉकेट बुक्स आपको क्यों पसन्द हैं। क्योंकि.....
2. हिन्द पॉकेट बुक्स की स्थापना कब हुई थी? ☐ 1957 में ☐ 1958 में ☐ 1960 में
3. हिन्द पॉकेट बुक्स की ओर से प्रकाशित सबसे पहली पुस्तक कौन-सी थी? ☐ गीतांजलि ☐ अमर वाणी ☐ आशा
4. हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा यह विज्ञापन छपने तक कुल कितनी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं? ☐ 850 से 1150 ☐ 1150 से 1800 ☐ 1800 से 2500
5. हिन्द पॉकेट बुक्स किन-किन भाषाओं में प्रकाशित होती हैं? ☐ हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐ पंजाबी ☐ बंगाली ☐ गुजराती ☐ उर्दू
6. क्या हिन्द पॉकेट बुक्स की ओर से सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का साहित्य प्रतिमास प्रकाशित होता है? ☐ हां ☐ नहीं

यदि बरेलू लाइब्रेरी योजना के सदस्य हैं तो सदस्यता-नम्बर लिखें.....

आपका नाम.....

पता.....

इनामों की घोषणा फरवरी के अंतिम सप्ताह के 'धर्मयुग' में की जाएगी।

कैशमीमो सहित अपने हल इस पते पर भेजें—

प्रतियोगिता

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा. लिमिटिड

जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली- 110032

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर के मस्सों को बिना ऑपरेशन सुखाने की अनोखी दवा

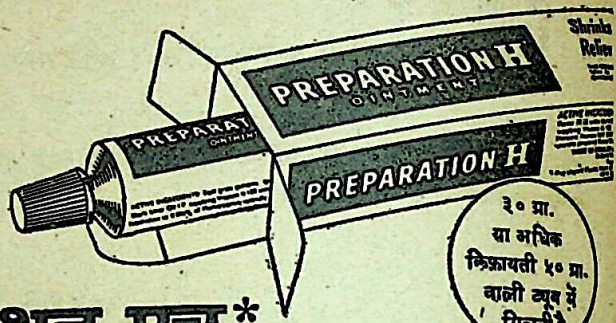

प्रेपरेशन एच*

अमरीकी डाक्टरों की आज़माई हुई

- इससे खुजली मिनटों में रुक जाती है
- दर्द से फ़ौरन राहत मिलती है
- यह बवासीर के बहुत ही बिगड़े रोगों को छोड़ कर, बवासीर के मस्सों को बिना ऑपरेशन सुखाने में मदद देती है
- इससे चिकनाहट मिलती है और शौच भी कष्टरहित होता है

मुफ़्त ! बवासीर के बारे में जानकारी देनेवाली मुफ़्त पुस्तिका के लिए (लिफ़ाफ़े में २५ पैसे के डाक-टिकट साथ में भेजकर) आज ही इस पते पर लिखिए : डिपार्टमेंट PH-83 पो. ऑ. बॉक्स १०१३३, बम्बई-४०० ००१

*Regd. User of TM : Geoffrey Manners & Co. Ltd.
743 PH-92 Hin

---

४१ रु. का आकर्षक

वैदिक साहित्य व कवर मुफ्त

आज ही अपने परिवार में लाएं : प्रभु की अमर वाणी

'चारों वेदों का हिन्दी भाष्य'

लागत रु. ३५०, मूल्य रु. २८४, किन्तु घर-घर में धर्मग्रन्थ पहुंचाने के लिए ३१ दिसम्बर १९७५ तक मूल्य केवल रु. २११ । उपहार साथ में । उपहार थोड़े हैं ! शीघ्रता करें ! आज ही मंगाएं ।

१/४ धन अग्रिम भेजें – रेलवे स्टेशन लिखें ।

पंडिता राकेशरानी मंत्री, दयानन्द-संस्थान, १५९७, हरध्यानसिंह मार्ग (निकट ३१, नाई वाला) करोलबाग, नई दिल्ली-५, दूरभाष : ५६६६३१

DAM/75

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या आपने इसकी व्यवस्था कर ली है ?
आपने बच्चोंकी उच्च शिक्षाके
खर्चका आयोजन कर लिया है ?

जब आपके बच्चें उच्च शिक्षा पानेके योग्य हो जायेंगे तब उनकी शिक्षाका खर्च आप उठा सकेंगे !
देना बैंक में बचत खाता या मीयादी जमा खाता खोलकर अभीसे नियमित बचत कीजिये।

देना बैंककी अन्य ६ बचत योजनाएं-

नाबालिग बचत योजना • आवर्ती जमा योजना • मासिक बचत व वार्षिकी योजना • बहुप्रयोजनीय जमा योजना • नकदी प्रमाणपत्र बीमा संपद्ध बचत जमा योजना

देना बैंक

(गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया अंडरटेकिंग)
हेड ऑफिस : हॉर्निमेन सर्किल,
बम्बई ४००००१.

Ratan Batra/DB/HI238-A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ता बचपन बलवान बने-
इनक्रिमिन* से

बचपन के पहले २ वर्ष, मुन्ने के लिये बढ़ने के दिन हैं। इन दिनों उसका शरीर फूल की तरह खिलता है— विकसित होता है, उसे इनक्रिमिन ड्रॉप्स जरूर दीजिये। फिर देखिये, खाने से आनाकानी के बजाये इसकी भूख कैसे जाग उठती है—खाया पिया तन को लगने लगता है। लाभदायक विटामिनों से परिपूर्ण इनक्रिमिन में विशेष अमीनो एसिड, लायसिन भी शामिल है— जो आहार के सभी पोषक तत्वों को ग्रहण करने में सहायता करता है।

वाहवाह! क्या कहनी!
घपाघप वो खाये-
झटपट बढ़ता जाये।

ड्राप्स: २ महीने से २ साल के बच्चों के लिये
सिरप: १४ साल तक के बच्चों के लिये

इनक्रिमिन* टॉनिक
अधिक आहार से अधिक बढ़ाये-
खाया पिया अंग लगाये

डॉक्टरों का विश्वासपात्र नाम — Lederle सायनामिड इन्डिया लिमिटेड का एक विभाग
*अमेरीकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

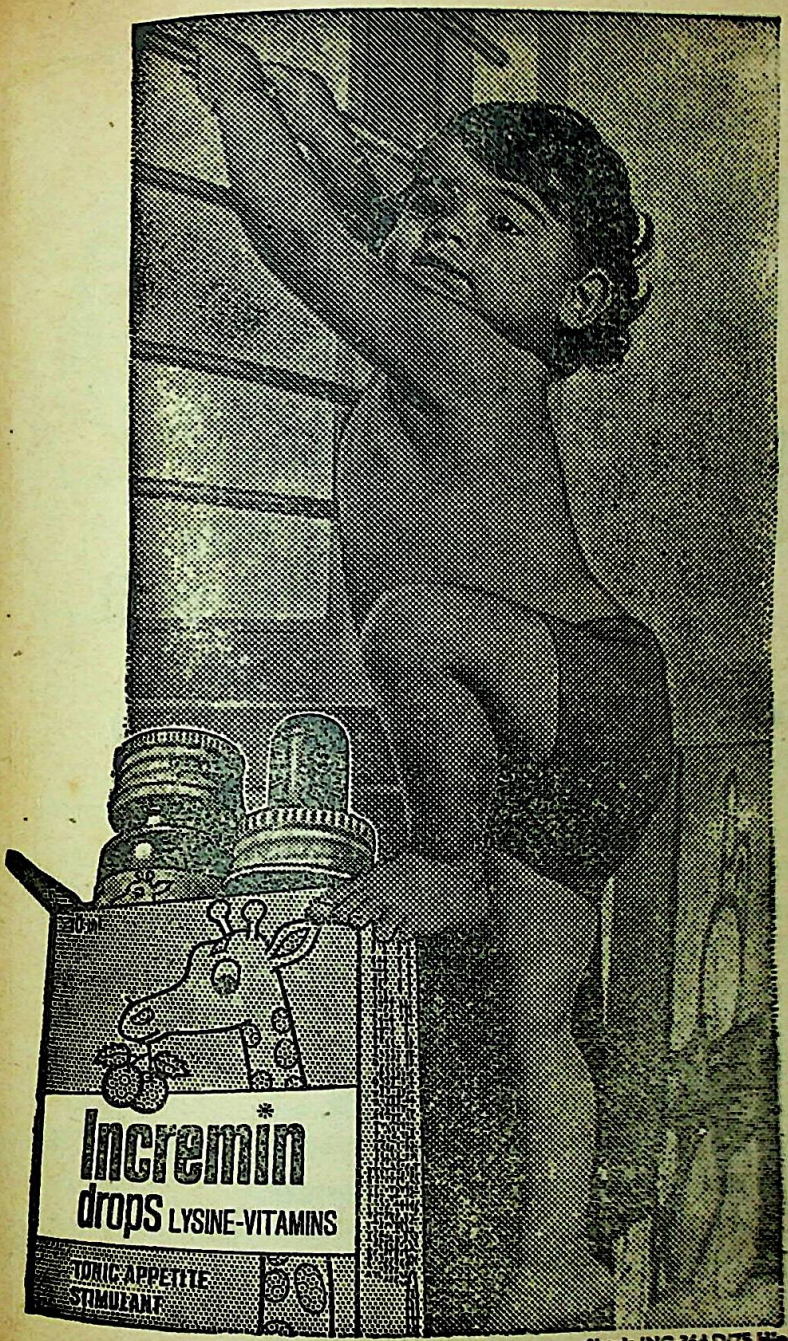

Sista's INC-344 D/75 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महिलायें सदियों से खाना बनाती आ रही हैं और अब महिलायें सदियों तक

देवीदयाल प्रेशर कुकर में स्वादिष्ट भोजन बनाती रहेंगी

विशिष्टतायें :

गैस्केट अधिक चौड़ा है और इसकी गोलाई कुकर के ढक्कन के समान है। इससे भाप रिसने की कोई सम्भावना नहीं।

वाल्वपिन स्टेनलैस स्टील के बने होने के कारण ज़ंग से बचे रहते हैं।

फ़ैल डाई कास्ट होने के कारण सुन्दर, मज़बूत तथा टिकाऊ होते हैं।

फैल में ब्रास नट चूड़ियों को मज़बूत पकड़ देते हैं। (पेटैन्ट विचाराधीन)

कुकर ISI द्वारा निर्धारित आदेशों के अनुसार टैस्ट किया गया है।

निर्माता
हिन्दुस्तान चेन्स प्राईवेट लिमिटेड
गाज़ियाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

वर्ष २४ : अंक १२

* इस अंक में *

दिसंबर १९७५

पत्र-वृष्टि	१३	संपादक की डाक से
पचास वर्ष बाद की दुनिया	१८	आंद्रेई सखारोव
स्पेन : मरणासन्न अवस्था	२६	गिरिजाकुमार
गुरु का प्रशिक्षण	३३	इंदरीस शाह
जीवन-तीर्थ	३४	सुबीर
महावीर की मांगलिक विरासत	३६	पंडित सुखलाल
माचिस वाली लड़की	४१	हान्स क्रिश्चन एंडरसन
कालपात्र के लिए पुस्तकें	४४	....
प्रिय मित्र की याद	४८	एम. पी. गांधी
वल्लभभाई	५३	रामनाथ सुमन
पश्चिमी संस्कृति की आत्मा रुग्ण है	५६	स्वर्गीय आर्नाल्ड टायन्बी
विज्ञान-बिंदु	६१	केजिता
कविताएं	६४	कार्ल सैंडबर्ग, सेठिया, जाफरी
इंसाफ कहां है (उर्दू हास्य)	६५	कन्हैयालाल कपूर
कारागार में जनमा साहित्य	६८	विष्णु प्रभाकर
नारी-प्रगति : मील के पत्थर	७५	....
धिक्कार महिला-वर्ष !	७९	जर्मेन ग्रियर

संस्थापक	संपादक	सहसंपादक	व्यापार-व्यवस्थापक
स्व. श्रीगोपाल नेवटिया	नारायण दत्त	सुरेश सिन्हा	महेंद्र महेता
प्रबंध-संचालक	उपसंपादक	उपसंपादक	प्रबंधक : सोहनराज पारेख
हरिप्रसाद नेवटिया	गिरिजाशंकर त्रिवेदी	डा. विष्णु भटनागर	सज्जा : ठाकोर राणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफलता : कुछ सूत्र	८३	विशाखदत्त
नीला निशान (सिंधी कहानी)	८४	ताज बलोच
शाही इलाज	८७	अखिल
अफसरों की उदारता (मराठी हास्य)	८८	रमेश मंत्री
बेतार से बात	९३	वंदना मिश्र
अगर आप दिल के दौरे से उठे हों	९४	वैडिम जाइत्सेव
स्मृति के अंकुर	९७	हंसा गर्ग, जगदीश गौड़
हमारे दूरस्थ सगे बांधव	१००	कृष्णकुमार गुप्त
सृजन के अनुभव	१०४	के. एच. आरा
स्वप्न-संयोग (कविता)	१०८	रामावतार चेतन
३३३ वर्ष से जलमग्न जहाज	१०९	नरेंद्र छाबड़ा
रिश्ते (हिंदी कहानी)	११३	नरेंद्र चतुर्वेदी
दो सांड, दो योद्धा	१२०	हडसन स्ट्रोड
जिलास की जेल-डायरी	१२५	मिलोवान जिलास
कितने जुझार हैं आप ?	१३२	के. यू. ऊर्मि
हंसी के बुलबुले	१४१	सत्यनारायण नाटे
अपनी-अपनी दृष्टि	१४५	उपाध्याय अमरमुनि
कुछ इधर से, कुछ उधर से	१४६	मित्र
ग्रंथ-लोक	१४८	शर्मा, पांडेय, भटनागर
उर्वर मस्तिष्क का रहस्य	१५४	बलवीर
कितनी जमीन, कितने शेयर	१५७	रवींद्र जैन

★

आवरण-चित्र : राम जैसवाल

चित्रसज्जा : पिकासो, आरा, लक्ष्मण, लूरी, लैंगहैमर, मारियो, ओके, गिलमोर, पा
आचरेकर, हेब्बार, अंजू मेहरा, भटनागर, राणा, चव्हाण, जोजफ आर्थर।

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत (हिंदी डाइजेस्ट), ३४१ तारदेव, बंबई-
फोन : ३७२८४७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, अशीष बिल्डि
३३५ वेलासिस रोड, ताडदेव, बंबई-३४. फोन : ३९२८

चंदे की दरें : (भारत में) एक वर्ष : २४ रु; दो वर्ष : ४६ रु; तीन वर्ष : ६६
विदेशों में : (समुद्री डाक से) एक वर्ष : ६० रु.; दो वर्ष : १०५ रु.; तीन वर्ष : १५०
(हवाई डाक से) एक वर्ष : १२० रु.; दो वर्ष : २१० रु.; तीन वर्ष : ३००
भारत में नवनीत का आजीवन सदस्यता-शुल्क ४०० रुपये है।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४ के लि
प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बंबई-४ में मुद्रि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

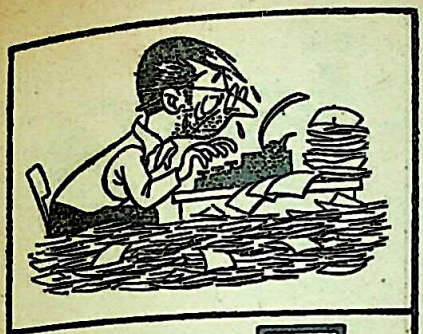

पत्र-वृष्टि

दीपावली अंक बहुत प्यारा लगा। कालपात्र वाले प्रश्न के उत्तर मजेदार रहे और साथ ही उससे गोदान, बाणभट्ट की आत्मकथा, झूठा सच, अंधायुग-जैसी रचनाओं के कालजयी होने की पुष्टि भी हुई। नवनीत माह-दर-माह अनोखी स्निग्धता पा रहा है। बधाई! —शेरजंग गर्ग, नयी दिल्ली

ooo

दीपावली विशेषांक खूब सुंदर और समृद्ध बन पड़ा है। पाठ्य सामग्री का वैविध्य और सुरुचिपूर्ण संचयन मन को आकृष्ट करता है। नवनीत के दिवंगत मालिक श्रीयुत श्रीगोपालजी नेवटिया के शब्दचित्र से उनकी बहुमुखी रसिकता, महानुभावता और अभिजातता का सौरभ बिखर रहा है। श्री रामनाथजी सुमन द्वारा अंकित सरदार वल्लभभाई का चरित्रांकन खूब उठावदार है। इसी प्रकार शिवानी का शब्द चित्र 'मरण सागर पारे' की संवेदनशीलता अंतर को आर्द्र बना देती है। 'इतिहास के कुछ राजनैतिक विवाह' लेख भी बड़ा दिलचस्प है। सुरुचिपूर्ण संपादन के लिए बधाई।

अक्तूबर अंक में शेर-विषयक दीर्घ लेख खूब अच्छा बन पड़ा था। बड़ा खोजपूर्ण है। इसी तरह पं. झावरमल्ल शर्मा और पं. कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के शब्दचित्र भी प्रभावक और प्रेरक थे।

—शंकरदेव विद्यालंकार, पोरबंदर

ooo

जब भी रेल्वे बुक-स्टाल पर पत्रिका खरीदने जाता हूं, मेरे अभ्यस्त हाथ सर्वप्रथम नवनीत की ओर ही बढ़ जाते हैं। इस बार मधुबनी-शैली के मुखपृष्ठ से युक्त नवनीत पत्रिकाओं की भीड़ में अलग ही दिख रहा था। इस दीपावली-विशेषांक की हर रचना मन की गहराई में पूरी तरह उतर गयी। लेकिन जिन रचनाओं की याद अभी भी मन को गुदगुदा रही है, वे हैं— 'एक याद' (हिंदी कहानी), 'फूटा मटका' (उर्दू कहानी) तथा 'मरण-सागर पारे।'

लेकिन विशेषांक की सर्वाधिक ज्ञानवर्धक रचना 'कालपात्र के लिए पुस्तकें' है। आशा है, दूसरी किस्त भी इसी प्रकार रोचक रहेगी। प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक विषयों पर महत्त्वपूर्ण सामग्री बहुत ही कम उपलब्ध हो पाती है। इस संदर्भ में 'कलिंग-चक्रवर्ती खारवेल' लेख बहुत ही ज्ञानवर्धक रहा।

—शरद श्रीवास्तव, विदिशा, म. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

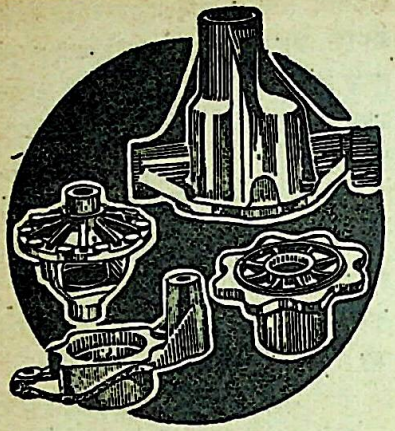

दि इंडियन स्मेल्टिंग
एंड रिफाइनिंग कंपनी
लिमिटेड

एस० जी० आइरन के
कास्टिंग

कांसा, पीतल, गनमेटल, लोहेतर धातुओं तथा इस्पात के पुर्जों व हिस्सों का स्थान ले सकते हैं।

मैलिएबल आइरन के
कास्टिंग

अनेक प्रकार की चीजों में इस्पात के कास्टिंग का काम दे सकते हैं।

IS

फेरस फाउंड्री
पंचपाखाड़ी,
पहिला पोखरन
लेन, थाना
(महाराष्ट्र)

आपकी पत्रव्यवहार की तमाम
आवश्यकताओं की पूर्ति।

डुप्लिकेटिंग स्टेन्सिल और स्याही
टाइप-रायटर कार्बन और स्याही
पेन और पेन्सिल के कार्बन कागज
प्रिंटिंग स्याही आदि

कोरस (इंडिया) लिमिटेड

ऑफ—डा. मोसेस रोड,
बंबई-४०००१८

शाखाएं सारे देश में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मारिस गुडेकेट का रोशनी-भरा लेख 'आनंद की असली उम्र' (दीपावली अंक) पढ़ते हुए स्वर्गीय पी. जी. वुडहाउस के लेख 'ओवर सेवेन्टी' की ये पंक्तियां याद हो आयीं :

'आप पूछते हैं कि अब मैं अपने रोजमर्रा के जीवन में क्या बदलाव पाता हूं। लीजिये, मैं एक बदलाव तो अपने प्रति टैक्सी-ड्राइवरों के रुख में पाता हूं। पहले, मुझे टैक्सी से लगभग रौंदते हुए वे खिड़की से झांककर चिल्लाते थे– "बेवकूफ!"; अब चिल्लाते हैं–"बुड्ढे बेवकफ!"

'हम सत्तर-पारीण लोगों को अपने स्वास्थ्य पर निरंतर गृध्रदृष्टि रखनी पड़ती है और इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए मैंने सारे दिन और देर गये रात तक धूम्रपान करने का अभ्यास डाल लिया है। धूम्रपान शरीर को दृढ़ और पुख्ता बनाता है। ताल्सताय कहते थे कि नहीं बनाता। और देखिये, अब ताल्सताय साहब कहां हैं!'

—विद्याशंकर मिश्र, वाराणसी

ooo

यों तो साधारणतया भी आपकी पत्रिका प्रबुद्ध पाठकों की रुचि का बहुत ध्यान रखती है; किंतु दीपावली विशेषांक की रचनाओं का चयन बहुत ही सुरुचिपूर्ण है। शिवानी का शब्दचित्र 'मरण सागर पारे' बहुत मार्मिक है। उसमें हास्य, करुणा एवं वात्सल्य का अद्भुत सामंजस्य है। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि शिवानीजी पालीटेकनिकों को हेय समझती हैं। इस पत्र द्वारा प्रतिवाद करना आवश्यक हुआ, क्योंकि उतनी श्रेष्ठ रचना में, अभिभाविका के आदेश 'अब के फेल हुआ छोकरे, तो पौलीटेकनिक में डाल दूंगी' से भारतीय जनमानस पर त्रिवर्षीय डिप्लोमा स्तर की तकनीकी शिक्षा के प्रति गलत छाप पड़ती है। देश का विकास तकनीशियनों पर अत्यधिक निर्भर है तथा किसी भी श्रेणी में डिप्लोमा-पास व्यक्ति, द्वितीय व तृतीय श्रेणी सायन्स या आर्ट्स के डिग्रीधारियों की तुलना में अधिक सरलता से तुलनात्मक रोजगार पाता है। शायद पालीटेकनिक में हर किसी का प्रवेश इतना सरल भी नहीं है कि अन्यत्र फेल हुओं को उसमें 'डाला जा सके'।

—दिनेशचंद्र, प्राचार्य, पालीटेकनिक,
अशोक नगर, म. प्र.

ooo

दीपावली अंक में श्री हरिदत्त वेदालंकार के लेख 'कलिंग-चक्रवर्ती खारवेल' में छपी रेखानुकृतियां डा. वासुदेवशरण अग्रवाल की पुस्तक 'भारतीय कला' में मुद्रित चित्रों पर से तैयार की गयी थीं। —संपादक

ooo

अक्तूबर ७५ अंक में छपा लेख 'अकेलापन' अत्यंत प्रेरणादायक लगा। अकेलापन मनुष्य के लिए वरदान है, यदि वह उसका सही उपयोग करना जाने। आज के युवक-युवतियां अकेलेपन से घबराकर दूर भागते हैं और उससे छुटकारा पाने के लिए (विशेष रूप से पश्चिमी देशों में) आत्महत्या पर भी उतारू हो जाते हैं। आशा है, 'अकेलेपन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्रप्रश्न-४
उत्तर

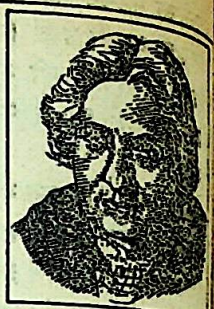

अक्तूबर अंक के चित्रप्रश्न-४ का उत्तर अंतरराष्ट्रीय महिला-वर्ष की समाप्ति के इस मा में छपना संयोगवश सामयिक हो गया है। अपने क्षेत्र में प्रथम होने के गौरव से यो ये पांच विशिष्ट भारतीय नारियां हैं—प्रथम पंक्ति में बायीं ओर से १. श्रीमती हं महेता, प्रथम भारतीय महिला वाइस-चांसलर (बड़ौदा वि. वि.) ; २. श्रीमती विज लक्ष्मी पंडित, प्रथम भारतीय महिला राजदूत (रूस) और राष्ट्रसंघ की महासभा प्रथम महिला अध्यक्ष (१९५३); द्वितीय पंक्ति में बायीं ओर से ३. प्रो. असीमा चट भारतीय विज्ञान-कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष (१९७५); ४. श्रीमती सरोजि नायडू, भारत की प्रथम महिला राज्यपाल (उत्तर प्रदेश); ५. श्रीमती अन्ना चां उच्च न्यायालय की न्यायाधीश बनने वाली प्रथम तथा अब तक एकमात्र भारतीय महि (केरल उच्च न्यायालय)।

के अंधेरे' में (जो अकेलेपन को अंधेरा समझते हैं) भटके हुओं के लिए यह लेख प्रकाश-किरण होगा। —रामचंद्र कुल्मी, कोटा-७

०००

नवनीत अक्तूबर १९७५, लेख : 'य याद' लेखक रांची के श्री राधाकृष्ण। आलंकारिक भाषा में गांधीजी की तुल अन्य ऐतिहासिक व्यक्तियों से की गयी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और मानव गांधी को मनुष्य न रहने देकर मात्र खयालों का भगवान बना दिया गया है। परंतु मैं तो यहां उस मानव गांधी के विषय में लिख रहा हूं, जो हमारे बीच रहा। वह २ अक्तूबर १८६९ को पैदा हुआ था २ अक्तूबर १८६७ को नहीं, जैसा कि लेख की पहली ही पंक्ति में लिखा गया है। कृपया सुधार कर लें।

—रामरक्षपाल वर्मा, दिल्ली

* इस भीषण भूल की ओर अन्य हितैषी पाठकों ने भी ध्यान दिलाया है। —संपादक

०००

अक्तूबर के अंक में श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी का लेख 'ग्रामीणों की ऋणग्रस्तता' पढ़ा। इधर छोटा नागपुर के गांवों तथा औद्योगिक क्षेत्रों में प्राय: ८० प्रतिशत किसान एवं श्रमिक ऋण के बोझ से त्रस्त हैं। मजदूरों के बीच तो सूद की दर २५-३० प्रतिशत प्रतिमास तक है। प्रतिमास ८ रुपये तक ब्याज लेने वालों को तो भला आदमी समझा जाता है। आपत्-काल की घोषणा के बाद कुछ आशा बंधी थी; परंतु वह क्षीण हो चली है। हां, वेतन-भुगतान की खिड़की के पास सूदखोरों का मजदूरों से रुपया छीनना प्राय: रुक गया है। सहकारी ऋणदात्री समितियों की बड़े पैमाने पर स्थापना करके इस क्षेत्र में कुछ सुधार किया जा सकता है। —श्रद्धानंद पांडेय,

पो. बोकारो थर्मल-८२९१०७

०००

अक्तूबर का नवनीत देखा। इसमें 'पत्र-वृष्टि' स्तंभ के अंतर्गत श्री रमेश दुबे का एक पत्र प्रकाशित हुआ है, जिसमें 'कंचनप्रभा' पर आरोप लगाया गया है। श्री दुबे का कथन पूर्ण रूप से मिथ्या है। श्री दुबे को यथा समय रचना की स्वीकृति-संबंधी सूचना भेजी गयी थी। उसके उत्तर में उनका १२-७-७५ का पत्र भी हमें प्राप्त हुआ था। इस पत्र की अविकल प्रतिलिपि आपके अवलोकनार्थ भेज रहे हैं। आप स्वयं निर्णय कर लें कि श्री रमेश दुबे ने कितनी ईमानदारी बरती है।

यदि उचित समझें तो इस संबंध में एक स्पष्टीकरण आगामी अंक में अवश्य प्रकाशित कर दें। यदि आवश्यकता हो तो श्री दुबे का मूल पत्र भी आपकी सेवा में भेजा जा सकता है।

अंत में आपसे निवेदन है कि आपने श्री रमेश दुबे के निराधार पत्र को प्रकाशित करके 'कंचनप्रभा' के साथ बहुत अन्याय किया है। —शंभूरत्न त्रिपाठी,

स. संपादक: कंचनप्रभा, कानपुर

* श्री बुद्धदेव बसु की बंगला कहानी का अनुवाद 'गति विचित्र है प्रेम की' सितंबर के नवनीत में छपने पर अनेक पाठकों ने शिकायत की कि यही अनुवाद 'कंचनप्रभा' (कानपुर) में भी छपा है। तभी अनुवादक श्री रमेश दुबे का उपर्युक्त पत्र आया। उस पत्र को इस स्तंभ में छापने में 'कंचनप्रभा' को लांछित करने का हमारा कोई इरादा नहीं था। अनजाने जो अन्याय हुआ, उसके लिए हमें खेद है। —संपादक

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह बात लगभग सर्वस्वीकृत है कि आने वाले दशकों में जो बातें दुनिया के स्वरूप को निर्धारित करेंगी, उनमें सबसे मुख्य हैं—जनसंख्या-वृद्धि (पचास वर्ष बाद हमारी पृथ्वी पर ७ अरब नर-नारी होंगे); पेट्रोलियम, जमीन की उर्वरता, शुद्ध जल आदि प्राकृतिक संसाधनों का क्षय; और पारिस्थितिक संतुलन एवं मनुष्य के परिवेश का गंभीर विघटन। ये तीन असंदिग्ध तत्त्व भविष्य-कथन को बड़ा ही नैराश्यमय बना

लेखक : आंद्रेई सखारोव

रूसी परमाणु-बम के जनक, रूस में वैचारिक विसहमति के साहसी प्रवक्ता और इस वर्ष के नोबेल शांति-पुरस्कार के विजेता। रूस ने उन्हें नोबेल पुरस्कार समारोह के लिए ओस्लो जाने का पारपत्र नहीं दिया है।

देते ह। मगर इतना ही असंदिग्ध और महत्त्वपूर्ण एक और तत्त्व भी है। वह है वैज्ञानिक एवं उद्योगतंत्रीय प्रगति, जो कि सभ्यता के विकास की पिछली सहस्राब्दियों में भाप जुटाती रही और केवल अब अपने गजब की संभावनाओं को पूरी तरह से घाटित कर रही है।

ऐसी किसी भी भविष्योक्ति में सबसे महत्त्वपूर्ण अज्ञात तत्त्व है नाभिकीय युद्ध। मेध में सभ्यता और मानव-जाति का नाश जब तक नाभिकीय प्रक्षेपास्त्र तथा शत्रुतापूर्ण एवं शक्की सरकारें और उनके [illegible] मौजूद हैं, यह भयानक खतरा समकालीन जीवन का सबसे क्रूर यथार्थ बना रहेगा।

मानव-समाज को व्यक्तियों और सरकारों की नैतिकता के ह्रास से भी खतरा है। कानून और न्याय के बुनियादी आदर्शों का अनेक देशों में विघटन, स्वार्थपूर्ण [illegible] भोग, अपराधों में आम वृद्धि, राष्ट्रवाद एवं राजनैतिक आतंकवाद की नयी लहर, राष्ट्रीय ध्वंसलीला और पियक्कड़पन [illegible] नशाखोरी का विनाशकारी प्रसार—इन सब चीजों में यह ह्रास आज भी प्रकट हो रहा है। अलग-अलग देशों में इसके अलग-अलग कारण हैं।

विश्व की वर्तमान अवस्था में—विशेष कि विभिन्न देशों के आर्थिक विकास में बढ़ता और निरंतर बढ़ता हुआ अंतर है और सरकारों की परस्पर विरोधी टोलियों में दुनिया कटती-बंटती चली जा रही है—मानव-जाति को धमका रहे ये खतरे कल्पनातीत रूप से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पचास वर्ष बाद की दुनिया

विराट् रूप धारण कर लेते हैं।

वह कौन-सी चीज है, जो वर्तमान जीवन की विनाशकारी प्रवृत्तियों का विरोध कर रही है, कर सकती है या करने को कर्तव्यबद्ध है? मैं समझता हूं कि दुनिया के परस्पर-विरोधी देशों के समूहों में कट-बंट जाने की रोकथाम विशेषतः आवश्यक है। समाजवादी और पूंजीवादी व्यवस्थाओं का मिलन जब होगा, उसके साथ विसैन्यीकरण, अंतरराष्ट्रीय विश्वास की पुष्टि, मानवीय अधिकारों, कानून व स्वतंत्रता की रक्षा भी होगी। उसके बाद जबर्दस्त सामाजिक प्रगति होगी और मनुष्य के नैतिक, आध्यात्मिक और वैयक्तिक स्रोत मजबूत होंगे।

विश्व-सरकार जरूरी

मेरी यह कल्पना है कि इस मिलन के परिणाम से जो आर्थिक ढांचा उभरेगा, वह जरूर ही एक मिश्रित ढर्रे का होगा, जिसमें अधिक से अधिक लचीलापन, स्वतंत्रता, सामाजिक गतिशीलता और विश्वव्यापी नियमन के लिए अवसर होंगे। राष्ट्रसंघ, युनेस्को जैसे अंतरराष्ट्रीय संघटनों को मुख्य भूमिका निभानी होगी और इसमें मैं सार्वभौम मानवीय अधिकारों पर आधारित निर्देशक सिद्धांतों वाली विश्व-सरकार की झलक देखता हूं।

मगर यह हमारा फ़र्ज हो जाता है कि इस बीच जो महत्त्वपूर्ण कदम संभव हैं, वे उठाये जायें। सबसे सरल और फौरन आवश्यक कदम है भिन्न विचार अथवा व्यवहार वालों के उत्पीडन आदि असहनीय कार्रवाइयों की सर्वत्र रोकथाम। रेडक्रास, विश्व स्वास्थ्य संघटन, एम्नेस्टी इंटरनेशनल और इस तरह की अन्य जो अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं मौजूद हैं, उन्हें ऐसे सब स्थलों पर जाने की छूट हो, जहां मानवीय अधिकारों का उल्लंघन संभावित है—विशेषतः जेलों और पागलखानों में। विश्व-भर में स्वतंत्रतापूर्वक आने-जाने के प्रश्न का भी प्रजातंत्रीय ढंग से समाधान होना चाहिये।

अब मैं भविष्य-कथन की दृष्टि से चंद परिकल्पनाएं प्रस्तुत करूंगा, जो कि मूलतः वैज्ञानिक और उद्योगतंत्रीय स्वरूप की हैं।

द्विविध क्षेत्र

मैं कल्पना करता हूं आज की भीड़-भरी और अहितकर औद्योगिक दुनिया में दो प्रकार के क्षेत्र धीरे-धीरे विकसित होंगे। मैं उन्हें कामचलाऊ तौर पर 'कार्यभूमि' और 'संरक्षण-भूमि' कहूंगा। 'संरक्षण-भूमि' मुख्यतया धरती का पारिस्थितिक संतुलन बनाये रखने, फुरसत का समय गुजारने और मानव का अपना संतुलन बनाये रखने के लिए सुर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षित रखी जायेगी। 'कार्यभूमि' इससे छोटी और घनी आबादी वाली होगी और लोग अपना अधिक समय उसी में बितायेंगे।

कार्यभूमि में ही खेती भी की जायेगी—सघन खेती। उसमें प्रकृति को पूरी तरह मानव की आवश्यकताओं के अनुसार ढाल दिया जायेगा। सारा उद्योग अतिविशाल और स्वयंचलित फैक्टरियों में सिमट आयेगा। प्रायः सारी मानव-जाति विराट् नगरों (सुपर सिटीज़) में निवास किया करेगी। इन नगरों के केंद्र में बहुमंजले निवास-भवन होंगे, जिनमें हवा, तापमान, रोशनी आदि सब कृत्रिम रूप से नियंत्रित होंगे और स्वयंचलित रसोईघर होंगे।

इन नगरों का बहुत बड़ा हिस्सा उप-नगरों के रूप में होगा, जो केंद्र से दर्जनों किलोमीटर दूर तक फैले होंगे। ये आज के सर्वाधिक संपन्न देशों के उपनगरों जैसे होंगे। इनमें छोटे-छोटे बंगले या काटेज होंगे, जिनके साथ आंगन, बगिया, बच्चों के क्लब, खेल के मैदान और तैरने के तालाब होंगे। इनमें आधुनिक जीवन की समस्त सुख-सुविधाएं, शोर-रहित और आरामदेह सार्वजनिक यातायात-व्यवस्था, शुद्ध हवा, कला-कौशल के विकास और स्वातंत्र्यपूर्ण सांस्कृतिक जीवन की सहूलियतें होंगी।

चूंकि सामाजिक और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का बुद्धिसंगत ढंग से समाधान कर लिया जायेगा, इसलिए घनी आबादी के बावजूद विराट् नगरों में जीवन अस्वास्थ्य-कर या अस्वाभाविक नहीं होगा। फिर भी भविष्य के मानव को अपने समय का हिस्सा संरक्षण-भूमि में बिताने का अवसर नियमित रूप से मिला करेगा, जो कि कार्य-भूमि की अपेक्षा अधिक प्राकृतिक होगी।

संरक्षण-भूमि में रहते समय लोग सामाजिक दृष्टि से अधिक सार्थक जीवन बिताएंगे। यहां वे न केवल आराम करेंगे, बल्कि हाथों और दिमाग से काम भी करेंगे, पढ़ेंगे और सोचेंगे। वे छोलदारियों में रहेंगे, या अपने ही हाथ से बनाये हुए मकानों में रहेंगे, जैसे कि हमारे पुरखे रहते थे। वे पहाड़ी नदी-नालों का कलकल निनाद सुनेंगे या नीरवता का, खुले स्थानों व वनों की नैसर्गिक सुंदरता का, आकाश के बादलों का आनंद उठायेंगे। यहां उनका बुनियादी काम होगा—आत्म-संरक्षण और प्रकृति-संरक्षण।

आंकड़ों में कुछ उदाहरण लीजिये। कार्यभूमि का कुल क्षेत्रफल ३ करोड़ वर्ग किलोमीटर होगा और उसकी जनसंख्या घनता होगी ३०० मनुष्य प्रति वर्ग किलोमीटर। संरक्षण-भूमि का क्षेत्रफल होगा ७ करोड़ वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या घनता होगी औसतन २५ मनुष्य प्रति वर्ग किलोमीटर। विश्व की कुल जनसंख्या होगी ११ अरब। लोग अपना २० प्रतिशत समय संरक्षण-भूमि में बिता सकेंगे।

उड़ते उपग्रहीय नगर

कार्यभूमि को फैलाने का स्वाभाविक उपाय होगा—उड़ते शहरों की स्थापना। ये कृत्रिम उपग्रह होंगे, जो कि महत्त्वपूर्ण के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औद्योगिक काम करेंगे। सौर ताप को वहां संकेंद्रित किया जायेगा और शायद काफी सारे नाभिकीय और तापनाभिकीय संयंत्र भी वहीं होंगे, ताकि पृथ्वी को बहुत अधिक गरम होने से बचाया जा सके।

इन कृत्रिम उपग्रहों में वैक्युअम धातु-कारखाने, गरमघर (हाट-हाउस) आदि रहेंगे। इन पर ब्रह्मांड-किरणों के संबंध में शोधकार्य होंगे। ये लंबी अंतरिक्ष-यात्राओं में पड़ावों का भी काम देंगे।

उधर पृथ्वी पर कार्यभूमि और संरक्षण-भूमि दोनों में भूमिगत नगर होंगे, जिनमें लोग सोने और मनोविनोद के लिए जायेंगे। भूमिगत रेलों के मरम्मत-खाने और खानें तो वहां होंगी ही।

मुझे दिख रहा है कि कार्यभूमि में सारी खेती यांत्रिक साधनों और सघन विधि से होगी। रासायनिक खाद का उपयोग तो होगा ही, कृत्रिम मिट्टी भी बनायी जायेगी। सर्वत्र सिंचाई-व्यवस्था होगी। पृथ्वी के उत्तरी प्रदेशों में गरमघर होंगे, कृत्रिम धूप होगी और जमीन को कृत्रिम रूप से गरम किया जायेगा, ताकि वनस्पतियों की बढ़-वार हो।

हरित क्रांति जारी रहेगी

आनुवंशिकी और बीज-चयन अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते रहेंगे ही। इस तरह आज की हरित क्रांति जारी रहेगी और पनपेगी। इनके अलावा मछली आदि जलचरों, खाद्य जीवाणुओं, सूक्ष्म शैवाल और फफूंद की खेती होगी। समुद्र की सतह, दक्षिण ध्रुव-प्रदेश और अंततः चंद्रमा व ग्रहों को कृषि-योग्य बना लिया जायेगा।

करोड़ों इंसान आज प्रोटीन की कमी से पीड़ित हैं। पशुपालन को बढ़ाकर यह विकट समस्या सुलझायी नहीं जा सकती; क्योंकि आज भी दुनिया के कुल कृषि-उत्पादन का लगभग ५० प्रतिशत तो पशुपालन पर खर्च हो जाता है। वस्तुतः पशुपालन को घटाना जरूरी है। मुझे आशा है, अगले कुछ दशकों में पशुजन्य प्रोटीन का स्थान लेने वाले कृत्रिम अमीनो-एसिडों का निर्माण बड़े पैमाने पर होगा—विशेषतः वानस्पतिक सामग्री के समृद्धीकरण द्वारा।

उद्योगतंत्रीय विकास

इसी तरह के क्रांतिकारी परिवर्तन उद्योग, ऊर्जा-निर्माण, जीवन-क्रम आदि में भी करने जरूरी होंगे। सबसे आवश्यक काम होगा ऐसी बंद चक्रीय शृंखलाओं को अपनाना, जिससे कि वातावरण को प्रदूषित करने वाली गंदगी बाहर निकले ही नहीं। ऐसी विशाल उद्योगतंत्रीय एवं आर्थिक समस्याओं का सुलझाव अंतरराष्ट्रीय पैमाने पर ही संभव है। यही बात कृषि-उत्पादन के ढांचे को बदलने, जनसंख्या के नियंत्रण आदि समस्याओं के बारे में भी सच है।

भविष्य-कालीन उद्योग की एक और विशेषता होगी साइबरनेटिक उद्योगतंत्र का अधिक व्यापक उपयोग। अर्धचालक, चुंबकीय, विद्युत-वैक्युअम, प्रकाश-विद्युतीय, लेजर, क्रायोट्रोन, गैस-डाइनैमिक आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढलती उम्र में
स्वास्थ्य-संपन्न और उमंग-भरे जीवन के लिए
लीजिये

झंडू की स्ट्रेनेक्स टेब्लेट्स

(पुरुषों व महिलाओं के लिए)
शक्तिवर्धक, आयुर्वेदिक तत्त्वों का संतुलित संविन्यास—जैसे : अश्वगंध, कौंच, चंद्रोदय (मकरध्वज), माणिक्य भस्म, अभ्रक भस्म, शिलाजीत, अंबर कस्तूरी और अनेकानेक चीजें 'स्ट्रेनेक्स' को अपने वर्ग में एक असाधारण उत्पादन बनाती हैं।

स्ट्रेनेक्स — कमजोरी और बुढ़ापे में एक महान वरदान।

दि झंडू फार्मास्यूटिकल वर्क्स लि., बंबई—४०००२५

3 BROTHERS

सफल पत्रकार बनें

सफल लेखक और पत्रकार बनने हेतु हिन्दी / अंग्रेजी में पत्रकारिता व लेखनकला का पत्राचार द्वारा संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करें। विवरणी व प्रवेशपत्र मंगवाने हेतु लिखें।

पत्रकारिता महाविद्यालय (ड),
पोस्ट बाक्स ३५८३,
नई दिल्ली-११००२४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विविध प्रकार के साइबरनेटिक्स का एक साथ विकास साइबरनैटिक्स की आर्थिक उपयोगिता को बहुत बढ़ा देगा।

अबाधित सूचना-प्रवाह

संवाद-प्रेषण के क्षेत्र में अपूर्व प्रगति होगी। एक विश्वव्यापी टेलिफोन व वीडियो-फोन शृंखला स्थापित हो जायेगी। पचास-एक साल में एक विश्वव्यापी-सूचना व्यवस्था भी कायम हो जायेगी, जिसके जरिये कोई भी जब चाहे दुनिया के किसी भी हिस्से में कभी भी छपी किसी भी पुस्तक या पत्रिका में से कोई भी जानकारी अथवा अन्य कोई आवश्यक तथ्य प्राप्त कर सकेगा। यह व्यवस्था वैयक्तिक कंप्यूटर-टर्मिनलों, कृत्रिम संचार-उपग्रहों, केबलों और लेजरों की मदद से अपना काम करेगी। इसमें वैयक्तिक चुनाव की स्वतंत्रता टेलिविजन की अपेक्षा बहुत अधिक होगी।

इस विश्व-सूचना-व्यवस्था का सबसे बड़ा परिणाम यह होगा कि राष्ट्रों के बीच सूचना और जानकारी के आदान-प्रदान पर अभी जो बंधन हैं, वे पूरी तरह टूट जायेंगे। परंतु चूंकि कला और उसका आस्वादन पूरी तरह वैयक्तिक चीज होती है, इसलिए मुझे आशा है कि उस पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। पुस्तकों का महत्त्व भी बना रहेगा और लोग निजी तौर पर पुस्तकें संग्रह करना नहीं छोड़ेंगे।

पैरों वाले 'यान'

बिजली के उत्पादन में प्रदूषण-रहित एवं विशाल कोयला-आधारित बिजलीघरों का महत्त्व पचास साल बाद आज से कहीं अधिक होगा। साथ ही परमाणु-बिजली का निर्माण भी बड़े पैमाने पर होने लगेगा और इस प्रक्रिया में निकलने वाले विकिरणशील अपशिष्ट को रफा-दफा करने का सरल व कमखर्चीला तरीका निकल जायेगा; और इसी तरह भाप-बिजलीघरों की भट्ठियों से निकलने वाली गंधकीय गैस और नाइट्रोजन आक्साइड को रफा-दफा करने का तरीका खोज लिया जायेगा।

मेरे खयाल से कार्यभूमि में वैयक्तिक यातयात के लिए कारों की जगह यांत्रिक 'पैरों' वाले बैटरी-चालित यानों का उपयोग होने लगेगा, जो कि घास को कुचलेंगे नहीं और जिनके लिए तारकोल की सड़कों की जरूरत नहीं होगी। मालढुलाई और सार्वजनिक यातायात होगा परमाणु-ऊर्जा द्वारा चालित, एक पटरी वाली तीव्रगामी भूगर्भ-रेलों द्वारा। इनमें माल व यात्री प्रायः गतिशील फुटपाथों या समानांतर पटरियों पर चलने वाले डिब्बे से चढ़ेंगे-उतरेंगे।

कंप्यूटरी अनुकरण

वैज्ञानिक शोध में जटिल प्रक्रियाओं का कंप्यूटर पर सैद्धांतिक अनुकरण (सिम्युलेशन) करने की उपयोगिता बढ़ती जायेगी। विशालतर स्मृति और तीव्रतर गति वाले कंप्यूटरों की मदद से अनेक समस्याओं के सुलझाव संभव हो जायेंगे, जैसे कि निम्नलिखित क्षेत्रों में—मौसम की भविष्यवाणी; सूर्य, सौर प्रभामंडल तथा अन्य तारा-भौतिकीय वस्तुओं का चुंबकीय-गैस गतिविज्ञान;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठोस और तरल पदार्थों, तरल-स्फटिकों मूलभूत कणों आदि के गुणों का निर्धारण; ब्रह्मांडीय गणनाएं; धातु और रसायन के उद्योगों में बहुपक्षीय उत्पादन-प्रक्रियाओं का आलेखन; अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र की जटिल गणनाएं। यद्यपि कंप्यूटरीय अनुकरण कभी प्रयोग और पर्यवेक्षण का स्थान नहीं ले सकता, तथापि किसी भी चीज की सैद्धांतिक व्याख्या की शुद्धता की जांच-परख में वह सहायक होगा।

नये व कृत्रिम पदार्थ

संभव है कि ऐसा पदार्थ तैयार करने में सफलता मिल जाये, जो कमरे के तापमान पर सुपर-कंडक्टर का काम करे। इससे इलेक्ट्रानिक्स और उद्योगतंत्र के अनेक क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन होंगे; उदाहरणार्थ, रेलों में। तब रेलें सुपर-कंडक्टर पटरियों पर चुंबकीय 'गद्दियों' पर दौड़ेंगी, या यह भी संभव है कि डिब्बे सुपर-कंडक्टर से निर्मित 'रनरों' से युक्त हों और पटरियां ही चुंबकीय हों।

मैं कल्पना करता हूं कि भौतिकी एवं रसायनशास्त्र की प्रगति की कृपा से मूल प्राकृतिक पदार्थों का स्थान लेने के लिए उनसे अधिक श्रेष्ठ पदार्थों का निर्माण करना और प्रकृति की कई संपूर्ण व्यवस्थाओं को कृत्रिम रूप से प्रस्तुत करना संभव होगा। भविष्य के स्वयंचलित यंत्रों में मानव-निर्मित बहुलकों (पालिमर) से बनी, आसानी से सिकुड़ने-फैलने वाली 'मांसपेशियां' होंगी। जल और वायु में स्थित जैविक और अजैविक मिश्रणों को पृथक् करने के लिए कृत्रिम 'नासिका' के सिद्धांत पर काम करने वाले संवेदनशील विश्लेषक होंगे। विशेष भूमिगत परमाणु-विस्फोटों द्वारा ग्रेफाइट से औद्योगिक हीरे तैयार किये जायेंगे।

लोकांतरीय सभ्यताओं से मिलाप

ग्रहांतरीय सभ्यताओं से संपर्क साधने का प्रयत्न बढ़ेगा। समस्त ज्ञात तरंगदैर्ध्य (वेवलेन्थ) पर ग्रहांतरों से आ सकने वाले संकेतों को पकड़ने और पृथ्वी से ऐसे संकेत भेजने का प्रयत्न किया जायेगा। अंतरिक्ष में लोकांतरीय सभ्यताओं की खोज चलेगी। यदि ऐसी सभ्यताओं का पता चला तो वह जानकारी मानव-जीवन के समस्त पहलुओं को, निश्चय ही विज्ञान और उद्योगतंत्र को, प्रभावित करेगी और संभव है, उन सभ्यताओं के साथ सामाजिक आदान-प्रदान भी हो।

अंतरिक्षवर्ती प्रयोगशालाओं अथवा चंद्रमा पर स्थापित शक्तिशाली दूरदर्शकों की मदद से हम अल्फा सेंटारी आदि निकटवर्ती नक्षत्रों की परिक्रमा करने वाले ग्रहों को देख लेंगे। अभी तो वातावरणीय बाधाएं पृथ्वी पर के दूरदर्शकों के दर्पणों को एक सीमा से अधिक बड़ा नहीं बनने देतीं। शायद पचास वर्ष के भीतर क्षुद्रग्रहों को पृथ्वी के निकट लाया जा सकेगा।

सैद्धांतिक शोध में

अभी तक मैंने विज्ञान के हृदय-रूप सैद्धांतिक वैज्ञानिक शोध की चर्चा नहीं की, जिसके व्यावहारिक परिणाम बहुधा अत्यंत महत्त्व-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्ण होते हैं। यह सैद्धांतिक शोध अथक जिज्ञासा, बौद्धिक लचीलेपन और मानवीय तर्कशक्ति की उपज होती है। इस शताब्दी के प्रथम चरण में इसी सैद्धांतिक शोध की बदौलत सापेक्षवाद के सामान्य सिद्धांत की स्थापना हुई, क्वांटम-यांत्रिकी का निर्माण हुआ और परमाणु तथा उसके नाभिक की संरचना का पता चला। इस दर्जे की खोजों की भविष्यवाणी करना सदा ही असंभव रहा है और रहेगा। मैं तो झिझकते हुए यह अनुमान ही लगा सकता हूं कि किन-किन दिशाओं में लगभग इस दर्जे की खोजें होंगी।

मौलिक कणों एवं ब्रह्मांड-विज्ञान की सैद्धांतिक शोध से वर्तमान शोधक्षेत्र का विस्तार होने के साथ ही शायद देश-काल की संरचना के संबंध में भी सर्वथा नवीन अवधारणाएं जन्म लें। शरीरक्रियाशास्त्र और जैवभौतिकी, महत्त्वपूर्ण शरीरक्रियाओं के नियंत्रण, चिकित्साशास्त्र, सामाजिक साइबर्नेटिक्स और आत्मनियमन के सामान्य सिद्धांतों के क्षेत्र में शोध से सर्वथा अप्रत्याशित बातें प्रकाश में आ सकती हैं और ऐसी प्रत्येक महत्त्वपूर्ण खोज का मानव-जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है।

प्रगति-रथ रुक नहीं सकता

यह मुझे अपरिहार्य जान पड़ता है कि विज्ञान और उद्योगतंत्र की प्रगति की वर्तमान प्रवृत्ति जारी रहेगी और बढ़ेगी। आबादी-वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों के क्षय के कारण, मानव-जाति का अतीत के तथाकथित 'स्वस्थ' जीवन में लौट पाना मुझे असंभव लगता है। (वह 'स्वस्थ' जीवन वास्तव में बहुत कठोर तथा बहुधा क्रूर एवं आनंदहीन जीवन था।) शहरीकरण, यंत्रों का अधिकाधिक प्रयोग, कल-कारखानों में स्वयंचलित यंत्रों की स्थापना, रासायनिक खाद एवं खर-पतवार-नाशकों का उपयोग, संस्कृति तथा फुरसत की वृद्धि, चिकित्सा की प्रगति, अधिक पौष्टिक खान-पान, मृत्युदर में कमी, आयुष्य में वृद्धि—ये सब चीजें वैज्ञानिक-उद्योगतंत्रीय प्रगति के परस्पर गुंथे हुए पहलू हैं। समग्र सभ्यता को नष्ट किये बिना इनमें से कुछ से मुंह मोड़ना संभव नहीं है।

विश्वव्यापी परमाणु-युद्ध, अकाल, महामारी या अराजकता द्वारा मानव-सभ्यता का विध्वंस ही प्रगति के रथ को उलटा मोड़ सकेगा। मगर कोई पागल ही उस अवस्था की कामना करेगा।

परम उद्देश्य

आज दुनिया की हालत दुरुस्त नहीं है। अधिकांश मानवों के आगे आज भुखमरी और मौत मुंह बाये खड़ी है। इसलिए सच्चे अर्थों में मानवीय प्रगति का पहला काम होगा इन खतरों को खत्म करना; इससे भिन्न कोई भी दृष्टिकोण 'स्नॉबिज्म' होगा। तथापि प्रगति के उद्योगतंत्रीय अथवा भौतिक पक्ष को बहुत अधिक महत्त्व देने की प्रवृत्ति मेरी नहीं है। मुझे पूर्ण आस्था है कि मानव-निर्मित व्यवस्थाओं का—और प्रगति भी इनमें एक है—'परम उद्देश्य' केवल यह नहीं

[शेष पृष्ठ ३२ पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पेन : मरणासन्न व्यवस्था

गिरिजाकुमार

स्पेन के तानाशाह जनरल फ्रांसिस्को फ्रांको आखिर चल बसे। उत्तराधिकारी के रूप में शासन की बागडोर राजकुमार जुआन कार्लोस ने संभाल ली है। परंतु फ्रांको की मृत्यु के साथ ही मरणासन्न हो गयी है स्पेन की फासिस्ट शासन-व्यवस्था, जिसे करीब ३९ वर्ष पहले फ्रांको ने स्थापित किया था। यह भी मुमकिन है कि एक बार फिर स्पेन में वैसा ही गृहयुद्ध छिड़ जाये, जैसा १९३६ में छिड़ा था। तब जनरल फ्रांको ने स्पेनी गणतंत्र को विनष्ट करके हिटलर व मुसोलिनी की मदद से सत्ता हथियायी थी।

तब से आज तक तानाशाह फ्रांको स्पेन में घोर अनुदारपंथी निरंकुशता की पोषक शक्तियों और संस्थानों को बलशाली बनाये रखने का भरपूर प्रयत्न करते आ रहे थे। उन्होंने स्पेनी प्रशासन-तंत्र, न्यायपालिका और धर्म-संस्थानों को बीसवीं सदी के प्रभावों से कमोबेश अछूता ही रखा था। वे किस प्रकार अतीत में जी रहे थे, इसका एक और प्रमाण यह है कि उन्होंने यह व्यवस्था की थी कि उनके पश्चात् स्पेन फिर से राजतंत्र बन जाये और बोर्बोन-वंशी राजकुमार जुआन कार्लोस राजगद्दी संभालें।

समय के साथ कदम मिलाकर न चलने में फ्रांको की सरकार का कितना पुख्ता विश्वास था, इसका एक और प्रमाण सितंबर के अंत में मिला। उस महीने की १६ तारीख को पांच स्पेनी क्रांतिकारियों को पुलिस कांस्टेबलों की हत्या के आरोप में गोली मारकर मृत्युदंड दिया गया। अभियुक्तों को स्पेन के अपने कायदे-कानूनों के अनुसार अपनी सफाई देने और अपना बचाव करने तक का भी अवसर नहीं दिया गया।

स्वाभाविक रूप से इस मनमाने मृत्युदंड की विश्वव्यापी प्रतिक्रिया हुई। और तो और, नैटो-संधि संघटन में स्पेन के साथी पश्चिम यूरोपीय देशों में भी जनता और नेता दोनों ने इस मध्ययुगीन बर्बरता का उग्र विरोध किया। चार यूरोपीय देशों में तो प्रदर्शनकारियों ने स्पेनी दूतावासों में आग लगा दी। पंद्रह देशों ने स्पेन से अपने राजदूत वापस बुला लिये। (अलबत्ता कुछ राजदूत अब मैड्रिड लौट आये हैं।) पूर्वी जर्मनी, स्वीडन, ब्रिटेन के राजनेताओं से लेकर पोप पाल छठे तक ने स्पेनी दमन की कड़ी निंदा की।

किंतु इस उग्र प्रतिक्रिया का जनरल फ्रांको ने वही जवाब दिया, जो प्रायः सभी तानाशाह देते रहे हैं। १ अक्तूबर को मैड्रिड के राजमहल के झरोखे के नीचे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्लाजा ओरियेंत में करीब ढाई लाख नागरिकों की विशाल रैली आयोजित की गयी। जराजीर्ण रोगी फ्रांको सैनिक वेशभूषा में झरोखे पर आये। कांपती कमजोर आवाज में उन्होंने कुछ देर भीड़ को संबोधित किया। उनके भाषण की समाप्ति के साथ भीड़ ने नारा लगाया—'स्पेनी एकता अमर रहे! हम कभी हारेंगे नहीं!' इस विशाल रैली का प्रयोजन सिर्फ यह दिखाना था कि बाहर के लोग चाहे कुछ भी सोचें, स्पेनी जनता हमारे साथ है।

परंतु यह तो तस्वीर का केवल एक पहलू है। दूसरा पहलू है, तानाशाही व्यवस्था के विरुद्ध स्पेन में भीतर ही भीतर उफनते हुए विरोध का। दिसंबर १९७३ में स्पेनी प्रधान-मंत्री लुई कार्रेरो ब्लांको की हत्या के रूप में यह विरोध सामने आया था। यह हत्या की थी उत्तर स्पेन के चार सर्वाधिक धनाढ्य प्रांतों की पूर्ण स्वतंत्रता के समर्थक बास्क राष्ट्रवादी संघटन 'एजकादी ता एजकातासुना' (संक्षेप में, ई. टी. ए.) के आतंककारियों ने। इस साल २७ सितंबर को जिन क्रांतिकारियों को मृत्युदंड दिया गया, उनमें भी दो बास्क राष्ट्रवादी थे, शेष तीन उग्र वामपंथी।

बास्क लोगों और फासिस्टों का संघर्ष आज का नहीं है; वह उतना ही पुराना है, जितना कि स्पेनी गृहयुद्ध। उस युद्ध के आरंभिक दौर में ही स्पेन की गणतंत्री सरकार ने बास्क लोगों को स्वशासनाधिकार दे दिया था। बास्कों ने अपना स्वतंत्र गणतंत्र स्थापित कर लिया, परंतु गृहयुद्ध में स्पेनी गणतंत्र का पूरा साथ दिया। इसके लिए उन्हें सचमुच भारी कीमत भी चुकानी पड़ी। ३१ मार्च १९३७ को फासिस्ट सेना के जनरल एमिलो मोला ने बास्कों को धमकी दी कि यदि आत्मसमर्पण नहीं करोगे, तो तुम्हारे विजकाया प्रांत को नष्ट कर दिया जायेगा। यही किया भी गया। असंघटित बास्कों को जर्मन विमानों और चालकों की मदद से कुचल दिया गया।

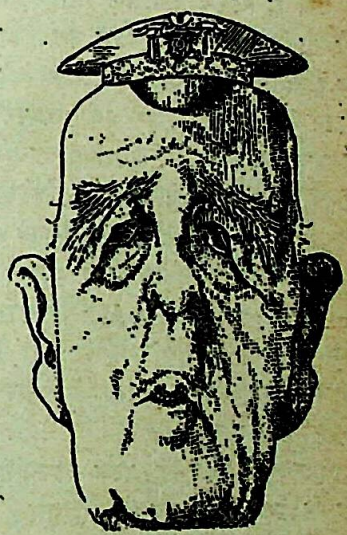

सभ्यता के किसी भी मापदंड से यह नहीं कहा जा सकता कि फ्रांको ने स्पेनी इतिहास की शान में खास वृद्धि की। उनका शासन आतंक का शासन था और उनकी देन मुख्यतः सैनिक तानाशाही की कला की थी।

—'न्यूजवीक'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

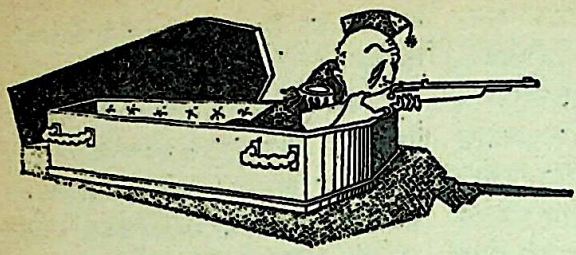

मरतिहु बार कटक संहारा ['ले मोंद' में फ्लांतू]

फासिस्ट दमन का सबसे बर्बर उदाहरण था गुएर्निका का विध्वंस। नस्ल से गैरस्पेनी मगर धर्म से रोमन कैथलिक मतावलंबी बास्क लोगों के इस प्राचीनतम नगर को, उनके इतिहास एवं संस्कृति के इस केंद्र को, फासिस्ट सेना के निर्देश पर जर्मन विमानों ने भयंकर बमबारी द्वारा विध्वस्त कर दिया। यही नहीं, जब इस विध्वंस की खबरें विदेशी समाचारपत्रों में छपीं, तो जनरल फ्रांको ने 'सौ बार दुहराने से झूठ सच हो जाता है' की फासिस्ट प्रचार-नीति के अनुरूप यह गढ़ंत किस्सा फैलाया कि गुएर्निका बमबारी से नहीं, स्वयं बास्कों द्वारा लगायी गयी आग से ध्वस्त हुआ है।

इतना निश्चित है कि बास्क लोग गुएर्निका के विध्वंस को आज भी नहीं भूले हैं। वस्तुतः वे पिछले कुछ वर्षों से स्पेन में तानाशाही के विरुद्ध सबसे अगले मोर्चे पर लड़ रहे हैं। पांच क्रांतिकारियों के मृत्युदंड के विरोध में एक लाख से अधिक बास्क लोगों ने सितंबर के अंत में हड़ताल की—यह जानते हुए भी कि अगस्त में बनाये गये नये कानून के तहत उन्हें 'आतंककारियों से हमदर्दी रखने' के अपराध में बारह वर्ष की लंबी कैद हो सकती है।

स्पेनी संविधान के तहत स्थापित सरकारी मजदूर संघ पिछले कुछ सालों से काफी असंतुष्ट होते जा रहे हैं। इसके साथ ही बढ़ा है मजदूरों में वामपंथी तत्त्वों का प्रभाव भी। बास्क राष्ट्रवादियों और इन वामपंथी तत्त्वों में किसी हद तक आपसी तालमेल भी है। परंतु अभी सितंबर तक यह तालमेल बहुत प्रभावकारी नहीं समझा जाता था। कारण, स्पेन के विभिन्न राजनैतिक तत्त्व यह मानते थे कि फ्रांको की मृत्यु के बाद सत्ता संभालने वाले शासक राजकुमार जुआन कार्लोस देर-सबेर सैनिक तानाशाही की गिरफ्त ढीली करेंगे और वर्तमान व्यवस्था के विरोधियों से बातचीत करके देश में किसी न किसी प्रकार जनतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना के लिए सहमत हो जायेंगे।

परंतु १ अक्तूबर को मद्रिड में हुई फ्रांको-समर्थक रैली से यह आशा टूट गयी। उस रैली में राजकुमार कार्लोस जनरल फ्रांको की बगल में चुपचाप खड़े रहे। इसका अर्थ यह लगाया गया है कि उन्होंने घुटने टेक दिये हैं और अपनी किस्मत को फ्रांको-स्थापित निरंकुश व्यवस्था की किस्मत के साथ जोड़ दिया है। एक विदेशी कूटनीतिज्ञ ने तो यहां तक कहा है कि इस कारनामे से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्लोस का भविष्य महत्त्वहीन हो गया है।

तो स्पेन में फ्रांको का असली उत्तराधिकारी कौन होगा? इस प्रश्न के उत्तर में कुछ लोगों की निगाहें कार्लोस के पिता डान जुआन की ओर उठ रही हैं। डान जुआन आजकल पुर्तगाल में रहते हैं और वस्तुतः वे ही पुर्तगाल की राजगद्दी के अधिकारी हैं। परंतु वे प्रजातंत्र के समर्थक हैं और इसीलिए स्पेन के वर्तमान शासकों ने उनकी उपेक्षा करके उनके पुत्र को स्पेनी राजगद्दी का उत्तराधिकारी बनाया था। परंतु डान जुआन भी चुपचाप नहीं बैठे हैं। जून में उन्होंने स्पेन के कतिपय विरोधी दलों के प्रतिनिधियों को पुर्तगाल में अपने निवास-स्थान पर आमंत्रित किया था। तब से वे इन लोगों से लगातार संपर्क बनाये हुए हैं। एक पश्चिमी पत्रकार के अनुसार, १ अक्तूबर की रैली में फ्रांको की बगल में खड़े होने की 'हरकत' के कारण वे राजकुमार कार्लोस से बहुत क्षुब्ध हैं। पर डान जुआन का गद्दी पर बैठ सकना आसान नहीं है। यदि वे गद्दी तक पहुंच पाये, तो उसके पहले उन्हें और पूरे स्पेन को कट्टर फासिस्टों के साथ गृह-युद्ध के दौर में से गुजरना पड़ेगा।

ऐसी स्थिति में स्पेन में गृहयुद्ध टालने में समर्थ एक ही शक्ति नजर आती है—सेना। स्पेन के ज्यादातर व्यवस्था-विरोधी राजनैतिक तत्त्वों में इस बात पर आम सहमति है कि सेना 'फ्रांको के बाद?' के प्रश्न से काफी चिंतित है और उसके कर्नलों, ब्रिगेडियरों और जनरलों में भावी व्यवस्था को लेकर विचार-विमर्श चल रहा है। सेना की चिंता इसलिए भी बढ़ गयी है कि शासन ने अक्तूबर के आरंभ में तीन सेनाधिकारियों को राजद्रोह के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया। बार्सीलोना में हुई इन गिरफ्तारियों के बाद स्पेनी सेना में एक गोपनीय दस्तावेज बांटा गया है, जिसमें 'अत्याचारी और भ्रष्ट शासन' की सख्त निंदा की गयी है और कहा गया है कि हम इस शासन के जुए को अधिक समय तक बरदाश्त नहीं करेंगे।

कहते हैं, सेना के जिस समूह ने यह दस्ता-

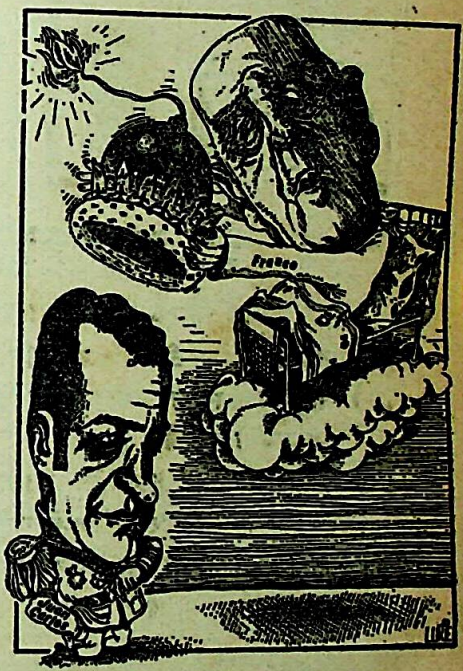

विस्फोटक उत्तराधिकार [व्यंग्यचित्र: लूरी]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

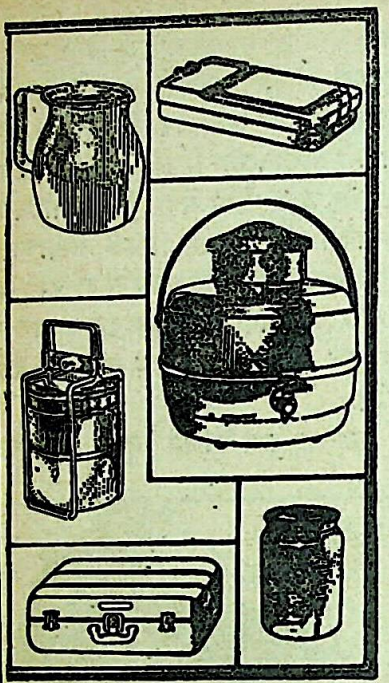

क्राउन ब्राण्ड

एल्युमिनियम के बर्तन

समझदार व्यक्ति

अपने रसोईघर की शोभा बढ़ाने वाले क्राउन ब्रान्ड एल्युमिनियम के बर्तन और ॲनोडाईज्ड चीजें पसंद करेगा।

जीवनलाल (१९२९) लि.

लिबर्टी बिल्डिंग, मरीन लाईन्स,
बंबई-४०० ०२०, टे. २९११
शोरूम : कंसारा चाळ,
कालबादेवी.
बंबई-४०० ००२, टे. ३३४०

PURE ALUMINIUM CROWN

● कलकत्ता ● मद्रास ● हैदराबाद
● दिल्ली ● मदुराई ● कोचीन

हम उद्योग की कई प्रकार से सेवा करते हैं।
हमसे संपर्क करना आपको सदा लाभप्रद होगा।

(१) पाईप्स–जेनिथ स्टील पाइप्स लिमि. खोपोली के विक्रेता और स्टाकिस्ट.

(२) अल्युमिनियम–हम सभी प्रकार के शीटों और एक्सट्रुडेट सेक्शनों के लिए 'हिन्दालको के एजेन्ट हैं।

(३) केबल–युनिवर्सल केबल्स लि. सतना (म.प्र.) के महाराष्ट्र (विदर्भ, गोवा और गुजरात को छोड़कर) में बिक्री-एजेंट।

(४) फायर होज–जयश्री टेक्सटाइल एंडस्ट्रीज लि. रिशरा (पं. बंगाल) द्वारा निर्मित 'वरुण' फ्लैक्स पाइप व 'जयश्री' एंगस R. R. L. होज पाइपों के स्टॉकिस्ट और वितरक।

एशियन डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड

क्वीन्स मेन्शन, तल मजला, प्रेस्कास्ट रोड, बंबई-१.

तार : "ADPIPE" टेलेक्स : 011-2177 टेलिफोन : २६६६७१-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

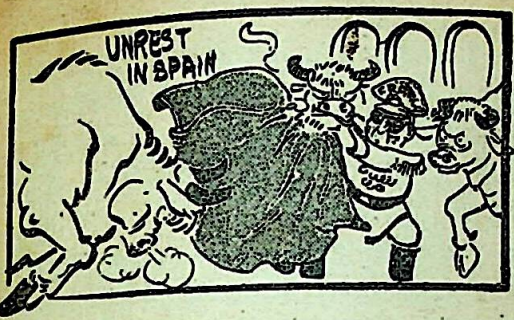

स्पेन में अशांति [लक्ष्मण : टाइम्स ऑफ़ इंडिया]

वेज प्रचारित किया है, उसका मिलिटरी डेमोक्रैटिक यूनियन से संबंध है। यह यूनियन कोई पांच साल पहले मध्यम श्रेणी के अधिकारियों ने संघटित की थी। तब कहा गया था कि इसका मुख्य उद्देश्य सैनिक मामलों पर विचार-विमर्श करना है। परंतु पिछले वर्षों में इसकी सदस्य-संख्या बढ़कर एक हजार तक पहुंच गयी है और इसमें स्पेन के सबसे आधुनिक ढंग से सोचने वाले और सर्वाधिक योग्य सेनाधिकारी संमिलित हो गये हैं। चार-छह महीनों में इस संघटन की राजनैतिक सरगरमी भी बढ़ी है और इसके सदस्य अब राजनैतिक समस्याओं पर भी विचार-विमर्श करने लगे हैं।

वस्तुतः तीन सेनाधिकारियों की गिरफ्तारियों का मूल कारण यही है। इन गिरफ्तारियों से पहले से ही यूनियन के ९ अन्य सदस्यों पर राजद्रोह फैलाने का मुकद्दमा सैनिक अदालत में चल रहा है। ये सभी सेनाधिकारी गृहयुद्ध के बाद जनमी पीढ़ी के हैं। वस्तुतः इनमें से कुछ के पिता गृहयुद्ध में जनरल फ्रांको के पक्ष में लड़े थे।

स्पेन के बढ़ते हुए आंतरिक संकट को देखते हुए सेनाधिकारियों का यह समूह यदि राजनीति में सीधा हस्तक्षेप करे, तो आश्चर्य नहीं होना चाहिये। वस्तुतः अपने वरिष्ठ जनरलों पर उनका विश्वास डिग चुका है। उनका कहना है कि जो सेनाधिकारी मौजूदा हालात में भी फासिस्ट शासन का समर्थन कर रहे हैं, वे अवसरवादी हैं।

मिलिटरी डेमोक्रैटिक यूनियन के बारे में लोगों की राय इससे ठीक विपरीत है। इन मध्यम श्रेणी के अफसरों को ध्यान में रखकर ही कुछ दिन पहले सोशल डेमोक्रैटिक तत्त्वों के प्रवक्ता एंटोनियो गार्सिया लोपेज ने दावा किया था कि सेना हस्तक्षेप करना चाहे तो जरूर कर सकती है; यह मरने-मारने वाली, अनुशासित और संघटित सेना है; जब यह कोई निर्णय लेगी, तो उस पर अमल भी कर दिखायेगी। परंतु क्रिश्चियन डेमोक्रैटिक ग्रुप के फर्नांडो अल्वारेस डेमिरांडा का कहना है कि अगर सेना बैरकों से निकलकर राजनीति के दायरे में आ गयी, तो उसे वापस बैरकों में भेजना मुश्किल होगा। पुर्तगाल इसका ताजा उदाहरण है।

सेना जो भी निर्णय करे और घटना-क्रम जो भी मोड़ ले, स्पेनी समाजशास्त्री तथा पापुलर सोशलिस्ट पार्टी के सिद्धांतशास्त्री प्रो. थिएर्नो गाल्वान का यह निष्कर्ष सही है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि 'स्पेन क्रांति-पूर्व स्थिति में से गुजर रहा है। उसके सारे तत्त्व स्पेन में मौजूद हैं—आर्थिक संकट गहरा है; शासन लड़खड़ा रहा है और सेना इस असमंजस में है कि कब, कहां और किस तरह कार्रवाई की जाये।'

निश्चय ही यह स्थिति स्पेन में नयी नहीं है। मगर नयी बात यह है कि अब वहां जनतंत्र-समर्थकों और फासिस्टों के बीच तेजी से ध्रुवीकरण हो रहा है। डेढ़ साल पहले, ब्लांको की हत्या के बाद प्रधान-मंत्री का पद संभालने वाले एरियास ने धीरे-धीरे उदार रुख की नीति अपनायी थी। लेकिन बदले हुए संदर्भ में उन्होंने अपना रवैया भी बदल लिया है और वे पहले से अधिक [illegible] दारवादी नीतियों के समर्थक हो गये हैं। [illegible] एक आशंका यह भी है कि एरियास-सरकार [illegible] से भी अधिक दक्षिणपंथी रुख अपनाने [illegible] सरकार स्पेन में बन सकती है।

परंतु जैसे दक्षिणपंथी अपनी [illegible] संघटित कर रहे हैं, वैसे ही वामपंथी [illegible] उदारवादी भी सक्रिय हैं। प्रो. गाल्वान [illegible] अनुसार, अधिक से अधिक कामगार [illegible] राजनीति में दिलचस्पी लेने लगे हैं। [illegible] शब्दों में, स्पेन में अब क्रांति के लिए [illegible] कर्ताओं की कमी नहीं पड़ेगी—मृत्युदंड-[illegible] बर्बरताओं के बावजूद।

[पृष्ठ २५ का शेष]

है कि पृथ्वी पर जनमे प्रत्येक मनुष्य को तीव्र कष्टों और असामयिक मृत्यु से बचाया जाये, बल्कि यह भी है कि मानव में जो कुछ भी मानवीय है, उसका भी बचाव किया जाये। ये चीजें हैं—जानकार हाथों और जानकार दिमाग से काम करने का आनंद; परस्पर सहायता तथा मनुष्यों एवं प्रकृति के साथ अच्छे संबंध का आनंद; और ज्ञान एवं कला का आनंद। इन लक्ष्यों में जो परस्पर विरोध हैं, उन्हें मैं अजेय नहीं मानता हूं।

आज भी अधिक विकसित औद्योगिक देशों के निवासियों को पिछड़े एवं भूखग्रस्त देशों के निवासियों के मुकाबले [illegible] एवं स्वस्थ जीवन जीने का अधिक [illegible] प्राप्त है। यों भी जो प्रगति मनुष्यों [illegible] भूख और बीमारी से बचायेगी, वह [illegible] कल्याण के स्रोत और मानव के सर्वो[illegible] मानवीय अंश की रक्षा की विरोधी [illegible] हो सकती।

मुझे विश्वास है कि मानव की मानव[illegible] एवं प्रकृति की प्राकृतिकता को गंवाये [illegible] प्रगति के भव्य, आवश्यक एवं [illegible] लक्ष्यों की पूर्ति कैसे हो, इस जटिल [illegible] का तर्कसंमत समाधान मानव-जाति [illegible] प्राप्त कर लेगी।

['सैटर्डे रेव्यू' से साभार]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

गुरु का प्रशिक्षण

इस्कंदर खां ने अपने बेटे हैदरअली को सूफियों के अधीन वर्षों तक शिक्षा दिलवायी; फिर महमूद गजनवी की खिदमत में पेश किया कि इसे दरबार में कोई ओहदा दीजिये। महमूद ने हैदर से कहा—'साल-भर बाद आना।' साल-भर बगदाद के सूफियों के पास रहकर हैदर पिता के संग फिर दरबार में हाजिर हुआ। फिर वही उत्तर मिला—'साल-भर बाद आना।' इस साल हैदरअली बल्ख, बोखारा और समरकंद के सूफियों की खिदमत में रहकर लौटा; मगर महमूद ने फिर वही उत्तर दिया। इस्कंदर ने बेटे को हज करायी, हिंदुस्तान भेजा, फिर दरबार में हाजिर किया। इस बार महमूद ने हैदर से कहा—'कोई सूफी गुरु खोजकर साल-भर उससे पढ़ो, फिर आना।' हैदरअली हेरात चला गया और एक बड़े सूफी का शिष्य बन गया। साल-भर बाद पिता उसे लेने आया; पर अब उसे दरबार और ओहदे में उसे कोई दिलचस्पी नहीं रह गयी थी। निश्चित दिन जब इस्कंदर और उसका बेटा दरबार नहीं आये, महमूद गजनवी स्वयं हेरात गया और सूफी गुरु से बोला कि इन्हें मेरे दरबार में रहकर मेरा मार्गदर्शन करने का आदेश दीजिये। यही हैदर हेरात के महान सूफी हैदरअली जान हिरवी थे।

—इदरीस शाह

Digitized by eGangotri

जीवन-तीर्थ

भर्तृहरि ने सत्पुरुषों के स्वभाव का वर्णन करते हुए एक सुंदर बात कही है—नम्रत्वेनोन्नमन्तः, अर्थात् वे नम्रता द्वारा ऊपर उठते हैं। इसमें उक्ति-चमत्कार यह है कि संस्कृत में 'नम्र' का मूल शब्दार्थ है—'झुका हुआ' और सत्पुरुषों का यह झुकना निःसारता के कारण नहीं, अपितु ब्रह्मांड में अपने को सही परिपेक्ष्य में देखने का फल होता है।

फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट जब अमरीका के राष्ट्रपति थे, एक बार हत्यारों ने उन पर आक्रमण किया। सौभाग्य से वे बाल-बाल बच गये। तब से पुलिस ने उनकी सुरक्षा का प्रबंध और भी कड़ा कर दिया। उनकी पत्नी श्रीमती एलीनर रूजवेल्ट से भी कहा गया कि अब से आपके साथ अंगरक्षक रहा करेगा। श्रीमती रूजवेल्ट, जो कि स्वयं बहुत बड़ी समाजसेविका थीं, इसके लिए तैयार नहीं हुईं। जब उनके पति ने पुलिस की बात मानने के लिए उन पर जोर डाला तो वे बोलीं—'मुझे कोई खतरा नहीं है; क्योंकि मैं इतनी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नहीं हूं।'

स्वामी दयानंद सरस्वती अपने समय के सबसे महिमाशाली भारतीयों में से एक थे—विद्वान, सत्यनिष्ठ और निर्भीक। अपने जीवन-काल में ही वे 'महर्षि' कहलाने थे। एक दिन किसी ने बातचीत में 'महर्षि' संबोधित कर दिया। वे बड़े भाव से बोले—'आज आप मुझे महर्षि रहे हैं। यदि मैं कपिल और कणाद के में पैदा हुआ होता तो पढ़े-लिखों में गणना मुश्किल से ही हो पाती।'

भर्तृहरि का ही बड़ा प्रसिद्ध श्लोक है

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः स
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम म
यदा किंचित्किंचिद् बुधजनसकाशाद
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यप

—जब मैं बहुत थोड़ा जानता था, ह की तरह मदांध था और अपने को मानकर इतराता था। फिर जब विद्वान सत्संग से मुझे कुछ-कुछ जानने को मि तब पता चला कि मैं तो निरा मूर्ख हूं, मेरा सारा घमंड बुखार की तरह उतर

जो विवेकशाली होते हैं, वे इसके जागरूक रहते हैं कि उन्हें ऐसा बुखार ही नहीं; क्योंकि उन्हें इस चीज का भान रहता है कि ज्ञान अनंत है, और मस्तिष्क अत्यंत सीमित। प्येर ला फ्रांस के नामी विज्ञानी थे। खगोल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को उनकी देन बहुत बड़ी है। ७८ वर्ष की आयु में जब वे मृत्युशय्या पर पड़े हुए थे, उन्होंने कहा था—'हम जो कुछ जानते हैं, वह कुछ भी नहीं है; और जो कुछ हम नहीं जानते, वह असीम है।'

अल्बर्ट आइन्स्टाइन का सारा जीवन मानो इस आंतरिक विनम्रता का मधुर गीत था। ब्रिटिश चित्रकार रोथेन्स्टाइन बर्लिन में आइन्स्टाइन का पोर्ट्रेट बना रहे थे। इसके लिए प्रतिदिन आइन्स्टाइन उनके स्टूडियो में आकर बैठते थे। उनके साथ गंभीर मुखमुद्रा वाला एक आदमी भी वहां प्रतिदिन आता था और उनसे कुछ दूर एक तरफ बैठ जाता था। रोथेन्स्टाइन जब चित्रांकन में लग जाते, आइन्स्टाइन उस आदमी से सापेक्षतावाद के गणित-पक्ष के बारे में बोलने लगते थे। कभी वे कोई प्रश्न पूछते, तो वह आदमी सिर हिलाकर हां या ना में जवाब देता और अगर कभी बोलता भी तो चंद शब्दों में अपनी बात कह डालता।

रोथेन्स्टाइन को उस आदमी के बारे में बहुत कुतूहल हुआ। अंत में जब चित्र पूरा हो गया, तो उन्होंने आन्इस्टाइन से पूछ ही लिया। उस महान विज्ञानी ने कहा—'ये सज्जन गणितज्ञ हैं, और मेरे सिद्धांतों को परखकर बताते हैं कि वे सही हैं या गलत। वास्तव में, मैं अच्छा गणितज्ञ नहीं हूं।'

यदि हममें ऐसी विनम्रता जन्मजात न हो, तो भी हम उसे विकसित तो कर ही सकते हैं। ब्रह्मांड की विराटता मानो हर क्षण हमें विनम्र बनने को कह रही है।

अमरीका के राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट रोज रात को सोने से पहले तारों-भरे आकाश को बड़ी दिलचस्पी से देखा करते थे। एक रात को वे प्रसिद्ध प्रकृति-विज्ञानी विलियम बीब के साथ खुले आसमान के नीचे बैठे हुए थे। दोनों आकाश की ओर देखते हुए चर्चा कर रहे थे कि ब्रह्मांड में करोड़ों सूरज हैं, अरबों-खरबों तारे हैं, जिनमें से कइयों के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुंचने में लाखों साल लग जाते हैं। अंत में रूजवेल्ट बोले—'मैं समझता हूं कि अब हम अपने को काफी छोटा महसूस करने लगे हैं। सो, चलकर सोयें।'

विनम्रता प्रदर्शनप्रिय और अहंमन्य नहीं होती। किन्हीं दो ईसाई मठों के पादरियों में बहस हो रही थी। एक ने दूसरे से कहा—'विद्वत्ता में शायद हमारा मठ आपके मठ का मुकाबला न कर सके। शायद सेवा कार्यों में भी नहीं; क्योंकि हमारे साधन बहुत सीमित हैं। मगर जहां तक विनम्रता का सवाल है, हम आपसे बहुत आगे हैं।' सच्ची विनम्रता ऐसे शब्द कभी नहीं बोल सकती।

प्योरिया (अमरीका) के बिशप एडमंड इन बड़े विद्वान थे, नौ भाषाएं जानते थे। वे जब भी गिरजे में आत्मस्वीकृति के लिए जाते, तो पादरी से कहते—'फादर, यह बात आप भूल जाइये कि मैं बिशप हूं। मुझे एक साधारण अपराधी और पश्चात्तापकर्ता के रूप में ही देखिये।' यह है सच्ची विनम्रता की वाणी।

—सुबीर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

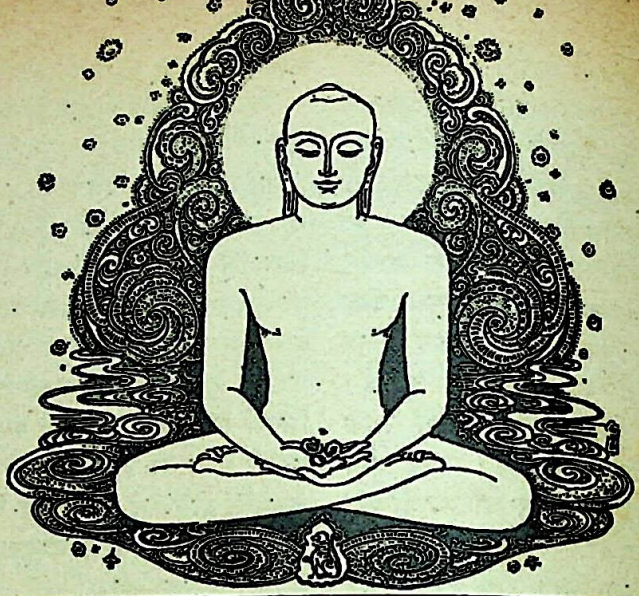

महावीर की मांगलिक विरासत

पंडित सुखलाल

साधारण तौर पर हमें तीन प्रकार की विरासतें मिलती हैं—शारीरिक, सांपत्तिक और सांस्कारिक। माता-पिता और गुरुजनों की ओर से शरीर के रूप, आकार आदि गुणधर्म की जो विरासत मिलती है, वह है शारीरिक विरासत। माता-पिता या अन्य किसी से विरासत में जो संपत्ति मिलती है, वह है सांपत्तिक विरासत। तीसरी है सांस्कारिक विरासत। संस्कार माता-पिता से मिलते हैं, शिक्षक और मित्रों से भी मिलते हैं और जिस समाज में हमारी परवरिश होती है, उससे भी मिलते हैं।

यह ठीक है कि जीवन जीने के लिए, उ विकसित करने और समृद्ध बनाने के लि तीनों विरासतों का महत्त्व है; किंतु इ तीनों में संजीवनी की नवचेतना डाल करने वाली विरासत अलग ही है। इसीलिए वह चौथी विरासत मंगल-रूप है सामान्य जीवन जीने में प्रथम तीन विरा साधन-रूप बनती हैं, उपयोगी होती हैं किंतु चौथी मांगलिक विरासत के अभाव मनुष्य का जीवन उन्नत नहीं बनता, ध नहीं बनता। यही चौथी विरासत की वि षता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कोई नियम नहीं हो सकता कि मांगलिक विरासत हमें माता-पिता, अन्य गुरुजन या साधारण समाज से मिलेगी ही, फिर भी किसी भिन्न प्रवाह से वह जरूर मिलती है।

शारीरिक, सांपत्तिक और सांस्कारिक विरासत स्थूल इंद्रियों से जानी समझी जा सकती है; परंतु चौथी विरासत के संबंध में यह बात नहीं कह सकते। जिस मनुष्य को प्रज्ञा-इंद्रिय प्राप्त हो, जिसका संवेदन सूक्ष्म-सूक्ष्मतर हो, वही इस विरासत को समझ सकता है या ग्रहण कर सकता है। अन्य विरासतें जीवन के रहते हुए या मृत्यु के समय नष्ट होती हैं, जबकि इस मांगलिक विरासत का कभी नाश नहीं होता। एक बार उसने चेतना में प्रवेश किया कि वह जन्म-जन्मांतर चलेगी, उत्तरोत्तर उसका विकास होता रहेगा और वह अनेक लोगों को संप्लावित भी करेगी।

जो मंगल-विरासत भगवान महावीर ने हमें सौंपी है, वह कौन-सी है? एक बात हम पहले ही स्पष्ट समझ लें। यहां हम मुख्यतः सिद्धार्थ-नंदन या त्रिशला-पुत्र, स्थूल देहधारी महावीर के संबंध में नहीं सोच रहे हैं। शुद्ध-बुद्ध और वासनामुक्त चेतन-स्वरूप महान वीर को ध्यान में रखकर यहां मैं 'महावीर' का निर्देश कर रहा हूं। ऐसे महावीर में सिद्धार्थ-नंदन का समावेश हो ही जाता है। इसके अलावा इसमें उनके सदृश सभी शुद्ध-बुद्ध चेतनाओं का समावेश होता है। महावीर में जात-पांत या देश-काल का कोई भेद नहीं। वे वीतरागाद्वैत रूप से एक ही हैं।

भगवान महावीर ने जो मंगल-विरासत हमें सौंपी है, वह उन्होंने केवल विचार में ही संगृहीत नहीं रखी; जीवन में उतारकर परिपक्व करने के बाद ही उन्होंने उसे हमारे समक्ष रखा है।

भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त विरासत को संक्षेप में चार विभागों में बांट सकते हैं—१. जीवन-दृष्टि, २. जीवन-शुद्धि, ३. जीवन-पद्धति में परिवर्तन, और ४. पुरुषार्थ।

हम प्रथम यह देखें कि भगवान की जीवन दृष्टि क्या थी। जीवन-दृष्टि यानी उसके मूल्यांकन की दृष्टि। हम सब अपने-अपने जीवन का मूल्य समझते हैं। जिस परिवार, जिस गांव, जिस समाज और जिस राष्ट्र के साथ हमारा संबंध हो, उसके जीवन की कीमत भी समझते हैं। उससे आगे बढ़कर पूरे मानव-समाज की और उससे भी आगे जाकर हमारे साथ संबंध रखने वाले पशु-पक्षी के जीवन की भी कीमत समझते हैं।

किंतु महावीर की स्वसंवेदन-दृष्टि उससे भी आगे बढ़ी हुई थी। वे ऐसे धैर्य-संपन्न और सूक्ष्मप्रज्ञ थे कि कीट-पतंग तो क्या, पानी, वनस्पति-जैसी जीवन-शून्य मानी गयी भौतिक वस्तुओं में भी उन्होंने जीवन-तत्त्व देखा था। महावीर ने अपनी जीवन-दृष्टि लोगों के सामने रखी, तब यह नहीं सोचा कि कौन उसे ग्रहण करेगा। उन्होंने इतना ही सोचा कि काल निरवधि है, पृथ्वी विशाल है, कभी तो कोई उसे समझेगा ही।

महावीर ने अपने प्राचीन उपदेश-ग्रंथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आचारांग में यह बात बहुत सरल भाषा में रखी है और कहा है कि हर एक को जीवन प्रिय है, जैसा खुद हमें है। भगवान की सरल और सर्वग्राह्य दलील इतनी ही है—'मैं आनंद और सुख चाहता हूं, इसलिए मैं खुद हूं। फिर उसी न्याय से आनंद और सुख चाहने वाले अन्य छोटे-बड़े प्राणी भी होंगे। ऐसी स्थिति में यह कैसे कह सकते हैं कि मनुष्य में ही आत्मा है, पशु-पक्षी में ही आत्मा है और दूसरों में नहीं है? कीट-पतंग तो अपनी-अपनी पद्धति से सुख खोजते ही हैं। सूक्ष्मतम वानस्पतिक जीवसृष्टि में भी संतति, जनन और पोषण की प्रक्रिया अगम्य रीति से चलती ही रहती है।'

भगवान की यह दलील थी और इसी दलील के आधार पर से उन्होंने पूरे विश्व में अपने जैसा ही चेतना-तत्त्व भरा हुआ, उल्लसित हुआ देखा। उसे धारण करने वाले तथा निभाने वाले शरीर और इंद्रियों के आकार-प्रकार में कितना भी अंतर हो, कार्यशक्ति में भी अंतर हो, फिर भी तात्त्विक रूप से सर्व में व्याप्त चेतन-तत्त्व एक ही प्रकार से विलास कर रहा है।

भगवान की इस जीवन-दृष्टि को हम आत्मौपम्य-दृष्टि कहेंगे। तात्त्विक रूप से जैसे हम हैं, वैसे ही छोटे-बड़े सर्व प्राणी हैं। जो अन्य जीव प्राणिरूप में हैं, वे भी कभी विकास-क्रम में मानव-भूमि को स्पर्श करते हैं और मानव-भूमि-प्राप्त जीव भी अव-क्रांति-क्रम में कभी अन्य प्राणी का स्वरूप धारण करते हैं। इस प्रकार की उत्क्रांति और अवक्रांति का चक्र चलता रहता है। लेकिन उससे मूल चेतन-तत्त्व के स्वरूप में कुछ भी अंतर नहीं होता। जो कुछ अंतर होता है, वह व्यावहारिक अंतर है।

भगवान की आत्मौपम्य-दृष्टि में जीव-शुद्धि का प्रश्न आ ही जाता है। भले अनादि काल से चेतन का प्रकाश आवृत हो, रुंधा हुआ हो, उसका आविर्भाव कमोबेश हो, फिर भी शक्ति तो उसकी पूर्ण विकास की है, पूर्ण शुद्धि की है ही। जीवतत्त्व में अगर शुद्धि की शक्यता न हो, तो आध्यात्मिक साधना का कोई अर्थ ही नहीं रहता। सभी आध्यात्मिक-अनुभव-संपन्न व्यक्तियों की प्रतीति हर जगह एक ही प्रकार की है, 'चेतन-तत्त्व मूल में शुद्ध है, वासना के संग से पृथक् है।' शुद्ध चेतन-तत्त्व पर वासना या कर्म की जो छाया उठती है, वह उसका मूल स्वरूप नहीं। मूल स्वरूप तो उससे भिन्न ही है। यह जीवन-शुद्धि का सिद्धांत हुआ।

अगर तात्त्विक रूप से जीव का स्वरूप शुद्ध ही है, तो फिर उस स्वरूप को प्राप्त करने के लिए क्या करें, यह साधना-विषयक प्रश्न खड़ा होता है। भगवान महावीर ने इस प्रश्न का जवाब देते हुए कहा है कि जब तक जीवन-पद्धति का परिवर्तन नहीं होता है, आत्मौपम्य दृष्टि और आत्मशुद्धि संभव हो इस प्रकार का परिवर्तन जीवन में नहीं होता है, तब तक आत्मौपम्य और जीव-शुद्धि का अनुभव नहीं हो पाता।

जीवन-पद्धति के परिवर्तन को जैनदर्शन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में 'चरणकरण' कहते हैं। व्यावहारिक भाषा में उसका अर्थ इतना ही है—बिलकुल सरल, सादा और निष्कपट जीवन जीना। व्यावहारिक जीवन आत्मौपम्य-दृष्टि और जीवन की शुद्धि पर के आवरण, माया के परदे बढ़ाते जाने का साधन नहीं है; बल्कि वह साधन है उस दृष्टि और उस शुद्धि को साधने का। जीवन-पद्धति के परिवर्तन में समझने की बात मुख्य एक ही है; वह यह कि प्राप्त स्थूल साधनों का उपयोग इस प्रकार न करें, जिससे कि उसमें हम खुद खो जायें।

यह सब बात सही है, फिर भी सोचना यह पड़ता है कि यह सब कैसे सधेगा? जिस समाज में, जिस लोकप्रवाह में हम रहते हैं, उसमें तो ऐसा कुछ होता हुआ दिखाई नहीं देता। क्या ईश्वर या कोई ऐसी दैवी शक्ति नहीं है, जो हमारा हाथ पकड़े और लोक-प्रवाह की विरुद्ध दिशा में हमें ले जाये, ऊपर उठाये?

इसका उत्तर महावीर ने स्वानुभव से दिया है। उन्होंने कहा है कि इसके लिए पुरुषार्थ ही आवश्यक है। जब तक कोई भी साधक स्वयं पुरुषार्थ नहीं करता, वासनाओं के दबाव का सामना नहीं करता, उसके आघात-प्रत्याघात से क्षुब्ध न होते अडिगता से जूझने का पराक्रम नहीं करता, तब तक ऊपर कही हुई एक भी बात सिद्ध नहीं होती। इसी कारण उन्होंने कहा है—**संजमम्मि वीरियम्**, अर्थात् संयम, चारित्र्य, सादा रहनसहन, इन सबके लिए पराक्रम करें।

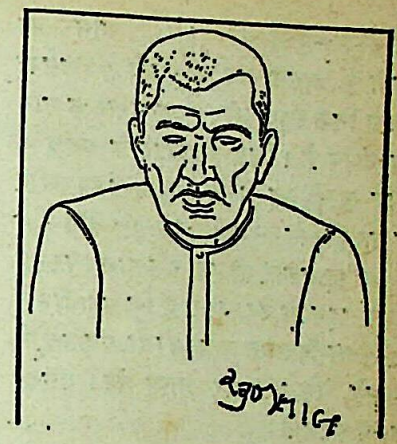

भारतीय प्रज्ञा के एक मेरुशृंग सुखलालजी

वास्तव में, 'महावीर' कोई नाम नहीं है, विशेषण है। जो इस प्रकार का महान वीर्य—पराक्रम—दिखाते हैं, वे सब महावीर हैं। इसमें सिद्धार्थ-नंदन तो आ ही जाते हैं, और अन्य ऐसे सारे अध्यात्म-पराक्रमी भी आ जाते हैं। हम निःशंकता से देख सकते हैं कि जो मांगलिक विरासत महावीर के उपदेश से मिलती है, वही उपनिषद् से भी मिलती है। और बुद्ध तथा ऐसे ही अन्य महान वीरों ने उसके अलावा और कहा भी क्या है?

इसी अर्थ में, अगर मैं उपनिषद् का शब्द 'भूमा' इस्तेमाल करके कहूं कि 'महावीर यानी भूमा, और वही ब्रह्म' तो उसमें कोई असंगति नहीं होगी। महावीर भूमा थे, महान थे, इसी कारण वे सुखरूप थे, इसी कारण वे अमृत थे। उन्हें दुःख कभी स्पर्श नहीं कर सकता, उनकी कभी मृत्यु नहीं होती। दुःख और मृत्यु 'अल्प' की होती है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ह्रस्वदृष्टि-युक्त की होती है, पामर की होती है, वासना-बद्ध की होती है। उसका संबंध सिर्फ स्थूल और सूक्ष्म शरीर के साथ ही संभव है। जिस महावीर के संबंध में बोल रहा हूं, वह तो स्थूल-सूक्ष्म-उभय शरीर से परे होने से 'भूमा' है, 'अल्प' नहीं।

इतिहासकार की पद्धति से सोचने पर यह प्रश्न सहज ही पैदा होता है कि महावीर ने जो मंगल-विरासत अन्यों को दी, वह उन्होंने किससे, किस प्रकार प्राप्त की? इसका उत्तर सरल है।

शास्त्र में कहा है और व्यवहार में भी कहा जाता है कि बिंदु में सिंधु समाता है। सुनने पर यह उलटा-सा लगता है। कहां बिंदु और कहां सिंधु? सिंधु में तो बिंदु रहता है, किंतु बिंदु में सिंधु किस तरह रह सकता है? फिर भी यह बात बिलकुल सही है। महावीर के स्थूल जीवन का परिमित-काल काल के महान समुद्र का एक बिंदुमात्र है। भूतकाल तो भूत है, सत्-रूप से वह रहता नहीं। हम जिसकी कल्पना नहीं कर सकते इतनी त्वरा से वह आता है और जाता है; किंतु उसमें संचित हुए संस्कार नये-नये वर्तमान के बिंदु में समाते जाते हैं। भगवान महावीर ने जीवन में जो आध्यात्मिक विरासत प्राप्त की और सिद्ध की, वह उनके पुरुषार्थ का फल है, यह सही है; किंतु उसके पीछे अज्ञात भूतकाल की उसी विरासत की सतत परंपरा रही है।

कोई उन्हें ऋषभ, नेमिनाथ या पार्श्वनाथ आदि की परंपरा के कह सकते हैं; किंतु मैं इसे एक अर्धसत्य के तौर पर ही स्वीकार करता हूं। भगवान महावीर से पहले मानव-जाति ने ऐसे अनेक महापुरुष पैदा किये हैं। वे चाहे किसी भी नाम से प्रसिद्ध हुए हों, या अज्ञात भी रहे हों, उन समग्र आध्यात्मिक पुरुषों की साधना-संपत्ति मानव-जाति में उत्तरोत्तर इस प्रकार संक्रांत होती रही कि ऐसा नहीं कहा जा सकता कि यह सारी संपत्ति किसी एक ने ही साधी है। ऐसा कहना केवल भक्ति-कथन होगा। भगवान महावीर ने भी ऐसे ही आध्यात्मिक कालस्रोत से उपर्युक्त मांगलिक विरासत प्राप्त की और स्वपुरुषार्थ से उसे संजीवित कर विशेष रूप से विकसित किया तथा उसे देशकालानुकूल समृद्ध करके हमारे सामने रखा।

मैं नहीं जानता कि उनके उत्तरकालीन त्यागी संतों ने उस मांगलिक विरासत से कितना प्राप्त किया और कितना साधा; किंतु कह सकते हैं कि उस बिंदु में, जैसे भूतकाल का महान समुद्र समाविष्ट है, वैसे ही भविष्य का अनंत समुद्र भी उस बिंदु में समाविष्ट है; अर्थात् भविष्य की धारा उस बिंदु द्वारा चलेगी और अनवरत चलेगी।

['तीर्थंकर' से साभार]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माचिस वाली लड़की

हान्स क्रिश्चन एंडरसन

भयंकर ठंड थी। बर्फ गिर रही थी और जल्दी ही अंधेरा घिर जाने को था; क्योंकि वह वर्ष का अंतिम दिन था—नये वर्ष की पिछली शाम। उस ठंड और अंधेरे में एक छोटी-सी लड़की सड़क पर नंगे पांव चली जा रही थी। हां, यह सच है कि जब वह घर से चली थी तो उसके पांवों में चप्पलें थीं। मगर वे भी भला किस काम की चप्पलें थीं? बहुत बड़ी चप्पलें थीं वे, जिन्हें उसकी मां पहना करती थी। सो आप खुद ही सोच लीजिये, वे किस माप की रही होंगी। और वे भी उसके पैरों से खिसककर गिर गयीं, जब एक बिल्ली दो डरावने चूहों का पीछा करती हुई सर्र-से उसके पास से निकली और लड़की सड़क के दूसरी ओर जाने को भागी। एक चप्पल का तो फिर पता ही नहीं चला; और दूसरी चप्पल एक लड़का उठाकर भाग गया—यह कहता हुआ कि जब मेरे बच्चे होंगे तो यह उनके लिए पालने का काम देगी।

सो वह छोटी-सी लड़की चली जा रही थी नंगे पांव, और उसके पांव ठंड के मारे नीले पड़ गये थे। एक पुराने झोले में उसने माचिस की तीलियां भर रखी थीं। उसके हाथ में भी तीलियों की गड्डी थी। सारे दिन वह कुछ भी तीलियां बेच नहीं पायी थी, किसी ने उसे एक पैसा भी नहीं दिया था। बेचारी कितनी उदास थी—नंगे पांव चलती हुई, भूखी और ठिठुरती हुई!

कंधों तक लटकते हुए उसके घुंघराले रेशमी बालों पर बर्फ के फाहे बैठते जा रहे थे। मगर सच मानिये, वह अपनी शक्ल के बारे में नहीं सोच रही थी। हर खिड़की और झरोखे में रोशनियां जगमगा रही थीं; भुनी बत्तख की खुशबू घरों से निकल-निकलकर सड़क पर फैल रही थी। आखिर वह नये वर्ष की पिछली रात थी न! और उसी के बारे में सोच रही थी वह।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाल-साहित्य और परीकथाओं के अप्रतिम स्रष्टा हान्स क्रिश्चन एंडरसन डेनिश भाषा के श्रेष्ठ प्रेमगीतकार भी थे। सन १९७५ उनकी मृत्यु का शताब्दी वर्ष था। इस उपलक्ष्य में उनकी एक दीर्घ परीकथा 'जलपरी' आप जनवरी अंक में पढ़ चुके हैं।

वह दो मकानों के बीच के छोटे-से कोने में बैठ गयी, जिनमें से एक मकान दूसरे से जरा आगे निकला हुआ था। वहां वह दुबककर बैठ गयी और उसने पैर नीचे सिकोड़ लिये। मगर उसे ज्यादा ही ज्यादा ठंड लगती जा रही थी। घर जाने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी, क्योंकि आज उसने एक भी तीली नहीं बेची थी, एक भी पैसा नहीं कमाया था। पिता जरूर उसे पीटता। यों भी घर में तो और भी ज्यादा ठंड थी।

उसके घर पर कहने को ही छत थी। हवा उस छत में से हू-हू करती हुई अंदर घुस आती थी, हालांकि बड़े छेदों में उन्होंने कागज और घास ठूंस रखी थी। उसके हाथ ठंड से बिलकुल सुन्न पड़ गये थे। ओह, बस एक छोटी-सी तीली—उससे कितना आराम मिल सकता है! अगर वह हिम्मत करके गड्डी में से एक तीली निकाल ले और दीवार पर रगड़कर जला दे और उस पर अपनी उंगलियां गर्म करे! उसने एक तीली खींच ली ..... खच्.....कैसे भभककर जल उठी तीली! कितनी उजली गर्म लौ, जैसे छोटी-सी मोमबत्ती हो! उसने अपनी हथेली उसके चारों ओर कर ली—सच, कितनी अनोखी रोशनी थी! छोटी-सी लड़की कल्पना करने लगी कि वह एक बड़ी-सी अंगीठी के सामने बैठी है, अंगीठी के पाये पीतल के हैं और चमचमा रहे हैं और अंगीठी में प्यारी-सी गरम आग जल रही है। अरे! क्या हो गया? अंगूठों को जरा-सा पहुंचाने के लिए वह अपने पांव आगे बढ़ा ही रही थी कि इतने में लौ बुझ गयी, अंगीठी गायब हो गयी। और वह वहीं बैठी रह गयी, जली तीली का टुकड़ा हाथ में लिये।

उसने दूसरी तीली दीवार पर रगड़ी। कितनी चमक के साथ जल उठी तीली! और जहां उसकी रोशनी पड़ी, वहां दीवार पारदर्शक बन गयी जाली की तरह। उसमें से वह पूरा कमरा देख सकती थी अब। कमरे में प्रीतिभोज की मेज सजी थी, उस पर लम्बा सफेद मेजपोश बिछा था, बड़े सुंदर चीनी बरतन रखे थे, और उनके बीच थाल में रखी थी आलूबुखारे और मेवों से भरी भुनी हुई बत्तख—गरमागरम। इससे भी कमाल बात यह हुई कि भुनी हुई बत्तख थाल में से कूदकर फर्श पर घिसटने लगी—बत्तख में खोंसी हुई छुरी और कांटे के साथ। वह सीधे छोटी लड़की के पास तक चली आयी। मगर तभी तीली बुझ गयी और लंबी-चौड़ी ठंडी दीवार के सिवा वहां अब कुछ भी दिखाई नहीं रहा था। . . .

उसने तीसरी तीली सुलगायी। अब वह बहुत ही सुंदर क्रिस्मस-वृक्ष के नीचे बैठी थी। क्रिस्मस पर उसने धनी व्यापारी के घर कांच के दरवाजे में से जो क्रिस्मस-वृक्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा था, यह उससे भी बड़ा था। इसकी हरी-हरी टहनियों पर सैकड़ों मोमबत्तियां जल रही थीं और कागज के सुंदर चित्र लटक रहे थे, जैसे कि दुकानों की खिड़कियों में लगे रहते हैं। वे चित्र जैसे उसी को देख रहे थे। लड़की ने दोनों हाथ ऊपर को बढ़ा दिये..... तभी तीली बुझ गयी; अंत में उसने देखा कि वे तो जगमगाते हुए तारे हैं। उन तारों में से एक तेजी से पृथ्वी की ओर लपका और आग की लंबी-सी लकीर अपने पीछे खींचता चला गया। 'जरूर कोई मर रहा है,' छोटी लड़की ने सोचा; क्योंकि उसकी मृत दादी ने उसे बताया था कि तारे के गिरने का मतलब यह है कि कोई आत्मा भगवान के पास ऊपर जा रही है। सिर्फ दादी ही तो थी जो उसे प्यार करती थी। उसने एक तीली और दीवार पर रगड़ी। चारों ओर चमक फैल गयी। और उस चमक के बीच उसकी बूढ़ी दादी खड़ी थी, जो बड़ी प्रसन्न, बड़ी भली और प्यार-भरी लग रही थी। छोटी लड़की रुआंसी आवाज में चिल्लायी—'ओ दादी मां, मुझे भी अपने साथ ले चलो। मुझे पता है, तीली के बुझते ही तुम गायब हो जाओगी, जैसे कि गरम अंगीठी गायब हो गयी, भुनी हुई बत्तख गायब हो गयी, और सुंदर क्रिस्मस-वृक्ष गायब हो गया।' चटपट उसने उस गड्डी की बाकी सबकी-सब तीलियां दीवार पर रगड़ दीं; क्योंकि वह अपनी दादी मां को वहीं रोके रखना चाहती थी। और तीलियां ऐसी शान से जल उठीं कि दिन के जैसी

रोशनी हो गयी। दादी मां आज बहुत ही लंबी और बहुत सुंदर लग रही थी। उसने छोटी लड़की को बांहों में भर लिया और वे दोनों खुशी से, बड़ी शान से उड़ चलीं—ऊपर, और ऊपर, उस जगह की ओर जहां सरदी नहीं है, भूख नहीं है, डर नहीं है। वे भगवान के पास पहुंच गयीं।

लेकिन अगले दिन ठंड में दो घरों के बीच दुबकी हुई वह छोटी-सी लड़की बैठी हुई थी। उसके गाल गुलाबी थे, उसके ओंठों पर मुस्कान थी और वह ठंड से अकड़कर मर गयी थी पुराने वर्ष की अंतिम रात को। नये वर्ष के पहले सवेरे की रोशनी उसके मुर्दा शरीर पर पड़ी। मरी हुई छोटी लड़की माचिस की तीलियां लिये दुबककर बैठी हुई थी और एक पूरी गड्डी की तीलियां काम आ चुकी थी। 'शायद वह अपने को गरमाने की कोशिश कर रही थी', लोग बोले। मगर किसी को नहीं पता था कि कैसी गजब की चीजें उसने देखी थीं और कैसे ठाठ से वह अपनी बूढ़ी दादी-मां के साथ नये वर्ष का सुख मनाने चली गयी थी। [अनुवाद : मैत्रेयी दत्ता]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कालपात्र के लिए पुस्तकें

दीपावली के अवसर पर हमने एक कल्पित प्रश्न हिंदी के अनेक साहित्यकारों और पत्रकारों से पूछा था। उत्तरों की पहली खेप दीपावली विशेषांक में दी गयी थी। स्थानाभाव के कारण जो उत्तर हमें उस अंक से अनिच्छापूर्वक रोकने पड़े, वे यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

हमारा प्रश्न इस प्रकार था:

'मान लीजिये कि द्वितीय विश्व हिंदी परिषद के अवसर पर एक अतिविशाल कालपात्र (टाइम कैप्स्यूल) गाड़ा जाने वाला है और उसमें रखने के लिए आपसे अपनी केवल एक पुस्तक भेजने की प्रार्थना की जाती है। आप अपनी कौन-सी पुस्तक भेजेंगे? साथ ही यह भी मान लें कि आपको आधुनिक साहित्य में से अपनी सर्वाधिक प्रिय तीन पुस्तकों के नाम सुझाने हैं—क. एक हिंदी की, ख. एक किसी हिंदीतर भारतीय भाषा की, और ग. एक किसी अभारतीय भाषा की। आप किन तीन पुस्तकों के नाम लिखेंगे?'

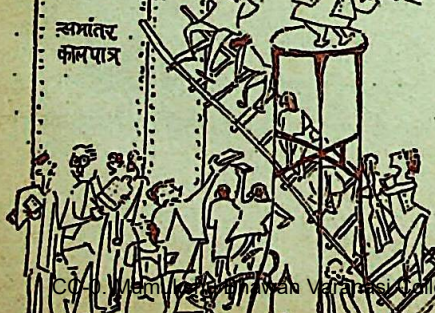

भवानीप्रसाद मिश्र :— 'गांधी पंचशती'; क. दिनकर का 'संस्कृति के चार अध्याय'; ख. रवींद्र का 'संचयिता'; ग. अलेक्जेंडर सोल्जेनित्सिन का 'गुलाग आर्किपैलेगो'।

जानकीवल्लभ शास्त्री :—'राधा' (महाकाव्य)। क. निराला की 'अनामिका'; ख. रवींद्रनाथ का 'संचयिता'; ग. ×।

वीरेंद्रकुमार जैन :—'अनुत्तर योगी : तीर्थंकर महावीर'। क. जैनेंद्रकुमार का 'उपवर्धन'; ख. शरतचंद्र का 'श्रीकांत'; ग. रोमां रोलां का 'ज्यां क्रिस्तोफ'।

अमृत राय :—'बीज'। क. 'मंजूषा' (प्रेमचंद की चुनी हुई कहानियां); ख. शरतचंद्र चट्टोपाध्याय का 'श्रीकांत'; ग. ×।

कुवेरनाथ राय :—'निषाद बांसुरी'। क. प्रसाद की 'कामायनी'; ख. रवींद्रनाथ ठाकुर का 'संचयिता'; ग. टी. एस. एलियट का 'वेस्टलैंड'।

कर्तारसिंह दुग्गल :—'हाल मुरीदों का'। क. अज्ञेय का 'शेखर'; ख. राजेंद्रसिंह बेदी की 'एक चादर मैली-सी'; ग. हेमिंग्वे का 'द ओल्ड मैन एंड द सी'।

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

रामदरश मिश्र :–'जल टूटता हुआ'। क. प्रसाद की 'कामायनी' या प्रेमचंद का 'गोदान' या धर्मवीर भारती का 'अंधा युग'; ख. फिराक का 'गुले नग़मा'; ग. ताल्सताय का 'वार एंड पीस'।

रामकुमार :–'रेवा' (कहानी)। क. डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी की 'बाणभट्ट की आत्मकथा'; ख. विभूतिभूषण मुखोपाध्याय का 'आरण्यक'; ग. अंत्वान द सैं एजूपेरी का 'विंड, सैंड एंड स्टार्स'।

सुमित्राकुमारी सिन्हा :– 'आशा पर्व' (काव्य-संग्रह); क. भगवतीचरण वर्मा का 'प्रश्न और मरीचिका'; ख. बिमल मित्र का 'इकाई दहाई सैंकड़ा'; ग. सोल्जेनित्सिन का 'गुलाग आर्किपैलेगो'।

सुरेश सिंह :–'भारतीय पक्षी'। क. सुमित्रानंदन पंत की 'पल्लविनी'; ख. शरतचंद्र का 'चरित्रहीन'; ग. आस्कर वाइल्ड का 'पिक्चर आफ डोरियन ग्रे'।

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' :–'अनुपूर्वा'। क. प्रसाद की 'कामायनी'; ख. शरतचंद्र का 'चरित्रहीन'; ग. ताल्सताय का 'वार एंड पीस'।

शिवानी :–'कृष्णकली'। क. प्रेमचंद का 'गोदान'; ख. रवींद्रनाथ का 'गोरा'; ग. दास्तोएव्स्की का 'क्राइम एंड पनिशमेंट'।

गिरिराज किशोर :–'जुगलबंदी'। क. यशपाल का 'झूठा सच'; ख. गिरीश कर्नाड का 'तुगलक' (नाटक); ग. गुंटर ग्रास का 'टिन ड्रम'।

अजित कुमार :–'अंकित होने दो'। क. प्रेमचंद का 'गोदान'; ख.-ग. ×।

शैलेश मटियानी :–'लेखक की हैसियत से'। क. प्रेमचंद का 'गोदान'; ख. ×; ग. गोर्की का 'माइ यूनिवर्सिटीज़'।

गंगाप्रसाद विमल :–अभी लिख रहा हूं, और उसी को सुरक्षित रखना चाहूंगा, जो अभी लिखी नहीं गयी। क. डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी की 'बाणभट्ट की आत्मकथा'; ख. 'ओमाचू' (मलयालम); ग. कार्ल मार्क्स का 'डास कैपिटल'।

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय :–'आधुनिक हिंदी साहित्य (१८५०-१९००ई.)'। क. प्रसाद की 'कामायनी'; ख. गोपीनाथ महांति का 'माटिमटाल' (उड़िया); ग. हेमिंग्वे का 'द ओल्ड मैन एंड द सी'।

डा. बरसानेलाल चतुर्वेदी :–'हिंदी साहित्य में हास्य रस' (शोध-प्रबंध)। क. ×; ख. ज्योतींद्र दवे की 'मारी नोंध पोथी' (गुजराती); ग. डिकन्स का 'पिकविक पेपर्स'।

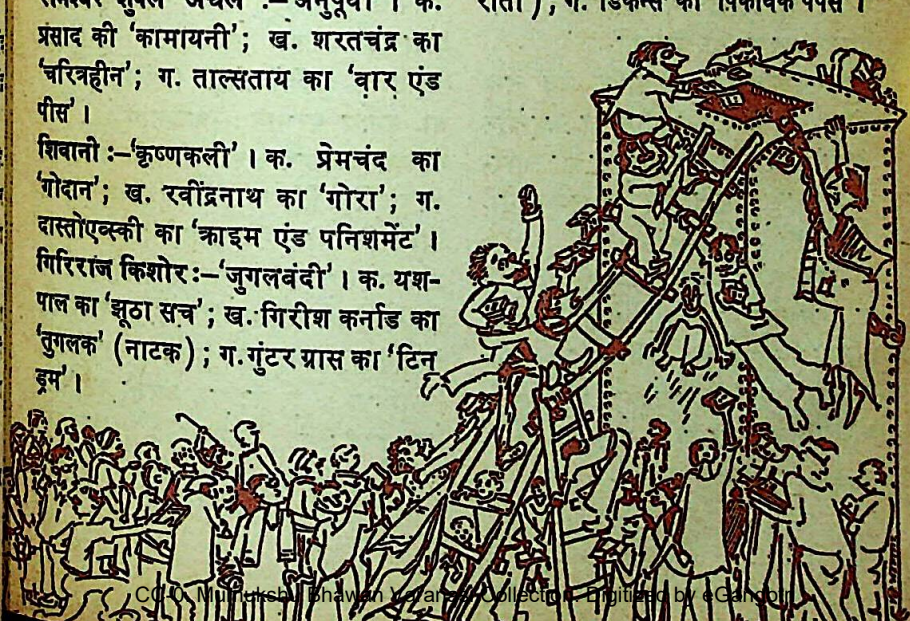

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाश पंडित :–'बक रहा हूं जुनून में'। क. यशपाल का 'झूठा सच'; ख. कुरंतुल ऐन हैदर का 'आग का दरिया'; ग. ऐन रैंड का 'द फाउंटन हेड'।

श्यामू संन्यासी :–मैंने जो भी लिखा है, वह इस कोटि में नहीं आता। क. महादेवी के गीत; ख. गुजराती में झवेरचंद मेघाणी का स्मृतिग्रंथ; ग. माइकेल गोल्ड का 'ज्यूज़ विदाउट मनी'।

रामकुमार 'भ्रमर' :–'सेतुकथा' (उपन्यास)। क. रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूं'; ख. विमल मित्र का 'खरीदी कौड़ियों के मोल'; ग. ताल्सताय का 'वार एंड पीस'।

डा. राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी:–'विनय पत्रिका की टीका'। क. ×; ख. रवींद्र की 'गीतांजलि'; ग. एडविन आर्नाल्ड की 'द लाइट आफ एशिया'।

डा. युगेश्वर :–मेरी कोई पुस्तक कालपात्र के लायक नहीं है। क. प्रसाद की 'कामायनी'; ख. रवींद्र की 'गीतांजलि'; ग. पास्तरनाक का 'डा. जिवागो'।

अगरचंद नाहटा :– 'बीकानेर जैन लेख संग्रह'। क. आचार्य रजनीश की 'महावीर वाणी'; ख. मुनि पुण्यविजयजी की 'भारतीय श्रमण संस्कृति अने जैन लेखनकला' (गुजराती); ग. ×।

दामोदर सदन:–'आग' (कहानी-संग्रह)। क. कमलेश्वर की 'एक सड़क : सत्तावन गलियां'; ख. जयवंत दळवी की 'घुन लगी वस्तियां' (मराठी उपन्यास); ग. मिगुएल आंजेल आस्तुरिया का 'द साइक्लोन'।

डा. परमानंद श्रीवास्तव :–'कविकर्म और काव्यभाषा'। क. मुक्तिबोध का 'चांद का मुंह टेढ़ा है'; ख. बादल सरकार का 'पागल घोड़ा' (बंगला); ग. पाब्लो नेरुदा का 'कैंटो जेनरल'।

यशपाल जैन :–'सेतु-निर्माता'। क. वीरेंद्र कुमार जैन का 'अनुत्तर योगी : तीर्थंकर महावीर' (प्रथम खंड); ख. इरावती कर्वे का 'युगांत' (मराठी); ग. स्टीफन ज्वाइग का 'विराट' और 'द आइज़ आफ द अनडाइंग ब्रदर'।

दिनकर सोनवलकर :–'अ से असम्भव'। क. अमृतलाल नागर का 'मानस का हंस'; ख. दुर्गा भागवत का 'व्यासपर्व' (मराठी); ग. मैक्सिम गोर्की का 'मदर'।

रामेश्वरदयाल दुबे:– 'कोणार्क' (खंडकाव्य)। क. अमृतलाल नागर का 'मानस का हंस'; ख. रवींद्रनाथ की 'गीतांजलि'; ग. [illegible]

रमेश उपाध्याय :–'जमी हुई झील'। क. यशपाल का 'झूठा सच'; ख. तारासंकर बंद्योपाध्याय का 'गणदेवता'; ग. हावर्ड फास्ट का 'आदि विद्रोही' (अंग्रेजी)।

डा. श्याम परमार :–'कविताएं ..... कविता के बाहर'। क. मुक्तिबोध का 'चांद का मुंह टेढ़ा है'; ख. फिराक गोरखपुरी का 'बज्मे जिंदगी : रंगे शायरी'; ग. [illegible] खोव का 'एंड क्वायट फ्लोज द डॉन'।

उमाकांत मालवीय :–'देवकी' (अकथा-खंडकाव्य)। क. डा. धर्मवीर भारती का 'कनुप्रिया'; ख. क. मा. मुनशी का 'परशुराम' (गुजराती); ग. सोल्झे[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्सिन का 'कैन्सर वार्ड'।

द्विजेंद्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' :—अपनी किसी भी पुस्तक को मैं इस योग्य नहीं मानता। क. प्रेमचंद का 'गोदान' या प्रसाद की 'कामायनी'; ख. शरतचंद्र का 'श्रीकांत' या रवींद्रनाथ का 'संचयिता'; ग. श्रीअरविंद की 'सावित्री'।

बालकवि बैरागी :—'मंगते से मिनिस्टर' (अभी अप्रकाशित)। क. भवानीप्रसाद मिश्र की 'गांधी पंचशती'; ख. झवेरचंद मेघाणी का 'माणसाई ना दीवा' (गुजराती); ग. 'लास्ट होराइज़न'।

डा. शेरजंग गर्ग :— 'सुमन बाल गीत'; क. धर्मवीर भारती का 'अंधायुग'; ख. ताराशंकर बंद्योपाध्याय का 'गणदेवता'; ग. कामू का 'प्लेग'।

प्रयाग शुक्ल:—वह पुस्तक मुझे अभी लिखनी है। क. मुक्तिबोध की 'एक साहित्यिक की डायरी'; ख. जीवनानंददास की श्रेष्ठ कविताएं; ग. पास्तरनाक का 'डा. जिवागो'।

रामावतार त्यागी :—'आठवां स्वर'। क. दिनकर की 'उर्वशी'; ख. शरतचंद्र का 'शेष प्रश्न'; ग. हरमन हेस का 'सिद्धार्थ'।

विद्यावती कोकिल:—'आत्मा की पुकार' (प्रेस में)। क. सुमित्रानंदन पंत की 'पौ फटने के पहले'; ख. रवींद्र की 'गीतांजलि'; ग. श्रीअरविंद की 'सावित्री'।

केदारनाथ अग्रवाल :—'फूल नहीं रंग बोलते हैं'। क. रामविलास शर्मा की 'निराला की साहित्य-साधना'; ख. तकषि का 'चेम्मीन' (मलयालम); ग. पुश्किन का काव्यसंग्रह।

उत्तरों के साथ की कुछ टिप्पणियां महत्त्वपूर्ण हैं। अमृत राय का कहना है—'सच तो यह है कि ऐसे प्रश्नों का उत्तर नहीं हुआ करता। कल कोई और ही पुस्तकें हो सकती हैं।' शैलेश मटियानी ने इसी को पल्लवित करते हुए साहित्य-कृतियों को स्थायित्व देने वाले तत्त्व की चर्चा की है —'यों मैं कालपात्र में बंद करके सुरक्षित रखे जाने वाले साहित्य को नहीं, अपने समय और भविष्य की मनुष्य-जाति की स्मृति और उसके अस्तित्व का अविच्छिन्न हिस्सा बन जाने वाले साहित्य को ही कालजयी मान सकता हूं।'

डा. जगदीश गुप्त ने कालपात्र के लिए जो अपनी व परायी पुस्तकें चुनी हैं, उनके नाम आप पिछले अंक में पढ़ चुके हैं। उनकी टिप्पणी का आनंद अब लीजिये :

'मुझे यह विचार—यानी अपनी किसी पुस्तक का नाम कालपात्र में रखवाने के लिए देना—काफी हास्यास्पद लग रहा है। फिर आप आधुनिक साहित्य की हिंदी, हिंदीतर भाषा तथा विदेशी भाषा की तीन पुस्तकों के नाम चाहते हैं। कालपात्र अगर कभी संयोगवशात् दो-चार सहस्राब्दियों बाद खुला, तब तक वे सारी आधुनिक कृतियां अति पुरातन हो चुकी होंगी; और सिंधु-लिपि की तरह शायद वह लिपि भी अबोध-गम्य हो जायेगी। फिर भी आपने जो आत्म-प्रचार का मौका दिया है उसका लाभ उठा रहा हूं। "मुफ्त हाथ आये तो बुरा क्या है!" गालिब कह ही गये हैं।' [यह किस्त छपते समय आये उत्तर जनवरी अंक में छपेंगे।]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री गोपालजी नेवटिया के आकस्मिक देहावसान से मेरे जीवन में से जैसे एक दीपक बुझ गया है। पिछले ४१ वर्षों से उन्हें निकट से देखने-जानने का सौभाग्य मुझे मिला था। वे एक उदात्त, निरभिमान और हृदय से विनम्र व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने जीवन द्वारा समाज को कई ढंग से समृद्ध किया।

उनसे पहली बार मैं मिला था १९३८ कलकत्ता में, जहां कि वे अवध शुगर की स्थापना के सिलसिले में आया करते तब मैं इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन तथा इंडियन चेंबर ऑफ कामर्स का था। उनकी स्पष्टभाषिता और हार्दिक मोहक तौर-तरीके और आनंदी स्वभाव मुझे बहुत प्रभावित किया।

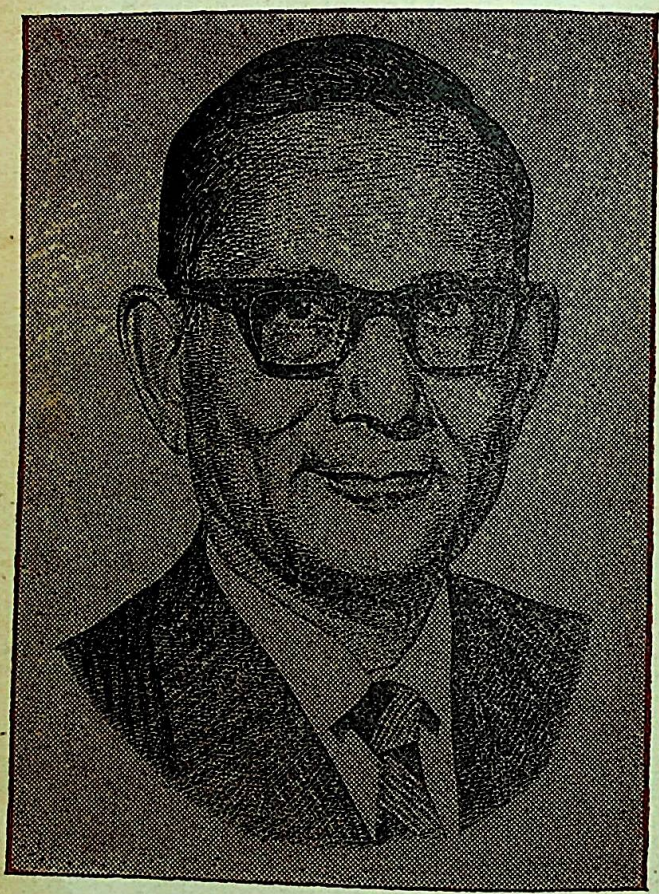

सन २६ से लेकर साल कलकत्ते रहा १९४२ में मैं कलकत्ते आ गया। उसके बाद हमारा परिचय घनिष्ठ मित्रता में परिवर्तित होता गया; क्योंकि हमारी दिलचस्पियां समान थीं। जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण में सादृश्य था; क्योंकि हम दोनों ही, व्यक्तियों और घटनाओं को दार्शनिक दृष्टि से देखने के आदी थे। व्यापार, वाणिज्य एवं उद्योग के बाद शिक्षा, पत्रकारिता, खेलकूद, सांस्कृतिक क्रिया-कलाप में रोटरी इत्यादि में हमारी एक-सी दिलचस्पी

पोर्ट्रेट : ओबेरॉय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रिय मित्र की स्मृति

चस्पी थी तथा दोनों ही शांतिमय आनंद-पूर्ण जीवन के चाहक थे। दोनों को अच्छा पढ़ने और चर्चा का शौक था।

यों उनकी बाकायदा पढ़ाई तो मैट्रिक तक ही हुई थी, किंतु स्वाध्याय द्वारा अपना ज्ञान बढ़ाने में वे सदा उत्सुक और सजग रहे। हिंदी में उन्होंने एक सहज और प्रवाह-मय शैली विकसित कर ली थी। उनमें सूक्ष्म और परिमार्जित विनोदवृत्ति थी। वे वार्ता-लाप-पटु थे, तरह-तरह के किस्से व बातें चमत्कारी शैली में सुनाते थे। संस्कृत और हिंदी की बड़ी सुंदर सूक्तियां वे बातचीत में गूंथ दिया करते थे। विविध विषयों की वे अप-टु-डेट जानकारी रखते थे और उनके विचार बहुत सुलझे हुए व सुग्रथित थे। समृद्ध और वैविध्यपूर्ण अनुभव पर आधा-रित अपनी सलाह वे निर्व्याज भाव से देते थे। काम के मामले में वे बहुत सुनिश्चित और पक्के थे, तत्काल निर्णय लेते थे, किसी भी प्रश्न के मूल मुद्दे और किसी भी व्यक्ति के मनोभाव को फौरन पहचान लेते थे।

वे छोटे कद-काठ के थे, किंतु बुद्धि और हृदय के विशेष गुणों द्वारा उन्होंने विशिष्ट व्यक्तित्व विकसित कर लिया था। सभी लोगों के साथ उनका व्यवहार शुष्क औप-चारिकता से विमुक्त, स्नेहपूर्ण और विवेक-भरा होता था।

*** एम. पी. गांधी ***

अपने अधीन काम करने वालों को प्रशि-क्षित करने और उन्हें अधिक बड़ी जिम्मे-दारियों के लिए तैयार करने में उनका बहुत विश्वास था। वे मानते थे कि कोई भी व्यक्ति अनिवार्य नहीं है और उत्तरदायित्व दूसरों को सौंपने पर ही संस्थाएं ठीक से पनप और चल पाती हैं।

जिन-जिन संस्थाओं का काम वे संभालते थे, उन सबके प्रति एक-सी गहरी निष्ठा रखते थे और उनका काम अनुशासनपूर्वक एवं पूरे दिल से करते थे। प्रखर और बहु-मुखी बुद्धि, नया कुछ करने की साहस-वृत्ति, आत्मगौरव तथा सुव्यवहार के बल पर उन्होंने सबका स्नेह संपादन किया था।

इन सब बातों के साथ, श्रीगोपालजी आनंदी स्वभाव के आदमी थे। अपने समृद्ध अनुभव के आधार पर वे व्यक्तियों और परिस्थितियों के बारे में प्रायः ऐसी बातें कहते कि जो विनोद और प्रकाश दोनों से भरी होती थीं। घंटे-भर की बातचीत में पांच-सात बार तो ठहाका लगाने की नौबत आ ही जाती।

किस तरह वे अपनी बात दूसरों से मनवा लेते थे, इसका एक उदाहरण देता हूं। एक दोपहर को मैं उनके पास बैठा हुआ था कि एक उच्चपदस्थ संमाननीय मित्र उनसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलने उनके दफ्तर में आये और बोले—'मुझे थोड़ी मदद चाहिये, और वह आप ही दे सकते हैं।' फिर उन सज्जन ने बताया कि उन्होंने बंबई अस्पताल का बिरला मातुश्री सभागार एक धर्मार्थ कार्य के सिलसिले में संगीत-कार्यक्रम के लिए किराये पर लिया था। मगर कार्यक्रम निर्धारित अवधि से दो घंटे लंबा खिंच गया, जिससे सभागार के व्यवस्थापक निर्धारित रकम से अधिक पैसा मांग रहे हैं। वे बोले—'आप यदि व्यवस्थापकों को अधिक रकम न लेने को कह दें तो मैं आपका कृतज्ञ हूंगा, क्योंकि तब उस

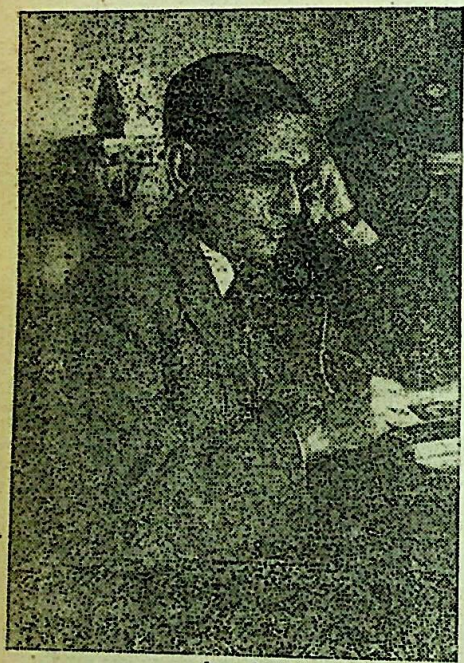

यूरोप-यात्रा में कार्यव्यस्त

धर्मार्थ कार्य के लिए उतनी रकम जायेगी।'

श्रीगोपालजी क्षण-भर चुप रहे। बोले—'शायद आप जानते हों, बंबई अस्पताल की जायदाद है। और अस्पताल एक धर्मार्थ संस्था है, जो लिए दान पर निर्भर है। सभागार की दनी अस्पताल की निधि में जाती है। आपको यह उचित लगता है कि अस्प अपना "नार्मल चार्ज" न ले और वह आपके द्वारा आयोजित धर्मार्थ कार्य में के रूप में दे? क्या अस्पताल दान सर्वोत्तम पात्र नहीं?' उन्होंने यह भी कि यदि यह जायदाद श्री बिरलाजी होती तो इस बारे में कुछ विचार भी जा सकता था, किंतु वर्तमान निय रहते क्या अस्पताल को अपनी स्वाभा आय से वंचित करना ठीक होगा? वे विचार में पड़ गये, फिर बोले—'मुझे है, आपका दृष्टिकोण सही है।'

कोई व्यक्ति किसी संस्था के लिए हार्य नहीं होता—अपने इस बुनियादी वि के कारण वे हर एक कार्यकर्ता और को अपनी जिम्मेवारी पर काम करने प्रेरणा देते थे, भले ही इसमें उससे हो जाये। एक उदाहरण संक्षेप में:

कुछ समय पूर्व जब वे बंबई से बाहर थे, एक समस्या उठी। बंबई पोर्ट ट्रस्ट बंबई अस्पताल को सूचना दी कि आपने समय पूर्व जो कोबाल्ट-एक्सरे-यंत्र किया था, उसे ५,००० रुपया वित्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भरकर फौरन बंदरगाह से ले जाइये। चूंकि श्रीगोपालजी शहर में न थे, अस्पताल के एक अधिकारी ने मुझसे पूछा कि क्या आप बंबई पोर्ट ट्रस्ट के ट्रस्टियों में से किसी को सारी स्थिति समझाकर विलंब-शुल्क माफ करवा सकेंगे? उन्होंने मुझे यह भी बताया कि जिन कारणों से विलंब शुल्क चढ़ा, उन पर अस्पताल का कोई बस नहीं था।

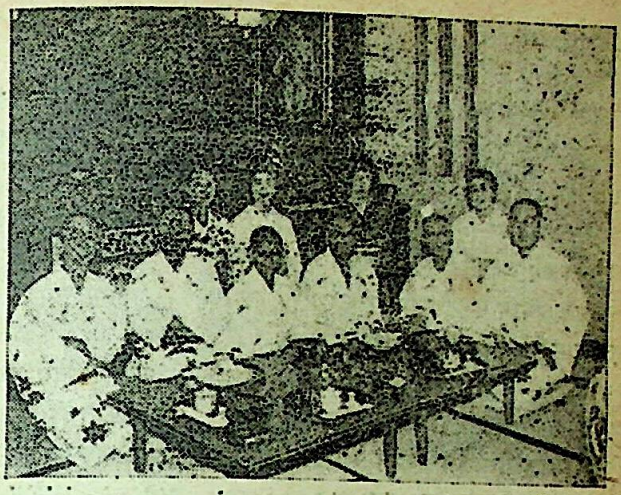

जापान-यात्रा में अपने आतिथेयों के साथ जापानी वेश में श्रीगोपालजी एवं उनके अनुज आनंदकिशोरजी। (प्रथम पंक्ति में बायीं ओर से तीसरे व चौथे।)

श्रीगोपालजी यदि शहर में होते, तो वे पोर्ट-ट्रस्ट के जिन सज्जन से बात करते, उन्हें सौभाग्य से मैं भी अच्छी तरह जानता था। मैंने उनसे निवेदन किया। बंबई अस्पताल के लिए उनके मन में बड़ी सद्भावना थी। उन्होंने पोर्ट-ट्रस्ट को विलंब-शुल्क माफ करने के लिए राजी कर लिया। परंतु जब यह सब बातचीत चल रही थी, उन्होंने पूछ लिया—'जब यह मामला नेवटियाजी के हाथ में था, तो ऐसी नौबत कैसे आयी?'

श्रीगोपालजी ने बंबई लौटने के बाद बताया कि एक सज्जन ने अस्पताल को वचन दिया था कि वे दिल्ली में संबंधित विभाग से कहकर इस यंत्र पर से आयात-कर माफ करवा देंगे। इसलिए इस बीच यंत्र की डिलिवरी न ली जाये। परंतु आप जानते हैं कि दिल्ली का कारोबार किस रफ्तार से चलता है। खैर, अस्पताल के अधिकारी ने जिस सूझबूझ से इस समस्या को सुलझाया, उससे श्रीगोपालजी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे इसके लिए बधाई दी।

दूसरे के दुःखों और दुर्घटनाओं के प्रति उन्हें सच्ची सहानुभूति रहती थी। ऐसे समय वे स्नेह-भरे शब्दों, सही सलाह और ठोस सहायता द्वारा मददगार बनते थे। मेरे ही जीवन का एक प्रसंग है:

चार वर्ष पूर्व एक दोपहर को मैंने उन्हें बताया कि एकाएक मुझ पर कैसी विपदा आ पड़ी है। मेरी पत्नी का आपरेशन करने

[शेष पृष्ठ १३५ पर]

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, अस्सी, वाराणसी।
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके बाद वल्लभभाई स्वराज्य की लड़ाई के लिए रचनात्मक कामों में लग गये। १९२९ में लाहौर कांग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास किया। १९३० का मार्च आ गया। गांधीजी दांडी-यात्रा की तैयारियां कर रहे थे। वल्लभभाई गुजरात की किसान-शक्ति को जगा रहे थे। ७ मार्च को वे रास नामक स्थान पर गिरफ्तार कर लिये गये। तीन महीने तीन सप्ताह की सजा हुई।

जेल में बड़ा कष्ट सहना पड़ा। पंद्रह पौंड वजन घट गया। २६ जून को छूटे। मोतीलालजी जेल जाते समय इन्हें ही स्थानापन्न 'राष्ट्रपति' बना गये थे। इस समय तक पूरे देश में सत्याग्रह की ज्वाला धधक उठी थी। इनके समय में धरासणा (गुजरात) और वडाला (बंबई) के मोर्चों पर सत्याग्रही स्वयंसेवकों ने जिस वीरता और साहस का प्रदर्शन किया, वह अद्भुत था। सैकड़ों स्वयंसेवकों और महिलाओं ने हाड़तोड़ लाठी-वर्षा में अप्रतिम शक्ति का परिचय दिया। १ अगस्त को लोकमान्य की बरसी के दिन बंबई में जो जुलूस निकला उसमें मैं भी था। वल्लभभाई, मालवीयजी, शेरवानी, डा. हर्डीकर इत्यादि थे। स्त्रियां भी थीं। विक्टोरिया टर्मिनस के सामने जुलूस गैरकानूनी कहकर रोक दिया गया। शाम के चार बजे से दूसरे दिन सवेरे छः बजे तक जुलूस सड़क पर डटा रहा। नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और भयंकर लाठी-वर्षा हुई। कितने हीं लोगों के सिर और हाथ की हड्डियां टूट गयीं। वल्लभभाई को तीन माह की सजा हुई।

अंत में सत्याग्रह आंशिक रूप से समाप्त हुआ। गांधी-अर्विन समझौता हुआ। कैदी छोड़ दिये गये। आर्डिनेंस उठा लिये गये। करांची में धूमधाम से कांग्रेस हुई। उसके अध्यक्ष वल्लभभाई ही चुने गये। गांधीजी गोलमेज कान्फरेंस में लंदन गये परंतु वहां कुछ परिणाम न निकला। जब वे विलायत में थे, तभी बंगाल, सीमाप्रांत और युक्तप्रांत (उत्तरप्रदेश) के लिए आर्डिनेंस जारी किये गये। गांधी-अर्विन समझौते को बार-बार भंग किया गया। कांग्रेस हरलाजी कार्यसमिति की बैठक के लिए बंबई जाते हुए गिरफ्तार कर लिये गये। भारत लौटने पर गांधीजी ने वायसराय से बातचीत करने की आज्ञा मांगी; परंतु उनका अनुरोध अमान्य कर दिया गया। फलतः ५ जनवरी १९३२ ई. से पुनः सत्याग्रह आरंभ हुआ। सरकार ने वल्लभभाई

द्वितीय तथा अंतिम किस्त

* रामनाथ सुमन *

वल्लभभाई

विभिन्न व्यक्तित्वों के व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को गिरफ्तार कर लिया; कांग्रेस संस्थाएं गैरकानूनी करार देकर बंद कर दी गयीं। सत्याग्रह चलता रहा।

बाद में सत्याग्रह स्थगित हुआ। पूना-परिषद, दिल्ली तथा कराची के संमेलन, पटना महासमिति की बैठक और कांग्रेस पार्लमेंटरी बोर्ड की स्थापना के समय सरदार जेल में बंद थे। स्वास्थ्य बहुत गिर जाने पर १९३४ ई. के अंत में उन्हें रिहा किया गया। स्वास्थ्य सुधरने के पहले ही कांग्रेस पार्लमेंटरी बोर्ड का भार उन पर आ पड़ा। परंतु स्वभावानुसार उसमें जी-जान से जुट गये और समस्त देश का दौरा करके नवजीवन की लहर दौड़ा दी। चुनाव के समय अन्य दलों की गर्वोक्तियों का जवाब देते हुए उन्होंने कहा था—'जब कांग्रेस के स्टीम-रोलर चलेंगे, तो सब विरोध कंकड़-पत्थर की भांति कुचल-कर चौरस हो जायेंगे।'

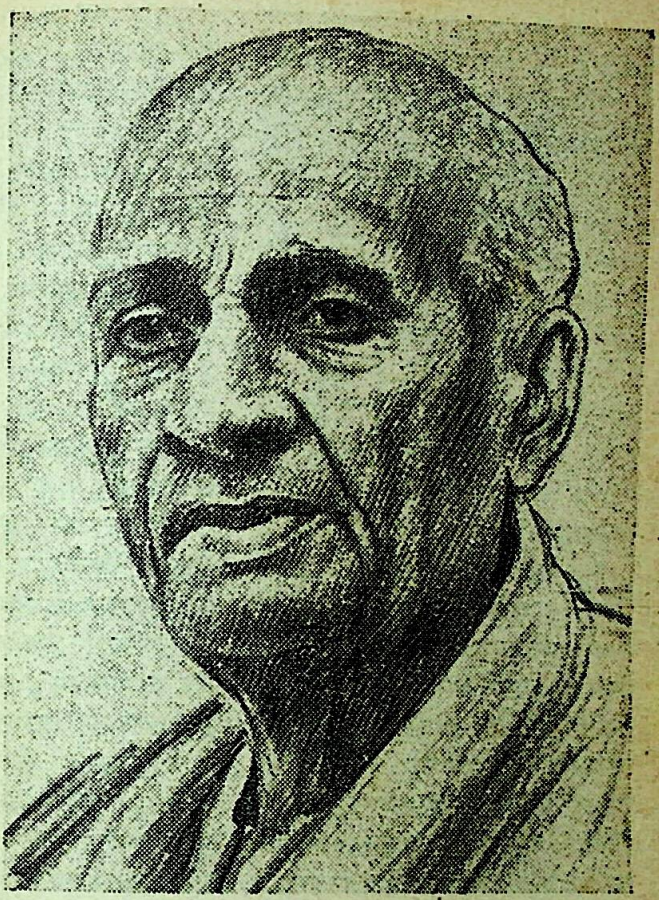

चित्र : एम. आर. आचरेकर [सौजन्य : भारतीय विद्याभवन, बंबई]

सचमुच ऐसा ही हुआ। सीमाप्रांत, युक्तप्रांत, बिहार, असम, उड़ीसा, मध्यप्रांत, बंबई और मद्रास में कांग्रेस बहुमत में आयी। इन प्रांतों के वैधानिक कार्य के निर्देशन के लिए जो पार्लमेंटरी बोर्ड बनाया गया, उसके अध्यक्ष वल्लभभाई थे। उन्होंने इन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आठ प्रांतों में कांग्रेस मंत्रिमंडलों का संचालन करते हुए जिस दृढ़ता और अनुशासन का परिचय दिया, वह अभूतपूर्व था। राजकोट-प्रकरण में भी सरदार ने अपूर्व संघटन-शक्ति का परिचय दिया था। कांग्रेस मंत्रिमंडलों के इस्तीफे के बाद वे फिर रचनात्मक कार्यों में लग गये। ९ अगस्त १९४२ को 'भारत छोड़ो' (क्विट इंडिया) आंदोलन के सिलसिले में अन्य प्रमुख नेताओं के साथ गिरफ्तार करके वे अहमदनगर किले में रखे गये। कहा जाता है कि सन १९४२ ई. की जनक्रांति की योजना बनाने में उनका प्रमुख हाथ था।

स्वतंत्रता के युग में

१५ जून १९४५ को जेल से छूटे। १९४६ के प्रारंभ में धारासंभाओं का जो चुनाव हुआ, उसका संघटन उन्होंने ही किया था। उसमें कांग्रेस को अद्भुत सफलता मिली। उसी वर्ष सितंबर में अंतरिम सरकार में गृह-सदस्य बने। १९४७ में जब देश स्वतंत्र हुआ तो वे भारत-सरकार के उपप्रधान-मंत्री तथा स्वराष्ट्र-विभाग, देशी राज्य-विभाग तथा सूचना एवं प्रसारण विभाग के मंत्री नियुक्त हुए।

परतंत्रता-युग में जो सफलताएं उन्होंने प्राप्त की थीं, उससे अधिक महत्त्वपूर्ण सफलताएं उन्होंने स्वतंत्रता के बाद प्राप्त कीं। विषैली आंग्ल-नीति के कारण भारत का दुःखद विभाजन हुआ। सांप्रदायिक दंगों में लाखों जानें गयीं; विस्तृत भूखंड श्मशान बन गये; जनता अपने ही घरों में अनाथ हो गयी। उस अवसर पर वल्लभभाई जिस दृढ़ता तथा प्रबंध-कुशलता का परिचय दिया, उसकी इतिहास में मिसाल नहीं है।

अंग्रेज भारत में सैकड़ों स्वतंत्र राज्य छोड़ गये थे। भारत की संप्रभुता के लिए वे खतरे के बिंदु थे और समस्त देश में फैले हुए थे। सरदार ने इस समस्या को सुलझाने में अद्भुत सफलता प्राप्त की। उनकी दृढ़ता से छह महीने के अंदर ही देशी राज्यों में तेजी से परिवर्तन हुए। अनेक छोटे-छोटे राज्य उड़ीसा, मध्यप्रांत, बंबई में मिला दिये गये। काठियावाड के राज्यों को मिलाकर सौराष्ट्र राज्य की स्थापना की गयी। रीवां तथा अन्य बुंदेलखंडी राज्यों को मिलाकर विंध्य प्रदेश बना; इंदौर, ग्वालियर को मिलाकर मध्य भारत तथा राजपूताने की रियासतों के एकीकरण द्वारा राजस्थान संघ का निर्माण हुआ।

हैदराबाद की समस्या

देशी राज्यों में हैदराबाद सबसे बड़ा था। दुर्भाग्यवश, उसके शासक निजाम मुल्क उस्मान अली खां के दिमाग में यह सनक सवार हुई कि एक स्वतंत्र हैदराबाद राज्य के निर्माण का समय आ गया है। रजाकारों का बोलबाला था; उनकी रिजवी की तूती बोलती थी। बेतार का कारखाना खुल चुका था और अंग्रेज विशेषज्ञों की देखरेख में सैनिक टुकड़ियों का प्रशिक्षण भी शुरू हो चुका था। आलम यह था कि इतने उन्मत्त थे कि वायसराय के बुलाने पर भी दिल्ली नहीं गये। सर मिर्जा इस्माइल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईल-जैसे उदारचेता प्रधान-मंत्री निराश होकर वहां से खिसक गये थे। मुस्लिम-लीगियों का बड़ा असर था। दिल्ली पर अर्धचंद्र वाला मुसलमानी झंडा फहराने की बातें भी सुनाई देती थीं। रजाकार 'दीन-दीन' ललकारते घूमते फिरते थे।

कांग्रेस और देश में जो राष्ट्रवादी मुसलमान थे, वे भी इस भय से बोलते न थे कि कोई गड़बड़ी हुई तो सारे देश में मार-काट मच जायेगी। जवाहरलालजी प्रधान-मंत्री होते हुए भी चुप थे। सरदार इस स्थिति से बहुत दुःखी थे और कुछ करना चाहते थे। किंतु जवाहरलाल और मौलाना आजाद वगैरह ब्रेक का काम करते थे। उन्हीं दिनों सरदार ने कहा था—'निजाम राज्य मेरे पेट में फोड़े की तरह है।' संयोगवश जवाहरलालजी को विदेश जाना पड़ा। सरदार के हाथ में सर्वशासनसूत्र आया। उन्होंने अत्यंत गोपनीय ढंग से हैदराबाद की घेराबंदी की योजना बनायी। मंत्रिमंडल के सदस्यों तक को कुछ नहीं मालूम हुआ। केवल सरदार बलदेवसिंह को कुछ बातें मालूम थीं। सरदार ने स्वयं सेनाधिकारियों को सब बातें समझायीं और जनरल राजेंद्रसिंहजी को हैदराबाद घेर लेने और उसे सर करने का काम सौंपा।

एक दिन पहले इसकी कुछ भनक स्वास्थ्य-मंत्री राजकुमारी अमृत कौर के कानों में पड़ी। उन्होंने मौलाना आजाद से कहा। फिर दोनों जवाहरलाल के पास पहुंचे, जो तब तक लौट आये थे। जवाहरलालजी ने

बारडोली सत्याग्रह के समय

कहा कि हमारे बीच समझौता है कि हम एक-दूसरे के मामले में दखल न देंगे। इसलिए आप लोग चलें तो मैं आपके साथ चल सकता हूं, पर कुछ बोलूंगा नहीं। बहरहाल सब सरदार के पास पहुंचे। उन दिनों वे कटिवेदना से कष्ट में थे। गद्दे पर मसनद के

[शेष पृष्ठ १३९ पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पश्चिमी संस्कृति की आत्मा रुग्ण है

स्वर्गीय आर्नाल्ड टायन्बी

लगभग दो सौ वर्षों से औद्योगिक क्रांति की गति तीव्रतर होती जा रही है। साथ ही उसकी शक्ति और क्षमता भी बढ़ रही है। उन्नीसवीं शताब्दी में उसका लाभ उठाने वाले लोग उसके गुण गा रहे थे और जिन लोगों को उससे हानि पहुंची थी, वे उसका विरोध कर रहे थे। लेकिन पिछले पचीस वर्षों में दोनों पक्ष अचानक उसकी हानियों के प्रति सचेत और सशंक हो उठे हैं।

सन १९४५ में दो परमाणु-बमों के निर्माण और प्रयोग के बाद अब यह संभव नहीं रहा कि हम इस सत्य की ओर से आंखें मूंद लें कि मनुष्य की शक्ति बढ़ाने वाले दोनों उपकरण—विज्ञान और टेक्नोलाजी—नैतिकता से परे निष्क्रिय उपकरण हैं। उनका उपयोग सृजन और विनाश दोनों प्रयोजनों के लिए किया जा सकता है। हमारे सामने यह प्रश्न भी उठ खड़ा हुआ है कि यदि हम ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दें कि युद्ध के लिए परमाणुशक्ति का उपयोग नहीं किया जा सके, तब भी शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए इसके उपयोग के परिणामस्वरूप हमें इसके विषैले और घातक मलबे से पिंड छुड़ाने की समस्या का सामना तो करना ही होगा।

वस्तुतः परमाणु-धूल की समस्या औद्योगिक सभ्यता द्वारा उत्पन्न एक व्यापक समस्या का अंग मात्र है। औद्योगिक [illegible] के आरंभ से ही मनुष्य निरंतर अपने [illegible] वरण को गंदा कर रहा है तथा प्रदूषण [illegible] मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। हम [illegible] कोयले तथा खनिज तेलों सरीखे ऐसे [illegible] तिक संसाधनों को खपाते चले जा रहे [illegible] जिनकी भरपाई की ही नहीं जा सक[illegible] हम इन संसाधनों का इस्तेमाल औद्योगिक उत्पादन के लिए कर रहे हैं। हमारी [illegible] महज तात्कालिक मुनाफे पर है तथा [illegible] नैसर्गिक वातावरण के उन अंगों को [illegible] गंदला करते जा रहे हैं, जो अभी तक [illegible] थे। हमें अगली पीढ़ियों की चिंता [illegible]

मुनाफे की अंधी दौड़

मनुष्य की इस शर्मनाक और चिंताजनक हरकत का कारण क्या है? सतही तौर [illegible] कहा जा सकता है कि यह उसके लोभ [illegible] परिणाम है। संसार के अन्य प्राणियों [illegible] तरह मनुष्य भी लोभी है और हमें [illegible] स्मरण रखना चाहिये कि जीवन के [illegible] प्रकृति के शोषण की क्षमता और [illegible] जीवन का अनिवार्य चरित्र है। वस्तुतः [illegible] जीवन का ही दूसरा नाम है। तथापि [illegible] सही है कि अन्य प्राणियों की अपेक्षा [illegible] में लोभ ने अधिक प्रबल रूप धारण [illegible] लिया है। इसका कारण यह है कि [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षमता उनकी अपेक्षा कहीं अधिक है। हमारे पुरखों ने औजारों का निर्माण करके ही सच्चे अर्थों में मनुष्य का रूप ग्रहण किया था, तथा पिछली दो शताब्दियों में हमने अपने औजारों की क्षमता में असीम वृद्धि के साधन खोज लिये हैं। हमने पानी से लेकर परमाणु-ऊर्जा तक असंख्य प्राकृतिक शक्तियों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया है। चाहे हिरोशिमा और नागासाकी की दुर्घटना हो या वातावरण का प्रदूषण, उन सबके लिए यह नियंत्रण ही जिम्मेवार है।

एकेश्वरवाद की लहर

पीछे मुड़कर देखते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि एक शताब्दी पहले के वे विज्ञानी जिन्हें हम प्रबोधकाल के अग्रदूत मानते हैं, धर्म द्वारा उत्पन्न असहनशीलता और द्वेष को कम करने में तो सफल हुए, किंतु उन्होंने ईश्वर, मनुष्य और प्रकृति के संबंधों के बारे में ईसाई-आस्था को चुनौती नहीं दी। बाइबल में इस आस्था का उल्लेख एक वाक्य में कर दिया गया है:

'ईश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया, तथा ईश्वर ने उनसे कहा—फूलो-फलो और अपनी संख्या में वृद्धि करो; और धरती को बसाओ; और उसे पदाक्रांत करो; और सागर की मछलियों पर स्वामित्व स्थापित करो, और हवा की चिड़ियों पर, और धरती पर चलने-फिरने वाली प्रत्येक जीवित वस्तु पर।' [जेनेसिस १, २८]

बाइबल के अनुसार, सृष्टि का निर्माण ईश्वर ने किया; सृष्टि उसकी है और वह इसका जो चाहे सो उपयोग कर सकता है; उसने आदम और हव्वा को इसका मनमाने ढंग से इस्तेमाल करने की छूट दे दी; तथा उसने यह छूट उनके पतन के बावजूद वापस नहीं ली। अमर-कानन में जिस मनुष्य को निःशुल्क बसने की छूट दी गयी थी, उसे वहां से निकालते तथा पृथ्वी का साम्राज्य सौंपते समय शुल्क चुकाने का आदेश दिया गया—'अपने चेहरे के पसीने से तुम अपनी

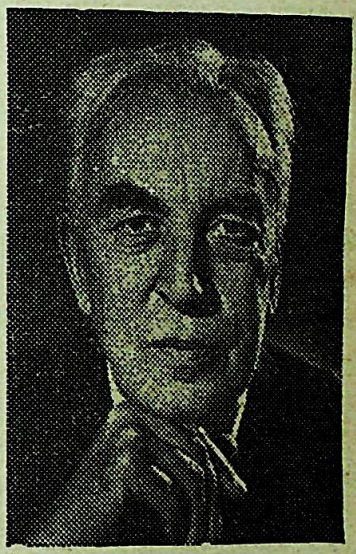

ब्रिटिश मनीषी आर्नाल्ड टायन्बी (१८८९-१९७५) ने दस खंडों वाले अपने महाग्रंथ 'ए स्टडी ऑफ़ हिस्टरी' में इतिहास की कोरी भौतिक-आर्थिक व्याख्या को अस्वीकार करते हुए धर्म और चैतस तत्त्वों के महत्त्व को प्रतिपादित किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोटी कमाओगे .....' (जेनेसिस ३, १९)। लेकिन साथ ही उसे पसीने के बदले में प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण स्थापित करने का खुला लाइसेंस दे दिया गया। सन १६६३ में संतान उत्पन्न करने की छूट वरदान प्रतीत होती थी, १९७३ में वही जनसंख्या-विस्फोट तथा यंत्रीकरण एवं प्रदूषण का अभिशाप प्रतीत होने लगी।

वस्तुतः आज संसार की अधिकांश समस्याओं, प्रकृति के अपूरणीय कोषों के विवेकहीन अपव्यय और प्रदूषण के पीछे मूलतः एकेश्वरवाद की आस्था है। संसार के ईसाई, यहूदी और मुसलमान एकेश्वरवाद और उसके निहितार्थों को सहज वस्तु मानते हैं। मैं भी ईसाई धर्म में पला हूं, लेकिन मैंने ईसा से पहले की यूनानी संस्कृति और लैटिन साहित्य का भी अध्ययन किया है, जिसने मेरे चिंतन पर बहुत प्रभाव डाला है और मुझे यह चेतना प्रदान की है कि ईसा-पूर्व के मेरे पुरखे एकेश्वरवादी नहीं थे।

वसुंधरा 'मां' न रही

एकेश्वरवादी आस्था से पहले के लोग प्रकृति को 'प्राकृतिक संसाधनों का खजाना' भर नहीं मानते थे। उनके लिए प्रकृति एक 'देवी' थी, वसुंधरा 'मां' थी; उस पर उगने वाली वनस्पति, उस पर मनुष्य की तरह घूमने-फिरने वाले पशु और धरती के कटोरे में भरी हुई धातुएं सबमें वे प्रकृति के दैवीय स्वरूप का दर्शन करते थे। मनुष्य का समूचा वातावरण दैवीय था, तथा पौधों की खेती और पशुओं को पालतू बनाने की विद्या उसकी इस आस्था को खंडित नहीं पाती थी कि प्रकृति दैवीय है। गेहूं चावल महज अनाज नहीं थे; वे स्वयं देवी का ही स्वरूप थे, जिसने मनुष्यों इनकी खेती करने की अनुमति दी थी उसकी कला सिखायी थी।

ईसापूर्व की यूनानी संस्कृति में प्रकृति दैवीय स्वरूप की आस्था दार्शनिक विरोध बावजूद अखंड बनी रही। प्राकृतिक घटनाओं में, पानी के झरनों और में, नदियों और सागर में, वृक्षों में बरगद में और बगीचे में उगाये गये अनाज और मदिरा में, पर्वतों में, और वज्रपात में, अर्थात् समस्त प्राकृतिक वस्तुओं और घटनाओं में देवत्व निहित ईश्वर संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त था। वह रूप था, एकरूप नहीं। वह एक अनुपम शक्तिसंपन्न अतिमानवीय व्यक्ति नहीं, अदृश्य शक्तिपुंज था।

यूनानी और रोमन जगत् ने जब धर्म ग्रहण किया, तो प्रकृति में से देवत्व सार निचोड़कर फेंक दिया गया। उसे मेव एवं परा-जागतिक परमेश्वर में कर दिया गया। यह सच है कि जन-एकेश्वरवाद के आवरण के तले अनेकेश्वरवादी आस्थाएं पलती रहीं हैं; कालांतर में स्थानीय देवताओं-ताओं—का स्थान संतों ने ले लिया।

संतुलन-नाश

समूचा पश्चिमी जगत् एकेश्वरवाद ग्रस्त है। किंतु जब हम पश्चिमी जगत्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वी सीमाओं को पार कर जाते हैं, तो हमें एकेश्वरवाद के जन्म से पहले के विश्व का दर्शन होता है। यूनानी और लैटिन साहित्य और वाङ्मय का अनुशीलन उन आस्थाओं को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

पूर्वी एशिया के जीवित धर्मों के बारे में प्रत्यक्ष अनुभव और यूनानी तथा रोमन धर्मों के अध्ययन के आधार पर मेरे मन में यह चेतना उत्पन्न हो गयी है कि ईसाई धर्म ने जिस एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया है, उसने प्रकृति के देवत्व की आस्था द्वारा मनुष्य के लोभ पर लगाये गये समस्त नियंत्रण हटा डाले हैं। जब मनुष्य प्रकृति को दैवीय मानता था, तब वह प्राकृतिक साधनों का उपयोग उस तरह करता था, जैसे बच्चा मां का दूध पीता है; और उसके लोभ पर नियंत्रण रहता था (मां का दूध बोतलों में नहीं भरा जाता, उसकी मिठाई भी नहीं बनायी जाती)। एकेश्वरवाद ने प्रकृति के प्रति जिस अनादर-भाव को जन्म दिया है, उसने अनेकेश्वरवादी आस्था वाले समाजों को भी प्रभावित किया है।

जापान-जैसे देश में भी, जहां शिंतो और बौद्ध धर्म पीढ़ियों से प्रकृति को मां मानना सिखाते रहे हैं, १८६८ में माईजी पुनःस्थापना के बाद से प्रकृति के प्रति अनास्था का ईसाई दृष्टिकोण हावी हो गया है। विशेषतः द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से जापान प्रकृति को पश्चिमी चश्मे से देखने लगा है। वह औद्योगीकरण द्वारा धन कमा रहा है और प्रदूषण का शिकार हो रहा है। जापान इस बात का उदाहरण है कि जिन देशों में एकेश्वरवाद की जड़ें गहरी नहीं हैं, वहां भी उसके प्रभाव के कारण मनुष्य और प्रकृति के बीच दीर्घकाल से चला आ रहा संतुलन बिगड़ रहा है।

बाइबल में कहा गया है कि तुम्हारा हृदय वहां रहेगा, जहां तुम्हारा खजाना होगा। पाश्चात्य लोगों ने भौतिक संपदा की वृद्धि को ही अपना असली खजाना मान लिया; अतः उनका हृदय उसी पर लगा है तथा उन्हें उसका पुरस्कार (प्रदूषण के रूप में) मिल रहा है।

हम टेक्नोलाजी के विकास के द्वारा आर्थिक विकास की धुन में व्यस्त हैं। हम प्रकृति का खुलकर इस्तेमाल कर रहे हैं; क्योंकि अपनी एकेश्वरवादी आस्था के परिणामस्वरूप हम उसे दैवीय नहीं मानते तथा उसे महज कच्चा माल समझते हैं। प्रदूषण यांत्रिक औद्योगीकरण का परिणाम है, न कि व्यापार, कृषि और पशुपालन का। मध्यकाल में मुसलमान विज्ञान और टेक्नोलाजी के मामले में ईसाइयों से बहुत आगे थे और यदि वे चाहते तो औद्योगीकरण के अग्रदूत बन सकते थे। रूस में भी पाश्चात्य टेक्नोलाजी का प्रयोग पीटर महान के जमाने से ही आत्मरक्षा के लिए हो रहा है। वह आत्मस्फुरित नहीं है। आज वह परमाणु-विज्ञान और अंतरिक्ष की खोज के क्षेत्रों में अमरीका के साथ प्रतिस्पर्द्धा में फंसा है।

बुनियादी मूल्यों का प्रश्न

पश्चिमी जगत् में बुनियादी मूल्यों का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रश्न सात शताब्दियों पहले असीसी के संत फ्रांसिस और उनके पिता की मुठभेड़ के समय उठा था और उसके बारे में अंतिम निर्णय उसी समय हो गया था। संत फ्रांसिस के पिता प्येत्रो बर्नार्दो आधुनिक पाश्चात्य व्यापारियों के अग्रदूत थे। उन्होंने धन कमाया, बेटे ने गरीबी का वरण किया। संत फ्रांसिस ईसा का अनुकरण कर रहे थे तथा अनजाने ही बुद्ध का भी। उन्होंने पिता के समृद्ध व्यवसाय की विरासत का परित्याग कर दिया। बुद्ध ने पिता का राज्य छोड़ा था। किंतु दोनों का प्रयोजन एक ही था। उन्होंने भौतिक संपत्ति और सत्ता को आध्यात्मिक प्रगति में बाधक पाया।

सारा पाश्चात्य जगत् संत फ्रांसिस की आत्मिक परंपरा का परित्याग कर बैठा है और उसने समूची प्रकृति पर स्वामित्व स्थापित कर लिया है, जिसके कारण उसकी आत्मा बीमार हो गयी है। संत फ्रांसिस भी येहवेह के बेटे थे, मगर उन्होंने सूरज को भाई, चांद को बहन तथा वायु, जल, पृथ्वी फूलों और घास को अपना आत्मीय माना था। संत फ्रांसिस ने अपने पिता के व्यवसाय और कारोबार में ही पश्चिमी जगत् के पतन के बीज देख लिये थे, अतः उन्होंने उस मार्ग का परित्याग करके मुक्ति का मार्ग दिखाया, जिसे उनके जगत् ने नहीं किया।

परित्राण का मार्ग

पश्चिम का मनुष्य प्रकृति से कट गया और उसने प्रकृति को विज्ञान तथा टेक्नालाजी की मदद से अपने अधीन कर लिया है। जिन औजारों से उसने अपने को इस संकट में फंसा लिया है, उनकी मदद से वह इससे छुटकारा नहीं पा सकता। उसको अपने आपको पुनः प्रकृति के साथ जोड़ना होगा; क्योंकि वह प्रकृति का अभिन्न अंग है। इसके लिए उसे विज्ञान का नहीं, बल्कि और ध्यान का, अर्थात् धर्म और दर्शन का सहारा लेना होगा।

समाधि का मार्ग संत फ्रांसिस ने दिखाया है। उन्होंने प्रकृति के साथ बंधुत्व की स्थापना की। ध्यान का मार्ग हिंदू ऋषियों ने प्रस्तुत किया है, जिसके अनुसार व्यक्ति अपने मन की आंख से भीतर की ओर देखकर अपनी आत्मा की गहराइयों में प्रवेश करता है और इस सत्य का दर्शन करता है कि उसकी आत्मा उस परम सत्य जैसी है, जो इस दृश्यमान जगत में, इसके पीछे और इससे परे विद्यमान है—'तत्त्वमसि'। आधुनिक मनुष्य को आज पुनः इस दर्शन की आवश्यकता है।

माता पृथिवी महीयम्।

—यह विस्तृत पृथ्वी हमारी माता है। [ऋग्वेद १.१६४-३३]

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।

—भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं। [अथर्ववेद १२.१.१२]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केजिता

विज्ञान-बिंदु

चीन चुपचाप खिसक रहा है, भारत उसे प्रशांत महासागर में धकेल रहा है। मगर वह खामोश बैठा है; कोई शोर-शराबा नहीं, कोई धौंस-धमकी नहीं। हो भी कैसे! बात कोई सेना और राजनीति की तो है नहीं। यह तो साजिश है भूगर्भीय शक्ति और सामग्री की, जिस पर इंसान का कोई बस नहीं।

पिछले दिनों बोस्टन (अमरीका) की विश्वविख्यात मैसाच्युसेट्स इंस्टिटयूट ऑफ़ टेक्नोलाजी के पीटर मोलनर और पाल टैपाय्नर नामक दो विज्ञानियों ने इस रहस्य का उद्घाटन किया है। उनके अध्ययन का आधार है भूसाधन-संबंधी अनुसंधान के लिए पृथ्वी की कक्षा में छोड़े गये अमरीकी उपग्रह के भेजे हुए फोटोग्राफ।

भौमिकीविज्ञों के अनुसार, पृथ्वी का ऊपरी भाग ६४ से लेकर ८० किलोमीटर तक मोटी और सख्त चट्टानों से बना है। जब ये चट्टानें आपस में एक दूसरे की ओर या एक दूसरे से परे खिसकती हैं, तो भूपर्पटी विरूपित हो जाती है और इन भ्रंशों (फॉल्ट्स) के सहारे नयी सीमाएं बन जाती हैं। यही स्थिति भूकंपों को भी जन्म देती है। प्रो. मोलनर का कहना है कि चीन के भूकंप-क्षेत्र से भी यह स्पष्ट है कि भूपर्पटी का उस ओर विचलन हो रहा है।

मोलनर-टैपाय्नर की इस नयी खोज से इस मान्यता पर भी शंका पैदा हो गयी है कि भारत की विचलनशील भूगर्भीय सामग्री निकटस्थ महाद्वीपीय ब्लाक के नीचे खिसक जाती है। यह संभव है कि करोड़ों वर्षों से चले आ रहे विचलन के फलस्वरूप कुछ भूगर्भीय सामग्री तिब्बती पठार के नीचे पहुंच गयी हो; परंतु अधिकांश प्रभाव चीन की स्थिति पर पड़ा है, जिसके परिणामस्वरूप उसे प्रशांत महासागर की ओर खिसकना पड़ रहा है।

अमरीकी भौमिकीविज्ञों के इस मत का समर्थन दो ब्रिटिश वैज्ञानिक डा. आर. ए. ब्लो और डा. एन. हैमिल्टन ने भी किया है। वे भी इसी नतीजे पर पहुंचे हैं कि भारत उत्तर की ओर खिसक रहा है; मगर उनके अध्ययन का आधार अमरीकी शोधकर्ताओं से एकदम भिन्न है। ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने भारत से लगभग ढाई सौ किलोमीटर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दक्षिण की ओर हिंद महासागर में खोदे गये एक गड्ढे से प्राप्त ४४ नमूनों का विश्लेषण किया है।

प्रसिद्ध विज्ञान-पत्रिका 'नेचर' में अपने खोज-परिणामों पर लिखते हुए डा. ब्लो और डा. हैमिल्टन ने बताया है कि लगभग चार करोड़ वर्ष पूर्व भारत २६ सेंटिमीटर प्रति वर्ष की दर से उत्तर की ओर बढ़ रहा था। लेकिन दो करोड़ वर्ष पहले यह गति घटकर १६ सेंटिमीटर रह गयी थी।

जिन बेसाल्ट नमूनों का विश्लेषण इन ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने किया है, उन्हें 'डीप सी ड्रिलिंग प्राजेक्ट' के कर्मचारियों ने निकाला था।

जैव-चुंबकीकरण

जीवधारियों पर चुंबकीकरण के प्रभाव का अध्ययन करने वाले कतिपय रूसी वैज्ञानिकों ने हाल ही में बताया है कि यदि गाय का चुंबकीकरण किया जाये, तो वह अधिक दूध देने लगती है। एक सोवियत समाचार-एजेंसी के अनुसार, चुंबकीकरण द्वारा दूध की मात्रा को ही नहीं, अपितु दूध में वसा (चिकनाई) की मात्रा को भी बढ़ाया जा सकता है। जैव-चुंबकीकरण के लिए जीवधारी को विद्युत-चुंबकीय क्षेत्र की प्रभावी सीमा में एक निश्चित समय तक रखा जाता है।

चुंबकीकरण का प्रभाव मनुष्य पर भी पड़ता है। शारीरिक दर्द से छुटकारा दिलाने, सूजन कम करने और गुर्दे की पथरी निकालने के लिए अनेक रूसी चिकित्सालयों में चुंबकीकरण का उपयोग भरपूर्वक किया जा रहा है। इस संदर्भ में रूसी वैज्ञानिकों का मत है कि चुंबकीकरण से जीवधारी के शरीर में उपस्थित प्रभावित होता है और यह चुंबकित अंततः अनेक जैव क्रियाओं के लिए वार होता है।

एक भारतीय शोधकर्ता डा. के. बालसुब्रमण्यम् (दिल्ली कालेज, के अनुसार चुंबकीकरण का जीवधारी प्रभाव सदा अनुकूल ही रहता हो, ऐसा है। उन्होंने बताया कि अपने एक प्रयोग दौरान उन्होंने कुछ चिड़ियों और चूहों सिर दो हफ्ते तक प्रतिदिन चार विद्युत-चुंबकीय क्षेत्र में रखे। लगभग दिन में इन जीवों की जननेंद्रियों का कम हो गया और उनकी उत्पादन काएं विगलित होने लगीं। जैवल विश्लेषण से यह बात सामने आयी चुंबकीकरण के फलस्वरूप पीयूष-ह का उत्पादन कम या समाप्त हो जा पीयूष-हारमोन का काम जीवधारी के नन-प्रक्रियाओं को नियंत्रित करना है।

संक्षारणरोध

वायुमंडल और पानी या नमी के से धातुओं का संक्षारण (कोरोजन) ऐसी हानि है, जिससे अभी तक पूरा छुटकारा नहीं मिल सका है। जहाजरानी आदि अनेक महत्त्वपूर्ण की जटिल समस्या है।

हाल ही में कारैकुडी (तमिल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर मनोहर इन दिनों शोध-संस्थान वैज्ञानिकों ने धातु-संक्षारण को रोकने की एक नयी तकनीक के विकास की घोषणा की है। इस तकनीक का नाम रखा गया है 'कैथोडिक प्रोटेक्शन'। इसमें अल्युमिनियम का एक विशेष धातु-मिश्रण, जिसमें जस्ते और पारे की मामूली मात्राएं भी मिली रहती हैं, फौलादी संरचना पर लेप के रूप में काम में लाया जाता है।

तूतिकोरिन बंदरगाह पर अल्युमिनियम एनोडों का क्षेत्रीय (फील्ड) परीक्षण किया जा चुका है, जिसके परिणाम काफी सफल रहे हैं। इससे प्रभावित होकर कोचीन जहाज कारखाने ने इसकी खरीद के लिए आर्डर भी दे दिया है।

शाकाहार : सुरक्षापूर्ण

मांस-भोजन का मनुष्य-देह पर क्या-क्या जैववैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, इस दिशा में पिछले दिनों अनेक प्रयोगशालाओं में शोधकार्य हुए हैं। नयी दिल्ली के मौलाना आजाद मेडिकल कालेज में औषध-विज्ञान के सहप्राध्यापक डा. एम. पी. एस. वर्मा की अध्यक्षता में एक टोली ने भी इस क्षेत्र में कार्य किया है।

डा. वर्मा का कहना है कि शाकाहारियों की तुलना में मांसाहारियों को मधुमेह होने की संभावना अधिक रहती है। वे बताते हैं कि साग-भाजियों के रेशे अनेक मामलों में मधुमेह से बचाव करते हैं। चूंकि मांसाहार में ये नहीं होते, अतः मांसाहारियों को यह सुरक्षा नहीं मिल पाती। पश्चिमी देशों में मांसाहार का प्रचलन अधिक है और इसीलिए वहां मधुमेह की आशंका भी अधिक रहती है। यों मिष्ठान्न अधिक खाने से भी मधुमेह का खतरा बढ़ जाता है।

देश के विख्यात रसायनशास्त्री तथा रायल सोसायटी के फेलो प्रो. तिरुवेंकटराजेंद्र शेषाद्रि (भूतपूर्व अध्यक्ष, रसायन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय), जिनका देहांत २७ सितंबर १९७५ को दिल्ली में हुआ।

सन १९२१ में इन्सुलिन के आविष्कार से पहले मधुमेह से मरने वालों में से ७५ प्रतिशत की मृत्यु का कारण होता था—विमूर्छा (कीटोएसीडोसिस)। यह दर अब घटकर २५ प्रतिशत के लगभग रह गयी है। हां, इन दिनों मधुमेह से मरने वाले मनुष्यों में से लगभग ५० प्रतिशत की मृत्यु का कारण होता है दिल की गड़बड़ियां।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में चंबकीकरण का उपयोग
है। इस संदर्भ में

चित्र : के. के. हेब्बार

गज़लें

—रामदरश मिश्र—

-१-

देर से ही सही, तुम आये बहुत अच्छा किया
इस विरह के बाद यों भाये, बहुत अच्छा किया
खो गये थे हाय, अपनी ही सुरंगों बीच मैं
खोजकर हमको यहां लाये, बहुत अच्छा किया
गरजनें सुनता रहा कब से तुम्हारी दूर से
आज जल बनकर यहां छाये, बहुत अच्छा किया
खो गया था यार, तुम पर सारे शिकवों का बल
आज अरसे बाद शरमाये, बहुत अच्छा किया
नदी, नालों, पर्वतों ने रास्ते रोके कई
भूल तुम हमको नहीं पाये, बहुत अच्छा किया
बोलने तो दीजिये हमको भी कुछ ऐ चांदनी
यों तो सब उच्छ्वास बधंवाये, बहुत अच्छा किया

-२-

डूबें उठा रही हैं नजर, राह दीजिये
साये जो आपके हैं जमे, साफ कीजिये
रोके खड़े हैं रास्ते कितने पगों के आप
भूधरजी, आज ताप बहुत, कुछ तो छीजिये
गिरती हैं छतें आपकी तो चीखिये नहीं
औरों के साथ आप भी बारिश में भीजिये
लहरों को कोसते ही रहे तीर खड़े आप
कितना हैं थक गये जनाब, चाय पीजिये
पगडंडियों को बांध लिये जा रहे कहां
बाजार बंद आपका है, हाथ मीजिये
बकने को फिर हैं बहक रहे ओंठ आपके
रुकिये हुजूर, एक मिनट, पान लीजिये।

चित्र : अंजू मेहरा

* ई, ४/११, माडल-टाउन, दिल्ली-९ *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंसाफ कहां है

कन्हैयालाल कपूर

अगर मनोहर इन दिनों यह पंक्ति बार-बार दोहराता है 'इंसाफ को आवाज दो, इंसाफ कहां है', तो इसका कारण यह नहीं कि उसकी मम्मी ने हलवा बांटते समय उसके साथ अन्याय किया था, या बड़े भाई साहब ने अकारण उसे थप्पड़ रसीद किया, बल्कि छमाही परीक्षा में उसे फेल कर दिया गया था। जहां तक इस मामले में मनोहर की राय का संबंध है, उसने प्रत्येक प्रश्न का उत्तर सोच-समझकर ही दिया था। अब यह दूसरी बात है कि परीक्षक को उसके उत्तर पसंद नहीं आये। मसलन गणित के पर्चे ही को लीजिये—प्रश्नों के साथ ही मनोहर के लिखे उत्तर भी हैं।

पहला प्रश्न था—एक दुर्ग में पचास आदमियों के लिए बीस दिन की खूराक मौजूद है। यदि दस दिन के बाद वहां पचीस आदमी और आ जायें तो यह खूराक कितने दिनों के लिए पर्याप्त होगी ?

उत्तर : यदि वे पचीस आदमी पेटू किस्म

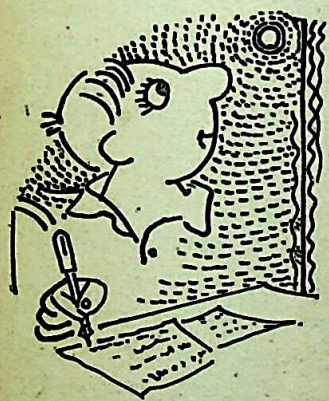

के नवयुवक हैं, तो सारी खूराक एक दिन में चट कर सकते हैं। इसके विपरीत यदि उनकी पाचन-शक्ति खराब रहती है, तो यह खूराक काफी दिनों तक चल सकती है। क्योंकि प्रश्न में इस बात को स्पष्ट नहीं किया गया है कि इन नवयुवकों की पाचन-शक्ति का क्या हाल है; इसलिए पूरे विश्वास के साथ यह कहना कि खूराक कितने दिनों के लिए पर्याप्त होगी, अति कठिन है।

प्रश्न २ : बीस आदमी या दस औरतें एक काम को पंद्रह दिन में कर सकती हैं, तो बताओ, उस काम को चालीस औरतें कितने दिनों में करेंगी ?

उत्तर : औरतें काम करने के बजाय बातें करना अधिक पसंद करती हैं। फिर जहां चालीस औरतें इकट्ठी हो जायें, वहां अच्छा-खासा विवाद या बलवा तो हो सकता है, लेकिन काम नहीं हो सकता। इसलिए हमारी राय में वह काम वहीं रहेगा, जहां चालीस औरतों के आने से पहले था। यदि विश्वास न हो, तो प्रयोग करके देख लीजिये।

प्रश्न ३ : मोहनलाल यदि बनारसीदास को ५०० रुपये ४ प्रतिशत वार्षिक दर पर ऋण दे, तो उसे सात वर्ष के बाद कितना

अनुवाद : सुरजीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्याज मिलेगा ?

उत्तर : यदि ये वही बनारसीदास हैं जो हमारे मुहल्ले में रहते हैं, तो मोहनलाल साहब संतोष रखें कि उन्हें एक कौड़ी भी ब्याज के रूप में नहीं मिलेगी; क्योंकि बनारसीदास (जिन्हें वास्तव में 'बनारसी ठग' कहना चाहिये) की आदत है कि वे ब्याज के साथ मूलधन भी पी जाते हैं। पर अगर ये कोई अन्य महाशय हैं, तो जितना ब्याज हिसाब से बनेगा, मोहनलाल को मिल जायेगा।

प्रश्न ४ : एक आदमी ने एक भैंस बीस रुपये में बेची और उसे दस प्रतिशत हानि हुई। यदि वह उसे तीस रुपये में बेचता तो उसे कितने प्रतिशत लाभ होता ?

उत्तर : आजकल जबकि एक अच्छी बकरी भी बीस रुपये में नहीं बेची जा सकती, यह मान लेना कि भैंस इतने रुपयों में बेची गयी है, अनुमान और सत्य के विरुद्ध है। लगता है कि वह भैंस बिलकुल बूढ़ी और नाकारा थी। यदि यह बात है तो उसे बेचने में लाभ ही लाभ था। हमारे विचार में तो भैंस के मालिक को ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि उसे ऐसी बेकार चीज से छुटकारा मिला और साथ ही बीस रुपये भी मिल गये। स्पष्ट है कि जिस भैंस का मूल्य मुश्किल से बीस रुपये तय पाया, उसे तीस रुपये में कौन मूर्ख खरीदेगा ! इसलिए किसी प्रकार के लाभ की तो आशा नहीं की जा सकती।

प्रश्न ५ : एक बंदर एक बांस पर चढ़ते समय एक मिनिट में तीन फुट चढ़ता है तो एक फुट फिसलकर फिर नीचे आ जा[illegible] यदि बांस की लंबाई बीस फुट हो तो [illegible] सिरे तक पहुंचने में बंदर को कितने मि[illegible] लगेंगे ?

उत्तर : लगता है कि आम बंदरों [illegible] तरह यह बंदर भी बड़ा शरारती है [illegible] जान-बूझकर फिसलने का प्रयत्न क[illegible] नहीं तो वह चाहे तो केवल एक छ[illegible] बांस के सिरे तक पहुंच सकता है। फ[illegible] नीयत में शरारत हो और खामख्वाह [illegible] नष्ट करने को जी चाहे, तो फिर कौ[illegible] कह सकता है कि बंदर बांस की चोटी[illegible] कब पहुंचेगा ! वैसे यह बात भी वि[illegible] योग्य नहीं कि वह पूरे तीन फुट चढ़ने [illegible] एक फुट नीचे को फिसल आता है; [illegible] जहां तक मेरा अध्ययन है, बंदरों [illegible] फासला नापने का कोई नाप नहीं होत[illegible] बिना किसी नाप के पूरे तीन फुट च[illegible] एक फुट फिसलना असंभव है।

बाकी पर्चों में भी मनोहर ने इसी[illegible] की बुद्धिमानी का प्रमाण दिया। उ[illegible] के लिए इतिहास के परचे में एक प्रश्न [illegible] 'हैदरअली पर एक संक्षिप्त नोट लि[illegible]

मनोहर ने उत्तर में लिखा—[illegible] हैदरअली आतिश उर्दू के प्रसिद्ध क[illegible] आप फैजाबाद में पैदा हुए और [illegible] हिजरी में स्वर्गवासी हुए। आपका [illegible] अद्वितीय है।'

कुछ अन्य प्रश्नों के उत्तर भी प्र[illegible] थे, जैसे :

प्रश्न : धर्मशाला कहां स्थित है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर : लगभग प्रत्येक नगर में; क्योंकि प्रत्येक नगर में मंदिर के अलावा एक-आध धर्मशाला अवश्य होती है।

प्रश्न : इन मुहावरों का अर्थ बताइये :

क. अंधेरे का उजाला।

ख. तीन में न तेरह में।

क. गागर में सागर बंद करना।

उत्तर : 'अंधेरे घर का उजाला' से अभिप्रेत है वह छोटा-सा मिट्टी का दीया, जिसे गरीब लोग अपनी झोंपड़ी में शाम के समय जलाते हैं। 'तीन में न तेरह में' अर्थात् ऐसा अंक जो न तीन में शामिल हो और न तेरह में। जैसे पांच, छह, सात आदि। 'गागर में सागर बंद करना' अर्थात्- कोई मूर्खता की बात करना। स्पष्ट है, सागर को गागर में बंद नहीं किया जा सकता।

प्रश्न : यह शेर किसका है ?

सुन चुके हाल बस तेरा आज़ाद
हमसे आगे सुना नहीं जाता।

उत्तर : शायद यह शेर मौलवी मुहम्मद हुसैन आजाद या मौलाना अबुल कलाम आजाद, या मिस्टर जगन्नाथ आजाद का है।

आपने मनोहर के उत्तर देख लिये। अब आप ही इंसाफ से कहिये कि क्या उसे फेल करके उसके साथ अत्याचार नहीं किया गया ? और क्या उसका वह पंक्ति गुनगुनाना न्यायसंगत नहीं है ?

इंसाफ को आवाज दो, इंसाफ कहां है ?

सुप्रसिद्ध हास्य-लेखक श्री कन्हैयालाल कपूर, जिन्हें उर्दू साहित्य की सेवा के लिए इस वर्ष 'गालिब पुरस्कार' प्रदान किया गया है।
[चित्र 'सारिका' से साभार]

★

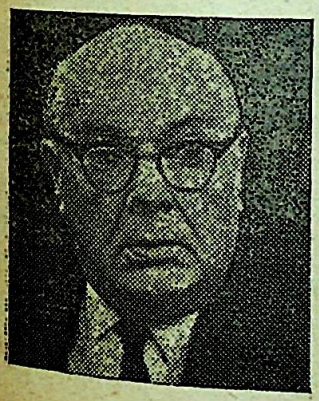

बेल्जियम के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ पाल हेनरी स्पाक एक बार अमरीका में भाषण के दौरे पर थे। हाउस्टन नगर में उनका भाषण सुनने के पश्चात् एक महिला ने उनसे कहा—'आपसे मैं बहुत प्रभावित हुई! आपका व्यक्तित्व विंस्टन चर्चिल की तरह है, और आप चार्ल्स बोयर (प्रसिद्ध अभिनेता) की तरह भाषण देते हैं।'

'मैडम', स्पाक ने उत्तर दिया—'मैं तो चाहता हूं कि मैं देखने में चार्ल्स बोयर जैसा लगूं और भाषण चर्चिल की तरह दे सकूं।'

—सुरेश पांडेय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारागार में जनमा साहित्य

विष्णु प्रभाकर

ब्रिटिश राजनेता-साहित्यकार बेंजामिन डिजरेली ने एक बहुत सार्थक बात कही है 'देशनिकाले या कैद की सजा पाये हुए दूसरे लोग यदि जीते निकल आयें तो, हो जाते हैं; मगर साहित्यिक व्यक्ति, उन दिनों को अपने जीवन के सबसे मधुर दिन गिनता है।'

हो सकता है, कुछ व्यक्तियों को इस 'मधुर' शब्द पर आपत्ति हो; क्योंकि श्री जवाहरलाल नेहरू—'थोड़ी मुद्दत तक भी रहने के लिए जेलखाना कोई खुशगवार नहीं है।'

न हो, परंतु सरस्वती के लाड़ले पुत्रों ने इन 'नाखुशगवार' दिनों का उपयोग प्रकार किया, उससे तो इन्हें 'मधुर' ही कहा जा सकता है। कारागार में कृष्ण महाराज ही जन्म नहीं हुआ था, विश्व का विपुल श्रेष्ठ साहित्य भी वहां रचा गया है। हम जवाहरलालजी के शब्द याद करें—'जेल और उसके अकेलेपन और बेकारी की वजह सोच-विचार की तरफ झुकाव होता है और जिंदगी की खाली जगह को अपनी जिंदगी इंसान के काम-काजों के इतिहास के लंबे सिलसिले की पिछली स्मृतियों से भरने की कोशिश होती है।'

ये स्मृतियां नाना रूपों में प्रकट होती हैं। कारागार का विपुल साहित्य स्मृतियों और अनुभूतियों का परिणाम है। उस सबकी चर्चा करना तो असंभव है ही; देश के साहित्य की भी पूरी रूपरेखा हम दे सकेंगे, इसमें भी संदेह है। सबसे पहले साहित्य पर ही एक दृष्टि डालें तो क्या ऐसा नहीं लगता कि यदि कोई माई का लाल लिखे पत्रों के कुछ संग्रह संपादित कर सके, तो वे किसी भी कृतिकार के लिए मानव-अंधकूपों में झांकने का अमूल्य साधन प्रस्तुत करेंगे? व्यक्तिगत रूप से ऐसे कुछ संग्रह प्रकाशित हुए भी हैं।

ये पत्र अनेक प्रकार के हैं। कुछ व्यक्तियों ने पत्रों के माध्यम से ही अनेक ग्रंथों की रचना की है। गांधीजी ने अपने सिद्धांतों और व्रतों को समझाते हुए अनेक कारागार से समय-समय पर लिखे, जो कालांतर में 'मंगल प्रभात' और 'आश्रमवासी' आदि पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित हुए। लेकिन इस क्षेत्र में सबसे अद्भुत काम नेहरूजी ने। उन्होंने नैनी जेल से अक्तूबर १९३० से अपनी बेटी की १३ वीं सालगिरह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्रों का एक सिलसिला शुरू किया, जो १९३३ में देहरादून जेल जाकर समाप्त हुआ। ये ही पत्र 'ग्लिम्प्सिस ऑफ़ वर्ल्ड हिस्टरी' (विश्व-इतिहास की झलक) के नाम से प्रकाशित हुए। इन पत्रों के सृजन-काल में उनकी जो मनोदशा थी, उसकी झलक उनके इन शब्दों में मिलती है–'मैं नहीं कह सकता कि मेरी चिट्ठियां तुम्हारे लिए मनोरंजक होंगी और तुम्हारे दिल में कुतूहल पैदा करेंगी, या नहीं। सच तो यह है कि मैं यह भी नहीं जानता कि ये चिट्ठियां तुम्हें कब मिलेंगी, या मिलेंगी भी या नहीं ?'

नेहरूजी भाग्यशाली थे कि लोग सदा उनके प्रति सौजन्य दिखाते रहे। पर सभी तो ऐसा भाग्य लिखाकर नहीं लाते। विकास पब्लिशिंग हाउस ने सीमाप्रांत के 'खुदाई खित-मतगार' श्री मुहम्मद यूनिस के उन पत्रों का, जो उन्होंने 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान सीमाप्रांत की विभिन्न जेलों से लिखे थे, 'कैदी के खत' के नाम से एक संग्रह प्रकाशित किया है। वे उस संघर्ष की कहानी तो कहते ही हैं, पर कैदी की मन:स्थिति पर भी प्रकाश डालते हैं। उन्होंने यह पत्र लिखे तो, पर किसे लिखे, क्यों लिखे, उन्हीं के शब्दों में सुनिये–'काश, इन खतों को बाहर भिजवाकर इनका जवाब पाता, ताकि इनका असर तो मालूम होता। इस यकतरफा कार्रवाई का मजा नहीं ..... ताहम इन चीजों से मेरी जानकारी बढ़ रही है। बाहर तो हम कातिल, चोर और दूसरी वारदातों को करने वालों को सजावार करार देते हैं और बगैर कुछ मालूम किये उनसे नफरत करते हैं। भला किसकी हिम्मत कि उनके विचारों से हमदर्दी कर सके या इनका नजरिया भी सामने रखे। मगर यहां इस मसले की गहराई में जाकर असलियत दिखती है और तस्वीर का दूसरा रुख नजर आ जाता है।'

कारागार कवियों के लिए भी बहुत उर्वर प्रमाणित हुए। वहां का वह मनहूस एकांत और वह दर्द-भरी मनोदशा जैसे कवि को अनुप्राणित कर देती है। वह यादों में गहरा खो जाता है। बहादुरशाह 'ज़फ़र' और सुब्रह्मण्य भारती, माखनलाल चतुर्वेदी, द्वारकाप्रसाद मिश्र, बालकृष्ण शर्मा नवीन, भवानी प्रसाद मिश्र, क्षेमचंद्र सुमन, कैफी आजमी, मजरूह सुलतानपुरी, अली सरदार

महात्मा गांधी [चित्र : प्रो. लेंगहैमर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाफरी, सोरिश कश्मीरी, ज्ञानी गुरमुख सिंह मुसाफिर ये कुछ जाने-माने नाम ही उ
हरण के लिए ले रहा हूं। यों तो जेल-जीवन ने बाबू संपूर्णानंदजी जैसे दार्शनिक को
कवि बना दिया था। काव्यग्रंथों में 'कृष्णायन' की याद आती है। पं. द्वारकाप्रसाद मि
ने १९४० से १९४५ के जेलवास के अरसे में इसकी रचना की थी। नवीनजी ने 'उर्मि
का अधिकांश भाग जेल में ही लिखा। अली सरदार जाफरी का संग्रह 'पत्थर की दीवा
जेल-जीवन की ही देन है। स्मृतियां उन्हें भी परेशान करती हैं। कभी वे अपने 'अवध
यादों में खो जाते हैं, कभी शादी के दिन की याद आती है, और कभी नन्हे बेटे की। 'प
की दीवार' अपनी सशक्त अभिव्यक्ति के लिए उल्लेखनीय है :

क्या कहूं भयानक है या हंसीं है ये मंजर
ख्वाब है कि बेदारी कुछ पता नहीं चलता
फूल भी हैं साये भी खाक भी है पानी भी
आदमी भी है मेहनत भी गीत भी हैं आंसू भी
फिर भी एक खामुशी रूहो-दिल की तन्हाई
इक तबील सन्नाटा जैसे सांप लहराये।

नियाज हैदर की यह लाइन 'सुबह की पहली किरन तक जिंदगी मुश्किल में है' ह
व्याख्या की मोहताज़ नहीं है। जफर की गजल 'न किसी की आंख का नूर हूं न किसी के
का करार हूं' तो दर्द की जीती-ज
तस्वीर है ही। नवीनजी देखते हैं कि
फिर आ गयी है, तो उनका दर्द इन
में अभिव्यक्त हो उठता है :

सोच क्या रहे हो खोये-खोये-से 'नवीन'
आज फिर आयी राखी पूनम सु
मेदिनी लहर रही, नभ में हहर बही
हर-हर कर जलधारा ये लुभावन
अरि-दुर्ग बीच अब लौं बिता चुके हो
एक-दो क्या, अरे देखो सात-सात
सोच क्या, अवश्य ध्वस्त होगी,
नष्ट-भ्रष्ट
बैरियों की यह शस्त्र-अस्त्रवती
[बरेली, १५ अगस्त १९
कवि के रूप में दो क्रांतिकारि

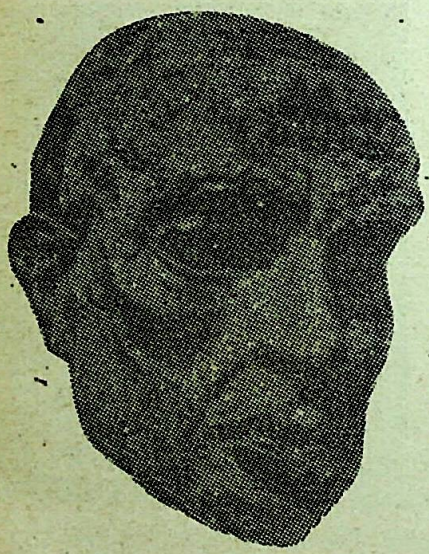

जवाहरलाल नेहरू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उल्लेख करना अप्रासांगिक न होगा। ये दोनों काकौरी केस के बंदी थे—रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाकउल्ला खान। बिस्मिल की यह कविता 'प्रेम कविता' के रूप में जेल से बाहर आयी, लेकिन इसके अर्थ कुछ और ही थे। उन्हें जेल से छुड़ाने की योजना थी, पर वह सफल नहीं हो रही थी, हुई भी नहीं। उसी समय उन्होंने यह कविता लिखी थी:

डा. राजेंद्रप्रसाद

मिट गया जब मिटने वाला फिर सलाम आया तो क्या
दिल की बरबादी के बाद उनका पयाम आया तो क्या
काश अपनी जिंदगी में हम ये मंजर देखते
यूं सरे तुरबत कोई महशर खराम आया तो क्या।

और अशफाकउल्लाह ने अंतिम क्षणों में ये उद्गार प्रकट किये थे:

यूं ही लिखा था किस्मत में चमन पैराये आलम ने
कि फसले गुल में गुलशन छूटकर है कैद जिंदा की
कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह
रख दे कोई जरा-सी खाके-वतन कफन में।

आइये, अब जरा कथाकारों की ओर चलें। शायद यह बहुत कम लोग जानते हैं कि नाटककार डा. गोविंददास ने अपना भारी-भरकम उपन्यास 'इंदुमती' जेल में ही लिखा था। जैनेंद्रकुमार कुछ कहानियां ही लिख पाये। क्रांतिकारी यशपाल ने अपनी बहुत-सी कहानियां जेल में लिखीं और अंग्रेजी में लिखी। 'पिंजरे की उड़ान' संकलन में अधिकांश ये ही कहानियां हैं। मन्मथनाथ गुप्त ने अपना पहला उपन्यास तो जेल में लिखा ही था, बल्कि उसकी कहानी भी उन्हें वहीं के एक कैदी से मिली थी। वह मार्मिक कथा उस कैदी की अपनी आत्मकथा है। भूख-हड़ताल के दिनों में वह कथा जैसे उन्हें बुरी तरह कुरेदती रही और अंत में उस उपन्यास के रूप में अवतरित हुई। ज्ञानी गुरमुख सिंह मुसाफिर का कहानी-संग्रह 'बखरी दुनिया' न केवल जेल में लिखा गया, बल्कि वे कहानियां भी जेल-जीवन पर हैं।

साहित्य को कारागार की एक और सशक्त देन है—डायरियों की विधा। चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य और एम. एन. राय की डायरियां तो प्रसिद्ध हैं ही; लेकिन गांधीजी के साथ विभिन्न जेलों में रहने वाले उनके निजी सचिवों ने जो डायरियां प्रस्तुत कीं, उनमें महादेव देसाई की डायरी के कई भाग तथा डा. सुशीला नैयड़ द्वारा लिखी गयी आगाखां महल की डायरी बहुत ही रोचक हैं। आगाखां महल की डायरी गांधीजी स्वयं देखते थे और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संशोधित भी करते थे, क्योंकि वे जानते थे कि यह एक दिन छपने वाली है। डा. जा
लिए जो काम बासवेल ने किया था, वही काम महादेवभाई ने गांधीजी के लिए कि
लेकिन जवाहरलालजी की तरह गांधीजी भी भाग्यशाली थे। उन्हें भी अपने जेल-
में लिखने-पढ़ने में परेशानी नहीं हुई। इसके विपरीत क्रांतिकारी एकदम अभावों में
लेखन की कहानी बहुत रोमांचकारी है।

आत्मकथा-साहित्य में बिस्मिल की आत्मकथा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। फां
तीन दिन पहले तक वे उसे लिखते रहे और चोरी-चोरी गोरखपुर के पत्रकार दशरथ
द्विवेदी को भेजते रहे। वहां से वह गणेशशंकर विद्यार्थी के पास पहुंची, छपी और ज
गयी। तीस साल बाद 'स्वतंत्र भारत' में फिर उसका पुनर्जन्म हुआ। इसके प्रथम संस्
में श्री मन्मथनाथ गुप्त और राजकुमार सिन्हा ने काकौरी के दूसरे शहीदों के बारे में
कुछ लिखा था।

पं. नेहरू ने अपनी आत्मकथा 'मेरी कहानी' जून १९३४ और फरवरी १९
बीच जेल में ही लिखी। उनके शब्दों में—'इसके लिखने का खास मकसद यह था कि मैं
निश्चित काम में लग जाऊं जो कि जेल-जीवन की तन्हाई के पहाड़-से दिन काटने के
बहुत जरूरी होता है। साथ ही मैं पिछले दिनों की हिंदुस्तान की उन घटनाओं का ज
भी कर लेना चाहता था, जिनसे मेरा ताल्लुक रहा है ताकि उनके बारे में मैं स्पष्टता से
सोच सकूं।'

डा. राजेंद्रप्रसाद ने भी अपनी आत्मकथा का अधिकांश भाग जेल में ही लिखा
मात्र स्मृति के सहारे लिखा है। उनका कहना है—'एक प्रकार से यह संस्मरण सज्ञा
रण है, क्योंकि इसमें केवल उन्हीं बातों का उल्लेख है जो लिखते समय स्मृति में बा

राजेंद्रबाबू ने जेल में एक और पुस्तक लिखी—'इंडिया डिवाइडिड'। यद्यपि
नहीं था कि वे कब जेल से बाहर आ सकेंगे और जो कुछ लिखा है वह छपेगा या न
भी उन्होंने अपने विचारों को साफ-साफ ऐसे रूप में लिपिबद्ध करने का निश्चय कि
दूसरों की समझ में आ जाये। वे पन्ने के दोनों ओर छोटे-छोटे अक्षरों में लिखते थे और
बीच में चेपियां भी लगाते रहते थे। सरकार की ओर से आपत्ति हुई कि ये अक्षर पढ़
जा सकते। पांडुलिपि-टाइप होनी चाहिये। स्वयं उसी ने टाइपिस्ट की सुविधा कर दी
छूटने के पहले दिन यह पुस्तक समाप्त हुई और इसे बाहर लाने की इजाजत मिल गयी

मन्मथनाथ गुप्त ने प्रेमचंद और शरतचंद्र पर अपनी दोनों पुस्तकें जेल में ही लि
इसके अतिरिक्त 'ऐतिहासिक भौतिकवाद', 'अगस्त क्रांति और प्रतिक्रांति', 'क्रां
स्वभाव' और 'आत्मकथा' भी जेल-जीवन की ही देन हैं। पं. कमलापति त्रिपाठी ने
जीवन', प्रिंसिपल छबीलदास ने 'फांसी की कोठरी' और सज्जाद जहीर ने प्रग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंदोलन का इतिहास 'रोशनी' लिखने का अवकाश जेल में ही पाया।

लेकिन अभी तो हमने उन सभी ग्रंथों की चर्चा नहीं की, जिन्होंने देश में ही नहीं, विदेशों में भी ख्याति प्राप्त की। लोकमान्य तिलक स्वराज्य-मंत्र के देने वाले ही नहीं थे, बल्कि भारतीय मनीषा के उज्ज्वल प्रतीक भी थे। उन्होंने अपने तीनों प्रसिद्ध ग्रंथ 'द ओरायन,' 'आर्कटिक होम इन वेदाज' तथा 'गीता-रहस्य' कारागार में ही लिखे। सार्वजनिक जीवन की व्यस्तता से मुक्ति यहीं मिल सकती थी।

'श्रीमद्भगवद्गीता-रहस्य' २ नवंबर १९१० से ३० मार्च १९११ तक मांडले नगर के कारावास में लिखा गया और पेंसिल से लिखा गया। तिलक के शब्दों में 'ग्रंथ के संबंध में तीन वक्त तीन हुक्म आये। सब पुस्तकें मेरे पास रखने का कुछ दिन बंद होकर सिर्फ चार पुस्तकें एक ही समय रखने का हुक्म हुआ। उस पर सरकार को अर्ज करने पर ग्रंथलेखन के लिए सब पुस्तकें मेरे पास रखने की परवानगी हुई। कागज देने आते वे छुटे न देकर जिल्द-बंद किताब बांधकर देते। भीतर के सफे गिनकर और उन पर दोनों ओर नंबर लिखकर देते और लिखने को स्याही न देते; सिर्फ पेंसिल छीलकर देते थे।'

इतना नहीं, इन ग्रंथों की पांडुलिपियां भी बहुत दिनों तक सरकार के पास ही पड़ी रहीं।

जवाहरलालजी ने 'डिस्कवरी आफ इंडिया' (हिंदुस्तान की कहानी) भी अहमदनगर किले की जेल में ही लिखी। वे बराबर इतिहास से इसीलिए जुड़े रहे कि उन्हें जेल में जाहिर तौर पर काम करने की गुंजाइश नहीं रहती थी। 'जब दरअसल मुझे किसी काम में लगने की आजादी नहीं रह गयी, तब मैंने गुजरे हुए जमाने और इतिहास को कुछ इस तरह से समझने की कोशिश की।'

अहमदनगर के किले में ही मौलाना आजाद ने 'गुबारे ख़ातिर' की रचना की। वह अत्यंत रोचक साहित्यिक निबंधों का संग्रह है। चाय कैसे पीनी चाहिये, यह बताना भी वे नहीं भूलते।

एम. एन. राय ने भी कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें जेल में ही लिखीं। 'सायन्स एंड सुपरस्टिशन' के अतिरिक्त 'फिलोसाफिकल कान्सिक्वेन्सिस ऑफ़ माडर्न सायन्स' उनकी उल्लेखनीय कृति है। लेकिन अभी तक यह प्रकाशित नहीं हो सकी। 'मेम्वार्स ऑफ़ ए कैट' के साथ एक रोमांचक कहानी जुड़ी है। कारागार में सीधे वे अंग्रेजों पर आक्रमण नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने बिल्ली को प्रतीक बनाकर पुस्तक लिखी। क्योंकि कागज बहुत कम मिलता था, इसलिए वे बहुत बारीक अक्षर लिखते थे। इसी प्रसंग में सर्वश्री रामवृक्ष बेनीपुरी, उपेंद्र गंगोपाध्याय और बारींद्र कुमार घोष के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

देवली कैंप का एक मनोरंजक किस्सा सुनने में आया है। एक मित्र ने यूरोप के सेक्स-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन पर एक पुस्तक लिखी थी, लेकिन जेलर ने उसे इसलिए फाड़ दिया था कि उन्हें उनकी प्रतिष्ठा पर आंच आती थी। वे क्रांति की बात सह सकते थे, लेकिन यह बर्दाश्त नहीं।

बहुत कम लोग जानते हैं कि विनोबा के 'गीता-प्रवचन' की रचना भी धुलिया जेल में हुई थी। 'बी' क्लास मिलने पर भी वे 'सी' क्लास में ही रहे और फरवरी १९३२ से जून १९३२ तक प्रति दिन गीता पर प्रवचन देते रहे। साने गुरुजी ने इन प्रवचनों को लिपिबद्ध किया था। भारतन् कुमारप्पा की रचना 'इकोनामिक्स ऑफ़ परमनेन्स' जेल की ही देन है।

संपूर्णानंदजी ने लिखा है कि ब्रिटिश साम्राज्य की स्थिति के बारे में इससे बढ़ी टिप्पणी और क्या हो सकती है कि बुद्धिजीवी को फुरसत जेल में ही होती है। इस फुरसत का उन्होंने पूरा-पूरा लाभ उठाया। 'दर्शन और जीवन', 'चिद्विलास' और 'बाबा आदिदेश' उनकी ये तीनों महत्त्वपूर्ण रचनाएं फतहगढ़ और बरेली जेल में ही लिखी गयीं। उन्होंने कुछ वैदिक कहानियां भी लिखीं। 'वेदमंत्रों के प्रकाश में' इन्हीं कथाओं का संग्रह है।

कारागार में गांधीजी द्वारा रचित पुस्तकों में 'आरोग्य की कुंजी', 'बालपोथी', 'गीताबोध' और 'गीता-प्रवेशिका' का उल्लेख आवश्यक है। एक भाई को 'अनासक्ति' समझने में कठिनाई होती थी, तब उन्होंने इस विषय को सरल रीति से रखने के प्रयत्न में 'गीताबोध' की रचना की। उनके 'अनासक्ति-योग' का पंजाबी में अनुवाद गुरुमुखी मुसाफिर ने जेल में ही किया था। सामान मिलने में इन्हें भी कठिनाई होती थी। पैसे तक चुरानी पड़ती थी, लेकिन ये सब कठिनाइयां १९३० तक आकर समाप्त हो गयीं।

क्रांतिकारी भगतसिंह ने अपने जेल-जीवन में चोरी-चोरी चार पुस्तकों की रचना की थी। उनमें उनकी आत्मकथा भी थी, लेकिन वे सुरक्षा के लिए एक हाथ से दूसरे हाथ में जाते-जाते न जाने कहां खो गयीं और हम उस बुद्धिजीवी क्रांतिकारी को उसी की दृष्टि से समझने का अवसर खो बैठे।

कोई अंत नहीं कारागार में लिखे साहित्य का। मात्र एक रूपरेखा हम प्रस्तुत कर सके हैं। क्या यह अच्छा नहीं होगा कि डाक्टरेट के लिए थीसिस लिखने वाला कोई व्यक्ति इस क्षेत्र में काम करे? तब हम देखेंगे कि हमारे सामने एक ऐसा संसार प्रकट हो रहा है जो हमें अपने और अपने परिवेश के भीतर झांकने की दृष्टि देता है। वह सबको दिशा देने वाला बाह्य जीवन नहीं है; बल्कि वह आंतरिक व्यक्तिगत जीवन है, जो बाहरी दुनिया के तमाम बखेड़ों से प्रभावित हुए बिना खोज के अपने संतुलित और सीधे मार्ग पर बढ़ता रहता है।

—८३८, कुंडेवालान, दिल्ली-११००

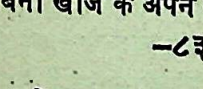

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतरराष्ट्रीय महिला-वर्ष के अवसर पर

नारी-प्रगति : मील के पत्थर

'यूनेस्को कूरियर' से उद्धृत

१६९१ : अमरीका—मैसेच्युसेट्स राज्य में स्त्रियों को मताधिकार मिला। पर १७८० में वह छीन लिया गया।

१७८८ : फ्रांस—फ्रांसीसी तत्त्ववेत्ता और राजनीतिज्ञ कान्डर्सेट ने मांग की कि स्त्रियों को शिक्षा पाने, राजनीति में भाग लेने और नौकरी करने का अधिकार हो।

१७९२ : ब्रिटेन—नारी-अधिकारों की आद्य योद्धा मेरी वुल्स्टोनक्राफ्ट की पुस्तक 'ए विंडिकेशन ऑफ राइट्स ऑफ विमेन' का प्रकाशन।

१८४० : सं. रा. अमरीका—लुक्रीशिया मॉट ने स्त्रियों और नीग्रो लोगों के लिए समानाधिकार की मांग करते हुए 'ईक्वल राइट्स एसोसिएशन' की स्थापना की।

१८५७ : सं. रा. अमरीका—८ मार्च को न्यूयार्क की सिलाई-उद्योग और वस्त्रोद्योग की मजदूरिनों ने पुरुषों के बराबर मजदूरी और १० घंटे के कार्य-दिवस के लिए हड़ताल की।

१८५९ : रूस—सेंट पीटर्सबर्ग में नारी-विमुक्ति आंदोलन का आरंभ।

१८६२ : स्वीडन—स्त्रियों को म्युनिसिपल चुनावों में मताधिकार दिया गया।

१८६५ : जर्मनी—लुइज़ी ओट्टो द्वारा जर्मन महिलाओं के महासंघ की स्थापना।

१८६६ : ब्रिटेन—तत्त्ववेत्ता और अर्थशास्त्री जान स्टुअर्ट मिल द्वारा स्त्रियों के लिए मताधिकार की मांग।

१८६८ : ब्रिटेन—नेशनल विमेन्स सफ़र्जेट सोसायटी की स्थापना।

१८६९ : सं. रा. अमरीका—नेशनल विमेन्स सफ़रेज एसोसिएशन (राष्ट्रीय नारी मताधिकार संघ) की स्थापना हुई। व्योमिंग राज्य ने स्त्रियों को मताधिकार दिया, ताकि वह अमरीकी संघ का सदस्य होने के लिए आवश्यक मतादार कोटा प्राप्त कर सके।

१८७० : स्वीडन व फ्रांस—चिकित्साशास्त्र के अध्ययन का द्वार स्त्रियों के लिए खोल दिया गया।

तुर्की—लड़कियों की प्राथमिक और माध्यमिक शाला की अध्यापिकाओं के प्रशिक्षण के लिए ट्रेनिंग कालेज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खुला।

१८७४ : जापान—लड़कियों के लिए पहला टीचर्स ट्रेनिंग कालेज खुला।

१८७८ : रूस—सेंट पीटर्सबर्ग में प्रथम महिला विश्वविद्यालय (बेत्सुजेव विश्वविद्यालय) स्थापित हुआ।

१८८२ : फ्रांस—प्रसिद्ध लेखक विक्टर ह्यूगो की संरक्षकता में नारी-अधिकार लीग की स्थापना हुई।

१८८८ : सं. रा. अमरीका — सूसन बी. एंटनी ने 'यू. एस. इंटर नेशनल कौंसिल ऑफ़ विमेन' की स्थापना की। यूरोप और उत्तर अमरीका के नारी-संघटनों ने वाशिंग्टन में 'इंटर-नेशनल कौंसिल ऑफ़ वि न' की स्थापना की।

१८९३ : न्यूजीलैंड—स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त हुआ।

१९०१ : फ्रांस—फ्रांसीसी संसद में पहली बार नारी-मताधिकार के प्रश्न पर बहस हुई।

नार्वे—स्त्रियों ने म्युनिसिपल चुनावों में मतदान शुरू किया।

१९०३ : ब्रिटेन—एमेलाइन पैंकहर्स्ट ने नेशनल विमेन्स सोशल एंड पोलि-टिकल यूनियन (डब्ल्यू. एस. पी. यू.) की स्थापना की।

१९०४ : सं. रा. अमरीका—इंटरनेशनल वुमन सफ़रेज एलायन्स की स्थापना।

१९०५ : ब्रिटेन— मैंचेस्टर में नारी आंदो-लनकर्त्रियों की सभा; एनी कैनी तथा क्रिस्टाबेल पैंकहर्स्ट की गि फ्तारी।

१९०६ : फिनलैंड—स्त्रियों को मताधि प्राप्त हुआ।

१९०८ : ब्रिटेन—विमेन्स फ्रीडम लीग स्थापना। नारी-आंदोलनकर्त्रियों सभाएं व प्रदर्शन; क्रिस्टाबेल पै हर्स्ट और फ्लोरा ड्रमांड की गि फ्तारी।

१९१० : डेन्मार्क—कोपनहेगन में द्वि अंतरराष्ट्रीय समाजवादी म कांग्रेस में क्लारा जेटकिन ने प्र किया कि न्यूयार्क की मजदूरनि हड़ताल (८ मार्च १८५७) की में ८ मार्च को महिला-दिवस म जाया करे।

१९११ : जापान—सीतोशा नारी वि आंदोलन का सूत्रपात।

१९१२ : चीन—नारी-आंदोलन के संघ टनों ने अपनी गतिविधियों के न्वयन के लिए नानकिंग में सं अधिवेशन किया, स्त्री-पुरु समानाधिकार की मांग की २० मई को राष्ट्रपति सन या को एतदर्थ प्रार्थना-पत्र भेंट कि

१९१३ : नार्वे—स्त्रियों को पुरुषों के स मताधिकार प्राप्त हुआ। आस्ट्रिया, स्विट्जरलैंड, डेन्मा मार्च को स्त्रियों ने अंतरराष्ट्री महिला-दिवस मनाया और व व चुने जाने के अधिकार की मांग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९१४ : तुर्की—इस्तंबूल विश्वविद्यालय में लड़कियों के लिए विभाग खोला गया।

१९१५ : स्वीडन—लेखिका एलेन के ने मांग की कि संतति-नियमन संबंधी जानकारी सबको सुलभ की जाये और अविवाहिता माताओं के लिए सार्वजनिक कल्याण-व्यवस्थाएं की जायें।

१९१७ : हालैंड और रूस — स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त हुआ।

सोवियत रूस—अक्तूबर क्रांति ने स्त्रियों के लिए समान राजनैतिक आर्थिक और सांस्कृतिक अधिकारों की घोषणा की और सोवियत संविधान (१९१८) ने उसकी पुष्टि की।

१९१८ : ब्रिटेन—तीस वर्ष से ऊपर की स्त्रियों को मत देने और पार्लमेंट में बैठने का अधिकार प्राप्त हुआ।

१९१९ : जर्मनी और चेकोस्लोवाकिया—स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त हुआ।

१९२० : सं. रा. अमरीका—समस्त राज्यों में स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त हुआ।

१९२३ : दक्षिण अमरीका—सांतियागो (चिली) में समस्त अमरीकी राष्ट्रों के अंतरराष्ट्रीय संमेलन ने स्त्रियों के अधिकारों के संबंध में ऐतिहासिक प्रस्ताव पास किया।

तुर्की—कमाल अतातुर्क के अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद नारी-मुक्ति की अपूर्व प्रगति।

१९२५ : जापान—३० मार्च को डायट (जापानी संसद) द्वारा पारित 'सार्वत्रिक' मताधिकार विधेयक में भी स्त्रियों को मताधिकार से वंचित रखा गया। इससे नारी-आंदोलन तेजी से भड़का।

भारत—श्रीमती सरोजिनी नायडू भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी गयीं। इससे पूर्व १९१७ में श्रीमती एनी बेसेंट कांग्रेस अध्यक्ष बन चुकी थीं।

१९२८ : दक्षिण अमरीका—हवाना में अमरीकी राष्ट्रों के छठे संमेलन में अंतर-अमरीकी महिला कमिशन की स्थापना हुई।

१९२९ : ईक्वाडोर—स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त हुआ।

१९३२ : स्पेन—गणतंत्रीय संविधान में स्त्रियों को मताधिकार दिया गया।

नारी [चित्र : पिकासो]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९३४ : फ्रांस–फासिज्म और युद्ध के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए महिलाओं का अंतरराष्ट्रीय संमेलन पेरिस में हुआ।

१९३६ : फ्रांस–नोबेल पुरस्कृत विज्ञानी श्रीमती आइरीन जोलियो-क्यूरी समेत तीन महिलाएं लियोन ब्लम के जनमोर्चे की सरकार में मंत्री बनीं, फिर भी स्त्रियां मताधिकार से वंचित ही रहीं।

१९४५ : फ्रांस और इटली– स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त हुआ।

१९४६ : जापान–छह स्त्रियां डायट की सदस्य चुनी गयीं।

१९५१ : अंतरराष्ट्रीय श्रम संघटन ने जून १९ को समान मूल्य के काम के लिए स्त्री व पुरुष श्रमिकों को समान मजदूरी देने का नियम पास किया।

१९५२ : राष्ट्रसंघ की महासभा ने भारी बहुमत से स्त्रियों के राजनैतिक अधिकारों का नियम पास किया।

१९५७ : ट्यूनीशिया–पुरुष और स्त्री की समानता का नया कानून पास किया।

१९५९ : श्रीलंका–श्रीमती सिरिमा भंडारनायक विश्व की प्रथम महिला प्रधान-मंत्री बनीं।

१९६१ : पैरागुए–स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त हुआ। अब संपूर्ण दक्षिण अमेरीका में स्त्रियों को मताधिकार है।

१९६२ : अल्जीरिया–तेरह महिलाएं राष्ट्रीय असेम्बली की सदस्य चुनी गयीं।

१९६४ : पाकिस्तान–कुमारी फातिमा जिन्ना ने राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ा, जो विश्व में ऐसा पहला अवसर है।

१९६७ : ईरान–परिवार-रक्षा कानून में जो पत्नी को पति की अनुमति के बिना नौकरी करने का अधिकार है। (ईरान ने १९६३ से बुर्का प्रथा पर रोक लगा दी है।)

१९७१ : स्विट्जरलैंड–स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त हुआ।

१९७५ : अंतरराष्ट्रीय महिला-वर्ष। क्यूबा–८ मार्च को परिवार कानून लागू किया गया, जिसके अनुसार घर-काम में हाथ बंटाना पुरुषों के लिए लाजमी है।

नारी : अपराजेय

मेरे खयाल में पुरुषों और स्त्रियों में जो वास्तविक अंतर है, वह है दुःख सहने के उनके तरीके में। स्त्री दुःख को कबूल करना सीख जाती है –शारीरिक और आत्मिक दोनों दृष्टियों से। परंतु पुरुष संघर्षरत रहता है, और उसका वह संघर्ष क्रमेण कमजोर पड़ता जाता है और अंत में उसे हार माननी पड़ती है। दुःख कभी भी स्त्री को हराता नहीं, कमजोर नहीं बनाता। वह उसका एक अंग बन जाता है। वह उसे जीवन के और अधिक निकट ले लाता है, जबकि पुरुष को वह मौत के निकट ले जाता है। –फ्रेडरिक प्रोस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धिक्कार महिला-वर्ष!

जर्मेन ग्रियर

बिना इस बात को ध्यान में रखे कि राष्ट्रसंघ के सभी सदस्य देश किसी न किसी रूप में महिलाओं का उत्पीड़न और शोषण करते हैं, एक उजली सुबह राष्ट्रसंघ-सचिवालय के कुछ भलेमानुसों ने यह तय कर डाला कि इस वर्ष को अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मना डाला जाये।

राष्ट्रसंघ में छाया हुआ खास तरह का असमंजस और दृष्टिहीनता की यह एक मिसाल है। खुद राष्ट्रसंघ-सचिवालय ने अपने यहां कितने प्रतिशत नौकरियां महिलाओं को दी हैं पर गौर करने से यह विडंबना अपने आप स्पष्ट हो जायेगी।

वास्तव में यह महिला-वर्ष मनाने के पीछे पश्चिमी देशों का जोर था, जहां नारीवाद आजकल एक फैशन के रूप में खूब लोकप्रिय हो रहा है। और पश्चिमी देशों की जीवनशैली राष्ट्रसंघ पर हावी है। यह बात और है कि इस जीवनशैली का हमारे इस छोटे-से ग्रह की बहुसंख्यक आबादी के जीवन से कोई संबंध नहीं है।

इस ढोंग का नतीजा सिर्फ इतना निकला है कि जहां आज भी अधिकांश महिलाएं या तो साल-भर गर्भवती रहती हैं, अथवा बिना वेतन के तरह-तरह का श्रम करने में जुटी रहती हैं। ऐसे देशों की चंद फैशनपरस्त और उच्चवर्गीय महिलाओं का 'शादी करें या व्यवसाय अपनायें' जैसे विषयों पर महिला-पत्रिकाओं के स्तर पर गोष्ठियां करने का मौका मिल गया है। एशिया और अफ्रीका में खेतों में पशुओं की तरह जुतने वाली और सिर पर गुम्मा ढोने वाली महिलाएं अगर चाहें, तो महिला-वर्ष की खुशी में दो क्षण के लिए अपना काम रोककर वर्जीनिया स्लिम सिगरेट पीकर मर्दों के बराबर होने का संतोष कर सकती हैं।

कटु सत्य यह है कि इस वर्ष भी पिछले और उससे पिछले तमाम वर्षों की तरह हजारों बच्चियां सिर्फ इसलिए मर जायेंगी कि खाना खिलाने में लड़कों को प्राथमिकता दी जाती है। हजारों स्त्रियों को उन देशों में जननेंद्रिय को विकृत कराना पड़ेगा, जहां यह जघन्य परंपरा आज भी कायम है। लाखों करोड़ों स्त्रियों को फुसलाकर दवाइयों और सर्जन के चाकू-कैंचियों के माध्यम से जनसंख्या-नियंत्रण की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बलिवेदी पर अपने प्रजनन-अंगों को चढ़ाना पड़ेगा, जैसे कि यह एकमात्र उन्हीं की जिम्मेवारी हो।

युद्ध भी चलते रहेंगे और संसार के अनेक भागों में स्त्रियों के साथ बलात्कार, हत्या और वेश्यावृत्ति का जुल्म जारी रहेगा। १९७५ में भी राष्ट्रसंघ अपने घोषणा-पत्र में नारी के समान अधिकार से संबंधित संशोधन पास न करने में सफल होगा। स्त्रियों को अपनी प्रजनन-शक्ति पर स्वयं नियंत्रण का अधिकार मिलने की संभावना बढ़ने के बजाय घट जायेगी। इन सब बातों से बेफिक्र राष्ट्रसंघ 'महिला समानता, विकास और शांति' पर घंटों बकझक करता रहेगा।

इस महिला-वर्ष में राष्ट्रसंघ के लगभग आधे सदस्यों ने महिला-समानता की घोषणा को मौखिक रूप से भी कबूल नहीं किया है। १३८ सरकारों में से केवल १६ ने महिला-वर्ष मनाने के लिए धन देने का वादा किया और उनमें से भी भुगतान केवल १३ ने किया। फिनलैंड जैसे देश ने जितना दिया, उससे केवल दस गुना ज्यादा महाशक्ति अमरीका ने दिया। कुल वादे केवल १३ लाख ५० हजार डालर के थे और उनमें से १२,०९,६३३ डालर वसूल हुए।

स्थिति यह है कि न तो राष्ट्रसंघ पर महिलाओं का नियंत्रण है, न इसकी सदस्य सरकारों पर, न बड़ी-बड़ी व्यापारिक कंपनियों पर और न राष्ट्रों के खजानों पर। इसके बावजूद डर यही है कि महिला-वर्ष के फीकेपन के लिए नारी-समुदाय को दोषी ठहराया जायेगा और कहा जा कि उन्होंने स्वयं ही पर्याप्त उत्साह दिखाया।

यह बात कि राष्ट्रसंघ के पास शक्ति नहीं है कि वह अपने सदस्यों पर डालकर महिलाओं का शोषण बंद सके, किसी तरह के दिखावे और पोस्टर से छिप नहीं सकती। वास्तव में राष्ट्र अपने सदस्यों के विभिन्न गुटों से भयभीत है कि महिलाओं का शोषण वाले देशों के विरुद्ध निंदा-प्रस्ताव साहस भी नहीं जुटा सकता। और जिन देशों में औरतों को मत देने का कार नहीं है, जहां उन्हें अपना चेहरा रखना पड़ता है, जहां पतियों को पत्नी को मार डालने का अधिकार हुआ है और जहां उनके पैरों में बेड़ियां कर रखा जाता है, उन देशों के प्रतिनि से राष्ट्रसंघ जवाब-तलब तक नहीं सकता। उलटे ये देश बड़ी शान से यहां की कुछ पालतू महिलाओं को राष्ट्र के मंच पर नारीवाद के पक्ष में बेरोक भाषण झाड़ने के लिए भेजने की दिखाते हैं।

जिस सलाहकार-समिति ने विश्व पर महिला-वर्ष मनाने के लिए कार्य बनायी, उसकी अध्यक्ष ईरान के बहन राजकुमारी अशरफ थीं। उन्हें पूछने की किसी की हिम्मत न पड़ी कि की पहली महिला-वकील मेहरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यान के साथ क्या हुआ, जिसने संसद् से इसलिए इस्तीफा दे दिया कि ईरान के पासपोर्ट-कानून के अनुसार पत्नी के विदेश जाने के लिए पति की लिखित अनुमति होना जरूरी होता है।

पागल बना देने वाली बात यह है कि महिलाएं अपने को राष्ट्रसंघ के इस प्रपंच से अलग भी नहीं रख सकतीं; क्योंकि डर है कि वैसा करने से महिलाओं के हित-लाभ के नाम पर उनके हितों का गला न घोंट दिया जाये, जैसा कि अक्सर होता है। अभी पिछले साल मनाये गये जनसंख्या वर्ष की कार्य-योजना से महिलाओं को राष्ट्रसंघ के अज्ञान और पाखंड का जो दर्शन हुआ, उसने बहुत-सी विचारशील नारियों को चौकन्ना कर दिया है। इस कार्य-योजना में कूटनीतिक दोगली शब्दावली का प्रयोग करते हुए बस एक ही बात पर जोर दिया गया कि जन-संख्यावृद्धि रोकने की सीधी जिम्मेवारी महिलाओं पर है और इसके लिए उन्हें ही जन्म-नियंत्रण के उपायों को अपनाना चाहिये।

उसी वर्ष रोम में 'महिलाएं और खाद्य' विषय पर जो प्रस्ताव पास हुआ, उसमें महिलाओं को केवल बच्चों को दूध पिलाने वाला प्राणी मानकर सारी समस्याएं और सिफारिशें प्रस्तुत की गयी थीं। अर्थात् महिलाओं को अच्छा आहार मिलना इसलिए जरूरी है कि बच्चे पैदा करके उन्हें दूध पिलाना होता है—इसलिए नहीं कि वे भी इंसान हैं और उनका भी अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व है, जो मातृत्व के अलावा भी कोई अर्थ रखता है। इस बात पर कतई गौर नहीं किया गया कि जो स्त्रियां बच्चे नहीं पाल रही हैं, वे भी जनसंख्या-वृद्धि और तज्जनित-खाद्य तंगी से मारे भूख के मर सकती हैं।

आज सारे संसार में स्त्रियों की नियति यही है कि आदमी से कम खायें, उनका बचा-खुचा खायें; लेकिन इस विडंबना की ओर शायद ही कभी राष्ट्रसंघ में किसी ने ध्यान आकर्षित किया हो।

गुस्सा इस बात पर आता है कि इस साल होने वाले चार क्षेत्रीय संमेलन 'महिलाएं और जनसंख्या' पर हैं। मक्कारी की इस हवा में यह तथ्य कि 'महिलाएं भी जनसंख्या हैं' जानबूझकर गायब कर दिया गया है, सो भी महिलावर्ष में।

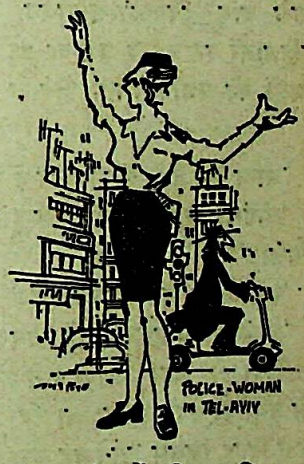

तेलअवीव में महिला-पुलिस
[चित्र : मारियो]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर महिला-वर्ष का आयोजन सही तरीके से किया जाता, उसके लिए पर्याप्त कोष उपलब्ध होता और पहले से तत्संबंधी विषयों पर अनुसंधान कराकर महत्त्वपूर्ण जानकारी एकत्र की जाती तो विश्व की आधी मूक मानव-जाति के बारे में व्यापक जानकारी प्रकाश में आ सकती थी। तब पता चलता कि इस आधी मानव-जाति का स्वास्थ्य, मनोबल, कार्यभार और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उसका योगदान क्या और कैसा है। तब नारी के कार्य का मूल्यांकन होता और आर्थिक-सामाजिक परिवर्तनों का उसके सामाजिक रुतबे और जीवन-शैली पर क्या प्रभाव पड़ा है, यह मालम होता। और वह सारी जानकारी महिला-वर्ग के बारे में यथार्थवादी विचार-विमर्श का आधार बन सकती थी।

इसके बाद जनसंख्या-आयोजन, युद्ध का महिलाओं पर प्रभाव, प्रभावी गुटों में महिलाओं की प्रभावशीलता इत्यादि का अध्ययन किया जाता और तब शायद की ५० करोड़ अशिक्षित महिलाओं भी कुछ की आवाज सुनी जाती, अवैतनिक घरेलू नौकरों के रूप में बिताने वाली लाखों नारियों की बारे में हमें आंखें खोलने वाली मिलती।

चूंकि यह तो सर्वथा स्पष्ट हो गया अंतरराष्ट्रीय महिला-वर्ष को सफल वाली एक भी परिस्थिति मौजूद नहीं इसलिए महिलाएं नारी-विरोधी ग्रस्त राष्ट्रसंघ के आयोजनों से निकले वाले हानिकारक नतीजों की आशंका ग्रस्त हैं और उन नतीजों को रोकने के प्रयत्नशील हैं।

आज उनके आगे सवाल यह नहीं है महिला-वर्ष उनके लिए क्या कर सकता सवाल यह है कि महिला-वर्ष उनके लिए क्या कर सकता है—यह आशंका उन्हें किये हुए है।

अनुवाद: वीरेंद्र

★

'भाग्य क्या है?' एक विद्वान ने मुल्ला नसरुद्दीन से सवाल किया।

'आपस में गुंथी हुई और एक-दूसरे को प्रभावित करने वाली घटनाओं का अंतहीन सिलसिला।'

'यह व्याख्या संतोषजनक नहीं है। मैं तो कार्यकारणभाव में विश्वास रखता हूं।'

'अच्छा! तो उधर देखिये,' नसरुद्दीन ने सड़क पर से गुजरते हुए एक जुलूस की ओर इशारा किया और कहा—'उस आदमी को सूली पर चढ़ाने ले जाया जा रहा है। अब बताइये कि उसे सूली पर क्यों चढ़ाया जा रहा है—क्या इसलिए कि किसी ने उसे चांदी का सिक्का दे दिया, जिससे उसने वह छुरा खरीदा जिससे उसने कत्ल किया, या क्या इसलिए कि किसी ने उसे कत्ल करते देख लिया, या कि इसलिए कि किसी ने उसे कत्ल करने से रोका नहीं?'

—अनु

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफलता : कुछ सूत्र

विशाखदत्त

एक बार किसी ने हेनरी फोर्ड से पूछा—'सफलता का रहस्य क्या है ?' हेनरी फोर्ड ने कहा—'सफलता का सबसे पहला रहस्य है—हर परिस्थिति के लिए तैयार रहना।'

ooo

महान उपन्यासकार चार्ल्स डिकन्स से किसी ने पूछा—'आपकी महान सफलता का कारण क्या है ?'

डिकन्स ने उत्तर दिया—'जीवन में मैंने जो कुछ भी करने की कोशिश की है, उसमें पूरे दिल से चाहा है कि उसे अच्छे से अच्छा करूं। और मैंने जिस काम में भी दिल लगाया है, पूरा दिल लगाया है।'

ooo

संगीत-समीक्षक डीम्स टेलर ने फ्रेड्रिक स्टाक की सफलता का कारण बताते हुए लिखा है :

'वे जानते थे कि लोग अच्छे हैं। लोग जानते थे कि फ्रेड्रिक स्टाक अच्छे हैं। और स्टाक ने दूसरों पर दोष लगाने के बजाय सदा अपनी गलती को सुधारने की कोशिश की।'

ooo

प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक सामरसेट माम ने अपनी सफलता के बारे में लिखा है—'जिस एक चीज ने मेरे जीवन को सर्वाधिक प्रभावित किया है, वह है मेरा हकलाना। अगर मुझमें यह ऐब न होता, तो मैं भी संभवतः अपने भाइयों की तरह केंब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़ने जाता और फिर कभी-कभार फ्रांसीसी साहित्य के बारे में कोई नीरस-सी आलोचनात्मक पुस्तक लिख दिया करता।'

ooo

हर्बर्ट स्वूप ने अपनी सफलता के रहस्य के बारे में लिखा है—'सफलता का रहस्य तो मैं नहीं बता सकता, पर असफलता का रहस्य जरूर बता सकता हूं—हर किसी को खुश करने की कोशिश।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाकिस्तानी सिंधी कहानी :

नीला निशान

ताज बलोच

हम काफी-हाउस से निकलकर फुटपाथ पर आ गये। रात का काफी हिस्सा गुजर चुका था और हर कोई रिक्शे या टैक्सी से अपनी-अपनी मंजिल पर पहुंचने की कोशिश कर रहा था। अच्छी-खासी ठंड पड़ रही थी। मैंने कोट के बटन बंद किये और कालर ऊपर उठा दिये और घर की ओर चल दिया।

'अबकी बार तो तुमने बहुत कीमती कोट सिलवाया है?' मेरे साथ खड़े होकर उसने बहुत ही धीरे-से पहला प्रश्न किया।

अन्यमनस्कता में मैंने उसे कोई उत्तर नहीं दिया; मगर वह मेरे साथ-साथ चलने लगा। दिन की भीड़ में अगर ऐसी घटना पेश आ जाये, तो कोई असाधारण बात नहीं; लेकिन रात की खामोशी में और वीरान सड़क पर उसका यों मेरे साथ-साथ चलना मुझे न सिर्फ अच्छा न मालूम हुआ, बल्कि मुझे भय भी महसूस होने लगा।

'डर गये?' उसने मेरे भय को भांपते हुए व्यंग्य किया। अब भी मैंने उत्तर नहीं दिया और फुटपाथ छोड़कर सड़क पर चलने लगा।

'मुझसे कब तक और कहां तक [illegible] सकोगे?' उसने मासूम बच्चे की तरह [illegible] में लोट-पोट होते हुए कहा।

उसकी हंसी और आवाज ने मेरे [illegible] में बुरी तरह दहशत पैदा कर दी। [illegible] भय में कांपते हुए पीछे मुड़कर टैक्सी [illegible] रिक्शा के लिए निगाह दौड़ायी।

'तुम्हारा मकान इतना दूर नहीं [illegible] कोई टैक्सी वाला ले चलने को तैयार [illegible] जाये।' उसने नरम और सांत्वनापूर्ण [illegible] कहा।—'आज सुबह तुमने अपनी बीवी [illegible] था कि मेरे पास बिलकुल भी रुपये नहीं [illegible] फिर काफी-हाउस का इतना मोटा [illegible] कैसे चुकाया?'

'तुम कौन होते हो मुझसे पूछने [illegible] मैंने बेहद संयत होकर कहा।

'तो तुम मुझे नहीं पहचानते!' [illegible] एक बार फिर भयभीत करने वाला [illegible] कहा लगाते हुए कहा।

मैं उत्तर दिये बिना ही सड़क छोड़ [illegible] दूसरे फुटपाथ पर चलने लगा। [illegible] भूत की तरह मुझसे चिपटा रहा।

अनुवाद : हरपाल कौर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'आज तो बड़ा ऐश किया दोस्त ! आला दर्जे के रेस्तरां में डिनर और बेहतरीन काफी ! सिर्फ व्हिस्की की कसर रह गयी थी।' उसने कटाक्ष किया।

इधर मैं उससे अपना दामन छुड़ाने के लिए तेज-तेज कदम उठाता हुआ घर की ओर बढ़ रहा था।

'तुम्हारी बीवी तो बच्चों को सुलाकर तुम्हारा इंतजार करने की आदी हो गयी है। फिर तुम्हें इतनी जल्दी क्यों है ?' उसने एक बार फिर व्यंग्यपूर्ण चोट की। मैं पसीने में डूब-डूब गया। कोट के बटन खोल दिये और कालर नीचे करके चलने लगा। इधर वह अब भी मेरे साथ था।

'आज तुम्हारे बच्चों ने सालन न होने के कारण, बिना दूध की काली चाय से रात का खाना खाया और तुमने अपने दोस्त के साथ खूब ऐश किया।.....' उसने तीखा वार किया।

मैं गुमसुम सुना-अनसुना करके तेज-तेज कदम उठाता हुआ घर की ओर बढ़ने लगा।

'दूध वाले ने तुम्हारी बेगम को आज दूध देने से इन्कार कर दिया है। वह कह रहा था, मैं कोई लखपति तो हूं नहीं कि लगातार चार महीने का उधार बरदाश्त कर सकूं !'

मैंने कदम बहुत तेजी से बढ़ाये। उसके वाक्य बरछी बनकर मेरे कलेजे में घुसते गये; लेकिन भय के मारे अपने में इतना साहस पैदा न कर सका कि उसे कोई जवाब दे सकूं।

'तुम्हारी बीवी सुबह उठती है तो सरदी से दोहरी हो जाती है। फलालैन की पुरानी और फटी हुई शाल अब सरदी से उसकी रक्षा नहीं कर पाती। तुम्हें शरम आनी चाहिये। नयी न सही, कोई पुरानी और कम कीमत की शाल ही दिलवा दो।' उसने मेरा मजाक उड़ाते हुए कहा।

'आज तो तुमने अपनी प्रेमिका नाजनीन को मंजूर डिपार्टमेंटल स्टोर में खूब जी

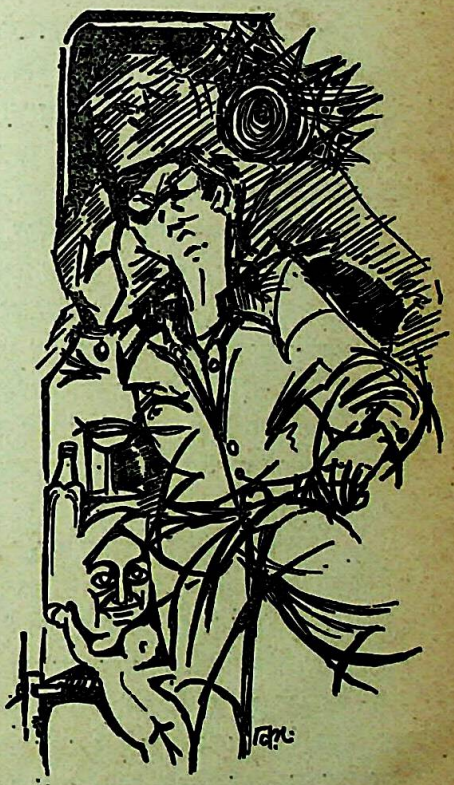

चित्र : डा. विष्णु भटनागर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोलकर शापिंग करायी। अगर पांच रुपयों तक की कोई-सी चीज अपने बीवी-बच्चों के लिए खरीदकर ले जाते तो क्या पहाड़ टूट पड़ता ?' उसने शिष्टाचार की सीमा लांघकर मेरे बेहद नजदीक आते हुए कहा।

भय और दहशत के कारण मैंने अपनी सारी शक्ति इकट्ठी करके उसके दायें गाल पर एक जोरदार थप्पड़ जड़ दिया। थप्पड़ लगाने के परिणामस्वरूप मैं स्वयं ही लड़-खड़ाकर दूर जा पड़ा, और पता नहीं और किस अवस्था में घर तक पहुंच

सुबह को देर से आंख खुली तो मेरी नजर पुरानी अलमारी के पुराने आईने पर जा पड़ी। मेरे पर था और आईने में से दो निगाहें रही थीं। उनमें घृणा, उपेक्षा और स्पष्ट रूप में दिखाई दे रहे थे।

कई वर्ष पूर्व मेरा परिचय अपनी बहन की प्रतिवेशिनी एक विदेशी वृद्धा से था। कभी वे नैनीताल के सामाजिक जीवन का एक सुदृढ़ स्तंभ थीं, कमिश्नरी भी जलसा उनकी उपस्थिति के बिना साकार नहीं होता था। पति थे सिविल सर्वेंट स्वयं वे थीं नैनीताल की ब्यूटीक्वीन। घुड़सवारी, मास्क बॉल, बाजार आदि आयोजन करने में उनकी विशेष ख्याति थी। किंतु क्रूर काल ने निमिष-भर में सब कुछ छीन लिया। यौवन-पति-विहीना वह विस्मृत ब्यूटीक्वीन, 'विडोज होम' में एक कमरा लेकर रहने सुंदरी पुत्रियां विदेश में बस गयी थीं, तीनों पुत्रों को विदेश की ऊंची नौकरियों का वहीं का बना गया था। कई नाती-पोतों की जरा-जीर्ण नानी, भारत में ही रह कभी-कभी नैनीताल की क्षणस्थायी धूप में, स्टील के भारी-भारी बक्सों के गरम सुखाने बैठतीं, तो मैं भी चली जाती। अब दिवंगत पति, प्रवासी संतानों के ये ही कपड़े सुदीर्घ पथ का पाथेय थे। सूखते स्वेटरों के साथ ही, पहनने वालों की स्मृति भी उन्हें विचलित कर देती—'इस स्वेटर में राबर्ट कितना प्यारा लगता था, और ये मैंने "मैक्कॉल" को देखकर बनाया था।'

'आपके बच्चे आपको इतना बुलाते हैं, आप कहती हैं पुत्र इतने मातृभक्त हैं ऐसी प्यारी हैं—तब आप इस उम्र में, इतनी दूर अकेली क्यों पड़ी हैं ?' मैंने एक लिया। उन्होंने हंसकर मेरे हाथ थाम लिये थे। 'नहीं जाती हूं, इसी से इतना प्यार है, पास होती, तो क्या मुझे यह आदर मिलता ? हमारा देश तुम्हारे भारत-सा उदार जहां बेटा मरे बाप को भी पानी देता है। तुम्हारी बहन को, अपने बुड्ढे सास-ससुर करते देखती हूं, तो ईर्ष्या होती है उनके सौभाग्य पर ! हमारे यहां केवल आडंबर लोगों का-सा शील-सौजन्य नहीं ! हमारी बहुएं मिलेंगी तो चूम-चाटकर रख अगर रहने चली गयी तो डाल देंगी किसी होम में।'

—शिवानी ('वातायन')

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शाही इलाज

ब्रिटेन का राजा चार्ल्स द्वितीय घोर विलासी था। उसने समूचा जीवन ऐश-आराम में बिताया। मगर विधि की विडंबना तो देखिये कि उसका अंत अत्यंत करुण रहा।

सन १६८५ की फरवरी में चार्ल्स को दौरा पड़ा और वह बेहोश हो गया। तुरंत देश के एक दर्जन सर्वोत्कृष्ट चिकित्सक उसकी सेवा में जुट गये। सबसे पहले उन्होंने उसकी फसद खोली, यानी उसके शरीर से ढेर सारा रक्त निकाल दिया। जब इससे उसे होश नहीं आया तो डाक्टरों ने उसे भारी जुलाब दिया तथा चौदह दवाइयां मिलाकर एनिमा लगाया, जिसके कारण उसे बेहिसाब दस्त हुए।

कई घंटे बाद जब चार्ल्स को होश आया, तो चिकित्सकों के दल ने उसका सिर मुंडवा दिया और उसकी खोपड़ी को गर्म लोहे से इस कदर दागा कि उस पर फफोले पड़ गये। उसे नसवार भी सुंघायी गयी। वह वापस बेहोश हो गया। अब उसके शरीर पर गर्म मलहम के फाहे चिपकाये गये और अगले दिन जब उन्हें उतारा गया, तो खाल खिचने की पीड़ा से चार्ल्स की पलकें फड़फड़ायीं, इस पर चिकित्सक बहुत प्रसन्न हुए।

राजा चार्ल्स को होश आया तो उसने गले और बदन में दर्द की शिकायत की। चिकित्सकों ने उसे इस बार दुगुनी मात्रा में जुलाब की दवा खिलायी, जिसके कारण रात-भर में उसे सोलह दस्त हुए और ठंडे पसीने छूट पड़े। इस स्थिति का सामना करने के लिए चिकित्सकों ने उसके तलुवों में राल और कबूतर की बीट मली। चार्ल्स बहुत कमजोर हो गया था, तथापि चिकित्सकों ने दुगुने उत्साह से फसद खोलने और जुलाब व एनिमा की प्रक्रिया दोहरायी; उसे मोती की भस्म और अमोनिया का मिश्रण दिया तथा आदमी की खोपड़ी से निकाले गये द्रव की चालीस बूंदें भी पिलायीं।

पांचवें दिन चार्ल्स पूरे होश में था। वह अपने ऊपर हो रहे अत्याचार को पूरी तरह समझ रहा था। कष्ट के बावजूद उसने अपनी विनोदी-वृत्ति खोयी नहीं थी। अपने चिकित्सकों को बुलाकर वह उनसे बोला—'धन्यवाद, आप लोगों ने मुझे इस युग का सर्वोत्तम उपचार दिया। मुझे अफसोस है कि मैंने मरने में इतनी देरी लगा दी है।' इतना कहकर उसने आंखें मूंद लीं और उसका देहांत हो गया।

—अखिल

अगर आप पृथ्वी के भौतिक नक्शे पर नजर डालें तो पायेंगे कि नर्मदा ही ऐसी एकमात्र नदी है, जो कर्करेखा के समानांतर बहती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अफसरों की उदारता

रमेश मंत्री

शंकर सांभारे एक मामूली क्लर्क था। फोर्ट की 'केटी खंबाटा, सन्स एंड ग्रैंडसन्स' कंपनी में पिछले सोलह साल से ईमानदारी से काम कर रहा था—अर्थात् यथासंभव काम टालता आ रहा था। नाक की सीध में चलने वाला आदमी। न किसी के लेने में, न देने में। सही समय पर उसने लड़की देखी, विवाह किया और सरकार के आदेशानुसार 'हम दो और हमारे दो' बच्चे पैदा हुए। क्लर्क के जीवन में लिखने योग्य कुछ नहीं होता—यह कहना एक फैशन-सा हो गया है। परंतु क्लर्क का जीवन नीरस होता है, ऐसा मानना भ्रम है।

शंकर का ही उदाहरण लीजिये न। ढाई कमरों में रहने वाला दो पूरे और दो आधे अदद आदमियों का परिवार। पर उसे भी जब-तब लगा करता कि मेरे घर भी टी. वी. हो, रेफ्रिजरेटर हो, घर एयरकंडिशंड हो। उसकी बीवी अपनी मालदार सहेली के घर जाती और उसके शानदार फ्लैट में टी. वी., फ्रिज वगैरह देखती तो उसके मुंह से स्वयं ही निकल पड़ता—'हमें भी एक फ्रिज लेना है। पर हमारा घर छोटा है। जरा बड़ी जगह लेने पर ऐसा ही फ्रिज हम लेंगे। तुम्हारा फ्रिज बहुत सुंदर है।' यों वह अच्छी तरह जानती कि फ्रिज लेना नसीब में नहीं है। शंकर भी अच्छी जानता था।

उसके दफ्तर के बॉस सुब्रह्मण्यम् ने वार उसे कुछ फाइलों समेत काम के घर पर बुलाया था। रविवार की सुबह ओवर-टाइम की आशा से शंकर सामने ही टी. वी. चल रहा था। बढ़िया कार्यक्रम था। काम पूरा हो बाद शंकर टी. वी. देखता रहा। तभी सुब्रह्मण्यम् ने मुस्कराते हुए उससे 'मिस्टर सांभारे, तुम भी ऐसा ही वी. ले डालो। इतना ओवरटाइम है, उसे बैंक में ही मत जमा करो एन्जॉय युवर सेल्फ।'

शंकर ने हड़बड़ाहट में कहा—हां, जल्द ही लेने वाला हूं। आपका है न?'

'येस, गुड पीस।' कहकर बॉस ने बर्खास्त की थी।

शंकर और उसकी पत्नी ने तो टी. और फ्रिज की चाहत को जैसे-तैसे दबा था; मगर जब बच्चे लोकप्रिय फ्रिज के लिए जिद करने लगे, तो उनके प्रश्न खड़ा हो गया। इसी चिंता में

मराठी से अनुवाद : गिरिजाशंकर त्रिवेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए थे कि एक रविवार की सुबह साक्षात् टी वी. शंकर के घर आ गया—मुफ्त !

रविवार की सुबह की तीसरी चाय पीते हुए वह दैनिक अखबार के आखिरी पन्ने की आखिरी लाइन पढ़ रहा था, तभी उसके कार्यालय के बॉस उसकी 'चाल' का पता लगाते हुए अचानक दरवाजे पर आकर खड़े हो गये। शंकर घबराया कि अब रविवार की छुट्टी डूबने वाली है, साहब आफिस के काम में जोत देंगे। साहब के पीछे आ रहे कुली के सिर पर कपड़े में लपेटे हुए बड़े-से गट्ठर को देखकर तो उसे पक्का भरोसा हो गया कि दफ्तर की फाइलों का पहाड़ मेरे ही सिर पड़ने वाला है।

घर की पुरानी जीर्ण कुर्सी पर बैठते हुए शंकर के बॉस ने कुली से बोझा उतारकर नीचे रखने को कहा और मीठी आवाज में शंकर से बोले—'मिस्टर शंकर सांभारे, एक्सक्यूज मी। इस तरह तुम्हारे घर अचानक आने का कारण ..... हुआ यों कि जब तुम मेरे फ्लैट में आये थे, तो तुम्हें मेरा टी. वी. बहुत पसंद आया था न ?'

'हां सर, लेकिन .....'

'लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। मैं वही टी. वी. लाया हूं। जापानी है, नेशनल। उत्तम रिसेप्शन।'

शंकर सोच में पड़ा ही था कि विदेशी टी. वी. रखना अपने लिए कैसे संभव होगा, तभी सुब्रह्मण्यम् ने कपड़े में बंधे टी. वी. को खोल दिया और बड़े फख्र से दिखलाते हुए कहा—'मिस्टर सांभारे, यह पीस तुम्हें बहुत पसंद आयेगा।'

'वह तो ठीक है, पर इसकी कीमत.....'

'कीमत की तुम जरा भी चिंता न करो। बाजार में इसका दाम साढ़े छह-सात हजार है, पर तुम मुझे एक भी पैसा न देना।'

शंकर को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। कंजूस नंबर एक के रूप में मशहूर बॉस इतना कीमती टी. वी. मुफ्त में दे देगा ? इतने में उसके बॉस ने ही उसकी शंका दूर की—'बात यह है कि आजकल मेरी आंखें कमज़ोर हो गयीं हैं। डाक्टर ने कहा है कि टी. वी. देखना बिलकुल बंद कर दो। आंखों की दवा चल रही है। सोचा कि इतना अच्छा टी. वी. इतने दिन घर में बेकार पड़ा रहे, इससे तो अच्छा है कि तुम्हारे जैसे उत्साही आदमी के पास दो-चार महीने के लिए रख दूं। तुम्हारे भी काम आयेगा। कैसी लगी मेरी कल्पना ?'

'वाह, बहुत सुंदर है !' शंकर आनंद में भरकर बोला और अंदर जाकर पत्नी को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज्ञा दी कि चाय के साथ प्याज की पकौड़ियां भी बना दे। पत्नी दबी आवाज में फुसफुसायी—'इतना कीमती टी. वी. इस्तेमाल करने के लिए दे रहे हैं, तो पकौड़ियों के साथ हलवा भी होना चाहिये।' शंकर ने सलाह मंजूर की। उनके दोनों बच्चे 'हमारे घर टी. वी. आ गया है', यह बताने चाल में दो दिशाओं में दौड़ पड़े।

बॉस के जाने के बाद शंकर ने इलेक्ट्रिशयन को बुलाकर टी. वी. चालू करवा दिया और सारा परिवार आस-पास के अनेक परिवारों के साथ सुखपूर्वक टी. वी. देखने बैठ गया। कार्यक्रम शुरू ही हुआ था

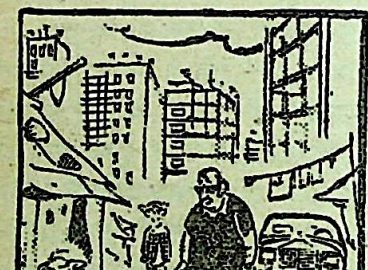

वापस लेने आये हैं? क्या वापस लेने आये हैं? कौन से गलीचे? कौन-सी चांदी-मढ़ी मेज? आप किस विषय में बात कर रहे हैं?

[लक्ष्मण : टाइम्स ऑफ़ इंडिया]

कि एक अपरिचित आदमी ने दरवाजा आकर पूछा—'शंकर सांभारे कहां रहते हैं?' शंकर के यह कहने पर कि मैं ही हूं, उसने एक पत्र उसे दिया। पत्र उसकी कंपनी के चीफ एकाउंटेंट डिसूजा का था। लिखा था—'मेरा इंपोर्टेड रेफ्रिजेरेटर कुछ दिनों के लिए अपने पास रख लो। मैं घर बदल रहा हूं और मुझे नयी जगह मिलने तक इसका तुम्हीं उपयोग करो तो कोई हर्ज नहीं।' पत्र पढ़कर समाप्त करने तक तीन कुलियों ने खासा बड़ा फ्रिज लाकर उसके घर में रख दिया।

इन दोनों ही आकस्मिक उपहारों के लिए शंकर ने ईश्वर का आभार माना। उस दिन उसके यहां फ्रिज में बाकायदा तैयार की गयी और टी. वी. का कार्यक्रम आखिरी क्षण तक देखा गया।

अगले दिन आफिस में लंच के समय सुब्रह्मण्यम् ने उसे अपने कैबिन में बुलाया और चाय देकर पूछा—'कहो टी. वी. कैसा चलता है?'

'बहुत बढ़िया, धन्यवाद।'

'मिस्टर सांभारे, मेरे बहनोई एक एक्स-पोर्ट-इम्पोर्ट फर्म में हैं। उनका एक फ्रिज है। प्लीज तुम्हें वह कर देना होगा।'

'सर', मैं ग़रीब आदमी इतने बड़े आदमी का क्या काम कर सकता हूं?'

'बहुत आसान काम है। उनका एक फ्रिज है, कुछ दिनों के लिए उसे अपने पास रख लो।'

'सर, पर मेरे यहां फ्रिज.....'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'तुम्हारे पास फ्रिज नहीं है, मुझे मालूम है। इसीलिए तो मैंने बहनोई से कहा कि अपना फ्रिज सांभारे के यहां भेज दो। विदेशी है जी. ई. सी. का!' और फिर घड़ी देखते हुए सुब्रह्मण्यम् ने कहा—'अब तक तो फ्रिज तुम्हारे घर में चालू भी हो गया होगा।'

'लेकिन सर.....' शंकर आगे कुछ बोले इससे पहले सुब्रह्मण्यम् बोल पड़े—'डोन्ट वॉदर टु थैंक.....अच्छा!'

शंकर इसी उलझन में था कि इतने छोटे घर में एक टी. वी. और दो-दो फ्रिज कैसे रखे, इतने में चाय के समय उसे मैनेजिंग डाइरेक्टर बलसाडवाला ने बुलाया और बोले—'मिस्टर सांभारे, तुम्हें प्रोमोशन देने के सुझाव का कागज मेरे पास आया है। उस पर मेरी सही होना बाकी है। इसके पहले तुम्हें मेरा एक काम कर देना होगा।'

'यस सर, आप जो आज्ञा करें .....' ऊपर-ऊपर से प्रसन्न शंकर बोला। पर मन में वह घबराया हुआ था; कहीं इन्होंने भी एक फ्रिज लाकर घर में डाल दिया तो?

'बात यों है कि मेरे बेड-रूम और हाल में एयरकंडीशनर लगा हुआ है। पर डाक्टरों ने मेरे स्वास्थ्य की जांच करके बताया है कि एयरकंडिशनिंग मेरी प्रकृति के अनुकूल नहीं है। इसलिए मैंने कंपनी के टेक्नीशियनों से कह दिया है कि उसे छह महीने के लिए तुम्हारे घर में लगा दें।'

शंकर समझ न पाया कि आगे क्या बोले। गिरगांव की चाल में एयरकंडिशनर? सारी चाल उस पर हंसेगी। मगर बड़े साहब के सामने क्या बोलता।

शंकर घर लौटा तो अपने टुटपुंजिया कमरे में एक टी. वी., दो फ्रिज, तीन एयर कंडिशनर और एक बड़ा-सा कीमती गलीचा रखा पाया। गलीचा एक और विभाग के अफसर ने भिजवाया था। इस आकस्मिक श्रीमंती के कारण वह आस-पास के लोगों के लिए शंकास्पद हो उठा था। पड़ोसियों ने अंदाज लगाया कि जरूर स्मगलिंग में इसे बहुत काला धन मिला है।

अब तो शंकर को आफिस जाने से घबराहट होने लगी। कहीं कोई और अफसर अपना टी. वी., फ्रिज, तिजोरी अथवा अन्य कोई कीमती वस्तु उसे रखने के लिए न कह दे, इस डर से उस रात उसे नींद भी न आयी। उसका भय सत्य सिद्ध हुआ। क्योंकि तीन और वरिष्ठ अधिकारियों ने उसके यहां विदेशी स्टीरियोफोनिक, थ्री-इन-वन, जापानी टी. वी. आदि सामान भेज दिये। अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि जब ईश्वर देने लगता है तो दो हाथों से संभाल पाना संभव नहीं होता।

तीसरे दिन पड़ोसी काका शिंगे बोल ही पड़े—'अरे, जब हुन बरस रहा है, तो ऐसा फ्लैट भी ले लो, जिसमें यह सामान शोभा दे। आज तो जैसे-तैसे लेटने लायक जगह है भी, पर कल तो टी. वी. सेटों को कतार में जोड़ उन पर सोना पड़ेगा तुम्हें।'

'मैं समझ नहीं पाता, क्या करूं? पर मेरे अफसरान अपने सामान के साथ ही अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लंबे-चौड़े फ्लैटों में थोड़ी-थोड़ी जगह भी क्यों नहीं देते मुझे ?'

पड़ोसियों ने तो नहीं, पर शंकर की पत्नी ने ही शंकर को आड़े लिया—'अजी यह हमारा घर है कि तुम्हारे अफसरों का गोदाम ? मेरे लिए तो अनाज साफ करने तक की जगह नहीं रह गयी। "रख लो" कहने वाले से "नहीं" कहने के लिए तुम्हारी जबान ही नहीं खुलती।'

चौथे दिन रात के बारह बजे शंकर अपने कमरे में पैर उकड़ू किये—पैर लंबे करने लायक तो जगह ही नहीं रह गयी थी—ऊंघ रहा था, कि दरवाजे पर दस्तक हुई।

'हम पुलिस अधिकारी हैं, दरवाजा खोलो। किसी ने धमकाते हुए आवाज दी। शंकर ने तुरंत दरवाजा खोला। तीन अफसर—एक सादे कपड़े में, दो पुलिस की वर्दी में—और पांच सिपाही खड़े थे।

'क्षमा कीजिये मिस्टर सांभारे, हमें सिर्फ जांच करनी है। हमारे प्रश्नों का उत्तर देकर हमारे काम में मदद कीजिये।'

'जरूर-जरूर। पर साहब, आप लोग बैठिये न!' शंकर बोला।

पुलिस अधिकारियों ने चारों ओर नजर डाली। सारे कमरे में इतना सामान अटा हुआ था कि बैठने की जगह ही नहीं

प्रश्नों में मुख्य यह था कि इ महंगा सामान कहां से और कैसे आया

शंकर ने सच्चा इतिहास सुना दि मुख्य अधिकारी सारी बातें नोट क बाद हंसकर बोला—'मुझे भी लग कि आपने कोई बेकायदा काम नहीं होगा। मगर मिस्टर सांभारे, ज जिस-जिसका है, उसे-उसे जल्दी ही कर दीजिये। आजकल बंबई में अ फ्लैटों की तलाशी चल रही है, तुम्हारे सभी अफसरों ने कोई न कोई बताकर यह सारा सामान तुम्हारे दिया है। फ्लैटों की तलाशी खत्म वे यह सब वापस ले जायेंगे। पर अधिकारियों को इस सामान का पूरा है; इस माल को फिर आंकेंगे ही। थैंक यू। सहयोग के लिए धन्यवाद।'

अपने भिन्न-भिन्न अफसरों की के रहस्य का शंकर को अब पता उसने अपने खर्चे से कुली करके सा सामान उनके-उनके घर पहुंचा दि निश्चिय किया। तब कहीं बहुत दि उसे शांतिपूर्ण नींद आयी।

लिबर्टी गार्डन, मलाड पश्चिम, बं

★

एक दिन मेरे मित्र श्री अबोधजी और मैं अंग्रेजी के विरुद्ध आपस में बातचीत थे। हम चाहते थे कि हिंदी का अधिकाधिक प्रचार हो और इसके लिए हमने एक व्यवहार समिति' बनाकर अंग्रेजी का भरपूर विरोध करने का निश्चय किया। मे वर्षीय भतीजा ये सारी बातें ध्यान से सुन रहा था। उसने सहमते हुए कहा—'चाचा विरोध तो सब करते हैं, पर गणित का कोई नहीं करता!'

—शंकर शर्मा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेतार से बात

• वंदना मिश्र •

बेतार के आविष्कारक मारकोनी, जिनकी जन्म-शताब्दी पिछले साल मनायी गयी, बच्चों से बेहद प्यार करते थे। चाहे कितना भी महत्त्वपूर्ण काम सामने पड़ा हो, वे बच्चों की बात सुनने के लिए समय निकाल लेते थे। एक बार वे आयरलैंड गये हुए थे। वहां अखबारों के प्रतिनिधि उनसे मिलने पहुंचे, मगर उनसे मुलाकात नहीं कर पाये। बाद में रहस्य खुला कि बात यह थी कि छह बरस की एक बच्ची अपनी टूटी हुई गुड़िया दुरुस्त कराने उनके पास लायी थी और वे गुड़िया की मरम्मत करने में व्यस्त थे।

एक और किस्सा इंग्लैंड का है, जहां मारकोनी का बहुत बड़ा स्थायी कार्यालय था। एक दिन उनके कर्मचारियों ने देखा कि एक छोटा बालक अंदर चला आया है और दफ्तर के 'मालिक' से मिलना चाहता है। मारकोनी को खबर दी गयी तो उन्होंने उसे अपने पास बुलवा लिया।

बालक बोला—'क्या आप भगवान से बात कर सकेंगे? मेरा कुत्ता बहुत बीमार है। पिताजी कहते हैं कि हमें उसे वापस स्वर्ग भेज देना पड़ेगा। मैं उसे अभी अपने पास रखना चाहता हूं। यह बात आप भगवान से कह देंगे?'

मारकोनी उसे कैसे समझाते कि बेतार के जरिये भगवान से बात नहीं हो सकती। उन्होंने बच्चे को आश्वासन दिया कि कुत्ते के लिए जो कुछ भी हो सकेगा मैं करूंगा, और अपने सेक्रेटरी के संग उसे उसके घर पहुंचवाया। फिर उन्होंने लंदन के सबसे बढ़िया पशु-चिकित्सक को बुलवाया और अपने खर्चे से बच्चे के घर भेजा। सौभाग्य से चिकित्सक कुत्ते की जान बचा सका।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर आप दिल के दौरे से उठे हों...

वैडिम जाइत्सेव

अभी कुछ समय पहले तक यह हालत थी कि जिस भी व्यक्ति को एक बार दिल का दौरा पड़ जाये, उसका नाम कामकाजी नागरिकों की सूची से काट-सा दिया जाता था। किंतु हाल के वर्षों में चिकित्सा के क्षेत्र में हुई प्रगति ने ऐसे व्यक्तियों में जीवन के विषय में नये आशावाद का संचार किया है।

हम सभी जानते हैं कि हृद्रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। अब तो जिन्हें तीन-तीन बार दिल का दौरा पड़ चुका है, ऐसे व्यक्तियों को भी देखकर किसी को अचरज नहीं होता। चिकित्सा-शास्त्रियों, हृद्रोगचिकित्सकों, जलवायु-विज्ञानियों व रोगियों के लिए उपयुक्त निवास-स्थल सुझाने वाले विशेषज्ञों की कृपा से ऐसे लोग अब धीमे-धीमे सामान्य जीवन जीने और अपने काम-धंधे पर लौटने में समर्थ हो जाते हैं।

किंतु अब यह बात भी स्पष्ट हो गयी है कि ऐसे लोगों को मनोविज्ञानियों तथा मानस-चिकित्सकों की सहायता की भी आवश्यकता होती है, क्योंकि दिल का दौरा केवल हृदय की ही नहीं, मन की स्थिति पर भी प्रभाव डालता है।

यह बात बाकायदा सिद्ध की जा चुकी है कि दिल के दौरे के बाद पचास प्रतिशत रोगी तो मानसिक कारणों से सामान्य जीवन में वापस नहीं आ पाते। कुछ को तो यह भय हरदम सताता रहता है कि शायद उनका हृदय फट पड़ेगा—विशेषकर सोते समय। रातें उन्हें डरावनी लगने लगती हैं और वे अनिद्रा रोग के शिकार हो जाते हैं।

कुछ अन्य रोगी दीन-दुनिया से विमुख होकर अपने आपमें सिमट जाते हैं—वे हर धड़कन का, शरीर में होने वाले परिवर्तनों से हेर-फेर का भी हिसाब रखने लगते हैं। वे रोगभ्रमी (हाइपोकोन्ड्रियैक) बन जाते हैं। हर छोटी विगत को वे बहुत अधिक महत्त्व देने लगते हैं और जो कुछ उनकी 'सामान्य स्थिति' से तनिक भी भिन्न प्रतीत हो, उसे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर देखते-महसूस करते हैं।

ये सभी प्रतिक्रियाएं मानसिक अस्थिरता पुथल का प्रमाण हैं और विशेषकर हृदय के कारक हैं, क्योंकि वे अन्य चीजों से अलग नहीं होते। उनका समूचे शरीर की शारीरिक शास्त्रीय क्रिया-चर्या से गहरा संबंध है। चिंता, भय और मायूसी शरीर में क्रियाशास्त्रीय एवं जैवरासायनिक परिवर्तन पैदा कर देती है। रक्तचाप बढ़ जाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, दिल ज्यादा तेज धड़कने लगता है, उसे कम आराम मिल पाता है और उस पर ज्यादा बोझ पड़ने लगता है। परिणामतः हृदय का रक्त-संचरण जो कि रोग के कारण पहले ही गड़बड़ाया हुआ था, और भी गड़बड़ा जाता है और रोगी की हालत बदतर हो जाती है।

सोवियत रूस के चिकित्सा-विज्ञान संस्थान में विशेषज्ञों की हमारी टोली जिन-जिन समस्याओं पर शोधकार्य कर रही है, उनमें यह भी एक है।

दिल के दौरे से संभले हृद्रोगी को वापस सामान्य जीवन-क्रम में लौटाने के लिए हम लोग ई. चाजोव और आइ. श्खावात्सा-बाया आदि विख्यात हृद्रोग-चिकित्सकों की मदद से रोगी पर विशेष निगरानी रखते हैं और विशेष रीतियों से इस बात की जांच करते हैं कि बीमारी ने उसमें कितनी और किस प्रकार की मानसिक गड़बड़ पैदा कर दी है, और उसके लिए चिकित्सा और उपचार निर्धारित करते हैं।

इसके अलावा हम रोगी को इस चीज के लिए फुसलाते हैं कि वह अपनी हालत व चिकित्सा के प्रति सही दृष्टिकोण अपनाये और उसे नये जीवनक्रम और आदतों का अभ्यास डालने में सहायता देते हैं।

उदाहरणार्थ, कुछ रोगी यह मानने को तैयार ही नहीं होते कि धूम्रपान उनके लिए हानिकारी है। वे कह उठते हैं कि मैं तो जीवन-भर धूम्रपान करता रहा हूं। और वे सिगरेट को तिलांजलि देने से इन्कार कर देते हैं, जबकि दिल के दौरे के बाद अब सिगरेट उनके लिए विशेषतः हानिकारी होती है।

यदि ऐसा रोगी आंकड़ों से भी प्रभावित न हो, तो हम उसे परदे के सामने बैठाकर चलचित्रों के जरिये यह दिखाते हैं कि धूम्रपान में तंबाकू के प्रभाव से हृदय और रक्त-वाहिनियों पर क्या बीतती है और यह भी कि ताजी हवा और शारीरिक सक्रियता शरीर को कितना लाभ पहुंचाती है। हम रोगी को 'आटोसजेश्चन' की विधि भी सिखाते हैं, जिससे वह स्नायु-तनाव और चिंता से राहत पा सकता है।

यह सब तो अस्पताल की बात हुई। किंतु बहुत-से रोगियों के लिए चिंता का क्षण अस्पताल से मुक्त किये जाने पर उपस्थित होता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। अब डाक्टर और नर्स उस पर प्रतिक्षण ध्यान नहीं रखते; उसे अब रोजमर्रा की दुनिया में वापस आना होगा और अपना खयाल स्वयं रखना पड़ेगा।

हमारी सलाह और तैयारी के बावजूद रोगी के मन में तरह-तरह की दुश्चिंताएं उठती हैं—मेरा वजन कितने से ज्यादा नहीं होना चाहिये ? क्या काम-काज शुरू करने पर मेरी हालत फिर से खराब हो जायेगी? क्या मैं सेक्स के मामले में सामान्य जीवन जी सकता हूं ? इत्यादि।

इसके अलावा भी दैनिक जीवन की कितनी ही समस्याएं उसके सामने उठती हैं—बस और लोकल-ट्रेन में मेरा रवैया क्या हो ? किसी औरत के आने पर मैं उसे सीट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं दूंगा, तो लोग क्या समझेंगे ? आखिर हर जगह यह तो नहीं बताया जा सकता कि मुझे हाल ही में दिल का दौरा पड़ा था। बाज़ार से लौटते समय सामान के सब थैले श्रीमतीजी ढोयें और मैं हाथ हिलाता हुआ चलूं, यह तो बहुत अटपटा लगेगा देखने वालों को ! इत्यादि।

इसलिए रोगी की मनःस्थिति का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। जिन लोगों को 'दृढ़-चरित्र व्यक्ति' कहा जाता है, वे इस प्रकार की नाना समस्याओं से आसानी से निबट लेते हैं; जबकि झिझकने-दबने वाले आदमी निबट नहीं पाते। इस दूसरी किस्म के आदमियों के साथ विशेष प्रकार का व्यवहार करना आवश्यक हो जाता है, खासकर उनके स्वजनों व साथियों के लिए।

स्वजनों व साथियों को पुराने ढर्रे के और निराधार विचारों से छुट्टी पा लेनी चाहिये। उन्हें दिल के दौरे से उठे आदमी पर यह जोर नहीं डालना चाहिये कि अपनी क्रियाशीलता कम कर दो, ज्यादा समय बिस्तर मे बिताओ और भीड़-भड़क्के और गहमा-गहमी से बचो।

पत्नी की भूमिका विशेषतः महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से, प्रायः वह करुणा और प्रेम के कारण ही उलटा रवया अपना लेती है। वह पति से कहती रहती है कि यह न करो, वह न करो, और उसे माटी की मूरत डालती है। जो पहले घर का कर्ताधर्ता कमाने-खिलाने वाला था, वह अब अपंग और भाररूप अनुभव करने है। यह स्थिति हर्गिज नहीं आने देनी डाक्टर के साथ-साथ पत्नी को भी में मदद करनी चाहिये कि वह स्वास्थ्य ही नहीं, मनोबल और संतुलन भी फिर से प्राप्त करे।

यह पूर्णतः यथार्थवादी लक्ष्य हमारे अधिकांश रोगियों ने इस साधा है। उनमें से अनेक अब पूरा जीवन जी रहे हैं—यहां तक कि करने लगे हैं।

यदि रोगी मानसिक तनाव तथा हृदयशूल से छुटकारा पा ले, तो से भी मुक्त हो जाता है और इस विश्वास जमता जाता है कि सही क्रम अपनाकर वह पूरा जीवन जी

अलबत्ता सही 'जीवन-क्रम' हर के लिए अलग होगा। सबको एक ही के डंडे से हांका नहीं जा सकता। बात सब पर लागू होती है—दिल बाद मन में घर कर जाने वाले मिटाना संभव है और इसमें रोगी सफल होता है, यह स्वयं उस पर और निकटवर्ती स्वजनों पर निर्भर है।

★

सरपंच : बहुत बुरी बात है ..... तुमने अपनी पत्नी को झापड़ क्यों मारा?

ग्रामीण : जी, वह बार-बार मुझे चुनौती देती रही कि झापड़ मारकर तो दे, उस गंजे बुढ़ऊ सरपंच से तुम्हारी शिकायत न कर दूंगी !

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज से करीब चार वर्ष पहले की बात है, जब मैं नौवीं कक्षा में पढ़ती थी। १५ अगस्त पास आता जा रहा था और स्कूल में उसके समारोह की जोर-शोर से तैयारियां चल रही थीं। जो प्रोग्राम उस दिन होना था, उसकी रोज प्रैक्टिस करायी जाती थी और अंत में राष्ट्रीय गीत दोहराया जाता था।

१३ अगस्त की बात है, प्रैक्टिस के दौरान अचानक मेरे पैर में दर्द उठा और मैं अध्यापिका से आज्ञा लेकर दूर बनी पत्थर की बेंच पर जा बैठी। प्रैक्टिस समाप्त होने के पश्चात् राष्ट्रगीत दोहराया गया। सब लड़कियां सावधान की मुद्रा में खड़ी थीं, परंतु मैंने उठकर खड़े होना आवश्यक न समझा; हालांकि मेरे पैर में इतना दर्द न था कि दो मिनिट के लिए भी न खड़ी हो सकूं। उसी समय कोई गांव वाला साइकल पर किसी काम से उधर आया। जैसे ही राष्ट्रगीत प्रारंभ हुआ, वह बीच रास्ते में ही साइकल से उतर गया और सावधान की मुद्रा में तनकर खड़ा हो गया। राष्ट्रगीत की समाप्ति के पश्चात् ही वह प्रिंसिपल के दफ्तर में गया।

मैं सोचती ही रह गयी कि एक इस अनपढ़ गांव वाले की अनुशासनप्रियता देखो और एक मुझ कान्वेन्ट में पढ़ने वाली को देखो। वह ग्रामीण व्यक्ति मुझे उन दो मिनिटों में वह चीज सिखा गया, जो मैंने दस वर्षों में भी नहीं सीखा था।

—कु. हंसा गर्ग, इंदौर

भूत की करामात

आठवीं कक्षा में पढ़ते समय मेरा एक मित्र था विनोद, जिसका तिमंजिला मकान हमारे ही मोहल्ले में था। एक रात उसके घर के बाकी लोग कहीं कथा में गये हुए थे। मैं और वह उसी के मकान में बैठे गप्पें मार रहे थे। सहसा मुझे एक शरारत सूझी। मैंने उससे कहा—'तू ऐसा कर कि घर को बंद करके बाहर से ताला लगा दे तथा घर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को पछाड़नेवाला चॅम्पियन

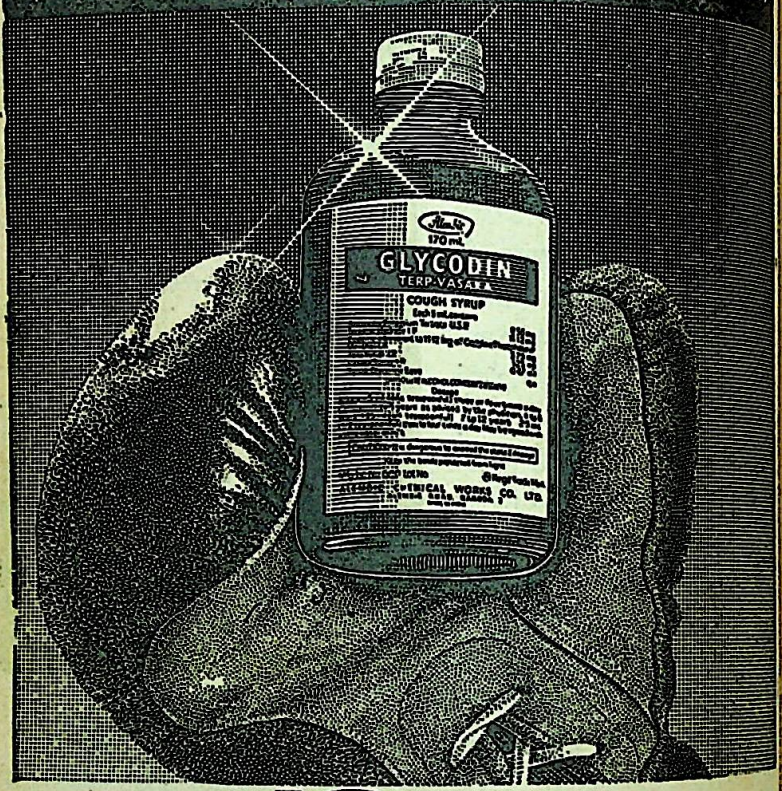

ग्लायकोडिन वर्षों से लाखों लोगों की खाँसी पर पूरा काबू पाने में खाँसी के अन्य इलाजों से ज़्यादा असरकारक और जोरदार साबित हुआ है. □ ग्लायकोडिन दिमाग, गला, छाती और फेफड़ों जैसे खाँसी के चारों मोर्चों पर हमला कर खाँसी को मार भगाता है. ● तेज असर करनेवाला ● मधुर स्वादवाला ● किफ़ायती

ग्लायकोडिन — भारतभर में खाँसी का सबसे अधिक लोकप्रिय और विश्वसनीय इलाज.

Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के आस-पास ही कहीं रह। जब घर वाले आयें तो उन्हीं के साथ आकर ताला खोलना और तब मैं भूत का अभिनय करूंगा।' विनोद को बात जंच गयी और वह दरवाजा बंद करके बाहर से ताला लगाकर मोहल्ले में ही टहलने लगा। मैं उसके घर वालों के आगमन की राह देखता रहा।

थोड़ी देर बाद वे लोग आते दिखाई दिये। उनके साथ विनोद भी था। मैंने कमरे में रखे रेडियो को झट से 'आन' कर दिया और ऐसे स्थान पर उसकी सूई स्थिर की जहां से सिर्फ गड़गड़ाहट आ रही थी। साथ ही मैंने मुंह से विचित्र आवाजें निकालनी आरंभ कर दीं। बीच-बीच में मैं एक-दो बरतन भी फर्श पर फेंक देता था। शीघ्र ही शोर मच गया और मुहल्ले वालों की भीड़ घर के सामने एकत्र हो गयी। विनोद ने दरवाजा तो खोला, किंतु अंदर घुसने का साहस किसी में न था।

तभी पड़ोस के एक वृद्ध किंतु साहसी एवं स्वस्थ सज्जन बोले—'मैं आगे चलता हूं, दो-चार आदमी लाठी लेकर मेरे पीछे आओ।' उनकी बात पर अमल किया जाने लगा। यह देख मैं दो-तीन थालियां लेकर दूसरी मंजिल पर जा पहुंचा।

वृद्ध महाशय के नेतृत्व में लट्ठधारी समूह बड़ी सतर्कता से आगे बढ़ रहा था। सहसा मैंने एक थाली जीने पर से लुढ़का दी। छननन की आवाज के साथ पीतल की थाली जीना उतरने लगी। साथ ही मैंने मुंह से भयानक आवाजें भी निकालीं। लट्ठधारी

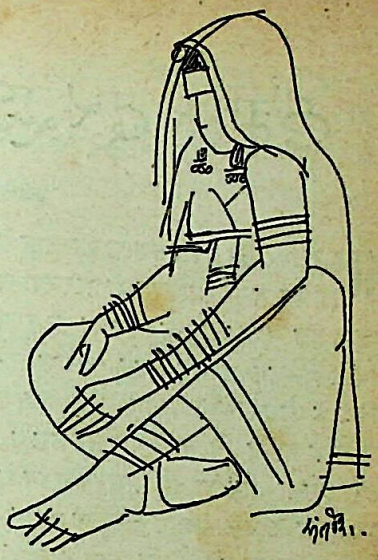

चित्र : सतीश चव्हाण

समूह भय से विचलित हो वापस भागा और दरवाजे पर खड़ी भीड़ में भगदड़ मच गयी। तब तक मैं तीसरी व अंतिम मंजिल पर पहुंच चुका था। मेरे दूसरे मित्र गोपाल का मकान साथ ही लगा हुआ था। पूर्वनिश्चित योजना के अनुसार मैं उसके मकान में कूद-कर, उसी के साथ नीचे उतर आया और भीड़ में शामिल हो गया। अब मैं साहसपूर्वक हाथ में एक लाठी लिये मकान में घुसा और अंदर जाकर चिल्लाया—'यहां कोई भूत-वत नहीं है, अंदर आ जाओ।' धीरे-धीरे सब अंदर आ गये।

दो-चार दिन बाद विनोद ने मेरे सामने ही अपने घर वालों को असली बात बतायी, तो वे लोग हंसते हुए लोट-पोट हो गये।

—जगदीश गौड़ 'बेचैन', देहरादून

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे दूरस्थ सगे बांधव

कृष्णकुमार गुप्त

बात १८३८ की है। कलकत्ता बंदरगाह से एक जहाज सुदूर पश्चिम की ओर रवाना हुआ। इस जहाज पर लगभग दो सौ पुरुष सवार थे—लगभग सबके-सब पूर्वी उत्तर-प्रदेश के भोजपुरी-भाषी क्षेत्र के थे। जहाज का नाम शायद 'बिटवाई' था और उस पर सवार सभी लोग जा रहे थे अपने वतन से दूर किसी अनदेखे-अनसुने गैरमुल्क में गिर-मिटिया मजदूर बनने। छह आने रोज पर उन्हें गौरांग महाप्रभुओं ने इस काम के लिए चुना था। गरीबी और गुलामी से अभिशप्त जो ठहरे!

कष्टपूर्ण और यातनाओं से भरी लंबी समुद्री यात्रा के बाद ये लोग अटलांटिक महासागर के उस पार दक्षिण अमरीका के उत्तरपूर्वी आंचल में स्थित एक छोटे-से भूखंड पर उतरे, जिसे तब ब्रिटिश गायना कहा जाता था। ब्रिटिश गायना अब गुयाना बन गया है और एक स्वतंत्र देश है। भारत-मूल के निवासियों का वहां प्राधान्य है।

डायरी में लिखी छोटी-छोटी टिप्पणियों के सहारे जब मैं इन पंक्तियों को कलमबंद कर रहा हूं, पंडित रामलाल का भावभीना चेहरा, संभल-संभलकर हवा में शब्द तैराता हुआ उनका रुंधा हुआ कंठ, कुछ-कुछ गीली-सी आंखें, पास ही मेज पर रखा हुआ भग-वान कृष्ण का एक चित्र और सामने [illegible] गती हुई अगरबत्ती से उठते और [illegible] फैलते हुए खुशबूदार धुएं के छल्ले अनाय[illegible] मेरी आंखों में तैर-तैर जाते हैं।

पं. रामलाल गुयाना के निवासी [illegible] केंद्रीय शिक्षा-मंत्रालय के अंतर्गत [illegible] हिंदी संस्थान (नयी दिल्ली) में भारत [illegible] कार की छात्रवृत्ति पर हिंदी के अध्ययन [illegible] लिए भारत आये हैं। यह उनकी [illegible] भारत-यात्रा है। भारतभूमि उनके पू[illegible] की जन्मस्थली है, उनके लिए एक तीर्थ [illegible]

उस दिन भारत और वेस्ट-इंडीज [illegible] क्रिकेट टेस्ट शृंखला चल रही थी। [illegible] तरफ सुबह से शाम तक चर्चा का वि[illegible] था—टेस्ट मैच। अपने संमान में आयो[illegible] एक सभा में पं. रामलाल कहने लगे—[illegible] वान आपके देश को मैच में विजयी बना[illegible] मैं कुछ भौंचक्का हो उठा—'परंतु पंडित [illegible] लालजी! क्या आप अपने देश की हार [illegible] कीमत पर इस देश की जीत चाहते हैं [illegible] गीले-से गले से उत्तर निकला—'हां! [illegible] देश की विजय मेरे शरीर की विजय है [illegible] पर आपके देश की विजय मेरी आत्मा [illegible] भारत की आत्मा से ऐसा लगाव आ[illegible] जनमे व जी रहे हममें से कितनों को होगा [illegible]

जब उन दो सौ अभागों को भारत [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाया गया था, वे सब अकेले थे। जीवन-संगिनी कही जाने वाली एक अदद नारी भी उनके लिए दुर्लभ चीज थी। गायना ले जाकर उन्हें दूर-दूर फैले चाय के बागानों में तैनात कर दिया गया और तब इन अकेले लोगों के लिए बची-खुची दुनिया भी सुनसान होकर रह गयी। कड़ी मेहनत, सख्त सजाएं, पाशविक व्यवहार, रोज-रोज की जलालत और महज छह आने रोज की मजदूरी– इसी में उन निरीह प्राणियों की जिंदगी सिमटकर रह गयी थी। यों अब ये सिर्फ दो सौ नहीं रह गये थे। उनके बाद हजारों लोगों को भारत से ढोकर वहां पहुंचा दिया गया था।

साल-छह महीने में एक-दो बार किसी तीज-त्योहार के बहाने ये परस्पर अपरिचित लोग उस बेगाने माहौल में जब आपस में मिलते तो गले लिपटकर एक दूसरे का स्वागत करते, कुछ क्षण आंसुओं के प्रवाह को थामने के प्रयास में मूक रहते, फिर चर्चा में खो जाते–चर्चा दूर भारत में बिछुड़े सगे-संबंधियों की, भूले-बिसरे आत्मीय जनों की, अपनी दुःख-तकलीफों की, गोरे मालिकों के जुल्मों की.....। एक जहाज से आये लोग अपने को 'जहाजी' कहते और सभी भारतीय उस गैरमुल्क में एक दूसरे को 'मुल्की' कहते। हर मुल्की दूसरे मुल्की को सगा भाई समझता-मानता।

सत्ता-संपत्ति, शक्ति-सामर्थ्य और सुरा-सौंदर्य के नशे में व्यक्ति सदा ही निर्बल और कमजोर पर जुल्म ढाता रहा है। गायना में अंग्रेज बागान-मालिकों द्वारा इन असमर्थ भारतीयों पर किये गये अत्याचार इसी शृंखला की कड़ी थे। इससे पूर्व मजदूरी का काम अफ्रीकी हब्शियों से लिया जाता था। उन बेचारों की स्थिति तो और भी खराब थी। तब गुलाम-प्रथा का प्रचलन जोरों पर

पंडित रामलाल प्रथम विश्व हिंदी संमेलन में भाषण करते हुए। गुयाना में हिंदी-प्रचार लिए उनकी ठोस सेवाओं के उपलक्ष्य में उन्हें दिल्ली में आयोजित श्यामसुंदर दास शताब्दी महोत्सव पर ताम्रपत्र दिया गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। फिर १८३४ में गुलाम-प्रथा खत्म हुई। बागान-मालिकों को मजदूरों का दूसरा स्रोत ढूंढ़ना पड़ा। उनकी नजर भारत पर पड़ी।

भारत से जो लोग वहां गये, वे मजदूरों के रूप में गये थे। शुरू में स्त्रियां साथ नहीं गयी थीं और वातावरण और व्यवस्था प्रतिकूल थी, सो उनमें से काफी लोगों की वहां मृत्यु हो गयी। कुछ करार की शर्त के अनुसार पांच वर्ष बाद भारत लौट आये और काफी लोग वहीं स्थायी तौर पर बस गये। अंग्रेजी समाज और मूल निवासियों से अलग रहते हुए ये लोग अपने धर्म, रीति-रिवाज और सामाजिक पर्वों-त्योहारों को अपनी मातृभूमि के ढंग से मनाते रहे।

अब तक धीरे-धीरे वहां भारतीय परिवार बसने लगे थे। अठन्नी-रुपया जोड़-जोड़कर कुछ लोगों ने जमीन, जायदाद, बाग-बागान खरीदने भी शुरू कर दिये थे, और वहां का वातावरण उन्हें रास आने लगा था। इसी बीच महात्मा गांधी ने १९१४ में भारतीयों को ठेके पर मजदूर के रूप में भारत से बाहर भेजने की प्रथा का कसकर विरोध किया, प्रथम महायुद्ध के अंतिम दौर में १९१७ में यह प्रथा बंद कर दी गयी।

यह वह समय था, जब भारत में राजनैतिक चेतना पल्लवित होनें लगी थी। स्वाभाविक था कि उस समय दूर-दराज देश में फैले प्रवासी भारतीयों पर इसका प्रभाव पड़े। अनेक भारतीय नेताओं ने समय-समय पर गायना का दौरा किया। उन्होंने वहां के प्रवासी भारतीयों की स्थिति का अध्ययन तो किया ही, उनका पथ-प्रदर्शन भी किया। इनमें भाई परमानंद (१९[illegible]), मेहता जैमिनी (१९२१), सी. एफ. एन्ड्रूज (१९२९), पं. अयोध्याप्रसाद (१९[illegible]) और पंडित हृदयनाथ कुंजरू (१९[illegible]) नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सन १९२५-२६ के दौरान भारत[illegible] 'इंडियन एसोसिएशन' नाम से एक [illegible] स्थापित हुई और वहां के भारतीय[illegible] नैतिक रूप से संघटित होकर उस[illegible] राजनीति में भाग लेने लगे।

भारत-मूल के ही एक गायनावा[illegible] जंगबहादुर सिंह ने १९२५ से लेकर [illegible] तक ब्रिटेन की पार्लमेंट में अपने [illegible] प्रतिनिधित्व किया। १९५० में भा[illegible] के एक दूसरे गायनावासी डा. छेदी[illegible] पीपल्स प्रोग्रेसिव पार्टी के नाम से [illegible] राजनैतिक पार्टी की स्थापना की। [illegible] का प्रतिनिधित्व करने वाली यह [illegible] थी, जिसे गायना में काम करने [illegible] जातियों के मजदूरों का विश्वास प्रा[illegible]

२३ फरवरी १९७० को गुयाना [illegible] हुआ। लगभग आठ लाख की [illegible] वाले देश में ५० प्रतिशत भारत[illegible] प्रतिशत अफ्रीकी, ९ प्रतिशत मिश्रि[illegible] पीय, ४।। प्रतिशत अमेरिंडियन, [illegible] शत पुर्तगाली और १ प्रतिशत से [illegible] चीनी हैं। मूल आदिम जातियों के [illegible] भीतरी जंगली भागों में रहते हैं।

पं. रामलाल ने भारत के कई [illegible] दौरा करने के पश्चात् अपने [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आधार पर बताया कि भारत में लोगों के जीवन-स्तर में जितना अधिक अंतर दिखाई पड़ता है, उतना गुयाना में नहीं है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं वहां अधिकांश लोगों को प्राप्त हैं। सड़क के सहारे पटरी पर पड़े अधनंगे-मैले लोग वहां आपको देखने को नहीं मिलेंगे। भीख मांगने की मजबूरी भी वहां किसी के सामने नहीं है। जातिप्रथा नाम की कोई चीज वहां नहीं है। सभी भारतीय वहां एक वर्ग के हो गये हैं। अफ्रीकी मूल आदि के नागरिकों से वहां कोई विशेष वैमनस्य नहीं है, हां राजनैतिक स्पर्धा थोड़ी-बहुत जरूर है। परस्पर विवाह भी हो जाते हैं, मगर कम। अब इस दिशा में भी दृष्टिकोण उदार होता जा रहा है।

भारत-मूल के जो लोग वहां रहते हैं, उनमें से अधिकांश के मन में भारत के दर्शन की उत्कंठा रहती है। वे दीपावली एवं जन्माष्टमी आदि पर्व बड़े उत्साह से मनाते हैं। बहुत-से लोग अपने मकानों को हनुमानजी की लाल-झंडियों से सजाते हैं। धार्मिक कार्यों में हिंदी और संस्कृत का व्यवहार किया जाता है। आर्यसमाज और सनातन धर्मसभाएं वहां बाकायदा काम करती हैं। शादी पर हवन किया जाता है। बच्चे का मुंडन हर भारतीय परिवार में आम बात है। राम, कृष्ण, शिव, हनुमान आदि के चित्र घरों में श्रद्धा के साथ रखे जाते हैं और उनके सामने अगरबत्ती जलाकर भजन, गाये जाते हैं। बहुत-से लोग हिंदी नहीं भी समझते, मगर भजन हिंदी में कंठस्थ कर लेते हैं।

पं. रामलाल कहते हैं—'भारत की हर चीज से हमें गहरा लगाव है। एक बार भारत के त्रिवेणी कला संगम ने जब वहां विभिन्न भारतीय शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किये थे, वहां का सारा भारतीय समाज समुद्र की तरह उमड़ पड़ा था। इसी तरह जब मुहम्मद रफी वहां आये थे, लोग उन्हें सुनने के लिए कम, देखने के लिए अधिक लालायित थे; क्योंकि किसी भी भारतीय में हमें भारत के दर्शन होते हैं। हिंदी फिल्में देखने के लिए वहां लोग टूट-टूट पड़ते हैं। १९७३-७४ में आपके टेस्ट-खिलाड़ी गावसकर ने त्रिनिदाद में शतक मारा, तो लोगों ने खुशी में उसे कंधों पर उठा लिया, फूलों से लाद दिया।

'बेशक हमारी स्त्रियां सामान्यतया स्कर्ट पहनती हैं, मगर किसी भी शुभकार्य के समय सिर पर ओढ़नी रखती हैं; बच्चे हिंदी पढ़ सकें, इसकी वे पूरी कोशिश करती हैं। पूजा-पाठ में उनकी विशेष रुचि रहती है।

'भारत-मूल के गुयानावासी भारत के दर्शन की लालसा को जीवन-भर मन में संजोये रहते हैं और मैं यहां भारत में रहकर भारत की आत्मा का प्रत्यक्ष दर्शन करके अपने को कुछ द्रवित-सा अनुभव कर रहा हूं।'

पं. रामलालजी ने अपनी बातचीत उस प्रार्थना के साथ खत्म की, जो गुयाना में उनके दैनिक जीवन का नियमित अंश है :

सुखी बसे संसार सब,
दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी,
मेरे भगवान पूरी होय॥

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुभव न हो तो अच्छी कृति सिरजी नहीं जा सकती। अभ्यास कम हो मगर अनुभव अधिक हो तो कलाकार अच्छा और ज्यादा काम कर सकता है। भ्रमण से बहुत कुछ देखने, समझने और सीखने को मिलता है। ग्रहण-शक्ति अच्छी हो तो काम में नयापन भी आता है। नयापन कलाकार की प्रगति का और उसके अगले चरण का सूचक होता है। मैं सन १९६१ में फ्रांस और बल्गारिया की सरकारों के निमंत्रण पर उन देशों में गया था। वहां बहुत घूमा और बहुत देखा। पिछली शताब्दी के वानगो और मातीस की कलाकृतियों से मैं परिचित था, मगर मुद्रित प्रतिकृतियों के जरिये—मूल कृतियों को प्रत्यक्ष देखने का संयोग कभी नहीं मिला था। ये मेरी पसंद के चित्रकार हैं। विदेश-यात्रा के दौरान इनकी कृ[illegible] को प्रत्यक्ष देखा। एक-एक कलाकृ[illegible] काम में आठ-आठ दिन तक बैठकर [illegible] था। इससे मुझे बहुत लाभ हुआ। [illegible] तूलिकाघात (स्ट्रोक), रंग-रचना, [illegible] कैनवास पर संयोजन का तरीका आदि [illegible] प्रत्यक्ष देखने से पहचान गहरी हो [illegible] अनुभव और ज्ञान का परिपाक हुआ।

बल्गारिया में मैं चाहे जहां बैठकर [illegible] चित्र बनाया करता था। वहां के लो[illegible] जिज्ञासु और कलाप्रेमी हैं। वे मेरा [illegible] देखते, मुझे अपने संग घर ले जाते, [illegible] खिलाते-पिलाते। इसमें उन्हें आनंद [illegible] था और मुझे एक नया अनुभव मिला।

दृश्यचित्र (लैंडस्केप) और व्यक्ति[illegible] (पोर्ट्रेट) के लिए प्रख्यात प्रो. डन्[illegible] हैमर से मैंने बहुत कुछ सीखा। उनका [illegible] भव प्रगाढ़ था। कैसा स्ट्रोक [illegible] वांछित प्रभाव आता है, इसमें वे मा[illegible] एक बार मुझसे बोले कि तुममें [illegible] कमजोरियां हैं। सुनकर मैं हतप्रभ [illegible] क्योंकि मैं तो खूब पुरस्कार जीत [illegible] और मेरी तस्वीरें धड़ल्ले से बिक [illegible] इसका मुझे गरूर था। मगर [illegible] विचार छोड़कर मैं उनके पास गया। [illegible] स्टूडियो बंबई में नेपियनसी रोड [illegible]

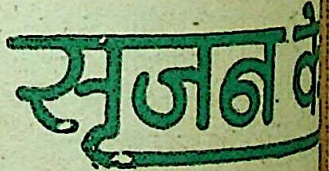

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहां मैं एक साल तक चारकोल घिसता रहा; क्योंकि उनसे अपनी पहली मुलाकात में ही मुझे अपनी कमजोरियां पता चल गयीं। उनसे मुझे रंगों की सूक्ष्म जानकारी मिली। शुरू-शुरू में मैंने ढेरों दृश्यचित्र बनाये। तब बंबई में ऐसी भीड़-भाड़ नहीं होती थी।

धर्म के प्रति शुरू से ही मुझमें आस्था रही है। ३५-४० की उम्र तक मैं शुद्ध शाकाहारी रहा। हैदराबाद में ड्राइंग-मास्टर श्री महादेवसिंह के साथ रहा, जो ब्राह्मण थे। जब तीन साल की उम्र में मैं मातृहीन हो गया, उन्होंने मेरी बहुत मदद की। मरते समय मां ने मुझसे कहा था कि बेटा अच्छे आदमी बनना और अच्छे काम करना। जीवन में उसी को निभाने का यत्न कर रहा हूं।

फूल-फल मुझे सदा लुभाते रहे हैं। अपने स्टिल-लाइफ चित्रों में मैंने उन्हें कई रूपों और दृष्टिकोणों से चित्रित किया है। एक बार एक सज्जन ने मुझसे कहा कि 'बैचलर' होने के कारण तुम 'स्टिल' (जीवनहीन) हो। मुझे गुस्सा आया और मैंने मनुष्य-जाति और फल-फूल का तुलनात्मक दृष्टि से चित्रण किया। जिस प्रकार स्टिल-लाइफ के वन-मैन शो किये थे, उसी प्रकार नग्न नारी-चित्रों के वन-मैन शो किये। इनसे भी मुझे पर्याप्त ख्याति मिली।

* के. एच. आरा *

प्रस्तुतकर्ता : डा. विष्णु भटनागर

'न्यूड' चित्रों में मैंने कुदरत की खूबसूरती का चित्रण किया सेक्स के उभार का नहीं। मैंने कई विशाल न्यूड चित्र बनाये। इनमें भी मैंने फूल-फल वाली दृष्टि रखी—विविध रूप और भाव-सौंदर्य। मेरा अनुभव है कि फल-फूल में जो खूबसूरती है, वही 'न्यूड' में होती है।

फूल ऐसी चीज है जो जन्म, जीवन, मरण

अनुभव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

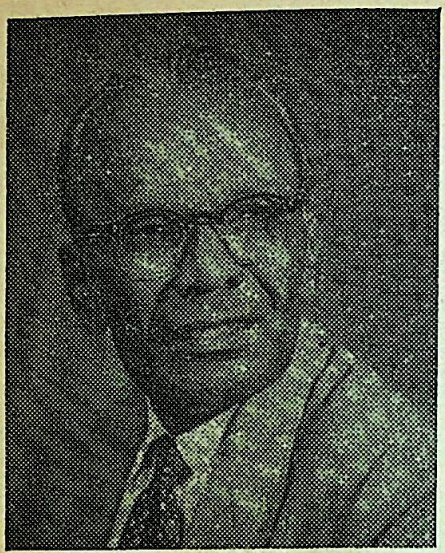

के. एच. आरा

सबमें आपके काम आती है, जिंदगी के हर सोपान पर आपका साथ देती है। फूल से शांति मिलती है। फल-फूल के लिए मेरे मन में प्रेम और आदर की गहरी भावना है; इसीलिए मैं उनके चित्रण में सफल हुआ हूं।

जब तक किसी चीज़ का मूल नहीं मिलता, कलाकार बेचैन रहता है। फूल और न्यूड को मैं अंकित करता चला गया और उनकी खूबसूरती, सुकुमारता और नजाक़त मेरे मन को छूती चली गयीं और कैनवास पर रंग-रेखाओं में विलीन हो गयीं।

मेरी सृजन-यात्रा का तीसरा दौर (एब्स्ट्रैक्ट) चित्रण का रहा। भक्ति प्रति प्रारंभ से ही मेरा झुकाव रहा तुकाराम, कबीर, मीर, गालिब आदि मुस्लिम कवियों की रचनाओं पर मैं पेंटिंग' बनाये, जिनमें रंग नहीं हैं। कैनवास को काव्यगत भावों के अनुरूप किया गया है। अभिव्यक्ति प्रकट करने यह मैंने सर्वथा नया और प्रयोगवादी अपनाया था, जो काफी चर्चित हुआ।

आजादी आने से पूर्व सन १९ हमने आधुनिक चित्रकारों का एक बनाया था—प्रोग्रेसिव ग्रुप। इसमें हुसेन, सूजा, बाकरे, गाडे और मैं थे। दल का संघटन और काम अब कला के इतिहास में एक ऐतिहासिक हो गयी है। वे दिन भुलाये नहीं हमारा होली मनाने का ढंग भी था। उस दिन सब मेरे यहां जुटते बड़े कैनवास को जमीन पर बिछाकर बनाते। सबसे पहले मैं उस पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता (शायद इसलिए कि आयोजन मेरे घर पर होता था), फिर बाकी सब। बाद में सब तितर-बितर हो गये।

जो मनुष्य गुलाम होता है, वह सृजनात्मक कार्य नहीं कर सकता। साठ बरस पूर्व कला-जगत् में जो काम हुआ ईमानदारी से, वह आज देखने में नहीं आता। आज की स्थिति तब की अपेक्षा कहीं निम्न है। एब्स्ट्रैक्ट के नाम पर बेईमानी अधिक आयी है। पहले के कलाकारों ने अनुभव ग्रहण करके और भूखे रहकर काम किया। महल में बैठकर झोपड़ी में रहने वालों का चित्रण करना सर्वथा बेमानी है।

पेंटिंग में कलाकार की अपनी पहचान होनी चाहिये। कलाकार के लिए एक समय ऐसा आता है, जब वह एक जगह जाकर ठहर जाता है। आज हमारे यहां जो हो रहा है, उसमें पहचान खो गयी है। क्योंकि अधिकांश नये कलाकार आयातित प्रभाव पर कोशिश कर रहे हैं। यदि वे अपनी पहचान रखें, तो अच्छा हो। इसका दोष कला-शिक्षण की संस्थाओं को भी है। आज का शिक्षण अनुभव और अभ्यास पर आधारित नहीं है। प्रयोग के नाम पर कुछ भी करना कला का अपमान है। ट्रिक्स अपनाने के कारण शैली विलुप्त हो गयी है।

श्रद्धा के अधिकारी

श्रद्धेय पुरुषोत्तम दास टंडन का 'चंचल मनोरंजन क्लब' की ओर से अभिनंदन करने गये थे हम लोग। उस समय वे बीमार थे। अभिनंदन के समय उनके नेत्रों में आंसू छलछला आये और वे बोले—'अब मैं रोगग्रस्त हूं.....बहुत कम उपयोगी रह गया हूं ... मेरी हार्दिक इच्छा है कि मेरे दुर्बल हाथों से वे लोग हिंदी का झंडा ले लें, जो नैतिक एवं सांस्कृतिक भावना से राष्ट्रभाषा की सेवा करना चाहते हैं ...।' यह सुनकर सबकी आंखों में आंसू छलछला आये।

इससे भी अधिक हृदयस्पर्शी घटना तो तीसरे दिन घटी, जब हम अभिनंदन के अवसर पर खींचे गये फोटोग्राफ को फ्रेम कराकर बाबूजी को अर्पित करने गये। जब फोटोग्राफ उन्हें दिया, वे बोल उठे—'क्या, "चंचल मनोरंजन क्लब!"...भाई "क्लब" नहीं, इसे "गोष्ठी" करो..... और हां, इस तस्वीर का कितना पैसा.....?'

'कुछ नहीं बाबूजी...आपका आशीर्वाद...'

'तो मैं यह तस्वीर ले न सकूंगा ..... दुकानदार ने तो आखिर .....?'

इच्छा न होते हुए भी हमें तस्वीर के पैसे लेने ही पड़े। —रमाशंकर 'चंचल'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्न-संयोग

उच्छल महातृप्ति का सागर
सोख रहा हूं, सोख न पाता;
सांसों की सकरी झोली में
सौरभ का नभ नहीं समाता।

दिव्य सलोनेपन की आभा,
नयनों का निर्वाह नहीं है;
मुक्त तरल अमृत की धारा
श्रवणों के उस पार बही है।

बाहों को झकझोर गयी हैं
गुंफित अंधकार की अलकें;
विह्वल आंखों की पुतली को
बांध नहीं पायी हैं पलकें।

बेबिजली की एक तड़प से
तड़क गयी नस-नस की बाती;
शून्य चेतना की धड़कन से
धड़क गयी जागृति की छाती।

कितनी लघुता में गुरुता का
वैभव भरे अनूठी दुनिया।
कितनी सगी लगी अंतर को
सच दुनिया से झूठी दुनिया।

रामावतार चेतन
८१, सुनीता, १४ वां माला, कफ परेड, बंबई-५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३३३ वर्ष से जलमग्न जहाज

उस दिन यानी २० अगस्त १९६१ को एकाएक सागर-गर्भ में सत्रहवीं सदी का एक 'टुकड़ा' बुलबुला बनकर उभर आया। ३३३ वर्ष से ११० फुट गहरे सागर जल में डूबे पड़े स्वीडन के जलपोत 'वासा' को उस दिन बाहर निकाला गया था।

यह जहाज सन १६२८ में स्टाकहोम के निकट समुद्र में डूबा था। मगर आश्चर्य कि इतने वर्षों बाद भी वह बिलकुल अच्छी हालत में था। इसमें पड़ी सैकड़ों चीजें—जस्ते के 'मग' (लोटे), पकी मिट्टी के हुक्के, बंदूकें, जहाजरानी के औजार, चमड़े के बूट, यहां तक कि बंद डिब्बों में पड़ा मक्खन भी सर्वथा सुरक्षित अवस्था में था। इन चीजों से स्वीडन को तीन शताब्दी पूर्व के अपने इतिहास की एक झलक पाने का मौका भी मिला।

इस खोज का श्रेय आधुनिक 'सागर गर्भ पुरातत्त्व शास्त्र' को है, जिसकी सहायता से पुरातत्त्ववेत्ता समुद्र में गोता लगाकर उसकी तली पर पड़ी ऐतिहासिक वस्तुओं को खोजकर निकाल रहे हैं।

खोज का यह काम पहले-पहल सन १९४२ में जाक कास्त्यू नामक एक फ्रांसीसी ने शुरू किया। खोजी गोताखोर समुद्र-सतह से १५० फुट तक नीचे पानी में उतर जाते हैं और समुद्र-तल में ऐसी सरलता से विचरते हैं, मानो धरती पर विचर रहे हों। वहां उन्हें पत्थर के बने चाकू-छूरियां, बरतन, मूर्तियां, तांबे की घंटियां, मिट्टी के कलश तथा विभिन्न धातुओं के बने आभूषण आदि प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार के खोजकार्य का मुख्य केंद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभी तक भूमध्य सागर ही है, जिसे 'सागर-गर्भ-पुरातत्त्ववेत्ताओं को भगवान द्वारा प्रदत्त विशेष खजाना' कहा जाता है। भूमध्य सागर का जल अपेक्षतया स्वच्छ, उष्ण व ज्वार-भाटे से मुक्त है, तथा उसके तटवर्ती क्षेत्र पश्चिमी सभ्यता के महान पुरखे मिस्रियों, यूनानियों और रोमनों की निवास-भूमि रही है और उनके आवागमन के मुख्य स्थल भी।

समुद्री खोजियों को इस सागर में जिन शत्रुओं का सामना करना पड़ता है, वे न तो आक्टोपस हैं, न शार्क मछलियां; बल्कि वे हैं अवैध रूप से समुद्र में उतरकर वहां पड़ी चीजों को लूटने वाले। इन तस्करों का विशेष लक्ष्य होता है 'एंफोरे' प्राप्त करना। एंफोरे छोटे मुंह वाले सुंदर मिट्टी के बरतन होते हैं, जिनमें प्राचीन रोम या यूनान के लोग शराब, इत्र आदि रखते थे। ये ऐसे मजबूत बने होते थे कि बाकायदा फोड़े न जायें, तो सदियों तक फूटते नहीं थे।

कुछ एंफोरे ऐसे भी पाये गये हैं, जिनमें दो हजार साल पुरानी शराब बंद थी। ये बढ़िया सजावटी फूलदानों का काम देते हैं। मगर इनका ऐतिहासिक महत्त्व यह है कि इनके रंग, रूप, हत्थे, मुख के आकार तथा मिट्टी आदि विश्लेषण से प्राचीन काल के समुद्री-व्यापार-मार्गों के इतिहास का पता चलता है।

सागर-तल से प्राप्त एक प्राचीन जलपोत के कीलों की बनावट और उन पर मढ़े सीसे के लेप की जांच से पता चलता है कि रोम के जहाजरान यह अनुभव करते थे कि [illegible] जहाज के कीलों और पानी के बीच [illegible] ऐसी हरकत अवश्य होती है, जो [illegible] पहुंचाती है। अतः उन्होंने तांबे के कीलों [illegible] सिरों पर सीसे का लेप लगाना [illegible] दिया था। लेप लग जाने से धातु [illegible] पानी के घर्षण से विद्युत करेंट [illegible] जाता था।

हम ऊपर कह आये हैं कि सागर के [illegible] छिपे खजाने की खोज का मुख्य लक्ष्य [illegible] इतिहास की खोज करना है। [illegible] शताब्दी के आरंभिक वर्षों में तीन [illegible] खोजें की गयीं। पहली १९०० में, [illegible] १९२८ में और तीसरी १९०७ में। [illegible] दो खोजें यूनान के समुद्रों में की गयीं। [illegible] खोजों में प्राप्त अवशेषों से पता चलता [illegible] कि करीब २,००० वर्ष पहले रोमनों ने [illegible] को जमकर लूटा था। तांबे की सैकड़ों [illegible] बड़ी मूर्तियां व अन्य कलात्मक वस्तुएं [illegible] कर जहाजों में भरकर वे रोम ले जा [illegible] कि रास्ते में उनके तीन जहाज डूब [illegible] २,००० वर्ष तक ये सब चीजें समुद्रतल [illegible] पड़ी रहीं और अंततः खोजियों को [illegible] हुईं।

समुद्री 'खुदाई' का काम पृथ्वी की [illegible] की अपेक्षा अधिक कठिन है और इसमें [illegible] गुना अधिक समय और धन लगता है। [illegible] फुट लंबे और ५० फुट चौड़े समुद्र-तल [illegible] छानबीन करने में ८ से १० तक [illegible] लग जाते हैं। असल में समुद्र में १५० [illegible] की गहराई पर गोताखोर एक [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुश्किल से ३१ मिनिट तक काम कर पाता है, सो भी एक साथ नहीं। प्राय: वह सुबह १२ मिनिट और मध्याह्न में १९-२० मिनिट तल पर रहकर काम कर सकता है। अधिक समय तक जल में डूबे रहने से जल के दबाव से उसके रक्त और धमनियों में नाइट्रोजन प्रवेश कर जाता है और उसके अंग जुड़ने लगते हैं, जिससे मृत्यु भी हो जाती है।

सागर-गर्भ में पड़ी वस्तुओं को निकालने के अनेक तरीके अपनाये गये। इनमें एक है 'एयरलिफ्ट'। इसमें एक बृहत् 'वैक्यूम क्लीनर' काम में लाया जाता है, वह रेती, दलदल व अन्य छोटी-छोटी चीजें को सोखकर सतह पर ले आता है। इनमें से कीमती, उपयोगी चीजें छांट ली जाती हैं और कूड़ा-करकट पुन: समुद्र में डाल दिया जाता है। यह तरीका खर्चीला है; क्योंकि इसके द्वारा सिर्फ छोटी चीजें ही ऊपर ल.यी जा सकती हैं। बड़ी और वजनदार चीजों को निकालने के लिए प्लास्टिक के विशाल बोरे इस्तेमाल किये जाते हैं। समुद्र-तल पर बोरों में सामान डालकर वायुटैंकों द्वारा बोरों को हवा से भर देते हैं। तब गुब्बारों की तरह ये बोरे पानी की सतह पर तैर आते हैं, और उन्हें पानी से बाहर लाकर उनमें से चीजें निकाल ली जाती हैं।

खोजियों को एक विचित्र समस्या से जूझना पड़ा है। हजारों सालों से समुद्र-तल पर ठीक हालत में पड़ी हुई अनेक वस्तुएं पानी से निकालने पर नष्ट हो जाती हैं। शीशे की बोतलें सतह पर आते ही चटक जाती हैं; टिन की चीजें हवा के स्पर्श से ही सफेद पाउडर मात्र रह जाती हैं, जहाजों के लंगर डालने के प्राचीन रस्से लुगदी बन जाते हैं और लकड़ी की चीजें सिकुड़कर अपने मूल आकार की एक तिहाई-भर रह जाती हैं।

इन्हें टूटने-फूटने, सिकुड़ने व चटकने से बचाने के लिए कई प्रकार के प्लास्टिक-पेंट प्रयोग में लाये जाते हैं। अनेक वस्तुओं को समुद्र-तल पर ही चूने व एनामल से बनी पक्की वाटर-प्रूफ पेंट से ६ से ८ इंच मोटा पोतकर फिर ऊपर लाया जाता है। बाद में पेंट को सफाई से अलग कर दिया जाता है। इन उपायों के बावजूद भी वस्तुओं को बचाने में विशेष सफलता नहीं मिली है।

शार्क, बाराकूटा या आक्टोपस जैसे खतरनाक जलजंतुओं से खोजियों को हानि पहुंचने की वारदातें बहुत कम ही हुई हैं। बल्कि यही देखा गया है कि प्राय: मछलियां इन गोताखोरों और खोजियों से मित्रता का व्यवहार करती हैं और गहरी दिलचस्पी से इनके कामों को देखती हैं। एक खोजी फोटोग्राफर समुद्र-तल में फोटो खींचने के बाद फ्लैश-बल्बों को आक्टोपस की तरफ फेंक देता था, वे इनसे ऐसी प्रसन्नता से खेलते थे, जैसे बच्चे तैरने वाले खिलौनों से खेलते हैं। प्राय: यह भी देखा गया कि आक्टोपस 'एंफोरे' को घर बनाकर उनमें रहते हैं।

इटली, फ्रांस और स्पेन के समुद्र-पुरातत्त्ववेत्ता मिलकर एक विशाल चार्ट तैयार कर रहे हैं, इसमें पश्चिम भूमध्य सागर के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तल के उन स्थलों का व्यौरा होगा, जिनमें ऐतिहासिक सामग्री के मिलने की संभावना हो। संभव है भूमध्य सागर का पूर्वी भाग और भी अधिक कीमती चीजों से भरा पड़ा हो।

अब तक की खोजों में मिली प्राचीनतम वस्तुओं में ३,०००वर्ष पुराना एक जहाज भी है। जिसके अवशेष तुर्की में मिले। इस जहाज को खोजने और इसे समुद्र-तल से बाहर लाने में काफी धन और श्रम का व्यय हुआ। इसमें हलों के फाल, कुदालियां, कुल्हाड़ियां, चाकू-छुरियां, फावड़े और लोहे के बसूले आदि अनेक धातुनिर्मित वस्तुएं पायी गयीं; जिनका वजन एक टन से भी अधिक है। गोताखोरों को सैकड़ों वर्ष पुराने जैतून के फलों की गुठलियां और मछलियों की हड्डियां मिली हैं जो शायद नाविकों ने समुद्र में फेंकी थीं।

समुद्री 'खुदाई' के काम में दिनों-दिन प्रगति हो रही है। इस विषय पर [illegible] तीन अंतरराष्ट्रीय संमेलन हो चुके [illegible] जिनमें बारह से अधिक देशों के विशे[illegible] ने भाग लिया है। नये-नये तरीके और [illegible] करणों का आविष्कार किया जा रहा [illegible] अनेक स्वयंचलित यंत्र बनाये गये हैं [illegible] समुद्र-गर्भ में रख दिये जाने पर वहां [illegible] चीजों के बारे में ऊपर सूचनाएं भेजते [illegible] हैं। कई यंत्र तो नीचे स्वयं ही यह निर्णय [illegible] कर देते हैं कि कौन-सी वस्तु उपयोगी [illegible] और कौन-सी नहीं, ताकि केवल उपयो[illegible] वस्तु को ही जल से निकाला जाये। गो[illegible] खोरों की पोशाक, उपकरण तथा [illegible] साजो-सामान के बारे में भी प्रतिदिन [illegible] खोजें हो रही हैं। आज समुद्र के गर्भ में [illegible] से ५०० फुट तक गहरा भी उतरा [illegible] सकता है और वहां के जीवन का अध्य[illegible] किया जा सकता है।

—३६/१३ ईस्ट पटेल नगर, नयी दिल्ली

गलत जगह

ओसुना का ड्यूक बार्सीलोना (स्पेन) के मुआयने के दौरान कैदियों से भरा एक [illegible] देखने गये! प्रायः हर कैदी से उन्होंने पूछा—'तुम्हें यह सजा क्यों मिली?'

जवाब में हर कैदी ने अपनी निर्दोषता की दुहाई दी और कहा कि मुझे गलत [illegible] दी गयी है।

मगर एक कैदी ने कहा—'श्रीमन्, मुझे सजा गलत नहीं मिली है। मुझे पैसों की [illegible] जरूरत थी, और मैंने मजबूर होकर चोरी की। सो सजा तो मिलनी ही थी।'

ड्यूक कुछ क्षण चुपचाप उसकी ओर देखते रहे, फिर बोले—'तुम ऐसे चोर हो [illegible] इन सब निर्दोष आदमियों के बीच में तुम्हारा रहना ठीक नहीं है। सो, इसी वक्त यह [illegible] छोड़ दो।' और उन्होंने उसे रिहा कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रिश्ते

नरेंद्र चतुर्वेदी की हिंदी कहानी

मुझे लग रहा था कि शब्द नहीं चाकू है, जो मेरी तरफ रह-रहकर उछल रहे हैं। उफ! मुझे पहले ही मालूम होता तो क्या मैं यहां आती? पर मेरी तो अक्ल पर ही जैसे पाला पड़ गया हो। उन्होंने समझाया भी था—'सुनो! इस तरह बार-बार वहां जाना अच्छा नहीं लगता .....' पर मैंने उन्हें बीच में ही टोक दिया था—'तुम क्या जानोगे भाई-बहन का प्यार। ..... यह जो साड़ी है, जिसे तुम्हारे सामने पहने बैठी हूं, भैया ने ही तो दी है। ..... मैं कोई भिखारिन हूं? ..... पर वह मानता ही नहीं है। ..... और बहू-बच्चे, एक दिन को जाओ तो महीने-भर को रोक लेते हैं।' .....और तब वे चुप रह जाते थे।

मेरा एक पांव वहां तो एक पांव यहां, यही तो क्रम था। उधर जीतू भी नाराज हो गया था—'मां! तुम तो यहां ठहरती ही नहीं। जब देखो जयपुर, यह भी कोई बात हुई? मेरे इम्तहान इधर शुरू हो रहे हैं, उधर तुम्हारा मन फिर मचल रहा है!' उन्होंने भी जीतू का ही पक्ष लिया था—'मेरी नहीं तो बच्चों की ही सुनो। इस तरह से किसी के भी यहां बार-बार जाना अच्छा नहीं लगता।' ..... 'पर मैं कोई अपने मन से जा रही हूं? बहू की चिट्ठी आयी है।' और फिर तमककर वहां से उठकर मैं चौके में चली गयी थी।

सुधीर के यहां सचमुच ही अच्छा लगता था। कहां यह घर, कहां उसकी वह कोठी। नौकरों की रेल-पेल, दरवाजे खड़ी जीप, भरा हुआ फ्रिज। उस दिन सुमी कह तो रही थी—'जीजी, तुम्हारे भैया की तो यह जिद है कि दिल्ली डेप्युटेशन पर जाया जाये ..... वहां टी. वी. है।' ..... 'तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ों की उजली धुलाई के लिये !

चाँदनी

साबुन

निर्माता-
बरार ऑयल इंडस्ट्रीज
अकोला (महाराष्ट्र)

Zenlon

विविध किस्मों के
प्राकृतिक, रासायनिक
मानव-निर्मित
बुनाई के सूत

परदे, गाड़ियां व कवर बनाने
मुलायम और बहुरंगी • कपड़े
लिए सुंदर और चमकदार •
में लचीले और नमीसोख

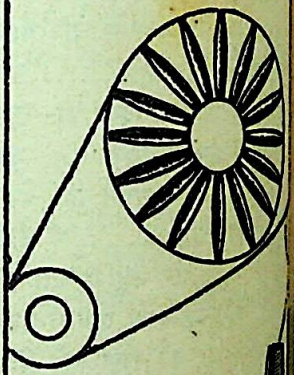

स्टेपल फाइबर विभाग
बिरला ज्यूट मैन्युफैक्चरिंग
कं. लि.
९/१ आर. एन. मुकर्जी रोड
कलकत्ता—७०० ००१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहां भी कुछ ही साल में आ जायेगा.....' मैंने बात काटते हुए कहा था।

सुधीर के यहां मन सहज ही लग जाता है। क्या कहूं, पांव अपने घर पर तो टिकते ही नहीं हैं ..... दीपावली पर भाईदूज का तिलक करने आयी थी यही सोचकर कि दो-चार दिन ही रुकूंगी, पर महीना-भर रुकना पड़ गया। उधर बच्चे परेशान, आशा बेचारी के कंधे पर सारा घर। फिर उनकी चिट्ठी आयी, अंत में जीतू आ ही धमका। कितना नाराज था वह।

वैसे वे चाहते तो बहुत हैं ..... पर क्या करूं जब से ब्याहकर गयी हूं, मन यहीं भटकता रहता है। जब तक बाबूजी थे, इसी बहाने चली आती थी—'मां-बाप तो तीर्थ होते हैं, क्या पता आज हैं कल नहीं।'..... चित्रा ..... वह तो इसी बात से ही नाराज रहती है।..... पिछली बार तो कह ही बैठी थी कि मैं हमेशा अपना डेरा डाले यहां पड़ी रहती हूं। हां, याद आया मनोज की ही शादी थी ..... कितना लड़ी थी वह। राम, राम! ऐसी भी कोई बहन होगी, बहन से ही जलन! बोली—'हम तो बरसों में आ पाते हैं, और तुम हो हर महीने यहां। ..... क्या बच्चों का भी मोह टूट गया? कितना बड़ा हो गया है जीतू। मेरे अजय से तो बड़ा ही होगा, पर अभी तो वह इंटर में ही है। कुछ तो सोचो ..... अपने मौज-मजे के लिए तुम अपनी गृहस्थी में क्यों आग लगा रही हो?'

मौज-मजा! सच तब जी में तो आया था कि उसकी चोटी उखाड़ दूं। पर चुप ही रही। छोटी बहन होकर बड़ी बहन से यह बात। बाबूजी से कहा, तो वे भी चुप ही रहे। चित्रा तो उनकी लाड़ली ही थी। बहू ही कहती थी कि चोरी-छिपे वे चित्रा को कुछ न कुछ दिया ही करते थे। तभी तो उसके मुंह में तब मिर्चें लग गयी थीं। जब बोलती तब कांय ..... कांय ..... अरे, भाई का घर भी कभी पराया होता है?

पर भैया तो विमल भी है। विमल की याद आते ही लगा, जैसे कीचड़ में पांव रख दिया हो। उफ! छोटे-छोटे बच्चे हैं कि पूरे भुक्खड़, जब देखो तब खाना ..... खाना ..... और वह पिंकी तो दिन-भर कटोरा लिये मारी-मारी फिरती है। विमल ने भी अच्छी नौकरी की। ..... न चपरासी, न फोन, न फ्रिज, न जीप, और तो और किसी सिनेमा-विनेमा का पास भी नहीं! मास्टर की नौकरी भी कोई नौकरी है। इतना पढ़-लिखकर बना भी तो मास्टर।..... बाबूजी ने कितना समझाया था। पर थानेदारी छोड़कर मास्टर बना। ..... सब अपने-अपने करम हैं। वैसे विमल चाहता तो बहुत है, पर उसके यहां जाने का मन होता ही नहीं है। दरिद्र में पांव देने से क्या फायदा! आग लगे ऐसे लाड़-प्यार में। सुधीर के यहां यह सब नहीं। व्रत के दिन चाय, शरबत, फल-फ्रूट, कोई कमी नहीं। नहाकर आओ तो कपड़े सब बाथरूम में ही छोड़ आओ। उस दिन की ही तो बात है, कपड़े धो रही थी तो सुधीर ने कितना बुरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

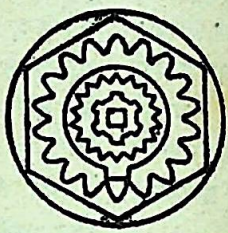

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाने के लिए विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां 'ब्रोच' उत्पादन परमावश्यक होता है। डॅगर-फोर्स्ट टूल लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये 'ब्रोच' से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.,
पहला पोखरण रास्ता,
थाना (बंबई)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माना था—'क्यों जीजी यह क्या ? तुम्हारी एक धोती हरचरन धो देता तो क्या उसके हाथ टूट जाते ? क्यों जलील करती हो !' और तब मैं मन ही मन चंदनी हवाओं में नहा गयी थी।

वैसे यहां आते ही पांव अपने आप चौके की तरफ उठ जाते हैं। सुमी तो फिर चौके में कभी-कभी ही आती है। सुधीर भी तो यही कहता है—'जीजी के तो हाथों में जादू है ! ऐसी सब्जियां बनाती हो कि और कहीं देखने को भी नसीब न हो।' और फिर सचमुच दो-चार दिन बाद यह भी याद नहीं रहता कि मैं कब आयी थी। अक्सर यही होता है ..... 'अरे जीजी, जब आ गयी हो तो अचार भी डालती ही जाओ .....आपके भैया को तो आपके ही हाथ का अचार अच्छा लगता है।..... जरा पापड़ भी बना जाओ ..... इनको तो मूंग की दाल के पापड़ बेहद पसंद हैं !' सुमी के ये वाक्य फिर आंगन में गूंजते ही रहते हैं। और फिर अंत में वही होता है, जीतू को आना ही पड़ता है.....तब जाना हो पाता है।

पर इस बार सच मैं भी कैसी बावली हो गयी थी ! चलो अच्छा हुआ, सारे परदे आंखों के सामने से हट ही गये। राम जाने कौन-सा बुखार है, ट्रेन में ही आ गया था। घर तक तांगे में भी बड़ी ही मुश्किल से पहुंच पायी। सुधीर ने आते ही डाक्टर को बुलवाया। दवा लाया। पर तब से बहू का मिजाज ही नहीं ठीक हुआ। 'कहीं सबको न हो जाये ..... पता नहीं कैसा इन्फेक्शन है !' पहले इंजेक्शन तो सुना था..... पर इन्फेक्शन ! ..... क्या पता क्या हो ..... थोड़ी पढ़ी-लिखी है, गिटर-पिटर ज्यादा ही करती है। खुद एक बार भी देखने नहीं आयी। बस, सुधीर दिन-भर में एक बार आकर पूछ जाता है। बच्चे तो उस दिन से इधर आये ही नहीं। कहां तो बुआ-बुआ कहकर लिपट जाते थे, पर इस बार तो उनकी शक्ल ही दिखाई नहीं दी। कितना बदन दुख रहा है।..... वहां होती तो यह सब होता ? सबकी ही याद आ रही है, आंखों ही आंखों में चेहरे घूम रहे हैं।

और क्या कहूं ..... अभी झपकी लगी ही थी कि नींद खुल गयी। सुमी की ही आवाज थी—'मैंने तो यह सोचकर लिखा था कि ये यहां आ जायेंगी तो हम लोग बाहर घूम आयेंगे। ..... बच्चों के एग्जाम जो हैं, ये देख लेतीं। अब तो बैठे बिठाये गले में हड्डी फंस गयी है। सुनो, तुम महेश को तार दे दो, वे आकर ले जायेंगे। हम कब तक तीमारदारी करते रहेंगे ?'

'हिश्श ! धीरे बोलो,' सुधीर की आवाज थी—'सुन लिया तो फील करेगी।'

'फील ? .....तुमने खूब कही। दो-चार महीने बाद फिर अपने आप आ जायेंगी। उनका मन तो यहीं बंधा है।'

और लगा सचमुच ये शब्द नहीं चाकू हैं, जो मेरे जिस्म को छीलते चले जा रहे हैं। जब तक मिसरानी रही, इनकी चाकरी में रही, जीजी बहुत अच्छी हैं ! और एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

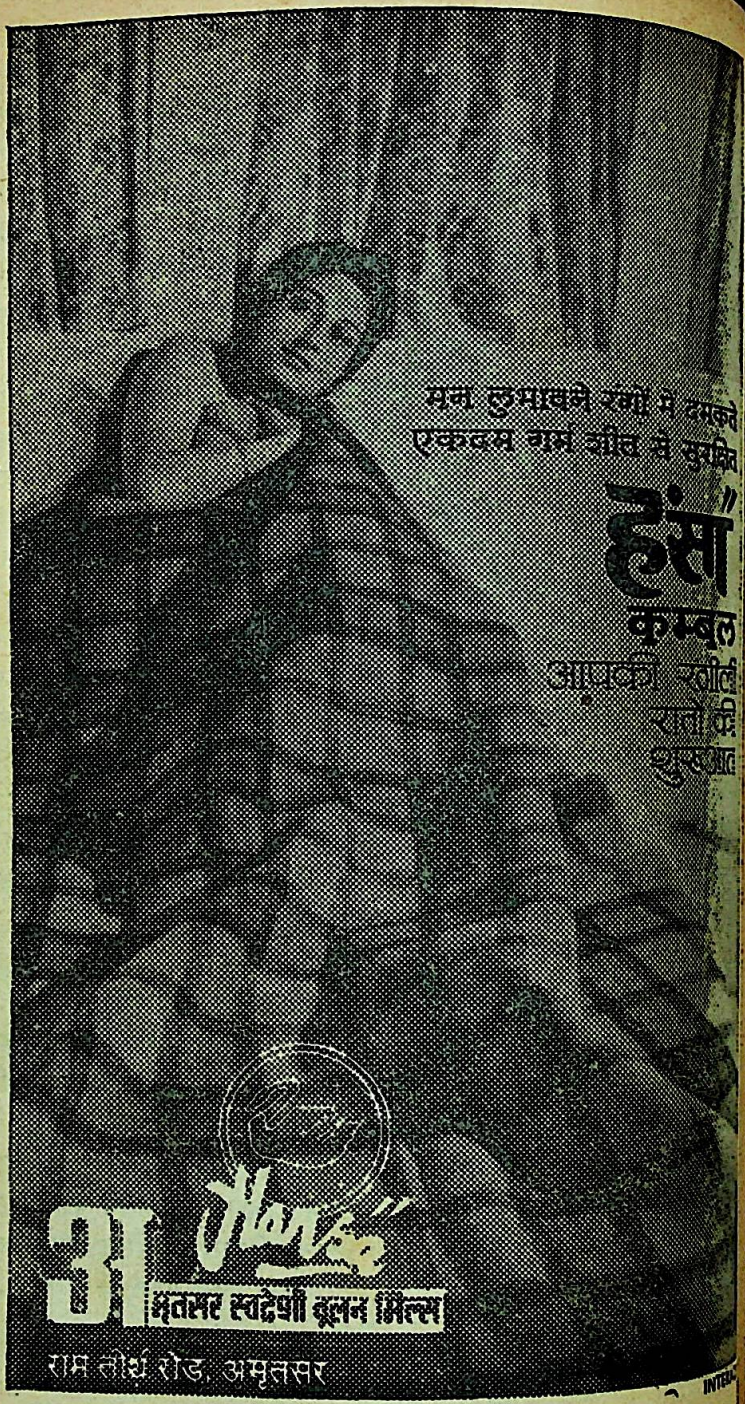

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन में ही सब सामने आ गया। यही तो चित्रा कहती थी—'तुम सुधीर की चमक-दमक में डूबी हुई हो जीजी। वैभव में भोग तो है, पर प्रेम नहीं। कभी विमल के यहां भी रह आना।' और तब सचमुच मुंह कसैला हो जाता था।

तभी कमरे में सुधीर आया—'कैसी तबीयत है?'

'ठीक है, पहले से तो अच्छी है।' किसी तरह जी को कड़ा करते हुए कहा।

'हूं, मैं भी यही सोच रहा था। जल्दी अच्छी हो जाये तो ठीक। हमें भी जाना है। सुमी की ही जिद है, मनाली जाने की..... रिजर्वेशन करवा लिया है.....पर तुम्हें.....'

'नहीं-नहीं, तुम मेरी बात रहने दो। मेरा क्या? उन्हें तार दे दो, कल आ जायेंगे।'

'हूं, तो मैं चलूं। जरा एक पार्टी में जाना है। तुम खा लेना।' वह धीरे-से बोला। बाहर से आती हुई तेज इत्र की भीनी-भीनी गंध मुझे छू ही गयी। 'हूं सुमी बाहर ही है.....' मैं बड़बड़ायी। तभी ध्यान आया, उसे भी डर है, कहीं बुखार-बुखार आ गया तो मनाली यहीं धरी रह जायेगी। बरबस चेहरे पर हंसी आ ही गयी।

'सुनो, देर हो रही है।'

'आया,' सुधीर तेजी से लौटा।

जीप से आती हुई खिलखिलाहट से जाना कि बच्चे भी साथ ही जा रहे हैं। फिर कहां लेटा जाता? ..... उठी, बाहर आयी। बरामदे में वाश-बेसिन पर आकर मुंह धोया। रूखे-रूखे बाल, जरा कंघा ही लगाया था कि खिंचने लग गये।

तभी बाहर किसी की आवाज सुनाई दी। जैसे विमल ही हो। खिड़की से देखा। ..... वही था, हरचरना को बुला रहा था। जी तो हुआ, उठकर बाहर चलूं और उससे कहूं, मुझे साथ ले चल। पर जीभ भीतर ही भीतर खुद से ही लड़ रही थी। तभी वह अंदर ही आ गया। 'अरे..... यह क्या हो गया। ..... तुम्हें तो तेज बुखार है।' उसने मेरा हाथ छुआ। 'अरे, इतना तेज! कहां गये सब?' मैं क्या कहती। बस, चुप ही रही। आंखें नम थीं।

'मुझे कहला देतीं।.....कल ही जीतू का पत्र आया था कि तुम यहां हो। ..... तुम्हारी बहू तुम्हारी बहुत याद कर रही थी, बोली, स्कूल से लौटते समय जीजी से मिलकर आना.....और साथ ले ही आना।'

मुझसे अब और अधिक रुका नहीं गया। 'तुम तो मेरा बस एक काम कर दो ..... फुरसत हो तो बयाना छोड़ आओ।' रुलाई रोकते हुए बस मैं यही कह पायी थी।

'चली जाना ..... छोड़ आऊंगा। ..... पहले तबीयत तो ठीक हो जाये। लाओ तुम्हारा सामान कहां है?.....मैं लगा दूं। फिर तांगा लेकर आता हूं। तुम तब तक लेटो।' वह मुझे बांहों का सहारा देते हुए अंदर कमरे तक ले आया। मैं चुप थी..... पर भीतर ही भीतर आंखें रिश्तों की किताब को दुबारा पढ़ना चाह रही थीं कि कोई गलती तो नहीं रह गयी है। —गोयल भवन,

मामा-भानजा, झालावाड़, राजस्थान

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो सांड दो योद्धा

हम प्रतीक्षा में बेकरार बैठे थे। कुछ ही देर में एक घुड़सवार अखाड़े में दिखाई दिया। गोल चक्कर में घोड़े को दौड़ाता हुआ वह एक जगह रुका और वह दरवाजा खोल दिया, जिसके पीछे सांड बंद था।

तमाम दर्शक एकाएक चुप हो गये और चारों ओर स्तब्धता छा गयी। फिर तुरही की आवाज गूंजी और तभी चमचमाते काले रंग का एक सांड गोली की तरह निकलकर अखाड़े में आया। फिर किसी घबराहट और हैरानी से वह रुक गया, जैसे भांप गया हो कि चारों ओर हजारों आंखें उसकी मौत का तमाशा देखने के लिए बेताब हैं। चार-पांच साल तक उसकी परवरिश पर खूब खर्च हुआ था और अब पंद्रह मिनिट में वह मार डाला जाने वाला था।

उस समय 'बेंडेरिल्लरो' (सांड से लड़ने-वाले 'मैटाडोर' के सहायक) अपने 'केप' (सांड़ का ध्यान बंटाने के लिए पहना जाने वाला रंगीन कपड़ा) हिला-हिलाकर उसे उत्तेजित कर रहे थे, ताकि 'मैटाडोर' देख सकें कि सांड अपनी किस आंख अधिक उपयोग करता है और किस से अपने दुश्मन को मारना चाहता है।

बेंडेरिल्लरो केप हिलाते, सांड [illegible] उन पर हमला करता, वे चुस्ती से [illegible] और भागता हुआ सांड तीर की तरह [illegible] आगे निकल जाता। खेल का यह [illegible] काफी दिलचस्प था।

मैटाडोर देखने में खास प्रभावशाली था। औसत से कुछ छोटा कद था [illegible] उम्र थी लगभग पैंतीस वर्ष, जो कि [illegible] के लिए काफी ज्यादा थी।

फिर हाथ में भाला लिये एक घुड़सवार सांड की ओर बढ़ा। उसका घोड़ा [illegible] हुआ था; पर वह खुद मुस्करा रहा था। सांड ने घुड़सवार पर हमला किया। घुड़सवार ने सांड के कंधे पर भाले से पूर वार किया। सांड एकबारगी [illegible] दूसरे ही क्षण उसने घोड़े पर भयानक

शीर्षक के साथ पैट गिलमोर का ग्राफिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया। पर घुड़सवार दांव बचाकर निकल भागा, कुछ आगे जाकर मुड़ा, फिर सांड पर भाले का ऐसा भरपूर वार किया कि खून का फव्वारा फूट निकला।

मेरे पास बैठे दर्शक चिल्लाये—'अरे मूर्ख इस तरह तो तू सांड को तबाह कर देगा।'

तीसरी मुठभेड़ में घुड़सवार सांड की चपेट में आ गया। सांड के हमला करते ही वह उछला और एक ओर को लुढ़क गया। उसकी टोपी दूर जा गिरी। वह खुद तो बच गया; मगर उसका घोड़ा सांड़ के सींग का शिकार बन गया। घुड़सवार को बचाने के लिए मैटाडोर और उसके सहायक अपने केप हिला-हिलाकर सांड को अपनी ओर आकर्षित करने लगे।

फिर एक बेंडेरिल्लरो आगे बढ़ा। उसके हाथ में दो तीर थे। उसने सांड का ध्यान अपनी ओर खींचा और जब सांड उसकी ओर लपका, तो वह भी भागता हुआ उसकी ओर बढ़ा। जब दोनों पास आये, बेंडेरिल्लरो ने दोनों तीर सांड के कंधे में गाड़ दिये। इस नयी चोट से सांड पागल हो उठा और गुर्राने लगा।

अब हाथ में तीर लिये दूसरा बेंडेरिल्लरो सांड का सामना करने आया। सांड ने हमला किया और उसका सींग बेंडेरिल्लरो की जैकेट को चीरता हुआ निकल गया। लोग चीख उठे। बेंडेरिल्लरो बच गया था और उसने अपने तीर सांड के कंधे में गाड़ दिये थे। अब वह सांड की ओर पीठ करके ऐसे चलने लगा, मानो उसे अपनी जान की कोई परवाह न हो। दर्शकों ने खुशी में तालियां बजायीं।

सांड़ बहुत ज्यादा लहू-लुहान हो चुका था। उसके काले रंग पर खून और भी सुर्ख लग रहा था। उसके कंधे में गड़े हुए चारों तीर हिल रहे थे। अभी तो दो तीर और उसके कंधे में गाड़े जाने थे। मैटाडोर और बेंडेरिल्लरो ने अपने केप हिलाकर उसका ध्यान बंटाना चाहा, पर वह एक ही जगह जम-सा गया था, जैसे उसे पता चल गया हो कि वह बुरी तरह फंस गया है और अब उसके बच पाने की कोई आशा नहीं है।

लेकिन अंत में सिर झटककर वह आगे बढ़ा। तभी तीसरे बेंडेरिल्लरो ने दो तीर उसके कंधे में गाड़ दिये।

अब खेल का तीसरा और आखिरी दौर शुरू हुआ, जिसमें मैटाडोर और सांड का सीधा सामना होना था।

मैटाडोर ने आगे बढ़ते-बढ़ते अपने सहायकों से कोई बात कही। उसमें विजेता का आत्मविश्वास नहीं दिखाई दे रहा था। पसीने से लथपथ था वह। उसे 'मुलेटा' (छड़ी पर बंधी हुई लाल कपड़े की झंडी) और तलवार पकड़ायी गयी।

मैटाडोर ने मुलेटा की सहायता से सांड को काबू में करना चाहा, पर विफल रहा। दर्शक शोर मचाने लगे। आखिर मैटाडोर ने सांड पर तलवार का वार किया। पर तलवार आठ इंच से ज्यादा नहीं धंसी और सांड ने अपना सिर झटककर तलवार को हवा में उछाल दिया। अब निहत्था मैटाडोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सांड की दया का पात्र बना खड़ा था। उसी समय दो बेंडेरिल्लरों अपने केप हिलाते हुए उसकी सहायता के लिए आये। तीसरे बेंडेरिल्लरों ने नयी तलवार लाकर उसे दी। मैटाडोर ने फिर सांड पर हमला किया। मगर इस बार निशाना ठीक न बैठा। उसने पांच बार और कोशिश की।

दर्शक गुस्से में शोर मचा रहे थे; क्योंकि मैटाडोर एक ही वार से सांड को मार नहीं पाया था। उसके चेहरे पर डर और असफलता की छाया थी। उसके ओंठ नीले पड़ गये थे और वह कांप रहा था। उसके जीवन का यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण क्षण था। शायद वह सोच रहा था—अगर इस पेशे से रुखसत होना पड़ा, तो मैं अपने परिवार के लिए रोटी कहां से जुटाऊंगा?

दोनों हारे हुए प्राणी—मैटाडोर और सांड—अब फिर आमने-सामने थे। अपनी हार के एहसास से मैटाडोर में नया साहस जागा। सांड की हत्या के लिए नियत अवधि में से कुछ ही सेकेंड अब बाकी रह गये थे। अगर वह उतने समय में सांड को मार न सका, तो सांड़ को बाहर ले जाकर खत्म कर दिया जायेगा। उस हालत में मैटाडोर हार होगी। सो मुलेटा का उपयोग करते हुए वह सीधा सांड के सींगों की ओर हांफते हुए सांड़ ने सिर झुका लिया अपनी मौत कबूल कर रहा हो। मैटाडोर अंतिम वार किया और पीछे हट विजेता की तरह नहीं, बल्कि जैसे उसका कोई संबंध न हो इस तरह घुटनों के बल गिर पड़ा। वह ढेर हो

मैटाडोर ने मृत सांड को एक नजर और पराजित योद्धा की तरह एक ओर चल दिया। फिर चार छोटे-छोटे अखाड़े में लाये गये। उनके गले में घंटियां बज रही थीं। सांड की लाश घसीटकर वे बाहर ले गये।

× × ×

थोड़ी देर बाद दूसरा सांड आया। उससे लड़ने वाला मैटाडोर कुछ ऊंचे कद का था। इकहरे शरीर चौड़े कंधे वाला बहुत ही सुंदर युवक उम्र बाईस-तेईस की होगी। उसे आत्मविश्वास था कि लोगों ने उसे विजेता के रूप में स्वीकार कर लिया

कुछ देर तक वह सांड को देखता जिसे बेंडेरिल्लरो केप दिखा-दिखाकर उधर भगा रहे थे। उसने सांड के और आदतों का अध्ययन किया। फिर कर उसकी ओर बढ़ा और एक जगह गया। जैसे ही भागता हुआ सांड उसके आया, वह अपने पैरों पर घूम गया। सीधा आगे बढ़ गया। फिर सांड पलटा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुनः उसकी ओर दौड़ पड़ा। उसने सांड को अपने बिलकुल पास ही रोक लिया। ऐसा लगा, जैसे सांड के सींग उसकी कमर को छू रहे हैं। मगर सांड उसे छू न सका। वह लयपूर्ण गति से घूमकर एक तरफ को चला गया दर्शकों ने खुशी से तालियां बजायीं।

बहुत सुंदर दृश्य था। मैटाडोर लय, फुर्ती और बहादुरी का अद्भुत संगम बना हुआ था। दर्शक सहमे हुए थे, और आश्चर्य-चकित भी। अब बेंडेरिल्लरों ने सांड की गरदन में तीर गाड़ने शुरू किये। अंतिम दो तीर मैटाडोर ने खुद गाड़े।

खेल के अंतिम दौर में जब मैटाडोर और सांड का सामना हुआ, तो दर्शकों की उत्तेजना एकदम बढ़ गयी। सांड की शक्ति तो कुछ घट गयी थी, पर उसका जोश और गुस्सा जरा भी कम नहीं हुआ था। वह टांगें फैलाये खड़ा था और हांफ रहा था। उसकी आंखों में प्रतिहिंसा की भावना थी।

बायें हाथ में पकड़े हुए मुलेटा को हिलाता हुआ मैटाडोर सांड को अपने काबू में करने का प्रयत्न कर रहा था। उसके दायें हाथ में तलवार थी।

एकाएक दर्शकों के दिलों की धड़कनें बंद-सी हो गयीं। मैटाडोर और सांड जैसे एक हो गये थे—मैटाडोर बीच में था और सांड उसके गिर्द घूम रहा था। मैटाडोर मुलेटा घुमाकर पूरे दायरे में घूम गया था।

मेरे माथे पर ठंडा पसीना छलक आया; मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।

अब मैटाडोर सांड से कुछ ही दूरी पर था। 'वह बचेगा नहीं', किसी दर्शक ने कहा—'अब सांड उसे दबोच लेगा।'

लेकिन मैटाडोर एक खास अंदाज में खड़ा था। उसके ओंठों पर मुस्कराहट नहीं थी। बायें हाथ में पकड़ा हुआ मुलेटा उसने थोड़ा-सा नीचे झुका लिया था। उसका बायां कंधा सांड की ओर था। दायें हाथ में पकड़ी हुई तलवार भी नीचे की ओर झुकी हुई थी।

वह दो कदम पीछे हटा और फिर दौड़कर आगे बढ़ा। दूसरे ही क्षण वह सांड के दोनों सींगों के बीच में उसके सिर पर झुका हुआ था और उसकी तलवार सांड़ के शरीर में पूरी तरह घुस चुकी थी। फिर वह फुर्ती से उछलकर सीधा खड़ा हो गया। तभी सांड ने अपना सिर उठाकर हवा में झटका अगले ही क्षण वह उछला, घुटनों के बल गिरा, और रेत पर ढह गया। उसकी टांगें ऊपर उठ गयीं।

एकाएक तालियां बजने लगीं। दर्शक खड़े हो गये थे और खुशी में चीख रहे थे। बैंड बजने लगा था। लोग अपने हैट उछाल-उछालकर अखाड़े में फेंक रहे थे। हजारों रूमाल हवा में फड़-फड़ा रहे थे। एक बेंडरिल्लरो दौड़ता हुआ सांड के पास आया और उसका एक कान काटकर लौट गया। वह कान उसने मैटाडोर को उपहार के रूप में दिया। मैटाडोर ने उसे स्वीकार करते हुए धन्यवाद में सिर झुकाया। फिर, वह उस कान को हाथ में लिये पूरे अखाड़े में घूमा। तालियां बजाते, चीखते-चिल्लाते हुए दर्शक अपना उल्लास प्रकट कर रहे थे।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धूल

इस बिखरी धूल को
याद है कि वह गुलाब थी
औ' एक औरत के जूड़े में
सजी थी !

इस बिखरी धूल को
याद है कि वह एक औरत थी
औ' उसके जूड़े में गुलाब
टंगा था !

चीजें जो कभी धूल थीं
अब क्या हैं !
जरा सोचो और
बीते कल के
सपने याद करो !

—कार्ल सैंडबर्ग
रूपांतर: केदारनाथ कोमल

पावस गीत!

मेघों पर घरे मेघ !
भोर हुआ भादों
सांझ हुई सावन,
केका रव गुंजित
अनुगुंजित वन वन,
गरजे, फिर डरे मेघ !
क्षितिजों के द्वारे
सुरधनों के तोरण,
अंबर के माथे
चपला का चंदन,
ढुलके फिर भरे मेघ !
झरती है फूली-
निशिगंधा अनुक्षण
पगली पुरवाई
गंधाकुल उन्मन
डूबे, फिर तिरे मेघ !

—कन्हैयालाल

तुमको क्या मालूम

गांव से बाहर
सन्नाटों की अंगड़ाई में
बूढ़ा बरगद
जो सदियों से
अपने पत्तों के साये में
खड़ा हुआ है
उसके कितने हाथ हैं
तुमको क्या मालूम !

—एमन जाफ़री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलोवान जिलास की जेल-डायरी

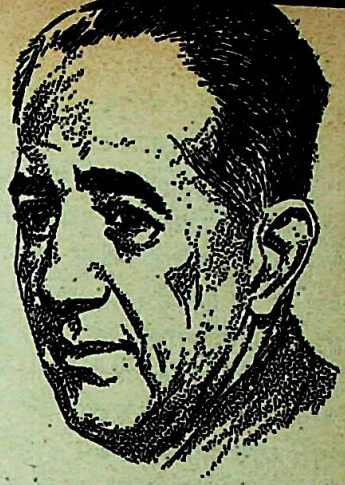

मिलोवान जिलास जब युगोस्लाविया के उपराष्ट्रपति थे, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि देश में समाजवादी विचारों के लोगों को दूसरा राजनैतिक दल बनाने की छूट दी जाये तथा साम्यवादी दल की अधिनायकता समाप्त की जाये। इस पर उन्हें उपराष्ट्रपति-निवास से सीधे जेल भेज दिया गया। तब से उनका जीवन यातनाओं और यंत्रणाओं की गाथा रहा है; मगर उससे भी बढ़कर, एक सत्यनिष्ठ मनीषा की अपराजेयता की गाथा भी।

जिलास अब बेलग्रेड में एक छोटे से फ्लैट में जीवन बिता रहे हैं। जेल में उन्होंने जो डायरी लिखी थी, उसके कुछ अंश इस वर्ष गरमियों में पश्चिमी देशों में छपे थे। उन्हीं में से यह सामग्री नेमिशरण मित्तल ने प्रस्तुत की है।

★

हम साम्यवादियों ने सैद्धांतिक तथा अन्य प्रयोजनों से यह घोषणा की कि सामान्य मानवीय न्याय की धारणाएं तथा नैतिक मूल्य पतित बुर्जुआ धारणाएं एवं मूल्य हैं। इस घोषणा द्वारा हमने दो परस्पर असंगत सृष्टियों का निर्माण शुरू कर दिया—जितनी अधिक सैद्धांतिकता, उतनी ही कम स्वतंत्रता; हम अंतिम लक्ष्य की जितनी अधिक चर्चा करते चले जायेंगे, स्वतंत्रता की मात्रा उतनी ही कम होती चली जायेगी।

आज के मार्क्सवाद का वास्तविक मार्क्स और उसके चिंतन से दूर का भी नाता नहीं रहा है, जैसे कि आधुनिक चर्च का बाइबल से कोई नाता नहीं रहा है। यदि मार्क्सवाद मार्क्स के चिंतन का तर्कसंगत विस्तार हो, तो भी उसे प्रतिक्रियावाद मानकर अस्वी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार कर दिया जाना चाहिये। उसने अपने सैद्धांतिक एकाधिकारवाद के द्वारा मानवीय आत्मा की स्वतंत्रता का गला घोंट लिया है। इस मार्क्सवाद में कुछ भी नया नहीं है, न इसमें कुछ नया सृजन करने की क्षमता ही रह गयी है। वह सिवा निम्न कोटि की राजनीति अथवा कूटनीति के कुछ नहीं रह गया है। यह कूटनीति नंगी सत्ता और स्वेच्छाचारिता का बचाव करती है तथा ऐसे विचारों और आदर्शों को छद्म के रूप में ओढ़े रहती है, जिनमें से कुछ सच हो सकते हैं।..... [चिंतन की डायरी, १९५०-५२]

३० जनवरी १९५८

जाड़ा चल रहा है। सूरज दिन में कुहरे को तो छांट देता है, मगर रास्ते पर जमी बर्फ को नहीं पिघला पाता। रोज शाम को वे (जेल-अधिकारी) पंद्रह मिनिट के लिए हीटर चला देते हैं। उससे कोई बहुत मदद तो नहीं मिलती, हां सोते समय थोड़ी सुविधा महसूस होती है।

मेरा दिन कुछ इस तरह बीतता है—५.३० पर सोकर उठना, ६.३० पर पाखाने के बरतन की सफाई, १०.३० पर घूमने जाना, १.३० पर भोजन, ३.३० पर फिर घूमना, ७ बजे शाम को ब्यालू।

सोने का सरकारी समय ९ बजे है, घंटी १५ मिनिट पहले बज जाती है। मैं प्रायः ब्यालू नहीं करता और उसी समय सो जाता हूं। मुझे सर्दी बहुत लगती है। मैं प्रायः नाश्ता भी नहीं लेता—चिकोरी-काफी का एक कप ही तो होता है! दिन-भर मैं पूरे कपड़े पहने, तीन कंबल [illegible] रहता हूं और हाथों में दस्ताने [illegible] पुस्तक पकड़ता हूं।

९ फरवरी १९५८

मैं एकांत कोठरी में जीने का [illegible] हो गया हूं। क्या इसे ही [illegible] क्षमता कहते हैं? या मुझमें कुछ [illegible] है? ..... कभी-कभी मैं अपने [illegible] पहले की अपेक्षा अधिक मुक्त महसूस [illegible] लगता हूं—मेरा चिंतन मुक्त है, [illegible] करण शांत।

यह फर्श को बुहारने का समय [illegible] थोड़ा गरम हुआ है। मैंने जाड़ों-[illegible] कोठरी की उपेक्षा की है।

१३ फरवरी १९५८

रोजमर्रा की व्यावहारिक [illegible] मानवतावाद अव्यावहारिक और [illegible] प्रतीत होता है। किंतु वह महानतम [illegible] का सत्य है—अधिकाधिक मनुष्यत्व [illegible] के लिए मनुष्य की अतृप्त आकांक्षा [illegible]

अच्छाई के पाने के लिए और [illegible] खिलाफ संघर्ष में, मनुष्य छोटे [illegible] परित्याग करने की हिम्मत नहीं [illegible] यह तर्क दिया जाता है कि भीड़ [illegible] फंस जाने पर अधिक पैने और [illegible] की आवश्यकता होती है; किंतु [illegible] अपनी शक्ति और अपने प्रभुत्व [illegible] बनाने के लिए जिन साधनों का [illegible] हैं, उन्हें हम अनैतिक कहने [illegible]

१४ फरवरी १९५८

दमन और दुष्टता प्रायः [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सज्जनता को पराजित कर देते हैं। लेकिन मानवतावाद और सज्जनता स्वयंभू (आत्मजनित) हैं, उनका फिर से जन्म हो जाता है। संसार में जो कुछ महान और सुंदर है, उसका सृजन उन्होंने किया है। तब भी, जब वे पराजित हो जाते हैं, वे इतिहास को बदल डालते हैं। वे मनुष्य का श्रेष्ठतम सत्त्व हैं। उन्हें बूट के तले कुचला जा सकता है और उन्हें त्रासदी झेलनी पड़ सकती है; किंतु वे अविनाशी, पवित्र और समुज्ज्वल हैं।

१७ फरवरी १९५८

समाजवादियों को एकमेव और एकाधिकारपूर्ण दल के दर्शन का विरोध करना चाहिये। एकाधिकारवादी दर्शन शक्ति के केंद्रीकरण और एक छोटे-से गुट के शासन को जन्म देता है। मनुष्यों को व्यावहारिक और यथार्थ आदर्शों की सिद्धि के लिए संघटित होना चाहिये, न कि असंभव, अमूर्त और दुराग्रहपूर्ण काल्पनिक आदर्शों के लिए।

१ मार्च १९५८

यह एकदम झूठ है कि जेल में और विशेषतः एकांत कोठरी में, बंदी की चेतना प्रखर हो उठती है। फांसी के कैदी को कुछ ऐसा आभास होता है। कभी-कभी मुझे भी होता है। मगर असली बात यह है कि यहां चेतना को आकर्षित करने के लिए कुछ है ही नहीं। ऐसी स्थिति में जब कोई असामान्य पदार्थ या विचार चेतना को आकर्षित करता है, तो ऐसा लगता है कि चेतना बहुत प्रखर हो गयी है।

१७ मार्च १९५८

मेरा बेटा अलेक्स मुझसे कल कह रहा था कि मैं आपको जेल से छुड़ाने की कल्पनाओं में डूबा रहता हूं। उसने मुझसे पूछा था—'अधिक शक्तिशाली कौन है, टैंक या विमान?' मेरे उत्तर के बाद उसने कहा—'आपको मालूम है न कि मेरे पास टैंक (खिलौने) हैं। इसलिए मैं आपको छुड़वा सकता हूं।' कल्पना में शायद उसने मुझे मुक्त करा लिया है। उसकी अचरज-भरी दुनिया में बुराई का एक कंकर पड़ गया है—पिताजी जेल में हैं..... उन्हें मुक्त कराने के लिए संघर्ष ही संघर्ष रह गये हैं।.....

२३ मार्च १९५८

पीछे मुड़कर सोचता हूं—मेरा सारा जीवन सरदी में बीत गया। प्राइमरी स्कूल में पढ़ता था, तब पहनने को पूरे कपड़े न थे। हाई स्कूल में भी यही स्थिति रही। विश्वविद्यालय में कोई भी जाड़ा ऐसा न बीता, जब कमरे को गरम करने की व्यवस्था रही हो, सिवा आखिरी साल के जब मैं भाप से गरम रहने वाले रसोईघर में सीमेंट के फर्श पर सोता था। पहला कारावास सरदी में ही बीता। फिर युद्ध आ गया, तब भी सरदी बनी रही। युद्ध के बाद अगले जाड़ों में हमने अपने पहले वाले घर को गरम करने की कोई व्यवस्था नहीं की थी। दूसरे घर में गरमी की व्यवस्था थी, लेकिन मैंने तो १९५०-५१ के जाड़े शहर की सरदी में ही बिताये। जब मैं घर लौटा तो वहां बिजली की व्यवस्था होते भी हुए हम उसका उपयोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न कर सके; बहुत मंहगी थी बिजली। सिर्फ सोने के कमरे में लकड़ी जला पाते थे हम।

वहां से फिर हमें सरदी में धकेल दिया गया। इतनी सरदी होती थी कि दिन में सोचे बैठना तक मुश्किल होता था और आग हमें शाम को ही नसीब होती थी। कभी-कभी मैं सवेरे तीन बजे तक काम करता रहता था।.....

और अब, अब जेल की यह एकांत कोठरी है। मैं सरदी का अभ्यस्त हो गया हूं। अब मुझे उससे परेशानी नहीं होती। फिर भी मैं सोचता रहता हूं कि यदि मैं अपने को जेल से जिंदा बचा पाया और कहीं से कुछ पैसा भी बच गया, तो मैं उस पैसे को अपना शेष जीवन गरमी में गुजारने में खर्च करूंगा। जीवन में एक यही कामना बची है।

२४ अप्रैल १९५८

मेरे समकालीन लोग 'सत्ता की प्रशंसा' करते हैं। ..... यह भावना सबमें है, भले ही वे कितने भी शिक्षित या बुद्धिमान क्यों न हों।

मैं इसे पूरी तरह समझ नहीं पा रहा हूं। भय, भौतिक आश्रय, चापलूसी और अंध-पूजा, ये उसके कुछ कारण तो हैं; परंतु ये ही काफी नहीं हैं। मुझे लगता है कि 'सत्ता की प्रशंसा' के कुछ विशेष और गहरे कारण हैं। शायद मानवीय समुदाय सत्ता के बिना जिंदा रह ही नहीं सकता ..... आदिम समाजों में सरकार की सत्ता की जगह पुरोहितों की आध्यात्मिक सत्ता होती थी। .....

आधुनिक राज्य का मूल [illegible] यानी शक्ति है। लेकिन उसका [illegible] लक्षण भी है—समाज की आम [illegible] व्यक्त करना। ये दो तत्व—[illegible] सहमति—साथ-साथ चलते हैं।

सत्ता चाहे व्यक्ति की हो या [illegible] शीघ्र ही मिथक का रूप ले लेती [illegible] मिथकों की जड़ें किसी भौतिक, [illegible] अथवा आध्यात्मिक आवश्यकता [illegible] हैं। यह आवश्यकता समाप्त होते [illegible] काफूर हो जाते हैं।

२९ अप्रैल १९५८

कल मुझे नया कैदी-नंबर [illegible] १७३२। अब तक मैं ६८८० था।

..... पार्टी-कांग्रेस में मेरा [illegible] किया गया, उससे मेरे भीतर रोष [illegible] जना का उदय हो गया था। [illegible] कमी हो गयी। सरदी और [illegible] जूद अब मैं पहले की अपेक्षा [illegible]

मैं देख रहा हूं, आखिरकार [illegible] ने मुझे अत्यधिक संवेदनशील [illegible] है। यह कष्टकर स्थिति है। [illegible] शीलता कहां तक जायेगी? [illegible] सात साल बाद मैं किस किस्म [illegible] बन जाऊंगा?

मैं अपने भीतर एक खात [illegible] रहा हूं। यह मुझमें अचानक [illegible] है। मेरे रास्ते में कोई कीड़ा-[illegible] जाता है, तो मैं उस पर पांव [illegible] बचता हूं। बहुत सावधानी के [illegible] हूं। अपनी कोठरी में मैं उन्हें [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर उठाकर कूड़े की टोकरी में डाल देता हूं। सिर्फ मकड़ी को कहीं भी घूमने और मेरे चारों तरफ जाल बुनने की छूट है। इसके पीछे कोई दर्शन नहीं है, मेरे मन में जीवन के प्रति संमान जाग गया है। यह एक मनःस्थिति बन गयी है, हर जीवित वस्तु के प्रति।.....

ऐसा लगता है कि जीवन का प्रत्येक रूप अंततः मनुष्य की दिशा में उठता हुआ एक कदम है, तथा मनुष्य का उदय इन्हीं जीवों में से विकास के द्वारा हुआ है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि मुझमें और रास्ते में मिलने वाले कीड़े-मकोड़े में बहुत मामूली-सा अंतर रह गया है।

वे भी अपने ढंग से सोचते हैं और जगत में संघर्ष करते हैं, तथा तब तक जिंदा रहते हैं, जब तक उन्हें जीने दिया जाता है। जीवन न सुंदर है, न घिनौना; न प्रसन्न है, न उदास.....।

२२ मई १९५८

मुझे बताया गया है कि मुझे कोई भी विदेशी पुस्तक नहीं मिल सकेगी। उन्होंने (अधिकारियों ने) 'न्यूयार्क टाइम्स' में छपी 'लैंड विदआउट जस्टिस' की समीक्षा भी रोक ली है। मैंने तुरंत आक्रोशपूर्ण प्रतिरोध में उन्हें लिखा। जाहिर है कि यह एक तरह का ओछापन है—मुझे 'कसने' की कोशिश हो रही है। आखिर प्रयोजन क्या है? इस पर भी मुझे गुस्सा आता है.....और मैं अपने आध्यात्मिक जीवन तथा लेखन के घोंघे में लौट जाता हूं।

४ जून १९५८

उन्होंने मिल्का (बहन) का पत्र जब्त कर लिया है। कितना घिनौना है यह सब! जितना कष्ट वे मुझे पहुंचा सकते हैं, उससे अधिक झेलने की सामर्थ्य मुझमें है। मुझे असंतुलित करने की कोशिश की जा रही है। मैं प्रतिरोध कर रहा हूं, मानो युगोस्लाविया रूस को प्रतिरोध में पत्र भेज रहा हो।

१५ जून १९५८

मैं सूरज की किरणें न पा सकूं, इसलिए मेरे घूमने का समय सुबह ९·३० के बजाय ७·३० कर दिया गया है। क्या कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त न करूं?

कल 'पोलितिका' में इमरे नाज तथा अन्य साथियों के गोली से उड़ाये जाने की खबर छपी है। मुझे इनके लिए बहुत अफसोस है। कभी-कभी सोचता हूं कि मेरा भी यही अंत होगा। मैं हमेशा महसूस करता रहा हूं कि इमरे नाज और मैं एक ही तरह के तो आदमी हैं, केवल इतना-सा अंतर है कि मैं लिखता हूं। शायद उसने भी यही किया होता, मगर उसे मौका ही नहीं मिला.....। नाज ने ईमानदारीपूर्ण मौत पायी और उसका अर्थ बहुत व्यापक है। मुझे विश्वास है कि वह हंगरी के इतिहास में हमेशा एक महापुरुष माना जायेगा, हालांकि उसे बहुत कुछ करने का मौका नहीं मिला। उसने सिद्ध कर दिया कि साम्यवादियों में भी लोकतंत्रवादी और सच्चे समाजवादी लोग हैं.....भले ही उनका अंत नाज की तरह हो।

..... मैं उसके प्रति श्रद्धा अर्पित करता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्वालियर रेयन के २६ गौरवशाली वर्ष

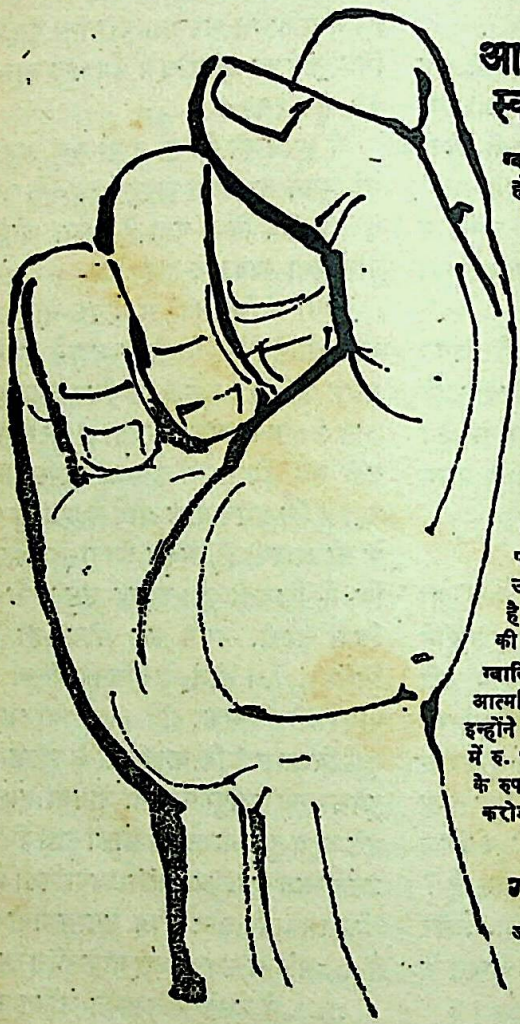

आत्मनिर्भरता का स्वप्न साकार

ग्वालियर रेयन ने देश के आजाद होने के साथ ही साथ रेयन वस्त्र, धागे, रेशे, रेयन-ग्रेड पल्प और रेयन धागे रेशे बनानेवाले प्लांट की मशीनों का निर्माण शुरू कर दिया.

ग्वालियर रेयन, बांस व वन की लकड़ियों से रेयन-ग्रेड के [illegible] पल्प तथा रेयन, पल्प व संबंधित की आधुनिक मशीनों के [illegible] हैं तथा रेयन उद्योग के क्षेत्र में [illegible] आत्मनिर्भर बनाने के लिए [illegible]

आज ग्वालियर रेयन के [illegible] उत्पादन, ५ करोड़ २० लाख [illegible] की वस्त्र की जरूरतें पूरी करने के [illegible] पर्याप्त है. लकड़ी के पल्प का [illegible] उत्पादन, एक लाख टन से भी [illegible] है जो सेल्यूलोस के रेशों की दृष्टि से [illegible] की ५.२ लाख गांठों के बराबर है.

ग्वालियर रेयन ने देश को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान [illegible] इन्होंने पिछले दस वर्षों में, राष्ट्रीय [illegible] में रु. ९० करोड़ से भी ज्यादा [illegible] के रूप में दी और इसी दौरान रु. [illegible] करोड़ की विदेशी-मुद्रा भी बचायी।

ग्वालियर रेयन

जहां राष्ट्र की प्रगति ही एकमात्र उद्देश्य है

दि ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यु. (वीविंग) कं. लि. [illegible], [illegible] (म. प्र.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हूं, क्योंकि प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति को शहीदों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करनी ही चाहिये।

२१ अगस्त १९५८

जीवन का सौंदर्य उसकी विविधता में है; यानी उसके लगातार होते रहने में है। इसी कारण जेल से ऊब होती है। वह जीवन के मूर्त सौंदर्य तथा परिवर्तन की अनुभूति छीन लेती है। घटनाविहीन जीवन तो अपंग है, परिवर्तन के बिना जीवन मृत्यु जैसा है।..... यह धीमी और मुलायम मौत है।

३ दिसंबर १९५८

..... मेरा दृढ़ विश्वास है कि व्यक्ति अपने भीतर किसी विशेष तत्त्व पर नियंत्रण लगाये बिना 'अच्छा आदमी' नहीं बन सकता। क्या उस दुष्टतापूर्ण 'स्व' पर काबू पाना संभव है? मुझे कुछ मालूम नहीं। पर हां, धर्म इन प्रश्नों पर गहराई से चिंतन करता है, हमें धर्म से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। ..... इतना तो जाहिर ही है कि वर्तमान व्यवस्था अच्छी नहीं है।

३ मार्च १९५९ (तीसरा पहर)

..... बुनियादी बात यह है कि कानून तोड़ने वालों और उनके कार्यों को समझने की कोशिश की जाये तथा लोकतांत्रिक दृष्टि गहराई के साथ अपनायी जाये। राजनैतिक सत्याग्रही वास्तव में अपराधी नहीं हैं, वे शासकों के विचार और कार्यक्रम के विरोधी होते हैं। यह समझना बहुत जरूरी है कि किसी भी व्यवस्था के अंतर्गत कोई भी विचार पूर्णतया हितकारी नहीं होता तथा उसे अबाध शक्ति प्राप्त नहीं होनी चाहिये।

..... मैं सोचता हूं कि मेरे साथ कितना अन्याय हुआ है। मुझे सिर्फ इसलिए जेल में फेंक दिया गया कि मैं अपने विचार प्रकट करने से बाज नहीं आया। जिन्होंने मेरे साथ यह व्यवहार किया है, शायद वे सोचते हों कि उन्होंने कोई बड़ा भारी मानवतावादी काम किया है, क्योंकि उन्होंने मुझे फांसी न लगाकर नौ वर्ष के लिए जेल में डाल दिया है। उस घोर अपमान और आरोपों के थपेड़ों का तो जिक्र ही क्या, जो मुझे झेलने पड़े हैं।.....

..... वे कितने नीचे उतर आये! मुझे अपनी सफाई तक का मौका नहीं मिला। ..... खैर। सूरज फिर चमकेगा। समय सब कुछ ठीक कर लेगा। जब हम इस धरती पर नहीं रहेंगे, तब इस बात का कोई महत्त्व नहीं रहेगा कि हम कैसे जिये—लेकिन हमारा वह जीना हमारे पीछे जीवित रहने वाले लोगों के लिए एक पाठ बन जायेगा।

२४ मार्च १९५९

गयी रात को मैंने एक सपना देखा। उसका एक वाक्य मुझे शब्दशः याद है—'बुराई तब पैदा होती है, जब किसी देश का प्रधान रसोइया अपने बनाये हुए व्यंजनों को चखकर नहीं देखता।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितने जुझार हैं आप ?

जीवन विकट समरांगण भले न हो, मगर फूलों की सेज भी नहीं है। लोगों के स्वार्थ आपस में टकराते हैं, इसलिए अपने लक्ष्य और अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए लड़ना-जूझना पड़ता है। मगर लड़ाका होना अलग चीज है और आक्रामक होना अलग चीज। आक्रामकता आ बैल मेरे सींग मार कहकर दूसरों से झगड़ा, लड़ाई मोल-लेती है। लड़ाकापन विषम परिस्थितियों का धीरतापूर्वक सामना करने और उन पर विजय पाने की शक्ति देता है। वह दूसरों में आपके प्रति प्रशंसा-भाव जगाता है, जिससे वे आपके साथ सहयोग करने को उन्मुख होते हैं।

आइये, इस प्रश्नावली द्वारा अपने लड़ाकापन को नापिये। इन बीस सवालों को पढ़िये। ईमानदारी से इनका उत्तर 'हां' या 'ना' में दीजिये। कुंजी को उसके बाद ही देखिये।

१. क्या अड़चनें और कठिनाइयां आपको और अधिक परिश्रम करने की प्रेरणा देती हैं ?

२. क्या विफलता से आप दुगुने जोश से नया प्रयत्न शुरू करते हैं ?

३. जब काम ठीक से न चल रहा हो और सफलता के कोई आसार नजर न आते हों, तब भी क्या आप हार मानने से इन्कार कर देते हैं ?

४. क्या आलोचना और विरोध से आपका सफल होने का संकल्प और [illegible] हो जाता है।

५. क्या जब लोग आपके काम में [illegible] दिलचस्पी नहीं लेते, तब भी आप [illegible] अपना काम जारी रख सकते हैं ?

६. जब लोग आपकी नाक में [illegible] हुए हों, तब भी क्या आप अपना [illegible] चाप जारी रख सकते हैं ?

७. जो लोग अटपटे स्वभाव के हैं, [illegible] साथ मिलकर काम करना कठिन है, [illegible] साथ पटरी बैठाने का आप लगातार [illegible] करते रहते हैं ?

८. क्या आपकी यह कोशिश [illegible] कि हारी-बीमारी में भी प्रसन्न बदन [illegible] अपनी चिंता व व्यग्रता से दूसरों [illegible] शान न करूं ?

९. जब आपकी दिलचस्पियों [illegible] दोस्त जरा भी दिलचस्पी न लें तब [illegible] आप अपनी राह चलते रहेंगे ?

१०. क्या आप दूसरों के दबाव [illegible] बिना स्वयं फैसले कर सकते हैं ?

११. क्या चर्चा और बहस में [illegible] दृष्टिकोण का समर्थन कर सकते हैं ?

१२. क्या आप अपने सिद्धांतों पर [illegible] रह सकते हैं, भले वे सिद्धांत लोक[illegible] हों और आपके साथी व स्वजन [illegible] कार न करते हों ?

१३. क्या आप ऐसे मित्र का [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, जो लोकप्रिय नहीं है?

१४. क्या आप निराशावादी बातें सुनकर किसी प्रयत्न या कदम से मुंह मोड़ने से इन्कार कर देते हैं?

१५. क्या दूसरों पर हावी होने की कोशिश करने वालों के आगे आप बिना झुके रह पाते हैं?

१६. क्या किसी नयी विद्या या हुनर को हस्तगत करने के लिए आप अपने से छोटी उम्र वालों के साथ शिक्षणालय जाने को तैयार हो जाते हैं?

१७. क्या अपनी हालत सुधारने के लिए या नया अनुभव पाने के लिए आप नौकरी, मकान, शहर बदलने को तैयार रहते हैं?

१८. क्या बहुत बड़ी विफलता या दुःख शोक के बाद आप अपने को संभालकर फिर काम में जुट जाते हैं?

१९. जब चारों ओर हो रहे परिवर्तन आपको पसंद न हों, तब भी क्या आप परिस्थितियों का अच्छा उपयोग कर लेते हैं?

२०. क्या आप भविष्य के प्रति आशावादी हैं और कैसी भी परिस्थितियां आयें, भविष्य का यथाशक्ति लाभ उठाने को कृतसंकल्प हैं?

कुंजी : प्रत्येक 'हां' के पांच अंक दीजिये। यदि आपके कुल प्राप्तांक ७० हैं तो आपकी स्थिति बहुत अच्छी है। ६० से ७० तक स्थिति संतोषजनक है। ५० से ६० तक भी ठीक है। प्राप्तांक ५० से कम हैं तो स्थिति अच्छी नहीं है। लड़ने की शक्ति अपने में विकसित कीजिये। मगर हां इसके लिए लोगों को दुश्मन समझने की जरूरत नहीं। बल्कि उलटी बात है। यदि आप लोगों से प्रेम करते हैं, यदि आप अपने सामने ऊंचे ध्येय रखते हैं, तो आप अपने प्रियजनों के हित के लिए, अपने ऊंचे ध्येयों के लिए लड़ना सीखेंगे। —के. यू. ऊमि

एक व्यापारी के पास जब भी कोई आदमी अपनी बदकिस्मती का रोना रोता और कहता कि मुझे बहुत बड़ा नुक्सान हुआ, तो वह उसे अपने कमरे में दीवार पर टंगा फ्रेम किया हुआ एक कागज दिखाता, जिस पर लिखा हुआ था :

व्यापार में असफल रहा १०३१
विधान सभा के चुनाव में हारा.....'३२
व्यापार में फिर असफल रहा.....'३३
विधान सभा के लिए चुना गया.....'३४
प्रमिका का निधन .....'३५
बहुत सख्त बीमार हुआ .....'३६
स्पीकर के चुनाव में हारा .....'३८
कांग्रेस के चुनाव में हारा .....'४३
कांग्रेस के चुनाव में हारा .....'४६
कांग्रेस के चुनाव में हारा .....'४८
सीनेट के चुनाव में हारा .....'५५
वाइस प्रेसीडेंट के चुनाव में हारा....'५६
सीनेट के चुनाव में हारा .....'५८
अमरीका का प्रेसीडेंट चुना गया....'६०

उपरोक्त विवरण के नीचे लिखा हुआ नाम था : अब्राहम लिंकन।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धांगध्रा केमिकल वर्क्स लिमिटेड

'निर्मल,' तीसरी मंजिल, २४१ बैकबे रिक्लेमेशन,
नरीमन पाइंट, बंबई ४०० ०२१

तार : SODACHEM

फोन : २९२४०७-२९३२१
२९३२३५-२९३३३

भारत में हैवी केमिकल्स के क्षेत्र में अग्रणी
अब अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी प्रस्तुत :

* अपग्रेडेड इलमनाइट *

(सिंथेटिक रूटाइल ९०-९२ TiO_2

हमारे बनाये हुए रसायन :

* कास्टिक सोडा
* सोडा एश
* सोडियम बाइकार्बोनेट
* अमोनियम बाइकार्बोनेट
* कैल्शियम क्लोराइड
* ट्राइक्लोरो एथिलीन
* लिक्विड क्लोरीन
* हाइड्रोक्लोरिक एसिड

* साल्ट *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized

[पृष्ठ ५१ का शेष]

वाले सर्जन ने पिछले दिन मुझे बताया था कि आपरेशन के दौरान पत्नी के शरीर की परीक्षा करने पर उसके एक अंग के कैन्सर-ग्रस्त होने की बात पता चली है। जैसा कि स्वाभाविक था, इस खबर से मैं बहुत ही दुःखी था और यह बात मैंने सबसे पहले श्रीगोपालजी को ही बतायी। भयंकर परिणाम की संभावना से उनका प्रेमल हृदय भी एकदम अकुला गया। थोड़ी देर बाद मन के कुछ स्वस्थ होने पर मैंने कहा कि श्रीगोपालजी, अब मैं चलूं। उन्हें पता था कि अपनी कार मैं स्वयं चलाता हूं। उन्होंने मुझे जरा ठहरने को कहा और अपने ड्राइवर को बुलवाकर मुझे घर छोड़ आने की आज्ञा दी। उन्हें इसकी चिंता थी कि ऐसी अस्वस्थ मनोदशा में मेरा कार चलाना सुरक्षित नहीं होगा।

इसके बाद काफी समय तक जब भी हम मिलते, वे मेरा मन बहलाने के लिए किसी न किसी नये विषय की चर्चा छेड़ते। सचमुच ऐसी उदात्तता, दूसरों की तकलीफ़ की ऐसी गहरी समझ बहुत कम लोगों में देखने को मिलती है।

'सलटाना' उनका प्रिय शब्द था। काम को कितनी शीघ्रता और तत्परता से वे 'सलटाते' थे, इसका एक उदाहरण देता हूं।

तीन-चार वर्ष पहले एक रात को बिरला मातुश्री सभागार के घूमने वाले रंगमंच पर किसी के जलती सिगरेट का टुर्रा फेंक देने से आग लग गयी। सभागार का उपयोग कुछ समय के लिए बंद कर देना पड़ा, जिससे बंबई अस्पताल को रोजाना बारह-एक सौ रुपये का नुक्सान होने लगा। आग का बीमा राष्ट्रीयकृत बीमा-कंपनियों के हाथ में होने के कारण चटपट मरम्मत कराने में गंभीर अड़चनें थीं। अपनी व्यावहारिक कुशलता से श्रीगोपालजी ने बीमा-कंपनियों के अधिकारियों को समझा लिया और चंद सप्ताह के भीतर मरम्मत कराकर सभागार को कार्यक्रमों के लायक बना दिया। इस अवसर पर उन्होंने सभागार को नया रूप भी दिया।

सरकारी तंत्र को अथवा और किसी व्यक्ति को यह काम कराने में शायद सात-आठ महीने लग जाते। किंतु अस्पताल की आय की उन्हें चिंता थी; सो असाधारण तत्परता और स्फूर्ति से उन्होंने इस कठिनाई का निवारण किया।

अन्याय के प्रति श्रीगोपालजी बहुत असहिष्णु थे। एक बार उनके कहने पर मैं कोई चीज, जिसकी उस समय बाजार में बड़ी मांग थी, उनके एक मित्र को बेचने को तैयार हुआ। उन्होंने मेरी ओर से सौदा तय किया और कहा कि उस दिन उस चीज का अधिक से अधिक जो बाजार-भाव होगा, वह मुझे दिया जायेगा। बाद में उस दिन का उच्चतम बाजार-भाव भी उन्होंने मुझे बता दिया। सौदा मुझे मंजूर था। मगर दो दिन बाद उन्होंने स्वयं ही मुझे फोन करके बताया—'गांधीजी, मुझे निश्चित रूप से पता चला है कि मेरे उन मित्र ने हमारे साथ न्याय नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया है, क्योंकि उस दिन उन्होंने इसी माल के इससे भी ऊंचे दाम किसी और को दिये हैं। मैं नहीं चाहता कि आपको कम भाव पर चीज बेचनी पड़े। सो आप माल की डिलिवरी न कीजिये और उन सज्जन से कह दीजिये कि श्रीगोपाल ने मना किया है।' साथ ही उन्होंने मुझे यह सलाह दी कि जो भी अधिक से अधिक दाम दे, उसे चीज बेच दीजिये।

उनके किसी परिचित परिवार की एक युवती के पति का सड़क-दुर्घटना में देहांत हो गया। युवती के श्वसुर-कुल के लोगों ने उसे न्यायोचित उत्तराधिकार से वंचित रखने की कोशिश की। श्रीगोपालजी को यह बात बहुत अखर गयी। वे उस युवती की ओर से लड़े। उन्होंने अदालत तक जाने की धमकी दी और जब मामला समझौते से सुलझा और लड़की को समुचित उत्तराधिकार मिल गया, तभी उन्होंने चैन की सांस ली।

दूसरों की सहायता करने की उनकी इस प्रवृत्ति के जाने कितने उदाहरण मैंने अपनी आंखों से देखे हैं। यदि कभी मैं इस बात का उनसे जिक्र करता, तो वे बड़े सहजभाव से कहते थे—'गांधीजी, जिंदगी में यही तो सबसे अच्छा है।' ऐसे अवसरों पर मुझे अंग्रेजी का सुप्रसिद्ध उद्धरण याद आ जाता था :

'इस संसार में से मैं बस एक ही बार तो गुजरूंगा। इसलिए किसी मनुष्य का जो भी भला कर सकूं अभी कर दूं, जो भी करुणा बरत सकूं अभी बरत दूं। इसे मैं मुल्तवी न करूं, नजर-अंदाज न करूं; क्योंकि इस राह से नहीं गुजरूंगा।'

लंबे और अतिघनिष्ठ स्नेह-[illegible] कारण कई बार हम आपसे इस बात [illegible] चर्चा किया करते थे कि भगवान [illegible] कितने समय रखेगा और किस [illegible] मृत्यु हमें नसीब होगी। (वे ६८ [illegible] और मैं ७४ का हूं।) मैं कहता कि [illegible] यह होगा कि सुबह के पहर में किसी [illegible] आदमी चल बसे, और सवेरे [illegible] लाने पर पता चले कि वह तो [illegible] सो गया है। वे मेरी इस बात से पूरा [illegible] मत थे।

ठीक ऐसी तो नहीं, मगर [illegible] दुःखरहित मृत्यु उन्होंने पायी। वे [illegible] जनों के बीच आनंद से बैठे हुए थे [illegible] मस्तिष्क की नस फट गयी और वे [illegible] गये। उसी बेहोशी में वे शांति [illegible] की गोद में चले गये। मुझे लगा [illegible] केवल योगायोग नहीं था, अपि[illegible] प्रार्थना का ईश्वरीय उत्तर था।

देहांत से दो मास पूर्व उन्होंने [illegible] विषय में संस्कृत का एक अत्यंत [illegible] मुझे सुनाया था :

अनायासेन मरणं विना दैन्येन [illegible]
देहान्ते तव सान्निध्यं देहि मे भगवन्[illegible]

(कष्टरहित मृत्यु, दैन्यरहित [illegible] देहांत के बाद तुम्हारा सान्निध्य [illegible] चीजें मुझे दो हे प्रभु!)

ऐसा ही जीवन और ऐसा ही [illegible] उन्होंने पाया। मुझे उनसे रश्क [illegible]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

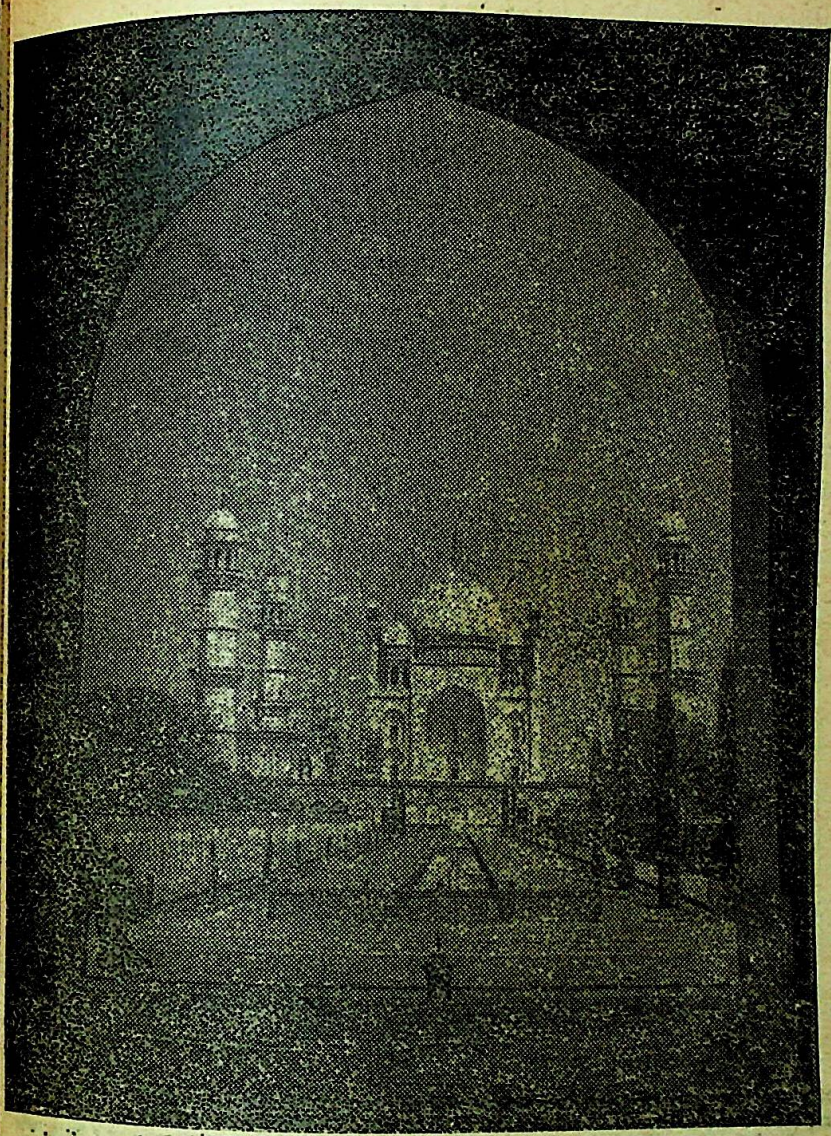

चित्रप्रश्न-५

क्या आप इस इमारत को पहचानते हैं? [फोटो : स्व. श्रीगोपाल नेवटिया]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब
आधी क़ीमत में जगमग सफ़ेदी
स्वस्तिक
डिटर्जेण्ट धुलाई का पाउडर

जब भी 'स्वस्तिक' ख़रीदें, ६ रु. बचायें

ऑप्टिकल ब्राइटनर युक्त नया स्वस्तिक डिटर्जेण्ट धुलाई का पाउडर आपके कपड़ों को जगमग साफ़-सफ़ेद धोता है. और [illegible] धुलाई के पाउडरों की तरह 'स्प्रे-ड्राइड' होने के कारण यह पानी में बहुत जल्दी घुल जाता है. और धुलाई के बाद [illegible] चमचमाने लगते हैं. इससे हर प्रकार के वस्त्र धोये जा सकते हैं. और फिर भी हर ३ कि. ग्रा. पैक पर ६ रु. की बचत! यह [illegible] है कि. ग्रा. के पॉलिपैक में मिलता है.

कम से कम दाम... ज़्यादा से ज़्यादा काम

Shilpi-[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[पृष्ठ ५५ का शेष]

सहारे लेटे हुए थे। लोग बैठे, राजकुमारीजी ने बात चलायी। सरदार ने कहा—'राजकुमारी, तुमने जो सुना है, ठीक सुना है।' मौलाना ने चौंककर कहा—'इससे तो बड़ा अनर्थ होगा। राष्ट्रवादी मुसलमानों की स्थिति बिगड़ेगी और सारे देश में दंगे हो जायेंगे।' सरदार शरारती आंखों से देख रहे थे। मसनद पर थोड़ा सिर ऊंचा किया, फिर बोले—'मौलाना साहब, जो दंगे करेगा या सिर उठायेगा, कुचल दिया जायेगा।' और बस भेंट खत्म हो गयी।

और लोगों ने देखा कि चंद दिनों के अंदर हैदराबाद सर कर लिया गया और बाद में जब सरदार हैदराबाद गये तो निजाम बेचारे खुद हवाई अड्डे पर आये और उनका स्वागत किया। धीरे-धीरे सभी देशी राज्य संप्रभु भारत राष्ट्र में मिलाकर प्रांतीय इकाइयों में परिवर्तित कर दिये गये। हैदराबाद की तरह ही जूनागढ़ पर भी कब्जा कर लिया गया। बहुत बाद में १९६१ में जवाहरलालजी को गोवा, दमण और दीव के मामले में वही नीति अपनानी पड़ी।

सर्वविदित है कि यदि सरदार पर बात छोड़ दी जाती तो कश्मीर तथा कच्छ का रण भी अन्य प्रादेशिक इकाइयों की भांति आज भारत के भाग होते और अंतरराष्ट्रीय शतरंज की गंदी चालें समाप्त हो गयी होतीं। सरदार खीझ में कहते थे—'जवाहरलालजी सज्जन, सरल आदमी हैं। वे इन मक्कारों की भाषा और चाल नहीं समझते। इनसे तो मैं ही निबट सकता हूं।' इतिहास साक्षी है कि उनकी बात में कितना तथ्य था और उसे न मानकर हमने कितना दर्देसिर मोल ले रखा है।

भारत का एकीकरण और दृढ़ीकरण उनका महत् कार्य है। घोर श्रम के कारण उनका शरीर तो टूट ही गया था, परंतु अपने देवता व गुरु गांधीजी की हत्या ने उन्हें बिलकुल निढाल करके रख दिया। उन्होंने कभी कल्पना भी न की थी कि एक हिंदू के हाथ गांधीजी मारे जा सकते हैं; इसलिए उन्हें गहरी चोट लगी और वे पड़ गये।

अंतिम दिनों में उन्होंने जवाहरलालजी व साथियों से कहा था—'कांग्रेस ने किसी समय भाषावार प्रदेशों का जो स्वप्न देखा था, वही अब हमारे लिए घातक हो गया है। कृपया अगले पंद्रह वर्षों में कोई नया भाषा-राज्य न बनाइयेगा और केवल एक भारत तथा उसके निवासी होने के गौरव का भाव सबमें प्रचारित कीजियेगा।' जवाहरलाल ने आश्वासन दिया था, किंतु आंध्र के आतंकवादियों के तूफान तथा हिंसा में वह उड़ गया। फिर तो एक के बाद एक नये-नये भाषा-राज्य बनते गये। परिणाम यह है कि एक ही दल की राज्य-सरकारों में घोर प्रतिद्वंद्व, दुश्मनी और झगड़े हैं तथा प्रांतीयता की भावनाएं और दृढ़ हो गयी हैं।

व्यक्तित्व

स्वभाव तथा जन्मजात प्रतिभा से सरदार एक योद्धा थे। उनमें योद्धा का साहस था, कष्ट-सहिष्णुता थी, वीर की क्षमा थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें अपना लिया, उन पर पूर्ण विश्वास करते थे और उनके योगक्षेम का हमेशा पूरा ध्यान रखते थे। अन्याय के प्रति प्रबल रोष और किसानों के प्रति मृदुल भावना, ये दो बातें उनके जीवन की धुरी थीं। युद्ध में, संघर्ष में वे जैसे चौगुने हो जाते थे; मध्य-युगीन राजपूत की नाईं उनका जीवन ऐसे समय हंस पड़ता था। युद्ध के समय वल्लभ-भाई में बिजलियों का नर्तन होता था। छाती में आंधी का साहस, भुजाएं फड़कती हुई, दिल उमंगों के सुरूर पर चढ़ा हुआ, वाणी आग उगलने वाली—एक आदमी जो अपनी हर सांस के साथ खतरे को प्यार करता था।

परंतु युद्ध-निपुणता के साथ उनमें अपूर्व शासन-क्षमता, बड़े-बड़े संघटनों को स्थापित करने और चलाने की शक्ति भी थी। एक ओर उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के स्वप्न को सिद्ध करने में जहां बेजोड़ श्रम किया, वहीं स्वतंत्र भारत के निर्माण और उसे संपन्न बनाने का भी प्रायः असंभव-सा किया।

यह ठीक है कि उनमें जवाहरलाल की संस्कृति का लोच और पालिश नहीं, परंतु जटिल प्रश्नों को सुलझाने की, व्यूह को तोड़ने तथा व्यावहारिक रूप आरोपण करने में उनके जोड़ का कोई में नहीं था।

यदि वे दस-पांच साल और जीवित गये होते, तो भारत का नक्शा शायद होता। परंतु गांधीजी को न बचा सके दर्द उन्हें इतना था कि दिन-दिन घुलते गये और १५ दिसंबर १९५० के बिड़ला-भवन में सदा के लिए सो

इतिहास इस भारत-निर्माता के में प्रणत है।

—७७/१५६, लूकरगंज, इलाहा

क्षमा वीरस्य भूषणम्

कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष डा. अंसारी मरीजों की देखभाल भी करते थे और के कार्य भी। यह वह समय था जब स्वतंत्रता-आंदोलन तेजी से चल रहा था। उस निजी नौकर खुफिया पुलिस में चला गया और उसने बहुत-सी राजनैतिक सरकार को दीं। अंसारी साहब ने उसे नौकरी से हटा दिया।

एक दिन उसी नौकर की औरत अंसारी साहब के पास पहुंची और रोती 'साहब, मेरे घर वाले बहुत बीमार हैं। सब डाक्टरों ने जवाब दे दिया है। उनकी जान बचा सकते हैं।'

अंसारी साहब ने दवा का बैग हाथ में लिया और चुपचाप उस औरत के दिये। कई दिन तक उन्होंने रोगी की चिकित्सा की और उसे अच्छा कर दिया। ने उनके पैरों पर गिरकर क्षमा मांगी और खुफिया पुलिस की नौकरी छोड़ दी।

—डा. गोपालप्रसाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हंसी के बुलबुले

सत्यनारायण नाटे

एक बैंक-मैनेजर की पत्नी मैके से एकाएक लौट आयी और पति से बोली—'मैं तो घबरा गयी थी। तुमने मेरे पांच-पांच पत्रों का कोई उत्तर ही नहीं दिया।'

'पर तुम्हारे पत्र तो मुझे मिले ही नहीं।' मैनेजर ने कहा—'हां, तुम्हारे नाम से किसी ने कुछ जाली पत्र जरूर लिखे हैं।' और उसने पांचों चिट्ठियां सामने रख दीं।

'कमाल के हो तुम भी! ये सब तो मैंने ही लिखी थीं।' पत्नी बोली।

'तुमने?' आश्चर्य से मैनेजर पति बोला—'पर तुम तो अपने दस्तखतों में नाम के नीचे एक लाइन खींचकर दो बिंदियां रखती हो। इन सबमें एक-एक ही बिंदी है।'

ooo

मालकिन (नौकरानी से) : रधिया, तूने रेफ्रिजेरेटर साफ कर दिया न?

रधिया : हां मालकिन, बिलकुल साफ कर दिया है। मिठाइयां तो बहुत ही स्वादिष्ट थीं।

ooo

प्रश्न : वकील कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : दो प्रकार के; एक तो जो कानून जानते हैं, और दूसरे जो जज को जानते हैं।

ooo

'क्या तुम्हारे बचपन की कोई आशा जीवन में फलित हुई?'

'हां, जब मेरे शिक्षक मेरे बाल खींचते थे तो मैं चाहा करता था कि मेरे बाल न रहें तो अच्छा। आज मैं गंजा हूं।'

ooo

शशि (उम्र चार वर्ष) : अम्मा, जब

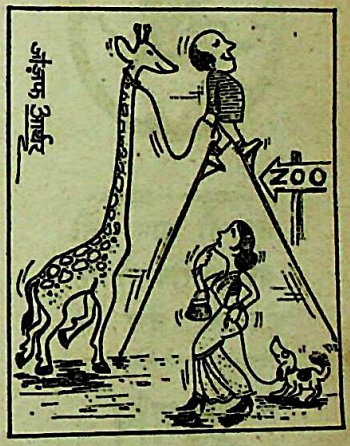

व्यंग्यचित्र : जोज़फ आर्थर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुलगांव

मिल्स का कपड़ा हर नागरिक के लिए, हर प्रसंग पर उपलब्ध है।

आकर्षक रंगों की पॉपलीन, बढ़िया किस्म की शर्टिंग, दफ्तर में पहनने के लिए कोटिंग्ज, पेन्टों के लिए टिकाऊ ड्रिल्स, हर किस्म की धोतियां, सुंदरियों की मन-मोहक साड़ियां, इसके अतिरिक्त लांग क्लॉथ और मारकीन्स

जब भी आप सूती वस्त्र खरीदें तो यह ट्रेडमार्क देख लें

पुलगांव

काटन मिल्स

लिंक चेन

❋

जिसकी एक-एक कड़ी मजबूत, परखी हुई और पूर्णतः विश्वसनीय है

❋

सभी उद्योगों व वाहनों में उपयुक्त

❋

एलोय स्टील चेन एक विशेषता

❋

इण्डियन लिंक चेन मैन्यु. लि.

भाण्डुप; बंबई-७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं पैदा हुई तब तू घर पर ही थी न ?

मां : ना बेटी, मैं तेरी नानी के यहां थी।

शशि : तो अम्मा, मुझे देखकर तुझे ताज्जुब हुआ होगा न।

ooo

पिता : बेवकूफों के सवालों का जवाब तो बड़े-बड़े अक्लमंद भी नहीं दे पाते।

पुत्र : इसीलिए तो मैं पिछले इम्तहान में फेल हो गया।

ooo

एक धनी बुढ़िया ने सुनने का उपकरण (श्रवण-यंत्र) खरीदा, जो इतना छोटा था कि दूसरों को दिखाई ही नहीं देता था। एक सप्ताह बाद वह बुढ़िया दुकानदार को धन्यवाद देने आयी। दुकानदार ने पूछा—'आपके परिवार वालों को भी पसंद आया ?'

'अरे, वे तो जानते भी नहीं कि अब मैं सुन सकती हूं। उनकी बकवास मेरे सामने भी चलती रहती है और एक सप्ताह में मैं उनकी बातें सुनकर तीन बार अपनी वसीयत बदल चुकी हूं।' बुढ़िया ने बताया।

ooo

एक समाचार-पत्र के कार्यालय में जाकर एक आदमी ने विज्ञापन-अधिकारी से पूछा—'मृत्यु-संबंधी विज्ञापन देने में कितना खर्च पड़ेगा ?'

'पांच रुपये प्रति इंच।'

'फिर तो मेरे बस के बाहर की बात है, काफी खर्चा पड़ जायेगा। मरने वाला आदमी पांच फुट छह इंच लंबा है।' उस आदमी ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा।

—नावाटोली, डालटनगंज, बिहार

★

मेरे मित्र गोपाल वेदालंकार और जगन्नाथ दो भाई हैं। जगन्नाथ छोटे हैं। उनके पिता बड़े जमींदार थे। जिन दिनों भूदान यज्ञ जोरों पर था, एक भूदान कैलेंडर छपा था, जिसमें विनोबाजी का चित्र था और नीचे छपा था—'सबै भूमि गोपाल की।' एक दिन जगन्नाथ वह कैलेंडर देखकर मुझसे बोला—'भाईजी ये भूदान वाले कब से झूठ बोलने लगे ?' आशय न समझते हुए मैंने पूछा—'क्यों क्या हुआ ?' जगन्नाथ बोला—'देखिये ना, वहां लिखा है, सबै भूमि गोपाल की। मैं कहता हूं, आधी भूमि जगन्नाथ की भी तो है।' —वेदकुमार वेदालंकार

ooo

'नसरुद्दीन बेटे, सवेरे जल्दी उठना चाहिये।'

'क्यों अब्बा ?'

'अच्छी आदत है यह। एक रोज मैं पौ फटने से पहले उठकर घूमने निकला। रास्ते में मुझे अशरफियों से भरा थैला पड़ा मिला।'

'अब्बा, शायद रात को किसी ने गिरा दिया होगा।'

'नहीं बेटे, रात को मैं उधर से निकला, तब तो वहां नहीं था वह।'

'तो फिर सवेरे जो आपसे पहले उठा, उसने गिरा दिया होगा।'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश - विदेश में

विख्यात, श्रेष्ठतम

पान मसाला

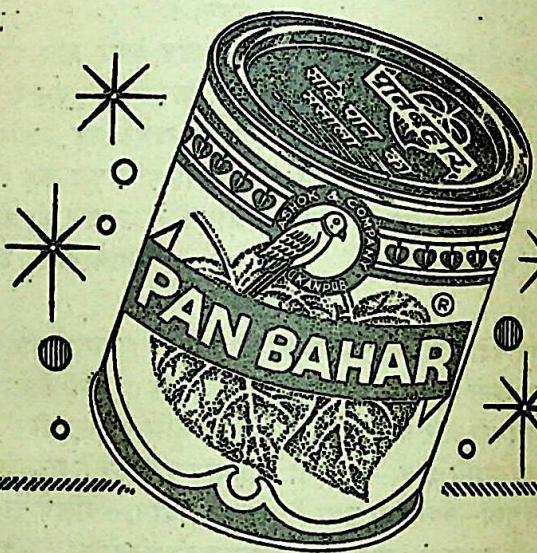

पान बहार

पान में या ऐसे ही खाने के लिये सर्वप्रिय

१०० ग्राम, २५० ग्राम, ५०० ग्राम तथा एक किलो के पैकिंग में उपलब्ध

अशोक एण्ड कं. ५२/३४ नयागंज, कानपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी-अपनी दृष्टि

उपाध्याय अमरमुनि

कहानी उस समय की है, जब विद्यार्जन का एकमात्र केंद्र गुरुकुल ही हुआ करते थे, जहां आचार्य द्वारा बच्चों को जीवन-निर्माण एवं जीवन-विकास का व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार का प्रशिक्षण बिना किसी भेदभाव के दिया जाता था।

एक गुरुकुल में दो राजकुमार भी पढ़ते थे, जो सगे भाई थे। दोनों के मनोभावों एवं वृत्तियों में जमीन-आसमान का अंतर था। दोनों भिन्न-भिन्न प्रकृति के थे। दोनों की दृष्टि पृथक्-पृथक् थी।

एक दिन आचार्य दोनों राजकुमारों को साथ लेकर घूमने निकल पड़े। गुरु-शिष्य मुक्तभाव से जा रहे थे प्रकृति के प्रांगण में। प्राकृतिक दृश्य मन में अनोखे आनंद का संचार कर रहे थे।

कुछ प्रकृति-छटा निहारते तथा कुछ पारस्परिक विचार-चर्चा करते हुए तीनों चले जा रहे थे। आचार्य की दृष्टि सामने के आमवृक्षों के झुरमुट की ओर गयी, उन्होंने देखा कि एक बालक डंडा मारकर आम के वृक्ष पर से पके हुए आम तोड़ रहा है। प्रत्येक मार पर आम टूट-टूटकर नीचे गिर रहे हैं।

आचार्य ने शिष्यों को भी यह दृश्य दिखलाया। फिर बड़े भाई से पूछा—'बेटा! तुम क्या देख रहे हो? इस दृश्य के प्रति तुम्हारा क्या चिंतन है?'

शिष्य ने प्रश्न सुना और बोला—'गुरुजी! मैं देख रहा हूं कि जिस प्रकार से यह वृक्ष डंडे खाकर भी मारने वाले को मीठे-मधुर आम दे रहा है, इसी प्रकार आदमी को भी स्वयं दुःख झेलकर भी दूसरों को सुख देना चाहिये। स्वयं कष्ट उठाकर भी दूसरों की सुख-सुविधा के साधन जुटाना सज्जनों का काम होता है।'

फिर आचार्य ने छोटे भाई के संमुख भी वही प्रश्न रखा—'बेटा! तुम क्या देख रहे हो? कहो इस दृश्य के प्रति तुम्हारा चिंतन क्या है?'

प्रश्न सुनकर वह बोला—'गुरुदेव! मैं देख और सोच रहा हूं कि जब यह जड़ वृक्ष भी बिना डंडा खाये आम नहीं देता, तब भला आदमी से बिना डंडे कैसे काम निकाला जा सकता है? जो दूसरों पर डंडे के जोर से अपना रोब तथा दबदबा जमाकर रखते हैं, वही लोग सुखी रह सकते हैं।'

दोनों की बातें सुनीं और आचार्य आगे बढ़ गये। दोनों के विचारों में, चिंतन में, कार्यपद्धति में कितना अंतर! यह सब दृष्टि का ही भेद है। एक ही प्रश्न के उत्तर में दोनों की पृथक्-पृथक् कल्पना और विचार-श्रेणी काम कर रही है। यह अपनी-अपनी दृष्टि ही तो है। ['श्री अमरभारती' से]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

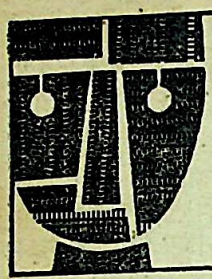

• मित्र

कुछ इधर से कुछ उधर से

विज्ञान के नियमों का उपयोग करके जनता को मूर्ख बनाने का काम कोई नया नहीं है। प्राचीन काल से यह काम होता रहा है। आज के इस वैज्ञानिक युग में भी अनेक जनों की आस्था चमत्कारों में बनी हुई है।

प्राचीन मिस्र के पुजारियों द्वारा लोहे के भारी-भरकम दरवाजों का बिना हाथ लगाये खोला जाना, भूमि फाड़कर शिव-लिंग का बाहर निकलना इत्यादि ऐसे कई चमत्कारों के बारे में आपने सुना ही होगा। इतिहास में टायर के मंदिर में ऐसे खंभे का उल्लेख है, जो रात के अंधेरे में चमकता था। हो सकता है कि यह स्तंभ फ्लोआरस्पार का बना हुआ हो, जिसे नकली पन्ना भी कहते हैं और जो एक स्फुरदीप्त (फास्फोरे-सेंट) पदार्थ है। यह पदार्थ सूर्य की किरणों को सोखकर उसे लाल रंग के प्रकाश के रूप में छोड़ता रहता है। इसी प्रकार का उल्लेख साइप्रस में स्थित हरमोस की कब्र के पास रखी शेर की प्रतिमा के बारे में है। उसकी आंखों में भी शायद ये पन्ने जड़े हुए थे जिससे उसकी आंखों से रात के अंधेरे में मीलों दूर तक तीव्र रोशनी दिखाई देती थी। उसी शेर के डर के मारे सदियों तक साइप्रस पर हमला नहीं हुआ।

हम यह नहीं जानते कि इन्हें बनाने वालों को विज्ञान की जानकारी थी या नहीं। परंतु इतना तो कह ही सकते हैं कि उन्होंने वैज्ञानिक तथ्यों का काफी अच्छा उपयोग किया। इसी प्रकार का एक खेल कुतुबनुमा (कंपास) की सहायता से जादूगर करते हैं।

१. जैसा कि आप जानते हैं, कुतुबनुमा (कंपास) की सूई का एक कोना उत्तर दिशा की ओर रहता है और दूसरा दक्षिण की ओर। सूई कील (पिवट) के ऊपर झूलती हुई लगी होती है। सूई के एक कोने पर किसी सुंदरी की छोटी-सी मूर्ति लगी होती है और उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं में दो तस्वीरें जड़ दी जाती हैं। इनमें से एक तो किसी सुंदर पुरुष या जाने-पहचाने फिल्मी हीरो की होती है और दूसरी किसी कुरूप पुरुष या फिल्मी विलन की। जादूगर दर्शकों से कहता है कि आइये देखें कि यह सुंदरी किसे प्यार करती है। उसके बाद वह सूई को घुमाकर छोड़ देता है और सूई-सुंदरी होती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के सामने रुक जाती है। इस क्रिया को चाहे कितनी बार दुहरा लें, वह हमेशा हीरो के सामने ही रुकेगी। इसी प्रकार सीताजी, रामचंद्रजी और रावण की तस्वीरों का उपयोग करके भक्त लोगों की भावना से भी खेला जाता है।

२. जादूगर दर्शक के सामने एक मेज पर बैठ जाता है और ताश की गड्डी में किन्हीं बीस पत्तों को उलटा रख देता है—यानी खोल देता है। इसके बाद वह गड्डी दर्शक को दे देता है और उसे फेंटने को कहता है। दर्शक गड्डी को फेंटता है, फिर मेज के नीचे ले जाता है और बीस पत्ते ऊपर से गिनकर एक छोटी गड्डी जादूगर के हाथ में थमा देता है! जादूगर वह गड्डी मेज के नीचे ही हाथ में रखता है और कहता है—'मेहरबानो, न तो आपको मालूम है और न मुझे कि इस गड्डी में कितने पत्ते सीधे हैं और कितने उलटे। मैं अब अपनी गड्डी में कुछ उलट-पुलट करूंगा। और यह कोशिश करूंगा कि मेरी गड्डी में उलटे पत्तों की संख्या दूसरी गड्डी के—जो कि दर्शक के हाथ में हैं—उलटे पत्तों जितनी ही हो।' फिर वह मेज के नीचे कुछ हरकत करता है, उसके बाद अपनी गड्डी दर्शक को थमा देता है। पत्तों की गिनती की जाती है तो पता लगता है कि दोनों गड्डियों में उलटे पत्तों की संख्या बराबर है।

खेल के शुरू में जादूगर ने बीस पत्ते उलटे थे। बाद में जब वह बीस पत्तों की गड्डी दर्शक से लेता है, तो उस गड्डी में सीधे रखे पत्तों की संख्या बाकी बची गड्डी में उलटे रखे पत्तों की संख्या के बराबर होगी। यह सिद्धांत इस खेल पर लागू होता है।..... जादूगर जब उलट-पुलट की बात कहता है तो असल में वह पत्तों में कोई हेर-फेर नहीं करता, केवल पूरी गड्डी को उलट देता है। यानी जो पत्ते पहले सीधे थे वे उलटे हो गये और जो उलटे थे वे सीधे हो गये। इस तरह अब उलटे पत्तों की संख्या दोनों गड्डियों में बराबर हो गयी। आइये देखें कि आप में से कोई इस ट्रिक की सही व्याख्या लिखकर हमें भेजता है। उत्तर संपादक—नवनीत, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४ के पते पर भेजें।

—११ सी, धवलगिरि, अणुशक्तिनगर,
बंबई-४०००९४

★

पश्चिम जर्मनी के डूसलडार्फ नगर की 'एड्वाइजरी इंस्टिटयूट फार लिविंग' ने वयस्क शिक्षण का एक खास पाठ्यक्रम चालू किया है, जिसमें सिखाया जाता है कि बुढ़ापे में मनोविनोद, खान-पान, मकान-किराया, बुढ़ापे की पेंशन, उत्तराधिकार आदि से संबंधित प्रश्नों से कैसे निबटा जाये। सितंबर के मध्य तक ३४ स्त्री-पुरुष इस कोर्स में भरती हो चुके थे। ये सभी शिक्षार्थी या तो निवृत्त हैं या शीघ्र निवृत्त होने वाले हैं। संस्था की योजना है कि कुछ औद्योगिक-व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में काम के घंटों के बाद यह पाठ्यक्रम चलाया जाये।

—चंचल

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रंथ-लोक

* उत्कल-दर्शन
* श्रीजुगलपद-वंदन
* अनाम
* विकल्प के पक्ष में
* शंख-सिंदूर
* पश्चिम के तीन रंग

*** उत्कल-दर्शन (दो भाग) * संपादक : लक्ष्मणस्वरूप माहेश्वरी; प्रकाशक: साहित्य-संगम, ब्रजराज नगर, उड़ीसा; पृष्ठ-संख्या : ४८७ + ४२३; मूल्य : ३० रुपये प्रति भाग।**

उड़िया साहित्य की चुनिंदा चीजों का अनुवाद हिंदी में प्रकाशित करने का एक अच्छा प्रयास १९६९-७० में कुछ अनुवादकों ने आरंभ किया और यह बड़े आनंद की बात है कि वह सिलसिला अव्याहत रूप से चल रहा है। इस क्रम में उड़ीसा और उड़िया भाषा की अस्मिता को उसकी समग्रता में अभिव्यक्ति देने का सबसे सुघटित प्रयास हुआ है दो भागों में प्रकाशित 'उत्कल-दर्शन' के माध्यम से।

इसका प्रथम भाग 'धर्म एवं संस्कृति', 'लोक जीवन', 'कला', 'भाषा एवं लिपि' और 'विविध' नामक उपभागों में विभक्त है और द्वितीय भाग के उपभाग हैं—'साहित्य की विविध विधाएं', 'सृजनशील उड़ीसा की साहित्यिक गरिमाएं', 'मौलिक रचनाएं' तथा 'विविध'।

प्रथम भाग के लेखों में 'उड़ीसा में धर्म और दर्शन का प्रवाह तथा अंतःप्रवाह', 'उड़ीसा के धर्म, साहित्य और स्थापत्य पर तंत्र का प्रभाव', 'उड़ीसा में तंत्र और मंत्र' (श्रीगणेश प्रसाद परिजा), 'ओड़िया स्थापत्य' (डा. कृष्णचंद्र पाणिग्राही), 'उड़ीसा की तालपत्री पोथियां' (श्री नीलमणि मिश्र), 'ओड़िसी संगीत और चर्चा', 'ओड़िसी नृत्यशैली' (कविचंद्र कालीचरण पट्टनायक), 'उड़िया लिपि का विकास और देवनागरी से उसका संबंध' (डा. खगेन्द्र महापात्र) आदि लेख महत्त्वपूर्ण हैं और अपने-अपने विषय को समग्र रूप से प्रस्तुत करते हैं।

दूसरे भाग में श्री सीताकांत महापात्र का लेख 'अर्थ की वक्ररेखा : आधुनिक उड़िया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कविता के कतिपय पहलू' बहुत ही सुंदर और महत्त्वपूर्ण हैं। कविचंद्र कालीचरण पट्टनायक ने अपने लेख 'गीतगोविंद के अमर गायक कवि जयदेव और उनकी जन्मभूमि' में ऐसे ठोस प्रमाण दिये हैं कि बंगाल के केंदुली ग्राम को जयदेव की जन्मस्थली मानने वालों को पुनर्विचार करने के लिए बाध्य होना पड़े। इस लेख का इतिहासज्ञों के बीच प्रचार होना चाहिये।

जाने क्यों, दूसरे भाग के संयोजन में अस्तव्यस्तता आ गयी है। उड़िया कथा-साहित्य और उपन्यास-साहित्य के परिचय में अस्पष्टता है। 'सांप्रतिक उड़िया कथा-साहित्य की धारा : एक अभिव्यक्ति' (श्री-निवास उद्गाता) परिचयात्मक लेख होने के बजाय केवल एक अप्रासंगिक वक्तव्य है। उड़िया उपन्यास विधा पर डा. कृष्णचरण बेहेरा का लेख 'उड़िया उपन्यास' अध्यापकीय हो गया है। सब कहीं उन्होंने तथाकथित 'रुचिपूर्ण' और 'सरस' को अच्छे उपन्यास का पर्याय मानकर सारा 'परिचय-पत्र' दे डाला है। इसी तरह श्री प्राणबंधु कर के नाटक 'स्नायुसंहार' को व्यर्थ ही ५८ पृष्ठ दे दिये गये हैं।

'मौलिक रचनाएं' उपखंड में जिन प्रतिनिधि लेखकों की रचनाएं हैं, वे प्रतिनिधि रचनाएं नहीं है। शायद जो प्राप्त हो सकीं, वही प्रकाशित कर दी गयीं। संयोजन का यह कच्चापन सालता है। काव्य और कथा विभागों में क्रमशः श्री सौभाग्य मिश्र और श्री अखिलमोहन पट्टनायक जैसे लेखकों की रचनाओं को और ललित निबंध विधा को छोड़ देना भी कुछ छूट जाने का अहसास कराता है। 'उड़िया काव्य कविता की क्रम-परिणति' और इसी तरह के एक-दो लेखों को छोड़कर अनुवाद का स्तर सामान्य है। 'उड़िया', 'ओड़िआ' 'ओडिया' तीन रूपों में एक ही नाम का छपना (द्रष्टव्य : द्वितीय भाग की सूची) अखरने वाली चीज है।

किंतु सब मिलाकर, 'फ्लैप' पर छपी श्री नामवरसिंह की टिप्पणी 'उत्कल-दर्शन हिंदी में अपने ढंग का पहला प्रयास है। जहां तक मेरी जानकारी है, अभी तक किसी प्रदेश या जाति के विषय में ऐसा सांगोपांग संग्रह कम से कम हिंदी में तो सुलभ नहीं' सही लगती है। संपादक और संयोजक बधाई के हकदार हैं। 'उत्कल-दर्शन' बहुप्रसारित हो, यही कामना है। —महेंद्र शर्मा

०००

श्रीजुगलपद-वंदन (पद-संग्रह); कवयित्री : कृष्णा मां; प्रकाशक : जनहित प्रकाशन, श्रीभवन, मंडी रामदास, मथुरा, उ. प्र.; मूल्य : पांच रुपये।

स्वर्गीय जगन्नाथदास 'रत्नाकर' के बाद भी ब्रजभाषा की मधुर-ललित रचना प्रकट होगी, ऐसी आशा लुप्तप्राय थी। अतः यह पद-संग्रह सुखद विस्मय की अनुभूति कराता है। ब्रजभाषा के १३२ पदों का यह संग्रह ५ भागों में विभक्त है—१. विनय (१२ पद) २. चेतावनी (४०), ३. विरह (२४), ४. रूपमाधुरी (२४) तथा ५. समर्पण (३२)। ये पद तन्मय आत्मानुभूति की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'औरमो' छाप अमोनिया कागज़

(पैरा-डाइजो टाइप)

- चमकदार और सुन्दर छपाई
- बरतने और रखने में टिकाऊ
- जल्दी और अच्छे परिणाम
- कम खर्च और सस्ता.

स्टैंडर्ड साइज के रोल और शीटस हर प्रकार की मीडियम फास्ट और सूपर फास्ट की स्पीड्स में मिलते हैं. रोशनी और नमी से बचाव के लिये पोलीथीन के ट्यूब और रैपर्स में पैक किया हुआ होता है. यह देर तक खराब न होने वाला अच्छी क्वालिटी की छपाई के लिये गारन्टी किया हुआ है, क्योंकि औरमो का बेस पेपर भी ओरियंट पेपर मिल्स का बनाया हुआ है।

ओरियंट पेपर मिल्स लिमिटेड

बजराज नगर, उड़ीसा

कपड़ों की उजली धुलाई के लिये!

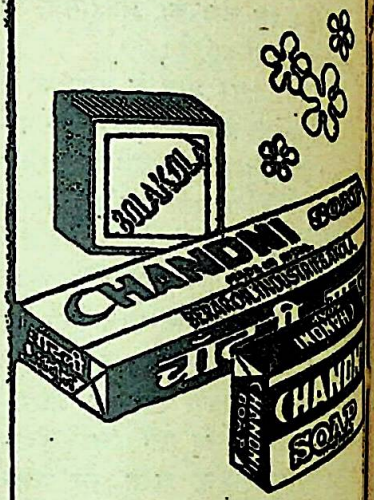

चाँदनी

साबुन

निर्माता -

बरार ऑयल इंडस्ट्रीज

अकोला (महाराष्ट्र)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहज अभिव्यक्ति हैं। मीरा की वही प्रेम-वेदना, सूर का वही लालित्य, कबीर का वही उद्बोधन, तुलसी का वही दैन्य—सब एक साथ इन पदों में परिलक्षित होते हैं। कहीं-कहीं श्रीराधा-कृष्ण की छबि के वर्णन में जयदेव की शृंगारिकता भी झलकती है।

निश्चय ही कृष्णा मां ने व्रज-साहित्य का भरपूर अध्ययन किया है; इसीलिए भाषा में प्रांजलता आ सकी है। श्रीराधा-कृष्ण में अभेद-भावना के कारण ही उन्होंने कभी राधा को तो कभी कृष्ण को इष्ट माना है; यथा—मो मन माधव ही सौं हारौ (पद ६३), इष्ट हम राधा जू हैं मानी (पद १०९)।

भाषा में प्रवाह और प्रसाद गुण तो है, किंतु उपमान वही परंपरागत प्राचीन ही हैं। शब्दों का तोड़-मरोड़ भी कहीं-कहीं अधिक है, जैसे पद ७ में 'लख पाती' के लिए 'लखाती' और पद ५८ में 'आज' के लिए 'आजी'। पद ७६ में 'मोर मन माधव नाहिं तजै' में यदि अवधी 'मोर' के स्थान पर व्रज का 'मेरो' होता, तो अधिक अच्छा होता। पता नहीं, प्रधान संपादक तथा सह-संपादिका ने संग्रह में कौन-सी भूमिका निभायी है। कागज-छपाई सुंदर है। यत्र-तत्र श्रीराधा-कृष्ण के चित्ताकर्षक चित्र हैं।

—चंद्रशेखर पांडेय

०००

*** अनाम * लेखक : कन्हैयालाल सेठिया; प्रकाशक : तारा बैद, १६० महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता-७; पृष्ठसंख्या : ८२; मूल्य : १० रुपये।**

एक समय अनुभवजन्य अनुभूति थोड़े में ज्यादा व्यक्त करने की क्षमता पाकर ठहर जाती है। मनके का अपना अस्तित्व होता है और माला में गुंथकर भी। ऐसे ही सारभूत विचारों के सूत्रबद्ध मनकों से अवगुंथित है यह कविता-संकलन। इसमें कम से कम दो पंक्तियों की कविता है और अधिक से अधिक चौदह की। इन कविताओं के संदर्भ में कवि की यह कविता बूझ लें: निरर्थक/शब्द / कर सकते हैं / दिव्य मंत्रों की रचना/क्योंकि / नहीं है/उनके अर्थ के बारे में/कोई मतभेद! आवरण-मुद्रण साफ-सुथरा और आकर्षक है।

०००

*** विकल्प के पक्ष में * लेखक : सोहन शर्मा; प्रकाशक : साहित्य संपर्क प्रकाशन, पाम व्यू, पापड़ी नाका, पश्चिम वसई, थाना, महाराष्ट्र; पृष्ठसंख्या : ७२, मूल्य : ८ रुपये।**

वर्तमान परिवेश से उत्पन्न ऊब, घुटन, विद्रोह, नकार और तनाव का ताना-बाना इस संग्रह की कविताओं में बुना हुआ है। कवि वास्तविकता को पहचानने की मांग करता है। वह तनाव की मुद्रा में कुछ कर गुजरने की तल्खी लिये हुए है। संकल्प और योजनाएं महज आश्वासन हैं। राज-नीति से अलग कविताओं में कुछ परिभाषाएं, सूक्तियां और चलताऊ मुहावरे हैं और बड़-बोलापन भी। रूढ़ि और वर्तमान व्यवस्था के खिलाफ तिलमिलाकर लिखी क्षुब्ध कवि-ताओं में फिकरेबाजी अधिक है; समकालीन परिवेश की समझ अधूरी और एकांगी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेकोल्ड

वाटर हीटर्स

सबकी पहली पसंद

- केवल रेकोल्ड ही दो, चौकोर और गोल आकारों और रंगों में.
- पश्चिम जर्मन तकनीकी जानकारी से बने विशेष हीटिंग एलीमेंट से युक्त.
- ताप से स्वतः नियंत्रण के लिए इंगलैंड के प्रासकान द्वारा निर्मित सर्वश्रेष्ठ थर्मोस्टेट.
- अंदर की टंकी तांबे की, और दोनों तरफ टिन का मुलम्मा.
- उत्पादन दोष की एक साल की गारंटी.

वाशिंग मशीन

हीट कांवैक्टर

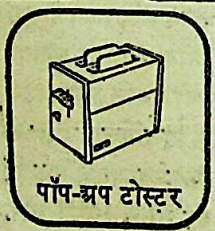
पॉप-अप टोस्टर

रजि० डिजाइन नं. ११४८५२

डिलक्स माडल डी. जी. एस. एंड. डी. रेट कांट्रेक्ट पर उपलब्ध

Racold

APPLIANCES PVT. LTD.

POONA • NEW DELHI • BOMBAY

graphisad

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मेरा/छापामार/मन/चुप है!' कविताओं का स्थायी भाव है। आवरण-मुद्रण ठीक है।

०००

* शंख-सिंदूर * लेखक : डा. रमानाथ त्रिपाठी; प्रकाशक : राजपाल एंड संज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली; पृष्ठसंख्या : ११२; मूल्य : ७ रुपये।

बांग्ला देश के चार लोकगाथा-गीतों पर आधारित यह उपन्यास असफल प्रेम की कथा है। बचपन का सहज संग युवावस्था में प्रेम में परिणत हुआ, मगर ठीक शादी के दिनों में नायक विजातीय सुंदरी पर मुग्ध होकर धर्म-परिवर्तन कर लेता है। परंतु अपने मूल संस्कारों से मुक्त नहीं हो पाता और विजातीय संस्कार अपनाने को राजी नहीं होता—इससे समस्या उठती है। उधर सजातीय प्रेमिका आजीवन कौमार्यव्रत लेकर काव्य-सृजन में समर्पित हो जाती है।

आखिर वस्तुस्थिति का पता चलने पर नायक पछतावे में भरा लौटता है नायिका के द्वार पर। मगर वह ध्यान-विचलित नहीं होती। इस पर नायक जल-समाधि ले लेता है। नायिका यह आघात सह नहीं पाती और सृजन को अधूरा छोड़कर, लांछित सीता की व्यथा लिये पद्मासन लगाकर चिर-समाधि में लीन हो जाती है।

इस नायिका-प्रधान उपन्यास में लेखक ने बंगला लोकगीतों का अनुवाद गूंथा है। (मूल गीत पाद-टिप्पणी में हैं।) शोध और श्रम के लिए लेखक साधुवाद का अधिकारी है। शैली संवादात्मक और भाषा सरस है। मुखपृष्ठ आकर्षक है।

०००

* पश्चिम के तीन रंग * लेखक : दयानंद वर्मा; प्रकाशक : पंजाबी पुस्तक भंडार: दरीबा कलां, दिल्ली-६; पृष्ठसंख्या : १२०; मूल्य : १५ रुपये।

यूरोपीय देशों की पचीस दिन की सपत्नीक यात्रा के संस्मरणात्मक निबंधों (या नोट्स) के इस संग्रह में पेरिस, कोपनहैगन और बर्लिन के कुछ दृश्य प्रतिबिंबित हुए हैं—मगर चित्र की नाईं सुस्पष्ट नहीं। शायद यह बताने के लिए कि हर शहर का अपना ही रंग है, हर शहर का वर्णन अलग रंग के कागज पर छापा गया है। विवरण की अपेक्षा अनुभूति के चित्रण पर जोर है, इससे रोचकता बनी रही है।

पेरिस का संस्मरण अधिकांशतः ज्यां पाल सार्त्र की भेंट चढ़ गया है। सामाजिक और सेक्स जीवन के बारे में ज्ञान बढ़ाने का लेखक का उत्साह सर्वत्र हावी है। व्यंग्य का पुट भी है। फिर भी सिर्फ तीन शहरों की यात्रा १५ रुपये में कुछ महंगी है।

—डा. विष्णु भटनागर

★

विश्वबैंक के अध्यक्ष श्री मैक्नमारा के अनुसार नीची आय वाले देशों में वार्षिक पूंजी विनियोजन प्रतिव्यक्ति के पीछे केवल १६ डालर है, जबकि मध्यम आय वाले देशों में वह ८५ डालर और तेल-निर्यातक देशों में ८३५ डालर है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर्वर मस्तिष्क का रहस्य

• बलवीर •

औपचारिक भोजों व पार्टियों में जाना प्रसिद्ध वैज्ञानिक टामस एडिसन को कतई पसंद नहीं था। वहां उन्हें बड़ी उकताहट होती थी।

एक बार वे ऐसी किसी पार्टी में फंस गये। उनकी इच्छा हुई कि सबकी नजर बचाकर चुपके-से चला जाऊं और अपनी प्रयोगशाला में जाकर काम करूं।

वे दरवाजे के पास टहलते हुए बाहर निकलने का मौका ढूंढ़ ही रहे थे कि उनका मेजबान वहां आया और कहने लगा—'माफ कीजिये, मैं आपसे कुछ भी बातें नहीं कर पाया। आजकल आप किस विषय में सोच रहे हैं?'

'यहां से खिसकने के विषय में।' एडिसन ने उत्तर दिया।

× × ×

एडिसन बिजली के बल्ब का आविष्कार करने के बाद उसका व्यापारिक उत्पादन करके चालीस सेंट प्रतिबल्ब के हिसाब से बेचने लगे, जबकि उसकी लागत १ डालर १० सेंट पड़ रही थी। लागत घटकर अस्सी सेंट हो गयी। एडिसन तब भी उसे चालीस सेंट में ही बेचते रहे। तीसरे साल लागत पचास सेंट रह गयी और घाटा सिर्फ दस सेंट प्रति बल्ब रह गया। लेकिन बल्बों की बिक्री एकदम बढ़ गयी, जिससे नुकसान की रकम कई गुना बढ़ गयी। तो भी उन्होंने बल्ब की कीमत चालीस सेंट ही रहने दी। चौथे साल लागत सैंतीस सेंट बैठने लगी। बिक्री बढ़ती ही गयी और पिछला घाटा पूरा होने लगा।

अगर उन्होंने शुरू में ही मुनाफा कमाने की बात सोची होती और बल्ब की कीमत उसकी लागत से ज्यादा रखी होती, तो शायद लागत कम करने की ओर उनका इतना ध्यान न जाता और आम जनता में बिजली का शायद इतनी जल्दी प्रचार भी न हो पाता।

× × ×

किसी सज्जन को उन्होंने बातचीत के दौरान में बताया—'मैं प्रतिदिन बीस घंटे काम करता हूं।'

इस पर वे सज्जन बोले—'तभी तो आपने इतनी जबर्दस्त सफलता प्राप्त की है। वास्तव में हर सफलता के पीछे सख्त मेहनत छिपी होती है।'

एडिसन ने कहा—'बेशक!' और तभी उनकी नजर सड़क के किनारे खड़े एक दुबले-पतले, कमजोर, बूढ़े आदमी की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओर गयी, जो खोमचा लगाये कुछ बेच रहा था। देखने में वह बहुत ही गरीब लग रहा था। एडिसन ने उसकी ओर संकेत करते हुए कहा—'मगर असफलता के पीछे और भी सख्त मेहनत छिपी होती है।'

× × ×

एक दिन वे उत्तर कारोलिना राज्य के गवर्नर के साथ बात कर रहे थे। गवर्नर ने कहा—'आप सचमुच महान वैज्ञानिक हैं; आपने एक हजार से ज्यादा आविष्कार किये हैं।'

'नहीं, मैं महान वैज्ञानिक नहीं हूं', एडिसन बोले—'सच पूछा जाये तो मैंने सिर्फ एक चीज बनायी है, जो वास्तव में मौलिक कही जा सकती है। वह चीज है फोनोग्राफ।'

'और बाकी चीजें ?'

'असल में बात यह है कि मैं बढ़िया स्पंज की तरह हूं। हर क्षेत्र से मैं नये विचार सीखता हूं और उन्हें व्यावहारिक रूप देता हूं। फिर मैं उन चीजों में तब तक सुधार करता जाता हूं, जब तक कि वे महत्त्वपूर्ण नहीं बन जातीं। सो अधिकांशतः मैं दूसरे लोगों के ऐसे विचारों को काम में लाता रहा हूं, जो उनके हाथों पूरी तरह विकसित नहीं हो सके थे।'

× × ×

हद दर्जे की लगन थी एडिसन में। जो भी काम वे हाथ में लेते थे, उसे पूरा करने में जी-जान से जुट जाते थे। एक बार लंबी कोशिशों के बाद बिजली संबंधी किसी आविष्कार में वे सफल हुए और उस आविष्कार को उन्होंने पेटेंट कराया।

बाद में उस पेटेंट के बारे में किसी ने उन पर कानूनी कार्रवाई की, और उन्हें अदालत में पेश होना पड़ा। अदालत ने प्रसिद्ध वैज्ञानिक टिंडाल को इस मामले में गवाही देने के लिए बुलाया था।

टिंडाल ने अदालत में कहा—'मैं भी मिस्टर एडिसन के रास्ते पर ही प्रयोग करता हुआ आगे बढ़ रहा था; मगर एक जगह आकर अटक गया। सफलता प्राप्त करने के लिए बस एक कदम और उठाने की जरूरत थी; परंतु मैंने निराश होकर प्रयोग करने छोड़ दिये। आज लगता है कि वह आखिरी एक कदम बहुत ही आसान काम था।'

इस पर वकील ने उनसे सवाल किया—'जब एक ही कदम बाकी था, तो आपने हार क्यों मान ली ?'

उत्तर मिला—'इसलिए कि मैं एडिसन नहीं हूं, जिनकी लगन उन्हें आखिरी हद तक पहुंचाकर ही दम लेती है।'

× × ×

एक बार आधी रात को प्रयोगशाला में एक सहायक ने एडिसन को लगातार मुस्कराते देखा। उसने सोचा कि वर्षों से वे एक आविष्कार के लिए प्रयोग कर रहे थे, शायद उसमें सफल हो गये होंगे। सो वह पूछ बैठा—'आपको हल मिल गया ? सुलझ गयी न समस्या ?'

'नहीं भाई, यह अंतिम प्रयोग भी समस्या को सुलझा नहीं पाया। अब मैं उसे नये सिरे से सुलझाने में जुट सकता हूं।'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताक़त

मर्द की शान मर्द की पहचान

इस ताक़त को बनाये रखने के लिए, संदावहार पुस्ती, फ़ुर्ती और नौजवानी की बी उमंग के लिए ओकासा स्वास्थ्यदायक टॉनिक टिकियाँ लीजिये। ओकासा टॉनिक टिकियों की अनोखी शक्ति से आपके शरीर और दिमाग़ को लगातार नयी ताक़त मिलती है।

ओकासा की टिकियों पर चाँदी चढ़ी रहती है।

ओकासा

टॉनिक टिकियाँ

पुरुषों के लिए चाँदी वाली

हार्मोन-क्रार्या लिमिटेड संदन-वर्द्धिन का उत्पादन

सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहाँ मिलता है।

OKASA CO. PVT. LTD., 12A Gunbow Street, P. B. No. 396, Bombay-400001

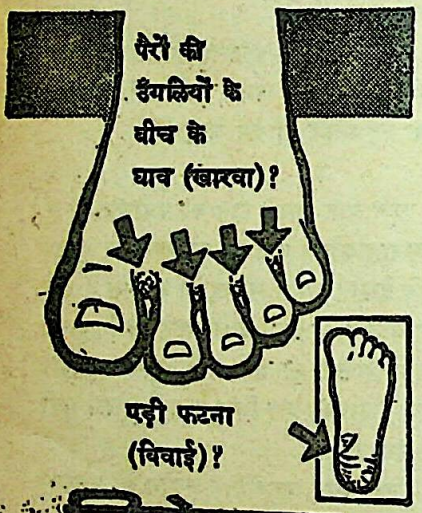

लिचेन्सा

इस्तेमाल कीजिये।

सफ़ेद दाग

का इलाज

सतत् प्रयत्न से हमारी निर्माणित 'साधना बूटी' सुपरीक्षित महौषधि सफ़ेद दाग को मिटाकर त्वचा के रंग में मिलाने में अपूर्व लाभ पहुंचाती है। हजारों ने इससे आराम पाकर प्रशंसा-पत्र भेजे हैं। प्रचारार्थ एक फायल लगाने की दवा प्रत्येक रोगी को मुफ्त दी जायेगी। रोग विवरण लिखकर दवा शीघ्र मंगा लें।

पता :--साधना भवन (K.K.)
पो. :-कतरीसराय (गया) बिहार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितनी जमीन कितने शेयर

रवींद्र जैन

ब्रिटेन में श्री विल्सन की मजदूर-दलीय सरकार संपत्ति-कर लगाने का विचार कर रही है। इस सिलसिले में ब्रिटिश पत्र 'संडे टाइम्स' ने जमीन और शेयर रूपी संपत्ति के कुछ दिलचस्प आंकड़े प्रकाशित किये हैं। ब्रिटेन में ६ करोड़ एकड़ जमीन है। भूस्वामित्व संबंधी पिछला विस्तृत सर्वेक्षण वहां सन १८७३ में हुआ था। तब वहां पर कुल १० लाख भूस्वामी थे; मगर जमीन का चार बटा पांच हिस्सा ७,००० भूस्वामियों के कब्जे में था। ७५ लाख एकड़ यानी कुल जमीन के दसवें हिस्से से ज्यादा पर तो केवल ३५ आदमियों का स्वामित्व था। सौ साल पहले ब्रिटेन के तमाम ड्यूकों के पास कुल ३९ लाख ४३ हजार एकड़ जमीन थी; १९६८ तक वह घटकर १० लाख ८२॥ हजार एकड़ के लगभग रह गयी। अब भी १९ ड्यूक ऐसे हैं, जिनके पास १० हजार एकड़ से अधिक जमीन है।

ब्रिटिश ताज की भूसंपत्ति ४,७७,७३५ एकड़। (रानी एलिजाबेथ की निजी जमीन सिर्फ ४७ हजार एकड़ है।) ब्रिटिश विश्वविद्यालयों के कब्जे में २,०७,७३२ एकड़ जमीन है, जिसमें से १,७०,४०० एकड़ केम्ब्रिज और आक्सफर्ड विश्वविद्यालयों के हाथ में है। गिरजों के कब्जे में १,६४,६९२ एकड़, बैंकों आदि वित्तीय संस्थाओं के अधीन १,२०,००० एकड़ और भूमि-संरक्षण संस्थाओं के अधीन ४,६०,४६२ एकड़ है। राष्ट्रीयकृत उद्योगों और स्वायत्त-शासन संघटनों के हाथ में ७३,०३,४७९ एकड़ है। यह सब मिलकर कुल जमीन का १५ प्रतिशत होता है। अर्थात् शेष ८५ प्रतिशत निजी संपत्ति है।

ब्रिटेन में सिर्फ सात व्यक्ति ऐसे हैं, जिनके पास १ लाख एकड़ से अधिक जमीन है। सबसे बड़े भूस्वामी हैं इन्वरकाल्ड के मि. एल्विन फर्कुहरसन, जो ३॥ लाख एकड़ जमीन के मालिक हैं। दूसरे भूस्वामी हैं—बकक्लूच के ड्यूक (२ लाख २० हजार); लार्ड सीफील्ड (२ लाख १३ हजार), लार्ड लोवाट (१ लाख ९० हजार), सदरलैंड की काउंटेस (१ लाख ५० हजार), वेस्टमिंस्टर के ड्यूक (१ लाख ३८ हजार) एटहोल के ड्यूक (१ लाख २० हजार)।

संपत्ति का दूसरा मुख्य रूप है शेयर। १९७१-७२ में ब्रिटेन में कुल शेयरों की कीमत ६० अरब पौंड थी। इनमें से १२ अरब ८० करोड़ पौंड कीमत के शेयर २० लाख नागरिकों के हाथ में थे। इनके अलावा कोई २.२५ करोड़ व्यक्तियों ने बैंक आदि के जरिये पूंजी लगा रखी थी। विभिन्न आधारों पर यह कूता गया है कि तमाम वैयक्तिक शेयरों की कीमत २१ अरब रुपये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेनिथ

औद्योगिक जगत में
एक विख्यात नाम है।

स्टील पाइप
स्टील कटर

इसके मुख्य उत्पादन हैं।
देश-विदेश में सर्वत्र
इनका प्रचार है।

जेनिथ स्टील पाइप्स लि.

खोपोली स्थित औद्योगिक निर्माण का स्थान अनुपम है, आदर्श है, उसके उत्पादन के द्वारा उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, निर्यात के द्वारा देश को विदेशी विनिमय की प्राप्ति होती है, और विविध करों के द्वारा देश के अर्थकोष की वृद्धि होती है।

सबकी सेवा में प्रस्तुत
जेनिथ स्टील पाइप्स लि.
खोपोली (कुलाबा) बंबई.

दि इंडियन टूल मैन्यूफैक्चर्स लि.

१०१, सायन रोड, सायन,
बंबई-४०००२२

सुनिश्चित होकर चुनाव कीजिये

'डॅगर' ट्विस्ट ड्रिल्स रीमर्स, कटर्स, टैप्स, टूलबिट्स और माइक्रोमीटर्स

डॅगेलाय कार्बाइड टूल्स और टिप्स

डॅगर-साके गियर हॉब्स और गियर शेपिंग कटर्स

प्रिसिशन का प्रतीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। इसके अलावा २१ अरब पौंड के ही शेयर बैंक आदि संस्थाओं के हाथ में थे। विदेशियों के शेयर ३ अरब के थे। शेष शेयर सरकार, कंपनियों (दूसरी कंपनियों में), धर्मार्थ संस्थाओं और मर्चेंट बैंकों के कब्जे में थे।

सन १९७४ में शेयरों के दाम गिरकर २० अरब पौंड रह गये, यानी वैयक्तिक शेयरों की कीमत घटकर ७ अरब पौंड रह गयी। इनमें बड़े शेयर-मालिक कौन हैं, यह हिसाब लगाना कठिन है। १९७१ में 'इन्वेस्टर्स रेव्यू' ने ईक्विटी-लखपतियों की सूची बनाने की कोशिश करते हुए लिखा था—'सर चार्ल्स क्लोर के सिर्फ १३ लाख पौंड की कीमत के शेयर सीयर्स होल्डिंग में हैं; मगर तीन ही साल पहले उन्होंने अपने दोनों बच्चों को ८०-८० लाख पौंड इनायत किये थे।'

बंबई के फायर ब्रिगेड ने न जाने कितने लोगों का उद्धार किया है, लेकिन पिछले दिनों एक रात फायर ब्रिगेड की घंटी टनटना उठी—इस बार का 'मिशन' एकदम अलग था, एकदम नया—एक गोदाम की छत से तीन चोरों का उद्धार।

मध्य बंबई में संत तुकाराम रोड एवं सूरत स्ट्रीट के नाके पर एक गोदाम की छत पर तीन बेचारे असहाय-से खड़े थे। रात के अंधेरे में गोदाम से लगे वृक्ष के सहारे किसी तरह वे छत पर पहुंच गये। इरादा था—छत तोड़कर जो कुछ भी पार किया जा सके, पार कर दें। लेकिन किस्मत उनके प्रतिकूल थी—एस्बेस्टस की छत अभेद्य थी। तीनों के कलेजे धक-धक कर रहे थे। चढ़ तो गये, पर उतरना उतना आसान न था। और वे वहीं छत पर खड़े उतरने का उपाय सोचते रहे, जब तक लोगों ने उन्हें देख नहीं लिया।

थोड़ी ही देर में वहां भीड़ इकट्ठी हो गयी। पुलिस भी पहुंचने में पीछे न रही। लेकिन समस्या ज्यों की त्यों थी—कौन माई का लाल छत पर जाकर उन्हें उतारे! अंत में माई का लाल भी निकल ही आया—बंबई फायर ब्रिगेड।

हौलैंड की टर्मेक तंबाकू कंपनी के संचालक एलैक्जैंडर आर्लो ने अपने कामगारों की काम की एकरसता से ऊबन रोकने के लिए अपने कारखाने में १३ प्रसिद्ध चित्रकारों से बनवाकर २०० चित्र टंगवाये थे। हर दूसरे-तीसरे महीने वे उनकी जगह बदलवाते रहते हैं। ताकि उन्हें एक ही जगह लटका देखकर भी ऊबन न होने लगे। और अब तो स्थिति यह है कि कर्मचारी उन्हें देखने के इतने अभ्यस्त हो गये हैं कि वे उन्हें किसी भी कीमत पर हटाये जाने पर तैयार नहीं हैं।

कहना नहीं होगा कि ऊबन रोकने के इस उपाय से कारखाने का उत्पादन निरंतर बढ़ता जा रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्सी, वाराणसी।

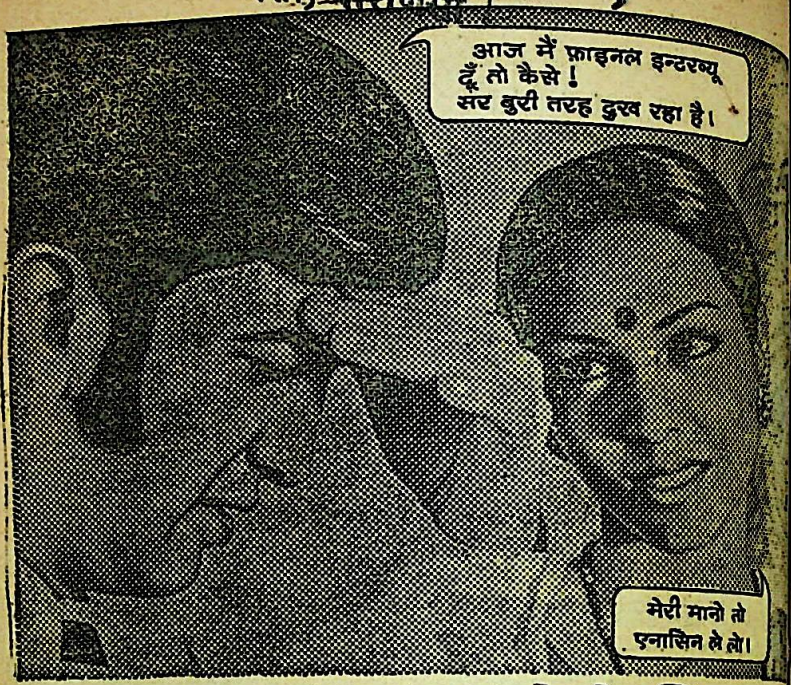

जल्द आराम पाने के लिए तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन लीजिए

तेज़ असर–एनासिन में वह दर्द-निवारक दवा ज़्यादा है, जिस की दुनिया-भर के डॉक्टर सिफ़ारिश करते हैं। इसी लिए एनासिन दर्द से जल्द आराम दिलाती है।
विश्वसनीय–एनासिन आपके डॉक्टर की दवाई की तरह दवाओं का नपा-तुला सम्मिश्रण है। इसी लिए एनासिन पर लाखों लोगों को पूरा भरोसा है।

एनासिन बदन के दर्द, दाँत के दर्द, सर्दी-जुकाम और फ़्लू की पीड़ा में जल्द आराम दिलाती है।

तेज़ असर और विश्वसनीय

एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

Regd. User of TM: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार्षिक मूल्य रु. २४) (मूल्य रु. २-५०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

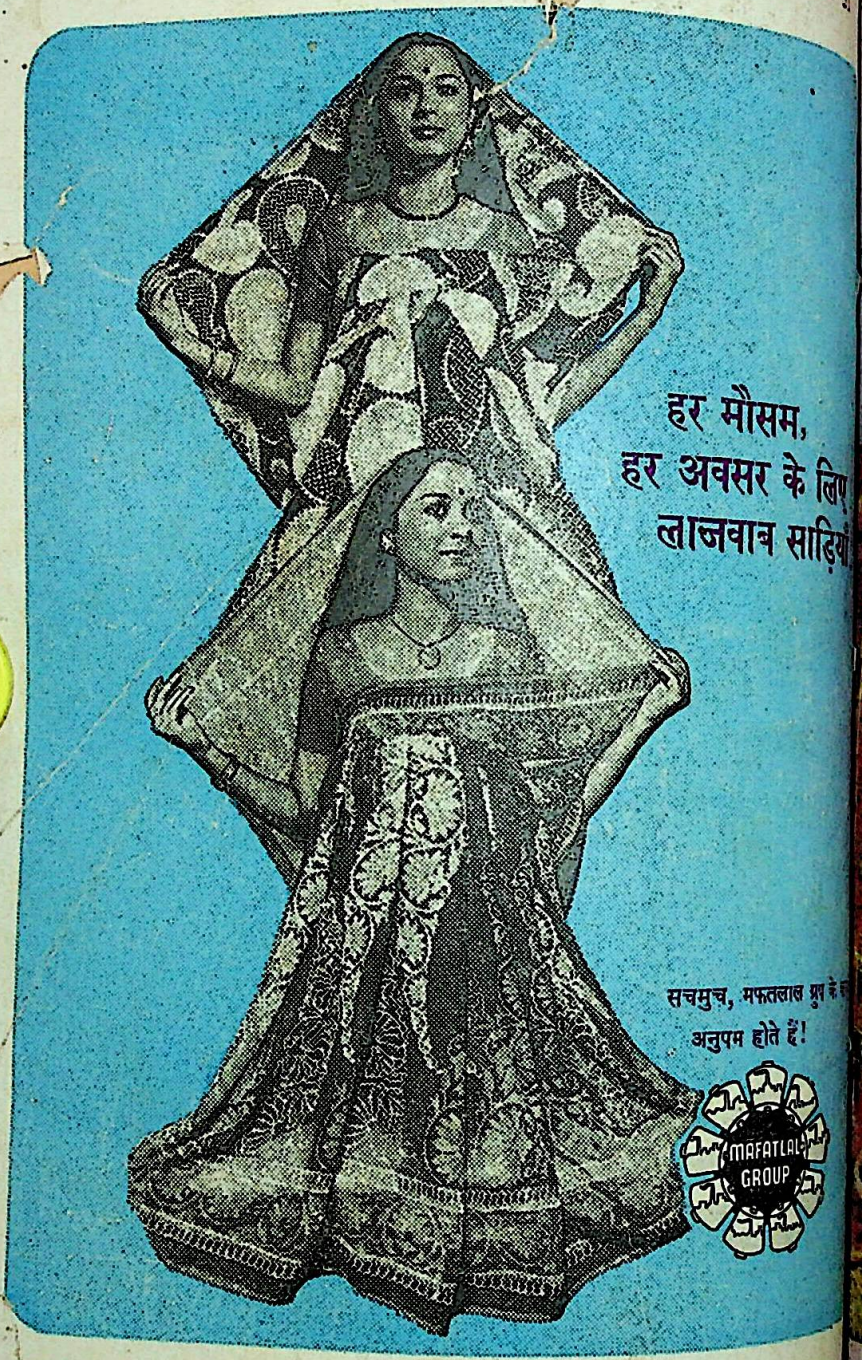

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

दिसम्बर १९६२

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
वाराणसी।

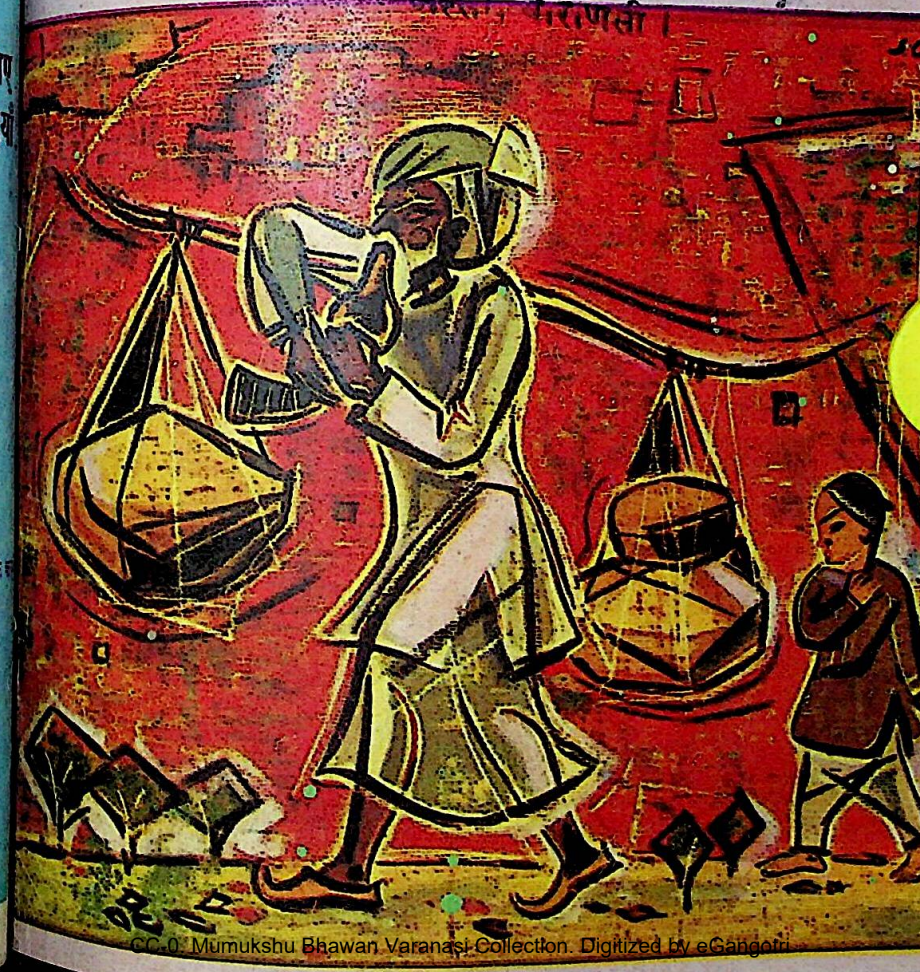

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

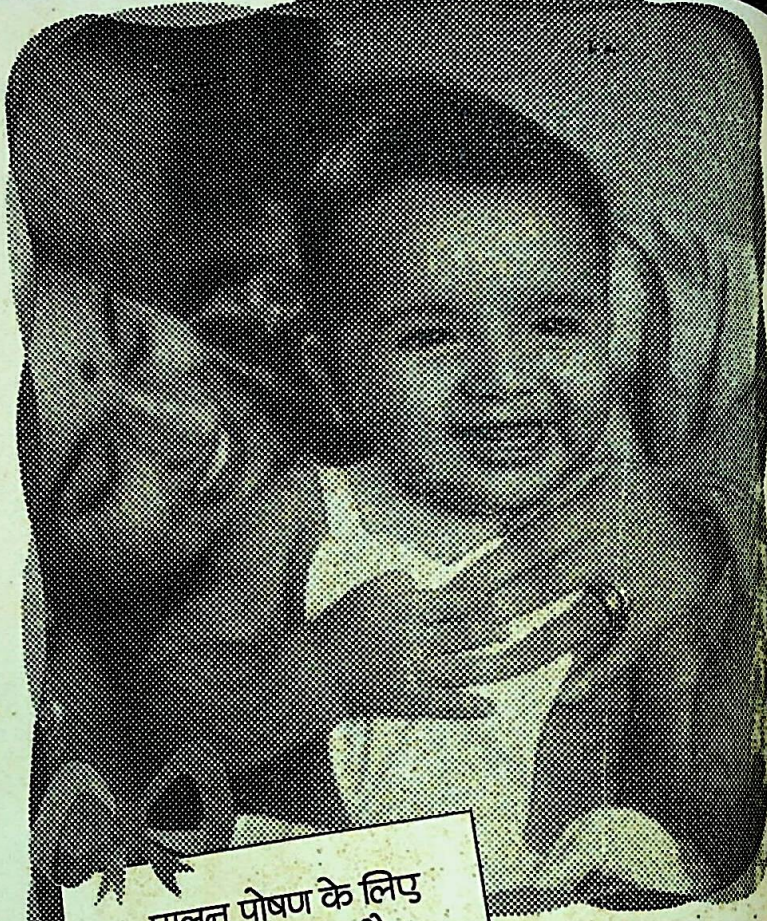

पालन पोषण के लिए
माँ की ममता और
ऑस्टरमिल्क

आप का मुन्ना ... स्वस्थ और हंसमुख ... ऑस्टरमिल्क के कारण, क्योंकि यह माँ के दूध के समान है। ऑस्टरमिल्क विशुद्ध दूध से बनता है, और मुन्ने को जल्द हज़म होने के लिए ऑस्टरमिल्क विशेष विधि से बनाया जाता है। रक्तहीनता की रोकथाम के लिए लोह और मज़बूत हड्डियों और दाँतों के लिए विटामिन डी इस में मिलाये जाते हैं।

...माँ के दूध के समान

मुफ़्त: 'ऑस्टरमिल्क पुस्तिका' (अंग्रेज़ी में)... इस में बच्चों की देखभाल के बारे में सभी आधुनिक सूचनायें दी गई हैं। डाकखर्च के लिए ५० नये पैसे इस पते पर भेजिये: 'ऑस्टरमिल्क', पोस्ट आफ़िस बक्स नं. २०२, बम्बई १

OS. 10-59 B

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय

जीवन का आनन्द लूटने के लिए

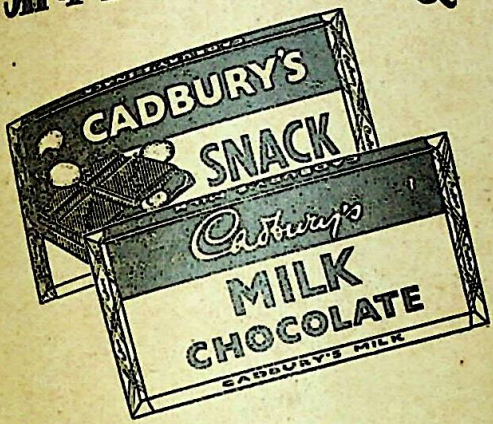

कॅड्बरीज़
चॉकलेट...
सिर्फ़
मिठाई ही नहीं...
पौष्टिक
ख़ुराक भी है!

२५३६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्र में

सुपरिचित

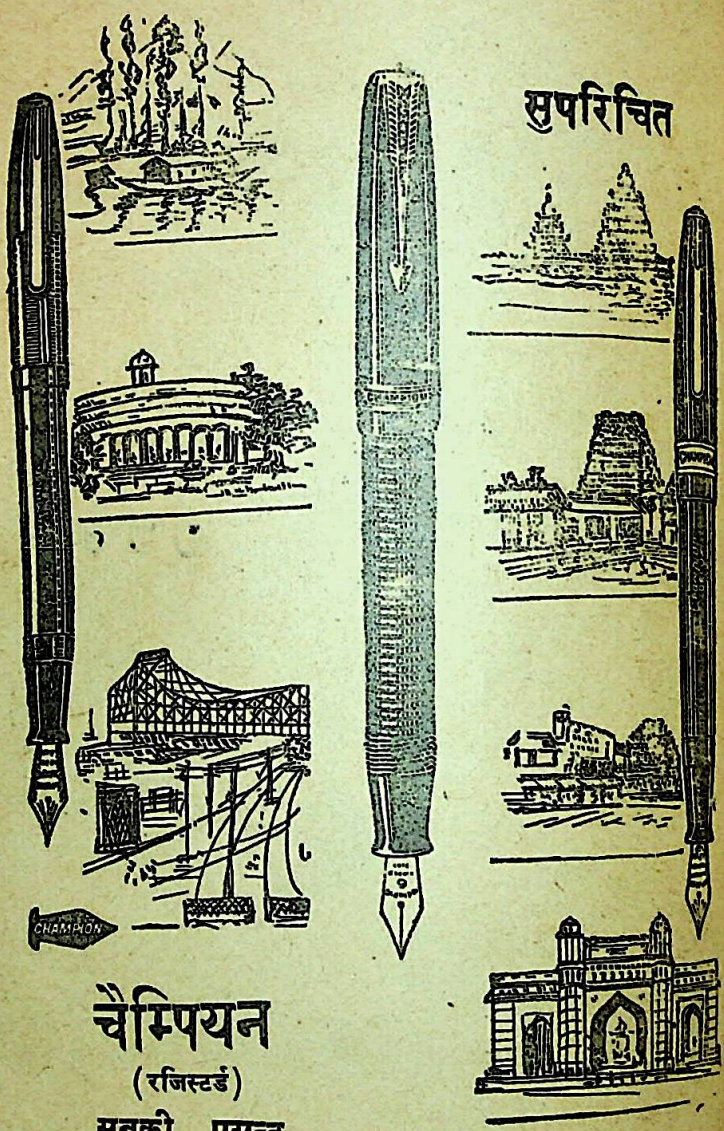

चैम्पियन

(रजिस्टर्ड)

सबकी पसन्द

निर्माता : गुजरात इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई -२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्दी जुकाम व फ्लू?

सम्पूर्ण आराम पाइये

'एस्प्रो'

लीजिये

और पीड़ा व दर्द, सिर दर्द, दांत के दर्द, माहवारी के दर्द, सर्दी जुकाम व फ्लू, मन्द ज्वर तथा गले की जलन से बिलकुल आराम पाइये।

फिर से बिलकुल तन्दुरुस्त हो जाइये

निकोलस का (N) उत्पादन उत्कृष्टता और शुद्धता का प्रतीक

AG.142.H.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुरारजी वस्त्र—

हर दिन के पहिरावे में आने वाली बिनत

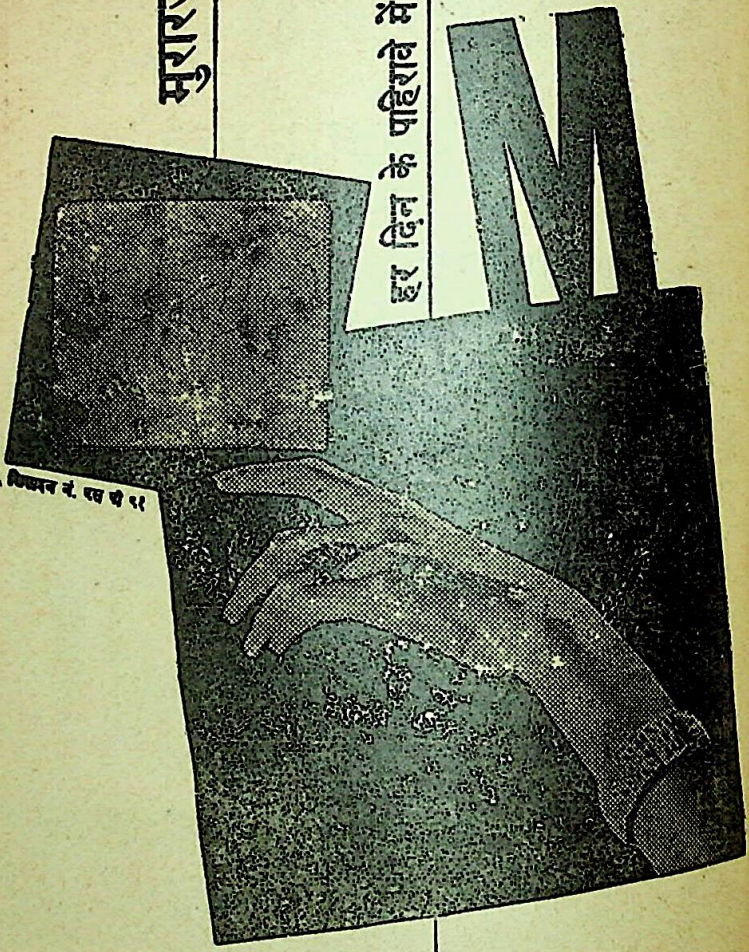

विज्ञापन नं. एस पी ९१

फूल सी ताजगी लिये हुए मुरारजी वॉयल, गर्मियों में पहरावे के लिये। सुहाने रंगों में, भड़कीले नमूनों में—स्क्रीन प्रिन्ट् में भी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर अच्छे घर में यही

आपके स्वागत की निशानी है

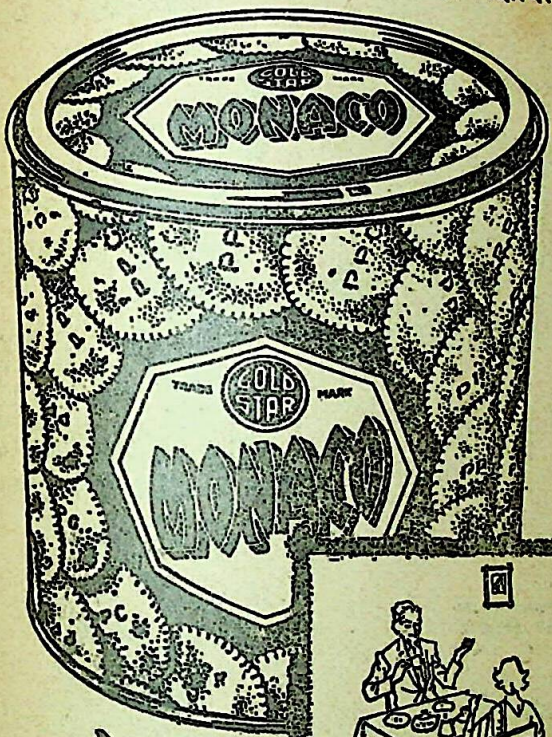

पार्ले के

बिस्कुट हैं

भारत में दूसरे किसी भी कुरकुरे बिस्कुट के मुकाबले में पार्ले के मोनेको सारे बिस्कुट सबसे ज्यादा बिकते हैं।

पार्ले प्रोडक्ट्स् मेन्युफ़ेक्चरिंग कंपनी प्राइवेट लि., बम्बई—५७

PP-502-HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने विशिष्ट
मिश्रण के कारण
विख्यात

स्टेन्स

आरेञ्ज पेको
चाय

दि युनाइटड कॉफी सप्लाई कं० लि०
पोस्ट बाक्स नं० १२, कोयम्बतूर

इस छाप पर

विश्वास कीजिये

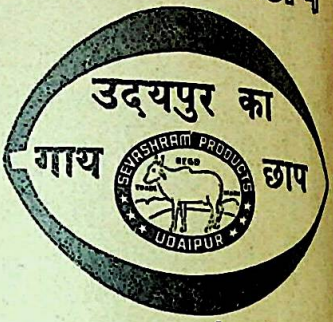

असली

ब्राह्मी आँवला तैल

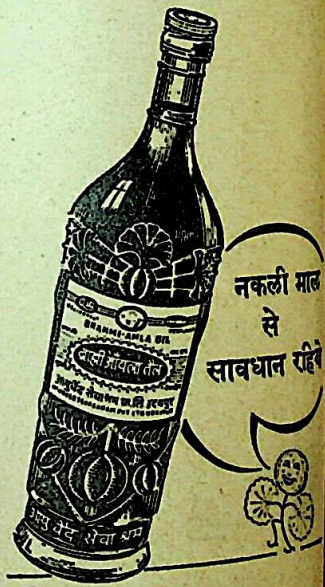

आयुर्वेद सेवाश्रम प्रा० लि०,
उदयपुर तथा वाराणसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पी.एन.बी.
ट्रैवलर्स चैक

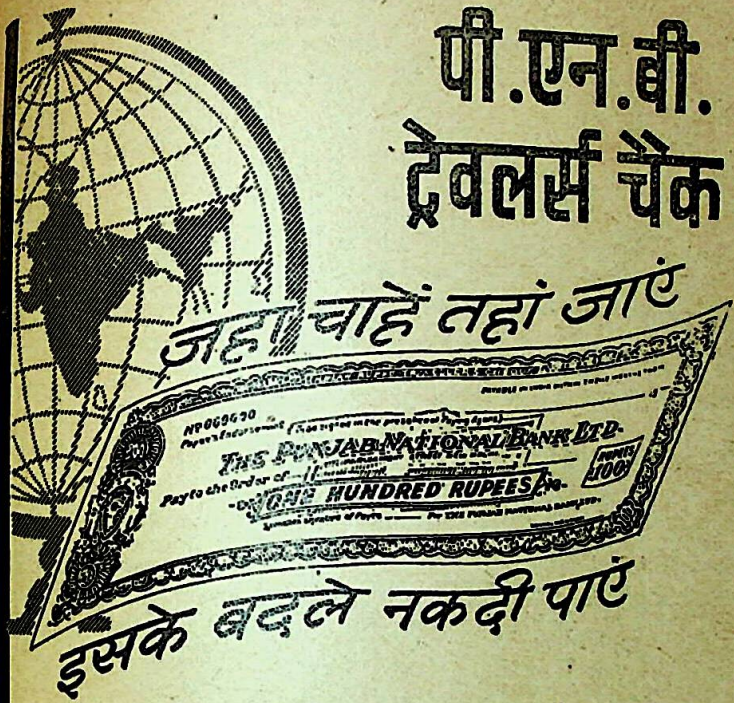

* यात्रा में नकदी लेजाने का संकटहीन उपाय
* देश भर में हमारे ४२६ कार्यालाओं व अनेक एजन्सियों से इनके बदले नकदी प्राप्त करें
* १००), ५०) व २५) की सुविध राशियों में बैंक के सभी प्रतिष्ठित कार्यालाओं से प्राप्य

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित : १८९५

प्रधान कार्यालय: पार्लियामैंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्लुकोविटा

आपको
अधिक शक्ति...
अधिक ताक़त
देता है।

ग्लुकोविटा सर्वोत्तम
शक्तिदायक खाद्य पदार्थ है।

प्रतिदिन सेवन कीजिये।

ग्लुकोविटा विशुद्ध विटामिन डी युक्त ग्लुकोज पाउडर है। यह आपको शीघ्रता से अधिक शक्ति प्रदान करता है। ग्लुकोविटा के नियमित रूप से सेवन करने से हड्डियाँ, स्नायु और शरीर के मज्जातन्तु शक्तिशाली बन जाते हैं।

कॉर्न प्रोडक्टस् कम्पनी (इन्डिया) प्रा. लि.

CPY-4

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् के तीन अमूल्य ग्रन्थ

मानसिक विकास के लिए इस सदी के महान् विचारक और भारत के राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् के विचारों का अध्ययन उतना ही आवश्यक है, जितना जीवित रहने के लिए जल, वायु और भोजन का सेवन।

धर्म और समाज	भगवद्गीता विस्तृत भूमिका और सम्पूर्ण भाष्य	पूर्व और पश्चिम कुछ विचार
८·००	१०·००	५·००

राजपाल एण्ड सन्ज कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिता का स्वप्न

शर्माजी की मृत्यु हुए आज तीन वर्ष बीत चुके हैं तो भी उनकी पत्नी और बारह वर्षीय कन्या बिन्दु सुख से जीवन बिता रही हैं। "दुर्घटना लाभवाली बहुउद्देशीय पालिसी लेकर मेरे पति ने २०,००० रुपयों का प्रबंध किया था। १९५६ के अक्टूबर में, जीप दुर्घटना से वे चल बसे।" श्रीमती शर्माजी का गला यह कहते-कहते भर आया। कुछ रुककर वे बोलीं, "मुझे तत्काल २२,००० रुपये मिले थे। मैंने इस रकम से एक मकान खरीदा। इतना ही नहीं मुझे प्रतिमास, इसी पालिसी के अंतर्गत, २०० रुपये मिलते रहेंगे।" १९७७ में जब ये किश्तें बंद हो जायेंगी तब उन्हें १८,००० रुपयों की एकमुश्त रकम जीवन बीमा निगम से मिल जायेगी। यों प्रीमियम के रूप में ३,२७० रुपये शर्माजी ने दिये थे, जिनके बदले में श्रीमती शर्माजी को कुल ८७,००० रुपये की रकम मिल जायेगी।

"बिन्दु को डाक्टर होने की कामना है।" श्रीमती शर्मा ने अभिमान के साथ कहा। "उसकी कालेज-शिक्षा के लिए भी पैसे मिल जायेंगे क्योंकि शर्माजी ने उसके लिए शिक्षा-वृत्ति पालिसी १९५७ में ली थी। बिन्दु की १८ वर्ष की आयु पूर्ण होते ही इस पालिसी की अवधि पूरी होगी और उसे इससे कुल ६,००० रुपये मिल जायेंगे।"

जीवन बीमा सुरक्षा का बेजोड़ साधन है।

ASP/LIC-81 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

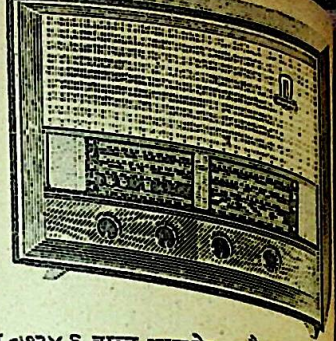

माडल ०७२४,६ वाल्व.आल वेव. ८ बैण्ड पूर्णवेव
स्प्रेड–एसी या एसी/ डीसी (दो माडल)मू० रु.
५१५'०० एक्साइजडयूटी:रु.७५'००वि.करसहित

murphy radio

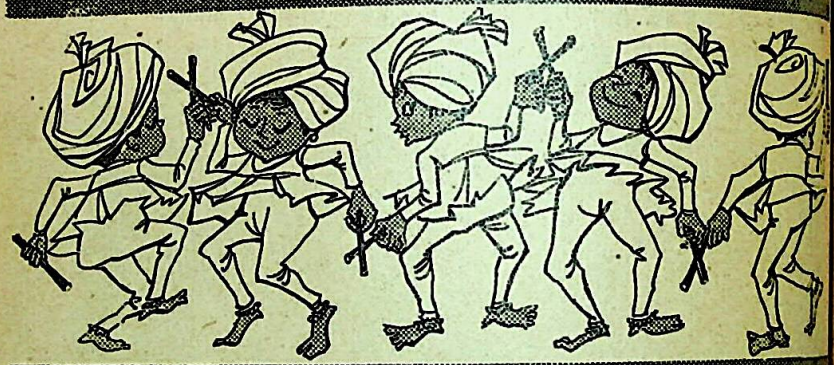

Delights the home!

माडल ०३७४
९ क्रियाओं के साथ ६ वाल्व
आल वेव. ४ बैण्ड
पियानो की स्विच
एसी या ए.सी./डीसी.(दो माडल)
मूल्य रु. ४०४'००
एक्साइज डयूटी रु. ३०'०० बिक्री कर सहित

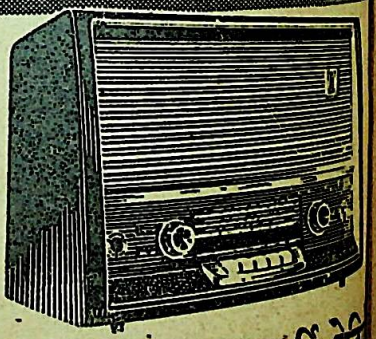

मर्फी रेडि

" ये मूल्य सिर्फ मह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

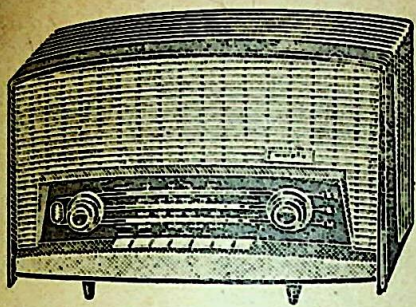

माडल ०४५२
९ क्रियाओं के साथ ६ वाल्व
आल वेव. ३ बैण्ड
पियानो की स्विच. एसी या एसी / डीसी
मूल्य : रु. ३५६.००
एक्साइज ड्यूटी : रु. ३०.००
बिक्री कर सहित.

माडल ०७०४
४. वाल्व आल वेव. २ बैंड एसी / डीसी
कीमत : रु. १३५.०० बिक्री कर सहित

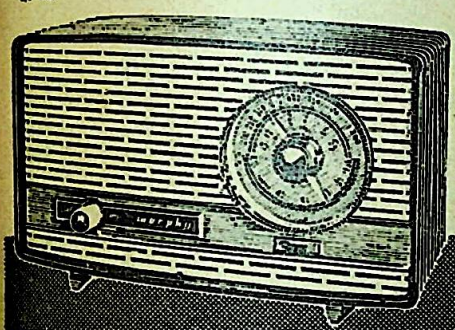

माडल ०२९८
आल वेव. ५ वाल्व ३. बैण्ड एसी / डीसी इसके अतिरिक्त माडल ०२९९ : (ड्राइ बैटरी) ४. वाल्व मूल्य रु. २१५.०० एक्साइज ड्यूटी : रु. १५.००
बिक्री कर सहित.

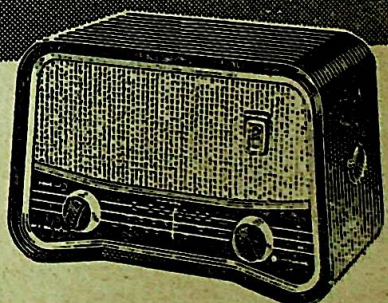

माडल ०७५२
५ वाल्व. आल वेव
३ बैंड. एसी या एसी / डीसी (दो माडल)
इसके अतिरिक्त माडल ०७५१, वाल्व ५
मूल्य रु. २६९.००
एक्साइज ड्यूटी रु. १५.०० बिक्री कर सहित

MR. G. 181

घर को प्रसन्नता से भर देता है

राज्य में ही लागू होगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड

लाल लेबल

खांसी, ज़ुकाम, इन्फ़्लुएंज़ा, कफ़-सम्बन्धी
रोगों तथा दमा के लिए लाभदायक है।

यह सिर्फ़
दवाई ही नही
बल्कि एक
विश्वसनीय
टॉनिक भी है।

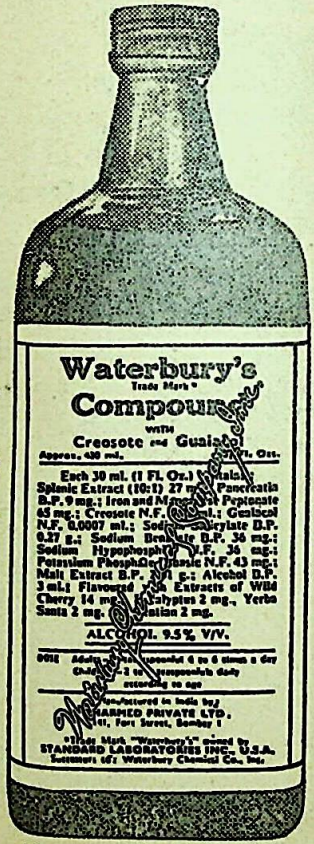

आज़माये हुए नियमों के अनुसार बनाया गया वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड ऐसा विश्वसनीय टॉनिक है जिसकी सिफ़ारिश डॉक्टर बहुधा करते हैं।

दवाई के रूपमें:
वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड में क्रिओसोट और गॉयकॉल नामक पदार्थ मिले हुए होते हैं जो बलग़म का नाश करके फेफड़ों को साफ़ रखते हैं... खांसी और ज़ुकाम से भी छुटकारा दिलाते हैं।

टॉनिक के रूप में:
यह शरीर को शक्ति प्रदान करता। ताकि बीमारियों का सामना कर सके। इसके सेवन से भूख बढ़ती है, हाज़मा सुधरता है और धातुओं की कमी पूरी होती है। यह ख़ून बढ़ाता है।

वॉरनर लॅम्बर्ट फ़ार्मास्युटिकल कम्पनी
(सीमित दायित्व के साथ यू. एस. ए. में संस्थापित)

WCRY-1 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी दृष्टि में

दीपावली अंक में श्रीगोपाल नेवटिया लिखित 'जापान ... जापान है' नामक यात्रा-वर्णन पढ़कर मैं ही नहीं, मेरे घर के सभी व्यक्ति प्रसन्न हुए। लेख मनोरंजक और ज्ञानवर्धक है। लेकिन ६२ वें पृष्ठ के चित्र के परिचय में एक चीज खटकती है– वह है नृसिंह की गोद में हिरण्यकश्यप के बदले प्रह्लाद की उपस्थिति।

–अश्विनी कुमार पांडे, मालदह

ooo

सितम्बर १९६२ के 'नवनीत' का पेज ९६ खोलकर कृपया अपने सामने रख लीजिये। श्री वाल्मीकि चौधरी द्वारा लिखित इस संस्मरण को पढ़कर मैंने अपने साथी से कहा –"यह तो किसी कट्टर आर्य समाजी के बारे में यह कहने जैसा है कि उन्होंने अपने नाना की मृत्यु पर गरुड़ पुराण की कथा सुनी थी।"

यह संस्मरण 'नवनीत' की प्रति से काटकर हमने श्री नेहरू को भेजा और उनसे पूछा कि क्या यह कथा सत्य है? उनके निजी सचिव का हिन्दी पत्र हमें अधिकार पूर्वक यह सूचित करता है कि यह कहानी काल्पनिक, असंगत और तथ्यहीन है। –बी. एस. दीक्षित, मद्रास।

(उक्त प्रसंग श्री वाल्मीकि चौधरी की पुस्तक 'राष्ट्रपतिभवन की डायरी से लिया गया था। –सम्पादक)

इस बार का दिवाली अंक पहले अंकों से खूब बढ़ा-चढ़ा निकला है। इसकी दो रचनाएँ 'न जाने वह पाप था या पुण्य' और 'विजय-मंत्र' खूब पसंद आयीं।

–सी०वी०मिरानी,देवली

ooo

जब कभी 'नवनीत' खरीदता हूँ उसके नाम के साथ जुड़ा हुआ 'डाइजेस्ट' शब्द खटकता है। 'डाइजेस्ट' अंग्रेजी शब्द है। क्या उसकी जगह कोई हिन्दी शब्द नहीं रखा जा सकता।

–सत्यनारायण शर्मा,
परसिया को कोलियरी

ooo

दिवाली अंक में प्रकाशित लेख 'राउरकेला क्यों पिछड़ गया?' में पृष्ठ ६८ पर पश्चिम बंगाल के बोकारो' की बात कही गयी है, जबकि बोकारो बिहार में स्थित है।

–रायप्रभाकर प्रसाद, पटना

(हमारी भूल सुधारने के लिए धन्यवाद –सम्पादक)

लेखकों के नाम के साथ पते भी दें, तो पाठक स्वयं लेखकों से अपनी शंकाएँ दूर कर सकेंगे। – नंदलाल, ग्वालियर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उषा की सिलाई
-सर्वोत्तम सिलाई

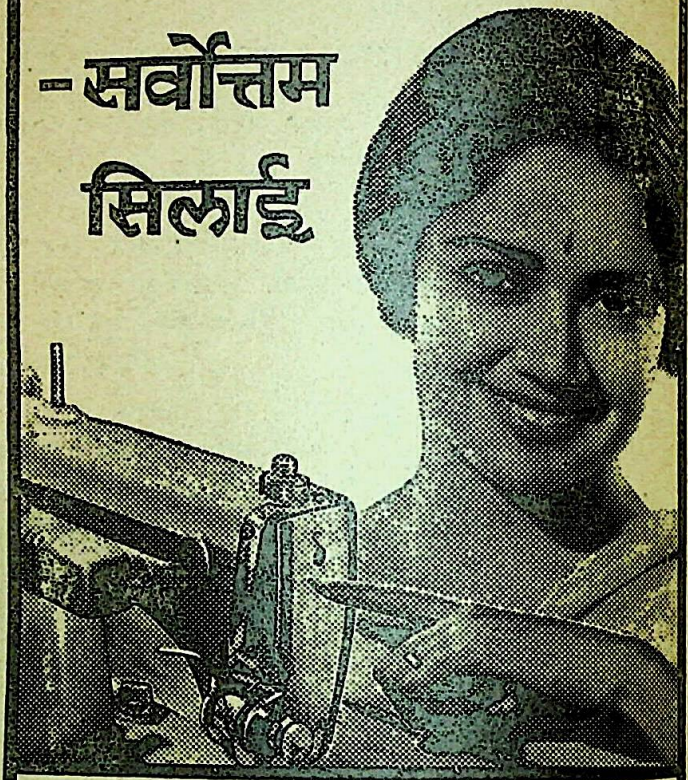

उषा सिलाई मशीन की मांग सबसे अधिक है। कारण कि इसकी बनावट आधुनिक है और काम में यह निर्भरयोग्य है। इसके पुर्जे आसानी से मिल जाते हैं। उषा की "बिक्री के बाद देखभाल" की व्यवस्था उच्च कोटी की है। लगभग पचास देशों की महिलाएं इसके सुचारू रुप से चलने की साक्षी हैं।

आसान किश्तों पर खरीदने के लिए स्थानीय उषा बिक्री केन्द्र में पधारिये।

उषा सिलाई मशीन

JESM/B-41

[illegible] इंडस्ट्रीज वर्क्स लिमिटेड, कलकत्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिसम्बर **नवनीत** [हिन्दी डाइजेस्ट] १९६२

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

सम्पादक
सत्यकाम विद्यालंकार

सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र

शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र मेहता

सपेरा
चित्रकार: श्यामक्ष चावडा

विषय-सूची

सिद्धि-सूत्र	'तत्व-रोमंथ' से	१
ज्ञान-गंगा की दो लहरें	कमलनयन बजाज	१
जवानों ने झुकना नहीं सीखा	डा० शशिशेखर	२
श्रद्धा—मंत्र	... ...	२
बकिंघम प्रासाद की वह पार्टी	एन्०शालिवटीश्वरन्	२
जर्मनी का हँसी-विनोद	नरेंद्र नायक	२
लक्ष्मीचंद्र की लकीरें	डा० सुधीर	३
नाथाजी लॉड	एस०ए० कुलकर्णी	३
रक्तप्रेमी रोग हेमोफीलिया	प्रेमानंद चंदोला	३
पत्रकार वाल्टर लिपमन	... ...	४
यमन के खूनी इमामों का अंत	निर्मल चंद्र	४
परम आनंद के क्षण	... ...	४
मेरे पिताजी	वृंदावनलाल वर्मा	४
मेरी माँ	जीवनधन	५
भूगर्भ में शक्ति-स्त्रोत	गोविंद रत्नाकर	५
हमारी जड़ता	नवल	५
उजली रेखाएँ	... ...	५
बल्ला धीमर	सेठ गोविंददास	५
एंटार्क्टिका	विनोद मेघाणी	६
एकता-गीत	सुमित्राकुमारी सिन्हा	६
जीवन की संध्या में	न०वि० गाडगिल	६
सूर्यास्त (कविता)	जगदीशनारायण श्रीवास्तव	६
सुराही का पानी	'वनफूल'	६
एक वाक्य जीवन-दीप बन गया	... ...	६
पशु-लोक के ये बाँके सूरमा	सुधींद्र वर्मा	७
उपग्रह द्वारा संचार-व्यवस्था	प्रो० भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	७
गुरुदेव फ्लावर्स के दो प्रेम-पत्र	नंदकिशोर मित्तल	८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गूंगा	शिवानी
पहलवान गामा जेल में	विश्वनारायण सिंह
एक ही दोस्त (तमिल कहानी)	जयकांतन्
वृक्ष भी देखते हैं	केशवदेव मिश्र 'कमल'
दीवार की धूप	राविन शा 'पुष्प'
शरत् बाबू का उत्तर	काशीनाथ मिश्र
गुबारे-शब (पुस्तक-संक्षेप)	काजी अब्दुल सत्तार

चित्रसज्जा : मेथियास, एल्डो बोरजोनी, रुफिनो टैमायो, केनेथ अमिटेज, लक्ष्मीचंद्र, [illegible]

अगले पृष्ठ पर : वल्कन–डी रोसी की रची फ्लारेंस में रखी एक मूर्ति।

आगामी अंक में

सुकरात की मृत्यु-वेला (पुस्तक-संक्षेप) : लोकप्रिय लेखक परदेसी द्वारा महान दार्शनिक की जीवन-संध्या का चित्रण

एक बीज से उपवन उग गया : एक नन्हे से फ्रांसीसी बालक ने एक विशाल अंतर्राष्ट्रीय संस्था खड़ी कर दी

प्रौढ़ मनुष्य कौन ? स्वर्गीय एलीनर रुजवेल्ट का एक अनुभवपूर्ण लेख

ओ स्वतंत्रता ! सोमा वीरा का रोचक लेख – गणतंत्र दिवस की विशेष भेंट

अच्छे लोग क्यों दुःख पाते हैं ? संतराम बी० ए०

नमक : वाजिदा तबस्सुम की एक नयी कहानी

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८, खेतवाड़ी बैक रोड, बम्बई-४ में मुद्रित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष : ११
अंक : १२

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

दिसम्बर
१९६२

के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि

सिद्धि-सूत्र

क्रियासिद्धि के सूत्र की खोज हो रही थी। बल—एक ने कहा; संकल्प — दूसरे ने सुझाया; बुद्धि—तीसरे ने मत प्रकट किया। सेनेका ने कहा कि परीक्षा करनी चाहिये। एक टेढ़ी कील व भारी हथौड़ा लेकर वह तीनों साथियों के साथ निकला। सड़क पर एक बच्चा गोली खेल रहा था। सेनेका ने कहा—"बच्चे, हथौड़ा मारकर जरा यह कील सीधी कर दो, मिठाई दूँगा।" बच्चा हिरन-सा उछलता आया; लेकिन हथौड़ा उससे उठा नहीं। सेनेका बोला—" अकेला संकल्प काफी नहीं।" आगे बगीचे में हट्टा-कट्टा माली सोया हुआ था। सेनेका ने उसे झकझोरकर जगाते हुए कहा—" हथौड़े से यह कील सीधी कर दो, एक अशर्फी दूँगा।" और हथौड़ा उसके हाथ में दिया। ऊँघते हुए "हँह!" कहकर माली ने करवट बदल ली। हथौड़ा जमीन पर गिर पड़ा। "अकेला बल भी काफी नहीं", कहते हुए सेनेका ने मिट्टी के ढेर पर कील रखी और हथौड़ा मारा। कील मिट्टी में धँस गयी, मुँह धूल से भर गया। तब सेनेका ने समझाया—"संकल्प के बिना बल, बल के बिना संकल्प अधूरे हैं। उनके मिलने से सामर्थ्य की इकाई बनती है। बुद्धि अकेली शून्य है; पर सामर्थ्य की इकाई के साथ मिलकर उसे दस गुना कर देती है। यही क्रिया-सिद्धि का सूत्र है।"

—'तत्व-रोमंथ' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञान-गंगा की दो लहरें

गुरु और शिष्य के सम्बंध को विनोबाजी ने 'हृदय धोने की क्रिया' और 'तीर्थस्नान' कहा है। चित्त को चित्प्रकाश से भर देनेवाले दो गुरुकृपा-प्रसंग यहाँ वर्णित हैं।

कमलनयन बजाज

सन् १९३०-३१ की बात होगी। एक दिन विनोबाजी चरखा कातते-कातते मेरा वर्ग भी ले रहे थे। इसी बीच किसी ने डाक से आया हुआ एक लिफाफा उनके हाथ में दिया। लिफाफे के आकार, कागज के प्रकार और पत्र के पीछे से दिखाई देती हुई लिखावट से मैंने ताड़ लिया कि पत्र बापूजी का लिखा हुआ है। विनोबाजी ने उसे एक बार पढ़ा और फाड़ दिया।

जितने भी पत्र उनके पास आते, उन्हें वे एक बार पढ़ जाते और दोपहर को दुबारा पढ़े बिना सबका जवाब दे देते। आश्रम से सम्बंधित पत्रों को कार्यालय में भिजवा देते, शेष को फाड़ देते। अपने पास कुछ भी न रखते।

मैं उनकी इस आदत से परिचित था। लेकिन यह पत्र तो बापू का था; और उसका जवाब देने के पूर्व ही उन्होंने उसे फाड़ दिया, इससे मेरे मन में कुछ कौतूहल और शंका हुई। मैंने फाड़े हुए पत्र के टुकड़ों को साथ में रखकर पढ़ा। किसी संदर्भ में बापू ने विनोबाजी को कुछ इस प्रकार लिखा था—"तुम्हारे-जैसी किसी महान् आत्मा से मेरा सम्पर्क नहीं हुआ।"

बापू के साधारण पत्रों को भी वे सम्भालकर रखते थे। यहाँ तक कि उनके हस्ताक्षर तक को मढ़वा लेते थे। लेकिन विनोबाजी ने बापू का लिखा हुआ यह पत्र इस तरह फाड़ दिया, उससे मुझे कुछ रोष हुआ। मैं कुछ आवेश में उनसे पूछ बैठा—"आपने पत्र क्यों फाड़ डाला?"

उन्होंने सहज भाव से कहा—"अपने आत्मीय और गुरुजन से भी गफलत में स्नेह के कारण कुछ भूल हो गयी हो, तो उसको कायम रखना ठीक नहीं। वह मोह है, और हिंसा भी।"

मैंने उसी आवेश में कहा—"बापूजी ने भूल की है, यह कहनेवाले आप कौन हैं?"

उन्होंने उसी सहजता से जवाब दिया—"बापू को लाखों लोग मिले हैं। एक-एक महान् विभूति और आत्माएँ मिली होंगी। यदि बापू उन्हें नहीं पहचान पाये या पहचानकर भी लिखते समय भूल गये तो उससे उन लोगों की महानता कम नहीं हो जाती। हमें इतना ही समझना चाहिये कि बापू ने स्नेह या मोह के कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे प्रति काफी कुछ लिख दिया है। उसमें भूल है। उसे सहेजकर रखने की जरूरत ही क्या ?"

मैंने दोहराया —" भूल क्यों कहते हैं ? बापू ने समझ-बूझकर ही लिखा होगा।"

विनोबाजी ने धीरज के साथ कहा— "मान लिया, उन्होंने जो लिखा वह सत्य ही है, तो उससे मुझे लाभ क्या ? यदि कुछ हो सकता है, तो घमंड ही। जिससे अपना कुछ लाभ न हो, उसे रखने से मतलब ?"

मैंने तर्क किया— "बापू-जैसे महापुरुष की लिखी हुई चीज, भले ही वह आप ही के बारे में क्यों न हो, केवल आपके लिए नहीं, दुनिया के लिए है। उसे फाड़ने का आपको क्या अधिकार ?"

विनोबाजी ने कुछ अधिक समझाते हुए फिर कहा— "ऐसा कहने में तो हमारा मोह ही है। उसमें काम की चीज जो स्नेह है, उतना हमने ले लिया। बाकी को नष्ट कर देने में ही लाभ है। यदि वह सच भी हो, तो मेरे उस पत्र को फाड़ डालने से वह बात मिट नहीं जाती। सत्य तो सत्य ही रहेगा, फाड़ने से फटेगा थोड़े ही ! लेकिन यदि वह मोह है, तो उसे रखने में नुक्सान ही होगा। इसलिए उसे फाड़ डालने में कोई जोखिम नहीं, न रखने से कोई लाभ।"

विनोबाजी की बात मेरे दिल में पैठती चली गयी। मेरा रोष काफूर हो गया।

× × ×

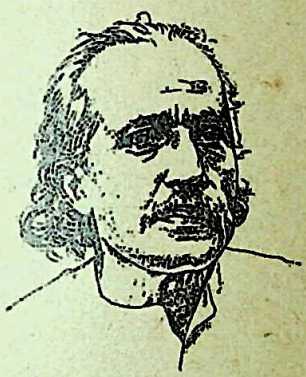

जब तक हमारा जीवन विशाल नहीं होगा, हमारा साहित्य भी विशाल नहीं होगा। जब तक हमारी करुणा विशाल नहीं होगी, जीवन में दीखनेवाली सरसता-विरसता, सुख-दुःख का सही मूल्य कभी हमारी समझ में नहीं आयेगा। —शिवराम कारंत

गीता, ज्ञानेश्वरी, रामायण आदि ग्रंथों में से किसी विशेष प्रसंग या विचार को लेकर विनोबाजी चर्चा छेड़ देते थे। जिस छंद में मूल श्लोक हो, उसी छंद में हिन्दी, मराठी या गुजराती में उसका सरल भाषांतर अथवा भावार्थ कर देते थे। यह भी उनके पढ़ाने का एक तरीका था। इस प्रकार तत्काल रूपांतर करने के बावजूद कई बार वह मूल से भी अधिक स्पष्ट और अच्छा हो जाता था। यह सब अक्सर वे कागज के टुकड़ों या पट्टी पर लिखते, काम हो जाने पर फाड़ या मिटा देते।

अहिंसा के विषय को समझाते हुए मराठी में एक श्लोक उन्होंने बनाया। उसकी शब्दावली तो अब मुझे याद नहीं; लेकिन उसका भावार्थ मेरे दिल पर ज्यों-का-त्यों अंकित है। वह कुछ ऐसा था :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्थर ने फूल से कहा –" मैं तुझे कुचल डालूँगा।" फूल ने जवाब दिया–"तो मेरी सुगंध को दुनिया में फैलने का मौका देकर मुझ पर तुम अनंत उपकार करोगे।" पत्थर का घमंड चूर-चूर हो गया।

नम्रता और दृढ़ता के साथ फूल ने दोनों तरह से जीत प्राप्त कर ली। कुचला जाता, तो उसकी जीत थी ही; और बच गया, तो उसने किसी को दुखाये बिना अपने शील की रक्षा कर ली। अहिंसा का इससे अधिक सरल, सुंदर तथा गहरा विश्लेषण आज तक मेरे देखने में नहीं आया।

लेकिन कागज के टुकड़ों को फाड़ देने से मुझे बहुत वेदना होती थी। अंत में जब मुझसे नहीं रहा गया, तो एक दिन पूछ ही बैठा–"आप इन कागजों को फाड़ क्यों देते हैं? यदि इन्हें जमा करके प्रकाशित किया जाये, तो दूसरों का भी लाभ हो।"

उन्होंने कहा–" मनुष्य अमर नहीं है। जब वह स्वयं अमर नहीं, तो किसी अमर कृति का निर्माण उससे हो ही कैसे सकता है? फिर भी यह सम्भव है कि जीवन की अनुभूति और विचार-मंथन के बाद ऐसी कोई कृति बन जाये, जो लगभग अमरत्व को प्राप्त कर सके। लेकिन यदि वह कृति ऐसी न हो, तो उसके रखने से क्या लाभ? अंत में तो समाज अथवा काल उसे नष्ट कर ही देगा। यह कष्ट समाज या काल को क्यों दिया जाये? इसमें हिंसा है और खुद का अपमान भी। अपमान इसलिए कि मैं तो रचना करूँ, और दूसरे उसे नष्ट करें। इससे तो अच्छा यही है–और इसमें हमारे स्वाभिमान की रक्षा भी होती है–कि जब तक ऐसी कोई अच्छी चीज न बन जाये, हम स्वयं ही उसे नष्ट कर दें। अच्छा रसोइया तो वही माना जायेगा, जो अच्छी बनी रसोई ही परोसे।

मैंने कहा–" आपने यह कैसे पता लिया कि जो कुछ लिखा गया, वह इस तरह की कृति नहीं है?"

वे बोले–" आखिर जब मैं कुछ लिखता हूँ, तो जानता भी हूँ कि उस चीज की क्या कीमत है। यदि वह अमरत्व को प्राप्त कर सकनेवाली कृति है, तो नष्ट करने से भी मिट कैसे सकती है? वह तो जमाने के साथ ही प्रवाहित होती रहेगी। मुझमें, तुममें, तुमसे और किसी में। उसमें सत्य है, तो अमरत्व है; और अमरत्व है, तो वह जमाने पर हमेशा असर करता रहेगा। सारे वातावरण में फैल जायेगा।"

कितना गहरा विचार कितनी सरलता से कहा गया है! दूसरों को कष्ट भी न हो, समाज के समक्ष अधकचरी चीज भी न लाऊँ, मेरे स्वाभिमान की भी रक्षा हो। एक विचार यदि बन गया है और अमर रखता है, तो वह नष्ट नहीं हो सकता।

विनोबाजी की 'गीताई' यद्यपि गीता का मराठी अनुवाद ही है, फिर भी कहीं-कहीं वह मूल से भी अधिक सुंदर बन पड़ी है। 'गीताई' को विनोबा के इसी तरह के प्रयत्नों का संकलित फल समझना चाहिए।

[सौजन्य : जमनालाल बजाज सेवाकुटीर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लद्दाख और नेफा की विकट पर्वतभूमि पर चीनी आततायियों से लोहा लेते हुए हमारे वीर देश-भक्त सैनिक देश के स्वातंत्र्य की ही नहीं, अपितु वीरता-दृढ़ता की अपनी ऐतिहासिक परम्परा की भी रक्षा कर रहे हैं। पैंसठ साल पूर्व भी एक बार उन्होंने ऐसा किया था।

हमारे जवानों ने झुकना नहीं सीखा

डा० शशिशेखर

१२ सितम्बर १८९७ !..... भारतीय सैनिकों की परम्परागत वीरता का एक रोमांचकारी दृष्टांत उस दिन इतिहास ने देखा।

सारागढ़ी की छोटी-सी नाकेबंदी पर २१ सिक्ख सैनिकों ने उस दिन १०,००० पठान कबाइलियों का मुकाबला करते हुए, देश की आन पर अपना बलिदान दिया।

तत्कालीन भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमांत के हावूड़े भाग (नो मैन्स लैंड) में, जो हिन्दूकुश और सुलेमान पर्वतश्रेणियों के बीच अफगानी सीमा के पास पड़ता है, सन् १८९७ में अंग्रेजों ने अपनी तीन नाकेबंदियाँ कर रखी थीं। ये नाकेबंदियाँ उरकजई कबीले के इलाके में खाकी घाटी के अनेक गाँवों को उजाड़कर कायम की गयी थीं। अंग्रेज जनरल सर विलियम लाकहार्ट के नेतृत्व में यह सैनिक अभियान कई बरस चला।

समाना की टौरियों पर ये तीन नाकेबंदियाँ इसलिए कायम की गयी थीं कि उनके जरिये आस-पास की मीरानजई घाटी से सैनिक सम्पर्क रखा जा सके। उराकजई कबीले को अंग्रेजों ने मार-पीटकर ही नहीं, रुपये की घूंस और रायफलें देकर भी वशंवद बना लिया था।

सांगार, गुलिस्ताँ और सारागढ़ी की इन नाकेबंदियों के चारों ओर अनगढ़ पत्थरों की दीवार थी, कुछ झाड़-झंखाड़ और काँटेदार तार द्वारा घेरा-रोपी थी और फिर भीतर थोड़ी-सी किलाबंदी।

लेकिन दो महीने बाद ही कबाइलियों का इरादा बदल गया और उन्होंने २४ मार्च १८९७ को अकस्मात् ही २९-वीं पंजाब रेजिमेंट तथा तीसरी सिक्ख फ्रंटियर फोर्स के फीरोजपुरी सिक्ख सैनिकों की अग्रिम टुकड़ी पर हमला कर दिया। २४ सिक्ख सैनिक मारे गये और ७ घायल हुए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगले दिन कबाइलियों ने सांगार और गुलिस्ताँ की नाकेबंदियों पर धावा बोला। धूर्त हमलावरों ने धर्मप्राण सिक्खों की गोभक्ति का बड़ा नाजायज फायदा उठाया। वे अपने लश्कर के आगे-आगे गायों का बहुत बड़ा झुंड हाँकते हुए नाकेबंदी के बाहरी घेरे तक आ पहुँचे। गायों की हत्या के डर से सिक्ख जवानों ने शुरू में गोली नहीं चलायी और धोखे में रहे। लेकिन बाद में उन्होंने उन्हें मार भगाया।

इसके बाद तो कबाइलियों ने कोहाट, समाना की पहाड़ी और कुर्रम की घाटी में भयंकर मार-काट मचा दी। एक तरह से निश्चयात्मक युद्ध ही उन्होंने छेड़ दिया। ३६-वीं सिक्ख रेजिमेंट के जवान उस समय इस क्षेत्र की रक्षा के लिए नियुक्त थे।

सारागढ़ी से ही सारे सैनिक भेजे जाते थे। आज की तरह वायरलेस-सेट की सुविधा तो उन दिनों थी नहीं। सूर्य-किरणों के संकेत द्वारा संदेश-प्रेषण किया जाता था। सारागढ़ी में एक ऊँची मीनार इस काम के लिए बनी हुई थी। केवल २१ सिक्ख नौ-जवान सिपाही इस नाकेबंदी की रक्षा के लिए नियुक्त थे। हवलदार ईश्वरसिंह उनका नायक था। संदेश भेजने का काम सिग्नलर गुरमुखसिंह के सुपुर्द था।

कबाइलियों ने फोर्ट लाकहार्ट और गुलिस्ताँ पर फिर हमला किया। लेकिन वहाँ सुरक्षा का पर्याप्त प्रबंध था और वे मार भगाये गये। पिटे-पिटाये कबाइली तब सारागढ़ी पर चढ़ दौड़े। सन् १८९७ की १२ सितम्बर को दस हजार उराक-जई और अफरीदी लोगों ने उस छोटी-सी गढ़ी पर एक साथ हमला कर दिया।

गढ़ी में गोला-बारूद बहुत थोड़ा था। इसलिए सिक्खों ने उसे यों ही बरबाद न करके, हमलावरों के मुखियों को ही भूनने का निश्चय किया। उधर गढ़ी के एक-एक छेद और मोखे का निशाना साधकर दस हजार व्यक्ति गोलाबारी कर रहे थे और लगातार छः घंटे तक वे गोलियाँ बरसाते रहे।

इधर से सिक्खों ने भी जवाबी फायर जारी रखा। उन्होंने दुश्मनों के चुने हुए २०० मुखिया मार डाले। लेकिन लड़ते-लड़ते गढ़ी के उन २१ जवानों में से सिर्फ सात सही-सलामत बचे थे। इन मात्र में सिग्नलर गुरमुखसिंह भी शामिल था। वह गोली चलाने के साथ-साथ हीलियो-ग्राफर द्वारा संदेश भी भेजता जाता था।

कबाइली सूरज डूबने के पहले ही गढ़ी में घुसना चाहते थे; क्योंकि उन्हें डर था कि रात के अँधेरे में कहीं सिक्खों के फाजे नयी कुमुक न आ पहुँचे। उन्होंने चारपाइयाँ उलटी करके उन पर मिट्टी की मोटी तह थोप दीं और इन्हें ढालों की तरह आगे कर लिया। आस-पास की झाड़ियों में आग लगाकर धुएँ की आड़ कर ली। फिर एकाएक हमला बोल दिया। वे गढ़ी के नीचे ऐसी जगह इकट्ठे हो गये, जहाँ से ऊपरवाले उन्हें नहीं देख सकते थे।

इतनी तैयारी के बाद कबाइलियों ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारूद लगाकर गढ़ी की दीवारें उड़ा दीं और अंदर घुसने का रास्ता बना लिया।

उन्हें अंदर घुसते देख गुरमुखसिंह ने सिग्नल किया—"दुश्मन गढ़ी में घुस पड़ा है। हम सातों सैनिकों की गोली-बारूद खत्म हो चली है। हम आगे ज्यादा नहीं टिक सकते।" उधर से जवाब आया—"आखिरी दम तक जमे रहो।" और वे सातों सूरमा अपनी जगहों पर जमे रहे।

कबाइलियों ने उनके चारों ओर लकड़ियों और घास-फूस का ढेर जमा कर दिया और उसमें आग लगा दी। धू-धू कर आग की लपटें उठने लगीं।

फिर भी सात सिक्ख जवानों ने लड़ाई जारी रखी। अपनी रायफलों पर संगीनें चढ़ाकर वे आग में कूद पड़े और शत्रु से भिड़ गये। अकेला गुरमुखसिंह हीलियोग्राफर पर बैठा रहा। उसने जो अंतिम संदेश 'फ्लैश' किया, वह इस प्रकार था :

"लोग कहते हैं कि एक भाई दूसरे की बाँह होता है। आप लोग अगर भाई होते, तो हमारी मदद के लिए अब तक आ पहुँचे होते, या हमें गोला-बारूद की मदद ही भिजवाते। शायद ऐसा करना आपकी ताकत के बाहर था। दुश्मन ने सब सड़कों पर कब्जा कर रखा है। भाइयो, हमने मरकर दिखा दिया है कि भारतीय सिपाही अपनी आन को कैसे निभाता है। सच्चे गुरु की सेवा में हमने अपने प्राण निछावर किये हैं और अपने मुल्क और बादशाह को धोखा नहीं दिया। अलविदा प्यारे दोस्तो, हमेशा के लिए अलविदा! बस, अब आखिरी मंजिल की ओर हमारा कूच होता है। सत श्री अकाल!"

इसके बाद उसने कमांडेंट से सिग्नल-चौकी बंद करने की इजाजत माँगी, जो फोर्ट लाकहार्ट से तुरंत मिल गयी। तब बहादुर नौजवान मीनार से नीचे उतर आया। चेहरे पर उसके एक भी शिकन नहीं थी। बेझिझक उसने अपना सिग्नल-यंत्र चमड़े के खोल में बंद किया। फिर उसने रायफल उठायी और अपने बाकी छः साथियों को साथ लिये, शत्रुओं से जूझने के लिए निकल पड़ा।

क्षण-भर में लपलपाती लपटों ने उन सातों को अपने आलिंगन में ले लिया।

उनके शरीरों और सारागढ़ी की नाकेबंदी को भस्म करके कबाइलियों की लगायी वह आग बुझ गयी। लेकिन उन इक्कीस सूरमाओं ने उस दिन शहादत की जो अनबुझ आग सुलगायी, वह पूरे पैंसठ वर्ष बाद आज भी प्रत्येक भारतीय सैनिक और नागरिक को कर्तव्य-निष्ठा और पराक्रम का पथ दिखा रही है।

★

लोगों को मैं कहते सुनता हूँ, पश्चिम बर्लिन सैनिक दृष्टि से अरक्षणीय है—इसी प्रकार अरक्षणीय थे बुस्टोन और स्टालिनग्राड भी। कोई भी खतरनाक स्थान रक्षणीय हो जाता है, बशर्ते आदमी — बहादुर आदमी — उसे रक्षणीय बना दें। — प्रेसिडेंट केनेडी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिक्षा-मंत्र

बगदाद में जुनैद नाम के एक सूफी महात्मा रहते थे। बड़े पहुँचे हुए थे। उनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी।

एक दिन वे अपने घोड़े को पानी पिलाने के लिए उस पर सवार होकर चल पड़े। नदी के किनारे उन्हें जाना था। घर से कुछ दूर गये और घोड़े ने शहर के बाहर का रास्ता लिया। घोड़े को रोककर नदी की ओर ले जाने की उन्होंने बहुत कोशिश की; किंतु जानवर माना नहीं।

जुनैद ने सोचा—घोड़ा शरारती नहीं है। आज नहीं मानता, इसमें कोई भेद है। देखूं तो कहाँ जाता है। उन्होंने घोड़े को अपनी इच्छा के अनुसार जाने दिया। घोड़ा जंगल में गया और एक जगह पर ठहरा। वहाँ एक आदमी रोता था, जमीन पर सिर पटकता था।

जुनैद ने घोड़े पर से उतर कर उसके दुःख का कारण पूछा। पता चला कि वह आदमी ईश्वर-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते-करते निराश हो गया है और अपने दुर्दैव को कोस रहा है। जुनैद ने उसकी हालत पहचान ली। उसे योग्य समझ दी। साधना-क्रम बताया।

साधक को रास्ता मिल गया। उसने जुनैद के चरण छूकर धन्यवाद दिया और अपना रास्ता लिया।

जाते-जाते जुनैद ने कहा कि अगर फिर कभी कोई कठिनाई पैदा हो तो बगदाद में मेरे पास आना। मेरा नाम जुनैद है। किसी से भी पूछने पर मेरा घर बता देगा।

साधक ने हँसकर उत्तर दिया—"मुझे क्या गरज? मैं नास्तिक थोड़े हूँ!"

जुनैद ने आश्चर्य-चकित होकर साधक की ओर देखा। तब उसने उन्हें समझाया—"सच्ची कठिनाई पैदा होने पर भगवान् किसी-न-किसी को मेरे पास भेज ही देंगे। आज की ही बात देखिये। मैं थोड़े ही आपके पास आया था!. जिस दया से भगवान् ने आपको मेरे पास पहुँचा दिया, उस दया का साक्षात्कार हो जाने के बाद, अब मैं चिंता क्यों करूँ और आपका नाम भी याद क्यों रखूँ? भगवान् का नाम मेरे लिए बस है।"

['मंगल प्रभात' से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बकिंगहम प्रासाद की वह पार्टी

ऐतिहासिक गोलमेज परिषद् के समय घटी एक महत्वपूर्ण घटना का बम्बई के एक वरिष्ठ पत्रकार द्वारा रहस्योद्घाटन : 'भवन्स जर्नल' से साभार।

एन० शालिवटीश्वरन्

ब्रिटिश सरकार का यह रिवाज है कि जब उसकी ओर से कोई बड़ा सम्मेलन आदि होता है, तो किसी सामाजिक समारोह के द्वारा उसके साथ राजदम्पति का सम्बंध अवश्य जोड़ा जाता है। सम्मेलन के प्रतिनिधियों को राजदम्पति की ओर से मध्याह्न अथवा रात्रि के भोजन में अथवा शाम को चाय-पार्टी में निमंत्रित किया जाता है।

१९३१ में द्वितीय गोलमेज परिषद् के समय ब्रिटिश सरकार ने काफी विचार-विमर्श के बाद सम्राट् जार्ज पंचम को सलाह दी कि वे सम्मेलन के प्रतिनिधियों को बकिंगहम प्रासाद में शाम की पार्टी में निमंत्रित करें।

ऐसे अपराह्न-कालीन समारोहों में वेशभूषा का कोई नियम नहीं होता। अन्यथा शाही भोज तथा दूसरे समारोहों में दरबारी रीति-रिवाज का, वेशभूषा-सम्बंधी नियमों तथा औपचारिक रस्मों का बड़ा बंधन होता है। चूँकि गांधीजी तो लंदन की सड़कों पर भी वही घुटने तक की धोती व चप्पल पहने और कंधे पर एक गरम चादर ओढ़े घूम रहे थे, इसलिए ब्रिटिश सरकार को सायंकालीन पार्टी ही उपयुक्त जँची। वेशभूषा और दूसरे रिवाजों के बखेड़ों के बिना गांधीजी उसमें उपस्थित हो सकते थे।

समारोह की जिम्मेदारी थी सर सैम्युअल होर पर, जो उस समय भारत-मंत्री थे। उन्होंने इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा कि सब प्रतिनिधियों को यथासमय निमंत्रण-पत्र भेजे जायें और सब प्रतिनिधि निमंत्रण स्वीकार कर लें। राजमहल के व्यवस्थापक (लार्ड चेम्बरलेन) ने सब प्रतिनिधियों को निमंत्रण भेजे। गांधीजी और उनके साथियों को भी निमंत्रित किया गया।

सर सैम्युअल होर ने इस प्रसंग का यों वर्णन किया है – "पहली बैठक के तुरंत बाद बकिंगहम पैलेस में सब प्रतिनिधियों के लिए शाम की पार्टी होनेवाली थी। क्या गांधीजी उसमें आयेंगे ? अगर गांधीजी आना स्वीकार कर लें, तो सम्राट् जार्ज पंचम सविनय नियमभंग आंदोलन के इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नता का किस प्रकार स्वागत करेंगे ? दोनों ही बातें बड़ी संदिग्ध थीं । दूसरी बात का उत्तर पाने के लिए मैंने सम्राट् से मुलाकात का समय माँगा । उनकी प्रतिक्रिया लगभग वैसी ही थी, जिसकी मुझे उम्मीद थी । 'क्या ? मैं इस बागी फकीर को राजमहल में बुलाऊँ, जो मेरे वफादार अफसरों पर हमले करा रहा है ?'

"पर यह प्रथम आवेश-भर था, अंतिम उत्तर नहीं । दिल का गुबार निकाल लेने के बाद, वे पार्टी की व्यवस्था के बारे में पूछ-ताछ करने लगे । यह तो वे शुरू से ही मानकर चले कि पार्टी में गांधीजी भी बुलाये जायेंगे । मुलाकात के अंत-अंत में जाकर उनका रोष फिर लौट-सा आया और वे 'बेसलीके के कपड़ों और नंगी टाँगोंवाले' इस 'छोटे आदमी' को राज-महल में बुलाने का विरोध करने लगे । अंत में वे शांत हुए; और गाँधीजी को निमंत्रण-पत्र भेज दिया गया ।"

गांधीजी के सिवा सभी प्रतिनिधियों ने तुरंत निमंत्रण स्वीकार कर लिया । गांधीजी की ओर से कई दिन तक कोई उत्तर नहीं आया । सर सैम्युअल होर चिंतित हो उठे और उन्होंने अपने पार्लमेंटरी सेक्रेटरी लार्ड ब्रेबर्न को श्री रंगस्वामी अय्यंगार के पास यह पता लगाने के लिए भेजा कि गांधीजी ने निमंत्रण की पहुँच की स्वीकृति तक नहीं दी, इसका क्या कारण है । (श्री ए० रंगस्वामी अय्यंगार गोलमेज परिषद् में गांधीजी के राजनीतिक सेक्रेटरी थे ।) शायद साथ ही सर सैम्युअल ने भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड हैलिफैक्स से भी प्रार्थना की कि वे जाकर गांधीजी को समारोह में उपस्थित होने के लिए मना लें । लार्ड हैलिफैक्स तब वर्ड लार्ड अर्विन कहलाते थे । उन्हीं की खातिर गांधीजी ने इंग्लैंड आना स्वीकार किया था।

लार्ड चेम्बरलेन की ओर से निमंत्रण मिलना राजकीय आदेश माना जाता है। ब्रिटिश साम्राज्य का कोई भी प्रजाजन उसे मानने से इन्कार नहीं कर सकता । ऐसा करना राजा का अपमान समझा जायेगा। ब्रिटिश इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ।

गांधीजी बड़े असमंजस में पड़ गये। राजदम्पति के प्रति मन में उचित मान होते हुए भी उनकी यह साफ राय थी कि बकिंगहम महल के ये स्वागत-समारोह कोई खास महत्व नहीं रखते । "कोई अर्थ है इन समारोहों का ? क्या राजदम्पति इसमें लोगों से सचमुच मिलते हैं ? क्या वे कोई काम की बात करते हैं, या कर सकते हैं ? क्या यह निरा स्वाँग नहीं है ?"

यदि ये समारोह इतने निरर्थक है, तो क्या वे उसमें अनुपस्थित नहीं रह सकते ?

लेकिन गांधीजी का यह भी कहना था- "मैं बड़े असमंजस में हूँ । मैं यहाँ इस देश का अतिथि बनकर आया हूँ, अपने देश का प्रतिनिधि बनकर नहीं । इसलिए मुझे बहुत सोच-समझकर कदम रखना होगा । क्या बताऊँ, मैं कितना फूंक-फूंककर कदम रख रहा हूँ ! मेरे सामने नैतिक सवाल है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत में जो कुछ हो रहा है, उससे मैं इतना दुःखी और पीड़ित हूँ कि ऐसे समारोहों में जाने का मेरा मन नहीं होता। अगर मैं निजी हैसियत से यहाँ आया होता, तो बिना किसी झिझक के निर्णय कर लेता। लेकिन मैं तो अतिथि हूँ; इसलिए कोई भी कदम उतावली में नहीं उठा सकता। मुझे हर क्षण कानून की दृष्टि से नहीं, बल्कि नैतिकता की दृष्टि से सोचना होगा।"

उन्हें पार्टी में जाना चाहिये, यह निर्णय नैतिकता ने ही किया। उन्होंने लार्ड चेम्बरलेन को एक पत्र द्वारा सूचित किया कि वे और उनके साथी अपनी "सदा की वेशभूषा में" समारोह में उपस्थित होंगे।

पार्टी का दिन आ पहुँचा। उस दिन आकाश में बदली छायी थी। सूरज का दर्शन दुर्लभ था। कुछ-कुछ बूँदा-बाँदी भी हो रही थी। फिर भी लंदन के नागरिक बकिंगहम प्रासाद के मुख्य द्वार पर बड़ी संख्या में आ जुटे थे गांधीजी को देखने। सभी अतिथि ४ बजने से पंद्रह मिनिट पहले ही आ चुके थे। गांधीजी और उनके साथियों की प्रतीक्षा की जा रही थी। देखें अब क्या होता है?—यह भाव सबके चेहरों पर था।

४ बजने से ठीक पाँच मिनिट पहले दो सी० आई० डी० अफसर, जो इस प्रवास में सर्वत्र अंगरक्षक के रूप में गांधीजी के साथ रहते थे, प्रासाद के द्वार पर आये। आधे मिनिट पीछे ही गांधीजी भी आ पहुँचे। पंडित मदनमोहन मालवीय, सरोजिनी नायडू और महादेव देसाई उनके साथ थे।

शाही मेजबान, फकीर मेहमान

लंदन के एक दैनिक पत्र में छपा व्यंग्य-चित्र

ज्यों ही वे सब राजद्वार में प्रविष्ट हुए, जनता ने उत्साह से जयजयकार किया। ठीक चार बजे गांधीजी कार से उतरे। उनकी बाकायदा अगवानी की गयी और फिर उन्हें विशाल सभाकक्ष में ले जाया गया, जहाँ अन्य अतिथि पहले से एकत्र थे।

एक या डेढ़ मिनिट में राजदम्पति पीछे के एक कमरे से सभाकक्ष में प्रविष्ट हुए। सबकी दृष्टि उनकी ओर मुड़ गयी। झुककर रस्मी अभिवादन करने के बाद राजदम्पति अतिथियों के बीच घूम-घूमकर सबसे मिलने लगे। सर सैम्युअल होर ने कुछ चुनिंदा प्रतिनिधियों का सम्राट् से परिचय कराया। सम्राट् ने सभी से प्रसन्नतापूर्वक कुशल-क्षेम की एक-दो बातें कीं। जिन लोगों का परिचय कराया जाना था, उनके कार्यों की संक्षिप्त जानकारी सम्राट् को पहले ही दे दी गयी थी।

अब सर सैम्युअल होर ने गांधीजी का परिचय कराया। सम्राट् ने गांधीजी का अभिवादन किया और दक्षिण अफ्रीका में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोअर-युद्ध के समय गांधीजी ने स्वयंसेवकों का शुश्रूषा-दल बनाकर जो लोकसेवा की थी, उसकी सराहना की। फिर १९०६ में जुलू-विद्रोह के समय में गांधीजी ने जो स्ट्रेचरवाही दल संघटित किया था और उस सेवा के उपलक्ष्य में उन्हें जो पदक दिया गया था, उसकी चर्चा की। सम्राट् ने यह भी उल्लेख किया कि १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ जाने पर लंदन में गांधीजी द्वारा स्थापित भारतीय विद्यार्थियों के स्वयंसेवक शुश्रूषा-दल ने महत्वपूर्ण सेवा की थी और गांधीजी को उनकी राज-भक्तिपूर्ण सेवाओं के लिए 'कैसरे हिन्द' स्वर्णपदक प्रदान किया गया था। १९१७ में लार्ड चेम्सफोर्ड की अपील पर गांधीजी ने खेडा जिले में सैनिकों की भरती के लिए जो काम किया था, उसका भी सम्राट् जिक्र करना नहीं भूले।

फिर अचानक सम्राट् जार्ज पंचम की नजर गांधीजी की नंगी टाँगों पर जम गयी और वे एकदम भड़क उठे। उनकी आँखें क्रोध से लाल हो गयीं, चेहरा तमतमा उठा। वे गांधीजी से पूछने लगे—" बताइये, भारत में मेरी सरकार के खिलाफ आपने असहयोग कैसे छेड़ा ? जब मेरा लड़का १९२०-२१ में भारत गया, तो आपने उसका बायकाट क्यों कराया ? आपने मेरे लड़के के विरुद्ध — हाँ मेरे लड़के के विरुद्ध प्रदर्शन कराये। ऐसी राजद्रोह-पूर्ण हरकतें बर्दाश्त नहीं की जायेंगी। राज-परिवार के लोगों का ऐसा अपमान बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। मेरी सरकार के अफसरों का दिन-दहाड़े खून किया जा रहा है ! यह सब बलवा नहीं चलने दिया जायेगा। अगर वफादार अफसरों की खूनरेजी खराबी नहीं रुकी, तो आपकी कांग्रेस के साथ सख्ती से काम लिया जायेगा। उसे कुचल दिया जायेगा। सम्राट् की सरकार चलती रहनी चाहिये और चलती रहेगी। इसका ध्यान रखिये।"

सर सैम्युअल होर सम्राट् के इन शब्दों पर बड़े व्यग्र हो उठे। अब गांधीजी इसका न जाने क्या उत्तर दे बैठें — उन्हें चिंता थी।

लेकिन गांधीजी बिलकुल शांत और संयत रहे। कांग्रेस पर सरकारी अफसरों की हत्या की तोहमत लगायी गयी, यह बात भी उन्हें विक्षुब्ध नहीं कर सकी। जार्ज पंचम के क्रोध-भरे शब्दों के बावजूद वे सर्वथा अविचल रहे। बड़ी ही शांति से उन्होंने उत्तर दिया—"श्रीमन्! आपके महल में, आपका आतिथ्य स्वीकार करने के बाद मुझे आपके साथ बहस में नहीं पड़ना चाहिये।"

उनकी यह शांति और अविचलता देख सर सैम्युअल ने राहत की साँस ली।

गांधीजी और सम्राट् जार्ज पंचम की इस ऐतिहासिक भेंट का वर्णन करते हुए अंत में सैम्युअल होर ने लिखा है—" एक ईमानदार राजा, दूसरा महान् राजनयिक! मैंने मन-ही-मन सोचा — असांसारिक लोगों में भी कभी-कभी कैसी गजब की सांसारिक व्यवहार-कुशलता होती है!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जर्मनी का हँसी-विनोद

जर्मन जाति सिरदर्द पैदा करनेवाले दार्शनिक सिद्धांत घड़ना और दिल दहला देनेवाले युद्ध लड़ना ही नहीं, हँसना-हँसाना भी जानती है। जर्मन विनोद के ये उदाहरण नरेंद्र नायक ने संकलित किये हैं।

तब बर्लिन में खाने-पीने की बड़ी तंगी थी और खाने-पीने की चीजों की दुकानों के आगे लोगों की लम्बी कतारें लगी होती थीं। एक शाम को एक दुकान पर बोर्ड लगा कि ताजा मक्खन आया है। अगले दिन सुबह छः बजे ही दुकान पर लम्बी कतार लग गयी।

ज्यों-ज्यों दुकान खुलने का समय नजदीक आता गया, लोग उत्तेजित होने लगे। इतने में सफेद बालोंवाला एक नाटा-मोटा आदमी आया और दूसरों को धक्का देता आगे बढ़ने लगा। लोगों को गुस्सा आ गया

यह ले, वह ले

एक ने कहा—"आपको शर्म आनी चाहिये। आप कतार में पीछे खड़े हो जाइये।" एक नवयुवती उसे धक्का देते हुए बोली—"जल्दी यहाँ से हट जाइये, नहीं तो मैं पुलिस को बुलाती हूँ।"

फिर भी वह गोल-मटोल आदमी आगे बढ़ता ही गया। अब तो सब तरफ से उस पर गालियाँ बरसने लगीं। पर वह दृढ़ निश्चय के साथ कंधे हिलाता हुआ बोला—"ठीक, जैसी आपकी मर्जी। अगर आप मुझे आगे नहीं जाने देंगे, तो मैं भी दरवाजा नहीं खोलूँगा। मक्खन बासी होने तक आप भले ही यहाँ खड़े रहिये।"

यह आदमी दुकान का मालिक था।

× × ×

एक फ्राँसीसी घुड़सवार एक सँकरे पुल पर आया। सामने एक अंग्रेज घुड़सवार भी आ पहुँचा। दोनों पुल के बीच में आकर रुक गये। पुल इतना सँकरा था कि दोनों एक साथ निकल नहीं सकते थे। कोई दूसरे को रास्ता भी नहीं देना चाहता था। अंग्रेज बोला—"अंग्रेज कभी फ्राँसीसी के रास्ते से हटना नहीं जानता।" फ्राँसीसी ने कहा—"तो मेरा घोड़ा भी अंग्रेज है। आप ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने घोड़े को हटा लीजिये। वैसे भी मेरा घोड़ा आपके घोड़े से उम्र में बड़ा है। यह चौदहवें लुई के राज्यकाल में केफर लोज की लड़ाई में लड़ा था।"

अंग्रेज पर कुछ असर न पड़ा। वह शांति-पूर्वक बोला—"मेरे पास आज का अखबार है। आप जब तक रास्ता न देंगे, तब तक मैं अखबार पढ़ लूँगा।" और वह जेब से अखबार निकालकर पढ़ने लगा। घंटे-भर पढ़ने के बाद जब वह उसे मोड़कर फिर जेब के हवाले करने लगा, तब फ्रांसीसी बोला—"अंग्रेज साहब, जब तक आप हटें, मेहर-बानी करके अपना अखबार मुझे भी पढ़ लेने दीजिये।"

प्रतिद्वंद्वी का यह धीरज देखकर अंग्रेज बोला—"जनाब, आप जीत गये।" और उसने फ्रांसीसी को रास्ता दे दिया।

× × ×

एक छोटे शहर के होटल में अच्छे कपड़े पहने एक आदमी आया। उसने बैरे से कहा—"मेरे पैसे से सूप आये, तो ले आओ।" फिर उसने इसी प्रकार "अपने पैसे" से मांस मँगाया। मालिक ने पूछा—"क्या शराब भी लेंगे?" उसने कहा—"जरूर, अगर मैं अपने पैसों से पा सकूँ तो!" जब वह पेट-भर खा चुका, तो जेब में से एक घिसी हुई चवन्नी निकालकर बोला—"लीजिये।"

होटल मालिक ने कहा—"खाना तो आपने दो रुपये का खाया और..." ग्राहक बोला—"मैंने आपसे दो रुपये का नहीं, बल्कि अपने पैसों का खाना मँगाया था। इससे ज्यादा पैसे मेरे पास नहीं हैं। आपने मुझे ज्यादा दिया, तो उसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।"

थोड़ी देर सोचने के बाद मालिक बोला—"आप तो पूरे चार-सौ-बीस हैं। खैर, मैं आपको यह खाना मुफ्त देता हूँ। लीजिये यह चवन्नी। अब कृपया मेरे पड़ोसी के होटल में जाइये और वहाँ भी ऐसा ही कीजिये।"

दोनों होटलवाले एक-दूसरे को फूटी आँख न सुहाते थे। ग्राहक ने चवन्नी उठा ली, सलाम बजाया और दरवाजे की तरफ जाते-जाते कहा—"पड़ोसी के होटल में मैं पहले ही हो आया हूँ। उसी ने मुझे आपके पास भेजा था।"

× × ×

सेक्स-अपील यहाँ भी

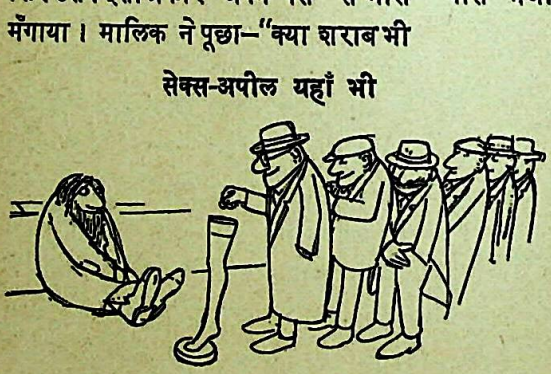

प्रिंस बिस्मार्क बहुत पेटू थे। कभी-कभी इतना अधिक खा जाते थे कि उनका पेट जवाब दे देता था। एक दिन वे बारह अंडे एक साथ खा गये और डाक्टर को बुलाना पड़ा। बिस्मार्क स्वभाव से बड़े अधीर और असहिष्णु थे। डाक्टर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने जब उनकी तकलीफ के बारे में विस्तार से पूछना शुरू किया, तो वे बोले –"डाक्टर, ये बेकार के सवाल न पूछिये। अपना काम कीजिये।" डाक्टर भी कम नहीं था, बोल उठा–"अगर आप चाहें कि डाक्टर कुछ न पूछे, तो ढोरों के डाक्टर को बुलवा लीजिये। वह आपसे बिना कुछ पूछे आपको चंगा कर देगा।"

× × ×

नायगरा के जल-प्रपात का पथ-प्रदर्शक–"महिलाओ और भद्र पुरुषो, यह दुनिया का सबसे बड़ा झरना है। यदि महिलाएँ कृपया थोड़ी देर के लिए चुप हो जायें, तो आप सब गिरती हुई जलराशि की भयंकर गर्जना सुन सकेंगे।"

× × ×

औषध-विज्ञान के प्रसिद्ध प्रोफेसर ने एक अत्यंत दुर्बोध वैज्ञानिक पुस्तक जर्मन भाषा में प्रकाशित की। विख्यात चिकित्साशास्त्री रुडाल्फ विर्शो से किसी ने प्रश्न किया–"प्रोफेसर साहब, आपकी इस पुस्तक के बारे में क्या राय है?"

विर्शो बोले–"अद्भुत पुस्तक है! जर्मन भाषा में इसका अनुवाद जरूर होना चाहिये।"

× × ×

"कार्ल के निमोनिया का क्या हाल है?"

"उसे अस्पताल में ज्यादा रहना पड़ेगा।"

"क्या उसके डाक्टर ऐसा कहते थे?"

"नहीं–पर मैंने उसकी नर्स को देखा है।"

× × ×

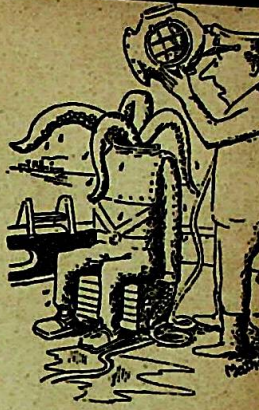

गोताखोर

एक अनुभवी सज्जन रेल के डिब्बे में आये। शीतकाल के दिन थे। उन्होंने आते ही खिड़की बंद कर दी और समझाने लग गये – "ऐसी कातिल हवा गले, नाक और कानों के लिए बड़ी खतरनाक होती है।" फिर वे बोले–"हाँ हमें दूषित हवा के निकलने के रास्ते का भी ध्यान रखना चाहिये।"

फिर उन्होंने पूछा–"खतरे की जंजीर कहाँ है?" जब जंजीर देख ली, तब कहीं उन्हें तसल्ली हुई और वे जेब में से रूमाल निकाल उसे सीट पर बिछाकर बैठ गये फिर दीवारों और फर्श की ओर देखने लगे।

"देखा," मुस्कराते हुए उन्होंने नीचे से कुछ उठाया–"आप में से किसी का टिकट तो नहीं खो गया?"

सबके हाथ अपनी जेबों पर गये। सबके पास अपने टिकट थे।

"ठीक, तो इस टिकट को नष्ट कर देना चाहिये, जिससे कोई इसका दुरुपयोग न कर सके।" उन्होंने टुकड़े-टुकड़े करके टिकट बाहर फेंक दिया।

थोड़ी देर बाद टिकट-चेकर आया। सबने अपने टिकट दिखाये। ये अनुभवी सज्जन अपना टिकट न दिखा सके। टिकट तो कभी का टुकड़े होकर उड़ चुका था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मीचंद्र की लकीरें

"ताजगी और ओज"—प्रतिभा की यह परिभाषा बोरिस पास्तरनाक ने की है। उसी के संदर्भ में एक उदीयमान भारतीय चित्रकार की कला का यह परिचय प्रस्तुत किया गया है।

डा० सुधीर

भारतीय शिल्प और चित्रकला पश्चिम की आधुनिकतम शैलियों से अत्यधिक प्रभावित होकर भी अपनी मूलभूत विशेषताएँ कायम रखे हुए है। कुछ इने-गिने अतियथार्थवादियों को छोड़कर, अन्य भारतीय कलाकारों की कृतियों के मूल स्वरों में हमारी बहुमुखी एवं सम्पन्न संस्कृति ही मुखर होती है।

लक्ष्मीचंद्र इसी वर्ग के कलाकारों में से एक हैं। उनकी कला में भारतीय संस्कृति की, नूतन तत्वों को अपनाने और आत्मसात् करने की शक्ति का परिचय मिलता है। वे मानते हैं कि कला स्वभाव से ही गतिशील है; क्योंकि मानव स्वयं सतत विकासोन्मुख है और कला उसके विकास की चरम अभिव्यक्ति है।

गत वर्ष लंदन आर्ट गैलरी में लक्ष्मीचंद्र के पैंतीस चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ब्रिटेन के प्रसिद्ध कलाविज्ञ ब्रसेल ने यह कहा था – "लक्ष्मीचंद्र की लकीरों में सौंदर्य भरा पड़ा है।" उनकी लकीरों का महत्व इसी में है कि वे हमारे चिर-परिचित भावों का युगानुकूल अभिव्यंजन करती हैं।

लोक-परम्परा की झलक भी उनके चित्रों में मिलती है। 'वसंत में' उनका एक सफल चित्र है। इस चित्र में नृत्य की सहज-सुलभ मुद्राओं का हृदय-हारी अंकन दर्शनीय है। यह नृत्य-चित्र किसी शैली-विशेष से सम्बंधित नहीं – न मणिपुरी से, न कत्थक या कथकली से। हाँ, लोकनृत्य की एक मनोहारी झाँकी जरूर प्रस्तुत करता है।

ढोल की थाप पर प्रस्तुत ये नयनाभिराम मुद्राएँ अपनी सहजता में

वसंत में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्शक को लोक-जीवन की सादगी और अल्हड़पन का रसास्वाद कराती हैं ।

लक्ष्मीचंद्र उस संधि-स्थल के चितेरे हैं, जो विज्ञान तथा आलंकारिक सौंदर्य के मध्य बिंदु पर स्थित है । उनकी तूलिका ज्यामिति की नीरस आकृतियों से उस स्थल पर पहुँचती है, जहाँ वे रसपूर्ण बन जाती हैं ।

नारी हमेशा लक्ष्मीचंद्र के सामने एक प्रश्न चिह्न के रूप में रही है । वैसे उनके विचारों में नारी के तीन रूप हैं । वह कन्या होकर मानव के सत्य को, पत्नी होकर उसके सुंदर को, माँ होकर शिव को रूप देती है ।

पुरुष में विकार है, संहार है । नारी में प्यार है, उपहार है । नारी कोमलता की प्रतिमा है, पुरुष कठोरता का प्रतिरूप । नारी जिसे चाहती है, उसे आत्मसमर्पण कर देती है; पुरुष जिसे प्रेम करता है, उस पर अधिकार माँगता है । यही सत्य उनके चित्र 'नारी और पुरुष' में निरूपित है ।

लक्ष्मीचंद्र के पात्र उन मानवों के यथार्थ रूप हैं, जो एक साथ विकास के भिन्न स्तरों तथा विभिन्न स्थलों पर रहते हैं । मानव के अवचेतन में युग-युग से संचित संस्कारों से वे नाता नहीं तोड़ सकते । उनकी कला इसी द्वैत-भित्ति पर सृजन कर रही है ।

रेखाओं द्वारा आलंकारिक आलेखन करने में लक्ष्मीचंद्र अधिक सफल हुए हैं । उनके चित्रों में निखार है और टेक्स्चर का बल है । हाल में फिलिपाइन्स में हुई चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय चित्र-प्रदर्शिनी में लक्ष्मीचंद्र की तूलिका के इन गुणों को सभी ने सराहा ।

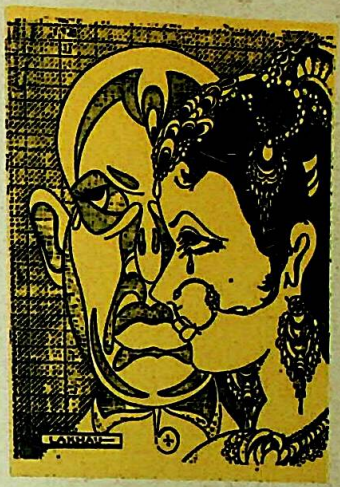

नारी और पुरुष

मद्रास कला अकादमी से पुरस्कृत 'विश्वशांति का सूत्र' में लकीरों ने स्थूल होकर पक्षियों का रूप ले लिया है । यह इनका बहुप्रशंसित चित्र है—भाव और कला दोनों दृष्टियों से सफल ।

कलाकार लक्ष्मीचंद्र जीवन की यथार्थताओं से परिचित हैं । साथ ही उनकी लकीरों में कलात्मक परिशोधन स्पष्ट रूप से लक्षित है । ऐसा प्रतीत होता है, मानो समग्र चित्र एक रागिनी है, जो किसी रहस्य-लोक की अस्फुट वेदना को संगीतात्मक गहनता से मुखरित कर देती है ।

उनकी कला के पीछे उनका गतिशील व्यक्तित्व है, जो स्वस्थ, सबल, संवेदनशील तथा चेतनापूर्ण है । यही कारण है कि उनकी कला से गम्भीर आलोचक से लेकर साधारण दर्शक तक सभी आकर्षित होते हैं ।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दुर्लभ विभूति :

नाथाजी लाड

एस० ए० कुलकर्णी

"ये बच्चे, यह बोर्डिंग, यह पाठशाला, यही मेरा संसार है। स्वयं अपने घर से मेरा अतिथि-जैसा सम्बंध है और यह बात मेरे कुटुम्बी जन भी जानते हैं।" ये शब्द हैं श्री नाथाजी बाबूराव उर्फ दादा साहब लाड के, जिन्हें सार्वजनिक सेवा की जीवंत मूर्ति कहना अतिशयोक्ति न होगी।

जिन परिस्थितियों के कारण वे स्वयं पर्याप्त शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके, उन परिस्थितियों से पीड़ित विद्यार्थियों के लिए विद्याभ्यास का मार्ग सरल बनाना उनके जीवन का व्रत है। बच्चे भगवान् की बगिया के फूल हैं – यह उनकी दृढ़ आस्था है; और इन फूलों को पूर्ण सौरभ-मय विकास का अवसर दिलाने के लिए उन्होंने गले में झोली डाल रखी है। गाँव-गाँव घूमकर वे एक-एक पैसा, पाव-आधा पाव अन्न तक प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेते हैं। जो कुछ कमी रह जाती है, उसे अपने घर से पूरा करते हैं और सैकड़ों साधन-हीन विद्यार्थियों के निवास, भोजन तथा पुस्तकों की व्यवस्था करते हैं। इस मंगल-कार्य में जो भी सहायता मिलती है, उसमें वे छोटे-बड़े का तारतम्य नहीं करते।

दादा साहब के दाता पाँच रुपये देनेवाले भी हैं। फसल कटकर खलिहान में आने पर एक बोरा अन्न दादा साहब के नाम अलग रख देनेवाले अनेक किसान इस प्रदेश में हैं।

दादा साहब का जन्म २ जनवरी १९[illegible] को महाराष्ट्र के कुंडल नामक स्थान में हुआ था। शिक्षा केवल अंग्रेजी पाँचवीं श्रेणी तक हो पायी। गाँव में आगे पढ़ने की व्यवस्था नहीं थी और शहर जाकर पढ़ने के लिए आर्थिक साधन पास न थे। पिताजी बड़े भोले आदमी थे। खेती और घर की देखभाल का सारा भार माँ के सिर था। सो शिक्षा की ओर से राम-राम कर सत्रह साल की उम्र में उन्होंने सिर्फ स्कर छापाखाने में नौकरी कर ली। संघ-टन-कुशलता व नेतृत्व-गुण उनमें जन्म से ही थे। इस कारण शीघ्र ही वे छापाखाने में विक्रय-विभाग के प्रमुख बन गये। [illegible] पदवीधारी कर्मचारी उनके मातहत काम करते थे।

देशभक्ति और गांधीवादी विचारों में वे बहुत छोटी उम्र में ही दीक्षित हो गये थे। स्वतंत्रता-संग्राम के वे [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन ! सूत कातना, खादी पहनना, निर्व्यसन जीवन—ये सब व्रत वे दृढ़तापूर्वक निभा रहे थे। ऐसे निष्ठावान् कार्यकर्ता का मन १९४२ की क्रांति में भला नौकरी में कैसे लग पाता !

त्यागपत्र देकर वे स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़े। सातारा जिले में प्रचंड और उग्र आंदोलन छिड़ा हुआ था। अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध वहाँ राष्ट्रवादियों की "पत्री सरकार" कायम हो गयी थी। नाना पाटील, अच्युत पटवर्धन, यशवंतराव चव्हाण इसके अगुवा थे। दादा साहब उनके कंधे-से-कंधा मिलाकर काम में जुट पड़े। गोरी सरकार ने उन्हें पकड़ने के लिए पाँच हजार रुपये पुरस्कार की घोषणा की। लेकिन कोई उन्हें पकड़वाने के लिए तैयार नहीं था।

दादासाहब लाड

महाराष्ट्र के कोने-कोने से सातारा के आंदोलन को आर्थिक सहायता मिली थी, जिसका काफी बड़ा हिस्सा दादा साहब के हाथ में रहता था। इस धन के पाई-पाई का हिसाब उन्होंने अपने नेताओं को दिया। उन दिनों ब्रिटिश सत्ता से लोहा लेने के साथ-साथ डाकू, लुटेरों और गुंडों आदि समाज-विरोधी तत्वों को दबाने का साहसपूर्ण कार्य भी उन्होंने किया। तीन वर्ष भूमिगत रहने के बाद १९४५ में वे प्रकट हुए।

संघर्ष और नैतिक साहस के उन दिनों की याद आने पर वे ठंडी साँस लेकर कहने लगते हैं—"चला गया वह जोश ! चली गयी वह आदर्शनिष्ठा और निःस्वार्थ भावना ! आज तो सत्ता-लोलुपता, वैमनस्य, स्वार्थ, मौका-परस्ती और गुटबंदी-भर शेष रह गयी है।"

स्वतंत्रता मिलने के बाद राजनीतिक जीवन में लोभ और सिद्धांतहीनता ने जिस तेजी से प्रवेश किया, उससे खिन्न होकर दादा साहब ने, "दुर्बुद्धि तो मना ! कदा निपजो नारायणा"—इस संत-वचन के अनुसार राजनीति से संन्यास ही ले लिया।

किंतु अवसाद ने उन्हें अकर्मण्य नहीं बनाया। वे अपने मनोनुकूल कार्यक्षेत्र की ओर मुड़ गये। पहले भी उन्होंने कुंडल में सात वर्ष तक रात्रिकालीन प्रौढ़ पाठशाला चलायी थी। कुंडल में माध्यमिक पाठशाला नहीं थी। इस अभाव की पूर्ति के के लिए उन्होंने नब्बे हजार रुपयों के खर्च से बने १३ कमरों में पाठशाला स्थापित करायी।

१९४८ में उन्होंने 'नाना पाटील बोर्डिंग' शुरू किया। कुंडल-आटपाडी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औंध में वोर्डिंग के लिए २ लाख का ट्रस्ट बनाया। शिक्षा-प्राप्ति के लिए विदेश जानेवाले विद्यार्थियों के सहायतार्थ ३५ हजार का एक और ट्रस्ट भी खोला। 'महात्मा गांधी एजुकेशन सोसायटी' संघटित कर कुंडल का हाईस्कूल उसके मातहत कर दिया। आज इस संस्था की सम्पत्ति ३ लाख की है। 'नाना पाटील वोर्डिंग' में विभिन्न जातियों के १०५ विद्यार्थी हैं, जिनमें ६० हरिजन हैं।

गरीब छात्रों को कालेज शिक्षा सुलभ कराने के लिए उन्होंने १९५३ में सांगली में 'महाराष्ट्र वसति-गृह' की स्थापना की। इस समय उसमें ७२ विद्यार्थी हैं, जिनमें अधिकांश हरिजन हैं। दो-तीन साल पूर्व ही उन्होंने 'विठाबाई चह्वाण वोर्डिंग' नामक संस्था लड़कियों के लिए स्थापित की है। उसमें भी सभी जातियों की लड़कियाँ हैं। सांगली में माध्यमिक रात्रिकालीन पाठशाला वे बहुत वर्षों से चला रहे हैं। मिरज तालुके में कवठे पिरान में उन्होंने हाइस्कूल खुलवाया है।

उनका कार्यक्षेत्र निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। लेकिन वे उन कार्यकर्ताओं में नहीं, जो संस्थाओं की स्थापना कर उतने से ही संतुष्ट हो जाते हैं। वे उनकी अभिवृद्धि करने के लिए अहोरात्र [illegible] करते हैं; उनके हिसाब-किताब की [illegible] बड़ी तत्परता से करते हैं। तभी [illegible] इतनी साख है कि 'महाराष्ट्र वसति-[illegible] की मुहर होने पर हजारों का माल [illegible] अनुपस्थिति में भी बाजार से आसानी [illegible] मिल जाता है।

वोर्डिंग में प्रवेश पाने के लिए कोई [illegible] नहीं। महीने में केवल पाँच रुपये देकर [illegible] विद्यार्थी भी वहाँ हैं। शिक्षण समाप्त [illegible] चले जाने के बाद भी विद्यार्थी संस्था [illegible] अपना 'घर' समझते हैं और जब नौकरी [illegible] धंधे से लग जाते हैं, तो नियमित रूप [illegible] प्रतिमास कुछ-न-कुछ 'घर' भेजते [illegible] संस्था के उत्सवों में वे बिलानागा उपस्थित होकर सेवा-कार्य करते हैं। और जब [illegible] साहब स्नेहपूर्वक उनकी पीठ पर हाथ फिराते हैं, उनकी बाँछें खिल जाती हैं।

दादा साहब सांगली में एक नये ढंग का पब्लिक स्कूल खोलना चाहते हैं। [illegible] अंग्रेजी पब्लिक स्कूलों की तरह [illegible] जातता के दर्प की नींव पर नहीं, [illegible] 'सादा जीवन उच्च विचार' के [illegible] मंत्र पर विद्यार्थियों का चरित्र-निर्माण करेगा। इस स्कूल की शिक्षा में [illegible] शिक्षा का प्रमुख स्थान होगा। *

रुबाई

हरचंद यह बात तुमसे कहने की नहीं।
कहता हूँ कि मुँह पर आयी रहने की नहीं॥
जाहिर में सफाई और दिल में कीना—
उलटी गंगा बहाओ, बहने की नहीं। —असर लखनवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रक्तप्रेमी रोग हेमोफीलिया

प्रेमानंद चंदोला

स्पेन का युवराज प्रिंस डान अलफान्सो १९३८ में फ्लोरिडा (अमरीका) में एक मामूली मोटर-दुर्घटना में घायल हो गया। चोट भी उसे मामूली-सी ही लगी। लेकिन घाव से खून का बहना बंद ही नहीं हुआ और कुछ ही घंटों में उसकी मृत्यु हो गयी। उसके चार साल पहले लगभग इसी प्रकार उसके छोटे भाई प्रिंस डान गोनसाले का देहांत हुआ था। उसके भी कई दशक पूर्व रूस के अंतिम जार निकलस द्वितीय का पुत्र भी इसी प्रकार अत्यधिक रक्तस्राव के कारण मर गया था। चिकित्साशास्त्र की भाषा में ये सब मौतें हेमोफीलिया से हुई थीं।

हेमोफीलिया को सामान्यतः 'राजाओं का रोग' कहा जाता है। यूरोप के अनेक राजघरानों में यह रोग पीढ़ियों से चला आ रहा है। ऐसा मानते हैं कि आस्ट्रिया के हेप्सबर्ग राजघराने से यह रोग दहेज के रूप में दूसरे राजकुलों में पहुँचा। इसीलिए इसका नाम 'हेप्सबर्ग का अभिशाप' (हेप्सबर्गन स्कर्ज) भी है।

लेकिन इस रोग का एकमात्र भंडार हेप्सबर्ग-परिवार ही नहीं था। ब्रिटेन का राजकुल भी इस रोग के प्रसार में सहायक हुआ है। महारानी विक्टोरिया के सबसे छोटे पुत्र लियोपोल्ड की मृत्यु ३२ वर्ष की अवस्था में हेमोफीलिया से हुई थी। लियोपोल्ड की बहनें एलिस और बिएट्रिस अपने साथ यह रोग अपने श्वसुर-कुलों में ले गयीं। इनमें से राजकुमारी बिएट्रिस का विवाह स्पेन के राजा से हुआ। युवराज डान अलफान्सो इन्हीं का पोता था।

'हेमोफीलिया' शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'हेमो' और 'फीलोस' इन दो शब्दों से हुई है। इसका शब्दार्थ हुआ 'रक्तप्रिय रोग'। इस रोग में तनिक-सी चोट अथवा खरोंच लगने, कटने या अन्य संघातों से रक्तस्राव शुरू होने पर खून बहुत ही धीरे-धीरे जमता है, या बिलकुल जमता ही नहीं। फलस्वरूप खून लगातार बहता चला जाता है और रोगी की मृत्यु हो जाती है।

वैसे यह रक्तपिपासु रोग उग्र रूप में बहुत कम होता है। फिर भी हेमोफीलिया के विविध प्रकार के रोगी हजारों की संख्या में पाये जाते हैं। हल्के रूप में होने पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वयं रोगी को भी इसका पता नहीं चलता। और कुछ रोगी रोगसह होते हैं, उन पर रोग का कोई कुप्रभाव नहीं पड़ता ।

यह रोग वंशानुगामी होता है । इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि स्त्रियाँ इसकी वाहक होती हैं । वे स्वयं तो रोग-सह होती हैं, लेकिन कयामत बरपा कर देती हैं पुरुष जाति पर । माता अपने पुत्र को विरासत में यह रोग देती हैं । पुरुष रोगी के जितने भी पुत्र होंगे, वे सब सामान्य और स्वस्थ होंगे और इसी तरह उन पुत्रों के लड़के और पोते भी । किंतु उसकी लड़कियों में से प्रत्येक इस रोग के 'जीन' की वाहक होगी । इन लड़कियों की संतान में से आधी लड़कियाँ रोग की वाहक होंगी और आधे लड़के रोगी होंगे । इस प्रकार आनुवंशिकता के द्वारा रोगी पिता के नाती रोगग्रस्त हो जाते हैं और रोग कई पीढ़ियों को लाँघकर कहीं आगे जाकर प्रकट होता है, जब कि परिवारवालों को उसकी याद तक नहीं रहती ।

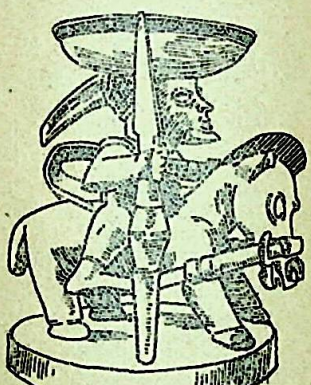

रक्त-पिपासा

एक अल्जीरियन लोकशिल्प

सामान्यतया खरोंच लगने या कटने पर जब रक्त बहने लगता है, तो उसमें 'फाइ-ब्रिन' नामक प्रोटीन पदार्थ के बारीक धागे एकदम चारों ओर प्रवाहित होने लगते हैं । मकड़ी का सघन जाल जैसे [illegible] को घेर लेता है, वैसे ही ये धागे [illegible] कणिकाओं को घेर लेते हैं । फलस्वरूप रक्त का प्रवाह मंद पड़ते-पड़ते बिल्कुल बंद हो जाता है । हेमोफीलिया के रोगियों में यह प्रक्रिया नहीं होती है और इसलिए रुधिरस्राव रुक नहीं पाता । 'फाइब्रिन' के धागे बहुत बारीक और लचकदार होते हैं [illegible] वे खून का थक्का बनाने का कार्य करते हैं ।

जिन लोगों में विटामिन 'के' की कमी [illegible] नितांत अभाव होता है [illegible] प्रायः उन्हीं को हेमोफीलिया होता है । विटामिन 'के' की गड़बड़ी [illegible] रक्त में उन पदार्थों का निर्माण नहीं हो पाता जो थक्का बनाने और रक्तस्राव को रोकने के लिए जरूरी हैं । विटामिन 'के' की क्रिया से [illegible] तो 'प्रोथ्राम्बिन' [illegible] पदार्थ बनता है । [illegible] कैल्शियम लवणों की उपस्थिति में 'प्रोथ्रम्बिन' 'थ्राम्बिन' में परिवर्तित होता है और 'फ्राइब्रिनोजन' को 'फाइब्रिन' में बदल देता है । यदि 'फाइब्रिन' का निर्माण नहीं होता तो फिर रुधिरस्राव बंद होना असम्भव है ।

वसा में घुल जानेवाला यह विटामिन 'के' सभी हरे पौधे-पत्तियों में (विशेषकर पालक, पातगोभी, रिजका में) तथा [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वरों में मुख्यतया सुअर की कलेजी आदि में पाया जाता है। शायद आँतों में पचे हुए भोजन के अवशोषण के समय, कुछ आंत्रिक जीवाणुओं की क्रिया द्वारा भी यह विटामिन उत्पन्न होता है।

हेमोफीलिया के रोगियों की देखभाल बड़ी हीं सावधानी से करनी पड़ती है। सामान्य व्यक्तियों की तरह ये भारी तथा कड़ा काम नहीं कर सकते; क्योंकि जरा-सी खरोंच लगी नहीं कि खून बुरी तरह से बहने लगता है। यहाँ तक कि दाँत निकलवाते समय भी बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है, अन्यथा मृत्यु अवश्यम्भावी है। और पूरी सावधानी बरतने पर भी एकाएक रोगी के शरीर में आमाशय, वृक्क, वक्ष, मांसपेशियों में या अन्य किसी स्थान पर रक्तस्राव हो सकता है। कभी-कभी घुटने या कुहनी की रक्तवाहिनियाँ संधियों के रिक्त स्थानों में रक्त प्रवाहित करने लगती हैं। और ज्यों-ज्यों रक्ततंत्रिकाओं में दबाव बढ़ता है, दर्द भी बढ़ता जाता है और रोगी बेचैनी से छटपटाते हुए हाथ-पाँव झटकते लगता है। यदि समुचित रूप से उपचार न हो,तो स्थायी पंगुता का शिकार हो जाना तो साधारण-सी बात है।

आजकल रक्तस्राव का सबसे मुख्य और प्रचलित उपचार है रोगी के शरीर में तुरंत ताजे रक्त और प्रतिरक्तस्रावक (ऐंटी हेमोफीलिक एजेंट) प्लाज्मा का संचारण। किंतु रक्त तथा प्लाज्मा का संचारण होते हुए भी घड़ी-भर में रोगी का काम तमाम हो सकता है। हेमोफीलिया के रोगियों के लिए ब्लड-बैंकों की उपयोगिता विशेष रूप से है। वक्त-बेवक्त वहाँ से रोगी के 'ब्लड ग्रुप' का रक्त लेकर तत्काल संचारित किया जा सकता है।

वैज्ञानिक ऐसे पदार्थों के अन्वेषण और प्रयोग में लगे हैं, जो रोगी के शरीर में पहुँचकर खून को जमाने और रक्तस्राव को रोकने की प्रक्रिया में सहायता करें। ऐसे पदार्थों में प्रमुख हैं—मटर के घटकतत्व, हिस्टामाइन्स, स्त्री के लैंगिक हारमोन, विटामिन 'के', ऐस्कार्बिक अम्ल, नींबू का सत और सर्पविष।

कन्नड के विख्यात उपन्यास-लेखक शिवराम कारंत जिस हाइ स्कूल में पढ़ते थे, उसके मुख्याध्यापक ने नियम बना रखा था कि बड़ी क्लासों के विद्यार्थी सदा अंग्रेजी में ही बात किया करें। मुख्याध्यापकजी जिसे भी कन्नड में बातें करते देख लेते, उसे सजा भुगतनी पड़ती थी। कारंतजी इसका इलाज करना चाहते थे। एक दिन जब मुख्याध्यापकजी कहीं पास ही थे, उन्होंने अपने एक साथी से कोई मजाकिया बात कही और जब वह हँसने लगा, तो बनावटी गुस्से में जोर से बोले—"फूल! ह्वाइ डू यू लाफ इन कन्नड? यू आर ए हाइ-स्कूल स्टूडेंट। लाफ इन इंग्लिश।" तीर ठीक निशाने पर लगा। मुख्याध्यापक ने फिर कभी किसी को कन्नड में बात करने पर दंड नहीं दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्रकार वाल्टर लिपमन

पत्रकारिता को दर्शन की उच्च भूमिका पर पहुँचा देनेवाले एक अमरीकी मनीषी का जीवन-परिचय ओके-रचित पोर्ट्रेट के साथ।

जोश के साथ बहस करते हुए सात-आठ विद्यार्थियों ने दरवाजे पर दस्तक सुनी और महान् दार्शनिक विलियम जेम्स को कमरे में प्रविष्ट होते देखा। वे हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए। प्रो० जेम्स मुस्कराये, फिर मेधावी मुख-मंडलवाले एक रूपवान् तरुण की ओर हाथ बढ़ाकर बोले—"बहुत अच्छा लिखा है; लिखते रहो।"

उस अठारह-वर्षीय छात्र ने 'हार्वर्ड एडवोकेट' में एक प्रसिद्ध विद्वान् की नयी पुस्तक की समीक्षा की थी, जिस पर उसे बधाई देने के लिए ये विश्वविख्यात प्राध्यापक स्वयं हास्टल में चले आये थे।

घटना वाल्टर लिपमन के जीवन की है। गुरु के शब्द "लिखते रहो" का उन्होंने अर्थ लगाया—"विचार और विवेक के साथ लिखते रहो।" वे लिखते रहे और संसार के सबसे प्रौढ़, तटस्थ और विचारोत्तेजक समाचार-समीक्षक बन गये। आज उनका कालम 'टुडे एंड टुमारो' छहों महाद्वीपों के करीबन २५० अखबारों में छपता है, लाखों पाठकों द्वारा पढ़ा जाता है।

'टुडे एंड टुमारो' बुद्धिजीवियों का भोजन है। विश्व-राजनीति के विद्यार्थी, नेता और राजनयिक उस का मनन करते हैं। एक अंग्रेज राजनयिक ने कहा था कि उसका बस चले, तो वह ब्रिटेन का प्र[illegible] विशेष राजदूत वाल्टर लिपमन के दरबा[illegible] में नियुक्त करा देगा।

वाल्टर लिपमन का जन्म न्यूयार्क [illegible] एक खाते-पीते जर्मन यहूदी परिवार में [illegible] सितम्बर १८८९ को हुआ। परिवार [illegible] कुल चार सदस्य थे—वाल्टर, पिता, [illegible] नानी। वाल्टर शेष तीनों के प्रेम के [illegible] मात्र केंद्र थे। पढ़ने में बहुत आगे थे [illegible] खेल, वाद-विवाद, पार्टी-पिकनिक, [illegible] आदि में भी भाग लेते। स्कूल की पत्रि[illegible] के वे सम्पादक थे।

फिर वे हार्वर्ड विश्वविद्यालय में [illegible] हुए। यहाँ उन्हें कवि इलियट और [illegible] कार जैक रीड जैसे सहपाठी और विलि[illegible] जेम्स व जार्ज सांटायना जैसे गुरु मि[illegible] यहीं वे अर्थशास्त्री ग्रैहम वैलेस के [illegible] में आये, समाजवाद की ओर झुके। [illegible] साल का ग्रैजुएट-कोर्स तीन साल [illegible] कर, एक साल वे दर्शनाचार्य [illegible] के सहकारी रहे।

विद्याध्ययन के बाद उन्होंने कुछ [illegible] शेनेक्टेडी के समाजवादी मेयर के [illegible] के रूप में काम किया। फिर [illegible] ब्लिक' के सम्पादक-मंडल में [illegible] गये। प्रथम विश्वयुद्ध में उन्होंने [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

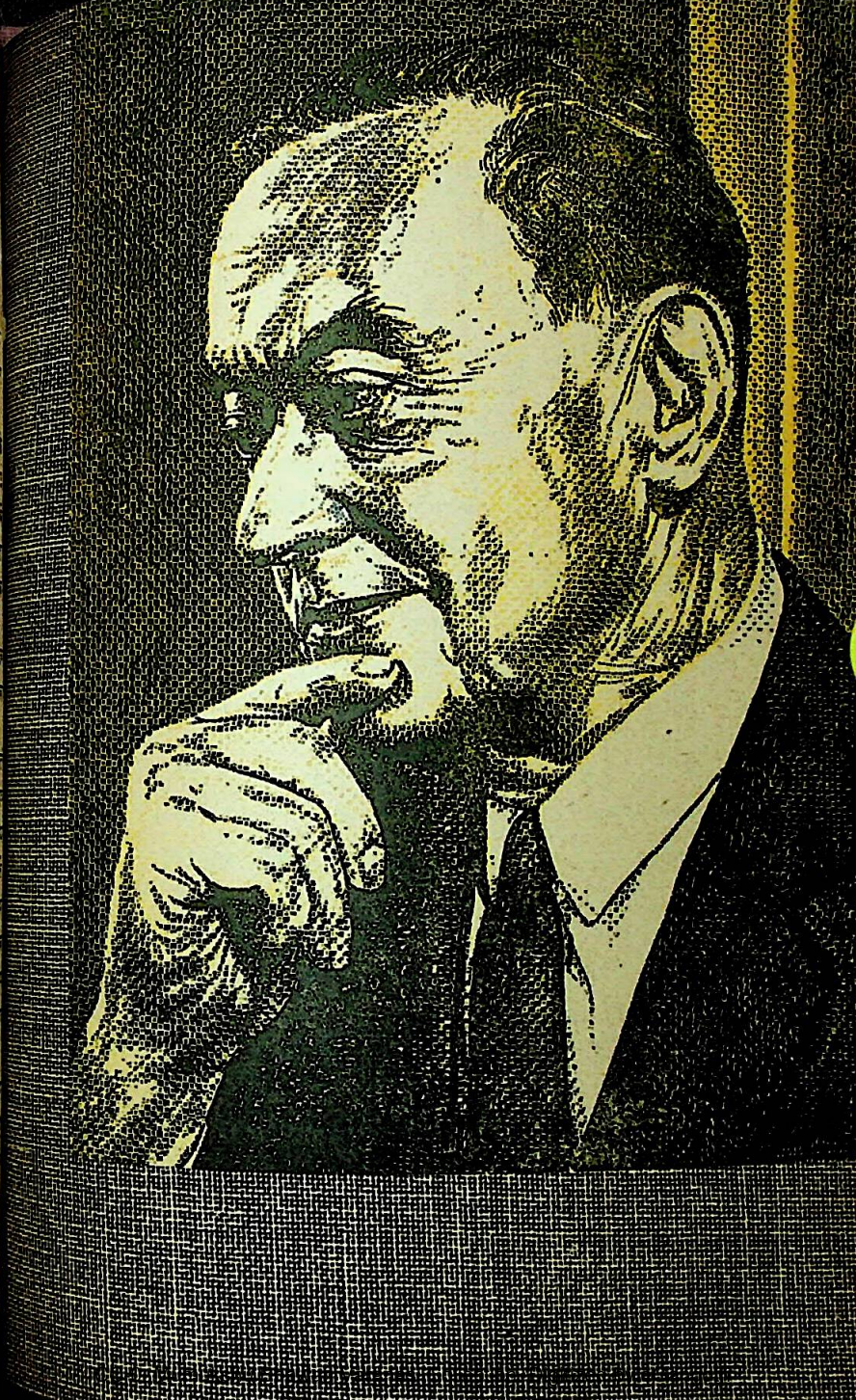

डेंट विल्सन के अधीन शांति की शर्तें तय करनेवाली उपसमिति में काम किया, फिर सरकारी संवाददाता के रूप में फ्रांस भेजे गये। राजनीति और सरकार का यह प्रत्यक्ष अनुभव उन्हें रुचा नहीं।

१९२१ में वाल्टर लिपमन 'दि न्यू-यार्क वर्ल्ड' के सम्पादकीय-लेखक और १९२३ में सम्पादक नियुक्त हुए। जोसेफ पुलिट्जर स्थापित 'वर्ल्ड' निर्भीकता का पर्यायवाची तो था ही, अब वह नागरिक-स्वातंत्र्य का प्रबलतम प्रहरी बन गया।

जब १९३१ में आर्थिक मंदी की महामारी में 'वर्ल्ड' की मृत्यु हो गयी, न्यूयार्क के रिपब्लिकन अखबार 'हेराल्ड ट्रिब्यून' में उनका स्तम्भ 'टुडे एंड टुमारो' शुरू हुआ। यह पहला अवसर था कि एक बड़े अखबार ने अपनी नीति से विरुद्ध विचारोंवाले एक पत्रकार को स्थायी स्तम्भ लिखने का निमंत्रण दिया।

अपनी द्वितीय पत्नी हेलन (प्रथम विवाह–१९१७) के साथ वाल्टर लिप-मन वाशिंग्टन में बड़ा शांत, नियमित जीवन व्यतीत करते हैं। दूसरे पत्रकारों को तरह उन्हें 'स्कूप' झपटने की फिक्र नहीं रहती। वे अखबारों से अधिक किताबें पढ़ते हैं; राजनीतिक सम्मेलनों के बजाय संगीत-गोष्ठियों में ज्यादा जाते हैं।

वस्तुतः लिपमन खबरों के पीछे नहीं दौड़ते; बल्कि खबरों का मनन करते हैं। वे बुद्धि की प्रयोगशाला में हर समाचार को इतिहास की 'स्लाइड' पर रखकर दर्शन की खुर्दबीन से देखते हैं। दर्शन के [illegible] पर उन्होंने पत्रकारिता और राजनय [illegible] कलम लगायी है। उन्होंने स्वयं कहा है [illegible]

"मेरे दो जीवन हैं– एक किताबी [illegible] दूसरा अखबारी। दोनों परस्पर पूरक [illegible] मैं दर्शन के परिप्रेक्ष्य में अपना [illegible] लिखता हूँ। और कालम वह प्रयोग[illegible] है, जिसमें मैं दर्शन को परखता हूँ [illegible] उसे एकदम हवाई बन जाने से रोकता [illegible]

लिपमन के चिंतन का आधार है [illegible] बुद्धिवाद और स्वातंत्र्य। अपने दि[illegible] की लगाम उन्होंने कभी किसी व्य[illegible] दल या वाद के हाथ में नहीं सौंपी। [illegible] दिलचस्पी राजनीतिज्ञों या सरकारों [illegible] नहीं, मानवता के भविष्य में है। वे [illegible] हैं कि दुनिया में विविध विचारधाराओं [illegible] जीवन-पद्धतियों के साथ-साथ जीने-म[illegible] के लिए अवकाश होना चाहिये।

लिपमन की आस्था है–"जिस म[illegible] के पास असत्य को पकड़ने की कुंजी-[illegible] कारी– नहीं, वह समाज स्वतंत्र नहीं [illegible] सकता।" पत्रकारिता के पक्ष में यह [illegible] प्रबल दलील है। लेकिन उनकी चे[illegible] है –"समाचार और सत्य को हम [illegible] ही चीज समझ बैठे, तो कहीं के नहीं रहें[illegible]

समाचार-समीक्षक श्री लिपमन [illegible] पचास वर्ष से साधारण पाठक को [illegible] रक बनाने की कोशिश कर रहे हैं। [illegible] महानता इसमें है कि वे सामयिक [illegible] स्याओं से जूझते हुए च्युतिशील [illegible] को शाश्वत मूल्यों की याद दिलाते [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यमन के खूनी इमामों का अंत

प्रतिक्रियावादी निरंकुश राजतंत्र यमन में अपनी समस्त शक्ति से युगधारा को रोकने की कोशिश कर रहा है। क्या वह इसमें सफल होगा? पश्चिम एशियाई राजनीति की इस गुत्थी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यहाँ स्पष्ट की गयी है।

निर्मल चंद्र

एशिया के धुर पश्चिम में अरब प्रायद्वीप की नोक के पास, सऊदी अरब और यमन के दकियानूसी सामंतशाही राज्य अपने राजवंशों की खूनी हरकतों और अत्याचारी शासन के लिए बदनाम चले आ रहे हैं। खुदा-खुदा करके कुफ्र किसी तरह छूटा और यमन का अंतिम इमाम सैफुल इस्लाम अमीर मुहम्मद अल बदर अपनी ही सेना और प्रजा के विद्रोह से घबराकर देश से भाग निकला।

आरम्भ में यह खबर थी कि इमाम अपने ही जलते महल के खंडहरों में दबकर २७ सितम्बर १९६२ को मर गया। लेकिन बाद में अफवाह फैली कि अमीर अल बदर सिपाही की वर्दी पहनकर महल से भाग निकला और सऊदी अरब जा पहुँचा, जहाँ से अब उसके वक्तव्य प्रसारित होते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि घायल इमाम देश से भाग तो निकला, लेकिन एक अरब अस्पताल में उसकी मृत्यु हो गयी और अब दूसरे लोग उसके नाम से वक्तव्य जारी कर रहे हैं। हो सकता है, यह नृशंस शासक अभी जिंदा हो, क्योंकि अब वह प्रेस-कान्फरेंस भी बुलाता है।

मुहम्मद अल बदर इस खूनी खानदान का आखिरी खुतबेदार है। इससे पहले इसका बाप इमाम अहमद बिन यहिया मुहम्मद हमीदुद्दीन भी, जो इसी बरस जुलाई के दूसरे सप्ताह में इस दुनिया से चलता बना, एक बेमिसाल खूनी नरेश था। अपने आपको वह प्रजा के जीवन-मरण का नियंत्रक और शाहे-ईमान कहता था। बेहद बड़ी पगड़ी पहनने के कारण वह 'बड़ पगड़ी' भी पुकारा जाता था।

क्रांति की घोषणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सैकड़ों नहीं, हजारों औरतों की अस्मत लूटनेवाले इस व्यभिचारी को सुजाक ने सड़ा दिया था। शायद उसी जहर से या अनेक वार हुए हत्या-प्रयत्नों में लगे घावों से लगभग ७१ बरस का यह इमाम विस्तरे में पैर रगड़-रगड़कर मर गया। सैकड़ों दासियाँ उसने अपने हरम में जबर्दस्ती डाल रखीं थीं। जब कि शरीयतन जायज चार निकाहताएँ वहाँ पहले से मौजूद थीं, तो भी वह चाहे जिस प्रजा-जन की बहू-बेटी को रात-भर के लिए पकड़ मँगवाता था। ऐसी अदम्य थी उसकी कुत्सित काम-पिपासा ७१ बरस की उम्र में भी।

अहमद ने खूँरेजी और अत्याचारी शासन का प्रारम्भ १९४८ में किया, जब उसके बाप यहिया की उसी के सम्बंधियों ने मशीन-गन से हत्या कर डाली। चेहरे पर डरावना रौब लाने के लिए अहमद ने गले में रस्सी बाँधकर सोना शुरू किया, जिससे रगों में खून रुके, आँखें बाहर को उभर आयें और खौफनाक दीखें।

ठिगने कद का मोटा-सा अहमद बेहद बलशाली था। उसने चिमटे की शक्ल की दाड़ी रखवायी थी, जिसका एक पल्ला लम्बा और दूसरा छोटा था। उसके अत्याचार से उसके घरवाले ही बेहद तंग आ गये थे। अपनी ही बहन-भतीजियों को वह नापाक नजर से देखता था। अंत में उन लोगों ने उसे अपनी गढ़ी में घेर लिया। लेकिन वह एक हाथ में मशीन-गन और दूसरे में दुधारा खांडा लिये लड़ता हुआ बाहर निकल आया और बच गया। फिर अपने दोनों सगे भाइयों के सिर उसने कलम करवा दिये।

जैसा पिता.....

इसके बाद भी अनेक बार अहमद की हत्या के प्रयत्न किये गये। परंतु हर बार वह बच निकला और हर बार सैकड़ों व्यक्तियों को मौत के घाट उतारकर गद्दी से चिपका रहा। जब उसने नकली दाँत लगवाये, तब दाँतों का सेट ठीक मजबूत बना है या नहीं, यह देखने के लिए, उसने अपने एक मुसाहब की बाँह मरोड़ डाली और तब तक उसे चबाता रहा, जब तक कि बेचारा मुसाहब दर्द से दोहरा होकर चीख मारकर फर्श पर ढेर न हो गया। तब इमाम जोर से डकराया—"देखो लोगो, यमन के इमाम का जबड़ा अब भी मजबूत है।"

अनेक पौराणिक कथाओं और किंवदन्ती की प्रसिद्ध नायिका शेबा की रानी का देश यमन ७५,००० वर्ग मील विस्तृत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है और अरब प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर है। रेगिस्तान से लगा हुआ होने पर भी यह प्रदेश हरा-भरा है। जौ, गेहूँ, मकई और कहवा यहाँ की मुख्य उपज है। निर्यात की जानेवाली मुख्य वस्तु है खालें। आबादी करीबन ८० लाख है।

कहते हैं, यहाँ का राजवंश हिमयार-कुल से सम्बद्ध है, जो ईसा से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व यहाँ राज्य करता था। सैकड़ों वर्षों से अत्याचारियों की यह परम्परा जनता के दीनो-ईमान और जानो-माल पर हुकूमत करती आ रही थी। पुराण-प्रसिद्ध राजा वेन के अत्याचारों से तंग आकर वैदिक युग की भारतीय प्रजा ने जैसे विप्लव किया था, उसी का अनुगमन करके यमन की प्रजा ने विद्रोह किया और जनरल अल सल्लाल के नेतृत्व में लोकसत्ता की स्थापना की।

.....वैसा पुत्र

नयी दुनिया में इस घटना से सभी को हर्ष हुआ। लेकिन बचे-खुचे एशियाई राजवंश और सामंत-कुल इससे घबरा उठे हैं। सऊदी अरब का शाह इब्न सऊद यमनी लोकसत्ता को कुचलने और राज-सत्ता की पुनः स्थापना कराने का षड्यंत्र रच रहा है। इसके लिए शुरू में उसने मृत इमाम के चाचा और गद्दी के दावेदार अमीर हसन को शिखंडी की तरह आगे किया और राजभक्त कबीलों को सैनिक सहायता देकर भड़काया। अब तो इमाम को ही उसने आश्रय दिया है।

पड़ोसी ब्रिटिश उपनिवेश तथा जहाजी अड्डे अदन से भी उसे शह मिल रही है। उधर जोर्डन का गुड़िया शाह भी अपनी गद्दी बचाने के लिए इमाम के तरफदारों की मदद कर रहा है। अतः नया यमनी प्रजातंत्र कहाँ तक सफल हो सकेगा यह कहा नहीं जा सकता। वैसे मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने पूरे सहयोग का आश्वासन दिया है। (वास्तव में मार्च १९५८ में यमन ने मिस्र के साथ संयुक्त अरब राज्य में सम्मिलित होने की घोषणा की थी, यद्यपि यह निरी घोषणा भर थी।) अदन की सबसे बड़ी ट्रेड यूनियन का समर्थन भी यमनी लोकतंत्र को प्राप्त है। अदन के श्रमिकों में बड़ी संख्या यमनियों की है।

लेकिन नये यमन का जीवन-मरण इन बाहरी शक्तियों पर निर्भर नहीं है। उसे तो अपने ही कबीलों की सहायता और सहयोग पर जीना है। यदि दक्षिणी कबीलों की तरह उत्तरी कबीले भी प्रजातंत्र के साथ हो जाते हैं, तो फिर उसे कोई नहीं मार सकता। उत्तर के कुछ ही कबीले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेष हैं, जो अब तक एक या दूसरे पक्ष का साथ देने से झिझक रहे हैं। अन्यथा सारा यमन एक मत से प्रजातंत्रवादी है। अतः राजसत्ता के दिन वहाँ लद चुके हैं।

पश्चिम में सभ्य संसार की सहानुभूति मुहम्मद के बाप अहमद ने तभी खो दी थी, जब उसकी सीरियाई रखैल सऊद बिंत उसकी कामुकता से तंग आकर चुपके से भाग निकली और इटली के एक रोमन कैथोलिक कान्वेंट में भरती हो गयी। उसके बाद ही अहमद ने अपनी चौथी बीवी को तलाक देकर एक १९-वर्षीय लड़की से जबरन निकाह कर लिया।

धर्म के धुरंधर समझे जानेवाले इमाम का खुद तो यह हाल था, लेकिन प्रजा के लिए उसने यह कानून बना रखा था कि दूसरे की स्त्री से व्यभिचार करनेवाले को पत्थरों से मार-मारकर हलाक कर दिया जाये। आज तक वहाँ गुलामी की प्रथा प्रचलित है। इमामों के सदियों लम्बे शासन में देश बाइबल-कालीन सभ्यता से आगे नहीं बढ़ पाया।

नये इमाम मुहम्मद अल बदर ने गत जुलाई के तीसरे सप्ताह में गद्दी पर बैठते समय वादा किया था कि वह आधुनिक राष्ट्रों की तरह यमन का ढाँचा ही बदल देगा। उसने यह भी कहा था कि [illegible] अपनी लम्बी दोस्ती के बावजूद वह [illegible] युद्ध के दलदल से दूर रहते हुए, निष्पक्ष [illegible] निर्दलीय मार्ग पर चलकर यमन का [illegible] करेगा। परंतु दो दिन बाद ही [illegible] १४६ निरीह विद्यार्थियों का कत्ल कर [illegible] प्रजा की आशाओं पर पानी फेर दि[illegible] पिता और पुत्र की इन हरकतों ने [illegible] एशिया के सभी कबीलों को रुष्ट कर दि[illegible]

रूस की सोवियत सरकार ने यमन [illegible] प्रजातंत्र को स्वीकार कर उसे [illegible] सहायता देना स्वीकार किया है। भारत [illegible] राजनयिक मान्यता मिल जाने से [illegible] यमनी प्रजातंत्र को अंतर्राष्ट्रीय गौरव दि[illegible] है। मिस्र ने १९५८ की संधि के अनु[illegible] उसकी सहायता के लिए काहिरा में [illegible] रवाना की है। वैसे संधि की दूसरी व्यवस्था[illegible] ओं के विषय में मिस्र मौन है। अ[illegible] ने चुप्पी साध रखी है।

यमन सरकार ने खुल्लमखुल्ला [illegible] लगाया है कि ब्रिटेन यमन-विरोधी [illegible] का छिपे-छिपे पोषण कर रहा है। [illegible] अपने स्वार्थों का खतरा उसे सता रहा [illegible]

लेकिन अरब प्रायद्वीप में लोकतंत्र [illegible] विजय सुनिश्चित है। आज नहीं तो [illegible] वहाँ के सभी राजवंश विस्थापित हो[illegible]

केरल के भूतपूर्व मुख्यमंत्री ई० एम० शंकर नम्बूदिरीपाद कुछ हकलाया करते हैं। एक बार एक अमरीकी पत्रकार उनसे भेंट करने आया। उसने पूछा—"मिस्टर नम्बूदिरी[illegible] पाद, क्या आप हमेशा ही हकलाया करते हैं?" उत्तर मिला—"जी नहीं, सिर्फ [illegible] समय हकलाता हूँ।" ['कल्पना' से [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा आनंद के क्षण

हम सभी के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जब हम अपने किसी विशेष कार्य या मनःस्थिति में परम आनंद और परम तृप्ति का अनुभव करते हैं; ऐसे क्षणों के ये वर्णन 'नवनीत' के लिए विशेष रूप से लिखे गये हैं।

मैं सन् १९१६ से हिन्दी के झरोखे झाँकने लगा था। 'सरस्वती' भी पढ़ता था, यद्यपि "तव अति रहेऊँ अचेत।" सन् १९२१ से कुछ सोचने-समझने लायक हुआ और १९२६-२७ तक तो नाम बहुत हो गया था, काम चाहे जैसा रहा हो। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की धाक जमी हुई थी। श्रद्धा अपार थी, पर पत्र-व्यवहार की हिम्मत न थी। सन् १९३० में दौलतपुर (रायबरेली) से भेजा हुआ उनका एक कार्ड मिला। आशीर्वाद था उत्साहवर्धक। उस कार्ड को पाकर जो आनंद हुआ था, वह मेरे जीवन में सर्वोपरि था।

—किशोरीदास वाजपेयी

★

सन् ५३ के प्रयाग के कुम्भ में उस दिन सुबह सोशियल सर्विस लीग की ओर से बाँध के तिराहे पर खड़ा ट्रैफिक कंट्रोल में सहायता कर रहा था। नागा साधुओं का जुलूस अचानक ठहर गया और एकाएक भगदड़ मच गयी। उस वक्त पता नहीं चला कि क्या हुआ। मैं उधर चला, जिधर कीचड़ में लाशें पड़ी थीं। रास्ते में कई बार गिरा। आखिरी बार गिरकर उठा ही था कि बिलासपुर की एक आदिवासी बालिका (उम्र कोई ८-९ वर्ष) माँ-बाप से बिछुड़ी, भीड़ के रैले से गिरती-पड़ती मेरी बाहों में आ गिरी। उसे बचाता-बचाता व धक्के खाता बड़ी मुश्किल से अपने कैम्प पहुँचा। उस दिन पहली बार समझा कि जीवन बचाने और बचने का आनंद कितना बड़ा होता है।

—पृथ्वीनाथ शास्त्री

★

दक्षिण की यात्रा ..... महाबलिपुरम् में विशाल शिव-मंदिर, अंतरिक्ष तक हिलोरें ले रहा विशाल सागर, चंचल लहरों द्वारा निरंतर मंदिर का पाद-प्रक्षालन, भग्न मंदिरों के विशाल शिलाखंडों से खेलती और उन्हें पल-पल पर दुग्ध-समान श्वेत जल से स्नान कराती ऊँची-ऊँची

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लहरें, शीतल एवं मंद समीर के झोंके, नीरव एवं शांत वातावरण ..... उस दृश्य के स्मरण मात्र से मुझे परम आनंद प्राप्त होता है।

—अवधबिहारी गुप्त

★

१९२२ में जेल काटकर छूटा, तो अपने को अंधकार में घिरा पाया। क्रांतिकारी दल के लोग क्रियाशील हो गये थे। पर क्रांतिकारी दल में भर्ती होने का अर्थ परिवार से अलग होना तथा शिक्षा छोड़ना था। तर्क करता रहा। अंत में एक दिन सिर पर कफन बाँधे हुए लोगों में शामिल हो गया। उससे जो सुख मिला, आज तक नहीं मिला; यद्यपि नतीजा रहा बीस साल जेल भुगतना। दूसरा आनंद तब हुआ, जब निरीश्वरवादी बना। वह भी एक बड़ा निर्णय था, जिसे हमने रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक, रोशनसिंह और राजेंद्र लाहिड़ी की फाँसी पर लिया।

—मन्मथनाथ गुप्त

★

भीतर से 'अर्ज' या प्रेरणा पाकर किसी कृति को लिखने या पूर्ण कर लेने पर अनंत सुख की प्राप्ति हुई। लिख लेने के बाद उसका नशा कई-कई दिनों तक रहा। लिखने से पूर्व और लिखने के बाद और बीच की स्थिति की तन्मयता समाधि की-सी होती है। बाह्य इंद्रियाँ स्तब्ध, बाह्य ज्ञान विमूढ़ होता है। केवल आग की लौ-सा प्रकाश निरंतर जागता रहता है। वह अवस्था कभी-कभी आयी है। मत्स्यगंधा, विश्वामित्र, राधा, अशोकवन-बंदिनी भावनाओं में वह स्थिति निरंतर बनी है। कुछ कविताएँ भी उस स्थिति परिणाम हैं।

—उदयशंकर

★

अपनी 'बोधपोथी' में दर्ज ऐसे कई आनंद और परम तृप्ति के प्रसंगों दो ये हैं :

.....दुश्चिंताओं से मुक्ति पाना भव तो नहीं है। ४ जून से मैंने आपको काम में डुबो दिया। सवेरे से जुटता, तो रात ९ बजे तक रहता। इस रौ में बहुत-सी चिंता भूल गयी। मैंने फिर पाया कि मेरी ल्लता और आनंद का असली घनघोर कार्य।

.....किसी का पाँव बढ़ा आना कोई ठेलता है, कोई ऊपर गिरा जाता तीसरे दर्जे में भीड़-भाड़ में पूरी रात करने का अनुभव खीझ, झुंझलाहट क्रोध पैदा करनेवाला ही होता है। बाहर पौ फट रही थी। रात्रि-जा और थकान के बावजूद मेरा भावुक प्रार्थना में निमग्न हो गया..... सारी तिक्तता, क्लांति और असहि तिरोहित हो गयी। आनंद का उ निकला। सब मेरे ही सगे और बंधु थे। सब अपनी हीनताओं-विक अपने दुर्गुणों-अहंकारों में भी प्यारे रहे थे। मन पुलकित और तृप्त होता

—श्यामू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे पिताजी

वृंदावनलाल वर्मा

नाम मेरे पिताजी का श्री अयोध्याप्रसाद वर्मा था। वे सरकारी नौकर थे झाँसी जिले के गरौठा नामक पुरवे में; और मैं उसी जिले के ललितपुर नगर में अपने चाचा के पास सन् १८९९ से १९०५ तक पढ़ता रहा।

खेल-कूद का शौक छुटपन से था। क्रिकेट, फुटबाल, जिम्नास्टिक, उछल-कूद, दौड़-धूप का पूरा अनुरागी। यदि मैं पिताजी के साथ रहकर शिक्षा प्राप्त कर रहा होता, तो मेरे खेल-कूद में बड़ी बाधा पड़ती, क्योंकि मेरे खिलाड़ीपन के साथ उनकी सहानुभूति न होती।

मैं गरमियों की छुट्टी में गरौठा चला जाता था। वहाँ क्रिकेट—फुटबाल आदि अप्राप्य थे; परंतु दो अखाड़े थे, जिनमें कुश्ती लड़ी और सिखायी जाती थी। एक में मैं भरती हो गया। मेरी माताजी मुझे बहुत प्यार करती थीं। उन्हें मेरा मल्ल-विद्या सीखना बड़ा अच्छा लगा। खूब घी-दूध खिलाती-पिलाती थीं।

सन् १९०५ में झाँसी आकर जब नौवीं कक्षा में भरती हुआ, बोर्डिंग में रहने लगा। उसी साल तीन छोटे-छोटे नाटक लिखे और इलाहाबाद के इंडियन प्रेस में भेज दिये। पचास रुपये पारिश्रमिक के आ गये। उन दिनों के पचास रुपये आजकल के पाँच सौ के बराबर थे। आधे पिताजी के पास भेज दिये और बाकी मैंने और मेरे बोर्डिंग के सहवासी मित्रों ने दूध-रबड़ी-मलाई में साफ कर दिये।

सन् १९०७ में अठारह वर्ष की उम्र में हाईस्कूल की परीक्षा पास की—प्रथम श्रेणी में; और बारह रुपया मासिक छात्रवृत्ति की सूचना भी प्राप्त की। फिर भी आगे पढ़ने नहीं गया और गरौठा में ही रहने लगा। माताजी के स्नेह से दूध-घी खूब मिलता रहा—मैंने कुश्ती और दंड-बैठक जो बढ़ा दी थी। कुछ क्रांतिकारी नाटक लिखे।

मैं उस वर्ष आगे पढ़ने के लिए नहीं गया, उसका एक कारण तो यह सब था; दूसरा था पिताजी का यह उद्देश्य कि मैं आगे न पढ़कर सरकारी नौकरी करूँ। उनका उद्देश्य तब मुझे ज्ञात नहीं था।

मेरी नौकरी करने की इच्छा नहीं थी और न अंग्रेजों के कालेज में पढ़ने की। लड़े जाओ कुश्ती और लिखे जाओ क्रांतिकारी नाटक — बस, यह सनक सवार थी। पिताजी समझते होंगे कि कर ले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोकरा मौज, साल-छः महीने, पीछे हो जायेगा कहीं सरकारी नौकर।

पिताजी का मासिक वेतन ३० रुपये था। गरौठा में गुजर मजे में हो जाती थी। लेकिन १९०८ में उनकी तवदीली झाँसी हो गयी। गरौठावाला मेरा अखाड़ा छूट गया। परंतु झाँसी में हमारे सम्बंधी के घर के बिलकुल पास एक नामी अखाड़ा था। मल्लखम्ब भी था उस अखाड़े में। बस मिल गये मनचाहे पदार्थ और कुछ पुराने महाराष्ट्रीय साथी भी। ये गाते-बजाते भी थे और मुझे था संगीत का शौक। दिन में लिखना-विखना, सवेरे मराठे मित्रों के घर संगीत, संध्या समय अखाड़ा मल्लखम्भ।

पिताजी दस बजे दफ्तर चले जाते थे और संध्या समय लौट पाते थे। मैं उन्हें न सवेरे मिल पाता था और न रात के आठ बजे तक। आपस में बहुत कम बात हो पाती थी—छुट्टी के दिन भी कुछ अधिक नहीं।

एक छुट्टी के दिन जब मैं कुछ लिख रहा था, पिताजी ने पूछा— "क्या लिख रहे हो?" मैंने डरते-डरते उत्तर दिया—(मैं छुटपन से ही उनसे डरता था) "महात्मा बुद्ध का जीवन-चरित्र।"

वे भक्तिमार्गी थे, प्रसन्न हुए। उनकी आँखें बड़ी-बड़ी थीं, दाढ़ी कानों तक मुड़ी हुई। आँखों के लाल डोरों में प्रसन्नता की झलक थी। "इसके छपने पर तुम्हें कुछ मिलेगा?" उन्होंने प्रश्न किया।

"कह नहीं सकता। अभी तो लिख रहा हूँ।"

"अब नौकरी की खोज भी करनी है। नौकर हो जाने पर अवकाश के समय महात्माओं के बारे में कुछ लिखते रहो।..... झाँसी आने पर खर्चा बढ़ गया है, तुम्हें अब कुछ करना चाहिये।"

बात सच थी। मैंने उसी दिन से प्रयत्न आरम्भ कर दिया — मध्यम श्रेणी के एक सरकारी नौकर के लड़के को डेढ़ रुपये रोज पढ़ाने लगा। फीस पाँच रुपये मासिक पर महीना समाप्त नहीं हुआ था कि उन महाशय की तबदीली झाँसी से हो गयी और वे मेरी फीस डकार गये। मुझे तो अफसोस ही, पिताजी भी क्षुब्ध हो गये।

एक दिन पिताजी ने कहा—"जज साहब की कचहरी में तुम्हें उम्मेदवार बना देते हैं। नौकरी भी एक दिन मिल जायेगी।"

मैंने हामी भरी और कुछ महीने जज की कचहरी में उम्मेदवार बना रहा। पर वहाँ हिन्दी ही क्या, देवनागरी अक्षर तक का तिरस्कार देखकर ग्लानि हुई और मुंशियों और क्लर्कों की भयंकर घूसखोरी देखकर घृणा। मैंने उम्मेदवारी से त्यागपत्र दे दिया। पिताजी को बुरा लगा पर उन्होंने उस दिन कुछ कहा नहीं।

मैंने शेक्सपीयर के 'टेम्पेस्ट' नाटक का अनुवाद कुछ समय पहले शुरू कर दिया था। पिताजी को मालूम हो गया और उन्होंने झिड़की दी—"नाटकों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिखने और खेलने-खिलाने से पेट नहीं भर सकता। करो जल्दी किसी दफ्तर में नौकरी और छोड़ो ये सब कुढंग।"

आदेश का पालन अनिवार्य था। मैंने एक स्कूल में शिक्षक पद के लिए प्रयास किया। परंतु जगह न मिली। 'टेम्पेस्ट' का अनुवाद 'तूफान' हो गया; परंतु छप नहीं सका, कहीं खो गया।

एक दिन मैं यों ही गा रहा था और बीच-बीच में सीटी भी बजा रहा था। पिताजी ने सुन लिया और माताजी से कहा—"हो गया यह छोकरा चौपट! गाता है, सीटियाँ बजाता है! पहलवान बनने जा रहा है। अब इससे कुछ होना-जाना नहीं है।"

वे कुछ ऊँचे स्वर में बोले थे। मैंने भी सुन लिया। मन भनभना गया। निश्चय किया कि छोटी-मोटी कैसी भी नौकरी कहीं मिले, कर लूँगा। कुछ दिन पीछे सुना कि जंगल विभाग के झाँसी-कार्यालय में एक क्लर्क की जगह खाली है। प्रार्थना-पत्र दिया, नौकरी मिल गयी। वेतन पचीस रुपया मासिक। पिताजी को संतोष हो गया। यह बात १९०९ की है।

कार्यालय में जाने लगा। अवकाश के समय कुछ लिखता भी रहता था— कुश्ती-पहलवानी और संगीत भी नहीं छोड़ा। मेरे लेख कलकत्ता के 'भारत मित्र' (श्री बालमुकुंद गुप्त द्वारा सम्पादित) में छपते थे। कुछ आगरा से निकलनेवाले 'स्वदेश-बांधव' में भी। कभी-कभी माताजी को ये लेख पढ़ने के लिए दे देता था। वे पढ़ी-लिखी थीं, बहुत प्रसन्न होती थीं। पिताजी को दिखाने का साहस नहीं कर पाता था।

एक दिन दफ्तर में बैठे-बैठे विचार उठा—"क्या इस क्लर्की में तुम्हें जीवन बिता देना है? क्या ध्येय था? कहाँ से कहाँ जा रहे हो?" मैं बहुत दुःखी हो गया। निश्चय किया कि नौकरी छोड़ूँगा और आगे पढ़ूँगा। घर आकर अकेले में माताजी को अपना निश्चय काँपते स्वर में सुनाया। उन्होंने दृढ़ स्वर में समर्थन किया—"नौकरी छोड़ो और पढ़ो। भगवान सहायता करेंगे!"

जुलाई का महीना लगनेवाला था। मैं त्यागपत्र देकर घर आ गया। जब पिताजी को मालूम हुआ, कुछ उद्विग्न हुए; परंतु उद्विग्न उतने नहीं थे, जितने कष्ट पीड़ित। उनके मुँह से निकला—"पढ़ने का खर्च कहाँ से आयेगा? मैं तो कुछ दे नहीं सकूँगा।"

मैंने निवेदन किया—"ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज में भरती हो जाऊँगा—वहाँ फीस नहीं लगती बी० ए० तक। बोर्डिंग में रहने की भी फीस नहीं देनी पड़ती।"

उनके मुँह से धीरे-से "हूँ" निकली। फिर मैंने माताजी से एकांत में कहा कि कालेज में फीस तो माफ है; पर हर महीने कुछ रुपये तो चाहिये ही। प्रोत्साहनदात्री मुस्कान के साथ वे बोली—"चिंता मत करो। मेरे पास पुराने समय का कुछ गहना और सोना है। दूँगी और देती रहूँगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्वालियर जाने की तैयारी करो !"

"पिताजी क्या कहेंगे ?"

माताजी हँस पड़ीं—"तुम अपने पिताजी के हृदय को नहीं जानते, न उनके बड़प्पन को समझते हो। सब ठीक रहेगा, चिंता छोड़ो।"

मानो अमृत पीने को मिल गया; पर मन धिक्कार उठा—"तुमने पिछले दो वर्ष में पिताजी की क्या सेवा-सहायता की ? चाहते तो कुछ कर भी सकते थे ! निर्लज्ज !"

मैं ग्वालियर जाने की तैयारी उमंग की कमी के साथ कर रहा था। पिताजी ने ताड़ लिया और मुस्कराकर लाड़ के साथ फटकारा—"क्यों रे, उदास क्यों है ? क्या अब ढीला पड़ रहा है ?"

मैंने उनके पैरों में सिर रख दिया। उन्होंने उठाकर छाती से लगा लिया। आँखें भर आयी थीं। बोले—"तुम्हें की कमी नहीं पड़ेगी। खूब मन लगा पढ़ना।"

अगले दिन वे मुझे पहुँचाने के लिए स्टेशन तक साथ आये। जब गाड़ी चलने लगी, ऊँचे स्वर से आशीर्वाद दिया—"जाओ खूब बढ़ते जाओ; सदा सुखी रहो !" और उनकी आँखों से आँसुओं की धार बह पड़ी।

मैं उन आँसुओं को कभी नहीं भूल सकता, — उनसे मैंने जीवन में कुछ पाया है।

मेरी माँ

उस समय नेताजी सुभाष जर्मनी में थे। भारत में अंग्रेज सरकार उनके विषय में तरह-तरह की अजीबोगरीब बातें उड़ा रही थी। अक्सर अंग्रेजों के पत्र यह समाचार छाप देते कि सुभाषचंद्र बोस का तो अमुक दुर्घटना में देहांत हो गया।

एक बार जब उन्होंने एक भारतीय अखबार में भी ऐसी खबर पढ़ी, तो वे कुछ गम्भीर हो गये और उनके नेत्रों से आँसू बहने लगे। उनके एक साथी ने उत्सुकता से पूछा—"अरे, तो इन झूठी खबरों से आप दहल गये ! आप तो यहाँ अच्छे-भले मौजूद हैं।"

नेताजी ने साथी के कंधों पर हाथ रखते हुए कहा—"हाँ, मैं तो यहाँ अच्छा खासा हूँ; लेकिन मेरी मौत की खबर सुनकर मेरी माँ कैसा महसूस करती होगी। यही सोचकर मेरी आँखें भर आयीं।"

—जीवन

इराक के शाह फैसल एक बार लंदन में कुछ वैज्ञानिकों से वार्तालाप कर रहे थे। तब उनकी उम्र केवल ११ वर्ष की थी। बातचीत के दौरान में एक वैज्ञानिक ने कहा—"मेरा अनुभव है कि मैं साइकिल पर सवार होता हूँ, तो मेरे विचारों की शक्ति दुगनी हो जाती है।" सुनकर शाह फैसल ने कहा—"फिर तो आपको मोटर साइकिल पर बैठकर सोचना चाहिये।"

— शाकिर पुस्तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी

भूगर्भ के शक्ति-स्रोत

पृथ्वी के गर्भ में छिपे अग्नि-भंडार का रोचक परिचय

गोविंद रत्नाकर

सूर्य को प्राणदाता देवता मानकर पूजना विविध देशों व जातियों में प्रचलित रहा है। सूर्य द्वारा प्रदत्त उष्णता इतनी उपादेय होती है कि सहस्रों वर्ष पहले आदि-मानव ने भी उसकी महत्ता को स्वीकार किया था। उसी प्रकार अग्नि को भी देवता माना गया, सूर्य के बाद उसी की उष्णता ने प्राणियों के जीवन को सुखद बनाया। अग्निदेव का यह भंडार अगणित वर्षों से जड़-चेतन सभी की सेवा में संलग्न है। उसका यह भंडार अनेक रूपों में प्रकट होता रहा है। पृथ्वी-गर्भ में समाहित अग्नि का भंडार इतना विशाल है कि वैज्ञानिक अनुमान लगाते हैं कि आज सारे संसार में जितनी बिजली पैदा होती है, उससे सौ गुनी ज्यादा बिजली पैदा कर सकनेवाली गरमी पृथ्वी-गर्भ से निष्कासित होकर आकाश में विलीन होती रहती है।

अरबों वर्ष से—जब से पृथ्वी का धधकता रूप ठंडा पड़ने लगा, यह गरमी पृथ्वी के बाहरी आवरण के भीतर कैद है। समय-समय पर ज्वालामुखियों के द्वारा ही नहीं, बहुत-सी जगह धरती की दरारों में से भी यह गरमी बाहर निकलती रहती है। ज्वालामुखी आग उगलते हैं, पत्थरों को भी पिघला कर बाहर फेंकते हैं, जगहजगह गरम पानी के झरने और भाप के घटाटोप निकलते पाये जाते हैं। ईंधन का भूखा यह जगत उस सारी शक्ति को यों विनष्ट होते देखकर दुखी होता है। आज का वैज्ञानिक उसे अनिवार्य कैसे मान ले? उसके लिए यह एक चुनौती है।

सबसे पहले सन १९०४ में इटली में भूगर्भ से निकलती भाप से एक पौंड होर्स पावर का इंजिन चलाया गया था, और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज वहाँ रोज ५७ लाख किलोवाट बिजली उसी भाप से पैदा की जाती है ? यह है आज के मानव का रावणीय कर्तृत्व, जो जेल में बंद अग्नि-देव से अपनी सेवा करवाता है ।

भूगर्भ में आधा मील नीचे ही ७०° फ० गरमी मिल जाती है और ज्यों–ज्यों नीचे जाया जाये, गरमी बढ़ती जाती है, कहीं-कहीं तो दो मील की गहराई पर ही २१२° फ० ताप का खौलता पानी मिलता है और तीस मील की गहराई में तो पिघला पत्थर मिलता है । अग्नि ताप अथवा उसके पानी के संयोग से बनी भाप, धरती में दरारें पाकर बाहर निकलती है और अंतरिक्ष में विलीन होती रहती है । उस 'शक्ति' को अपने उपयोग में लाने के मनुष्य के प्रयत्न निरंतर होते रहते हैं । इन प्रयत्नों में सर्वाधिक सफलता मिली है–इटली, न्यूजीलैंड और आइसलैंड में ।

आइसलैंड की राजधानी राइकजाविक है तो उत्तरी ध्रुव प्रदेश में – बरफ के साम्राज्य में; लेकिन वहाँ के गरम पानी के स्रोत ऐसे हैं कि १८०° गरमी का पानी सारे शहर को सुलभ है । उन स्रोतों से पानी नलों के जरिये सर्वत्र पहुँचाया गया है और बहुत ही कम दामों पर । इटली के टस्कानी के लारडेलो प्रदेशों में ७७ वर्ग-मील का एक भाग भूगर्भ से निकली भाप का भंडार है । यह भाप २० हजार फुट गहराई पर बनती है और ऊपर आकर लाखों किलोवाट बिजली पैदा करती है । इटली में कोयले की कमी है । इसलिए भूगर्भ की इस गरमी का उपयोग करने में इटली के प्रयास सर्वोपरि हैं ।

न्यूजीलैंड में रोटुर्वा झील के पास के गरम झरने पर्यटकों के आकर्षण के हेतु रहे हैं, किंतु उन ताप-स्रोतों का वास्तविक लाभ तो अब उठाया जा रहा है । १०-१० हजार किलोवाट शक्ति के सात बिजलीघरों के द्वारा । वैज्ञानिकों ने अंदाज लगाया है कि न्यूजीलैंड के इन ताप-क्षेत्रों में केवल एक क्षेत्र की शक्ति ही इतनी है कि उससे दस लाख किलोवाट शक्ति का उत्पादन हो सकता है । ईश्वरीय देन है उस देश के पास; लेकिन उतनी शक्ति के भोक्ता वहाँ कहाँ? चना, वहाँ दाँत नहीं, और जहाँ दाँत हैं चने नहीं–भारतवर्ष में ईंधन और बिजली शक्ति का इतना अभाव; और दूसरी तरफ यहाँ वे ताप-क्षेत्र, जिनसे बिजली घर चलाये जा सकें !

पृथ्वी पर यह 'ताप-चक्र' है, प्रशांत महासागर के चारों ओर – ज्वालामुखियों और दरारों के रूप में । दूसरा ताप-चक्र है, इजराइल से ३५०० मील दूर मध्य अफ्रीका को पार करता, जिसे 'दरारों की घाटी' का नाम दिया गया है । आइसलैंड, वेस्ट इंडीज और मेडिटेरेनियन में भी ये गहरे दर्रे पाये जाते हैं ।

भूगर्भ के पिघलते पदार्थ बहुत ही कई जगह ज्वालामुखियों के मुख से बाहर आते हैं । हजारों फुट की गहराई में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाखों वर्ष से धधकते रहे हैं। जहाँ गरम पानी के झरने मिलते हैं, वे इन्हीं आग की भट्टियों के कारण। जहाँ पानी भूतल से ऊपर नहीं उठ पाता या गरमी की अधिकता के कारण तत्काल वाष्प बन जाता है, वहाँ धरती की दरारों में से उठकर वह आकाश में विलीन होता रहता है।

ऐसे कई ताप-क्षेत्र हैं, जहाँ पानी का संसर्ग नहीं, भाप का उत्पादन नहीं। आज का वैज्ञानिक सोचता है, क्यों न पानी की धारा का उस ताप-कुंड में प्रवेश करवाया जाये। यह कोई विशेष कठिन बात नहीं है। आवश्यकता आविष्कार की जननी है; और यह ऐसा कोई बड़ा 'आविष्कार' भी नहीं।

उदाहरण के लिए अमरीका का उत्तर प्रदेश अलास्का लें। वह शीत का केंद्र है, वहाँ ईंधन का सर्वथा अभाव है; पर वहाँ 'दस हजार धूप शिखा' नामक ताप-क्षेत्र विद्यमान है। इस क्षेत्र की बहुत ही विचित्र कहानी है। सन् १९१२ में अलास्का के प्रायद्वीप में स्थित पर्वत का ७ हजार फुट ऊँचा शिखर एकाएक फूट पड़ा, २४० मील दूरी तक अढ़ाई दिन तक उसकी आग की राख से अंधकार छाया रहा। और तब से उस क्षेत्र की दरारों से भाप और गरम गैस निरंतर निकल रही है। उस शक्ति को मानव-हित में जोता जाना कोई बहुत दूर की बात नहीं है।

पौने दो लाख की बस्ती के आइसलैंड में ताप-क्षेत्रों से तीस लाख किलोवाट तक की बिजली पैदा करने की सम्भावना है, जबकि भारतवर्ष में ऐसी सम्भावना नहीं के बराबर है। आइसलैंड सरीखे प्रदेशों की इस अधिकता का 'निर्यात' जरूरतमंद मुल्कों को सम्भव हो, तो कितना ठीक रहे। यह भी सम्भव है, 'ताप' के रूप में नहीं, पर भारी पानी (हेवी वाटर) के रूप में, जो अणु-शक्ति द्वारा बिजली उत्पादन में काम आता है। *

हमारी जड़ता

एक प्रसिद्ध उपन्यासकार ने विश्वविद्यालय की एक गोष्ठी में प्रश्न किया—"बताइये, आप में से कौन लेखक बनना चाहते हैं?

सभी उपस्थित युवकों ने हाथ उठा लिये। उपन्यासकार ने देखा और कहा—"बहुत खूब! किंतु आप यहाँ खड़े समय नष्ट क्यों कर रहे हैं, जाइये और लिखिये।"

बस यहीं से हम सबकी कहानी शुरू होती है। हम सभी जीवन को गौरवमय देखना चाहते हैं; किंतु हममें से कितने हैं, जो वस्तुतः अपनी आकांक्षाओं को साकार देखने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं? इस पर तुर्रा यह कि हम अपने जीवन में बड़ा बनना चाहते हैं।

वास्तव में इसी बिंदु पर विषमता उत्पन्न होती है और हम हार जाते हैं। हमारे जीवन में निराशा का अंधकार छा जाता है। सफल व्यक्तियों के कीर्ति-शिखर हमें प्रेरणादायक न लगकर कुंठित करते हैं, यही हमारी स्वयं की जड़ता है। —नवल

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उजली रेखाएँ

यह उन दिनों की बात है, जब द्वितीय महायुद्ध के काल में राशनिंग था। हमारी आटा-मिल थी, और गल्ले का व्यापार भी। गेहूँ, चावल आदि की चोर-बाजारी जोरों पर थी, राशन-विभाग से धर-पकड़ होती; पर हम व्यापारी भी कम न थे, हमारे पास गल्ला छिपाने की ऐसी-ऐसी जगहें थीं– जिनकी किसी को हवा तक नहीं लग सकती थी।

इसी प्रकार आटा-मिलों का हाल था, गेहूँ के आटे के नाम पर उसमें जौ आदि न मालूम क्या-क्या मिलावट होती थी, यदि मिट्टी भी मिलायी जाती, तो कोई पूछनेवाला न था। इस मिलावट में राशन-विभाग के नीचे से लेकर जिला-स्तर तक के अधिकारी तथा सरकारी इन्सपेक्टर सभी मिले होते थे।

संयोग से एक रात शहर की एक बड़ी मिल में भयंकर आग लग गयी। सड़क पर चारों ओर विशाल जन-समूह तमाशा देख रहा था, आश्चर्य यह कि इस भयानक कांड के प्रति किसी के हृदय में कोई सहानुभूति नहीं थी। लोग कह रहे थे–

'पाप की कमाई टिकती नहीं'

'जो धन जैसे आता है, वैसे ही जाता है।"

लोगों के ये शब्द मेरे हृदय में तीर-से चुभ गये, मेरी आँखें खुल गयीं। मुझे अब जैसे हम गल्ले और आटे का व्यापार नहीं अपितु स्वार्थवश जनता की परिस्थिति का लाभ उठाकर मानवता का व्यापार कर रहे हैं। मैंने बिना किसी परवाह के उसी दिन से अपने यहाँ मिलावट व चोर-बाजारी बंद कर दी। –राजकुमार

मेरे एक दूर के सम्बंधी हैं। आयु होगी लगभग ४० वर्ष। बड़े ही सरल और मिलनसार। तहसील के दफ्तर में ५० रुपये महीने पर चपरासी हैं।

लगभग दस साल हुए एक बार मैं उनके यहाँ गया। जाड़े के दिन थे। उन्होंने नया-नया गरम कोट बनवाया था, जिसे पहनकर पहली बार घूमने गये।

लौटते हुए देखा कि मार्ग में एक भिखारी नंगे बदन साधारण लँगोटी बाँधे जाड़े से ठिठुर रहा है। उन्होंने जो देखा, तो उनसे न रहा गया और उन्होंने तुरंत अपना नया कोट उतार कर उस भिखारी को दे दिया। मैंने कई बार कहा कि आप यह क्या करते हैं; पर उन्होंने एक न सुनी।

और तब से आज तक मैंने उन्हें कभी कोट पहनते नहीं देखा। जूता तो उन्होंने कभी पहना ही नहीं। उस दिन की घटना के बाद तो उनके प्रति मेरे मन में श्रद्धा-भक्ति हो गयी है। –बाबूलाल शर्मा, भिलाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बल्ला धीमर

सेठ गोविंददास

उसे बौना तो नहीं कहा जा सकता; पर बौने से शायद थोड़ा ही ऊँचा होगा वह दुबला-पतला मरियल-सा। पर इतने पर भी कामकाज में ऐसा मेहनती कि मानो उसके शरीर का उसके काम से कोई संम्बध ही न हो। नित्य सुबह ही आ जाता और चूँकि उस समय मुनीम-गुमाश्ते और नौकर-चाकर हमारे चौके में ही खाते थे, अतः वह भी वहीं खाता-पीता और आधी रात को घर जाता। कामकाज की पटुता के साथ ही उसकी बोलचाल और व्यवहार भी बड़ा सभ्य था।

बल्ला वर्ष-भर में केवल दो बार नौ-नौ दिन की छुट्टियाँ लेता — चैत्र और आश्विन के नवरात्र में। शेष समय वह कभी गैरहाजिर न होता। जो बीमारी गैरहाजिरी का एक कारण होती है, वह बीमारी उसके दुबले-पतले मरियल होते हुए भी कभी उसके पास न फटकती। उसे कोई व्यसन भी न था; यहाँ तक कि वह चिलम और बीड़ी भी न पीता था। लेकिन नवरात्र के अठारह दिनों में वह इतनी अधिक महुए की शराब पीता कि शायद पूरे होश में भी न रहता। वर्ष-भर शराब को जो छूना भी पाप समझता और शराब की आदत न होने पर भी वह नौ-नौ दिन तक इस तरह कैसे शराब पी लेता था, यह एक आश्चर्य की बात थी। और नौ दिन शराब पीकर दसवें दिन फिर वही हाल, शराब छूना भी पाप!

जबलपुर में हिन्दुओं के मेले प्रायः हनुमानताल के किनारे होते हैं। अनंत-चतुर्दशी को गणेशजी की मूर्त्तियाँ और दशहरे पर कालीजी की प्रतिमाओं का विसर्जन यहीं होता है। रामनवमी और आश्विन शुक्ल नौमी को जवारे का मेला भी यहीं होता है। जवारे के जुलूस में महिलाओं के सिर पर घट और दोने रहते हैं। पुरुष समूह में गाजे-बाजे से भक्तें (एक तरह के गीत) गाते हुए निकलते हैं। इन भक्तों (गीतों) का पहला चरण इस प्रकार है:

तोरे नथने में नाचे मोर
सुघर बेन मालनिया
कहाँ लगा दऊँ बेला चमेली
कहाँ लगाऊँ अनार।
सुघर धन मालनिया।
अँगना लगा दऊँ मैया बेला चमेली
फरका लगाऊँ अनार।
सुघर धन मालनिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी भाँति दूसरा चरण यह है—

देवी मोरे अँगना आयी
निहुर के पैयां लागूँ ।
काहा देख मैया अँगना आयी
काहा देख मुसक्यानी
निहुर के पैयां लागूँ ।
दूधा देख मैया अँगना आयी
पूता देख मुसक्यानी
निहुर के पैयां लागूँ ।

इस अवसर पर एक विचित्र बात होती है । कुछ पुरुषों के गालों के आर-पार लोह-त्रिशूल निकले रहते हैं, जिन्हें गाल छेदे हुए पुरुष के दोनों ओर एक-एक या दो-दो व्यक्ति सम्भाले रहते हैं । इन्हें बाना कहते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि त्रिशूल छेदते और निकालते समय खून नहीं निकलता और न त्रिशूल निकालने के बाद घाव ही रहता । किसी-किसी की जीभ भी इसी प्रकार छेदी जाती है । जुलूस में कई महिलाओं और पुरुषों के सिर पर देवी आती है, जिसे 'भाव आना' कहतेहैं ।

बल्ला धीमर दोनों नवरात्रों के प्रथम दिन अपने घर में घटों और दोनों में जवारे बोता । जवारे रखनेवालों में वह एक पंडा (मुखिया) था । बल्ला नौ दिन तक निराहार व्रत करता और देवी के प्रसाद रूप में सिर्फ शराब पीता । नौ दिन तक उसके घर में खूब गाना-बजाना, देवी की भक्तें होतीं । नवें दिन बल्ला के मित्र, सम्बंधी और मुहल्ले के कुछ लोग धूम-धाम से उसके जवारे निकालते । उस समय वह त्रिशूल से अपने गाल और जीभ छिद-वाता । जब कभी बल्ला अपने गाल और जीभ छिदवाता, तब हम बड़े आश्चर्य से उसका यह कृत्य देखते और एक बात पर तो उस समय ही नहीं; आज भी हमें आश्चर्य है कि इतने बड़े आपरेशन में खून कैसे नहीं निकलता और त्रिशूल के निकल जाने पर घाव कैसे नहीं होता ।

जवारों का यह त्योहार शायद बुंदेल-खंड में ही होता है । देवी के उस दिवस पर, जहाँ जवारे रखे जाते हैं तथा देवी के नाम पर अग्नि से प्रज्वलित एक स्थल (जिसे खप्पड़ कहते हैं) रखा रहता है, उस खप्पड़ के एक ओर देवी का त्रिशूल रखा रहता है तथा पूजा की अन्य सामग्री रहती है, जिसमें प्रधान रूप से लाल तूस, नारि-यल, धूप, घी, यव, तिल तथा अन्य बहुत पदार्थ होते हैं । इस सारे सामान को विधि-वत् रखकर बल्ला बड़े भक्ति-भाव से देवी की पूजा करता । इस पूजन के अवसर बल्ला ज्यों ही देवी को घी की आहुति दे भोग लगाता, देवी उसके सिर पर आ जाती । बल्ला को जब भाव आता, उसकी विचित्र अवस्था हो जाती । मुखमंडल और शरीर के अंग-प्रत्यंगों से जो नसें हैं वे हिलते-डुलते रहते, ऐसा मालूम पड़ता जैसे यह हमारे यहाँ काम करनेवाला दुबला पतला बल्ला धीमर न होकर कोई दूसरा ही व्यक्ति है और जो उस निर्बल-दिखने बल्ला की अपेक्षा काफी सशक्त और तेजस्वी है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बल्ला उकड़ूँ बैठा अपने दोनों हाथ जमीन पर टेक जोर-जोर से अपना सिर हिला-हिला उभाने (जोर-जोर से चिल्ला-कर बोलने) लगता। उसके इस उभाने में जो भाव आते, उनमें उसके सिर केवल कोई एक ही देवी-देवता न आकर बारी-बारी से अनेक देवी और देवता आते। उसके पास बैठे जिज्ञासु और श्रद्धालु भक्त उससे अपनी आरजू, मिन्नतें और मनौतियाँ करते और बल्ला तदनुसार उनका उत्तर उसके सिर आयी देवी या देवता के स्वर में देता। उदाहरण के लिए 'ओच्छां खेरा-पती माई की,' 'ओच्छां हरदौल लला की,' 'ओच्छां मरहई माता की,' 'ओच्छां काल भैरव की,' 'ओच्छां गाड़ीवान् की,' 'ओच्छां चंडी माता की,' 'ओच्छां काली माता की,' के नाम जब वह बारी-बारी से बोलता और लोगों के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दे किसी को प्रसाद, किसी को भभूत दे उनके दुःख-दारिद्र दूर होनें का आशीर्वाद देता, तब ऐसा मालूम पड़ता, मानो वह कोई सिद्ध पुरुष बैठा है।

बल्ला के उभाने का यह दृश्य कभी-कभी आधा-आधा घंटा तक चलता और आधा-आधा घंटा तक बल्ला बराबर अपनी उसी मुद्रा में अपना सिर और हाथ-पैर हिलाता रहता। अनेक बार तो खड़ा होकर जोर-जोर से कूदने लगता और अपने दोनों हाथ-पैर फटकारते हुए अपने सिर आये देवी या देवता का 'ओच्छां' के साथ नाम ले उसका परिचय देता। आस-पास खड़े लोग उस वक्त बल्ला को सम्हालते और उसके सिर आये देवी या देवता से शांति की अपील करते। अनेक बार कोई ऐसे रुष्ट देव भी आते, जो सम्भाले न सम्भलते और अपने प्रतीक रूप बल्ला के द्वारा जब तक उन्हें निकट के लोगों से बकरा, मेढ़ा अथवा घिटला (सूअर का बच्चा) बलि में चढ़ाने के लिए आश्वासन न मिल जाता, शांत न होते।

कभी-कभी हम लोग नवरात्र में बल्ला के घर जाते। उसके सिर पर जब देवी आती, तब हम भी उसको साष्टांग दंडवत कर उसके चरणों की धूल अपने मस्तक पर लगाते और अनेक बार जब वह जोर-शोर से उभाने लगता, तो हम लोग भयभीत होकर भाग भी आते। पर भागने पर भी कई दिन तक हमारे मन में देवी का भय लगा रहता।

बल्ला ने हमारे घर में लगभग पचास वर्ष तक बड़ी ईमानदारी और तत्परता के साथ नौकरी की। वल्लभ सम्प्रदाय में एका-दशी की मृत्यु सबसे अधिक पुण्यमय मृत्यु मानी जाती है। बल्ला एकादशी को स्वर्ग सिधारा, जिस पर कुछ आश्चर्य-भरे स्वर में पिताजी ने माताजी से कहा-" बल्ला धीमर को एकादशी मिली है!" इस पर माताजी बोली -" भगवान् के घर में जात-पाँत छोटे-बड़े का कोई भेद नहीं। जो गति ब्राह्मणों को भी प्राप्त नहीं होती वह शूद्र भी अपनी करनी से सहज ही पा लेता है।" *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

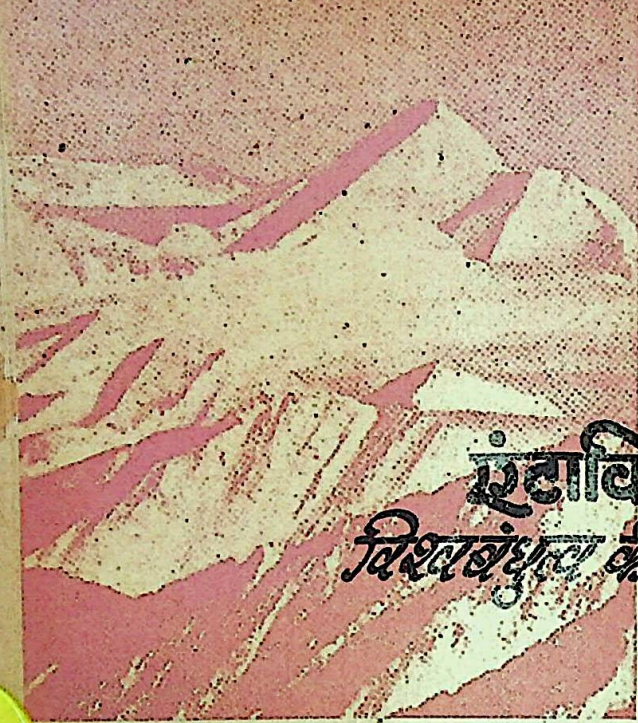

पृथ्वी के छठे महाद्वीप का सरल-संक्षिप्त परिचय-जहाँ अणुशक्ति के शांतिमय उपयोग की संभावनाएँ निहित हैं।

एंटार्क्टिका : विश्वबंधुत्व की प्रयोगशाला

विनोद मेघाणी

पृथ्वी के मेरुदंड के दक्षिणी छोर पर पहुँचने की रोंगटे खड़े कर देनेवाली होड़ में एमंडसन जीत गया। ..... इस बात को हुए आधी शताब्दी बीत गयी। उदारतापूर्वक अपनी हार स्वीकार कर, एक मास बाद दक्षिण ध्रुव में स्काट चल बसा। ..... उसे बीते भी पचास साल व्यतीत हो गये। इसके बाद दुनिया में अनेक बातें हो चुकी हैं। दो बार विश्वयुद्ध का दावानल फैल चुका है। किंतु दक्षिण-ध्रुव की बर्फ में आज भी स्काट-एमंडसन के साहस, धैर्य, अनुशासनप्रियता और जिंदादिली की कथाएँ वैसी-की-वैसी दबी पड़ी हैं। बाद की आधी शताब्दी में विश्वबंधुत्व और उदारता की उस कथा पर से परदा नहीं उठा है। जब वह उठेगा, तो एंटार्क्टिका के शिखर और भी धवल बनेंगे।

यूरोप और उत्तरी अमरीका का सम्मिलित क्षेत्रफल पाँच लाख वर्गमील है। इतना ही विशाल एंटार्क्टिका महाद्वीप लगभग ढाई मील गहरी बर्फ से ढँका हुआ है। उसके चारों ओर जो समुद्र बर्फ बनकर मीलों गहराई तक जम गया है, उसे भी धरती मानें, तो एंटार्क्टिका पृथ्वी का लगभग चौथा भाग हो जाये।

यह है पृथ्वी का छठा महाद्वीप एंटार्क्टिका—दुनिया का सब से ऊँचा और सबसे उपेक्षित महाद्वीप। इसके १४,०००,००० वर्ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊँचे हिमशिखर आसमान को छूते हैं। यहाँ पारा ऋण ८८ अंश शतांश तक गिर जाता है। यहाँ हवा बहती ही नहीं, फूत्कार करती है। यहाँ ठंड बदन के आर-पार निकल जाती है। यहाँ वनस्पति का नाम-निशान नहीं।

सबसे अजीब बात यह है कि प्रकृति ने दक्षिण ध्रुव महाद्वीप को ऐसा वर्तुलाकार बनाया है, मानो किसी ने ध्रुव-बिंदु पर परकार रखकर एक वृत्त खींच दिया हो। फिर भी एंटार्क्टिका का नक्शा बनाने में मनुष्य को बड़ी मेहनत करनी पड़ रही है। वैसे भी पाँच लाख वर्गमील के क्षेत्र का नक्शा बनाना कोई सरल काम नहीं। फिर एंटार्क्टिका तो बर्फीले समुद्र से घिरा है। भारी विस्फोट करके, उसकी लहरें समुद्र की बर्फ और एंटार्क्टिका की सरहद से टकराकर कितने समय में लौट आती हैं, इसका हिसाब लगाकर और लहरों की गति का नाप निकालकर उसके आधार पर इस महाद्वीप की सीमा निर्धारित की गयी है।

एंटार्क्टिका की बर्फ ने धरती के बचपन की बहुत-सी कहानियाँ अपने भीतर छिपा रखी हैं। ऋतुमान के उतार-चढ़ाव की ये जादू-भरी कथाएँ बहुत धीरे-धीरे प्रकट होती हैं। लेकिन अब रेडियो-आइसोटोप की मदद से एंटार्क्टिका के ऋतुगीत फिर से गूंजने लगे हैं।

अगर एंटार्क्टिका की बर्फ पिघल जाये, तो प्रलय हो जाये, अगर उसकी बर्फ चारों ओर अपने हाथ-पाँव फैलाने लगे, तो धरती वीरान हो जाये। आजकल इस बर्फ का झुकाव किस ओर है, यह जानने का प्रयत्न चल रहा है। इस अनुसंधान के सिलसिले में इन बातों का हिसाब लगाया जा रहा है कि चारों ओर से कितनी भाप आती है, कितनी बर्फ हवा से उड़ जाती है, कितनी चट्टानें समुद्र के चरणों में झुक जातीं हैं, उष्ण जल-प्रवाहों के पास कितनी बर्फ पिघल जाती है।

किंतु आज के मानव की सबसे बड़ी आकांक्षा है अवकाश-अनुसंधान। यह भी एंटार्क्टिका में हो रहा है। एंटार्क्टिका एक विशाल प्रयोगशाला बन गया है।

ये अनुसंधान कौन कर रहा है? किस महादेश का एंटार्क्टिका पर प्रभुत्व है? एंटार्क्टिका का कोई मालिक नहीं। यहाँ अमरीकी-रूसी, काले-गोरे का भेदभाव मिट्टी में मिल गया है। एक-दूसरे के कट्टर शत्रु रूस और अमरीका यहाँ दोस्त बन गये हैं। एशिया और अफ्रीका के छोटे-मोटे देशों ने भी सहयोग का हाथ बढ़ाया है। इस प्रकार विभिन्न महाद्वीपों के बारह राष्ट्रों ने कैप्टन स्काट की कब्र पर वैज्ञानिक

एंटार्क्टिका के समुद्री-पक्षियों की रमणीय सृष्टि का राजा : पेंग्विन

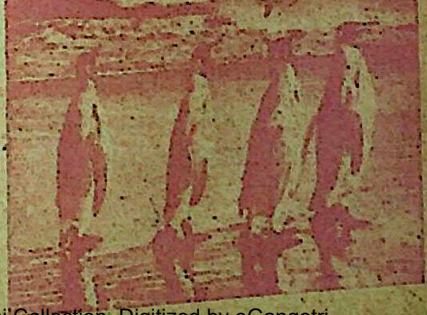

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुसंधान के लिए पारस्परिक सहयोग और सहकार का समझौता किया है।

सन् १९५९ की पहली दिसम्बर को वाशिंगटन में इस संधि-पत्र पर दस्तखत हुए। संधि की मुख्य बातें ये हैं —

१. दुनिया का प्रत्येक देश वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए एंटार्क्टिका जा सकता है; २. इन बारह देशों में से कोई देश एंटार्क्टिका का उपयोग विध्वंसकारी कार्यों के लिए नहीं करेगा; ३. इस भूमि पर अणु-प्रयोग करने की मनाही होगी; ४. कोई भी देश एंटार्क्टिका में हानिकारक रेडियो-एक्टिव कचरा नहीं फेंकेगा; ५. प्रत्येक देश अपने वैज्ञानिक अनुसंधान की जानकारी दूसरे देशों को देगा; ६. कोई भी देश एंटार्क्टिका पर सार्वभौम सत्ता का दावा नहीं कर सकेगा।

अनुसंधानों का आरम्भ १९५७-५८ में हुआ। वह साल अंतर्राष्ट्रीय भूभौतिक-वर्ष के रूप में मनाया गया था। विश्व-इतिहास में शायद पहली बार मानव ने राजनीतिक विवादों को दूर रखकर, सृष्टि के रहस्यों को खोजने के लिए सहयोग की मशाल प्रज्वलित की। अंतर्राष्ट्रीय भूभौतिक वर्ष मनाने का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी के भेद खोलना था।

उत्तरी गोलार्द्ध की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने का काम उतना कठिन नहीं है, जितना कि दक्षिणी गोलार्द्ध की जानकारी प्राप्त करना। दक्षिणी गोलार्द्ध के बहुत कम देशों ने वैज्ञानिक प्रगति की है। वैज्ञानिकों की दृष्टि एंटार्क्टिका पर पड़ी; क्योंकि जहाँ सभ्यता अविकसित हो, वहाँ अनुसंधान करना बहुत सरल बन जाता है। परिणामस्वरूप एंटार्क्टिका-संधि की गयी। देश-विदेश के वैज्ञानिकों के दल सत्य की खोज में एंटार्क्टिका की ओर चल पड़े।

मशीनें लगायी गयीं, खुदवीनें रखी गयीं, मीटरों के काँटे डोलने लगे। उसका हिसाब रखा गया और उस हिसाब-किताब को जाँचने व उसकी व्याख्या करने के लिए वैज्ञानिक बारबार इकट्ठे होने लगे। वीरान हिम-विस्तार में शांतिमय सह-अस्तित्व का स्रोत फूट निकला। ऋतु-समाचार घोषित करने के लिए रेडियो-स्टेशन बने। केवल आपत्ति में ही नहीं, सामान्य आवश्यकता में भी सबने एक-दूसरे का हाथ बँटाया।

एंटार्क्टिका की ठंड की कल्पना से ही हमारे दाँत बजने लग जाते हैं। किंतु वास्तव में वहाँ रहना उतना कठिन काम नहीं। शरीर को अपने भीतर की गरमी को सुरक्षित रखने की आदत पड़ जाती है। वहाँ शरीर को गरम रखने के लिए ज्यादा व्यायाम करना पड़ता है, ऐसी बात नहीं। वस्तुतः ज्यादा व्यायाम हानिकारक हो सकता है। उससे पसीना छूटता है और इस पसीने के वाष्पीकरण से शरीर और भी ठंडा हो जाता है, और पसीना बर्फ बनकर कपड़ों पर जम जाता है और कपड़े अकड़ जाते हैं।

लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि एंटा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्टिका पर जीवन बहुत सुखमय है। वहाँ छोटे उपकरण आदि चीजें जमीन पर रखते ही हवा के साथ उड़ती बर्फ के नीचे दबकर अदृश्य हो जाती हैं। जब कुहरा छा जाये, या बर्फ उड़ रही हो, तब तो आँखें बिलकुल काम नहीं देतीं। कभी-कभी सफेद बादल छा जाते हैं। तब सफेद बर्फ से ढकी हुई धरती और आकाश एकाकार हो जाते हैं। कभी-कभी बर्फ मकानों और पहाड़ों को गायब कर देती है। जोरदार बर्फीली वायु शरीर को ठंडा कर देती है। सूर्य से या हिम से त्वचा और होठ जलते हैं। वैसे यहाँ तापमान गरमी के दिनों में भी शून्य शतांश से ऊपर नहीं होता।

कितना भी पौष्टिक भोजन क्यों न लें, ऐसे ऊँचे स्थानों पर अनवरत काम करने से शरीर का वजन कम होता जाता है। खून की उल्टी होती है। बर्फ से प्रतिक्षिप्त होते हुए सूर्य के प्रकाश से आँखें चौंधिया जाती हैं। जरा-सी असावधानी से दृष्टि खोने का डर रहता है। भयंकर ठंड के बावजूद दक्षिण-ध्रुव पर आग का भय बहुत ज्यादा होता है। हवा के कारण आग को फैलने में जरा भी देर नहीं लगती। और शरीर पर १५-१५ सेर वजन के कपड़े पहनकर उसका सामना भी तो नहीं किया जा सकता।

दूसरी ओर है दक्षिण-ध्रुव का अद्भुत सौंदर्य और शांति। कई-कई दिनों तक चलनेवाले सूर्यास्त की सुषमा का रसपान करते आँखें तो थकती ही नहीं। राजनीतिक अभय-दान और मानसिक शांति के कारण खूब मुस्तैदी से काम करने का अवसर मिलता है।

मेरुप्रभा के विविध रूपों की तो बात ही क्या? धीरे-धीरे अवकाश में विद्युत् झरती है। ऐसे दिव्य सौंदर्य की सृष्टि होती है कि उसके समक्ष स्वर्ग की कल्पना भी फीकी पड़ जाये। किरणों के रंगीन फव्वारे उड़ते हैं। कभी-कभी आधी रात को आकाश में लालिमा छा जाती है और सूर्योदय की अरुणिमा से मन प्रसन्न हो जाता है। कभी ऐसा लगता है कि आकाश में छेद हो गया है और उसमें से लाल, सुनहले, नीले और हरे रंगों का प्रपात गिर रहा है। कभी-कभी नभ-पट पर रंगीन परदे गिरते हैं और फिर उठते हैं।

आज तो वहाँ की घोर निर्जनता समाप्त हो गयी। ट्रैक्टर और मोटरों का आना-जाना बढ़ गया है। जहाँ पानी बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता था, वहाँ गरम पानी के नल हैं। रेडियो से बाहर की दुनिया के साथ सम्पर्क रहता है। मोमबत्ती और टिमटिमाते दिये की जगह बिजली की रोशनी ने ले ली है। यहाँ अणुशक्ति का शांतिमय उपयोग होगा।

वह समय दूर नहीं, जब युद्ध और अणु-बमों की विभीषिका से संत्रस्त मानव एंटार्क्टिका आकर शांति के घूंट पियेगा, कण-कण में सौंदर्य का सिंचन करेगा; जीवन को रंगीन बनायेगा; साहस, शौर्य और बलिदान के पाठ पढ़ेगा; और मैत्री एवं विश्वबंधुत्व का पाथेय लेकर लौटेगा।*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकता-गीत

एकता हुई जहाँ, सुख वहीं समा गया।
लहर मिल के बह रही, नाम सिंधु पा गया॥

झुंड बाँध कर किरन, ज्योति सब जगह भरे,
नाम सूर्य का हुआ, काम रोशनी करे,
मिल के जो चला जहाँ, वह सफलता पा गया।

एक-एक धूलि कन, मिल के खेत बन गये,
जिन पे फस्ल झूमती, रूप धर नये-नये,
रंग स्वाद एक संग, फूल फल में आ गया।

मेघ भी उमड़-घुमड़, संग घिर के छा रहे,
शक्ति तभी मेल की, धार में वे पा रहे
बूँद को अलग-अलग, कब बरसना भा गया।

बजते साज हैं, तभी जब, कि सुर का मेल हो
मन मिले बिना कहीं, प्रेम का न खेल हो
पांत बाँध जो चला, राह वह चला गया।
संग जोड़ जो चला, मंजिलें चला गया॥

— सुमित्राकुमारी सिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन की संध्या में

ढलती उम्र में होनेवाले मानसिक उतार-चढ़ावों का सूक्ष्म विवेचन

न० वि० गाडगिल

एक चीनी दार्शनिक ने कहा है कि मानव दो कोटियों में विभाजित किया जा सकता है। पहली कोटि में वे व्यक्ति आते हैं, जो महत्वाकांक्षी होते हैं और दूसरी कोटि में वे आते हैं, जिनकी तृषित आँखें सदा लाभ पर लगी रहती हैं।

अच्छे नाम की अभिलाषा व्यक्ति में बचपन से ही होती है। बच्चे की प्रशंसा कीजिये, वह मुस्करा उठता है और तिरस्कार कीजिये, तो वह रोने लगता है। महत्वाकांक्षी व्यक्ति को जीवन की संध्या में इस बात की तुष्टि रहती है कि उसके नाम पर कोई धब्बा नहीं लगा है और एक अच्छे आदमी के रूप में उसने ख्याति प्राप्त की है।

सदा लाभ की आकांक्षा भी व्यक्ति में वस्तुतः बचपन में ही व्यक्त हो जाती है और मृत्यु-शैय्या पर पड़े - पड़े ऐसा व्यक्ति अपनी कामना नहीं छोड़ता। जीवन-भर उसने चाहे जितना काम कर जोड़ा हो; पर मरते दम तक वह सदा इसी बात का इच्छुक रहता है कि उसमें वह कैसे और कितनी अभिवृद्धि कर ले।

एक लेखक ने इन दोनों कोटियों का अंतर व्यक्त करते हुए कहा है –" महत्वाकांक्षी मस्तिष्क पूर्ण विकास प्राप्त करने पर व्यक्ति के सीने में डैने लगा देता है; जबकि लोभ-वृत्ति व्यक्ति की थाली को काँटे से भर देती है।"

मानव-मस्तिष्क का मार्ग निर्धारण करनेवाली भौतिक तथा मानसिक कितनी ही चीजें हैं। उदाहरण के लिए वंश-परम्परा ही लीजिये। वंश-परम्परा व्यक्ति के केवल भौतिक जीवन को ही नहीं; नैतिक और मानसिक जीवन का भी बहुत कुछ रूप निर्धारित करती है। जिस प्रकार वंश-परम्परा से व्यक्ति का आचरण निर्धारित होता है; उसी प्रकार नस्ल भी व्यक्ति के जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत करने में बड़ा हाथ बँटाती है। किंतु इतिहास से सम्बद्ध इस कसौटी में बहुत कुछ हेर-फेर की सम्भावना है। यदि व्यक्ति का वातावरण बदल जाये, तो उसका दृष्टिकोण भी बदल जाता है; और समाज का वातावरण बदलने का श्रेय बहुत कुछ नेता का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है ।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हर व्यक्ति को परम्परा से मूल्यांकन की एक निश्चित कसौटी, नैतिकता का एक स्तर और आचरण सम्बंधी एक आदर्श प्राप्त होता है और व्यक्ति को अपनी स्वतंत्र जीवन-यात्रा उसी पूंजी को लेकर प्रारम्भ करनी पड़ती है ।

वर्तमान शताब्दि के प्रारम्भ में, जब मेरा जीवन अपना रूप धारण कर रहा था, हमारे सम्मुख आदर्श और नैतिकता का मूल्य अधिक था। आज के बदले हुए युग में ये दोनों गुण बच्चों की दृष्टि से विलुप्त-से हो गये हैं । प्रथम महायुद्ध से पूर्व सामाजिक जीवन का उद्देश्य जन-सेवा हुआ करता था; पर आज आधी शताब्दि के बाद समाज-सेवा का कार्य भी 'येन-केन प्रकारेण' अपना पौ बारह करने का हो गया है । उस समय नेता प्रायः राजनीति को नैतिकता के साँचे में ढालने का प्रयास करता था; पर आज राजनीति का रूप भी व्यावसायिक हो गया है और अब उसमें प्रवेश करने के लिए न तो विद्वत्ता की आवश्यकता है और न आचरण-सम्बंधी खरेपन की । वरन् आज तो अपेक्षा इस बात की है कि वह व्यक्ति अवसर देखकर अपनी अंतरात्मा को में कितना समर्थ है ।

पहले वृद्ध अपना स्थान रिक्त कर युवकों को देते थे और युवकों के हृदय वृद्धों के प्रति आदर का भाव होता था वे युवकों के लिए प्रेरणा-स्रोत होते पर अब समय इतना बदल गया कि वृद्धों को अनादर की दृष्टि से देखते उन्हें पराजित भावना से युक्त बनाते और समाज के लिए उन्हें भार-स्वरूप मानते हैं।

जीवन की संध्या में
चित्र० एल्डो बोरजोनी-निर्मित एक पोर्ट्रेट की अनुकृति

विकास का सिद्धांत क्रमिक प्रक्रिया है समय ही यह निर्णय करने का अधिकारी है किसी निश्चित् काल में कोई वस्तु उचित अथवा अनुचित । ईश्वर निरंतर बहनेवाली धारा है और यद्यपि सभी चीजें उसमें प्रवाहित हो जाती हैं; पर ऐसी चीजें भी हैं, जो ईश्वर के समय से प्रभावित नहीं होतीं और की तरह अचल रह जाती हैं । काल धारा के प्रभाव से युक्त होने पर एक ऐसी शाश्वतता है, जो संघर्ष में उठाकर भी चमकती है और किसी के इतिहास के संतुलन की क्षमता उसी में होती है ।

आज आवश्यकता इस बात की है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व के लिए जो भी कल्याणकर हो, उसे सहानुभूति पूर्ण दृष्टि से ग्रहण किया जाये। प्रगतिवादी देश में सच्ची बौद्धिकता अथवा सच्चे शौर्य का आदर होता आया है। धीमान का चेहरा-मोहरा चाहे जैसा हो; पर देशहित के लिए उसका उपयोग किया ही जाता है।

जैसे-जैसे समाज बदलता है, आदमी भी बदलता रहता है और जैसे-जैसे आदमी बदलता रहता है, समाज भी बदलता है। मनुष्य समाज में पैदा होता है; पर यह निर्णय करना उसके अधिकार से परे है कि वह किस वातावरण अथवा समाज में जन्म ले। मूल्यांकन की तत्कालीन कसौटी और नैतिकता के आदर्श से वह प्रभावित अवश्य होता है; पर इसके बावजूद वह अपने व्यक्तित्व का उपयोग अपने ढंग से करता है। जिस समाज में व्यक्ति को अपने विचार प्रकट करने की पूरी छूट हो; उस समाज में निश्चय ही मनुष्य के व्यक्तित्व के प्रसार और उच्चतम आदर्श तक पहुँचने की गुंजाइश भी अधिक होती है।

कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जो अपने वातावरण को नैतिक दृष्टि से अथवा भौतिक दृष्टि से प्रभावित नहीं करना चाहते—वे इस कार्य को दुरूह मानते हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति हैं, जो दृढ़ होकर अपने मार्ग का निर्धारण करते हैं; पर धारा-प्रतिधारा के प्रवाह में ही बहकर अपने लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को सिर उठाने तक का अवसर नहीं मिलता और वे बीच में ही डूब जाते हैं। लेकिन इन दोनों से भिन्न कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जो दृढ़ मन से धारा के विरुद्ध गति में बढ़ने का प्रयास करते हैं। धाराएँ उन्हें वापस किनारे पर पहुँचा देती हैं; किंतु उससे वे हताश नहीं होते और एक दिन वे सफल होते हैं और समाज पर उनका प्रभाव पड़ता है। और चौथी कोटि के वे व्यक्ति हैं, जो दृढ़-मन तो होते हैं; पर धारा के विरुद्ध नहीं जाना चाहते। वे धारा की दिशा को नियंत्रित करने की आकांक्षा रखते हैं; किंतु ऐसे व्यक्तियों को प्रायः दिशा-भ्रम हो जाता है और वे स्वयमेव अपना अगला कदम भी तय नहीं कर पाते। समाज की

सूर्यास्त

मुट्ठियों में पिता का आशीष बाँधे
किसी उलझे सूत्र के उलझाव में
फँसता-उलझता मैं
जुगनुओं से भरी सड़कों से गुजरता
घोंसलों में पिता के आशीष रखता
लौट जाता हूँ पुनः
उस ताड़-वन के बीच
सूनी कन्दराओं की तरफ
अजाने-असंख्य सूरज साथियों के पास।

.....

शायद, झेलने को
आह, चुप-सौगंध...।

—जगदीशनारायण श्रीवास्तव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्नति वास्तव में इन सभी कोटियों के व्यक्तियों के सम्मिलित प्रयास के फल-स्वरूप होती है।

मनुष्य निरंतर अपनी इच्छा और कार्य-क्षमता के बीच एक समझौते का प्रयास किया करता है। इन दोनों के बीच की खाई बड़ी जबरदस्त है; पर व्यक्ति अति-वादी न होकर दोनों छोरों के बीच में ही रहना पसंद करता है। यह संदेह रहित है कि आदर्शवादी व्यक्ति समाज को बदलने का प्रयास करता है; पर वास्तव में इस प्रक्रिया में वह स्वयं बदल जाता है।

इस जगत् में ऐसे लोग बहुत कम हैं, जो किसी प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करते हों। उनसे कम लोग सोचकर तद्रूप कार्य करते हैं और उनसे भी कम व्यक्ति ऐसे हैं, जो सोचकर तद्रूप कार्य करके अपनी कल्पना को साकार कर दिखायें; लेकिन ऐसे क्रियाशील व्यक्तियों की जीवन-संध्या बड़ी थकान देनेवाली होती है। जीवन के प्रारम्भ में उनमें एक उत्साह रहता है। वय के मध्यकाल में वे [illegible] रत रहते हैं, तो उसमें उन्हें एक [illegible] संतोष प्राप्त होता है। असफलताएँ [illegible] सफलता की प्रेरणा देती रहती हैं। [illegible] संध्या में वे इस असमंजस में पड़ [illegible] कि वे संघर्ष जारी रखें या अवसर [illegible] करके विश्राम लें।

इन दो विकल्पों में से एक को [illegible] निश्चय ही बड़ा कठिन है। ऐसे [illegible] को यौवन दूर दिखलायी पड़ता है। [illegible] कारण काल नहीं, वरन् वर्तमान में [illegible] करनेवाले उसके अनुभव तथा [illegible] विचार हैं। वृद्धावस्था का उत्साह [illegible] धार की छुरी के समान होता है। उस [illegible] व्यक्ति का उत्साह, जो कभी नियंत्र[illegible] परे था, ठंडा पड़ जाता है। विचार [illegible] को भार-सा लगने लगता है। तब [illegible] नये विचार का अर्थ उसके लिए एक [illegible] बोझ हो जाता है। वह व्यक्ति के [illegible] दुःख का सृजन करता है और उसके [illegible] में शंका प्रवेश कर जाती है। *

सुराही का पानी

एक दिन रवींद्रनाथ के घर पर जाकर देखा, एक टेबुल पर काफी झुककर [illegible] लिख रहे हैं। मुझे देखकर बोले—"बैठो!" उनके उस झुके हुए शरीर को देखकर [illegible] लगा, जैसे इस तरह लिखने में उन्हें काफी तकलीफ हो रही है।

मैंने कहा—"आजकल तो बाजार में तरह-तरह की टेबुलें तथा डेस्कें मिलती [illegible] कुर्सी का सिरहाना लेकर भी आराम से लिखा जा सकता है।"

उन्होंने उत्तर में कहा था—"वे सब टेबुलें एवं डेस्कें मेरे पास भी हैं। किंतु [illegible] इसी तरह झुककर लिखना पड़ता है। सुराही में पानी कम हो गया है न, इसलिए [illegible] लुढ़काये कुछ भी नहीं निकलता।"

—'बनफूल'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक वाक्य जीवन-दीप बन गया

जीवन के क्रांतिकारी परिवर्तन की चार आपबीती कहानियाँ

प्रायः चालीस वर्ष पूर्व हम लोग जयपुर में झूमनलाल की बगीची में रहा करते थे। वहीं एक कश्मीरी मौलवी साहब भी रहते थे; लम्बा कद, गौर वर्ण, सफेद लम्बी दाढ़ी, बड़ी ही भव्य आकृति। मोहल्ले के हम सब बच्चे इकट्ठे ही स्कूल जाते थे; और जाहिर है कि हम लोगों की बातचीत का विषय भी बचकाना ही होता था। एक दिन बातचीत का विषय छिड़ा जादू पर! हम लोग यही बातें करते जा रहे थे कि यदि वशीकरण मंत्र सिद्ध हो जाये, तो कितना आनंद रहे। ऊँचे नम्बरों से काम होने के लिए पढ़ने के झंझट से भी मुक्ति मिले और साथ ही मास्टर साहब की लचकदार बेंत से हमेशा के लिए छुटकारा भी मिल जाये।

हमारी इसी गरमागरम बहस में कि यदि ऐसा मंत्र सिद्ध हो जाये, तो हम लोग अपने-अपने लिए क्या-क्या करें, एकाएक पीछे से आवाज आयी—"बेटा! तुम लोग वशीकरण मंत्र सीखना चाहते हो?" पीछे मुड़कर देखा, मौलवी साहब थे। हम लोगों का विश्वास था कि मौलवी होने के नाते वे जरूर ही जादू जानते होंगे, सो बड़े उत्साह से हम लोग बोल उठे—"हाँ, मौलवी साहब, यह मंत्र हमें सिखा दीजिये।" मौलवी साहब बोले—"देखो बेटा! सबसे बड़ा वशीकरण मंत्र है, मीठा बोलो। मीठा बोलोगे, तो सबको बस में कर लोगे।" वह स्निग्ध वाणी, भव्य प्रकृति और अमूल्य सीख आज भी मन में ताजी-सी बसी है, जिसने मेरे अपने ही नहीं, औरों के जीवन में भी सुगंध पैदा की है।

—राजेन्द्र नागर

★

मेरी रुचि प्रारम्भ ही से भारत के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति के अध्ययन में रही है। इसी विषय में विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एम० ए० करके प्रमादवश मैं किसी अन्य क्षेत्र में कार्य करने की सोच रहा था और मेरा खयाल था कि कुछ समय बाद फिर अपने अध्ययन की दिशा में लौट जाऊँगा। मैंने पिताजी से जब इस विषय में राय ली, तो उन्होंने समझाया—"देखो, जीवन एक बालू के टीले के समान है। इसकी चोटी पर पहुँचना चाहते हो, तो तेजी से एकदम चढ़ते चले जाओ और एक ही दौड़ में रास्ता पार कर लो; क्योंकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि जरा भी रुके, तो बालू में पाँव धँस जायेंगे और फिर जहाँ-के-तहाँ रह जाओगे।" इसी संदर्भ में उन्होंने शेक्सपीयर की वे प्रसिद्ध पंक्तियाँ भी सुनायीं, जिनका अर्थ है कि " प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक ज्वार आता है और यदि वह उसका सहारा लेकर बाढ़ के साथ चल निकले, तो अपने भाग्य को बना लेता है।"

पिताजी के इन वचनों का मेरे मन पर गहरा और अमिट प्रभाव पड़ा और मैंने अपना वह इरादा छोड़कर अपने अध्ययन का क्रम पूर्ववत् बनाये रखा। आज जब मैं अपने जीवन से पूर्णतया संतुष्ट हूँ, मुझे इस बात में जरा भी संदेह नहीं जान पड़ता कि मेरी अब तक की सफलता का रहस्य पिताजी के उस दिन कहे शब्दों में ही निहित है। —विजयेंद्रकुमार माथुर

★

बात कुछ वर्ष पुरानी है। परिवार में हर प्रकार की सम्पन्नता होने पर भी मेरा मन वेदना तथा निराशा से भरा रहता था। शायद इसलिए कि मेरे आदर्श बहुत ऊँचे थे और परिस्थितियों-वश या अपनी किन्हीं दुर्बलताओं के कारण उन्हें पूरा नहीं कर पाती थी। इससे मन का संतुलन बिगड़ा रहता — सदा एक तनाव की-सी स्थिति रहने लगी; और धीरे-धीरे वही हुआ, जो होना था—शरीर रोगी हो गया। अब अवसाद और निराशा और भी बढ़ गयी।

ऐसे ही समय में पिताजी के एक मित्र आये, जो मेरी मनःस्थिति को अच्छी तरह से समझते थे और मुझे खूब प्यार करते थे। मेरी हालत देखते ही उनकी आँखों में आँसू छलछला आये। मुझे छाती से चिपटा कर बोले—"बेटी, तूने यह क्या कर डाला?" बाद में उन्होंने मुझे काफी समझाया। मैं रोती रही और सुनती रही। अंत में वे उठकर सोने चले गये और मेरे कानों में उनके ये शब्द गूँजने लगे—" यह जीवन तुम्हारा नहीं है बेटी, जो तुम इसे मिटा डाल रही हो, यह तुम्हारे पास किसी की अमानत है।"

और अब मैं सोचने लगी—किसी की अमानत को नष्ट करने का मुझे क्या अधिकार! पर यह किसकी अमानत है मेरे पास? किसकी.....किसकी?.....

वास्तव में यह शरीर—यह मानव-देह हमारे पास प्रभु की अमानत है, हम उसके इसके ट्रस्टी हैं। जिसने हम पर विश्वास करके हमें अपने काम के लिए यह मानव-देह प्रदान की, उसे यों ही नष्ट कर देना क्या विश्वासघात नहीं होगा?

उस एक वाक्य ने मेरी सारी चेतना को एकबारगी झकझोर डाला और मेरी वही बीमारी मेरे लिए वरदान बन गयी। —ज्ञानवती मुरारका

★

लगभग पाँच वर्ष पहले हमारे शिशु मंदिर के ७० बालकों का एक ट्रिप दिल्ली रवाना हुआ। अध्यापक के नाते हम बारह तेरह व्यक्ति उनके साथ थे। दिल्ली में मुख्य कार्यक्रम प्रधान मंत्री पं० नेहरू और राष्ट्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पतिजी से मिलना था, जो हम लोग पहले से ही तय कर चुके थे।

दिल्ली पहुँच कर बालकों ने राजघाट, लाल किला, रेडियो स्टेशन, बिरला-मंदिर आदि देखे।

दूसरे दिन बालकों ने राष्ट्रपति-भवन में जलपान ग्रहण किया और राष्ट्रपतिजी को एक अभिनय गीत सुनाया। तीसरे दिन बालक पंडितजी की कोठी पर पहुँचे। वहाँ की दीवारों पर अजंता, एलोरा के छुट-पुट चित्र टँगे हुए थे। बरामदे के अंदर लकड़ी के गमलों में बजरी भरी हुई थी, और उसी बजरी में काँटेदार नागफन उगे थे। बरामदे के प्रवेश-द्वारों पर प्रधान-मंत्री के मिलिटरी सेक्रेटरी और कुछेक गार्ड खड़े थे। बच्चे दरी पर लाइनों में बैठे थे और उनकी आँखों में पंडितजी की तस्वीर तैर रही थी – अब आये कि, अब आये !!

कोई आध घंटे बाद जैसे ही पंडितजी बाहर आये कि दोनों तरफ खड़े द्वारपालों ने झुककर प्रणाम किया।

पंडितजी ने बाहर आते ही अपने सेक्रेटरी को डाँट पिलाई –" अरे ! तुमने इन लोगों को कुछ खिलाया-पिलाया नहीं !" मैं तो इसीलिए देर करके आया हूँ कि तुमने इन लोगों को खिला-पिला दिया होगा ! खैर, जल्दी करो !!"

और इतना कहकर पंडितजी वहीं एक मूढ़े पर बैठ गये और कहने लगे– "देखो बच्चो ! तुम लोग मेरे पास देर से आये, अगर तुम फरवरी के महीनें में आते, तो मैं तुम लोगों को दो भालू के बच्चे दिखाता। असल में वे भालू नहीं हैं, भालू-जैसे लगते हैं ! उन्हें गरमी बहुत सताती है; इस वजह से वे दोनों आजकल पहाड़ पर गये हुए हैं।"

उसके बाद बच्चों ने पंडितजी को एक 'ऐक्शन सांग' सुनाया, जिसके बोल कुछ इस प्रकार थे –

एक देशभक्त महारानी पद्मिनी की समाधि के दर्शन करने चित्तौड़ जाता है। मार्ग में उसे एक पथिक मिलता है, जो उससे प्रश्न करता है कि–" तुम कहाँ जा रहे हो ?"

देशभक्त उत्तर देता है – " मुझे न वृंदावन जाना है, न मथुराकाशी ! मेरी तो आँखें, चित्तौड़ तीर्थराज को देखने की प्यासी है।"

पंडितजी कुछ क्षण के लिए अपनी ठुड्ढी पर हाथ रखकर किसी अज्ञात लोक में पहुँच गये। किंतु जैसे ही वह गीत समाप्त हुआ कि पंडितजी एकदम झटके के साथ उठ खड़े हुए, और धीरे-से दो बार ताली बजाकर बोल उठे–" अच्छा भाई ! हम भी चलते हैं, अपने तीर्थराज.....दफ्तर को ! "

" तीर्थराज दफ्तर को ?" यह वाक्य मेरे कानों में गूँजने लगा ! ठीक ही तो है– राष्ट्र-देवता के पुजारी के लिए अपने कर्तव्य-कक्ष से बड़ा तीर्थ और क्या हो सकता है ?– ठाकुरदत्त शर्मा 'पथिक' *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पशुलोक के ये बाँके सूरमा

सुधींद्र वर्मा

चार साल की आयु से ही जंगल के जानवरों के साथ रहकर बड़ा हुआ हूँ। यौवन के द्वार पर जंगली जीवन से विदा ले लेने पर भी अब तक, जबकि जीवन का अपराह्न शरीर के अंग-अंग पर से ढल चला है, जंगल के उन साथियों को भुला नहीं सका, इसीलिए शुद्ध शाकाहारी होते हुए भी मैं अवसर मिलते ही शिकारी-मित्रों के साथ हो लेता हूँ। पशुओं के साथ रह-कर उनके स्वभाव, चर्या और चरित्र का मैंने जहाँ थोड़ा-बहुत परिचय पाया है, वहाँ अवसर पड़ने पर अपने स्वभाव और चरित्र के विपरीत गरीब, निर्बल और भगेड़ू से भी भगेड़ू पशु की लोकोत्तर वीरता की घटनाएँ भी मैंने देखी-सुनी हैं।

करनाल जिले के थानेसर तालाबों से कुछ मील हटकर मिर्जापुर गाँव के पास जंगलों में उन दिनों गुरुकुल कुरुक्षेत्र बना हुआ था। सन् १९१२ में मैं वहाँ पढ़ता था। एक दिन गुरुजी ने मेरी शरारतों से तंग आकर मुझे श्रेणी से बाहर निकाल दिया था। दूर जंगल में जाकर कांस के सफेद फूलों से झूमते एक दल-दल भरे जोहड़ के किनारे सरस्वती नदी के बरसाती तीर के एक फलाश-वृक्ष पर चढ़कर बैठा कुलांच भरते हरिणों की केलि-कला का आनंद ले रहा था कि जोहड़ के उस पार सारसी की करुण चीत्कार से वह निर्जन सरिता-तट गूंज उठा। निस्तब्ध वातावरण में मादा सारसी की दर्दभरी आवाज दूर-दूर तक फैल गयी और मैंने उत्कर्ण तथा उन्मुख होकर एक लंगड़ी सारसी को एक गीदड़ पर भयंकर चंचु-प्रहार करते देखा। जोहड़ के किनारे चरते हुए सारस-शावकों को पकड़ने की उस चेष्टा में चेष्टा थी और एक बच्चे की पूंछ उसके मुँह में थी। लंगड़ी सारसी अपनी लंबी चोंच से उसकी आँखों पर प्रहार कर रही थी और आक्रमण के वेग से एक टांग पर खड़ी न रह सकने के कारण कभी-कभी गिर भी पड़ती थी; पर फिर सम्भलकर उस आततायी पर प्रहार करने लगती थी।

मादा पक्षी के इस आकस्मिक आक्रमण और शौर्य से आतंकित गीदड़ अधिकृत-सा होकर इधर-उधर दौड़ रहा था। यदि वह जरा भी साहस करता, तो आसानी से उस लंगड़ी सारसी का शिकार करके कई दिन का राशन जुटा सकता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर पक्षी की वीरता ने उसे किंकर्तव्य विमूढ़ बना दिया था और वह दाँत निपोर कर, खक्खक्ख करता इधर-उधर दौड़ रहा था। इतने में मादा की पुकार से व्यामोहित सारस भी क्षिप्र वेग से उड़कर वहाँ आ पहुँचा और क्षण-भर में ही लम्बी गर्दन की प्रबल चंचु के लौह-प्रहारों से आहत वह लू-लुहान आततायी पास की झाड़ियों में भाग गया।

इसी प्रकार एक बार एक बंदर ने भयंकर वामन सर्प से भीषण युद्ध करके स्वयं मेरी प्राण रक्षा की थी। उन दिनों मैं सम्भवतः साढ़े तीन वर्ष का था। दोपहर के समय जब बुंदेलखंड की प्रचंड धूप गुरसराय के ऊँचे किले पर छाकर उस छोटे-से कस्बे को धू-धू करके जला रही थी, घर से कुछ फुलझड़ियाँ और चिटपिटियाँ चुराकर मैं किले के फाटक के सोते पहरेदारों के कान के पास छुड़ाने जा रहा था कि अंदरूनी फाटक की चूल की ठंडक में दुबका एक साँप न जाने कब मेरे सामने आ खड़ा हुआ। अकस्मात उस विचित्र जीव की चमकीली आँखें और चिलकते चमड़े से चमत्कृत मैं उसकी ओर देखता रह गया। किंतु ज्यों-ही उसकी लपलपाती जीभ को मैंने देखा, मैं बुक्का फाड़कर रो पड़ा और मेरे हाथ का सामान नीचे गिर पड़ा। साँप मेरी ओर देखता आगे बढ़ रहा था। तभी किले की प्राचीर पर उगे कचनार के पेड़ पर बैठा एक बंदर अकस्मात सीढ़ियों पर उतर आया और उछलकर साँप पर झपटा। शायद साँप की गर्दन उसके हाथ में नहीं आयी, सांप तुरंत मेरी ओर से मुड़कर बंदर की ओर फन करके भूमि स्पर्श मुद्रा में तीन फुट से भी ऊँचा खड़ा हो गया। उसकी पूँछ बराबर हिलती जा रही थी। बंदर सीढ़ी पर बैठा झपटने का अवसर ताक रहा था।

उत्तेजित साँप की पूँछ बड़े जोर से मेरी चिटपिटियों के गिरे हुए बंडल पर पड़ी, और सहसा वे जल उठीं। नागराज का ध्यान बँटा और ज्यों-ही पीछे मुड़कर देखने के लिए उसने गर्दन उधर की कि बंदर ने उछलकर उसकी गर्दन मुट्ठी में पकड़ ली। साँप का सबसे कमजोर मर्मस्थल होता है उसका कंठ। इसलिए विवश होकर उसने अपनी भयानक कुंडलिनी में पवनपुत्र के उस वंशधर को ठीक उसी प्रकार कसना प्रारम्भ किया, जिस प्रकार स्वयं पवनपुत्र लंका में अक्षयकुमार द्वारा कसे गये थे। बंदर तुरंत उछलकर सीढ़ी पर जा बैठा और उसने सांप का फन पत्थर पर घिसना शुरू कर दिया। पीड़ा से तड़फड़ा

हिंस्र पशु

चित्रकार : रुफिनो टैमायो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर नाग ने पकड़ ढीली कर दी। बंदर ने संतोषपूर्वक फन का निरीक्षण किया और फिर रगड़ा लगाया और तब तक रगड़ता रहा, जब तक साँप निष्प्राण होकर जली रस्सी की तरह उमेठे खाता नीचे न गिर गया। शायद डार्विन-प्रणीत हमारे इस पुरखा की आदियुगीन सहानुभूति का स्रोत अपने तथाकथित वंशधर के लिए अकस्मात ही प्रसृत हो उठा था। अन्यथा उस विषमयी आपदा से करुणाकर की कृपा कोर के अतिरिक्त और कौन मेरी रक्षा कर सकता था।

'गौ' या 'गऊ' शब्द गाय की निरीहता, सीधेपन और उदार स्वभाव के कारण अब एकदम सीधेसादे और अहानिकर अहिंस्र निरीह प्राणी का पर्यायवाची हो गया है। बाघ जैसे बलिष्ठ, क्रूर तथा हिंस्र वन्यश्वापद के सामने वह क्षणमात्र को भी टिक सकेगी, ऐसा अनुमान कोई भी नहीं कर सकता। किंतु एकबार झांसी कैंटोनमेंट बोर्ड के तत्कालीन हेडक्लर्क श्री गयाप्रसादजी के साथ धुविया नाला पार कर ओरछा के लिए जंगल के रास्ते जाते हुए हम दोनों ने इस निरीह गौ को बाघ का सफल साम्मुख्य करके उस नर-भक्षी को भगाते देखा है।

ओरछा के जंगल में टीकमगढ़ के स्वर्गीय दादा महाराज श्री प्रतापसिंह बब्बाजू द्वारा छुट्टा छोड़ी गयी सैकड़ों गायें विगत ७५ वर्ष से रहती आ रही हैं। उनके झुंड के झुंड उन दिनों दूर तक चरा करते थे। वहाँ ही उनके बच्चे होते और बड़े होकर वे भी उन रेवड़ों में ही शामिल हो जाते। उन दिनों जंगल बहुत घना था और पेड़ों के नीचे काफी अंधेरा रहता था। नीचे लम्बी घास उगी हुई थी, जहाँ वे आनंद से विचर रहे थे। यद्यपि उस जंगल में बहुत से जंगली जानवर हैं; पर वे कभी-कभी ही दिखायी पड़ता था।

कुछ मील पेड़ों के नीचे होकर जाने वाली पगडंडी पर हम दोनों मित्र जा रहे थे कि एकाएक हमने गायों को मैदान की ओर भागते देखा। पूँछ उठाये, उत्कंपित फुंकारती हुई उन गौओं की समर-मुद्रा देखते ही मैं समझ गया कि किसी आततायी के विरुद्ध ही उनका यह अभियान है। तुरंत एक ऊँचे से पेड़ पर हम दोनों चढ़ गये कहीं वह बला हम पर ही न आ टूटे। ऊपर से हमने देखा कि जंगल की एक खुली के बीचवाले मैदान में गायों ने व्यूह बना रखा है। सबके पुट्ठे और पूँछ व्यूह के बीच की ओर हैं और सिर परिधि की रेखा पर। बीच की खाली जगह में छोटी-बड़ी बछियाँ भयभीत रँभा रही थीं। गायों के सींग और कान उठे हुए और मुँह नीचे झुके हुए मानो प्रहार के लिए उद्यत हों। चक्र के बाहर कुछ दूर पर बाघ टकटकी लगाये उछाल के लिए तैयार पिछले पैरों पर झुका हुआ खड़ा था। बिजली की-सी तड़प के साथ क्षणमात्र में वह व्यूह पर झपटा पर पैने-नुकीले सींगों की एक अनुपम और अटूट शृंखला ने न केवल उसे आगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में उछालकर जमीन पर धर पटका, अपितु उसके पेट और वक्ष में कई गहरे छेद भी कर दिये, जिनसे प्रवाहित रक्त और पीड़ा के कारण वह भयानक श्वापद बिल्ली-जैसा बन गया।

अभी वह जमीन पर पड़ा हाँफ रहा था कि गायों का रेवड़ सामरिक व्यूह सज्जा में सींग भोंकता उसे रोंदने के लिए आगे बढ़ा। गायों के इस भयावह आक्रमण से घबराया वह बाघ चरकटे की तरह दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ। लगभग आधे घंटे तक गायें आततायी के पुनराक्रमण की प्रतीक्षा में व्यूह-बद्ध खड़ी रहीं। इस बीच हम दोनों जंगल की पगडंडी छोड़कर तुरंत राजमार्ग की ओर बढ़ गये, जहाँ से बस में बैठकर ओरछा पहुँचे। गायों के इस कल्पनातीत संगठन और शौर्य की छाप आज भी, हम पर बैठी है।

गौ की तरह ही सीधे एक अन्य पशु हरिण की अनुपम वीरता और पराक्रम की एक आँखों देखी घटना मेरे एक शिकारी मित्र श्री लक्ष्मणराव तैलंग ने मुझे सुनायी थी जो इस प्रकार है :

श्री तैलंग अपने घोड़े पर सवार बसंत पंचमी के दिन तीसरे पहर अपने मित्र बड़ौनी के शासक दीवान नारायणसिंह के किले की ओर ग्वालियर-मार्ग पर जा रहे थे कि दतिया के पास जंगल में झाड़ियों के उस पार धूल का गुबार उड़ते देखा। आश्चर्य-चकित होकर जब वे उधर गये, तो झरबेरियों के एक घने घेरे के भीतर एक बड़े से भेड़िये को उस घेरे का चक्कर लगाते और दौड़ते देखा। एक मारीच हरिणी तेजी से उसका पीछा कर रही थी। इस अद्भुत व्यापार को देखकर तैलंग स्तब्ध खड़े रह गये। सम्भवतः हरिण-शावक को हथियाने का प्रयत्न करते हुए उस तस्कर को उसकी माँ ने देख लिया था और वह बिफरी हुई शेरनी के समान आततायी पर टूट पड़ी थी। भेड़िया अंधाधुंध भागता बेरियों के उस झुरमुट में घुस गया था और अब बाहर निकलने का मार्ग न पाकर घेरे के चक्कर लगा रहा था। हरिणी की आगे की खुरियाँ मुग्दरों की तरह उसके पुट्ठों पर बार-बार मार कर रहीं थी; जिनकी नुकीली अगोइयों ने उस खूनी जानवर की खाल उधेड़ दी थी।

चोट न सम्भाल सकने के कारण वह क्रूर जानवर गिर पड़ा और उसकी एक टाँग टूट गयी। वह लँगड़ाता हुआ अपनी पैनी खीसें निकाले मुँह फाड़े पलटकर खड़ा हो गया। उसके मुड़े-टेढ़े और बेहद पैने दाँत जो एक ही बकोटे में गेंडे तक की खाल चीर सकते थे, देखकर तैलंग एकबारगी त्रस्त हो उठे; किंतु ज्यों-ही उन्होंने झपटते भेड़िये को मारने के लिए बंदूक संधानी, त्यों-ही भेड़िये के जबड़े पर मृगी की पिछली टाँगों का भरपूर कंटाप इतने जोर का पड़ा कि सब दाँत झड़ गये और उसका हुलिया बिगड़ गया और लहू-लुहान थूँथण लिये वह अपनी जान बचाकर घेरे के बाहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाग खड़ा हुआ ।

अपनी प्रेमिका की जान जोखिम में देख-कर डरपोक चूहा भी भयानक करैंत को अपनी हिम्मत और सूझ के बल पर कैसे पछाड़ देता है, यह मैंने अभी दो महीने पहले ही देखा । अपने एक मित्र के साथ जब मैं शिवपुरी के जंगल में रात के एक बजे के लगभग सर्चलाइट लगाये जीप पर तेजी से दौड़ रहा था, तो हमने सड़क के किनारे के एक खेत से निकल कर दो मोटे चूहों को सड़क पार करते देखा । एक १२ फुट लम्बा भयंकर साँप उनका पीछा कर रहा था । गाड़ी की गति शिकार न मिलने की मायूसी में बहुत धीमी थी । अतः तुरंत उसे रोककर हम लोग उस शिकार को देखने के लिए खड़े हो गये और सर्च लाइटस् उधर कर दी, जिधर चूहे दौड़ गये थे ।

साँप ने एक ही सरपट में चुहिया को धर लिया और उसे मुँह में लिये वह पास के एक छोटे-से महुए के सपोले पर लपेटें लगा-कर चढ़ने लगा कि ऊपर बैठकर आराम से उसे निगल सकें । तेज सर्चलाइट उसका काला फन और तप्तकांचन रंगी कमर और पीठ भूरे रंग के पतले तने को लपेटे जगह-जगह चमक थी । वह धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रहा था । में दबी चुहिया का त्रस्त चीत्कार रात के अँधेरे को चीरता दूर-दूर सुनाई पड़ रहा था । इतने में हमने कि वह मोटा चूहा रोंयें खड़े किये और उठाये एक ही छलांग में पेड़ के पर चढ़ गया और पूरा जोर लगाकर तक्षक की चमकीली देह में पैने दाँत दिये । साँप तिलमिलाकर पकड़ ढीली पीड़ा से तड़प उठा । फिर दो-तीन चूहे के दाँत उस काया में घुसे और लुहान साँप फन फाड़कर चूहे पर झपट साँप का मुँह खुलते ही चुहिया नीचे और एक ओर को भाग गयी । चूहा छलांग लगाकर उसके पीछे चीं-चीं हर्षोन्मत्त-सा जी छोड़कर दौड़ गया । के नीचे गिरे घायल साँप की लहरियाँ धीरे मौत की ऐंठन में बदल रहीं थीं ।

एक लड़का अदालत में गवाह के रूप में पेश किया गया । वकील ने बहल हुए उससे पूछा– " अदालत में आने से पहले तुम्हें जरूर समझाया गया है कि तुम यहाँ क्या कहना है । ठीक है ना ?"

" जी हाँ !"

" मुझे पहले ही शक था । तुम्हें किसने समझाया था ?"

" मेरे पिताजी ने !"

" क्या कहा था उन्होंने ?"

" उन्होंने कहा था कि वकील तुम्हें बहकाने के लिए उल्टे-सीधे सवाल मगर तुम वही बात कहना जो सत्य है; क्योंकि जीत हमेशा सत्य की होती है।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपग्रह द्वारा संचार-व्यवस्था

प्रो० भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव

रेडियो तथा टेलीविजन द्वारा एक महाद्वीप से संदेश भेजने अथवा दृश्य-चित्र भेजने के लिए कृत्रिम उपग्रह को काम में ले आने की सम्भावना वास्तव में रूस के प्रथम उपग्रह स्पुतनिक १ के छोड़े जाने के पहले ही वैज्ञानिकों के मन में थी। उनकी यह अभिलाषा आंशिक रूप से १९५८ में पूरी हुई, जबकि अमरीका ने एटलस राकेट से एक उपग्रह आकाश में भेजा। इस उपग्रह के अंदर रेडियो रिसीवर, रेकार्डर तथा ट्रान्समिटर रखे गये थे। धरती से भेजे गये रेडियो संकेत को ग्रहण करके इसे उपग्रह ने अपने रेकार्ड पर अंकित किया और तब कुछ देर बाद दूर देश में उसने उसी संदेश को प्रसारित किया।

फिर १९६० में अमरीका ने आकाश में एक बृहत्काय अल्यूमिनियम का गुब्बारा भेजा, जो उपग्रह-कक्षा में स्थापित होने पर रेडियो-तरंगों के लिए निष्क्रिय परावर्तक का काम देता था। फलस्वरूप रेडियो-तरंगें इससे टकराकर वापस धरती के दूरस्थ प्रदेशों तक पहुंच जाती थीं। स्पष्ट है कि इस प्रकार के निष्क्रिय परावर्तक केवल अत्यंत शक्तिशाली रेडियो संकेतों को ही एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुंचा सकते हैं, अतः ये अधिक उपयोगी साबित नहीं हो सकते।

उसी वर्ष कूरियर उपग्रह छोड़ा गया, जो रेडियो रिसीवर, रेकार्डर तथा ट्रांसमिटर यंत्रों से लैस था। यह उपग्रह १८ दिनों तक पृथ्वी के इर्द-गिर्द चक्कर लगाता रहा, और इसकी सहायता से रेडियो-संकेत सफलतापूर्वक भेजे जा सकते थे।

गत वर्ष १९६१ में अमरीका के वैज्ञानिकों ने रेडियो-संचार के उद्देश्य से एक विशेष योजना कार्यान्वित करनी चाही कि ताँबे की नन्हीं-नन्हीं पिनों को तीव्र वेग प्रदान करके पृथ्वी के गिर्द वृत्ताकार पथ में पहुंचा दें। इस प्रकार ऊंचाई पर एक ऐसा स्वर बन जायेगा, जो पृथ्वी पर से भेजी गयी रेडियो-तरंगों को परावर्तित करके दूर के स्थानों तक पहुंचा देगा। किंतु दुर्भाग्यवश यह प्रयोग सफल न हो सका, पिनें वृत्तपथ में स्थापित न हो पायीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन प्रारम्भिक प्रयोगों के फलस्वरूप अमरीका की टेलीफोन व टेलीग्राफ कम्पनी ने अपने खर्च से अनुसंधान तथा परीक्षण कर के १० जुलाई १९६२ को 'टेल्स्टार' उपग्रह को एक दीर्घवृत्त कक्षा में स्थापित किया। यह कहना गलत न होगा कि इस कम्पनी ने अमरीकी सरकार के राकेट संस्थान को भाड़े पर लेकर उसकी सहायता से 'टेलस्टार' को उपग्रह पथ में पहुँचाया। इसे कक्षा में स्थापित करने के लिए थोर डेल्डा जाति का वहुखंडी राकेट इस्तेमाल किया गया था। पृथ्वी से टेल्स्टार की अधिकतम दूरी लगभग ३५०० मील तथा न्यूनतम दूरी ५७५ मील है।

इस उपग्रह की मदद से पहली वार टेलीविजन चित्र अमरीका से अटलांटिक पार फ्रांस में भेजे गये। तदुपरांत अमरीका से पैसिफिक पार जापान को भी सफलता-पूर्वक टेलिविजन चित्र भेजे जा सके। इन चित्रों को देखकर जापान के अधिकारी-गण तथा वैज्ञानिक तो इतने प्रभावित हुए है कि उन्होंने निश्चय कर लिया कि १९६४ में वे अपने यहाँ आयोजित होनेवाले आलिम्पिक खेलों का टेलिविजन चित्र अमरीका तथा यूरोप को टेल्स्टार द्वारा प्रसारित करेंगे।

इस उपग्रह की कार्यक्षमता उसके भीतर रखे गये यंत्र-संस्थान के कारण है, जिसे निखारने-सँवारने में वेल टेलीफोन प्रयोग-शाला के वैज्ञानिकों ने पूरे २ वर्ष लगाये हैं। इस यंत्र-संस्थान का वजन लगभग १७० पौंड है, इसमें लगायी गयी [illegible] वैटरी सूर्य-रश्मियों से ऊर्जा हासिल [illegible] विद्युत धारा उत्पन्न करती है, जो [illegible] रेडियो रिसीवर, रेकार्डर तथा ट्रांसमि[illegible] का परिचालन करती है। अंतरिक्ष [illegible] विद्युत्-कणों से वचाने के उद्देश्य से [illegible] वैटरी पर कृत्रिम नीलम के वरक [illegible] गये हैं। इसके रेडियो यंत्र में एक [illegible] का वाल्व लगाया गया है, जो [illegible] संकेत को १० अरव गुना परिवर्द्धित [illegible] सकता है। समस्त यंत्र-संस्थान [illegible] मजवूती से वनाया गया है कि [illegible] को इस वात का पूरा इतमीनान है कि [illegible] पूरे तीन वर्ष तक अपना कार्य सुचारु [illegible] करता रहेगा।

अमरीका की सरकारी संस्था 'नासा' [illegible] तत्वावधान में टेल्स्टार के समकक्ष ही [illegible] उपग्रह को लगभग ३०० मील ऊँची [illegible] में स्थापित करने की योजना तैयार हो [illegible] है। इसकी कार्य-प्रणाली बहुत कुछ टेल्स्[illegible] सरीखी ही होगी। अनुमान किया [illegible] कि इस उपग्रह के माध्यम से एक साथ [illegible] टेलीफोन-वार्ताएँ सम्भव हो सकेंगी।

अमरीका के सैन्य-विभाग की [illegible] यह है कि लगभग १००० पौंड वजन [illegible] 'एडवेंट' उपग्रह पृथ्वी के विषुवत्[illegible] तल में स्थापित किया जाये। इस [illegible] की ऊँचाई बाईस हजार तीन सौ मील [illegible] यह ऊँचाई इसलिए चुनी गयी है कि [illegible] कक्षा में स्थापित होनेवाले उपग्रह [illegible] ठीक इतना होगा कि यह पृथ्वी के [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२४ घंटे में एक परिक्रमा पूरी कर ले। चूंकि पृथ्वी भी अपनी काल्पनिक कीली पर २४ घंटे में एक बार घूम जाती है, अतः यह उपग्रह अपनी कक्षा में स्थापित हो जाने पर पृथ्वी के किसी एक खास स्थल के ऊपर आकाश में स्थिर टँगा सा जान पड़ेगा।

कुछ विशेषज्ञों ने सुझाव दिया है कि यदि 'एडवेंट' जाति के तीन उपग्रह वाईस हजार तीन सौ मील की ऊँचाई पर विषुवत रेखीय तल में इस तरह स्थापित किये जायें कि वे एक-दूसरे से समान दूरी पर रहें, तो संसार के किसी स्थान से प्रसारित किया गया टेलीविजन दृश्य इन तीनों उपग्रहों की मदद से संसार के हर स्थान पर ग्रहण किया जा सकता है, क्योंकि भूमंडल के हर भाग में कोई-न-कोई उपग्रह अवश्य नजर आता रहेगा। अतः एक उपग्रह टेलीविजन-संकेत ग्रहण करके उसे अन्य दो उपग्रहों को 'रिले' कर देगा और तब ये अपने-अपने क्षेत्रों को टेलीविजन-संकेत पुनः प्रसारित कर देंगे।

स्पष्ट है कि उपग्रह की सहायता से दूरगामी रेडियो और टेलीविजन व्यवस्था के लिए इतना ही पर्याप्त न होगा कि रेडियो यंत्रों से सुसज्जित उपग्रह को निर्धारित कक्षा में स्थापित कर दिया जाये, बल्कि इसके साथ-साथ भी यह आवश्यक होगा कि धरती पर ऐसे ब्राडकास्टिंग स्टेशन कायम किये जायें, जो अत्यंत शक्तिशाली रेडियो-तरंग ट्रांसमिट कर सकें। इसका अर्थ है कि ब्राडकास्टिंग स्टेशन की यंत्र-सज्जा पर भी काफी रकम खर्च करनी होगी। फिर उपग्रह से पुनः प्रसारित की गयी रेडियो-तरंगों को ग्रहण करने के यंत्र भी शक्तिशाली तथा महंगे होंगे।

अंतर्राष्ट्रीय टेली कम्यूनिकेशन यूनियन ने उपग्रह संचार व्यवस्था के लिए अत्यंत लघु रेडियो-तरंगों को काम में लाने का निश्चय किया है, जिनकी आवृत्ति ८ अरब ४० करोड़ प्रति सैकेंड तक होगी। इस प्रसंग में यह भी स्मरण रखना होगा कि ऊँची आवृत्ति की रेडियो-तरंगें ही आकाश के अयन-मंडल के स्तर को भेद कर आगे जा सकती हैं।

रेडियो-तरंगों की आवृत्ति जितनी अधिक होगी, उतनी ही अधिक आसानी से इसे निश्चित दिशा में केंद्रित करके बिना शक्ति का ह्रास हुए भेजा जा सकता है। किंतु ऐसी तरंगों को ट्रांसमिट करने-वाले यंत्र उसी अनुपात में अधिक महंगे भी हो जाते हैं। फिर इन ट्रांसमीटर तथा रिसीवर यंत्रों के भारी भरकम एरियल

विषुवत-रेखीय तल में २२ ३०० मील की ऊँचाई पर स्थापित तीनों उपग्रहों के संचार-क्षेत्र बिंदु-रेखाओं द्वारा दिखाये गये हैं।

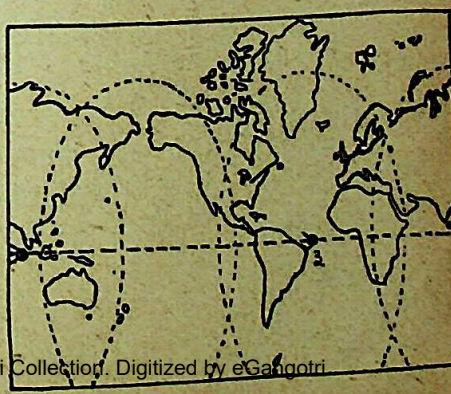

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी ऐसे बनाये जाने चाहिये कि उनको इच्छानुसार दिशा में घुमाया जा सके, ताकि आकाश में क्षण-क्षण स्थिति बदलनेवाले उपग्रह की ओर वे अपना मुँह किये रहें।

यदि संचार उपग्रह, २४ घंटेवाले परिभ्रमण काल के पथ में २२ हजार तीन सौ मील की ऊँचाई पर स्थापित किया गया है, तब तो एरियल को घुमाने की जरूरत न पड़ेगी, क्योंकि धरती के स्थानों के लिए उपग्रह आकाश में स्थिर, एक निश्चित दिशा में दीखता रहेगा।

अमरीका के विशेषज्ञों के अनुसार व्यावसायिक दृष्टि से उपग्रह संचार व्यवस्था सार्थक तभी हो सकती है, जबकि यह उपग्रह काफी अरसे तक निर्दोष सर्विस देता रहे, कम-से-कम ५ वर्ष तक। उदाहरण के लिए 'एडवेंट' योजना में एक तरफा टेलीफोन वार्ता पर वार्षिक खर्च १० हजार डालर पड़ेगा। अर्थात् अटलांटिक पार टेलीफोन वार्ता के एक मिनिट के लिए लगभग ३ डालर फीस अदा करनी होगी। इस सिलसिले में इस बात का उल्लेख करना हैनुपयुक्त न होगा कि उपग्रह को अधिक काल तक सक्षम रखने पर खर्च में विशेष कमी की जा सकती है। उदाहरण के लिए १ वर्ष तक काम करनेवाले उपग्रह की अपेक्षा ५ वर्ष तक काम देनेवाले उपग्रह का उपयोग करें, तो टेलीफोन वार्ता के खर्च में लगभग ५० प्रतिशत कमी हो जायेगी।

ब्रिटिश पोस्ट आफिस तथा [illegible] परिवहन मंत्रालय ने सम्मिलित [illegible] उपग्रह संचार व्यवस्था की एक [illegible] बनायी है। इस योजना के अनुसार [illegible] के निकट विषुवतरेखीय तल में [illegible] मील की ऊँचाई पर वृत्ताकार [illegible] रेडियो यंत्रों से सुसज्जित कुल १२ [illegible] एक-दूसरे से समान दूरी पर [illegible] किये जायेंगे। इस दशा में उपग्रह [illegible] एक परिक्रमा पूरी करेगा। इतनी [illegible] पृथ्वी भी एक-तिहाई चक्कर पूरा कर [illegible] फलस्वरूप पृथ्वी के लिहाज से [illegible] घंटे बाद उपग्रह बार-बार अपनी पूर्व [illegible] लिक स्थिति में आ जायेगा, अर्थात् [illegible] उपग्रह निश्चित समय पर दिन में दो [illegible] उदय होगा और दो बार अस्त होगा। [illegible] धरती के रेडियो के एरियल द्वारा [illegible] टोह बनाये रखना अपेक्षाकृत अधिक [illegible] होगा तथा लगभग ६० डिग्री उत्तर [illegible] से लेकर ६० डिग्री दक्षिण अक्षांश [illegible] का भू-प्रदेश इनके कार्य-क्षेत्र की सीमा [illegible] आ जायेगा।

निस्संदेह टेल्स्टार की उपलब्धियाँ [illegible] हीय संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में अपना [illegible] विशेष महत्व रखती हैं और आशा की [illegible] है कि आगामी दस-बीस बरसों के अंदर [illegible] आकाश में परिभ्रमण करते हुए [illegible] की मदद से टेलीफोन-वार्ता [illegible] टेलीविजन आदि के प्रोग्राम हमारे [illegible] जीवन के बिलकुल सामान्य [illegible] जायेंगे। *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुस्टेव फ्लावर्ट के दो प्रेम-पत्र

नंदकिशोर मित्तल

प्रसिद्ध उपन्यासकार गुस्टेव फ्लावर्ट का लाऊजी कालेट से प्रथम परिचय प्रसिद्ध चित्रकार प्राडेअर के स्टूडियो में सन् १८४६ की २९ जुलाई को हुआ। उनका मेल-जोल १८५६ तक कायम रहा। जिस समय इनका प्रथम परिचय हुआ, फ्लावर्ट सिर्फ २४ वर्ष का युवक था और लाऊजी कालेट ३५ वर्ष की थी तथा उस समय के साहित्यिक-जगत् में एक मानी हुई कवयित्री के रूप में गिनी जाने लगी थी।

लाऊजी कालेट फ्लावर्ट को किस रूप में अपनाना चाहती थी, यह फ्लावर्ट से छिपा नहीं था। उसने कालेट की प्रेम-सम्बंधी मान्यताओं को कभी भी स्वीकार नहीं किया। आलोचकों का कहना है कि फ्लावर्ट के प्रसिद्ध उपन्यास 'मेडम बावरी' की नायिका लाऊजी कोलेट ही है, क्योंकि 'मेडम बावरी' को पढ़कर वह फ्लावर्ट से इतनी नाराज हो गयी कि उनका यह प्रेम-सम्बंध टूट गया।

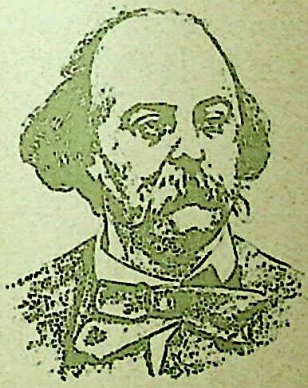

गुस्टेव

फ्लावर्ट ने अपनी इस प्रेमिका को सैकड़ों लम्बे-लम्बे खत लिखे हैं, उनमें से दो संक्षिप्त पत्र यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इन पत्रों में फ्लावर्ट ने अपनी प्रेम-सम्बंधी मान्यताओं का विवेचन किया है :

कोरसेट, बुधवार की सुबह,
७ अक्टूबर १८४६

..... तुम्हारा पत्र कितना अनुराग-भरा, कितना उल्लासमय और कितना सजीव और स्पष्ट है! मैं शीघ्र ही तुमसे मिलने आऊँगा। जो कुछ मेरे में है (अच्छा या बुरा) वह तुम्हें स्वीकार्य है। तुम मुझ पर प्रीति और प्रशंसा की बौछार करने लगी हो। अब तुम मेरे मनमौजी स्वभाव के बारे में, मेरे प्यार की अलंकारिक अभिव्यक्ति के बारे में, मेरी स्वार्थपरता आदि के बारे में शिकायत नहीं करतीं। किंतु क्या ऐसी कोई भी 'बात' मेरा तुम्हारे यहाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आना रोक सकी है ? और मेरी नन्ही-मुन्नी प्रिये ! सचमुच तुम कितनी युवा हो!

प्यार एक वासंती पौधा है, जो हर चीज को उमंगों से सुवासित कर देता है—उस खंडहर को भी जहाँ वह उगा है। मेरी प्रिये, इससे मेरा यह आशय कदापि नहीं कि तुम खंडहर हो चुकी हो। मैं तो सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि यद्यपि तुम अपने-आप को मेरे से उम्र में बड़ा मानती हो, फिर भी सही माने में तुम मुझसे युवा हो।

..... क्योंकि तुम मुझसे प्यार करती हो, इसलिए तुम मुझे सुंदर, चतुर और प्रतिभा-सम्पन्न समझती हो। नहीं ! नहीं ! तुम गलती पर हो। किसी समय मैं भी ऐसा ही कुछ सोचता था। हर व्यक्ति अपने महान् होने के स्वप्न देखता है। हर गधा, सोते के किनारे से गुजरते हुए अपना मुँह उसमें देखकर मन-ही-मन खुश होता है कि वह घोड़े-सा लगता है। मुझ में कई कमियाँ हैं।

.....मैं अनाम मोतियों की तलाश में डुबकी लगानेवाले मछुवे की तरह हूँ, जो गोता लगाकर बार-बार खाली हाथ लौट आता है, फिर भी उसके चेहरे पर धैर्य और संतोष है। कोई प्राणलेवा आकर्षण मुझे अपने विचारों की इन अतल गहराइयों की ओर खींचता है, जिनके गहनतम अंतिम छोर अंतर की आतुरता के कारण कभी अपना सम्मोहन नहीं खोते। मैं अपना जीवन, कला के इस महा-सागर को निहारने में व्यतीत कर दूँ।

× × ×

अप्रैल के अंतिम दिन १८५...

...आज मुझे लग रहा है कि किसी को शब्दों में प्रकट करने की क्षमता मुझ में कितनी कम है। तुमने वेलाप से स्पष्ट उत्तर चाहे हैं। किंतु क्या मैं महीनों से, अपने हर पत्र में तुम्हें साफ बातें नहीं लिख रहा हूँ ?

तुम जानना चाहती हो कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ या नहीं। यह एक इतना बड़ा सवाल है कि इसका उत्तर 'हाँ' या 'ना' में नहीं दिया जा सकता।

मैं समझता हूँ कि प्यार को किसी में खुलकर सामने नहीं आना चाहिए, उसे अपने बंद कमरे में ही रहना चाहिए। आत्मा में बसनेवाली और भी कई बातें इससे भी अहम् हैं, वे बातें जो प्रकाश के निकट लगती हैं, सूर्य के समान हैं। इस प्रकार अगर तुम प्यार को अपने जीवन की सबसे प्रमुख 'डिश' समझती हो तो केवल कुछ प्रासंगिक अवसरों को छोड़कर मैं यह स्वीकार नहीं करता। अगर प्यार से तुम्हारा मतलब है कि जिसे तुम प्यार करते हो, उसी के बारे में तल्लीन रहो, उसके लिए जियो, जो दुनिया में देखने योग्य है, उसे उसके लिए देखो, उसी के ध्यान में मग्न रहो। यह सब उस नन्ही लड़की की तरह जिसने अपनी फ्राक की झोली में सारे फूल भर रखे हैं और फ्राक के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तमिल कहानी

एक ही दोस्त

जयकांतन

चंद्रन और वेणु दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे और होस्टल में भी एक ही कमरे में रहते थे। वेणु एक धनी बाप का बेटा था। उसका घर मदुरै में था।

मामा की मृत्यु हो जाने पर चंद्रन ने अपने मित्रों से कहा कि उसकी मदद करनेवाला कोई नहीं रह गया है। अतः वह अपनी पढ़ाई छोड़कर मद्रास से जानेवाला है। चंद्रन की ये बातें जब वेणु को मालूम हुईं, उसने चंद्रन का सब व्यय अपने जिम्मे ले लिया शिक्षा समाप्त होने के बाद एक समाचार पत्र में नौकरी भी दिलवा दी।

पाँच साल गुजर गये। इस बीच में चंद्रन और वेणु दोनों में परस्पर पत्र-व्यवहार होता रहा। वेणु चंद्रन के लेख और कहानियों को पढ़कर उनकी प्रशंसा करके चंद्रन को बधाई का पत्र लिखता था। जब कभी वेणु कम्पनी के काम से मद्रास आता, तब चंद्रन से जरूर मिलता, और दोनों मिलकर खूब घूमा करते थे। वेणु अपने लिए चीजें खरीदते समय चंद्रन के लिए भी खरीद कर देता। वेणु के हाथों ने देना सीख लिया था और देने में ही उसके मन को संतुष्टि मिलती थी।

कुछ महीने बाद चंद्रन और पत्रिका-संचालक के बीच तीव्र मतभेद उठ खड़ा हुआ। संचालक ने हाल में जन्म लिये हुए एक नये दल की प्रशंसा करके उसके पक्ष में लेख लिखने के लिए चंद्रन से कहा। पर चंद्रन के लिए यह मान्य नहीं था। अतः उसने कहा कि वह उस दल के पक्ष में नहीं लिख सकता।

चंद्रन समझाने पर भी राजी न हुआ और उसने अपना त्याग-पत्र संचालक के हाथ में दे दिया।

नौकरी छोड़ने के बाद चंद्रन ने वेणु को दो पत्र लिखे। पर जब एक का भी जवाब नहीं आया, तब उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। विवश होकर चंद्रन अपनी एक मात्र पूँजी पंद्रह रुपये को लेकर मदुरै चल पड़ा। उसने अभी तक अपने कमरे का किराया भी नहीं दिया था। होटल वाले को अभी पैसे देने थे। फिर कोई और नौकरी मिलने तक किसी तरह गुजारा जो करना था। उसके मन में विश्वास था कि वेणु के पास जाने पर किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार की सहायता अवश्य मिलेगी ।

केवल एक थैली लेकर जब चंद्रन मदुरै स्टेशन पर उतरा, तब सुबह के ग्यारह बज चुके थे । इसलिए वह वेणु के दफ्तर की तरफ चल पड़ा ।

दफ्तर पहुँचकर चंद्रन को बहुत देर तक ड्राइंग रूम में वेणु की बुलाहट की प्रतीक्षा करते बैठे रहना पड़ा । फिर प्यून आकर उसे अपने साथ वेणु के कमरे में ले गया ।

चंद्रन ने कहना शुरू किया – "वेणु शायद तुम्हें मालूम होगा कि मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी है....."

वेणु ने सिगरेट का धुआँ उड़ाते हुए कहा–"हाँ ...तुमने तो लिखा था....पर तुमने जो किया, वह मुझे ठीक नहीं जान पड़ रहा है ।"

भावावेश में आकर चंद्रन ने कहा–"क्या तुम यही चाहते हो कि मैं अपने आदर्श और अंतरात्मा की उपेक्षा करके अपना पेट भरूँ ?"

वेणु हँसा–"आदर्श ! अंतरात्मा ! ... सिद्धांत !.....तुमने यथार्थता से काम लेना तो अभी तक नहीं सीखा, क्यों ?"

अपने एक ही दोस्त वेणु के इस तिरस्कार-भरे व्यवहार से चंद्रन के मन को बड़ी चोट पहुँची ।

तो भी उसके लिए और कोई रास्ता भी तो नहीं था । वह याचना-भरे स्वर में कहने लगा–"मैं तुम से एक बात में मदद पाने की आशा से आया हूँ । तुम को इस तरह देना, यह अंतिम बार है । नौकरी छोड़कर मैं बहुत ही मुश्किल में पड़ गया हूँ । एक महीने के अंदर-ही-अंदर मैं कहीं नौकरी ढूँढ़ लूँगा । तब तक के लिए... मुझे दो सौ रुपये चाहिये ।"

"मेरे पास अभी पैसे नहीं हैं । फिर आना..." कहते-कहते वेणु कुर्सी से उठ गया । उसके उठते ही चंद्रन भी अपने भग्न हृदय को लेकर उठ खड़ा हुआ । प्यून ने वेणु के जाने के लिए कमरे के दरवाजे को खोल दिया । चंद्रन और वेणु दोनों बाहर आये । बाहर वेणु की बड़ी-सी मोटर खड़ी थी ।"

"हाँ तो तुम जाओ ! फिर मिलेंगे..." कहते हुए वेणु अपनी मोटर में बैठ गया । मोटर को स्टार्ट करते हुए उसने बुलाया "चंद्रन..... " चंद्रन ने उसकी ओर रक्तिम आँखों से देखा । वेणु ने चंद्रन के मुख की तरफ बिना देखे ही सिगरेट के धुँए में अपने मुख को सिकोड़ते हुए, 'पर्स' से दस-दस रुपये के दो नोट निकालकर चंद्रन की ओर बढ़ाते हुए कहा–"क्या तुम्हारे पास जाने के लिए पैसे हैं ?" चंद्रन का हाथ नोटों को लेने के लिए बढ़ गया । जब वेणु यह सोच ही रहा था कि उसके हाथ को देने की और चंद्रन के हाथ को लेने की आदत-सी पड़ गयी है, तभी चंद्रन के द्वारा फेंके गये दोनों नोट उसके मुख पर आ गिरे ।

क्रोध-भरी आवाज में "बहुत शुक्रिया" कहते हुए चंद्रन तेज कदमों से चलता बना ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रास्ते में चंद्रन वेणु के बारे में सोचता चला।

मद्रास आकर चंद्रन नौकरी की तलाश में लग गया। पर उसे जल्दी ही मालूम हो गया कि नौकरी पाना कोई हँसी-खेल नहीं है। उसने बहुत प्रयत्न किया, लेकिन सब विफल रहा।

चंद्रन के पहलेवाले पत्रिका-संचालक ने भी चंद्रन की मुसीबतों के बारे में सुन रखा था। अचानक एक सार्वजनिक सभा में उनकी भेंट चंद्रन से हुई, तब उन्होंने चंद्रन से कहा—"मैं मानता हूँ कि लेखक को विचारों की स्वतंत्रता होती है, लेकिन जब आप एक ऐसी पत्रिका के कार्यालय में काम करते हैं, जिससे निकलनेवाली पत्रिका का अपना कोई लक्ष्य होता हो, तब आपको उसके सिद्धांतों से आबद्ध होकर ही लिखना पड़ेगा।

संचालक की बातों का प्रभाव चंद्रन पर पड़ा। उसने और कोई चारा न देखकर संचालक से प्रार्थना की कि वे उसे पुनः अपने यहाँ नौकरी दें, तो बड़ी कृपा होगी। संचालक बड़े दयालु थे; आदमी के कष्टों को पहचाननेवाले थे। इसलिए चंद्रन को फिर उनके यहाँ नौकरी मिल गयी।

शाम को छः बजे चंद्रन अपने कमरे पर लौटा, ताला लगे हुए कमरे के बाहर एक स्टूल पर बैठा हुआ वेणु उसे देखते ही उठ पड़ा और उसने हँसकर कहा—"अरे भई, मैं तो आधे घंटे से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मैंने सोचा था कि तुम आफिस से लौट आये होगे।"

चंद्रन उसकी तरफ देख भी नहीं सका और वह चुपचाप कमरे का ताला खोलने लगा।

वेणु ने चंद्रन के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—"मित्र, तुम तो बहुत दुबले हो गये हो।" चंद्रन ने अब भी कुछ नहीं कहा और वह वेणु के हाथ को हटाकर कमरे के अंदर चला गया। कुर्ते को उतारते हुए उसने देखा कि उसकी बुलाहट की प्रतीक्षा में वेणु दरवाजे के बाहर ही खड़ा है।

चंद्रन ने अनिच्छापूर्वक कहा—"भीतर आ जाओ।"

वेणु ने मुस्कराकर पूछा—"क्यों चंद्रू, मुझ पर तुम बहुत नाराज हो न?"

चंद्रन ने सिर को झुकाकर कहा—"तुम पर गुस्सा करनेवाला मैं कौन हूँ? मेरी नाराजगी तुम्हारा क्या बिगाड़ देगी?"

"झूठ मत बोलना, तुम मेरे ऊपर बहुत गुस्सा हो! मदद की आशा से आये हुए दोस्त का मैंने तिरस्कार किया था न?"

चंद्रन ने वेणु की तरफ ऐसे देखा, मानो वह उसे जला ही डालेगा और कहा—"दोस्ती!.....उसे तो हमारे बीच में से मरे डेढ़ महीना हो गया है!"

वेणु ने कहा—"तुम्हारी बातें सुने कई दिन हो गये हैं! तुम्हारी बातों को सुनने के लिए ही मैंने आज मदुरै लौटने के प्रोग्राम को भी स्थगित कर दिया है।"

चंद्रन के मन में विचारों का द्वंद्व-सा मच गया—"तो फिर इसने उस दिन मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैसे के गर्व से ही उसने ऐसा किया था ? पर वेणु तो पैसे के घमंड में पड़नेवाला व्यक्ति नहीं है ....."

कुर्सी चंद्रन के पास खिसकाकर वेणु बैठ गया और वह सोचने लगा कि चंद्रन की गलतफहमी को किस प्रकार दूर करें ? दोनों में से कोई नहीं बोला। वेणु को लगा कि इस प्रकार चुप रहने से सुलह नहीं हो सकती । अतः गला साफ करते हुए उसने कहा—"चंद्र, मैं अपने मन की बातें बता रहा हूँ। मैं तुम्हारी तरह बोलने में कुशल नहीं हूँ, तो भी मुझे विश्वास है कि तुम मुझे समझ लोगे...।" मिनिट भर चुप रहने के बाद पुनः उसने कहना शुरू किया—"तुम्हीं तो कहा करते थे कि जीवन संघर्षमय है और हर व्यक्ति को धैर्यपूर्वक उस संघर्ष में भाग लेना चाहिये । मैंने यही सोचकर उस दिन तुम्हारी मदद नहीं की कि तुम उस संघर्ष से अपनी हार न मान बैठो ... तुमने अपनी कहानी में लिखा है न कि अमीरों की दोस्ती में स्थायित्व नहीं होता । चूँकि मैंने तुम से पहले ही सोच रखा था कि हम दोनों की दोस्ती की हालत भी वैसी न हो जाये, इसीलिए मुझे उस दिन तुम्हारे साथ वैसा बर्ताव करना पड़ा...।" "दोस्त के नाम से तो कई लोग मेरे साथी के रूप में हैं..... लेकिन वे सब स्वार्थ के वश होकर ही ऐसा करते हैं; जीवन में एक सच्चे दोस्त को पाना बहुत ही मुश्किल बात है; दोस्त के लिए दोस्ती करनेवाला एक मित्र तो दुर्लभ है । चंद्रन तुम में यदि आत्मविश्वास है, तो फिर मेरे भरोसे रहना क्या ठीक है ? तुम्हें तो अपनी जगह पर डटकर खड़े हो जाने का प्रयत्न करना चाहिये। तुम्हीं तो कहते थे कि दोस्ती ठीक नहीं होती ।" यह कहकर वेणु हँस पड़ा। चंद्रन का मन भी हल्का होने लगा।

दो सहेलियाँ
चित्रकार : केनेश आर्मिटज

अपने साथ लायी हुई पोटली को खोलकर चंद्रन के सामने रखते हुए वेणु ने कहा—"तुमने बड़े चाव से माँगा था न... वही 'सूट' ले आया हूँ। अब बताओ तुम्हें कितने पैसे चाहिये ?" वेणु ने 'पर्स' को खोला।

चंद्रन ने संकुचित होकर कहा—"कुछ नहीं चाहिये।" वेणु हँस पड़ा—"अरे! चंद्र..... हमारी दोस्ती के तो ये ही आधार नहीं हैं। पैसे का तो यहाँ कोई मूल्य नहीं होता। 'चाहिये या नहीं चाहिये' यह कहकर उसे महत्व की चीज न बनाओ।" वेणु को ऐसा कहते देखकर चंद्रन खुशी से विह्वल हो गया और उसने अपना हाथ वेणु की तरफ बढ़ा दिया। वेणु ने पर्स को नीचे गिराकर चंद्रन के हाथ को अपने हाथों में ले लिया।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृक्ष भी देखते हैं

केशवदेव मिश्र 'कमल'

मानव आदि उच्च श्रेणी के प्राणियों के शरीर और इंद्रियों की उन्नत अवस्था, एक क्रमिक विकास का परिणाम हैं। वर्तमान सुंदर और व्यवस्थित इंद्रियाँ लाखों वर्षों के परिवर्तन-परिमार्जन के उपरांत उपलब्ध हुई हैं। जो प्राणी इस समय जीवधारियों की निम्न श्रेणी में हैं, उनकी इंद्रियाँ मनुष्य के नाक, कान, आँख आदि की तरह सुव्यवस्थित नहीं हैं।

प्राणिशास्त्रज्ञों ने उद्भिजों को जीवधारियों की सबसे निम्न श्रेणी में रखा है। इस दशा में मनुष्य जिस प्रकार अपनी आँखों से अनेकानेक वस्तुएँ और रंग देखकर प्रकृति की अनोखी सुंदरता का आनंद ले सकता है, उस प्रकार उद्भिज अपनी आँखों से नहीं ले सकते। किंतु अंधकार और प्रकाश का भेद जान लेना और किस ओर से प्रकाश आ रहा है, इसका निर्णय कर लेना, जिस तरह निम्न श्रेणी के जीवधारियों की आँखों का काम है, उद्भिजों की आँखों का भी प्रायः उसी प्रकार का है। वृक्षों की आँखों की तुलना मनुष्य की आँखों से नहीं की जा सकती; किंतु इनकी आँखें कीट-पतंगों की आँखों से हीन भी नहीं कही जा सकतीं। वृक्षों के आँखें होने की बात जर्मनी के एक प्राध्यापक ने कुछ समय पूर्व प्रकाशित की थी।

आँखों का मुख्य कार्य क्या है? बाहर की अनेक वस्तुओं के रूप-रंग आदि का ज्ञान हमारे भीतर पहुँचा देना। बाहर के दृश्यों को जब हम किसी संकीर्ण स्थान में लाना चाहते हैं, तब हमें उन्नतोदर काँच का उपयोग करना पड़ता है। इसी प्रकार जब हम डेढ़-दो गज के मनुष्य की तस्वीर एक छोटे-से कागज के टुकड़े पर उतारना चाहते हैं, तब भी हमें इसी काँच का उपयोग करना पड़ता है। यह काँच हमारे कैमरे के सामने लगा रहता है। बाहर की वस्तु की छोटी आकृति इसी पर पड़कर कैमरे के अंदर जाती है। हमारी आँखें भी बाहर की वस्तु की आकृति छोटी करके जब अपने भीतर लेती हैं, तब इसी कौशल का आश्रय लेती हैं। आँखों के अंदर उन्नतोदर काँच तो नहीं है; किंतु इस काँच ही के समान स्वच्छ तथा तरल पदार्थ है। यह पदार्थ आँखों के भीतर उसी प्रकार रहता है, जिस प्रकार कैमरे के भीतर उन्नतोदर काँच। आँखों की पुतलियों पर यह पदार्थ बाहर की वस्तुओं की आकृति छोटी करके उन्नतोदर काँच की ही तरह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धूम्रपान-शिष्टाचार

दाग़ न पड़ें... धब्बे न लगें !

सभ्यता के नाते, एक जलती हुई सिगरेट फर्नीचर पर नहीं रखनी चाहिये और न उसे किसी सुन्दर चीज़ से रगड़कर बुझाना चाहिए। ऐश-ट्रे का इस्तेमाल कीजिए ताकि जहाँ-तहाँ भद्दे दाग़ न पड़ें।

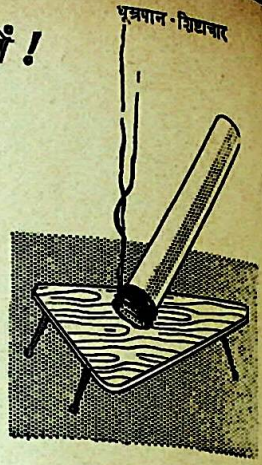

पनामा

पीना और पिलाना उम्दा बात है।

ये आख़िरी कश तक मज़ा देती हैं

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता :
गोल्डन टोबॅको कंम्पनी प्राइवेट लि.,
बम्बई - ५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहण करता है।

अब प्रश्न उठता है कि, क्या वृक्षों के भी किसी अंग में उन्नतोदर काँच का काम देनेवाला कोई पदार्थ है ? जर्मनी के एक प्राणिशास्त्री ने वृक्षों की शाखाओं और पत्तों की त्वचा का विशेष अध्ययन कर इस सम्बंध में कई तथ्यों का उद्घाटन किया है। त्वचा के ऊपरी भाग पर जो बिंदु-सदृश छोटे-छोटे कोष होते हैं, उनमें से कितने ही कोष एक प्रकार के अत्यंत स्वच्छ रस से भरे रहते हैं, जो उन्नतोदर काँच का काम देता है। इनमें न केवल बाहर के दृश्यों की छोटी आकृति का प्रतिबिम्ब भीतर पहुँचता है, वरन् सूर्य की किरणों की गर्मी भी उस स्वच्छ रस की सहायता से इन कोषों में भर जाती है। इसी गर्मी से पेड़-पौधों के ये कोष देखने का काम करते हैं।

साधारण मक्खियों के सिर के दोनों तरफ जो दो बड़ी,-बड़ी आँखें होती हैं, वे अनेक छोटी-छोटी आँखों के संयोग से बनी हैं। मक्खी की हर आँख, बहुत छोटी-छोटी लगभग चार हजार आँखों की समष्टि है। साधारण खुर्दबीन यंत्र द्वारा देखने से इस बात का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। तितली के तो इससे भी अधिक आँखें होती हैं। उसके सिर के दोनों तरफ जो दो आँखें होती हैं, उनमें से प्रत्येक आँख सत्रह-सत्रह हजार छोटी-छोटी आँखों के संयोग से बनी है। मक्खियों और तितलियों को अपने शरीर-रक्षण के हेतु अपने चारों ओर के दृश्यों को देखने में इन हजारों आँखों से सहायता मिलती है। उद्भिजों के पत्तों और टहनियों पर जो असंख्य आँखें हैं, उनका काम भी वही है, जो मक्खियों और तितलियों की आँखों का है।

★

मकड़ियों की खूराक

मान लीजिये, आपकी खिड़की में एक मकड़ी बैठी है। आप क्या करेंगे ? शायद कहेंगे-कैसा दुष्ट और घृणित जीव है ! और शायद झाड़ू या अखबार से उसे मार गिरायेंगे। लीजिये, आपने अपने एक सच्चे मित्र की निंदा और हत्या कर दी। यह मकड़ी तरह-तरह के कीड़े, जिनमें कई मनुष्य के जबर्दस्त दुश्मन होते हैं, खाकर आपका उपकार करती आ रही थी।

एक ब्रिटिश वैज्ञानिक ने हिसाब लगाया है कि एक एकड़ चरागाह में लगभग २२॥ लाख मकड़ियाँ रहती हैं इंग्लैंड में छोटी-बड़ी मकड़ियों की ५५० किस्में पायी गयी हैं। ये सब साल में ६ महीने का समय कीड़े-मकोड़े खाने में बिताती हैं। बड़ी पेटू होती हैं मकड़ियाँ। हिसाब लगाया गया है कि इंग्लैंड में एक साल में मकड़ियाँ जितने कीड़े-मकोड़ों का सफाया करती हैं, उसका वजन उस देश के तमाम नागरिकों के सम्मिलित वजन से ज्यादा होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह रूपवती कौन?

सब के मन में यही जिज्ञासा...

क्योंकि आप का रंगरूप अनुपम गुलाबी **ब्रीज़** से जगमगा रहा है।

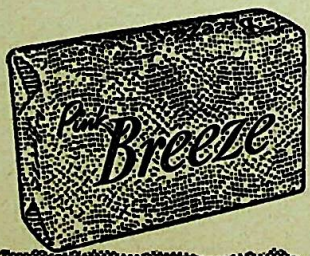

सुहानी स्मृतिकी तरह लिपटी रहनेवाली सुगंध के लिए...अनुपम गुलाबी ब्रीज सौंदर्य साबुन से स्नान कीजिये। यह केवल इसी लिए बनाया गया है कि आपके रंगरूप के नाज़ उठा कर...आपकी सुंदरता को जगमगा कर...आपको सब के लिए यह पहेली बना दे कि 'यह रूपवती कौन?'

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने भारत में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीवार की धूप

राबिन शा 'पुष्प'

जैसे किताब खुली छोड़कर कोई छात्र कहीं गुमा जाये, किवाड़ पाटोपाट खुला देखकर कविता का जी धक् से रह गया। एक-एक शब्द जैसे हथेली से गिर गया। कविता उन्हें चुनने लगी...

दो साल पहले, इसी दरवाजे पर एक ताँगा रुका था। सामान उतरवाकर, रवि ने दरवाजा खोलते हुए कहा था—" आइये न... भीतर आ जाइये... "

विना कुछ कहे-सुने, वह डरते कदमों से भीतर आ गयी थी। धीरे-धीरे ली गयी साँस की तरह बेहद हल्की चाल से। लेकिन शादी से पूर्व उसकी कल्पना थी कि उसका पति उससे कहेगा—" कविते! बाहर क्यों खड़ी हो? अब इस घर से कैसा संकोच...धो डालो इसे। आओ न..." लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, कुछ भी नहीं। कविता को जैसे भीतर ही भीतर बहुत-कुछ मथ रहा था।

वह मेज के करीब आयी। चाबियों का गुच्छा वहीं पड़ा था...जहाँ वह पटक कर गयी थी... एक फेंकी हुई लाश! उसका हाथ धीरे से बढ़ गया; लेकिन उसने उसे पीछे खींच लिया। अब इस चाबी से उसका क्या सम्बन्ध? उसका और चाबियों का नाता तो कब का टूट गया है... खामोश घाटियों की गहराई में न जाने वह कहाँ जाकर डूब गया है। हर नयी औरत आकर, इसी पुराने गुच्छे की एक चाबी बन जाती है...इसी से बंध जाती है... लेकिन वह?

रवि ने उसकी तरफ गुच्छा बढ़ाते हुए कहा था—" लीजिये, यह चाबियों का गुच्छा आज से..." और उसकी जबान लड़खड़ा गयी थी। हाथ काँपने लगा था... "मुझे लगता है, इस घर में आपको लाकर मैंने एक गुनाह कर दिया है। लेकिन आज से यह घर आपका ... "

अचानक ही उसके मुँह से निकल गया था—" जी नहीं... "

चाबियों का गुच्छा रवि के हाथ से छूटकर गिर गया था।

उसने झुककर उठाते हुए कहा था—"जैसी आपकी इच्छा... " लेकिन वह सोच रही थी, उसके आँचल में प्यार से चाबी बाँधते हुए उसका पति कहेगा—" कविते, हर माँ अपने बेटे का प्यार, उसका स्नेह, उसकी इज्जत... इसी गुच्छे में पिरोकर एक दिन बहू के आँचल में बाँध जाती है ... अब से यह घर मेरा नहीं, हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांतों की सड़न और मसूढ़ों की तकलीफ से आराम होने के आश्चर्यजनक अनुभव

अनपेक्षित पत्र फोरहन्स टूथपेस्ट की श्रेष्ठता प्रमाणित करते हैं

"मेरी आयु इस समय ५५ वर्ष की है

मेरे सभी दांत ज्यों के त्यों हैं। मगर १९४३ में मेरे बीच के और बगल के ऊपर तथा नीचे के-दोनों दांत कमजोर होकर हिलने लगे। मैंने वास्तव में सोचा कि अब वे गिर जायेंगे। १९४३ में एक दिन मैंने फोरहन्स का नुस्खा देखा। मैंने उसे इस्तेमाल करना शुरू किया और अब मुझे यह कहते हुए बड़ी खुशी होती है कि फोरहन्स ने मेरे दांतों को बचा लिया और उन्हें मजबूत तथा दृढ़ बना दिया है।"

"मैंने हमेशा फोरहन्स के इस्तेमाल की सलाह दी है

मैंने अपने रोगियों को जब कभी उन्होंने दांतों और मसूढ़ों की तकलीफ की शिकायत की हमेशा फोरहन्स के इस्तेमाल की सलाह दी है। और वे रोगी हमेशा हमारे आभारी रहे हैं। यहां तक कि बच्चे रोगियों को भी मैं फोरहन्स का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। हमारे दवाखाने में आने वाले बहुतसे लोग अपने बच्चों के लिए फोरहन्स का इस्तेमाल करते हैं।"

"फोरहन्स के इस्तेमाल से मुझे बहुत लाभ हुआ है

मैंने पहले अपने पिताजी से सुना था कि फोरहन्स मसूढ़ों के लिए बहुत लाभदायक होता है। बाद में जब मेरे मसूढ़ों में तकलीफ उत्पन्न हुई तब मुझे पिताजी की सलाह याद आ गयी। और मैंने फोरहन्स का इस्तेमाल करने का निर्णय किया और तब से बराबर इस्तेमाल कर रहा हूँ।"

फोरहन्स

दांत के डाक्टर द्वारा तैयार किया गया टूथपेस्ट

GEOFFREY MANNERS & CO. LTD.

E. 20 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों का है... हमारा है।"

चाबी देकर रवि कब का चला गया था और उसकी आँखों में अजाने ही कितने सपने टूट गये थे...

काँपते हाथों कविता ने गुच्छा उठा लिया। अलमारी खोलकर उसने देखा, उसकी सारी चीजें जैसी की तैसी थीं। उस दिन उसने जो कपड़े धोकर रखे थे, वैसे के वैसे पड़े हैं। और फिर उसकी आँखों के आगे कितनी ही कटीली झाड़ियाँ उग आयीं... साड़ी में एक साड़ी उलझ गयी। उस दिन रविवार था। रवि घर पर ही फाइलें ठीक कर रहा था। वह बाहर बरामदे में किसी काम से आयी थी कि कपड़ा-फरोश आ गया। उसने एक साड़ी पसंद कर ली। भीतर आकर उसने रवि से कहा—" कपड़े-वाला आया है, मैंने एक साड़ी चुन ली है। चलकर जरा आप भी देख लीजिये ... "

रवि ने चौंककर कहा था—"आप...जब आपने पसन्द कर ली है तो फिर मैं...मैं" और उसका स्वर काँप गया। वह उलटे पैर लौट गयी। याचना-भरा स्वर उसे डस गया। उसने एक सबसे रद्दी साड़ी खरीद ली। लेकिन रवि ने उसकी भी प्रशंसा की। कविता का जी जल गया...आखिर यह जानकर भी कि साड़ी अच्छी नहीं है, उसने तारीफ क्यों की ? आखिर वह कविता का कभी विरोध क्यों नहीं करता ? क्यों उसकी गलती के आगे भी हार मान लेता है... उसकी पलकें भीग गयीं। उसने उसी रद्दी साड़ी से आँखें पोंछ लीं।

अलमारी बंदकर वह जाने लगी, तो उसने देखा, कुर्सी पर एक कमीज। और उसे खयाल आया, वह भी एक कमीज ही थी। रवि ने आकर कहा था—" मेरा एक काम कर दीजियेगा ?"

" क्या ?"

" कमीज के बटन टट गये हैं, अगर टाँक देतीं तो बड़ी... "

और एक बार फिर यह याचना-भरा स्वर उसे जहरीले साँप की तरह डस गया। आखिर रवि अधिकारपूर्ण ढंग से उसे आज्ञा क्यों नहीं देता... ? उसने झल्लाकर कह दिया—" अभी मुझे बहुत काम करने हैं ... "

वह चुपचाप चला गया। बाहर जाकर खुद ही टाँकने लगा...। कविता अपने-आप सुबक उठी। आखिर रवि उससे भागता क्यों है ? डरता क्यों है ?...

उसकी नजर ' रैक ' पर गयी। सारी किताबें सजी-सजाई रक्खी थीं। धीरे-धीरे वह करीब आयी। धूल की चादर में सब के सब छिपे थे...शेक्स-पियर, कीट्स, निराला, पंत, बच्चन... रवि ने उसकी इन प्यारी किताबों को कभी झाड़ा तक नहीं था।

तभी रवि आ गया। उसे देखते ही कह उठा—" आप ?... आइये, बैठिये न..." और वह वहीं पड़ी अपनी कमीज से कुर्सी झाड़ने लगा। कविता को लगा, कोई गर्म-गर्म घी उसके शरीर पर उछाल रहा है। लेकिन वह बिना उफ किये, चुप-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्व प्रकार से सर्वोत्तम मृदुलता के लिए...पत्ता

सर्व प्रकार से सर्वोत्तम कपड़ों के लिए...एस.आर.एम.

फुल वॉयल • प्रिन्टेड वॉयल
पॉपलिन • धोतियाँ • मफ्लर
लीनो • रुमाल

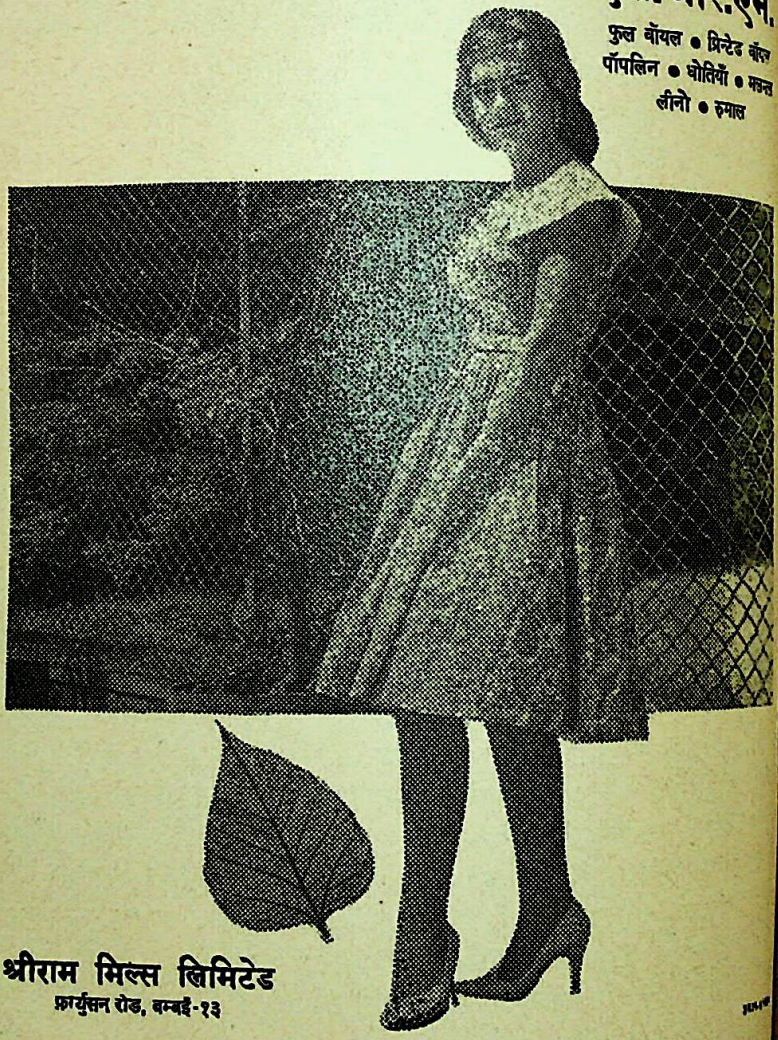

श्रीराम मिल्स लिमिटेड
फ्रार्युसन रोड, बम्बई-१३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाप बैठ गयी ।

"मैं...मैं जरा सामने रामदास के यहाँ गया था ।"

"घर खुला छोड़कर ?"

रवि के चेहरे पर भय की छाया सिमट आयी– "जी...मैं..." और वह आगे कुछ भी नहीं कह सका । कविता को लगा वह एक बार फिर दलदल में फँसी जा रही है । उसने बात की डोर अपने हाथों ले ली... "मैं रुपये लेने आयी थी..."

"आपने क्यों तकलीफ की । मैं बीमार पड़ गया, इसीलिए समय पर नहीं आ सका।...और उसने रुपये लाकर कविता को थमा दिये । वह उठने लगी, तो उसने कहा... "आयी हैं, तो कम से कम चाय तो पीती जाइये ।"

कविता फिर बैठ गयी ।

रवि रसोईघर जाकर चूल्हा फूँकने लगा। उसका मन हुआ, वह रवि को बुलाकर अपनी जगह बैठा दे और खुद चाय बनाये...। लेकिन नहीं, अब इस घर से उसका क्या संबंध ? रवि से क्या रिश्ता ?

तभी रवि आ गया–"आप जरा ठहरिये, मैं अभी पत्ती लेकर आया ।" और वह बाहर निकल गया । कविता को लगा, जैसे वह कोई चाकर है, जो मालकिन के आते ही बाजार दौड़ गया । वह खोई-खोई आँखो से रसोईघर देखती रही । धुएँ से पुता कमरा... काजल की कोठरी । उसके मन में फिर कोई बिरहन आकर बैठ गयी । बैठकर सिसकने लगी । और उसे खयाल आया, एक दिन वह दाल में नमक देना भूल गयी थी । लेकिन रवि ने खाते समय कुछ भी शिकायत नहीं की । दूसरे दिन उसने जान कर नमक तेज कर दिया कि रवि उस पर नाराज होगा । मगर रवि जैसे रोज खाता, खाकर आफिस चला गया, कोई शिकायत नहीं । लेकिन जब वह खाने बैठी, तो उबकाई आ गयी.. उसका मन रो उठा, रवि चुपचाप यह सब क्यों झेल जाता है ? क्यों नहीं उसे मारता? क्यों नहीं उसे बात कहता ? उस पर क्यों नहीं अपना अधिकार जताता ?...

और तब वह चाबियों का गुच्छा पटककर कह उठी थी–" मेरा और आपका निबाह नहीं हो सकेगा... मैं अपने घर चली जाऊँगी ।"

रवि ने कोई जवाब नहीं दिया ।

उसे और भी चिढ़ाने की गरज से उसने कहा था–" लेकिन मुझे रुपये मिलने चाहिये, तलाक के बाद जैसे और पत्नियों को..."इतना कहकर वह रवि-के कठोर शब्दों की प्रतीक्षा करने लगी थी । लेकिन उत्तर में रवि ने पूरी तनख्वाह उसके सामने रख दी । न चाहकर भी, अपना हिस्सा उठाकर वह दरवाजे के पार जाने लगी । उस वक्त भी उसने सोचा, रवि आयेगा, उसे डाँटेगा, एक रौबदार पति की तरह आज्ञा देगा कि वह घर छोड़कर नहीं जा सकती है ...

लेकिन वह दरवाजे के पार भी आ गयी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहाँ केवल सर्वोत्तम ही स्वीकार है...

परिवार के लिए माँ की पसंद डालडा

'पिता पर पूत...' स्वस्थ, मनचला, हंसमुख! माँ के लालन पालन और शुद्ध स्वादिष्ट भोजन के कारण, जिसकी डालडा जैसी सर्वोत्तम सामग्री माँ खुद अपने हाथों चुनती है।

शुद्ध वनस्पति तेलों से बना हुआ डालडा केवल मुहरबंद डिब्बों में मिलता है ताकि इसकी शुद्धता और ताज़गी सुरक्षित रहे। डालडा में विटामिन हैं जो बढ़ते हुए बच्चों के लिए आवश्यक हैं। शुद्ध स्वादिष्ट भोजन के लिए आज ही लाइये...

डालडा वनस्पति-एक विशेष, शुद्ध चिकनाई

DL. 61-X29 HL

हिंदुस्तान लीवर का उत्पाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और रवि ने उसे रोका नहीं। ताँगे तक उसे खुद आकर छोड़ गया। ताँगा चलते ही उसके अंदर का थमा तूफान रुक न सका। पानी की हर लहर कछार पर आ-आकर सिर पीटने लगी... वह इस घर में पत्नी बनकर आयी थी; लेकिन भाग्य को जाने कब का उससे वैर था कि वह मालकिन बना दी गयी। हर औरत की तरह वह भी नारी स्वतंत्रता पर बहस करती थी। इस 'स्कीम' की दाद देती थी। कालेज में पुरुषों से आगे बढ़ने की योजनाएँ बनाती थी, उन पर शासन करने की बातें सोचा करती थी...लेकिन अपने पति के घर आते ही, जब वह अजाने ही मालकिन बन गयी, तो उसके अंदर उसे कुछ कचोटने लगा। एक और ही कविता उसके भीतर जनम गयी, जो कालेजवाली कविता से सर्वथा भिन्न थी। जो बराबर यही चाहती थी कि रवि उसे डाँटे, बात कहे, उस पर शासन करे...

तभी रवि पत्ती लेकर आ गया। उबलते पानी में पत्ती छोड़कर उसने चाय तैयार की। कविता के आगे बढ़ाकर उसने कहा—" मेरी वजह से आपको बड़ी तकलीफ हुई। एक तो यहाँ आना पड़ा और ऊपर से देर! लेकिन विश्वास कीजिये, अगले महीने अगर बीमार भी रहूँगा, तो भी रुपये समय पर पहुँचा दूँगा ..."

कविता चाय नहीं, विष पीती रही।

प्याली खालीकर उसने कहा—"शाम झुक आयी है, अब मैं चलूँगी।"

रवि ने प्याली उठा ली। फिर कमीज डालते हुए उसने कहा—" अगर आप थोड़ा रुकें, तो 'बस-स्टैंड' तक मैं भी आप का साथ दे दूँ, वहाँ से आप चली जाइयेगा। आजकल मैं वहीं करीब एक ट्यूशन करने लगा हूं। मन को तो कहीं लगाना ही होगा न ... "

कविता फिर बैठ गयी।

कमीज पहनकर रवि चौंक गया। बटन टूटे थे। वह सूई में तागा डालने लगा। कविता ने सोचा, रवि उसके पास आयेगा... लेकिन वह खुद ही टाँकने लगा। कविता का मन हुआ, वह सूई-तागा उसके हाथ से छीनकर खुद टाँक दे एक-एक बटन। लेकिन भीतर का तूफान उसे रोके रहा और वह तूफान से जीत नहीं सकी ... जैसी की तैसी बैठी रही मूरत की सगी।

एक हल्की-सी सी-सी... रवि की उंगली में सूई चुभ गयी। इस बार कविता अपने को जब्त न कर सकी। उंगली से खून बहने लगा... वह एकदम करीब आ गयी —" कब से यहाँ हूँ, जरा तुमसे यह भी नहीं कहा गया कि कविता बटन टाँक दो... मैं इतनी पराई हूँ, इस कदर गैर हूँ रवि ?? आखिर तुम मुझसे इतना भागते क्यों हो ? क्यों नहीं मुझ पर अधिकार जताते ... ?"

रवि चौंक गया। काँपते स्वर में उसने कहा—" आपको मैंने बहुत दुख दिये हैं। शादी करके मने कितना बड़ा गुनाह किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है. . . लेकिन मैंने आपके डैडी से कह दिया था . . . डैडी, मेरा और कविताजी का क्या मेल ? जमीन और आसमान को एक सूत्र में बाँधने की कल्पना तो. . . "

उन्होंने कहा था–" बेटा रवि, मैं जानता हूँ कि. . . लेकिन आसमान और जमीन के कारण ही तो क्षितिज है । फिर हमारे समाज में, हमारे क्रिश्चियन समाज में इतने पढ़े-लिखे लड़के ही कहाँ हैं । सभी माँ-बाप इस उम्मीद में पढ़ाते हैं कि अच्छा वर मिलेगा । और फिर लड़कियाँ इतना ज्यादा पढ़ जातीं हैं कि खराब वर भी अपनाना उनके लिए मुश्किल हो जाता है. . . रवि, मुझपर बहुत एहसान होगा अगर तुम. . .

" लेकिन कविता, आप कितनी ज्यादा पढ़ी-लिखी हैं. . . आपके पास कितनी ही डिगरियाँ हैं, मैं आपके इन कागज के टुकड़ों से डरता रहा हूँ... मैं तो सिर्फ एक मैट्रिकुलेट किरानी हूँ... चाहकर भी मेरा मन अपने को आपसे बड़ा नहीं मानता...

कविता सिसक उठी–" अपने [illegible] आग लगा दो मेरी बी०ए० एम० ए० [illegible] डिगरियों में. . . इसी भय से तो [illegible] कहीं प्रोफेसरी नहीं की. . . मुझे एक [illegible] फिर अनपढ़ बना दो, गंवार बना दो [illegible] लेकिन मुझसे दूर-दूर मत भागो... तुम्हारे बिना मेरा दम घुट जाता है... मैं सिर्फ एक औरत हूँ . . . "

इस बार जाने कहाँ से एक [illegible] रवि पैदा हो गया, उसने कविता को [illegible] पाश में बाँध लिया– "सच कविता...? [illegible] मैं तुम्हें कभी भी नहीं जाने दूंगा ... [illegible] भी लगोगी, तो जबरदस्ती रोक लूंगा...

लहू बहती उंगली को अपने ओठों [illegible] चसती हुई कविता ने परछाईं की [illegible] हिलती काँपती नजरों से रवि को देखा [illegible] फिर उसकी आँखें आपसे-आप झुक [illegible] जैसे आहिस्ता आहिस्ता दीवार से [illegible] उतर जाती है *

शरत्बाबू का उत्तर

एक बार बंगाली युवक शरत्बाबू के पास आकर बोला–"दादा, मुझे कहा[illegible] लिखना सिखा दो !"

"अभी तुम्हारी उम्र ही क्या हुई है, जो कहानी लिखना चाहते हो ? अभी [illegible] चार साल और दुनिया को निकट से देखो और योग्य लेखकों के साहित्य का अभ्या[illegible] करो, फिर लिखना !"–शरत्बाबू ने उत्तर दिया ।

युवक हठी था, बोला–"किंतु, आपने तो चौदह वर्ष की अवस्था में ही उप[illegible] लिख लिया था ।"

"किंतु मैं किसी से पूछने थोड़े ही गया था कि उपन्यास कैसे लिखा जाता है" शरत्बाबू ने सीधा-सा उत्तर दिया ।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

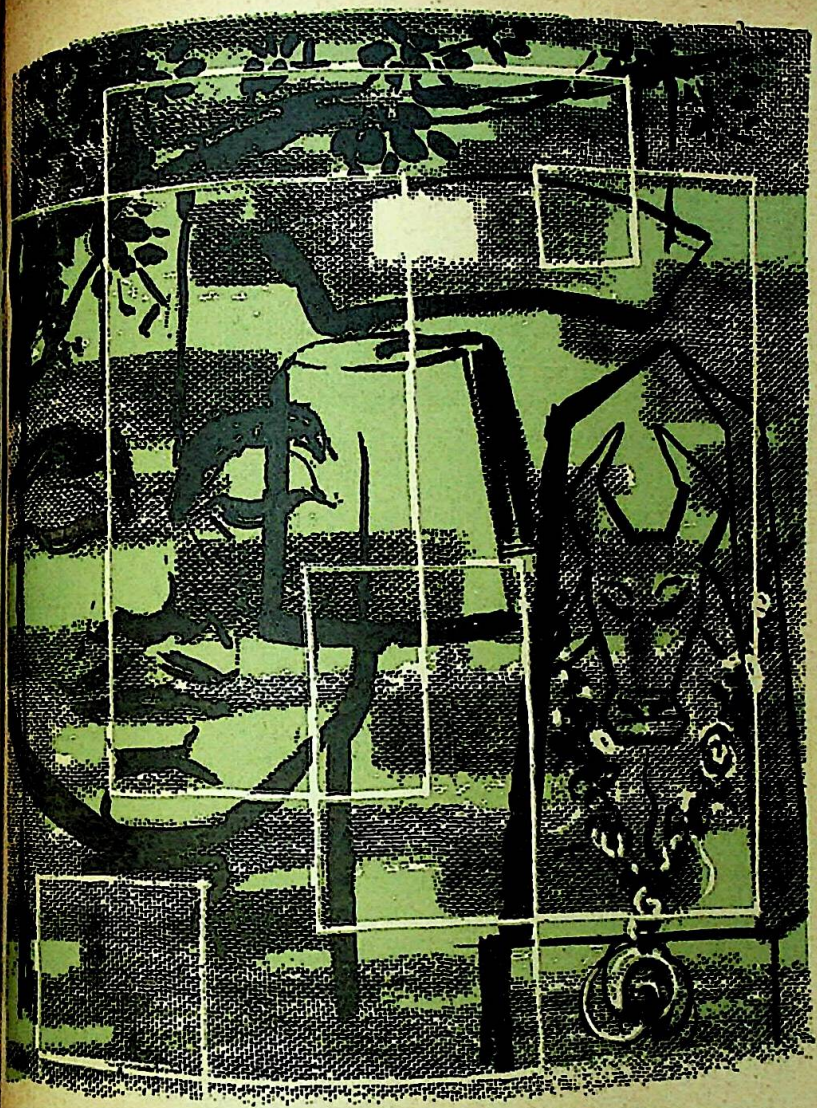

ज़ुन्नारे-शब

~ क़ाज़ी अब्दुल सत्तार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपन्यास-जैसे अर्थ-गौरव, घटना-बाहुल्य और पात्र-वैविध्यवाला एक अति सशक्त आख्यान; रूपांतरकार : मुगनी अब्बासी।

झामपुर की परम्परा के अनुसार महादेवजी के पीपल की वह शाखा काट दी गयी, जो ट्रैफिक कांस्टेवल के सफेद हाथ की तरह ताजियों का जुलूस रोके खड़ी थी। लेकिन कसाइयों का पंचायती ताजिया नियम-विरुद्ध इतना ऊँचा था कि उसका गुम्बद शाखों से उलझ रहा था।

शरीर पर लिपटी हुई जामदानी की पुरानी अचकन लहराते हुए इनायत खाँ जुलूस से निकले और पीपल की जड़ के पास खड़े हुए तफज्जुल हुसैन को गहरी निगाहों से देखा। तफज्जुल हुसैन ने अपने फीरोजी रँगे हुए मोटी तंजेब के कुर्ते की ढीली आस्तीनें कंधों पर फेंक दीं। बने हुए बाजुओं की फड़कती मछलियों का प्रदर्शन करके नीची धोती को लंगोट की तरह कसकर बाँध लिया। पास खड़े हुए लड़के के कंधे पर से बारह सेर वजनी बाँका फूल की तरह उठाया। लम्बे काले अधेड़ थानेदार ने सशस्त्र कांस्टेबल के कान में धुन से कुछ कहा। फिर सारी-की-सारी पुलिस फोर्स मुसलमान थानेदार के पीछे सिमटकर खड़ी हो गयी।

पीपल के नीचे से दूर छोटे मंदिर तक सारे मैदान में खचाखच भरा हुआ हिन्दू जन-समूह फुंकारें मार रहा था और कलई किया हुआ मंदिर घाघ सेनापति की तरह खड़ा कुछ सोच रहा था कि चौधरी [illegible] नारायण समूह को चीरते, रेशमी [illegible] के सोने के बटने बंद करते, नये [illegible] पम्प को धूल से बुराबुराकर कदम [illegible] निकले और इनायत खाँ से थोड़ी दू[illegible] रुक गये। हिन्दू लठबंदों का एक [illegible] निकलकर उनके पीछे खड़ा हो गया।

इनायत खाँ ने अपनी सफेद दा[illegible] हाथ फेरा। कंधे पर पड़ी हुई हरी [illegible] चादर खींचकर कमर से बाँधी। सिर [illegible] फूला-फूला साफा कसकर लपेटा। [illegible] बाजें बजानेवालों ने दिलों में आग [illegible] देनेवाली धुन को खूब झूमझूमकर [illegible] शुरू कर दिया। जोगियों के चौतरे [illegible] ललकारा और रेशमी कुर्ते और कारचो[illegible] वास्कटें पहने हुए जोगियों के लड़के [illegible] चीखकर मर्सिया पढ़ने लगे और [illegible] उछलकर मातम करने लगे। अखाड़े [illegible] करतब दिखानेवाले अपने-अपने [illegible] के पीछे लकड़ियाँ हिलाते, बाने घुमाते [illegible] तलवारें चमकाते दौड़े और इनायत [illegible] के पीछे फैलकर खड़े हो गये।

इनायत खाँ की सफेद भौंहों के [illegible] छोटी-छोटी संतुष्ट आँखें चमकीं [illegible] तफज्जुल हुसैन पर गड़ गयीं। तफ[illegible] हुसैन ने चढ़ने के लिए बाँके के [illegible] रुमाल में लपेटकर मुँह में दाबा और [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर हाथ जमा लिये । किसी मनचले ने "या अली" का नारा लगाया, जिसकी तकरार ने बड़े-बड़े दिलों को हिला दिया । फिर चौधरी इकबाल नारायण गरजे—

"कानून हो चुका खाँ साहब ! .....अब पीपल नहीं कटेगा ।"

तफज्जुल हुसैन ने पाँव उतार लिया और इनायत खाँ को देखा । इनायत ने शांति-पूर्वक रुक-रुककर कहा:—

"पीपल तो कटेगा चौधरीजी !"

"नहीं कट सकता....." चौधरी की आवाज फट गयी ।

"तो ताजिये नहीं उठेंगे ।"

"न उठें !"

फिर ताजिये रख दिये गये । उन्हें उठानेवाले हिन्दू मजदूर बीड़ियाँ पीने लगे । ख्वानचेवाले भागकर उस मस्जिद के नीचे आ गये, जहाँ दूर खड़ी औरतें तमाशा देख रही थीं । भड़कदार कपड़े और खनकदार जेवर पहने चमकती-खनकती औरतें मिठाई के दोने और गोद के बच्चे सम्भाले अपने घरों की ओर भागीं । कसाइयों और गड़ियों के चौधरियों ने ताजियों के आस-पास लाठियों का घेरा बना लिया और शांति से चिलमें पीने लगे ।

इनायत खाँ के मुँह से कफ जारी हो गया । हाथ-पैर काँपने लगे । कमर के चादरे की गाँठ मजबूत की और लम्बे-लम्बे डग रखते भागे और मटियाले फाटक तक आ गये । उन्हें देखते ही ड्योढ़ी पर खड़े हुए आदिमियों ने अंदर शेख को खबर कर दी । बीमार शेख ने हाथ का इशारा किया । औरतें छिप गयीं । इनायत खाँ धमकते-बरसते अंदर पहुँचे । शेख ने बड़ी तकलीफ से अपने को उभारा और गाव-तकिये में कोहनियाँ गाड़ दीं ।

"चौधरी इकबाल नारायण ने ताजिये रोक दिये हैं ।" इनायत खाँ ने खड़े-खड़े वार किया ।

"हूँ !"

"कसाइयों का पंचायती ताजिया अगर दो-चार अंगुल और ऊँचा हो गया, तो क्या जुलूस में नहीं चलेगा ?"

"इकबाल से कहो—मैं अभी मरा नहीं हूँ.....पीपल कटेगा ।"

इनायत खाँ के जाते ही नौकर दौड़ने लगे । बंदूकें निकाली गयीं । सिपाही कील-काँटे से लैस होकर ड्योढ़ी पर लगी हुई फीनस के चारों ओर घेरा डालकर खड़े हो गये । कहारों की कतार प्रतीक्षा करने लगी । शेख ने लेटे-लेटे पाजामा बदला । बैठे-बैठे अचकन पहनी । अपने हाथ से पल्ला चुना और सिर पर रख लिया । रणवीर ने धीरे-से उनके पाँव में जूता पहना दिया । रामसुख और लक्ष्मणदास ने पोले हाथों से सहारा देकर उन्हें उठाया । लेकिन पिंडलियाँ काँपने लगीं । शेख ने दो कदम घसीटे, फिर गर्दन हिलायी और खड़े हो गये । इशारा पाते ही नौकरों ने मसहरी पर लिटा दिया । लेटते ही साँस धौंकनी की तरह चलने लगी । मनका ढल गया और हुल्लड़ मच गया । औरतें चीखने-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुकारने लगीं। फिर परदा हुआ।

सैकड़ों चारपाइयों को निगल जाने-वाला आँगन आदमियों से भर गया। हकीम गुलाम हुसैन दवाओं से लदे-फँदे आये। थानेदार इलियास ने अपने काँपते हुए हाथों से बैदमुश्क का चमचा शेख के मुँह में उड़ेल दिया। शेख ने आँखें खोलीं। तैरते हुए दीदों को थामकर अपनी इक-लौती संतान, अपनी तीसरी पत्नी की एक-मात्र निशानी जमील को देखा, जो उनका पाँव पकड़े बैठा था। आँखों के कोने पानी की लकीरों से चमक उठे। फिर चौधरी इकबाल नारायण हाँफते हुए आये और उनका दूसरा पाँव गोद में लेकर बैठ गये। शेख ने इकबाल नारायण को देखा और कमजोर आवाज में बोले—"यह क्या है?"

"कुछ नहीं चाचा....."

"ताजिये..... क्यों..... रख ..... दिये .....गये ?"

"कहाँ रख दिये गये ताजिये ! यहाँ से जाते ही उठवाता हूँ। आप आराम कीजिये।"

"इनायत.....खाँ..... "

"चाचा, इनायत खाँ झूठे हैं ....., फसादी हैं..... भला ताजिये भी कोई रोकने की चीज है ?"

फिर चौधरी इकबाल नारायण उठे और अपने मुसलमान सिपाही को हुक्म दिया कि पीपल कटवा दो, बाजे बजवाओ, शेख चाचा को विश्वास हो जाये।

हकीम गुलाम हुसैन नब्ज पकड़े बैठे थे। चौधरी इकबाल नारायण का सिपाही नयी साइकल पर डाक्टर को लेने [illegible] जा चुका था। शेख मुहम्मद [illegible] रईस झामपुर की साँस का कच्चा [illegible] टूट गया।

बाजे एक बार फिर रुक गये। [illegible] ने हाहाकार मचा डाला। मिरासनें [illegible] नोहे पढ़ने आयी थीं, शेख के बैन [illegible] लगीं। पीपल की शाखें तो कट [illegible] लेकिन जुलूस उजड़ गया। ताजिये [illegible] थियों की तरह सिर झुकाये निश्चित [illegible] पर से होते हुए बारह बजे रात के [illegible] दिन के दो ही बजे दफन हो गये। [illegible] ओर आदमी दौड़ने लगे। लाला [illegible] रईस मानिकपुर, फाटक के निकट [illegible] अद्धे से फाँद पड़े और शेख के जनाजे [illegible] पहुँचते-पहुँचते कई बार गिर-गिर [illegible] कई बार सिपाहियों ने उठाया। फिर [illegible] का हाथ चादर से निकलकर मुँह पर [illegible] लिया और चीख मारकर कहा—"[illegible] कमर टूट गयी।" और पछाड़ें खाते-[illegible] बेहोश हो गये।

शेख के कच्चे दीवानखाने के [illegible] से दूर सड़क तक फैला हुआ जन-[illegible] बढ़ते-बढ़ते स्कूल के अहाते तक [illegible] गया। तीन-तीन कोस तक का एक-[illegible] आदमी शेख को मिट्टी देने के लिए आ [illegible] था। लेकिन शेख अपने कपड़ों में लिपटे [illegible] उनकी शेरवानी उसी प्रकार मखमली [illegible] तकिये पर पड़ी थी। सतरख के [illegible] भारतसिंह का इंतजार था, जिन्हें [illegible] लिए सतरख की मोटर लखनऊ आ [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। फिर सतरख के ठाकुर आ गये। शेख की पट्टी पर सिर रखकर रोते रहे। फिर लाला सद्गुरु से लिपट गये।

"आज बावन बरस का साथ छूट गया सद्गुरु !"

"आज जोड़ा उजड़ गया !"

वे चीखते रहे और रोते रहे।

फिर चौधरी इकबाल नारायण ने दोनों को छुड़ाया। शेख नहलाये गये। जब उन्हें कफन पहनाया जा रहा था, तब ठाकुर ने लाला सद्गुरु का बाजू पकड़कर कहा—"इसकी शादी के कपड़े भी हम दोनों ने पहनाये थे। आओ अब हमीं कफन भी पहना दें !"

झामपुर की मस्जिद से झामपुर के रईसों के कब्रिस्तान तक दो मील का कच्चा रास्ता आदमियों से बजक रहा था। सारे रास्ते ठाकुर भारतसिंह, ताल्लुकेदार सतरख और लाला सद्गुरु नारायण, रईस मानिकपुर ने कंधा नहीं बदला।

× × ×

गम की घटा बरसकर खुली, तो नये उज्वल आकाश पर यहाँ से वहाँ तक भविष्य का इंद्रधनुष फैला हुआ था। शेख के चेल्लुम के बाद जमील अपनी माँ की नंगी-सूनी बादामी कलाइयों के हार अपनी गर्दन से उतारकर आहिस्ता-आहिस्ता कदम रखता ऊपर अपने कमरे में आ गया। तख्त पर ढेर ठंडी पतलूनों और गरम शेरवानियों के अम्बार को संदूकों में कैद करके वजनी तालों का पहरा लगा दिया। उन किताबों को अलमारियों में ठूँसने लगा जिन पर 'शेख मुहम्मद जमील, कक्षा दसवीं, गवर्नमेंट स्कूल, सीतापुर' के कलमी मानोग्राम बने थे। उनकी धूल से अब भी उस भविष्य की बशारत की सुगंध आ रही थी, जो बी०ए० की सरहद के पार खड़ा था। थोड़े दिन पूर्व जिस प्रकार उसने अपने बाप को कब्र में उतारा था, आज उसी प्रकार इन कागजी लाशों को दफ्न करके वह अपने हाथ झाड़ता नीचे उतर आया।

आषाढ़ भर चुका था। लेकिन आकाश नीले शीशे की चादर की तरह तना खड़ा था। सूरज इतिहास के जब्र की तरह बेगुनाह इन्सानों पर बरस रहा था। वह देर तक दीवानखाने के कच्चे लम्बे ठंडे दालानों में टहलता रहा। फिर बिना गागल्स लगाये, बिना हैट लिये बाहर निकल पड़ा। फाटक पर चिलम पीते सिपाहियों ने लपककर लाठियाँ उठायीं। लेकिन 'भैया' ने हाथ के इशारे से उन्हें रोक दिया। सड़क पर मुड़ते ही मिठाई और परचून की दूकानों पर बैठे हुए व्यक्तियों में से किसी ने सलाम के लिए दो अँगुलियाँ न उठायीं। वह सिर झुकाये अनजान-सा गुजर तो गया; लेकिन अनुभवी हकीम की तरह नये बीमार की बीमारी खोजता रहा। वह सोचता रहा उन व्यक्तियों के बारे में, जो शेख के जीवन में उसके कुत्तों को चुमकारते और मुंह सुखाये उसके चेहरे को पढ़ा करते थे।

अब वह अपने खेतों में आ गया, जहाँ उसके नौजवान नौकर कड़कती धूप में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'एनासिन
दर्द से आराम

के लिए **बेहतर** है

क्यों कि इसके **चार** फायदे हैं

दर्द दूर

बुखार कम

घबराहट में कमी

तबीयत में चैन

'एनासिन' अपनी दवाओंके कारण ज्यादा असर करती है और हर तरह के दर्द के लिए बेहतर है। जैसे कि सिरदर्द, सर्दी - ज़ुकाम, दाँतका दर्द और रगपुट्ठोंका दर्द। 'एनासिन' बुखार घटाती है, और इस तरहसे आपकी घबराहट और बेचैनी दूर हो जाती है। याद रखिये। एनासिन की दो टिकियां हर तरहका दर्द दूर करनेके लिए बेहतर हैं।

दो टिकियों का दाम
सिर्फ १३ न. पै.

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO. LTD.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेत सींच रहे थे। बाईस वर्ष के जीवन में वह पहली बार अपने खेतों की निगरानी के लिए आया था। बूढ़े सीरवानों ने हाँक लगायी और पास के गाँव से पलंग, छतरियाँ, पंखे, दूध और शरवत के चमकते लोटे और ठंडे पानी के गागरे चलने लगे। एक मेंड़ पर पलंग पड़ गया, ऊनी कालीन बिछा दिया गया। एक सीरवान छतरी खोलकर खड़ा हो गया और कई आदमी दूध और शरबत लिये बैठे रहे। लेकिन वह भीगी, चिकनी और ठंडी मेंड़ों पर टहलता रहा। फिर रामसुख ने अपनी आधी धोती से सफेद बालों से भरी छाती छुपा ली, बीड़ी बुझाकर कान में लगा ली और उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

"भैया!"

"हूँ!"

"जलपान कर लेओ आप!"

"मुझे इच्छा नहीं है!"

"यही रीत है मालिक!"

"रीत है?"

"हाँ मालिक!.....आप पहली बार अपने राज माँ आये हो।"

"राज?"

"राज.....चाहे छोटा हो, चाहे बड़ा, मुलु राज राजै है।"

उसने गर्दन हिलाकर आश्चर्य प्रकट किया और दो घूँट दूध मिला हुआ गुड़ का शरवत पिया और दो दर्जन कुल्लियाँ कीं। फिर टहलता हुआ अपने गाँव भटारा की ओर चलने लगा।

झामपुर और उसके आस-पास की सारी राजनीति पर शेख का हुक्म चलता था, जो झामपुर की तीन हजार की आबादी में सबसे अधिक चौधरी इकबाल नारायण और इनायत खाँ को खलता था। चौधरी इकबाल नारायण जिस प्रभाव और विश्वास को रुपये से खरीदना चाहते थे, उसे इनायत खाँ अपनी जाति के बहुमत के कारण हथियाना चाहते थे। थोड़े ही दिनों में हिन्दुओं की अधिकांश समस्याएँ चौधरी इकबाल नारायण की बैठक में और मुसलमानों के मसले इनायत खाँ की चौपाल में तय होने लगे। इसके बावजूद दोनों के रास्ते में शेख की पुरानी चौखट की परम्परागत बुजुर्गी पहाड़ की तरह खड़ी थी। दोनों ने उसे ढहा देने के लिए कमर कस ली थी।

जब जमील घर पहुँचा, तो देखा मुंशी कसाई का बेटा तेवर बिगाड़े खड़ा है, रसूलन बुआ ताम्बे की प्लेट में गोश्त लिये बड़बड़ा रही हैं और अंदर आँगन में अम्मी बरस रही हैं—"अभी तो जन्नती का कफन भी मैला नहीं हुआ और अभी से यह नमकहरामी कि मेरे घर में कुत्तों का रातब आने लगा।.....अल्लाह की शान.....रसूलन, पटक दे यह प्लेट इस हरामजादे के मुँह पर..... हमारा वक्त बिगड़ गया है तो हम नहीं खायेंगे गोश्त..... जब हमारा वक्त पलटेगा, तब हम गोश्त खा लेंगे।"

जमील को देखते ही बुआ गुर्रायीं—

"अय भैया, घंटों बैठे रें-रें भीख जैसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप धोखा नहीं खा सकते यदि आप

बंगाल की

बुनने की ऊन खरीदते हैं।

जो प्रायः सभी प्रसिद्ध दूकानों में मिलती है।

निपुण विशेषज्ञों द्वारा विशेष तौर से तैय्यार की हुई ऊन! अपने विभिन्न आकर्षक रंगों और प्रकारों में, स्त्री, पुरुषों और बच्चों के लिए समान रूप से उपयोगी है। यह धोने में सरल और पहनने में टिकाऊ है।

इन्हीं सब बातों ने मिलकर बंगाल की ऊन को देश भर में प्रसिद्ध कर दिया है।

दि बंगाल नेशनल टेक्सटाईल मिल्स लि०

८७, धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता-१३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाँगा करें, तब यह गोश्त नसीब हो..... मुँह से कुछ बोले, तो कुरियाँ बमका के खड़े हुए जाते हैं।"

वह पाँव पटकता बाहर आया। रामगुलाम उसके तेवर देखते ही खड़ा हो गया।

"रामसुख को बुलाओ।" जलील सरजा और रामगुलाम बिजली की तरह दीवार से लगी साइकल लेकर फाटक से निकल गया। रामसुख 'सरकारी' खेतों से असामियों से धान दबा रहा था। उसे देखते ही रामगुलाम साइकल से कूद गया।

"बुलव्वा है।"

"काहे?"

"भैया बरजाये रहे हैं।"

"की पर?"

"चिकवा (कसाई) मारे उजमान है!"

"हूँ...तो तुम चल रहो, हम आवत हैं।"

फिर उसने चिलम का आखिरी दम लगाया और काम करते आदमियों को विभिन्न मौजों पर रवाना करके हुक्म दिया कि आदमी सम्भलकर द्वारे पहुँचें और खुद भटारा के आदमियों को बटोरने चला।

भटारा और उसके किसानों में पासियों की आबादी सबसे अधिक थी। दूरदर्शी शेख ने उनके दिलों को जीत लिया था। शेख जिला सीतापुर में अकेले रईस थे, जो पासियों के यहाँ डंके की चोट पानी पीते थे और खुल्लम-खुल्ला गोवध की निंदा करते थे। झामपुर में कोई ऐसा नहीं था, जो यह दावा कर सके कि शेख ने कभी गाय का गोश्त खाया है। इसके बदले में भटारा और उसके आस-पास के पासी सुअर नहीं पालते थे और आम तौर पर मशहूर था कि सुअर खाते भी नहीं थे। नतीजा यह था कि शेख के पुरे बरतन तक पासी उठाते थे और उनमें जीवन होने के बजाय गर्व अनुभव करते थे।

रामसुख अपनी जाति का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति था। वह शेख के परगने में सारे इलाके पर शासन करता था। शेख की मौत का सबसे ज्यादा असर जलील के बाद रामसुख पर ही पड़ा था और वह रामसुख अंदर-ही-अंदर, अपनी सत्ता को वापस लाने के लिए मौके की ताक में था। अब वह बड़े इंतजाम से चला।

मुंशी गोश्त की दूकान तो रखवारी में लगाता था, उसका असली व्यापार था आस-पास के इलाके में बालें खरीदना और कलकत्ते में सौदा करना। कसाइयों का चौधरी तो था ही, अब हज करके झामपुर के प्रतिष्ठित लोगों में सम्मिलित हो गया था। इनायत खाँ से उसका बराबरी का सम्बंध था और चौधरी इकबाल नारायण से लेन-देन। शेख के जीवन-भर चुप रहा। उनके मरते ही झामपुर के इकलौते हाजी ने पर-पुरजे निकाले। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए ग्यारहवीं शरीफ में पुलाव की देगें पकवायीं और मुहर्रम में शक्कर के शरबत की सबील लगवायी।

मुंशी जोरों पर जा रहा था कि बेटे ने यह खबर सुनायी। उसने तुरंत अलगनी से लम्बा कुर्ता उतारकर पहना, गरई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय सत्कार
व
आधुनिक सुखों
का प्रतीक

अशोक
होटल

नई दिल्ली

- पूर्णतया वायु अनुकूलित
- ३५० से अधिक कलायुक्त सुसज्जित कमरे
- प्रत्येक कमरे के साथ 'शावर' सहित आधुनिक स्नानग्रह
- हरेक कमरे में टैलीफोन व रेफरिज़रेटर
- विभिन्न प्रकार के भारतीय तथा विदेशी भोजन
- तैरने के लिये सुन्दर ताल

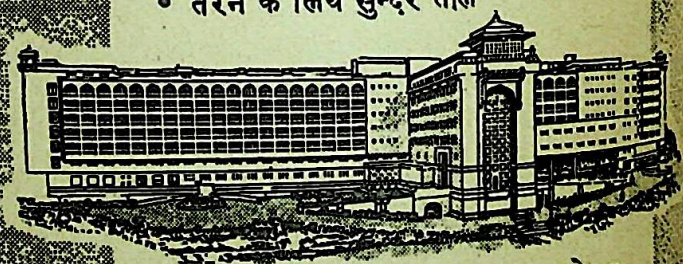

भारत का महानतम् आनन्दमय होटल

टैलीफोन-३०१११ (४० लाईन)

तार का पता-अशोका होटल

Newfields

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाजामे पर चादर का साफा बाँधा और इनायत खाँ की चौपाल की ओर चल दिया। वहाँ मोर्चा बनाकर चौधरी इकबाल नारायण से साज किया। फिर दुकान पर पहुँचकर उसने अपने भाई-बंदों को उकसाया—"जमींदार चौधरी इकबाल नारायण भी हैं; मगर वे हमसे कभी चार आने सेर गोश्त नहीं माँगते। फिर जमील भैया में कौन-से सुरखाब के पर लगे हैं कि हम सारे जहान में तो रुपये सेर बेचें, लेकिन वहाँ चार आने सेर फेंक आयें?"

मुंशी की बात सबने ध्यानपूर्वक सुनी; परंतु फिर अपने काम में व्यस्त हो गये। इस व्यस्तता में पेशेवराना ईर्ष्या और भाई-बंदों की आपसी फूट का भी हाथ था।

रामसुख के 'द्वारे' पर पहुँचते ही चारों ओर से आदमी गिरने लगे। जब रामसुख को विश्वास हो गया, तो वह सिर पर मुरेठा बाँधकर और सात हाथ का लठ कंधे पर रखकर दृढ़ कदम रखता 'भैया' के सामने आया। इससे पहले कि वह सलाम करे, भैया गरजे—

"रामसुख!"

"मालिक?"

"पकड़कर लाओ मुंशी के बच्चे को।"

और रामसुख भागी हुई बकरी की तरह मुंशी को बाजू से पकड़कर ले आया। उसके बेटों-भतीजों ने चमकने की कोशिश की; लेकिन लोगों के तेवर देखकर बुझ गये। मुंशी को देखते ही भैया का हुक्म हुआ।

"बाँध दो!"

मुंशी बाँधे जाने लगे, तो उलझ गये। भैया ने एक हरवाहे के हाथ से बैलों को हाँकनेवाला चाबुक खींच लिया और थोड़ी देर में मुंशी लम्बे हो गये। फिर मुंशी की दुकान भंगियों में बाँट दी गयी, छप्पर फूँक दिया गया। बेटे-भतीजे बिरादरी में छिप रहे। फिर एक लौंडे ने मुंशी को गठरी बनाकर उठाया और उसके तरबाहे में पटक आया।

चौधरी इकबाल नारायण और इनायत खाँ कमेटी कर ही रहे थे कि रामसुख साइकल के पीछे बैठकर थाने गया और भैया का खत थानेदार के हवाले किया। थानेदार ने खत पढ़ा और घोड़े पर सवार होकर झामपुर के फाटक पर उतर पड़ा। चौड़ी हड्डी और लम्बे कद के सुर्ख व सफेद जमील मियाँ ने पाजामे की चूड़ियाँ ठीक करके मखमली जूता पहना और नवाबों की तरह प्रकट हुए। आते ही मुर्गे कटवाने और कढ़ाइयाँ चढ़ाने का हुक्म दिया और थानेदार से इधर-उधर की बातें शुरू कर दीं।

जब कायस्थ थानेदार मुर्गे और पराठे खा चुका, तब जमील ने मतलब की बात छेड़ी। थानेदार सुनता रहा और मुस्कराता रहा। फिर शाम को कुछ कहे बिना घोड़े पर सवार होकर रवाना हो गया।

रात चढ़ते ही कोलाहल हुआ। पता चला कि मुंशी को थानेदार बाँध ले गये। जमील का जी चाहा कि जोर से कहकहा लगाये कि चौधरी इकबाल नारायण और इनायत खाँ दोनों के कानों के परदे फट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैया, हो!

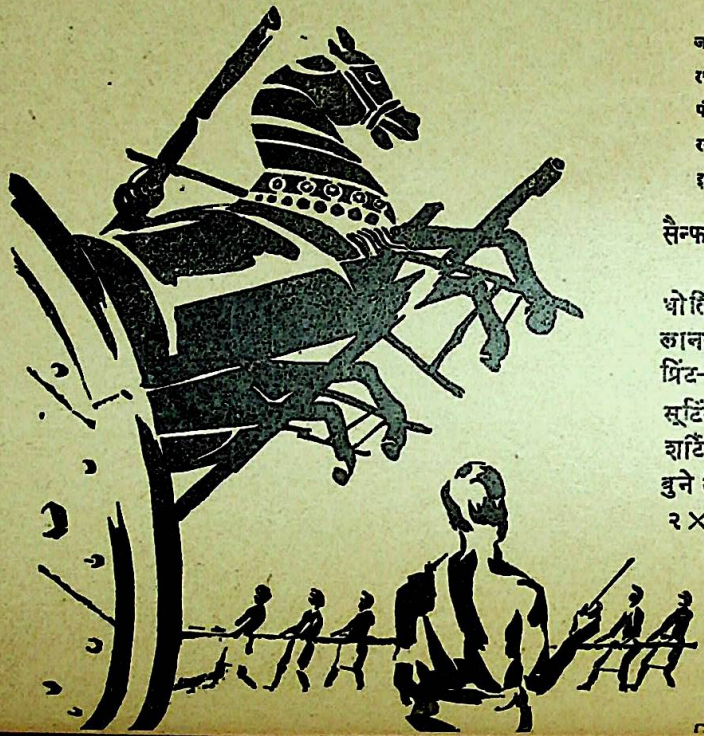

जब नगर की प्रमुख सड़कों से होकर जगन्नाथजी की रथ यात्रा गुजरती है। तब रथ के मजबूत रस्सों को खींचते, शोर मचाते, भक्त जन– हिलता, डुलता पंक्तिबद्ध जन-मानस ...

रथ-यात्रा दक्षिण भारत का खुशी और श्रद्धा का एक जलसा है... और इसी खुशी में लोग अरविन्द के कपड़े खरीदते हैं–क्योंकि ये उनकी पसन्द के हैं।

सैन्फराइज्ड पाप्लीन–कोल्डड्रिंक, ब्लूबर्ड, एवर ब्राइट
गुडशाइन, ३६०२, ३६१२

धोतियाँ– प्लैटिनम, मशहूर
लान– ५५३१
प्रिंट– छपे लान, वाइल, पाप्लीन, स्क्रिन प्रिंट साड़ियाँ
सूटिंग– गैबरडीन, टसर
शर्टिंग– धारियाँ, चेक, डावी, पजामा
बुने रंगीन बुट्टे–
२×२ फुल वाइलें लेनो और बुट्टों में

अरविन्द
मिल्स लिमिटेड, अहमदाबाद-2

Arvind Quality FABRICS

SANFORIZED

जायें। सवेरे तक वह पकड़-धकड़ मची रही कि सारी बस्ती लरज गयी।

× × ×

इस साल पानी रुकने का नाम ही न लेता था। सड़कों पर नहरें चल रही थीं। लड़के सेरों भूड़ें पकड़-पकड़कर अपने घर ले जाते। आखिर मंदिरों में कीर्तन हुए, मस्जिदें अजानों से गूँज उठीं। तब कहीं अल्लाह-अल्लाह करके चौदह दिन बाद धूप की सूरत दिखाई दी। धूप निकलते ही आदमी इस प्रकार बिलबिलाकर निकल पड़े, जैसे चुनाव के दिनों में लीडर निकलते हैं, और मकानों की मरम्मत का प्रबंध करने लगे। रामसुख ने भैया को राय दी कि बाँस, सेंठा, पतावर, भूसा और झाँकर अगर कायदे से बेचा जाये, तो हजार-डेढ़ हजार से कम का नहीं है। भैया ने सुना और देर तक सिर झुकाये टहला किये। फिर झामपुर से भटारा तक सारे जरूरत-मंद लोगों के नाम लिखे गये और खड़े-खड़े सब कुछ बाँट दिया गया। आधे दिन में भैया का नाम बाँस पर चढ़ गया। शेख को मरे दो बरस भी नहीं बीते थे कि झामपुर और आस-पास के सारे मामले भैया (जमील) के दीवानखाने में तय होने लगे। 'चौधरी साहब' फिर चौधरी इकबाल नारायण और 'खाँ साहब' इनायत खाँ होकर रह गये।

जब होली आ गयी, तो हमेशा की तरह मसरख के मेले का प्रबंध हुआ। रेल्वे लाइन के पश्चिम में ठाकुर साहब सतरख और लाला सद्गुरु, रईस मानिकपुर के खेमे लग गये और आबाद भी हो गये; लेकिन बीच के झामपुरवाले प्लाट पर धूल उड़ती रही। जब मेले की धमाधमी शुरू हो गयी, तब ठाकुर भारतसिंह ने सिपाही को खत देकर झामपुर भेजा और भैया ने भारत बाबा के डर से विवश होकर उसी समय तम्बू रवाना करने का हुक्म दे दिया। दूसरे दिन चार अद्धे जोते गये और भैया अपने नौकरों के साथ सवार हुए। पड़ाव पर उतरते ही दोनों शिविरों में कोलाहल मच गया कि 'झामपुरवाले भैया' आ गये।

ठाकुर भारतसिंह मसहरी पर गाव-तकिये के सहारे पैरों पर अल्वान डाले लेटे थे। उनके पास ही आराम-कुर्सी पर लाला सद्गुरु बैठे पेचवान गुड़गुड़ा रहे थे। दोनों ने दुआएँ दीं। फिर देरी पर मीठे स्वर और कोमल शब्दों में डाँटा। 'झामपुर-वाले भैया' बच्चों की तरह भोला-भाला चेहरा झुकाये सुनते और मासूम आँखों पर लम्बी लम्बी-पलकें झपकाते रहे।

थोड़ी देर बाद में मानिकपुर के खेमे में लाला बाबा और जमील भैया खाना खा रहे थे।"

" नमस्ते !"

जमील चौंककर पीछे मुड़ा और उषा को देखकर दंग रह गया। वह छोटा-सा घूँघट निकाले उसी प्रकार खड़ी रही।

" क्यों लाला, उषा के विवाह में तो भैया आये नहीं थे।"

"नहीं...छुट्टियाँ मनाने नैनीताल गये थे न।" लाला ने हाथ रोककर उत्तर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुनियाभर में वनस्पति का बोलबाला!

वनस्पति और इसके जैसे ही दूसरे स्निग्ध पदार्थ दुनियाभर में इस्तेमाल किये जाते हैं— उन देशों में भी जिनकी रहन-सहन ऊँचे से ऊँचे दर्जे की है। डेनमार्क, हॉलैण्ड और अमेरिका जैसे देशों में जहाँ मक्खन बहुतायत में होता है वहाँ भी इन्हीं स्निग्ध पदार्थों की माँग दूध से बननेवाले स्निग्ध पदार्थों के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा है।

दुनिया के सामने वनस्पति आने से पहले रसोई पकाने के लिए सिर्फ़ जानवरों की चर्बी, दूध के बने स्निग्ध पदार्थ और वनस्पति तेल उपलब्ध थे। जानवरों की चर्बी और दूध से बने स्निग्ध पदार्थ तो बहुत ही कम मिल पाते थे। जहाँ तक तेलों की बात है एक तो ये पतले होने के कारण असुविधा-जनक होते हैं, दूसरे अशुद्ध होते हैं और फिर इनमें विटामिन भी नहीं रहते। इसका नतीजा यह हुआ कि रसोई पकाने के लिए दुनियाभर में एक ऐसे स्निग्ध पदार्थ की खोज होने लगी जो सस्ता, पौष्टिक और गाढ़ा हो। इसी विश्वव्यापी खोज का फल है... वनस्पति!

वनस्पति शुद्ध, गाढ़ा, गन्धरहित और विटामिनयुक्त बनाया हुआ वनस्पति तेल ही है। शुद्धीकरण द्वारा कच्चे वनस्पति तेलों में आम तौर पर पाये जानेवाले घिनौने चिपचिपे तत्व, मैल, 'फ्री फ़ैटी एसिड' और रंग को दूर किया जाता है। तेल को जमाने की विधि (हाइड्रोजनेशन) से पतला तेल गाढ़ा हो जाता है और ज़्यादा दिन अच्छी हालत में रहता है। गन्ध निकालने की प्रक्रिया द्वारा तेल की बुरी गन्ध और बुरे स्वाद को दूर किया जाता है। और विटामिन मिलाने से तो वनस्पति आम वनस्पति तेलों से कहीं अधिक और दूध से बने स्निग्ध पदार्थों के सामान ही पौष्टिक बन जाता है।

वनस्पति और इसके जैसे ही स्निग्ध पदार्थ दुनियाभर में इस्तेमाल किये जाते हैं!

वनस्पति रसोई पकाने का एक सस्ता और स्निग्ध पदार्थ होने से भी बढ़कर एक मूल्य खाद्य-पदार्थ है! यह हमें गेहूँ और चावल के मुकाबले में ढाई गुनी शक्ति देता है। और फिर, हमें वक़्त यह इतना साफ़-सुथरा, ताज़ा और ताज़ा मिलता है मानो अभी-अभी कारख़ाने से आया हो। वनस्पति के हर ग्राम में स्वास्थ्यवर्धक तथा और आँखों की रक्षा करनेवाला विटामिन भरपूर मात्रा में रहता है।

अधिक जानकारी के लिए
इस पते पर लिखिए:
दि वनस्पति मैन्युफ़ैक्चरर्स
एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया
इंडिया हाउस, फोर्ट स्ट्रीट, बम्बई-1

IWT-VM-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

" इसका विवाह भी शेख साहब ने किया था।"

" दूसरी बातें करो दूसरी ... अजीब औरत है ! "

चाची झिड़की खाकर अपनी आँखें पोंछती दूसरी ओर चली गयीं। चाची के इस वाक्य ने वातावरण की चहल-पहल को डस लिया था। उषा पूड़ी की थाली लेकर आयी। जमील के इन्कार पर ऐसा आग्रह किया कि उसे लेनी ही पड़ी। पहली बार उसने उषा को निगाह भरकर देखा; परंतु उन काली, बेझिझक, गहरी आँखों के सामने न टिक सका और सिर झुकाकर निवाले बनाने लगा।

हाथ-भर लम्बे चाँदी के थाल से बीड़ा उठाकर उसने फिर आँखों को देखने की आज्ञा दी। फिर चाची आ गयीं। लाला अपनी छोलदारी में आराम करने और हुक्का पीने चले गये। उनके जाते ही चाची ने संतोष की साँस ली। अपनी दर्जनों बीमारियों और लाला के चिड़चिड़ेपन का रोना रोकर उषा के प्रसंग पर आयीं, जो पूरा चेहरा खोले शांतिपूर्वक बैठी थी।

" घराना बड़ा अच्छा है बेटा...लड़का भी स्वभाव का अच्छा है ... वैसे तो फौज में सब होते ही हैं लठमार .... विलायत पढ़ने गया है आजकल .... तुम्हारे बाप की खबर सुनकर कैसा-कैसा बिलखी थी उषा; मगर आने नहीं दिया उन लोगों ने .... बरसी के समय उसके विलायत जाने का मामला आन पड़ा .... अरे यह समझ लो बेटा कि जिसको आना कहते हैं, वह तो अब आयी है उषा।"

" माई, अब भैयाजी को आराम करने दो। अपनी बातें तो मैं खुद कर लूँगी इनसे।"

" अरे तू होगी लेफ्टिनेंट की बीवी तो अपने घर में होगी, मुझ पर बाबा की तरह रोब मत झाड़।" ....

फिर वहाँ से उठकर जमील अपने शिबिर के दूसरे भाग में आया, जिसके दायीं ओर कैनवास की दीवार के पीछे लाला चाचा का जनानखाना था। वह पलंग पर सदा की भाँति लेटा; लेकिन नींद सदा की भाँति नहीं आयी। वह देर तक करवटें बदलता रहा।

औरत के विरह में उसकी रातों ने कभी तारे नहीं गिने थे। उसके जीवन के किसी क्षण पर किसी औरत की ऐसी छाया न पड़ी थी, जो स्वप्नों के दीप जलाती है; जो आरजुओं के गुलाब खिलाती है। लेकिन आज जब वह अपने मन को भटकने से बचाने के लिए उन खेतों की कल्पना करता, जिसमें उसका गेहूँ लहलहा रहा था, तो किसी मेंड़ से उषा उठती और खेतों की हरी पृष्ठभूमि में अपनी तरबूजी साड़ी और सुनहरे बदन का झुमकड़ा इस अदा से दिखाती कि जमील की आँख झपक जातीं। दिल की मिट्टी से सहसा उग आनेवाले शर्मनाक और मुँहजोर विचारों को वह नैतिकता के चाबुक से मारकर ठंडा करता और अपने ऊँचे-ऊँचे बैलों की कल्पना बाँधता, तो उनकी गर्दनों पर रखे हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने सारे परिवार के कपड़े घर में धोइये...कमीज़ें, चोलियाँ, साड़ियाँ, बच्चों के वस्त्र, तौलिये, सभी कपड़े ! अपने सारे परिवार के कपड़े सर्फ़ से धोइये ! आपके सभी कपड़े अत्यंत आसानी से अपूर्व सफ़ेद और साफ़ धुलेंगे, क्योंकि सर्फ़में धुलाईकी अधिक शक्ति है। आज ही सर्फ़ आज़माइये।

सर्फ़ से कपड़े अपूर्व सफ़ेद धुलते हैं!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अड्डे का रेशमी परदा फड़फड़ाता और उषा की बेपनाह आँखें उस पर तड़पकर गिर पड़तीं। वह अपनी नयी शेरवानी की धूल की तरह मन से विचारों को झाड़ता और अपने उस कच्चे बँगले के बारे में सोचने लगता, तो उसमें बिछी हुई चित्रित मसहरी के मखमली बिस्तर से उषा अँगड़ाइयाँ लेती उठती और अपनी सोने की ठोस बाँहें चमकाती, मुस्कराती गुजर जाती। वह तड़पकर उठा और शामियाने के छोटे-से आँगन में बिछी हुई ठंडी चमकीली धूप पर टहलने लगा ..... टहलता रहा।

सूर्यास्त होते ही मेले ने दूसरी करवट ली। मील-भर के क्षेत्रफल में कोई लाख डेढ़ लाख इन्सानों का समूह, छोटी-सी झील में हजारों परिंदों की तरह किलबिलाने लगा। आवाजों का शहर आबाद हो गया। रोशनियों की बस्तियाँ जगमगा उठीं। सिनेमा, नौटंकी, नाटक, तमाशे और गुप्त रोगों की औषधियों का विज्ञापन इतनी तेजी से होने लगा कि उसका जी चाहा कि कानों में अँगुलियाँ ठूँस ले।

"भैयाजी का बुलावत है।"

एक बनी-ठनी महरी चटकती-मटकती आयी और घंटी-सी बजाकर चली गयी।

चाची चौके में काला कामदार शाल ओढ़े, पीतल का बड़ा-सा मंदिरनुमा पानदान खोले बैठी थीं। उनके पहलू से लगी जाफरानी साड़ी पहने उषा बैठी थी। उसकी कुंदनी पेशानी पर याकूत का गोल नग रखा था। उषा ने नजर उठायी, तो जमील काली गहरी आँखों में डूबते-डूबते बचा। फिर दूर कहीं जलतरंग की आशावादी धुन बजने लगी।

"भैयाजी, हमारा फैसला कराइये।"

और जमील कुछ कहने के बजाय उसे देखकर रह गया।

"माई और ठकुराइन चाची सब लोग सिनेमा देखना चाहती हैं और मैं कलकत्ते में रोज-रोज सिनेमा देखकर उकता गयी हूँ, तो आज क्यों न नौटंकी देखी जाये..... के भैया?"

"राम राम..... नौटंकी भी कोई तेरे देखने की चीज है?"

"क्यों?"

"अरे वहाँ सब पासी-चमार धँसे होंगे!"

"हाँ! और सिनेमा में तो जैसे सब ब्राह्मण-ठाकुर बिराजमान होंगे..... अरे माई, यहाँ के सिनेमा में तो सब बज्जर देहाती होंगे, बज्जर देहाती..... के भैया?" और उषा की बोलती आँखों ने बड़े लाड़ से अनुमोदन की बिनती की।

"यह बात तो है चाची।"

"अच्छा तो बड़ी मेहरन और उषा नौटंकी देखें और हम सब कीर्तन के बाद खा-पीकर सिनेमा देखने जायेंगे। कोई लाला को लाओ जरा।"

प्रातःकाल नाश्ते पर जमील ने कनखियों से उन अपरिचित आँखों की बेपरवाह निगाहों को टटोला, जो पिछली रात का स्वप्न कहीं भूल आयी थीं। चाची रात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब
मॉस्को
के लिए
बोइंग !

*लन्दन जाते हुए मॉस्को भी देखिए।

बम्बई से मॉस्को सिर्फ़ ११ घण्टे में।

दो-एक दिन मॉस्को देखकर
लन्दन रवाना हो जाइए।

हर शुक्रवार :
बम्बई-दिल्ली-मॉस्को

एयर-इंडिया

* मॉस्को से लन्दन के लिए
सुविधाजनक विमान मिलते हैं।

IWT-All.3356(2R)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के तमाशे की घटनाएँ दोहराती रहीं और अपने सारे शरीर के साथ हँसती रहीं। जमील ऊपर-ऊपर से उनका साथ देता रहा और अपने विचारों के सुनहरे देश में भटकता रहा। रात को नौटंकी जाते हुए मेले की भीड़ में उषा का जो निकट का स्पर्श पाया था, उसकी मिठास उसके रोएँ-रोएँ में छायी हुई थी। उषा गृह-स्थिन की पूरी गम्भीरता के साथ छोटे-मोटे कामों में खुद को व्यस्त किये हुए इधर-से-उधर आती-जाती रही।

नाश्ते के बाद वह ठाकुर के शिविर में बैठा हुआ मेले के प्रबंध पर बातचीत कर रहा था, जब पासी ने अम्मी का खत लाकर दिया। तलबी का हुक्म पढ़कर और ठाकुर से इजाजत लेकर वह लाला बाबा के यहाँ आया और उन्हें खबर सुनायी। रवाना होने से पहले वह चाची से मिलने के बहाने फिर शिविर में गया; परंतु वह तो एक बहुत बड़ी कब्र की तरह शांत था। उषा से मिले बिना ही वह सवार हो गया।

झामपुर पहुँचकर उसने आँगन ही से देखा कि दालान में धरती पर चाँदनी बिछी है और गाव से टेक लगाये फकीर मामूँ बैठे हैं।

फकीर मामूँ वर्षों के बाद कहीं अपनी बहन के यहाँ चक्कर लगाते थे और उनका आगमन हमेशा राजनीतिक हुआ करता था। वह उनके पास बैठा हुआ बातें करता रहा और सोचता रहा कि फकीर मामूँ किस-किस समस्या को हल करने के लिए यहाँ आ सकते हैं।

फिर किसी ने सूचना दी कि बाहर कुछ लोग बैठे हुए उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मुंशी कसाई की सूरत देखकर उसकी भौंहें तन गयीं। मुंशी अन्य वृद्ध व्यक्तियों के साथ सलाम करके उसके बैठने तक खड़ा रहा, फिर बिना इजाजत लिये तख्त पर जम गया और चिवला-चिवलाकर बोला—"कुछ मौलवी साहबान शहर से आये हैं। इशा की नमाज के बाद वाज देंगे। उनके खाने-पीने का प्रबंध मैंने किया है।"

दूसरे बुजुर्ग ने गिड़गिड़ाकर कहा—"हाजी की दरख्वास्त है कि आप भी मौलवी साहबों के साथ खाना खा लें।"

"मैं मसरख से आ रहा हूँ—थका हुआ हूँ.....खाना-वाना नहीं खाऊँगा।"

"आप जो भी परहेजी खायें, पकवाया जाये।"

"जी, झामपुर में चकौवों-धनियों के यहाँ ठहरनेवाले मौलवियों से मुझे कोई दिलचस्पी नहीं और न मैं उनकी सलामी-मुजरई करना पसंद करता हूँ। सुना आपने?"

"जी।"

"जा सकते हैं आप।"

खाने के बाद जब फकीर मामूँ इशा की नमाज पढ़ने के लिए मस्जिद चले गये, तब अम्मी आयीं और उसके पास ही मसहरी पर पाँव उठाकर बैठ गयीं।

"फकीर भाई ने आज फिर कहा है..."

"जी!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डाकघर बचत बैंक

(१८८२-१९६२)

वर्षों से

जन-सेवा में

पास के डाकघर में

खाता खोलिये

राष्ट्रीय बचत संगठन

डीए ६२/२००

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"...बड़े भैया की लड़की के लिए...माशा-अल्लाह जवान हो गयी है। सूरत-सीरत दोनों में एक है।"

"आपने क्या कहा उनसे ?"

"वही कहा, जो तुम्हारे बाप ने मरने से पहले कहा था .....वे तो तारीख के लिए आये हैं।"

"आप अभी टाल दीजिये अम्मी।"

"क्या ?"

"मैं वही करूँगा, जो आप कहेंगी; लेकिन अभी टाल दीजिये अम्मी।"

वह देर तक आँखें बंद किये पड़ा रहा और नजमा को देखता रहा, जो अपने हाथों में मेहदी लगाये मीठी तल्खी के साथ अपनी फूफीजान को पुकार रही थी कि "देखिये जम्मू भैया मुझे गुदगुदा रहे हैं और मेरी मेहदी खराब किये दे रहे हैं।" फिर उसके मुस्कराते हुए होंठ भिच गये। कमरे का दरवाजा खोलकर उषा आ गयी और अपने कमर तक लहराते हुए बालों को समेटकर उसकी पट्टी पर उदासी से बैठ गयी। जमील का जी चाहा कि नजमा की चुटिया पकड़कर बाहर निकाल दे और कमरे की जंजीर लगा दे।

नारा-ए-तकबीर की आवाज सुनकर वह उठा और धीरे-धीरे चलता हुआ बाहर आया। पहरे का पासी बल्लम लिये खड़ा था। उसे देखकर साथ हो लिया। जामा मस्जिद के सामने मैदान में शामियाना लगा था। मौलवी साहब सिर पर अरबी रुमाल बाँधे हुए पूरी आवाज से पाकिस्तान के फायदे बयान कर रहे थे। वह वृक्षों के अँधेरे में टहलता रहा और तकरीर सुनता रहा।

प्रातःकाल जब वह फकीर मामूं को भेजने के लिए बाहर निकला, तो अनगिनत मकानों की मुंडेरों पर बाँसों में लगे हुए मुस्लिम लीगी झंडे लहरा रहे थे।

दो-चार दिन बाद मसरख से मानिकपुर जाते हुए लाला चाचा श्यामपुर से गुजरे, तो जमील ने उनका अड्डा रोक लिया और परदा उठाकर चाची से उतरने को कहा। चाची ने घरेलू व्यस्तता का बहाना करके कहा कि उषा अगर चाहे, तो शाम तक के लिए ठहर जाये। और जमील के पहली ही बार कहने पर वह उठने के लिए कसमसायी।

फाटक पर अड्डा लगाया गया और अम्मी ने उषा को उतार लिया। वह मुस्करा-मुस्कराकर अम्मी से बातें करती रही। जमील थोड़ी देर बाद अंदर आया और उसे अपना नया रेडियो सुनवाने के लिए हाल में ले आया।

जब जमील ने हाल का परदा उठाकर उषा को आगे बढ़ने का इशारा किया, तो उसने तीखे तेवरों से जमील को देखा, फिर बोली—"मैं इतनी बुरी लगती हूँ आपको?"

जमील को ऐसा लगा, जैसे कहानियों के उस अभागे इन्सान की तकदीर बदल गयी हो, जो भीख माँगने किसी नगर में सवेरे-सवेरे आये और शहरवाले उसे पकड़कर बादशाह बना दें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

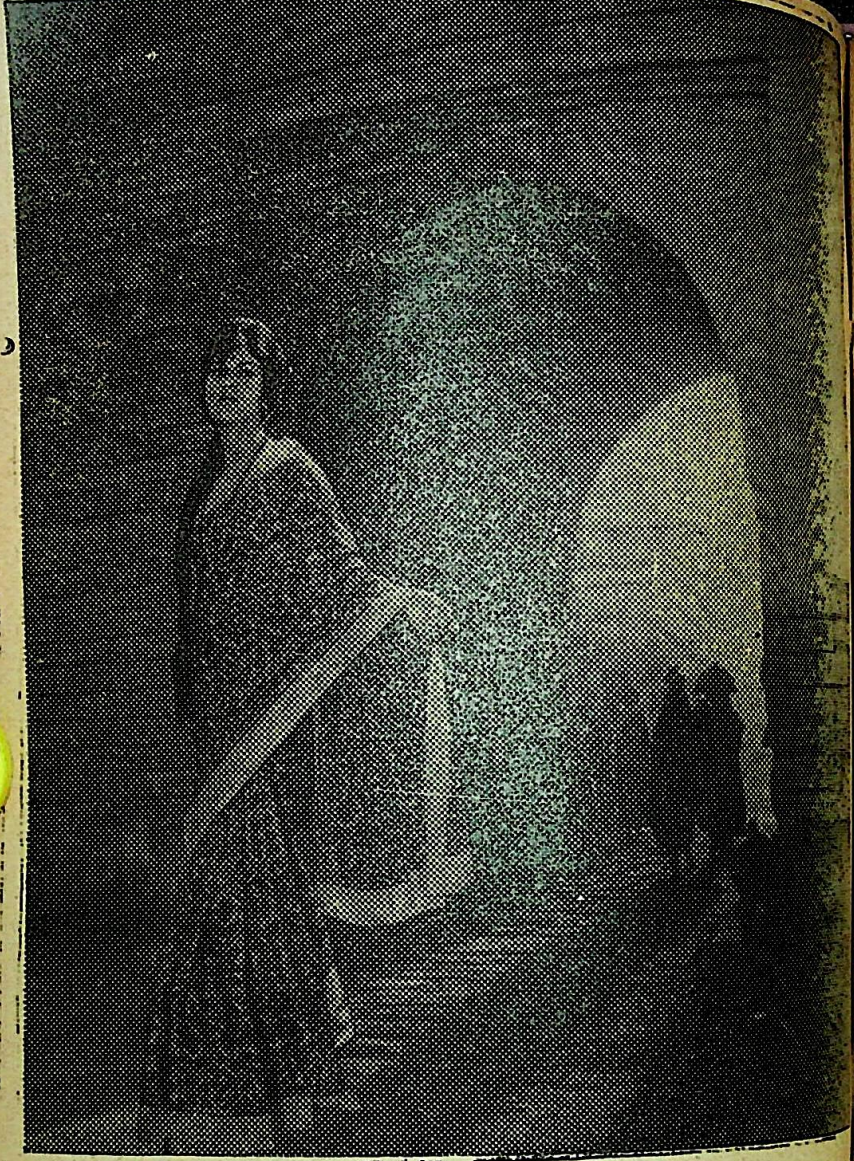

फ़िनले की छवि

फिनले

- उत्कृष्ट वस्त्रोंके उत्पादक

साड़ी:
प्रिन्सेस • ए-१ • रातरानी
राजनन्दिनी • फेन्टेसी

मलमल:
गोल्डेन ब्रोच • हाई सोसाइटी
एफ ७४ • २५६

दि फिनले ग्रप आफ मिल्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अगर आप आने के लिए कहते, तो मैं बाँधकर तो न रोक लेती ! ..... यह आप टुकर-टुकर क्या देखे जा रहे हैं ? कुछ मुँह से बोलिये ।"

"मैं क्या बोलूँ ? मैं बोलने के काबिल कहाँ हूँ ! मैं अगर अपनी इच्छा के अनुसार कुछ कर सकता, तो आज तुम मेरे घर में इस प्रकार न आतीं, जिस प्रकार आयी हो ।"

"फिर किस प्रकार आती ?" उसकी आवाज में मित्रता की घुलावट थी ।

"तुम...तुम इस तरह आतीं कि यहाँ शामियाने लगे होते... देगें बज रही होतीं... रंडियाँ नाच रही होतीं । अंदर औरतें भरी होतीं और बाहर मर्द । तुम्हारे हाथों में मेहदी होती और माँग में मोती और तुम इतनी औरतों में घिरी बैठी होतीं कि मैं तुमसे मिलने के हजार जतन करके भी न मिल पाता ।"

उषा ने धीरे-से अपना हाथ छुड़ाया और रेडियो 'आन' कर दिया ।

"लेकिन मेरे रास्ते में ऐसी-ऐसी संगीन दीवारें खड़ी हैं, जिन्हें तोड़ने के लिए पूरे-पूरे दो जनम भी कम हैं ।"

जब गुलाबी धूप ऊँची-ऊँची दीवारों से भी परे चली गयी, तब दरवाजे पर अद्धे लग गये । जमील उषा के अद्धे पर सवार हो गया । दूसरे अद्धे पर आदमी बैठ गये । जब झामपुर की बस्ती पीछे छूट गयी, तब उषा का चंद्रमा-जैसा चेहरा जमील की गोद में ढुलक आया और वह आकाश में उड़ता रहा ।

फिर वह इलेक्शन आ गया, जिसने एक दिल, एक जान, एक भाषा, एक संस्कृति, एक इतिहास और एक देश को बाँटकर रख दिया । कई दिन पहले से हंगामा मच गया । मुंशी कसाई देखते-देखते 'हाजी साहब' बन गये । गोश्त की दुकान बंद करके, लम्बा कुर्ता और ऊँचा पाजामा पहनकर वे आनेवाले मौलवियों की आव-भगत करने लगे ।

फिर वह रात आ गयी, जिसकी सुबह को झामपुर में वोट पड़नेवाले थे । मग-रिब की नमाज के बाद जमील जमीयत-उल-उलेमा के एक टूटे-फूटे मौलवी से बातें कर रहा था कि चार-छः मोटे-ताजे मौलवियों ने उसे घेर लिया और विश्वास दिलाने की कोशिश की कि वे जो कुछ कह रहे हैं, उसी में कौम की भलाई है। जमील स्कूल के विद्यार्थी की तरह चुपचाप उनके भाषण सुनता रहा । फिर जब वे बुझने लगे, तब वह दृढ़ आवाज में बोला—"यह मैं जानता हूँ कि मैं कौम की तकदीर नहीं बदल सकता और इसी के साथ मैं यह भी जानता हूँ कि इस कस्बे में, जहाँ मेरे पुरखों की हड्डियाँ दफ्न हैं, मुस्लिम लीग नहीं जीत सकती; इसलिए कि मैं उसे वोट नहीं दूँगा ।"

सुबह होते ही मिडिल स्कूल की इमा-रत के अहाते में जमील की आराम-कुर्सी डाल दी गयी और उसके नौकरों का दस्ता उजले कपड़े पहनकर खड़ा हो गया । वोट पड़ने से थोड़ी देर पहले जमील आया और कुर्सी पर लेटकर सिगरेट पीने लगा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताज़गी का तराना ! लाइफ़बॉय से नहाइये, आपके
तनमन में ताज़गी का तराना गूंज उठेगा ! और मज़ा यह है
कि नहाते समय, लाइफ़बॉय मैल में छिपे कीटाणुओं को
धो डालता है और आप को एड़ी से चोटी तक तरोताज़ा कर देता है ! जी हाँ,
लाइफ़बॉय से आप का सारा परिवार तंदुरुस्त रहेगा ।

लाइफ़बॉय है जहाँ, तंदुरुस्ती है वहाँ !

हिंदुस्तान लीवर का उत्पाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धीरे-धीरे हाजी मुंशी का शामियाना उजड़ने लगा और जमील की कुर्सी के पीछे बिछे हुए ईदगाह के फर्श पर तिल धरने को जगह न रही। सीतापुर से आये हुए मौलवी साहबान ने भाषण-शक्ति के सारे जादू जता दिये; मगर जमील की छाया में बैठे हुए बहुमत के कान पर जूँ तक न रेंगी।

अभी विजय की घोषणा करनेवाले लोगों के फलीते गरम थे कि दंगे की भयानक खबरें आने लगीं। सीतापुर के बाजार से आनेवाले अखबार लाते, जिसे एक पढ़ता और सौ सुनते और दो सौ सुनी हुई खबरों को नमक-मिर्च लगाकर दूसरों को सुनाते और चटखारे लेते। फिर मस्जिदों की सफों पर जनाजे की नमाजों का भान होने लगा। मीलाद शरीफ की महफिलों पर चेल्लुम की फातेहों का शक होने लगा।

जमील के मन पर हथौड़े चलते रहे। उसके स्नायु-मंडल पर टूट जानेवाले तार का तनाव रहने लगा। जब बूढ़े-बूढ़े चेहरे भय की बातें करते उसके पास आते, तो वह निर्भीक होकर उनको ढाढ़स बँधाता; लेकिन जब वे चले जाते, तो स्वयं भय से काँप-काँप उठता।

× × ×

एक दिन प्रातःकाल नाश्ता करके हॉल में दाखिल होते हुए उसने देखा कि फाटक पर मानिकपुर का अड्डा खोला जा रहा है। फिर आदमी अपने-अपने मुँह घुमाकर खड़े हो गये और उषा बाहर निकली। वह सीधी उसी के पास चली आयी। जमील ने देखा कि उन वेझपक आँखों पर सोचने की आदत ने अपने साये डाल दिये हैं और कातिल निगाहों की धार उतर गयी है। और उषा ने उसकी निद्रा-विहीन आँखों में भय की परछाइयाँ देख लीं।

"अपनी आँखों से तुम्हें सही-सलामत देखने के लिए मैंने कितनी बार तुमको बुलवाया!"

"मैं तो मानिकपुर आता। लेकिन यहाँ खबर उड़ जाती कि मैं पाकिस्तान चला गया हूँ। फिर मालूम नहीं क्या होता!"

"मैं तो अखबार पढ़-पढ़कर पागल हुई जाती हूँ।"

"मेरे पागलपन को समझने के लिए अपने पागलपन को कम-से-कम दस गुना कर दो!"

"मैं एक बात कहूँ?"

"कहो।"

"तुम पाकिस्तान चलो।"

"पाकिस्तान!..... तुम पाकिस्तान जाने को मसरख जाना समझती हो कि मेरे मुँह से एक लफ्ज़ निकला और वहाँ खेसे गड़ गये। पाकिस्तान जाने का मतलब एक नया जनम है, एक बनवास है, जिसे सहने की मैं अपने आपमें ताकत नहीं पाता।"

"तुम खूब सोच लो।"

"और इतने दिनों मैंने किया क्या है? तुम यह मकान देखती हो, यह जायदाद देखती हो, ये नौकर-चाकर देखती हो। लेकिन तुम यह नहीं देखती कि मेरी एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोहक मनोरंजन

मनोरंजन के साधनों में शार्प-झंकार एक नवीनतम और सर्व-सुलभ देन है। इसकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण है इसकी कार्यक्षमता और आकर्षक बनावट। छोटे आकार के कारण यह कहीं और किसी समय आपका मनोरंजन कर आपके खिन्नता के क्षणों को दूर करेगा और जीवन में रस घोलेगा।

Sharp JHANKAR

हायाकावा इलेक्ट्रिक कंपनी लिमिटेड जापान की तकनीकी देखरेख में निर्मित

मॉडल वी जेड ४९०
९ ट्रान्जिस्टर, ४ वेड
रु. ३९३, एक्साईज़ ड्यूटी सहित
(टेक्स अतिरिक्त) कैरिंग केस अतिरिक्त

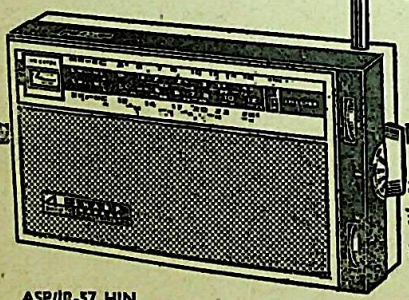

ट्रान्जिस्टर रेडियो के सर्वप्रथम निर्माता:
रेडियो विभाग:
इन्डियन प्लास्टिकस् लि., बम्बई ६७.

ASP/JR-57 HIN

अपने निकटवर्ती शार्प–झंकार विक्रेता से सम्पर्क कीजिये
महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और गुजरात के क्षेत्रीय वितरक:
इंडियन प्लास्टिकस् लिमिटेड, बम्बई ६७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेवा फूफी हैं, जो पानदान के लिए मेरा मुँह देखती हैं। उनके पाँच बच्चे हैं, जो स्कूल की फीस के लिए मेरा दामन पकड़ते हैं। मेरी एक चाची हैं, जिनकी दो बेटियाँ हैं, जो मुझसे बड़ी हैं, जिनकी जवानी शादी का इंतजार करते-करते सो गयी। इस बस्ती के बूढ़े-बूढ़े आदमी हैं, जिनके सिरों पर बहुत-सी दूसरी तलवारों के साथ एक तलवार यह भी लटक रही है कि कहीं मैं भाग न जाऊँ.....और ये मस्जिदें हैं, जिनमें कभी मैंने नमाज नहीं पढ़ी, लेकिन जो मुझे अपना संरक्षक समझती हैं।"

उसकी आवाज भर्रा गयी, आँखें छलक उठीं। उषा अपनी कुर्सी से उठी और अपने आँचल से उसकी आँखें पोंछीं।

"तुमने मेरी बात को धीरज से नहीं सुना, मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया..... पाकिस्तान जाकर नया जनम तुम्हारा नहीं, मेरा होगा..... मैं उषा नहीं रहूँगी, नजमा हो जाऊँगी...बनवास तुम्हारा नहीं होगा, तुम चौदह बरस में चौदह बार आ सकोगे ..... मैं मरकर भी यहाँ न आ सकूँगी।"

"तुम ?"

"हाँ, मैं.....मैं सोना नहीं, नीम की लौंगें पहनूँगी.....रेशम नहीं, टाट पहनूँगी, वह भी जब तुम्हारी माँ-बहनें पहन लेंगी ..... तुम्हारी माँ-बहनों से बच रहेगा।"

तभी 'उषा बेटी' को पुकारती हुई अम्मी आ गयीं। दोनों ने घबराकर अपनी आँखें पोंछीं, चेहरे पर खुशी के नकाब डाल लिये, होठों पर मुस्कराहट की सुर्खी लगा ली।

उषा उदास मन उसी शाम को मानिकपुर लौट गयी।

जागते-जागते रात की आँखों में जख्म पड़ गये। सोचते-सोचते दिन का स्नायु-जाल शिथिल पड़ गया। मगर दिल की बेकरारी को किसी करवट करार न आया।

कई रोज बाद जानमाज पर बैठी हुई अम्मी ने उसे इशारे से बुलाया और बड़े मामूँ का पाकिस्तान से आया हुआ खत पकड़ा दिया। वे सारे परिवार के साथ पाकिस्तान पहुँच गये थे। उनका लड़का सेक्रेटेरियट में नौकर हो गया। उन्हें कराची में कोठी अलाट हो गयी। और अब जमील का आगमन उनके जीवन की आखिरी आरजू बनकर रह गया था। यह रात जमीन पर और भारी गुजरी।

अम्मी की तहज्जुद की नमाजों का सिलसिला फजर तक तो बढ़ ही गया था, अब वे अधिकांश समय जानमाज पर ही बैठी रहतीं। सफेद हाथों में सफेद आँचल फैला-फैलाकर दुआएँ माँगा करतीं और कभी-कभी ऐसी आह भरतीं कि औरतों के हाथ से बरतन छूट जाते।

एक दिन प्रातःकाल, जब रहमत के फरिश्ते इस दुनिया में उतरते हैं, जमील हड़बड़ाकर उठा और इस बदहवासी से अंदर भागा, जैसे चुड़ैलें उसका पीछा कर रही हों। ऊँघते हुए पहरेदार ने कड़कदार आवाज में 'जागते रहो' का नारा लगाया और नियम के विरुद्ध उसके पीछे-पीछे, खुली हुई ड्योढ़ी तक आ गया। जानमाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन्यवाद, मैं भी सिर्फ सीज़र्स ही पीता हूँ

केवल ये दो सज्जन ही नहीं—५० वर्षों से भारत के गाँवों और शहरों में रहनेवाले, विभिन्न श्रेणियों और उम्र के हजारों लोग 'सीजर्स' पीते हैं, उसकी तारीफ करते हैं। 'सीजर्स' की व्यापक माँग उसकी बेहतर क्वालिटी का सबूत है। 'सीजर्स' की अपनी खास खूबी है—उसके तम्बाकू का बढ़िया स्वाद भूला नहीं जा सकता और उसकी भीनी सुगन्ध आपको मौजों से भर देती है। जाड़ा, गरमी या बरसात—'सीजर्स' हमेशा ही शानदार।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर अम्मी सिजदे में पड़ी हुई थीं। जमील ने काँपते हाथों से खसोटा; लेकिन अम्मी उस पवित्र रात में आकाश से आनेवाली रूहों के साथ कब की जा चुकी थीं। जमील की चीख से सारे झामपुर की नींद उड़ गयी। हंगामा मच गया।

× × ×

पाकिस्तान से आये हुए मोटे लिफाफे को खोलते ही एक तस्वीर मेज पर गिर पड़ी। दुल्हन बनी हुई नजमा एक दूल्हे के पहलू से लगी शरमा रही थी। जमील ने नजमा की आँखों में झाँककर देखा। लेकिन उन प्रसन्न आँखों में उससे बिछुड़ने के दुःख का कोई निशान न था। उसने अनुभव किया कि बड़े मामूँ ने अपनी सारी वजेदारी को ताक पर रखकर, बड़े छिछोरेपन के साथ उसके मुँह पर थप्पड़ मारा है। उसकी रगों में साँस लेता हुआ खानदानी अहंभाव जख्मी नागिन की तरह बल खाने लगा। उसने इस लम्बे-चौड़े खत को बिना पढ़े फाड़ डाला और नजमा की तस्वीर इस प्रकार उठाकर फेंक दी, जैसे वह तस्वीर तस्वीर नहीं, खुद नजमा हो।

अगले दिन सुबह जब वह सोकर उठा, तो मानिकपुर का सिपाही कमरे में दाखिल हुआ और सलाम करके उसके हाथ में बादामी कागज का टुकड़ा पकड़ा दिया। उषा ने उसे फौरन बुलाया था। उसने अद्धा खींचने का हुक्म दिया।

जब उसका अद्धा झील के किनारे मानिकपुर में बाग से गुजर रहा था, तो पता चला कि रईस के दामाद को शिकार खिलाया जा रहा है। उसने देखा कि एक मोटा-सा बेढंगा व्यक्ति खाकी नेकर पहने छिछले पानी में बंदूक लिये खड़ा है। जमील ने अद्धा बढ़ाने का इशारा किया। लाला ऊँचे चबूतरे पर संध्या कर रहे थे। दामाद की आव-भगत के प्रबंध में बौखलायी हुई चाची उससे रस्मी बातें करके चली गयीं। उषा अकेली रह गयी।

"तुमको मुबारक हो।" जमील ने कालीन के फूलों पर अँगली फेरते हुए कहा।

"तुमको भी मुबारक हो!"

"वह क्यों?" उषा की आवाज में गम की थरथराहट अनुभव करके उसने पूछा।

"मैं जो तुम्हें परेशान किया करती थी, कल तक मानिकपुर से चली जाऊँगी। फिर कब आऊँगी, मुझे भी नहीं मालूम..." और उसने जमील की तरफ से मुँह फेरकर आँखें पोंछ लीं।

"इसी दिन के डर से तो मैं तुमसे दूर-दूर रहना चाहता था।.....तुमने ये मेरे हाथ देखे हैं?" उषा ने उसका हाथ अपनी हथेलियों में लेकर भींच लिया।

"ये हाथ बड़े भाग्यशाली हैं। इन्होंने सोने को छुआ, तो वह मिट्टी हो गया..... अभी कल रात मैंने सोचा था कि अपने अंधकार-भरे जीवन के काले कोसों को तुम्हारे प्रकाश की दया के सहारे काट ले जाऊँगा.....तुम्हारी निकटता के मरहम से सब जख्म भर जायेंगे, सब दाग बुझ जायेंगे।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब सरदर्द सताये...

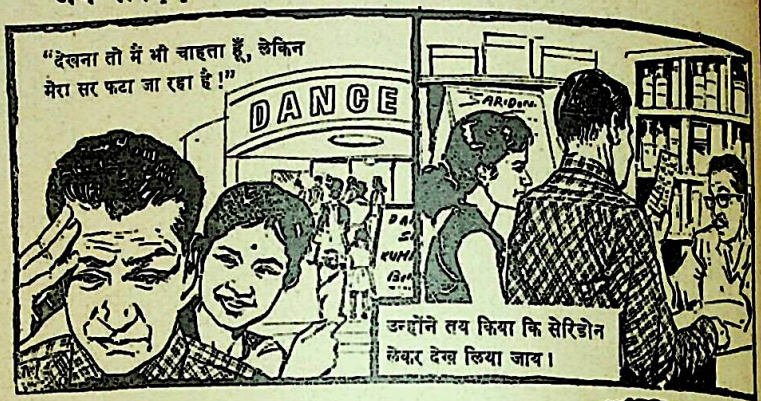

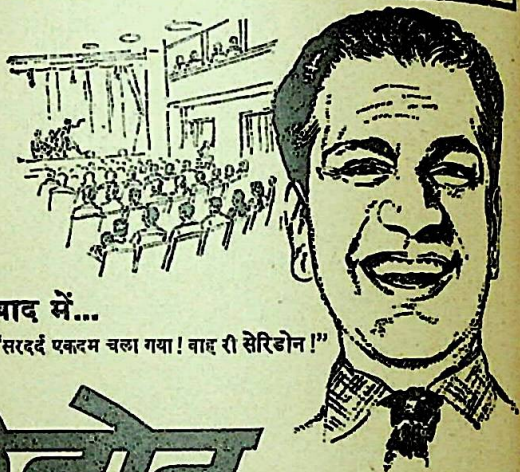

बाद में...

"सरदर्द एकदम चला गया! वाह री सेरिडोन!"

सेरिडोन 'रोश'

दर्द मिटाती है, आराम पहुँचाती है, ताज़गी देती है

सेरिडोन दर्द व पीड़ा में जल्द और निरापद रूप से पूरा आराम पहुँचाती है। सर के दर्द, दाँत के दर्द, बदन के दर्द, हरारत और तबीयत की आम बेचैनी में **सेरिडोन** लीजिए।

Seridon

वयस्कों के लिए १ टिकिया,
बच्चों के लिए ¼ से ½ टिकिया।

एक ही टिकिया काफ़ी है

एक टिकिया के १३ नये पैसे

'रोश' उत्पादन
सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स: वोल्टास लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर औरतें आ गयीं और वह एकांत की प्रतीक्षा में चुप हो गया। लेकिन एकांत से पहले लालाजी आ गये 'जमील बेटा' पुकारते हुए।

बाहर धूप में कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। उषा का पति एक कुर्सी पर लेटा हुआ था। दूसरी पर गंदे पाँव रखे थे। धूप में चाँद चमक रही थी। उसने जमील के सलाम के जवाब में अपने हाथ को थोड़ा-सा उभारा और मांस व बालों से लदा हुआ हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। जमील ने झुककर हाथ मिलाया और दूसरी कुर्सी पर अनिच्छा से बैठ गया। लाला चाचा के माथे पर इस असभ्यता से बल पड़ गये। उसने जमील पर रोब डालने के लिए चमड़े के बैग से पाइप निकाला और तम्बाकू भरने लगा।

"आप स्मोक करते हैं?"

"जी हाँ..... लेकिन लाला चाचा के सामने नहीं।"

"अच्छा!" वह व्यंग्य से हँसा।

"आज क्या मारा आपने?"

जमील जानलेवा विचारों से अपने मन को भटकाने के लिए ही बात करना चाहता था।

"आपके यहाँ चिड़ियाँ हैं-वै नहीं।"

"इस जिले में मेरा इलाका चिड़ियों की खान समझा जाता है।"

"तो फिर मेरा विचार है कि देहाती शिकारियों ने अंधाधुंध फायर करके चिड़ियों को भड़का दिया है.....आदमी की दाब ही नहीं सहतीं।"

"अगर आपके आने का पता होता, तो चिड़ियों को बँधवाकर झील में डलवा देता।" जमील उसके बात करने के ढंग से झुँझला गया था। वाक्य पूरा करते ही उठा और अपने आदमियों को अद्धा खींचने का हुक्म दिया। लाला चाचा उसे खाने के लिए रोकते हुए अद्धे तक आये; लेकिन वह सवार हो गया।

× × ×

जुलाई की पहली तारीख को झामपुर के पटवारी पंडित दुर्गाचरण बगल में बस्ता दबाकर आये और दीवानखाने के दालान में पड़े हुए नंगे तख्त पर बैठ गये। और जब जमील आया, तो उन्होंने हमेशा की तरह धरती को छूता हुआ सलाम किया। फिर भरी हुई आवाज में उन्होंने जमींदारी के खात्मे का एलान किया और कहा कि मुझे हुक्म है कि मैं डुग्गी पिटवाकर इस खबर को जाहिर कर दूं। जमील ने भंगियों को बुलाया और आग्रह करके अपने फाटक के सामने ढिंढोरा पिटवाकर जमींदारी के खात्मे की घोषणा करवा दी।

उस दिन से जमील के नौकरों ने बाजार के भाव गोश्त खरीदा। उसके बीरदारों ने सरकारी खेतों में चलते हुए आसामियों के हल खुलवा दिये। कठार की मरम्मत करते हुए मजदूरों को पूरी मजदूरी दी गयी। झामपुर से भटारा तक वे सारे वृक्ष, जिनके निकल जाने का डर था, बाँट दिये गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुहासा से मैं परेशान थी ...

जिल्द की बीमारियों का शीघ्र उपचार — लिचेन्सा

LICHENSA

सब दवाइयों की दुकानों में मिलती है।

दफ़्तर के कर्मचारी साहब कहते हैं : "जब से मैंने रैले खरीदी है मै ठीक समय पर दफ़्तर पहुंच जाता हूँ और मेरी स्फूर्ति बिल्कुल तरोताज़ी बनी रहती है। कारण यह है कि मेरी रैले चलाने में बिल्कुल आरामप्रद व हल्की है।"

रैले

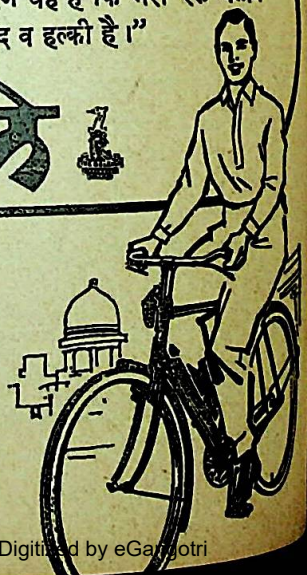

सायकिलों में अग्रगण्य

अधिक आराम के लिये विटकॉप सीट लगाइये

SEN-RALEIGH

सेन-रैले

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by eGangotri

उसी दिन शाम को चौधरी इकबाल नारायण, जिनकी धन-सम्पत्ति का आधार जमींदारी पर नहीं, ब्याज के धंधे पर था, जमील के खिलाफ जहर उगलते हुए पाये गये। झामपुर में दुअन्नी के हिस्सेदार को पहली बार आजादी का अनुभव हुआ। फिर लोगों ने देखा कि रईस झामपुर के फाटक के पास एक लम्बा-चौड़ा सुअर चर रहा है। इससे पहले कभी झामपुर में आनेवाला सुअर जीवित वापस नहीं लौटा था। जमील ने सुना तो टाल दिया; मगर अंदर-ही-अंदर खौलता रहा।

रामसुख का बेटा दुलारे घी की लुटिया लेकर द्वारे आया, तो फाटक पर सुअर चरता देखकर चौंक पड़ा। सीधा पहरेदार की कोठरी में से तीर-कमान लेकर बाहर आया और कान तक खींचकर तीर पुट्ठे पर मार दिया। सुअर ने चीखकर एक चक्कर खाया और ढेर हो गया।

चौधरी इकबाल नारायण ने बड़ा हंगामा मचाया। सौ-पचास आदमी भी एकत्र कर लिये। लेकिन रामसुख का सामना कौन करता! सुअर भूनकर खा लिया गया।

धीरे-धीरे बेकारों की संख्या बढ़ने लगी। जमींदारों के ढेरों सेवक, सिपाही और कारिंदे मक्खियाँ मारने लगे। कुछ मेहनत-मजदूरी करने कानपुर और बम्बई चले गये और बहुत बड़ी संख्या ऐसे ख्वाब-परस्तों और आलसियों की बच रही, जो खुद-बखुद कुछ प्रकट होने की प्रतीक्षा में चारपाइयाँ तोड़ने लगे। इनमें कोई हिन्दू, कोई मुसलमान न था। इन सबका मजहब एक था—बेकारी, भूख, रोटी।

अपराधों की संख्या बढ़ने लगी। जानवर खेतों में फाँदकर छोटी-मोटी फौजदारियों का संघटन करने लगे। भाई-भावजों के झगड़ों पर लाठियाँ उठने लगीं। दुकानदारों और ग्राहकों में तकरार होने लगी और चार-चार बच्चों की माँओं की मुहब्बतों के मुकदमे पंचायतों में पेश होने लगे। जमील का दीवानखाना एक बार फिर 'कचहरी' बन गया और उसके फैसले अपील से बरी होने लगे।

गाय की कुरबानी जमील के घर में तो कभी होती ही न थी, अब उसने दौड़-धूप करके, समझा-बुझाकर और डरा-धमकाकर सारे झामपुर में इस किस्से को खत्म कर दिया। मुहर्रम के लिए जब डिप्टी कमिश्नर ने बहुत जोर दिया और हल्का इन्स्पेक्टर पुलिस ने बहुत आग्रह किया, तो उसने हामी भर ली। फिर भी इतनी सावधानी रखी कि झामपुर का एक ताजिया भी इतना ऊँचा न हो, जो किसी वृक्ष की एक पत्ती को भी छू सके। चौधरी इकबाल नारायण की बिछायी हुई बारूद पड़े-पड़े सील गयी।

फिर झामपुर की पंचायत का चुनाव आ गया। जमील के विरुद्ध चौधरी इकबाल नारायण बड़े तनतने-से खड़े हुए। दो दिन पहले से सीतापुर से प्रजा समाजवादी पार्टी के एम० एल० ए० और एम० पी० आकर पड़ गये। एक-एक हिन्दू के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पके बालों की चिंता ही न करें

अब आप केश तेल के रूप में लोमा इस्तेमाल करते हो

सोल एजेंटस और निर्यातक :
एम. एम. खम्भातवाला, अहमदाबाद-१ (भारत)
एजेंटस : सी. नरोत्तम एंड कंपनी, बम्बई-२

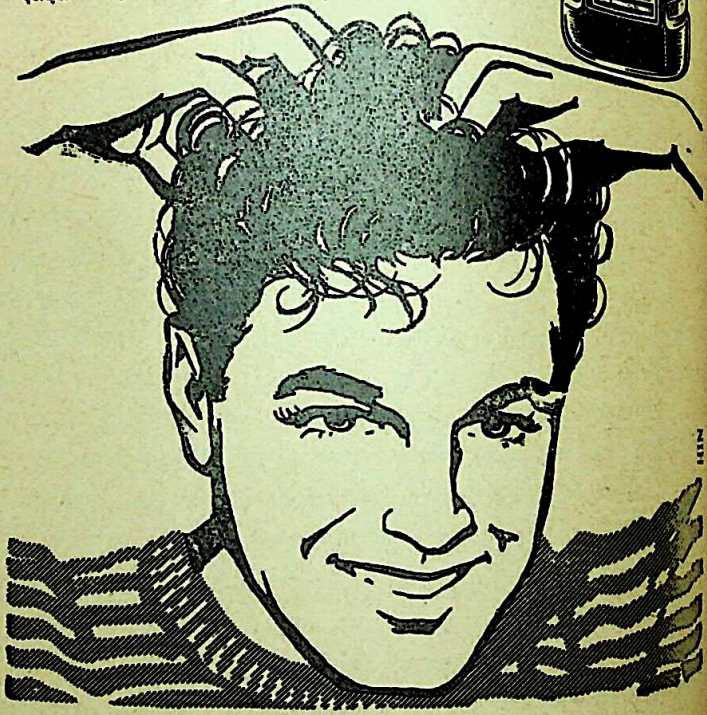

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मकान पर गये। सार्वजनिक सभाओं में इकवाल नारायण के स्तुति-गान पढ़े गये और पूरे विश्वास के साथ चुनाव लड़ाया गया। मगर नतीजा वही—ढाक के तीन पात। ३,२०० वोट पड़े, जिनमें इकवाल नारायण को कुल दो सौ वोट मिले, वह भी हाजी मुंशी की दौड़-धूप के बाद। चौधरी इकवाल नारायण खिसियानी बिल्ली की तरह घात लगाकर बैठे रहे।

× × ×

बदलू ढपाली का लड़का मुनवा तीसरी कक्षा में पढ़ता था कि बदलू चल बसे। माँ ने साल-छः महीने तो पढ़ाया, फिर एक दिन उसका हाथ पकड़ा और जमील के नौकरों के दस्ते में शामिल कर दिया। थोड़े दिनों बाद माँ भी एक कच्चा मकान और दो-चार बर्तन छोड़कर अपने मियाँ के पास चली गयी। मुनवा जमील की सेवा-चाकरी करता रहा और खा-खाकर हाथ-पाँव निकालता रहा। जब जमील ने नौकरों की छटनी की, तो मुनवा भी निकाला गया। नौकरी छोड़ते ही उसने अपना कच्चा घर बेचा और बाल बढ़ा लिये और मटरगश्ती शुरू कर दी। बल्लू कसाई से तो दीवार ही मिली थी, अब और याराना हो गया। उसका अधिकांश समय बल्लू कसाई के बरीठे में फिल्मी गाने गाते गुजरता।

एक दिन बल्लू नावक्त घर पहुँचा, तो दरवाजे की कुंडी अंदर से बंद थी। उसने अलसाकर बजाय पुकारने के, हाथ डाल-कर कुंडी खोली और अंदर चला गया। नौटंकी की लैला की तरह उसकी पैंतीस वर्ष की काली पत्नी मुनवा की गोद में सिर रखे छेड़-छाड़ कर रही थी। बल्लू तो कसाई था ही। पहले उसने मार-मारकर मुनवा को भुतना बनाकर बाहर किया, फिर बीबी पर भैंसे हाँकनेवाला डंडा उठाया। मुनवा अपनी मार तो झेल ले जाता; लेकिन प्रेमिका की चीखों ने उसके दिल में गिरह डाल दी।

मुनवा तहसीलदार के पास जमील का खत लेकर मसरख गया। बड़ी खुशामदें की। लेकिन नौकरी का कोई प्रबंध न हो सका। निराश होकर वह चलने को उठा। तभी बूँदें पड़ने लगीं। वह मसरख ही में अपने एक परिचित के यहाँ रात को पड़ा रहा और मुँह अँधेरे वहाँ से चल पड़ा। बूँदों ने सड़क की मिट्टी बैठा दी थी। दूर-दूर तक कोई आदमी, कोई जानवर नहीं था। फिर उसने देखा कि एक बोये हुए खेत से दो आदमी 'लाती' लगाते हुए सड़क पर आ गये और एक जानवर के पैरों के स्पष्ट निशानों को देखते हुए चुपचाप चलते रहे। मुनवा ने पूछा, तो मालूम हुआ कि वे जाति के ब्राह्मण हैं और उन्हें दान में मिली हुई गाभन गाय किसी ने खूँटे से खोल ली है। बड़ी कठिनाई से लाती मिली है और अब वे उसी लाती पर जा रहे हैं। मुनवा भी साथ चल पड़ा। फिर झामपुर की आबादी नजर आने लगी। जब गाय के पैरों के निशान बल्लू कसाई के छप्पर में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफलता चरण चूमेगी

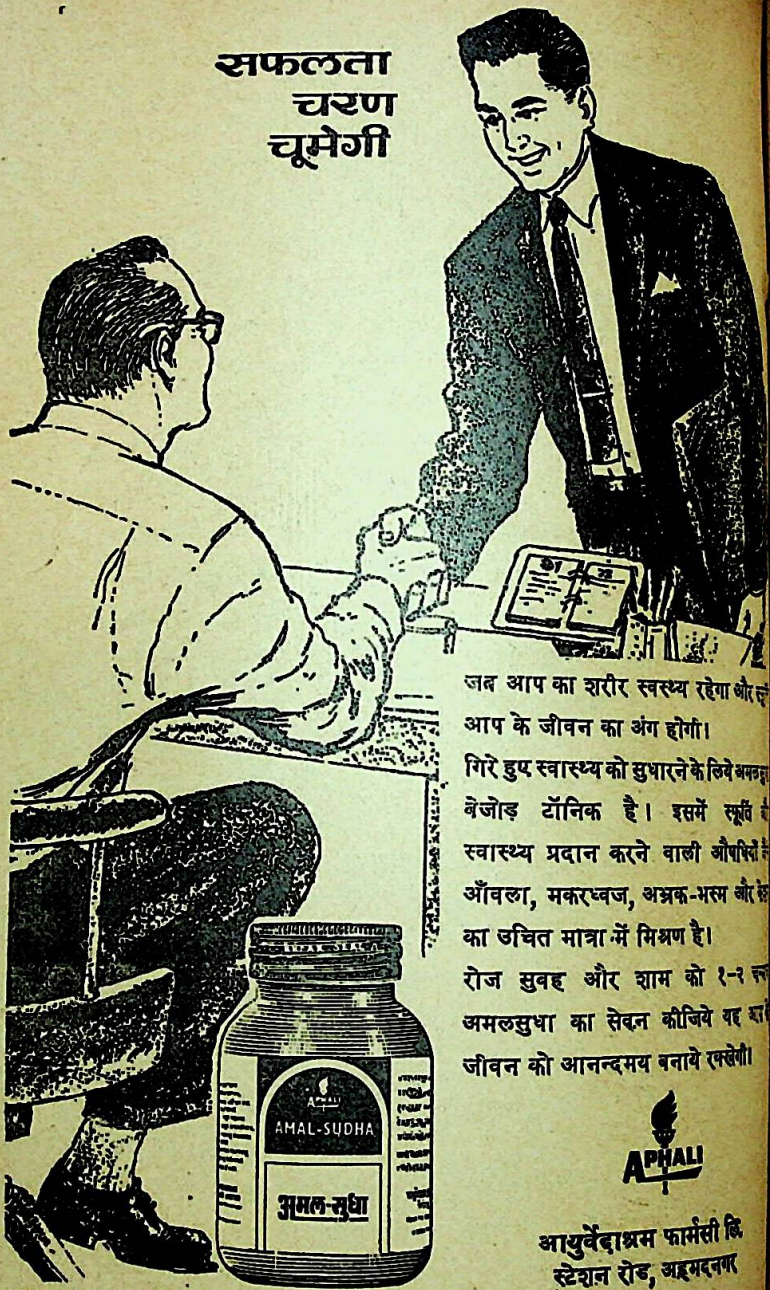

जब आप का शरीर स्वस्थ्य रहेगा और स्फू
आप के जीवन का अंग होगी।
गिरे हुए स्वास्थ्य को सुधारने के लिये अमल
बेजोड़ टॉनिक है। इसमें स्फूर्ति
स्वास्थ्य प्रदान करने वाली औषधियों
आँवला, मकरध्वज, अभ्रक-भस्म और
का उचित मात्रा में मिश्रण है।
रोज सुबह और शाम को १-२ च
अमलसुधा का सेवन कीजिये यह आ
जीवन को आनन्दमय बनाये रक्खेगी।

APHALI

आयुर्वेदाश्रम फार्मेसी लि.
स्टेशन रोड, अहमदनगर

maa, AYD 1627.HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गये, तब मुनवा के मन में एक योजना चमक गयी। वह इन लोगों को वहाँ से टाल लाया और अपने मकान के पिछवाड़े मशविरे करता रहा।

सवेरे दोनों पंडित सीधे चौधरी इकबाल नारायण के यहाँ पहुँचे और अपनी विपदा सुनायी। शिकार भरी हुई बंदूक की नाल पर आ गया था। चौधरी इकवाल नारायण ने पल-भर में दस-बीस आवारा आदमी इकट्ठे किये और वल्लू कसाई के घर को घेर लिया। फिर दरवाजा तोड़कर अंदर पहुँचे। गाय के टुकड़े कटे रखे थे। एक तरफ मरा हुआ लाल-लाल बच्चा पड़ा था। पीली खाल ओढ़े टेढ़े सींगों का सिर देखते ही पंडितों ने पहचानकर दुहाई मचायी। चौधरी इकवाल नारायण ने भरी हुई बंदूक की लवलवी दबा दी। धरती से आदमी उगने लगे। थोड़ी ही देर में जन-समूह सैकड़ों से बढ़कर हजारों को पहुँच गया। सारी बस्ती में मानो भूकम्प आ गया।

जमील ने खबर सुनी, तो उलटे-सीधे कपड़े पहनकर निकला। लेकिन फाटक पर खड़े हुए हिन्दू नौकरों ने उसे रोक लिया और दीवानखाने में बैठा दिया। फिर बस्ती-भर की औरतों ने भाग-भागकर उसके घर में शरण ली। सारा अंदर का मकान औरतों से और बाहर का मर्दों से भर गया। फाटक बंद हो गया। उसके हिन्दू नौकर उसकी कुर्सी के आस-पास भरी हुई बंदूकें और रायफल लिये खड़े थे। कुर्सी पर वह लाश की तरह पड़ा था।

फिर फाटक पर दस्तक हुई। कानाफूसी भर गयी। किसी ने कड़ककर फाटक खोलने को कहा और नौकरों ने रामसुख की आवाज पहचानकर फाटक की खिड़की खोल दी। रामसुख ने झुककर जमील को सलाम किया और उसके सामने खड़ा हो गया। बड़ी देर के बाद जमील बोला—

"क्या खबर है?"

"बस हजार आदमी कील-काँटे से लैस बस्ती घेरे पड़ा है और आदमी बढ़ते चले आ रहे हैं।"

"क्या विचार है?"

"भगवान् बचावें तो बस्ती बचे। और बेढब बात यह है कि सारी औरतें यहाँ जमा हैं.....गुंडों-बदमासों का हमला इन पर हुई।"

"रामसुख!"

"मालिक?"

"तुमने मेरी बड़ी सेवा की है। तुमने मुझे गोदों खिलाया है। लेकिन मैंने तुमको गालियाँ भी दी हैं और मारा भी है। आज इन सब बातों को भूल जाओ। मेरा कहना मानो और इन सब हिन्दू नौकरों को लेकर भटारा पहुँच जाओ। अगर कर सको, तो मुझे थोड़े-से कारतूस भेज दो।"

जमील का गला भर आया था। रामसुख उसके कदमों में बैठ गया। उसके जूतों पर हाथ रखे काँपती हुई आवाज में बोला—

"हम और हमारा परिवार आपका नमक खाई है। आज वह नमक अदा हुई... आपके एक रुएँ की खातर, आपके खेत की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलो, बातें तो हो जायेंगी
कॉफी की चुस्कियों के साथ

अगली पार्टी की पोशाक? क्लब की पिकनिक की व्यवस्था? खुले दिल की बातचीत और शीघ्र समाधान के लिए स्फूर्तिदायक, संतोषप्रद और रुचिकर कॉफी का एक कप सर्वोत्तम साधन है।

कॉफी हर मिजाज में खुश रखती है

अच्छी कॉफी बनाना आसान है। इस के लिए मुफ्त पुस्तिका हम से मंगवाइये। अपनी मनपसंद भाषा का नाम भी लिख भेजें।

COFFEE BOARD

कॉफी बोर्ड, बैंगलोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक बाली की खातर सैकड़ों लठ चली हैं... सैकड़ों सर बजी हैं..... रामसुख अकेला नहीं आया है..... रामसुख के संग पाँच सौ जोद्धा आये हैं... ई तमासा देखने नाई आये हैं, ई जान देने आई हैं..... फाटक के बाहर रामसुख का परिवार मरी है और फाटक के भीतर रामसुख के यार मरी हैं। तब कोई आप तक पहुँच सकत है।..... सतरख, मानिकपुर और थाने खबर जाई चुकी है।"

फिर वह उठा और तीर की तरह बाहर चला गया। फाटक पर खड़े हुए आदमियों का लश्कर सारी इमारत के आस-पास फैला दिया और स्वयं ओटे पर चढ़कर बैठ गया।

जब 'जय बजरंगबली.....जय बजरंग-बली' के नारों से दीवारें काँपने लगीं, जमील व्याकुल हो बाहर निकला और उस सड़क पर चल दिया, जो कसाइयों के मुहल्ले को जाती थी और जिसपर भीड़ का सबसे अधिक दबाव था। रामसुख ओटे से उतरकर उसके साथ हो लिया। दस-बीस व्यक्ति उसके दायें-बायें चलने लगे। वल्लू कसाई के घर के सामने आदमियों की भीड़ थी। कटी हुई गाय को चमारों ने लम्बे-लम्बे तख्तों पर रख दिया था।

चौधरी इकबाल नारायण के इशारे पर जन-समूह ने 'जय बजरंगबली' के नारे लगाये, जिनकी गूँज से क्षण-भर के लिए जमील का मन विकृत हो गया। फिर कुछ शांति होते ही उसने चौधरी इकबाल नारायण को सम्बोधित किया और राय दी कि कटी हुई गाय को विश्वासपात्र चमारों की निगरानी में दे दिया जाये और वल्लू कसाई को बाँधकर थाने में भेज दिया जाये।

चौधरी इकबाल नारायण ने, जो धरती से आकाश पर पहुँच चुके थे, सुनी अनसुनी कर दी। भीड़ 'खून का बदला खून' के नारे लगाने लगी। वल्लू कसाई अपने मकान की ड्योढी पर तड़प रहा था और हाथ के इशारे से पानी माँग रहा था। 'भैया' की सूरत देखते ही उसने अपने मरते हुए शरीर का सारा जोर लगाकर जस्त लगायी और जिबह किये हुए बैल की तरह उसके कदमों में लोटने लगा। जमील के पाजामे की चूड़ियाँ उसके खून में नहा गयीं। जमील पीछे हट आया। उसका चेहरा लाल हो गया था, आँखों से आग बरसने लगी थी।

"आदमी की जान ले ली, अब और क्या लोगे इकबाल नारायण?" वह इतने जोर से चीखा कि खामोशी छा गयी।

"एक देवता की जान के बदले में एक हजार जानें भी थोड़ी हैं भैयाजी..... और आपका कसाई तो अभी जिंदा है।" चौधरी इकबाल नारायण ने जहरीले स्वर में उत्तर दिया।

"तो काट दो गला।"

"काट भी लेंगे तो कौन माई का लाल रोक लेगा?"

फिर जयजयकार का होहल्ला आरम्भ हो गया। जमील के नौकर उसे वहाँ से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन का
उल्हास
छोटे बड़े खेत,
पानी का कारोबार
और कारखाने
पंप
के जरिये।

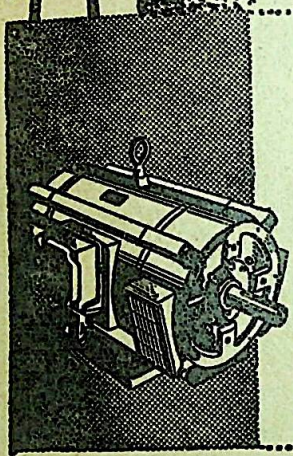

जीवन में
समृद्धि
मोटर
के विविध
उपयोग के जरिये।

ज्योति

आभियान्त्रिक प्रगति का प्रतिक।
वर्टिकल टर्बाइन पंप, 'युनिविल्ट' और अन्य
पंप तथा विद्युत मोटरें।

Quality is our Creed

ज्योति लि.,
वड़ौदा-३

ब्रांच आफिस : लोटस हाउस, मरीन लाइन्स, बम्बई-१ फोन : २४२६१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकाल लाये। भीड़ बढ़ती गयी।

लाला सद्गुरु सीतापुर गये थे। उनका मुसलमान मुख्तार झामपुर की खबर सुनकर बदहवास हो गया और सीतापुर को दौड़ पड़ा।

सतरख के बीमार ठाकुर ने जो यह भयानक खबर सुनी, तो 'बड़े भैया' को हाथी और बंदूकों के साथ झामपुर रवाना कर दिया जमील को सुरक्षित लिवा लाने के लिए। जमील ने 'बड़े भैया' की खूब आवभगत की; पर सतरख जाने से इन्कार कर दिया। हाजी मुंशी और इनायत खाँ दोनों इस भय से काँप रहे थे कि कहीं भैया सतरख न चले जायें। उन्होंने संतोष की साँस ली। इस तूफान में यह तुच्छ संतोष भी डूबनेवाले के लिए तिनके का सहारा था।

जन-समूह बढ़ता चला जा रहा था। दो बज गये और उसके बाप-दादा की बनवायी मस्जिद में अजान न हुई। वह बाहर निकला। साये की तरह साथ चलते हुए सिपाहियों को सीढ़ियों पर छोड़कर मस्जिद में दाखिल हो गया और जीवन में पहली बार इतनी मधुर, इतनी दर्द-भरी आवाज में अजान दी की हाजी मुंशी, इनायत खाँ और सैकड़ों बूढ़े मुसलमानों की दाढ़ियाँ आँसुओं से भीग गयीं। जब सुन्नतें पढ़कर उसने सलाम फेरा, तो सीढ़ियों तक कतारें बन चुकी थीं। झामपुर में इतने रुदन के साथ कभी नमाज न पढ़ी गयी थी।

वह बरामदे में पड़ी हुई कुर्सी पर निढाल होकर गिर पड़ा। गुरुदयाल जोशी, जिसने भया की जन्मपत्री बनायी थी, खाने की थाली लेकर आया। उसका बड़ा बेटा पीतल का गगरा और लोटा लिये था। रामसुख ने जमील के आगे मेज लगा दी। भैया ने सिर उठाया।

"भुरजी को बुलाओ।"

काला-काला भुरजी हाजिर हुआ और फरशी सलाम करके खड़ा हो गया।

"रामसुख! चने की बोरियाँ निकालकर भुनवाओ और गुड़ की परियाँ निकलवाकर बटवा दो।"

गरम-गरम चनों की सोंधी-सोंधी सुगंध गुड़ के उजले-उजले टुकड़ों के साथ अंदर से बाहर तक इतराती फिर रही थी कि बलवाइयों ने कसाइयों के मुहल्ले पर हल्ला बोल दिया। डरावनी आवाजों के साथ भीड़ रेला मारकर बस्ती के अंदर चली, जिसके बीचों-बीच जमील का घर सरदार की भाँति खड़ा था।

जमील ने अपनी इमारत के बाहर घेरा बनाकर खड़े सारे आदमियों को फाटक के अंदर बुला लेने का हुक्म दिया और खुद तीसरी मंजिल पर चढ़ गया। यहाँ से वहाँ तक कसाइयों के घर जल रहे थे। जिबह होनेवाली बकरियों की तरह इन्सान चीख रहे थे और जमील देख रहा था कि उसके मकान के नीचे से गुजरनेवाली सड़क पर क्रोध में पागल इन्सानों का समूह चला आ रहा था, जिसका नेतृत्व चौधरी इकबाल नारायण कर रहे थे। फिर रामसुख ने अपने काले कम्बल को सम्भालकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ों के उजले और साफ़ सुथरे होने का कारण है चाँदनी साबुन

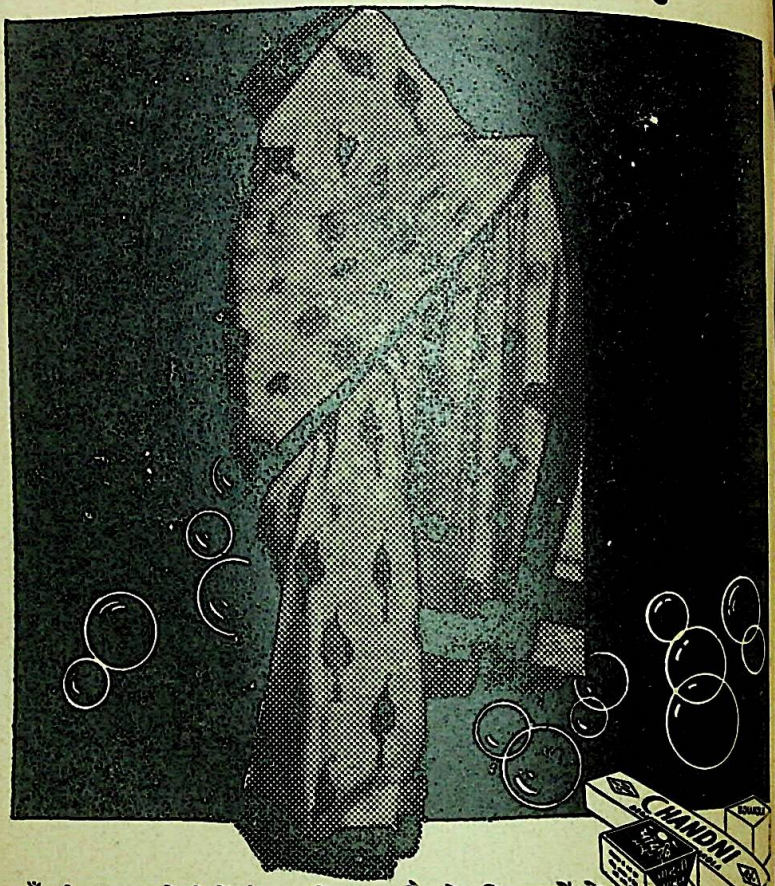

चाँदनी साबुन से ढेरों झाग निकलता है जो कि कपड़ों के मैल को शीघ्र काट देता है और उन्हें उजला और चमकीला बनाता है। चाँदनी साबुन से धुलाई आसान, शीघ्र और कम खर्चीली होती है।

बरार ऑयल इन्डस्ट्रीज, अकोला

ASP/GJ/

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओढ़ा, अपना साफा खींचकर बाँधा, पाँव से धनुष झुकाकर चढ़ाया और बाण जोड़कर ललकारा—" बस चौधरीजी ..... नेरे न आइयो ।"

" क्या ?"

" यो घर बल्लू कसाई का नाहीं । ई घर की एक-एक ईंट के लिए लाठी चली है ।"

" तो तुम रोकोगे ?"

" हाँ हाँ..... हम रोकब ।"

उसने अपनी बूढ़ी छाती पर हाथ मारकर कहा और अपने पीछे खड़े हुए डेढ़ सौ आदमियों को ललकारा ।

शिकारियों की सूरत देखते ही गेहूँ के खेत रौंदती हुई हिरनियों की डार में तहलका पड़ गया, भगदड़ मच गयी ।

फिर खबर आयी कि भूखे-नंगे बलवाई फस्लें नोचकर अपने घर भरे ले रहे हैं। तुरंत भैया के खेतों में बाँस गाड़ दिये गये और यह घोषणा कर दी गयी कि अगर इन खेतों की एक बाली भी किसी ने नोची, तो उसका घर और उसके गाँव का खलिहान फूँक दिया जायेगा । लूटनेवाले जानते थे कि रामसुख बारह बरस बाद भी अपना सौदा चुका लेगा। इसलिए जमील भैया की मेंड़ पर चिड़िया तक नहीं आयी। पर बाकी सारे मुसलमानों के खेत लूट लिये गये ।

फिर बड़े थानेदार सुखनंदन शर्मा घोड़ा कुदाते आये । लम्बी-लम्बी टार्चों के प्रकाश में इन्सानों की लहरें लेती भीड़ को रिवाल्वर निकालकर धमकाया और तितर-बितर कर दिया । जलते हुए मकान बुझे । चीखती औरतों, चिल्लाते बच्चों और गुमसुम मर्दों का ढाढ़स बँधा । फिर डिप्टी सुपरिंटेंडेंट पुलिस आये और बड़े स्कूल में चहल-पहल हो गयी । झामपुर के नेता चौधरी इकबाल नारायण ने उनसे भेंट की और दबी जबान में विचार प्रकट किया कि झामपुर में एक ही आदमी है, जिसके दायें हिन्दू और बायें मुसलमान रहते हैं । जब तक वह बंद न होगा, आग न बुझेगी ।

चौकीदार ने यह खबर सुनी और जमील के कानों में उगल दी । हाजी मुंशी, इनायत खाँ, तफज्जुल हुसैन और बहुत-से व्यक्ति बाँधे जा चुके थे । जमील ने बड़ी शांति से अपना पाजामा बदला । बक्स खुलवाकर धराऊ शेरवानी निकाली । चेस्टर को ब्रश कराया । मकान के अंदर के कमरों में ताले लगवाये और दीवानखाने में आकर बैठ गया ।

सुखनंदन शर्मा आये । बुझे-बुझे स्वर में बातचीत की । फिर नजरें झुकाकर कह दिया कि बड़े स्कूल में छोटे साहब ने बात करने के लिए बुलाया है । जमील फौरन उठकर खड़ा हो गया । रुँधे कंठ से उसने रामसुख को सम्बोधित किया —

" मैं जा रहा हूँ । मानिकपुर खबर भेजकर जमानत का प्रबंध कर लेना । और देखो, मेरे हथियार मेरी गैरहाजिरी में किसी को भी न देना, चाहे वह छोटे साहब हों या बड़े साहब ।"

"मालिक!" रामसुख मुँह खोले खड़ा रहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनसाधारण के लिए...

न कुछ दामों में एक ऐसा रेडियो जिसमें क़ीमती बड़े सेट की ख़ूबियाँ हैं

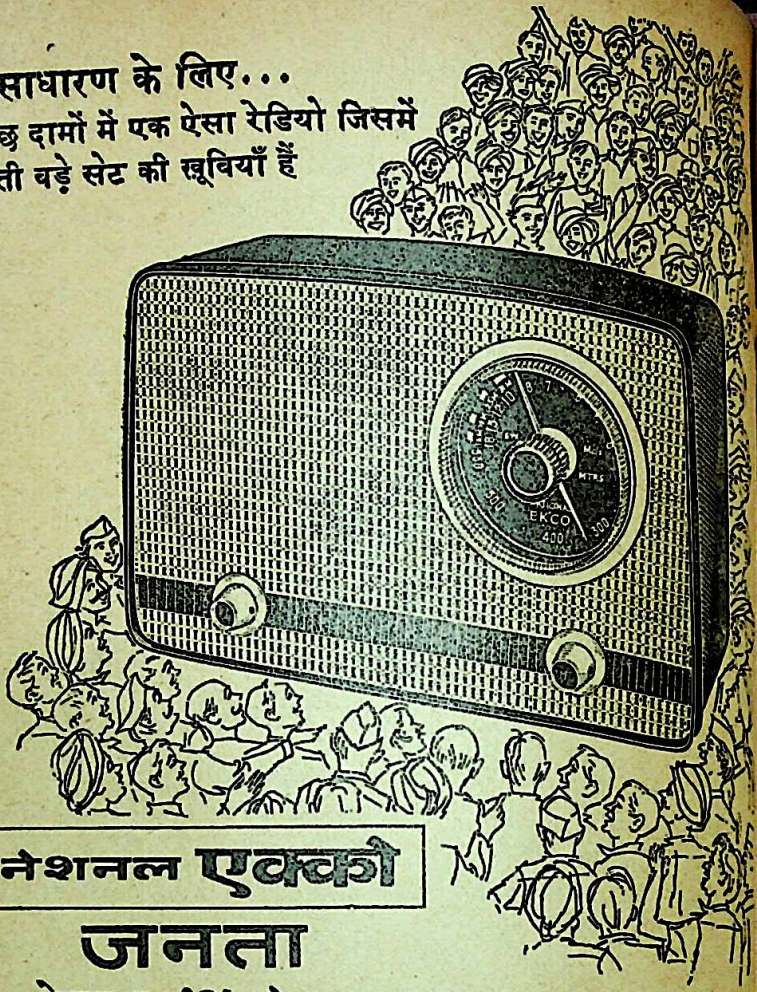

नेशनल एक्को

जनता

मूल्य केवल रु. १२५, टैक्स अलग

नया नेशनल-एक्को 'जनता' अवश्य ही आपका मनचाहा रेडियो साबित होगा। कम से कम दामों में मिलते हुए भी यह रेडियो एक क़ीमती बड़े सेट जैसा बढ़िया काम देता है। और फिर, इस पर आनेवाला बिजली का ख़र्च तो २३० वोल्ट बिजली पर चलनेवाले दुनिया के किसी भी रेडियो के मुक़ाबले में कम है!

अपने नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ इसे मुफ़्त बजवाकर सुनिए... और अपना ऑर्डर आज ही लिखवा दीजिए।

मॉडल यू-७५६: एसी/डीसी सेट। २ बैण्ड, शॉर्ट और मीडियम वेव; ५" का हाइ-फ़्लक्स लाउडस्पीकर। नयी-नयी ख़ूबियाँ जो अब तक सिर्फ़ ऊँचे दामों के सेटों में ही होती थीं। मॉन्सूनाइज़्ड। पूरे एक साल की गारंटी। 'मरून' रंग का सुन्दर कैबिनेट।

जनरल रेडियो एण्ड फ़ोनोग्राफ़ सेल्स लिमिटेड
बम्बई · कलकत्ता · मद्रास · नयी दिल्ली · सिकन्दराबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आप भी कैसी बातें करते हैं जमील मियाँ ? आपने थानेदार देखे हैं, मर्द नहीं देखे। आपका जमानतनामा और मेरा इस्तीफा साथ-साथ दाखिल होंगे।"

सुखनंदन शर्मा ने छोटे साहब को विश्वास दिलाया कि इकबाल नारायण जैसे सौ आदमियों को बंद कर दीजिये, तो कोई चूँ न करेगा; परंतु यदि जमील मियाँ से अशिष्टता की गयी, तो गरीब हिन्दू सत्याग्रह करेंगे और अमीर हिन्दू डी० आई० जी० तक मामला ले जायेंगे। छोटे साहब की समझ में बात आ गयी। उन्होंने जमील से आदरपूर्ण व्यवहार किया और जब जमील आने के लिए उठा, तो जीप का हार्न बजा और डी० एम० आ गया। जमील के सलाम के जवाब में वह बोला—"आजादी के तेरह साल बाद और आपके होते हुए यह सब-कुछ कैसे हो गया ?"

जमील ने सिर झुका लिया।

सुबह होते-होते अमन कमेटी बन गयी। जमील मियाँ उसके चेयरमैन बनाये गये, इकबाल नारायण नायब चेयरमैन। गाय के टुकड़े मुर्दा बच्चे के साथ एक कब्र में दफन कर दिये गये। उस पर पीला झंडा लहराया गया और कोई दस बजे दिन में दस-बीस प्रतिष्ठित लोगों के साथ जमील शामपुर में गश्त करने निकला। आगे-आगे इकबाल नारायण थे और पीछे-पीछे वह। और उस दिन जमील को अनुभव हुआ कि वह इकबाल नारायण का गुलाम है, उसका विजित है। बस्ती में जैसे महामारी फैली हो। कब्रिस्तान का-सा सन्नाटा था। चादरों में लिपटी हुई औरतें, सिर झुकाये हुए मर्दों के पीछे-पीछे अपने-अपने घरों में बसने जा रही थीं। दुकानें विरही की आँखों की तरह खुली थीं। ग्राहक स्वप्नों की तरह गायब थे।

× × ×

जले हुए मकानों में आग की गरमी बाकी थी, मरे हुओं की कब्रों की मिट्टी ताजी थी, घावों से ताजा-ताजा रक्त रिस रहा था कि अमावस की वह रात आ गयी, जिसकी सुबह नीमसार में 'नहान का मेला' लगता था और जिसमें सम्मिलित होने के लिए दूर-दूर का यात्री आता था। इकबाल नारायण ने रातों-रात हाथ के लिखे हुए पर्चे बटवाये और गद्दार मुसलमानों के अत्याचार को इतना बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया कि खुद शामपुर के शांतिप्रिय लोग लड़खड़ा गये। गाय की समाधि पर मेले का आयोजन किया गया और मेले को हंगामे में परिवर्तित करने का प्रबंध। हर घड़ी नयी खबर आती थी, जो पुरानी खबर की भयंकरता को भुला देती थी।

इशा की नमाज पढ़कर जमील बजाय घर जाने के खानदानी कब्रिस्तान गया। एक-एक कब्र पर फातेहा पढ़ा। फिर उन खेतों को देखता हुआ बस्ती आ गया, जो लूट लिये गये थे, जिनकी मेंड़ों पर सशस्त्र आदमी पहरा दे रहे थे। जब वह अपने घर लौटा, तो पहरा शुरू हो चुका था। एक लम्बी काली छाया उसके कदमों में बैठ गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टिनोपाल की सफ़ेदी

अपने कपड़ों को टिनोपाल की सफ़ेदी दीजिये—वह सफ़ेदी जो कपड़ों को लकलक और अधिक सफ़ेद बनाती है। केवल टिनोपाल ही आपके सफ़ेद कपड़ों को वास्तव में चमकदार बना सकता है।

और टिनोपाल कितना किफ़ायती है!

टिनोपाल की सफ़ेदी के लिए आपको समय या पैसा बहुत ही कम खर्च करना पड़ता है। केवल एक चौथाई चाय चम्मच टिनोपाल एक बाल्टी भर कपड़ों को सफ़ेद बनाने के लिए पर्याप्त होता है।

याद रखिये—

थोड़ा सा
टिनोपाल
सफ़ेद कपड़ों को अत्यधिक
सफ़ेद बनाता है

टिनोपाल जे. आर. गायगी, एस. ए. बाज़, स्विटज़रलैण्ड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

निर्माता :
सुहृद गायगी लिमिटेड, बड़ी बाड़ी, बड़ौदा.

सोल डिस्ट्रीब्युटर्स :
सुहृद गायगी ट्रेडिंग लिमिटेड, पो. ओ. बॉक्स ६६५, बम्बई-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"रामसुख !"

" मालिक !"

" क्या यह सब-कुछ सिर्फ़ एक गाय के लिए हुआ ?"

"ऊँ हुँ"-उसने बड़ी गम्भीरता से कहा ।

" फिर ?"

" यू ई लिए भवा कि आज लग आपका हुकुम कैसे चलत है । आपकी छाईं माँ यहाँ मुसलमान बेखटके कैसे रहत हैं । यहाँ तो ऊ होवे, जो इकबाल नारायण कही । सब इकबाल नारायण का सलाम करीं । सब इकबाल नारायण का द्वारे जाई।"

" हुँ.....तो इकबाल नारायण ने मेरे खिलाफ दस हजार आदमी इसलिए जमा किये कि मैं मुसलमान हूँ और वह हिन्दू है !"

" ईमा का संदेह हैं ।"

" और अगर मैं हिन्दू होता और इकबाल नारायण मुसलमान होते तो.....?"

" ऊँ हुँ..... ऊई तो हिन्दू हैं । आपू हिन्दू होते तो भटारा के लौंडे इकबाल नारायण का बस नास किये देते ।"

बड़ी देर तक खामोशी रही ।

" अद्धा खिचवाओ..... बंदूकें निकलवाओ ।" जमील ने मरहूम शेख के तनतने से हुक्म दिया ।

तारों की छाँव में अद्धा सशस्त्र आदमियों से घिरा रवाना हुआ और मसरख जानेवाली सड़क के दोनों ओर खड़े हुए अंधियारे वृक्षों के साये में डूब गया ।

× × ×

कसाइयों के मकान के सामने सड़क के दायें बाजू पर बरगद के छतनार वृक्ष के नीचे गाय की उजली समाधि पर लगे हुए झंडे का पीला रेशमी फरेरा लहरें ले रहा था । दूर-दूर तक चाँदनी बिछी थी । असंख्य व्यक्ति खड़े-बैठे थे । एक बूढ़े पंडित गीता का पाठ कर रहे थे । सारा वायु-मंडल पवित्रता के वातावरण से बोझिल था । मसरख से आनेवाली सड़क पर एक अद्धा धूल के बादल उड़ाता नजर आया । ऊँचे-ऊँचे दौड़ते बैलों की गर्दन में पड़ी हुई घुंघरुओं की खनक ने सबको आकर्षित कर लिया ।

चौधरी इकबाल नारायण ने आँखों पर हथेली का छज्जा बनाकर ध्यान से देखा और देखते रह गये । कल के जमील मियाँ का अद्धा गाय की समाधि के पास रुक गया । वे खद्दर की धोती पर खद्दर का गरम कुर्त्ता और जवाहर-कट सदरी पहने, कलफदार गांधी टोपी लगाये उतरे । जन-समूह को साँप सूंघ गया । उनके चौड़े माथे पर चंदन और तिलक की धारियाँ थीं । उनके सुंदर घुंघराले बाल मालूम नहीं कहाँ खो गये गये थे । छिली हुई गुद्दी पर बुर्राक टोपी से चोटी का सिरा जरा-सा झाँक रहा था । समाधि के निकट पहुँचकर उन्होंने जूते उतारे और समाधि को साष्टांग नमस्कार किया । गुरुदयाल जोशी प्रसाद का थाल लिये बैठा था, वह उठ खड़ा हुआ । बूढ़े पंडित ने पाठ खत्म कर दिया । इकबाल नारायण ने हकलाकर कहा :

" जमील मियाँ !"

कल के जमील ने उसे खा जानेवाली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाल तभी तक सुन्दर हैं जब तक स्वस्थ हैं

भारतवासियों के घने मुलायम बालों की चर्चा संसार भर में हैं—और इस का कारण है कि भारत में बालों की सफ़ाई असल में बचपन से शुरु होती है और आयुभर जारी रहती हैं। वे जानते हैं कि बालों की शोभा बनाये रखने के लिए इनकी जड़ों को तेल से मज़बूत बनाना भी ज़रूरी है। हमारे बालों की जड़ों में कुछ प्राकृतिक तेल रहते है। इन में जो कमी होती रहती है उस को पूरा करने के लिए एक अच्छे तेल की ज़रूरत है।

टाटा के कोकोनट और कॅस्टर हेअर ऑयल शुद्ध और पौष्टिक होने से बालों की जड़ों को ताक़त पहुँचाते हैं... स्वस्थ-सुन्दर बाल उगाने में मदद करते हैं.. बालों को ख़ास चिपचिपा किये बिना एक नई शोभा प्रदान करते हैं...टाटा के कोकोनट और कॅस्टर हेअर ऑयल की भीनी भीनी सुगन्ध भी बड़ी प्यारी है और ये तीन साइज़ो की शीशियों में मिलते हैं।

टाटा के हेअर ऑयल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नजरों से देखा।

"जमील मियाँ नहीं.....झामसिंह !

.....इकबाल नारायण, झामसिंह !"

फिर उसने अपना हाथ शून्य में लहराया और कड़ककर बोला —

"बोलो गऊ माता की ....."

"जय !"

इतने जोर की तकरार हुई कि झामपुर के मकान काँप गये, काँपते रहे। फिर किसी मनचले ने नारा लगाया —

"झामसिंह भैया की जय !"

एक बार फिर झामपुर के दर-दीवार काँप उठे। गुरुदयाल जोशी ने प्रसाद का थाल झामसिंह भैया के हाथ में थमा दिया। झामसिंह भैया ने प्रसाद बाँट दिया। दूसरा थाल, तीसरा थाल, मालूम नहीं कितने थाल झामसिंह भैया ने बाँट दिये।

फिर झामसिंह भैया अपनी ही जय-जयकार में घिरे हुए जमील मियाँ के मकान पर आये। गाय की समाधि से उखाड़ा हुआ झंडा फाटक के माथे पर गाड़ दिया गया। बूढ़े-बूढ़े मुसलमान आँखें मलकर झामसिंह भैया को घूर रहे थे। एक कुर्सी पर बैठे हुए चौधरी इकबाल नारायण अपना सिर खुजा रहे थे।

गुरुदयाल जोशी अपने घर से खान की थाली लाया। फूलदार थाली में गरम-गरम व्यंजनों से भरी हुई फूलदार कटोरियाँ चुनी गयीं। जब तक झामसिंह भैया ने जमील मियाँ के बाप के बनवाये हुए कुँए पर राम-राम करके स्नान किया, तब तक गुरुदयाल जोशी ने चबूतरे का एक कोना गाय के गोबर से लीप दिया। जब झामसिंह भैया भोजन करके उठे, तो भीड़ छट चुकी थी। इकबाल नारायण उसी प्रकार बैठे-बैठे खाली निगाहों से शून्य में घूरते रहे।

"चौधरी इकबाल नारायणजी !"

चौधरी इकबाल नारायण ने आँखों के साथ-साथ मुँह खोलकर उसे देखा।

"अपनी गुजर-बसर के लिए भारतवर्ष के किसी दूसरे गाँव में डेरा डालो..... झामपुर में झामसिंह रहेगा..... झामसिंह ! समझे ?"

चौधरी इकबाल नारायण ने कुछ कहने के लिए आँखें झपकायीं और होंठ कँपकँपाये कि झामसिंह भैया गरजे :

"रामसुख !"

"मालिक !"

"इस मूरख की गर्दन में हाथ डालकर बाहर निकाल दो।"

रामसुख के संडसी-जैसे हाथों ने इकबाल नारायण की दुबली गर्दन दबोच ली और वह हाजी मुंशी के हाथ में फँसे हुए बुड्ढे बीमार बकरे की तरह खरखराता हुआ फाटक के बाहर निकल गया।

★

हमारा कर्तव्य है—दूसरे लोगों के काम आना; पर अपनी मर्जी के मुताबिक नहीं बल्कि दूसरों की जरूरत के मुताबिक।

—एमियल

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पायुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी० ए० ऐन्ड ब्रदर्स (बम्बई) प्रा० लि०

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो

युनाइटेड कमार्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय : २, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूंजी	.....८,००,००,००० रु.
लागत पूंजी	.....४,००,००,००० रु.
चुकती पूंजी	.....२,००,००,००० रु.
सुरक्षित कोष	.....२,३५,००,००० रु.
देय बिल और जमा राशि	.....१,००,१५,००,००० रु.

(३१-१२-६१)

डायरेक्टर्स

जी० डी० बिड़ला

चेयरमैन

ईश्वरीप्रसाद गोयनका
वाइस चेयरमैन

अनन्त चर्न ला

गोविन्दलाल बांगड़

पी. डी. हिमम्तसिंहका

रामेश्वरलाल नोपानी

मोतीलाल तापड़िया

मदनमोहन आर० रुइया
वाइस चेयरमैन

महादेव एल० दहाणुकर

मोहनलाल एल० शाह

योगीन्द्र एन० मफतलाल

टी० एस० राजम

जी० डी० कोठारी

हिन्दुस्तान के सभी प्रमुख कस्बों व नगरों में शाखाएँ। पाकिस्तान, बर्मा, मलाया, सिंगापुर, हांगकांग और लंदन में विदेशी शाखाएँ। विश्व में हर जगह एजेंट। करेंट अकाउन्ट खोले जाते हैं। कम या अधिक समय के डिपाजिट लेती है। ३% ब्याज का सेविंग्ज बैंक अकाउन्ट। सुविधाजनक मासिक किश्तों में संचित धन के रिकरिंग डिपाजिट। विदेशी मुद्रा व रुपयों के ट्रेवेलर चेक बेचे व लिये जाते हैं। अन्य सभी प्रकार की देशी व विदेशी एक्सचेंज का काम।

एस० टी० सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

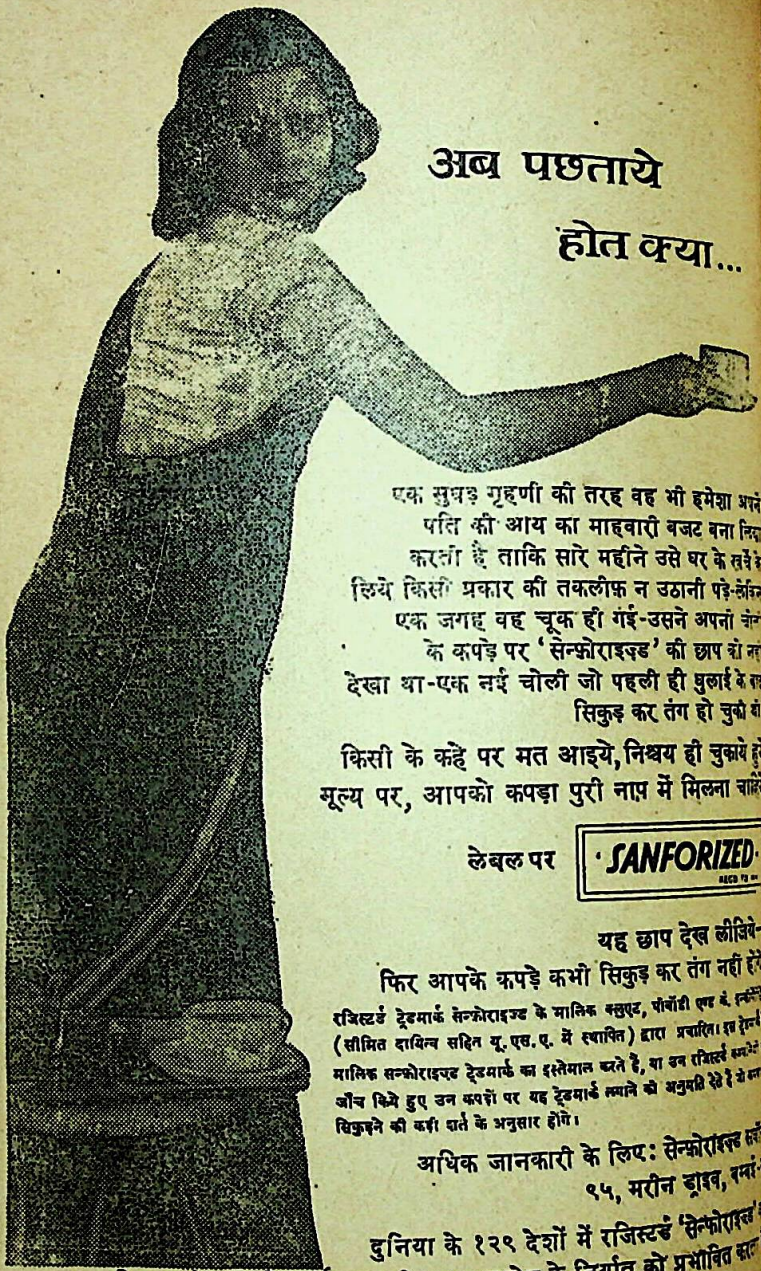

अब पछताये होत क्या...

एक सुघड़ गृहणी की तरह वह भी हमेशा अपने पति की आय का माहवारी बजट बना लिया करती है ताकि सारे महीने उसे घर के खर्चे के लिये किसी प्रकार की तकलीफ़ न उठानी पड़े-लेकिन एक जगह वह चूक ही गई-उसने अपनी चोली के कपड़े पर 'सेन्फ़ोराइज़्ड' की छाप को नहीं देखा था-एक नई चोली जो पहली ही धुलाई के बाद सिकुड़ कर तंग हो चुकी थी।

किसी के कहे पर मत आइये, निश्चय ही चुकाये हुये मूल्य पर, आपको कपड़ा पुरी नाप में मिलना चाहिये

लेबल पर **SANFORIZED**

यह छाप देख लीजिये-
फिर आपके कपड़े कभी सिकुड़ कर तंग नहीं होंगे

रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क सेन्फ़ोराइज़्ड के मालिक क्लुएट, पीबॉडी एण्ड कं. इन्कॉर्पोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में स्थापित) द्वारा प्रचारित। इस ट्रेडमार्क के मालिक सन्फ़ोराइज़्ड ट्रेडमार्क का इस्तेमाल करते हैं, या उन रजिस्टर्ड यूजरों के जाँच किये हुए उन कपड़ों पर यह ट्रेडमार्क लगाने की अनुमति देते हैं जो कपड़ा सिकुड़ने की कड़ी शर्त के अनुसार होंगे।

अधिक जानकारी के लिए: सेन्फ़ोराइज़्ड कार्पोरेशन
९५, मरीन ड्राइव, बम्बई-२

दुनिया के १२९ देशों में रजिस्टर्ड 'सेन्फ़ोराइज़्ड' का विश्वसनीय यह ट्रेडमार्क भारतीय वस्त्र उद्योग के निर्यात को प्रभावित करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

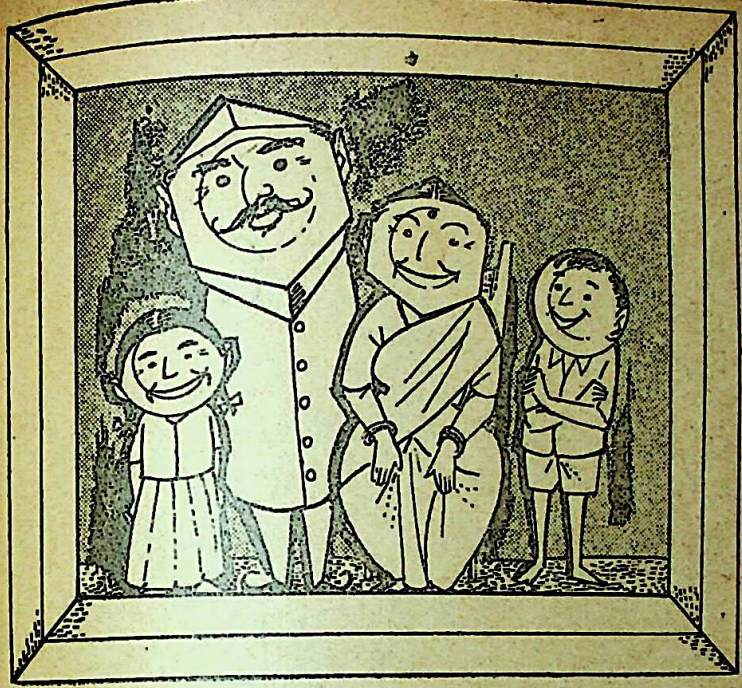

इनका भी अपना परिवार है...

मैट्रिक वाटों का अपना एक परिवार है और इस परिवार के मुखिया का नाम है— किलो। किलो परिवार को यह पसन्द नहीं है कि उसके सदस्यों की बराबरी या तुलना किसी और परिवार से की जाए। विशेषकर सेर-परिवार से तो बिल्कुल नहीं। मैट्रिक वाटों के गुण और महत्व को समझिये और इनका सही रूप में ही इस्तेमाल कीजिए ; अन्यथा किलो परिवार बिगड़ जाएगा और आपके काम में व्यर्थ ही देर होगी। बात भी ठीक है है—हर परिवार अपना गौरव बनाए रखना चाहता है न!

सही और सुविधाजनक लेन देन के लिए

पूर्ण अंकों में

मैट्रिक इकाइयों

का प्रयोग कीजिए

डी. ए ६२/५४५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

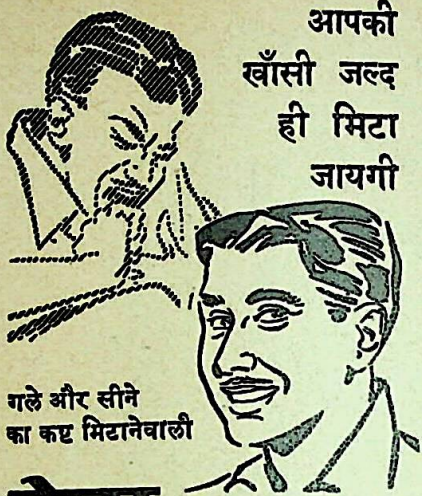

आपकी
खाँसी जल्द
ही मिटा
जायगी

गले और सीने
का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स टिकियाँ लीजिए

पेप्स टिकियां चूसिए और फिर अनुभव कीजिये कि इनकी गुणकारी भाप दर्द मिटाने में किस खूबी से कारगर है और गले का दर्द, ब्रोंकाइटिस, खाँसी या सर्दी–जुकाम पैदा करनेवाले रोगाणुओंका कितनी जल्दी नाश करती है। पेप्स फ़ौरन आराम देकर इन शिकायतों को शीघ्र दूर करती हैं।

पेप्स में
कोई नुकसानदेह
दवा नहीं
ये बच्चों को बेखटके दी
जा सकती हैं
ब्रांकाइटिस,
गले का दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं
सभी औषधि-विक्रेताओं
के यहाँ प्राप्य

FPY 54 HIN

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट
केम्प एण्ड कं० लि०; पो० बा० ९३७

खास
जनता
किरासन

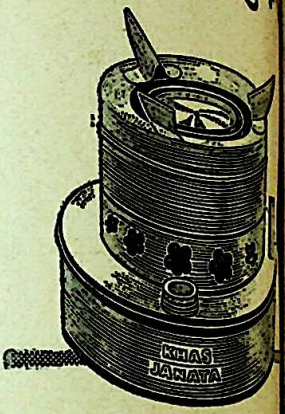

- न गंदगी, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल
इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

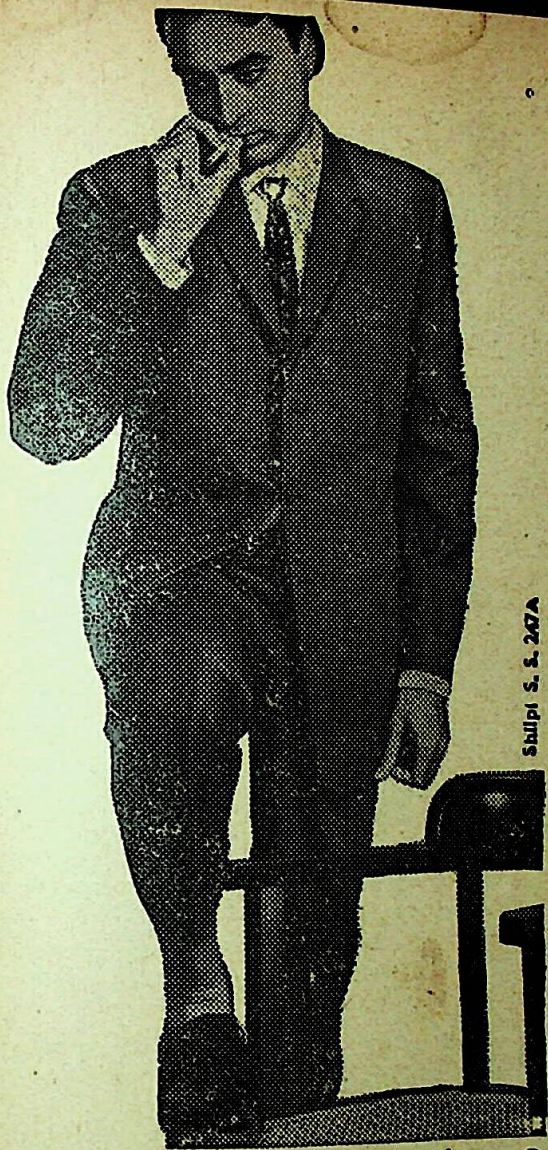

हर दिन, हर मौसम में शक्ति सूटिंग की नव बहार

सुबह की ताज़गी लिए हुए—सारे दिन पहनने पर भी, बिना सिलवट पड़े, सदा नया सा दिखने वाला शक्ति सूटिंग ही है। क्योंकि शक्ति सूटिंग सिलवट हीन और बहुत समय तक पहनने योग्य है।

Shakti Suitings

शक्ति सूटिंग पोहार द्वारा निर्मित

श्री शक्ति मिल्स लिमिटेड
पोहार चेम्बर्स,
पारसी बाजार बीच, बम्बई - १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जरूरी
जरूरी
जरूरी

बहुत जरूरी खबर भेजनी है,

क्योंकि कोई सख्त बीमार है।

वह अग्रता तार (प्रायोरिटी टेलीग्राम) से भेजी जा सकती है।

बीमारी, दुर्घटना, या मृत्यु जैसे मौकों पर अग्रता तार का प्रयोग कर सकते हैं।

इस तरह के तार तुरत (एक्सप्रेस) व आवश्यक (पर्जेण्ट) तारों से पहले भेजे जाते हैं, पर शुल्क केवल एक्सप्रेस तार का ही लिया जाता है।

इस तरह का तार भेजते समय फार्म पर अग्रता या प्रायोरिटी शब्द लिख दीजिए।

हमें उत्तम सेवा का अवसर दीजिए

डाक-तार विभाग

D.A-62-188

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिसाब कीजिए

प्रगतिका हिसाब इस्पातसे कीजिए

मुकंद
अर्थात
इस्पात

प्रगतिका हिसाब इस्पातसे कीजिए

ख-16

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ जागता जगमगाता जीवन ❀

जीवन जीने का नाम है और जीने के लिए शारीरिक और मानसिक आरोग्य अनिवार्य। वर्षों के अनुभवों के बाद महान विशेषज्ञों द्वारा लिखी हुई ये पुस्तकें आप ही अपनी उपयोग्यता का उदाहरण हैं।

सफल कैसे हों (स्वेट मार्डेन)
प्रभावशाली व्यक्तित्व (,,)
जैसा चाहो वैसा बनो (,,)
सफलता के आठ साधन (जेम्स एलन)
आप का शरीर (आनन्द कुमार)

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

डाक्टर के आनेसे पहले (डा० लक्ष्मी नारायण)
सरल प्राकृतिक चिकित्सा (,,)
योगासन और स्वास्थ्य (,,)
ठीक खाओ स्वस्थ बनो (डा. शुकदेवप्रसाद सिंह)
बर्थ कंट्रोल (डा० लक्ष्मी नारायण)
स्त्री-पुरुष-काम विज्ञान (,,)
सुख और सफलता के साधन (संतराम)

हिन्दपाकेट बुक्स, प्रा० लि० शाहदरा, दिल्ली-३२

मिठाई, टॉफी, शृंगार की चीजें, ज़ेवरात वगैरह के लिये खास उपयुक्त

बनानेवाले:- बॉम्बे टिन मिन्ट्र्स
२२१/२२३, ठाकुरद्वार रोड, मुंबई-२ फोन २४५८७

क्या आप कमज़ोर हैं?

यदि आप किसी रोग के कारणवश दुर्बल व कमज़ोर हैं तो मुफ्त परामर्श लेकर लाभ उठाइये और अपनी भलाई के लिये जीवन सुधारने वाली 'स्वास्थ्य और शक्ति' नामक पुस्तक मुफ्त मंगवाकर पढ़िये

पता:
रूप विलास कम्पनी न.१३, कानपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

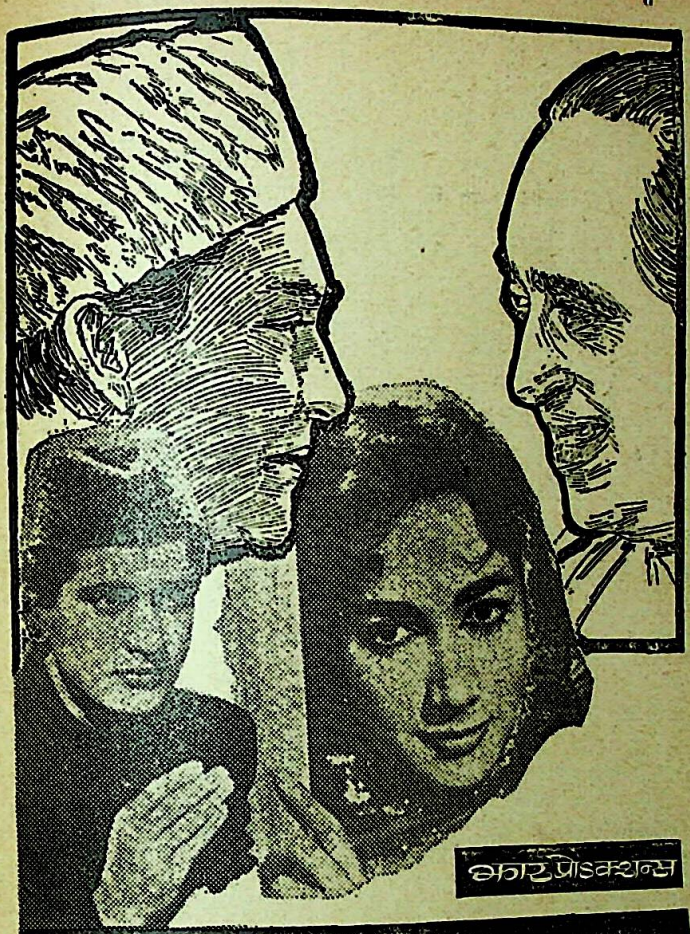

अशोक कुमार * शकीला * मनोज कुमार

के० एन० सिंह * मारूती * मिर्जा मुशर्रफ, शम्मी और इन्दिरा

इम्पिरियल, बम्बई व अन्य छबिघरों में

एम० बी० बिलिमोरिया एण्ड सन्स रिलीज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत की छमाही जिल्दें

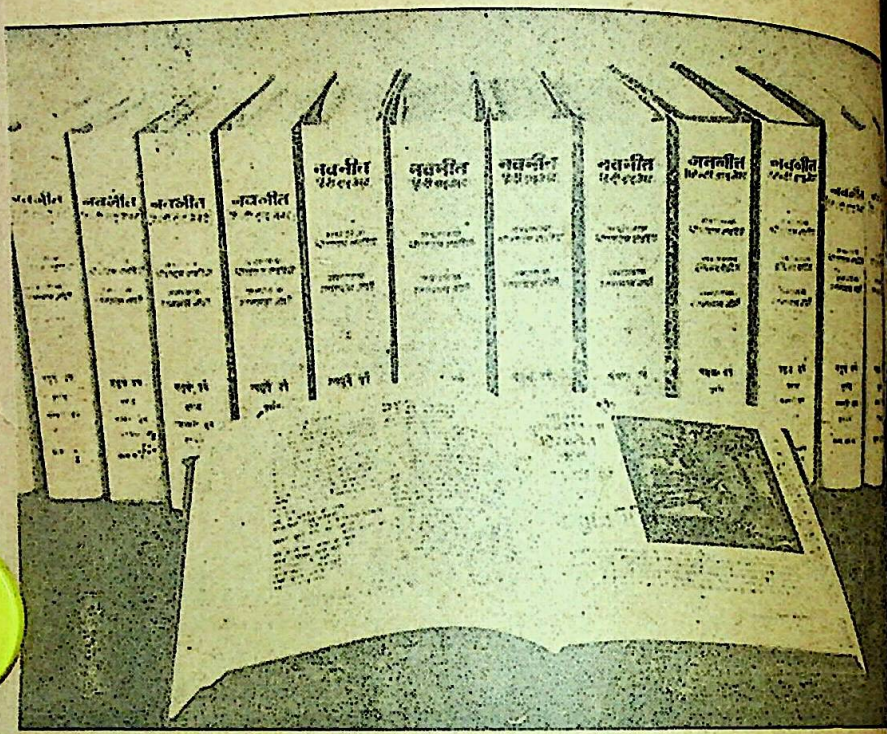

प्रति मास प्रकाशित 'नवनीत' की सामग्री इतने स्थायी उपयोग व सर्व-कालीन महत्व की होती है कि उसका संग्रह प्रत्येक घर के लिए वांछनीय है। इसीलिए 'नवनीत' के पाठक व ग्राहक सब अंकों को जमाकर अपने घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय बना लेते हैं।

जो लोग पुराने अंकों को जमा नहीं कर पाये हैं या नये ग्राहक बने हैं-उन्हें पुरानी जिल्दें मिल सकती हैं। छः-छः अंकों (जनवरी-जून ० जुलाई-दिसम्बर) को एक सुंदर जिल्द में बाँध दिया गया है। इसके अलावा छः महीने के अंकों में छपे लेखों की विषयानुक्रम सूची भी आरम्भ में लगा दी गयी है।

अपने अवकाश के समय में कोई भी जिल्द ले लीजिये और अपने प्रिय विषय के लेख या कहानियाँ पढ़िये।

जिल्दों का मूल्य

साधारण संस्करण ५) विशेष संस्करण ७॥) एक जिल्द पर १।) डाक खर्च लगता है जो ग्राहक को नहीं देना पड़ता : हम देते हैं।

लिखिये : वितरण व्यवस्थापक, नवनीत, बम्बई-३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये वर्ष के अवसर पर नये ग्राहकों को आकर्षक उपहार

आजकल नये-नये मासिक-पत्र निकल रहे हैं। साधारण पाठक के लिए इतनी सामग्री से चुनाव करना कठिन हो जाता है और कई बार वह अपने और अपने परिवार के लिए कोई सस्ती कहानी या सिनेमा मासिक ले आता है।

'नवनीत' सदा से प्रेरणात्मक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सामग्री प्रस्तुत करता आया है। इसीलिए 'नवनीत' की लोकप्रियता दिन-प्रति-दिन बढ़ रही है। सत्साहित्य के प्रचार के लिए ही हम 'नवनीत' को नये ग्राहकों तक पहुँचाने का प्रयास करते रहते हैं।

'नवनीत' का यह अंक पढ़ने के बाद यदि आप समझें कि 'नवनीत' आपको प्रति मास मिलता रहे, तो १०) मनीआर्डर से वितरण-व्यवस्थापक, नवनीत, बम्बई-३४. के पते पर भेज दें। यदि आप चंदे में और भी बचत करना चाहें तो दो वर्ष के लिए १८) या तीन वर्ष के लिए २५) भेज सकते हैं।

यदि आप 'नवनीत' के नियमित पाठक हैं, तो कृपया इस कार्डसहित यह नमूने की प्रति अपने किसी मित्र को दे दें।

वितरण व्यवस्थापक
'नवनीत' बम्बई-३४

प्रिय महाशय,

कृपया नवनीत के लिए मेरा चन्दा निम्नप्रकार से जमा करें

* एक साल के लिए १० रुपये ☐ फुटकर मूल्य से २ रुपये की बचत
* दो साल के लिए १८ रुपये ☐ फुटकर मूल्य से ६ रुपये की बचत
* तीन साल के लिए २५ रुपये ☐ फुटकर मूल्य से ११ रुपये की बचत

मैं उपर्युक्त रकम मनिआर्डर द्वारा / चेक द्वारा भेज रहा हूँ। कृपया मुझे 'मधुकलश' पुस्तक भेज दीजिये।

मेरा ग्राहक नम्बर है.....

पता:-

हस्ताक्षर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपका चंदा पहुँचते ही आपको एक पुस्तक 'मधु कलश' उपहार स्वरूप भेजी जायेगी। इस पुस्तक में निम्नलिखित पाँच पुस्तकों का संक्षिप्त हिन्दी रूपांतर प्रकाशित किया गया है।

१. मिथुन लग्न— ले० विमल मित्र (बंगला)
२. प्रकाश पुत्र— ले० हरमन हेस (जर्मन)
३. वनराज के देश में— ले० जोरावर सिंह (हिन्दी)
४. लामाओं के देश में— ले० टी० लोबसंग रम्पा (अंग्रेजी)
५. गद्दार— ले० कृष्ण चंद्र

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

Postage will be paid by addressee

BUSINESS REPLY CARD

No Postage stamp necessary if posted in India

BOMBAY, GRANT ROAD
P. O. PERMIT No. 2067.

NAVANEET
341, Tardeo,
BOMBAY-34.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

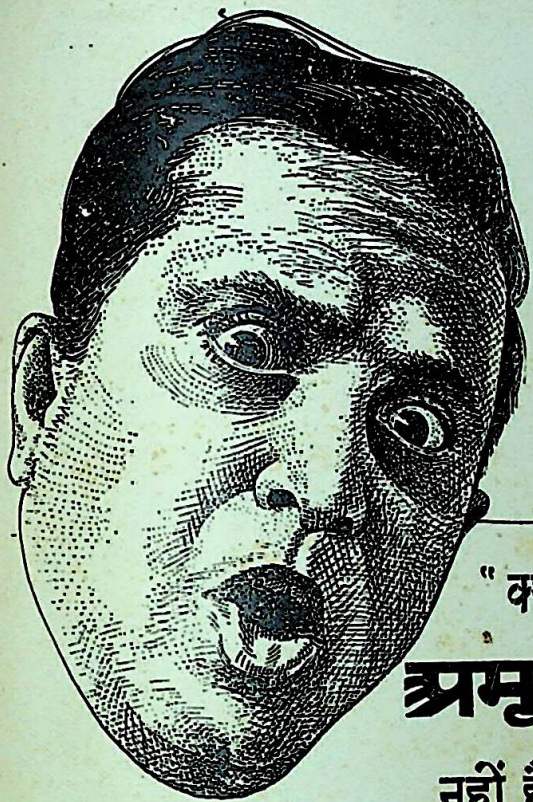

"क्या कहा,

अमृतांजन

नहीं है घर में ?

अब मैं जोड़-जोड़ के दर्द में
क्या लगाऊँ ?"

कौन जाने कब आपको अमृतांजन की जरूरत पड़ जाय —इसलिए हमेशा इसे पास रखिये। यदि आपके घर में अमृतांजन है तो आप अपने को सुरक्षित समझेंगे।

अमृतांजन लिमिटेड
१४/१५, लज चर्च रोड, मद्रास-४
बम्बई-१, कलकत्ता-१, नई दिल्ली-१ में भी

JWT/AM 1880 A

वार्षिक मूल्य १०)

मूल्य १.००)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Reg. No. B 6248

अब...

सुहानी **नई**

सुगंधवाला

नया **रेक्सोना**

सुहानी नई सुगंध का आनंद—अब आप के मनपसंद रेक्सोना साबुन में। आनंदभरी सुगंधवाले रेक्सोना में सौंदर्य तेलों का एक अनमोल मिश्रण है जो आपकी सुंदरता को दिन व दिन निखारता चला जाता है

Rexona

कॅडिल युक्त

नया रेक्सोना

...आप की त्वचा के लिए गुणकारी है

रेक्सोना गीत सुनिये गीता दत्त की मधुर आवाज़ में। इस का संगीत सलिल चौधरी ने रचना है और यह आपके मनपसंद सिनेमा में देखा जा रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

मई १९७४

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
अस्सी, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शानदार...जानदार...सदाबहार...
मगर स्वाभाविक जैसे सिर्फ़ सूती कपड़े

सेन्चुरी

१००% सूती कपड़ों के लिए

दि सेन्चुरी स्पि. एण्ड मैन्यु. कं. लिमिटेड, बम्बई-४०० ०२५

Adroit-CM-533HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कॉम्पटन
सिल्वरलाइन
सजीली
लाइटिंग फिटिंग...
किफ़ायती
दाम में!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेदिक पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

पेश है– बिलकुल नये ढंग की ऐसी लाइटिंग फ़िटिंग, जिसे आप अपने मौजूदा बजट में आसानी से ख़रीद सकते हैं। क्रॉम्पटन सिल्वरलाइन से आपके घर की शोभा जगमगा उठती है– बिलकुल मामूली क़ीमत पर! साथ ही, काम उम्दा और बचत ज़्यादा! क्योंकि क्रॉम्पटन ट्यूब, अपने बराबर वॉटेज के बल्ब से पाँच गुनी ज़्यादा रोशनी देती है और पाँच गुना ज़्यादा समय तक चलती है। है न अचम्भे की बात! इसके अलावा, क्रॉम्पटन सिल्वरलाइन, अपनी ख़ास भीतरी बनावट की ख़ूबियों के कारण, पक्के तौर पर बढ़िया काम देती है।

- रोशनी की जगमगाहट को एक समान फैलानेवाला डिफ़्यूज़र, पीले न पड़ने वाले विशेष तत्त्व सहित, ऊँचे दर्जे के 'लाइट-स्टेबिलाइज़्ड' पदार्थ से विशेष रूप से तैयार किया गया है।
- आई. एस. के विशेष विवरणों के अनुसार बनाया गया, पोलिएस्टर से भरा 'चोक', किसी प्रकार की तकलीफ़ दिए बग़ैर बरसों काम देता है।
- आई. एस. के विशेष विवरणों के अनुसार सर्वोत्तम कोटि के बने, मज़बूती से जकड़ने वाले 'रोटर-लैम्प होल्डर्स', बराबर सम्पर्क बनाये रखते हैं।
- धातु की बॉडी 'सीआरसीए' चद्दर से बनायी गयी है जिसे रासायनिक प्रक्रिया द्वारा उपचारित किया गया है। इसलिए इस पर जंग नहीं लगता, और जो सदा नयी की नयी नज़र आती है और लम्बे अरसे तक चलती है।
- सिल्वरलाइन हलकी, सार-संभाल में आसान और बिलकुल साफ़-सुथरी है। यह लटकते या समतल-रूप में बिठायी जा सकती है और इसे लगाने के लिए लम्बी-चौड़ी तैयारी की ज़रूरत नहीं।
- यह ५९० मि. मी.-२० वॉट, और १,२०० मि.मी.–४० वॉट फ़्लोरेसेंट ट्यूबों के लिए उपयुक्त आकारों में मिलती है।

क्रॉम्पटन–हर तरह के काम के लिए मज़बूत सुपरगोल्ड बैटन फ़िटिंग्ज समेत, उद्योगों और घरेलू उपयोग के लिए, तरह-तरह के लाइट-फ़िटिंग्ज तैयार करते हैं।

अब क्रॉम्पटन को अपनाइए

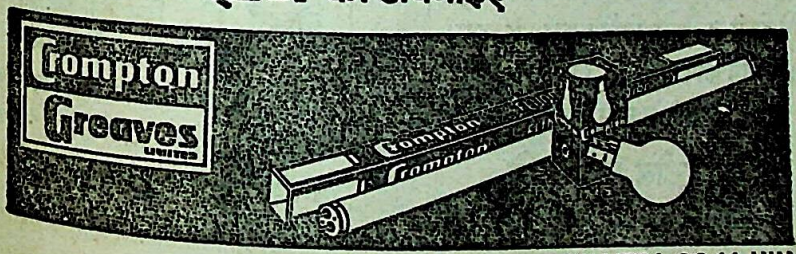

CHAITRA CG 11 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेनिथ

औद्योगिक जगत में
एक विख्यात नाम है।

स्टीलपाइप
स्टीलकटर

इसके मुख्य उत्पादन हैं।
देश-विदेश सर्वत्र
इनका प्रचार हैं।

जेनिथ स्टील पाइप्स लि.
का
खोपोली

स्थित औद्योगिक निर्माण का स्थान अनुपम है, आदर्श है। उसके उत्पादन के द्वारा उपभोक्ताओं की अवश्यकताओं की पूर्ति होती है, नियति के द्वारा देश को विदेशी विनिमय की प्राप्ति होती है, और विविध करों के द्वारा देश के अर्थ कोष की वृद्धि होती है।

सबकी सेवा मे प्रस्तुत

जेनिथ स्टील पाइप्स लि.
खोपोली (कुलाबा) बंबई.

IS

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड कार्यालय

लालबहादुर शास्त्री मार्ग,
भांडुप, बंबई ७८ एन० बी०
केबल: 'लकी' भांडुप
फोन: ५८२४२१

सेमिस रोलिंग विभाग

नानफेरस शीत, स्ट्रिप और काइल, नानफेरस प्लेट और सर्कल

एलाय और कास्टिंग विभाग:

एंटिफ्रिक्शन बेयरिंग मैटल्स गनमैटल्स और ब्रोजेन्स, ब्रेजिंग सोल्डर्स और टिन सोल्डर्स, फाइन जिंक डाइकास्टिंग एलाय्स 'इस्माक३', अल्युमिनियम बेस्ट डाइकास्टिंग एलाय्स, ब्रास और ब्रोन्ज राड्स सालिड कोर्ड, फिनिश्ड कास्टिंग रफ और मशीन्ड।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

even if this happens – nothing happens to

DOUBLE-D

O C M

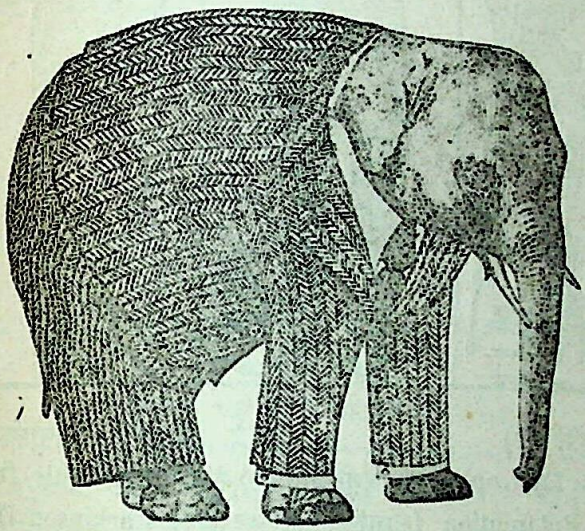

OCM

SUITING

DOUBLE-D

IN TERENE & TERENE wool

THE BRAVE NEW SUMMER RANGE FOR DESIGN AND DURABILITY

Uncrushable, Unwrinkable, Unresistible

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

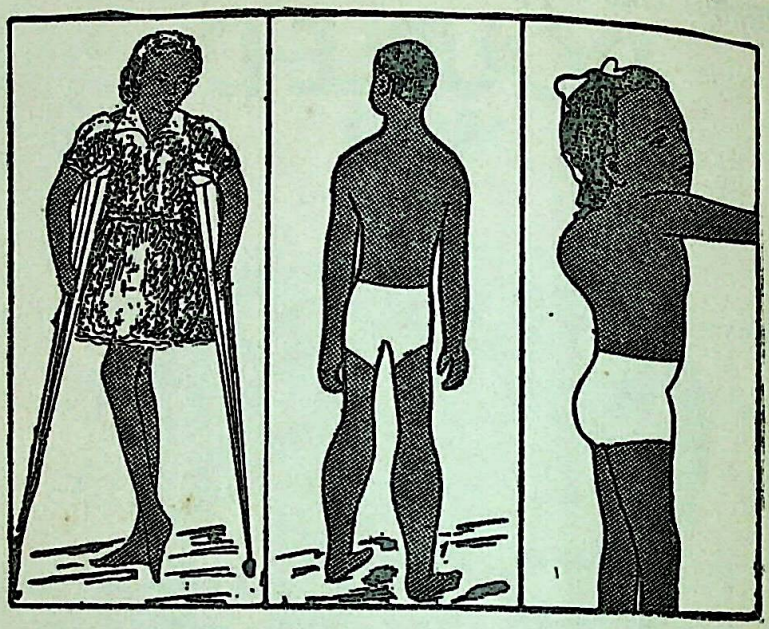

1. Polio (पोलियो) 2. Paralysis (निष्क्रिय अंग)
3. Muscular Dystrophy (मांसपेशी दुर्बलता) 4. Cerebral Palsy (लकवा)
5. Mental Retardation (मानसिक विकार) 6. Parkinson Disease (कंपवायु) 7. Pains (Lumbago, Arthrities, Rheumatic, sciatica) (पुराने तथा कष्टसाध्य दद)

रोगीजन, कविराज ओमप्रकाश एम. ए. भिषगाचार्य धन्वंतरि (जो अमेरिका से वापस आये हैं), प्रधान चिकित्सक, आर्यावर्त पोलियो आश्रम, नई दिल्ली-११००१५ (दिल्ली और महाराष्ट्र पार्ट-१ में रजिस्टर्ड) से निम्न स्थलों पर सलाह ले सकते हैं।

बम्बई :- ८-५-७४ और ९-५-७४ ९ से १२ और २ से ४ बजे तक हेल्थ पॅलेस; रूम नं. १ पहला माला; नवजीवन कॉलनी बिल्डिंग नं. ३ लमिंग्टन रोड, फोन : ३९४२१८

पणजीम :- १५-५-७४ १० से २ और ४ से ५ बजे तक
नेपच्यून होटल, मलका रोड, फोन : २०८५
सलाह का शुल्क ३५ रुपये चिकित्साव्यय अलग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ARYAVARTA POLIO ASHRAM
ARYAVARTA BHAWAN

79–E, Kirti Nagar, New-Delhi–110015

Phone:– 584344, 589319, 585635 Gram:– "Poliocure"

*

कविराज ओमप्रकाश एम. ए., भिषगाचार्य धन्वंतरि की लिखी सचित्र पुस्तक 'पोलियोमाइलाइटिस एंड आयुर्वेद' मूल्य ८·५० रुपये अंग्रेजी में और ८·०० रु. हिन्दी में। 'पोलियो एंड मायोपेथी' : रु. २·००; हेल्थ : रु. २·५०.

सूचना : सलाह अंग्रेजी या हिन्दी में।

होटलों में अति तीखा खाने से मुंह में जलन आना, चर्मरोग, फुन्सियां, खुजली, माता, खांसी तथा मूलव्याधि, रक्तपात आदि से पीड़ित हों...

तब चरक का

गु ल कं द

(प्रवाल, पिष्टी, रूपा, वंशलोचन युक्त) उपयोग करें।

आंतरिक तथा मानसिक स्वस्थता के लिए।

तमाम औषधि विक्रेताओं से प्राप्य।

चरक फार्मास्युटिकल्स्

बम्बई–११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंडेफ़
रोलर चेन
इलेक्ट्रिक हॉइस्ट्स
१/४ टन तथा
१/२ टन
उत्पादकः हरकुलिस
हॉइस्ट्स लि.,
विश्वविख्यात हारेक माण्ड,
ऊपर उठाने के साधनों
के निर्माता,
पश्चिम अर्मनी रिपब्लिक
के ग्राउड जी.एम.बी.एच.
के सहयोग से

विक्रेता:
बाटलीबॉय एण्ड कम्पनी
लिमिटेड
रजि. आफिस
फोर्ब्स स्ट्रीट, बम्बई-१.
शाखाएँ-एसोसिएट्स-एजेन्सीज
सारे भारत भरमें।

BATLIBOY

लिंक चेन

❀

जिसकी एक-एक कड़ी
मजबूत, परखी हुई और
पूर्णतः विश्वसनीय है।

❀

सभी उद्योगों व वाहनों
में उपयुक्त

❀

एलोय स्टील चेन
एक विशेषता

❀

इण्डियन लिंक चेन मेन्युफेक्चरर्स लि.

भाण्डुप : बम्बई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भव्यता का स्पर्श !
रंगों का समूह !!
मिनटों का काम !!!

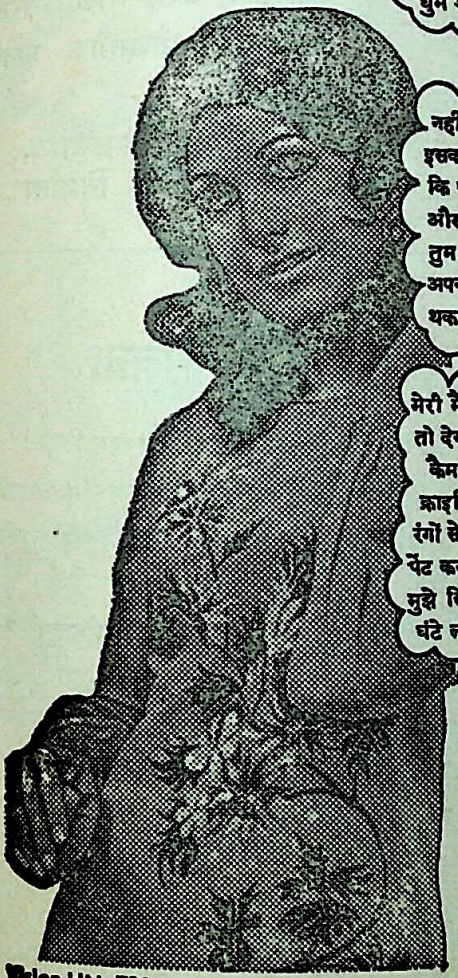

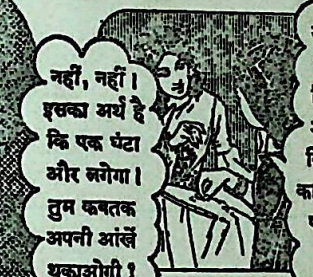

फ्राइलिन कॉरेसपॉन्डन्स स्कूल
कैमलिन प्राइवेट लिमिटेड
आर्ट मेटीरियल डिविज़न
जे. बी. नगर, बम्बई-४०००५९

Vision HN. 731

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'को र स'

पत्र-व्यवहार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला भारत का सर्वोत्तम औद्योगिक प्रतिष्ठान

कार्बन पेपर, टाइपराइटर रिबन, ड्राइटाइप, स्टेंसिल्स, डुप्लिकेटिंग स्याही इत्यादि के निर्माता

नवनीत के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओंपर हम शीघ्रध्यान दे सकेंगे।

३) 'नवनीत' की प्रतियां पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भजी जाती हैं। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १५ तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन करना हो, तो उसकी सूचना माहकी १९ तारीख तक हमारे दपतर में भेज दें।

५) बहुत थोडे समय के लिए हम यते में परिवर्तन नही कर सकेंगे। अतःडाकघर वे ऐसी व्यवस्था लर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे।

६) नये ग्राहकों को चंदा भेजते समय पूरा पता साफ अक्षरो में निम्नढंग से लिखना चाहिये।

नाम.....

गांव..... डाकघर.....

जिल्हा..... राज्य.....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

WE CONTINUE TO PENETRATE

INTO WORLD MARKETS

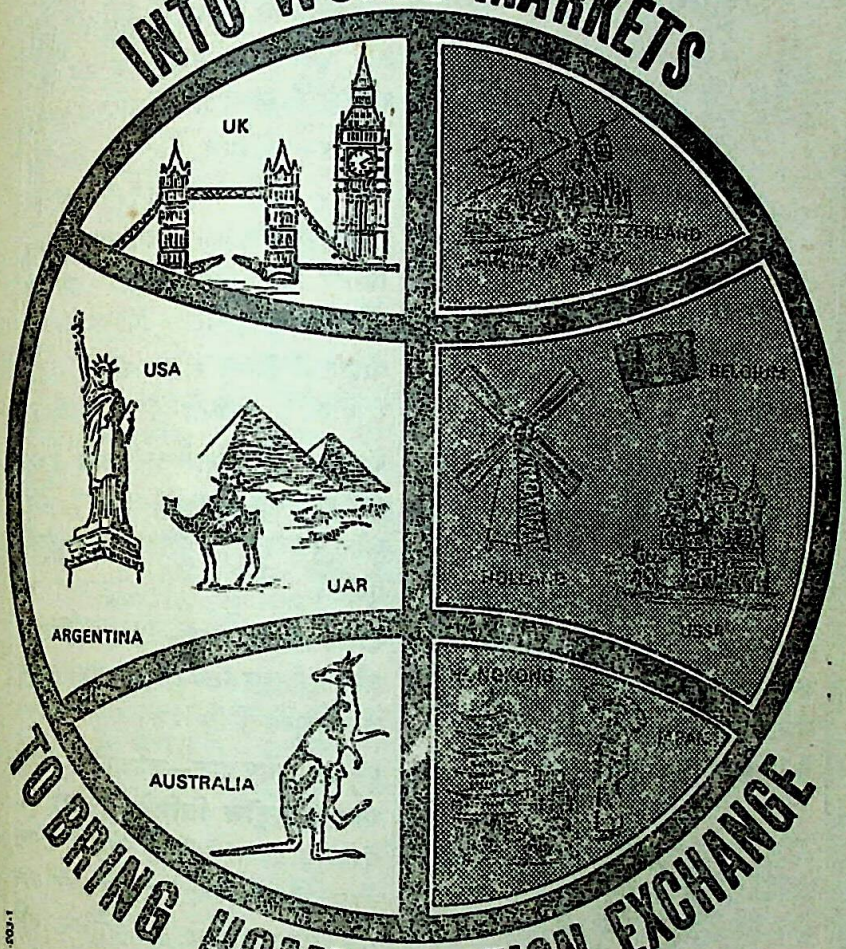

TO BRING HOME FOREIGN EXCHANGE

MIRA/ADC-503-1

— to enrich India's life with colour!

AMAR DYE-CHEM LTD.

RANG UDYAN, MAHIM, BOMBAY 400016

Branches: AHMEDABAD • CALCUTTA • DELHI • JAIPUR • MADRAS • MADURAI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

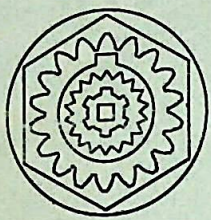

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार बनाने के लिए एक विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां ब्रोच उत्पादन परमावश्यक होता है। डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये ब्रोच से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि., थाना (बंबई)

हम उद्योग की कई प्रकार से सेवा करते हैं। हमसे संपर्क करना आपको लाभप्रद होगा।

अल्युमिनियम— सभी प्रकार के शीटों और एक्सट्रुडेट सेक्शनों के लिए महाराष्ट्र में 'हिन्दालको' के मुख्य स्टाकिस्ट।

औजार— इंडियन टूल मैन्युफैक्चरिंग लिमि. के वितरक और स्टाकिस्ट।

ग्रिंडवेल नोर्टन लि. बम्बई द्वारा निर्मित ग्रिंडिंग विल और दूसरे एंब्रेसिव प्रॉडक्ट्स के रजिस्टर्ड वितरक।

पाइप्स— जेनिथ स्टील पाइप्स लिमि. खापोली के विक्रेता और स्टाकिस्ट।

केबल— युनिवर्सल केबल्स लिमि. सतना (म. प्र.) के महाराष्ट्र (विदर्भ, गोवा और गुजरात को छोड़कर) में विक्री एजेंट।

टायर और ट्यूब— एशियन डिलक्स और एशियन टिप-टाप सायकल टायर्स और ट्यूब्स के वितरक।

फ्लैक्स फायर होज— जयश्री टेक्सटाइल्स एण्ड इंडस्ट्रीज लिमिटेड रिशरा (प. बंगाल) द्वारा निर्मित, 'वरुण' फ्लैक्स होज और 'जयश्री' एंग्यूज आर आर एल होज पाइप्स के स्टाकिस्ट और वितरक।

एशियन डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड
क्वींस मेन्शन, तल मजला, प्रेस्कास्ट रोड, बंबई—१.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

1974: स्टार का १० वां वर्ष

स्टार का १० वां वर्ष

★ केवल दस ही वर्षों में कम मूल्य की 280 से अधिक अच्छी 'स्टार बुक्स' आज देश विदेश के करोड़ों पाठकों का मनोरंजन कर रही हैं !!

★ 'स्टार बुक्स' के इस गौरवमयी वर्षगांठ के अवसर पर हम हिन्दी जगत के प्रेमियों का आशीर्वाद चाहते हुए आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि 'स्टार बुक्स' भविष्य में आपकी और अधिक सेवा कर सकेंगी !!!

और अब अप्रैल 74 में 'स्टार बुक्स' की 300वीं पुस्तक—श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य

उर्वशी

५/- तथा अन्य शृंगारिक कविताएं

एवं ये विशिष्ट प्रकाशन

बंगला उपन्यासकार विमल मित्र: चाकर गाथा ३/-
पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम: आग की लकीर ३/-
उर्दू शायर साहिर लुध्यानवी : तलखियां ३/-
तेलुगु लेखक टी. गोपीचन्द असमर्थ की यात्रा ३/-
मराठी लेखक जयवन्त दलवी घुन लगी बस्तियां ३/
गुजराती लेखक शिवकुमार जोशी : कलंक ३/-
अजय कुमार जैन कृत याद रही बातें ३/-
राजवंश का उपन्यास तूफ़ान ३/-
पुण्डरीक का उपन्यास कदम कदम पर खतरा ३/-

स्टार बुक्स द्वारा हर सप्ताह "विविध भारती" पर सुनिये साप्ताहिक कार्यक्रम

उपन्यास के पन्ने

आपके प्रिय लेखकों से बातचीत !
नये उपन्यासों के नाट्य रूपान्तर !!

कार्यक्रम का समय

बम्बई : प्रत्येक सोमवार 10-30 बजे
दिल्ली : „ बृहस्पतिवार 9-45 „
कलकत्ता „ शनिवार 9-30 „
कानपुर/लखनऊ/इलाहाबाद प्रत्येक बुधवार रात 9-30 बजे
चंडीगढ़/जालंधर : प्रत्येक शनिवार रात 9.30 बजे

कम मूल्य की स्टार बुक्स और भी कम मूल्य में प्राप्त करने के लिये स्टार लायबेरी योजना के सदस्य बनिए। योजना-विवरण एवं सूची निशुल्क मंगावें।

एक विशिष्ट समारोह में प्रस्तुत की जा रही है। ये सभी 'स्टार बुक्स' मई में देश भर के बुकस्टालों से खरीदें

स्टार

स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा.) लि.
आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली-110001

अच्छी पुस्तकें - स्टार बुक्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक परिवार के लिए अनिवार्य
अपने खाद्य पदार्थ, अनाज, आटा, दाल, मसाले, मेवे आदि को
कीड़ों से सुरक्षित रखने के लिए इस्तेमाल कीजिये।

झंडू

द्वारा विशेषतः निर्मित

पारद टिकियां

पारे से निर्मित
थोक और खुदरा व्यापारियों के लिए नियामत

झंडू

फार्मास्यूटिकल
वर्क्स लिमिटेड

बंबई ४०००२५
सर्वत्र उपलब्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष २३ : अंक ५ * इस अंक में * मई १९७४

पत्रवृष्टि	१७	संपादक की डाक से
सबसे बड़ा संकट	२१	आचार्य राममूर्ति
खेत रहा हर जवान.....	२५	हरिशंकर
प्राचीनतम राजतंत्र की समस्याएं	२८	कृष्णानंद
प्रेमोपचार	३३	मदर टेरेसा
वृद्ध ने कहा	३४	विलियम नेविल
मेरे युवा मित्रो !	३६	घनश्यामदास बिरला
वह सुर सदा याद रहेगा	४०	रवि बसु
हर मजदूर की पगार...एक हजार	४४	शरद कारखानीस
वाक्यदीप	४८	जार्ज सांटायना
अर्धकृत्रिम मानव	४९	स्वरूप दत्त
उम्रचोरों के गांव में	५२	रमेशदत्त शर्मा
चार कविताएं	५६	मकबूल फिदा हुसैन
मनोलोक	५८	विमलेंदु श्रीवास्तव
स्त्री, पुरुष, स्त्री+पुरुष	६०	एलेक बोर्न
विज्ञान-बिंदु	६१	केजिता
शिल्प और स्थापत्य का कोष	६५	....
कुंकुम-कथा	६९	पृथ्वीनाथ मधुप

संचालक	संपादक	परामर्शदाता	व्यापार-व्यवस्थापक
श्रीगोपाल नेवटिया	नारायण दत्त	सत्यकाम विद्यालंकार	महेंद्र महेता
प्रबंध-संचालक	सहसंपादक	सहकारी : गि. शं. त्रिवेदी	प्रबंध : सोहनराज पारेख
हरिप्रसाद नेवटिया	सुरेश सिन्हा	डा. विष्णु भटनागर	सज्जा : ठाकोर राणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठ विज्ञानी और श्रेष्ठ मानव	७३	पृथ्वीनाथ शास्त्री
सुरसा-से बढ़ते मरुस्थल	८१	लुई रेने लुट्ज़ेनकिर्शेन
तमिलनाडु के जैन तीर्थों में	८५	टी. एस. राजु शर्मा
जलकमलवत् कमलजलवत्	९०	मुकुंदराय पाराशर्य
सागर पर तैरते नगर	९२	कुलदीप शर्मा
मुखौटों से जरा हटकर (कविता)	९६	विश्वनाथ
फीरोजाबाद का चूड़ी-उद्योग	९७	रमेश प्रसाद शर्मा
ताश में बेईमानी	१००	गिरीशरंजन
यह प्यार ह ? (इतालवी कहानी)	११०	अल्वर्तो मोराविया
गैरजासूस की जासूसी	११५	अनंत
अनुकरण (लोककथा)	१२१	सुरेश पांडेय
हमारे मास्टरजी	१२४	एम. दंडपाणि
अंतरिक्ष में हमारे भेदिये	१२६	डा. जगदीश लूथरा
प्रथाएं कुछ ऐसी भी हैं	१२९	श्यामजी पंडित
अम्मा का बेटा (हिन्दी कहानी)	१३२	कृष्णकुमार
यादों की महक	१४१	चौधरी, देसाई, पांडे, रवींद्र, 'कमल'
मैत्री-मंत्र	१४७	आर. जे. एल.
कविताएं	१४८	'मुकुंद', जोशी
अब जरा हंस न लें ?	१४९	सत्यनारायण नाटे
एक स्थिति (कविता)	१५०	शिवशंकर वशिष्ठ
समुद्र (बंगला कहानी)	१५२	ज्योतिरिंद्र नंदी
पुस्तकास्वादन	१७२	सिन्हा, सिन्हा, त्रिवेदी, वर्मा, निवसरकर

आवरणचित्र : जी. जी. गोखले

चित्रसज्जा : ओके, शेणै, सतीश चव्हाण, विष्णु भटनागर और मगन पटेल

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४.
फोन : ३९२८८७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, अशीष बिल्डिंग, ३३५ बेलासिस रोड, बंबई-३४। फोन : ३७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि. ३४१ ताडदेव, बंबई-३४ के लिए प्रकाशित तथा निर्णयसागर प्रेस, ४५|डीई, ऑफ ठोकरसी जीवराज रोड, शिवरी, बंबई-१५ में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री नेमिशरण मित्तल के लेख 'गुजरात के माध्यम से देश के प्रश्नों का हल ?' (अप्रैल अंक) से ऐसा लगता है कि उन्हें श्री जयप्रकाश नारायण के लोक-स्वराज्य के विचार से जरा भी परिचय नहीं है। दुर्भाग्यवश जे. पी. की क्रांतिकारी तीव्रता को यह देश अभी तक सही-सही नहीं आंक सका है। प्रचलित सड़ी-गली दलीय राजनीति से उसे देखना संभव भी नहीं है। दलीय लोकतंत्र जिस बरी तरह से पूरी दुनिया में पिटता जा रहा है, उसे देखकर इसके अलावा और क्या विकल्प रह जाता है कि जातिनिष्ठ और वर्गनिष्ठ पूंजीवादी दलीय लोकतंत्र के स्थान पर सर्वनिष्ठ समाजवादी लोकशाही का विकल्प जनता के सामने प्रस्तुत किया जाये ?

सर्वनिष्ठ समाजवादी लोकराज्य में विधानसभाओं एवं संसद के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव किस तरह से होगा, सरकार किस तरह बनेगी व चलेगी, इसका खुलासा जयप्रकाशबाबू पिछले कई वर्षों से करते आ रहे हैं; परंतु इस देश के तथाकथित बुद्धिवादियों और प्रेस को इतनी फुरसत व समझ कहां कि वे उसका गहराई से अध्ययन करके उसे देश की जनता के सामने प्रस्तुत कर सकें ! उन्हें भय है कि ज्यों ही जनता लोक-स्वराज्य की आकांक्षा से आलोड़ित हो जायेगी, वर्गीय स्वार्थों का महल ताश के पत्तों की तरह ढह जायेगा।

सरकार को दलों के दलदल से जितनी जल्दी मुक्त किया जा सके, उतनी ही जल्दी हम 'तंत्र' के ऊपर 'लोक' को और 'राज्य की संघटित हिंसाशक्ति' के ऊपर 'स्वतंत्र व सहकारी लोकशक्ति' को प्रतिष्ठित कर सकेंगे।

—योगेशचंद्र बहुगुणा,
पो. सत्यनारायण मंदिर, देहरादून, उ. प्र.

० ० ०

एक ही बैठक में अप्रैल अंक को पढ़ गया। श्री नेमिशरण मित्तल ने अपने लेख 'गुजरात के माध्यम से देश के प्रश्नों का हल ?' में क्रमबद्ध व विवेकपूर्ण विचारों के द्वारा आज की समस्याओं को सत्य की कसौटी पर कसा है और सही मानी में समाधान भी ढूंढ़ा है। लेख में गुजरात के सफल आंदोलनकारी नवयुवक नेताओं को एक संदेश है—'युवक-वर्ग विधानसभा के विसर्जन को अपनी चरम सफलता मानने के बजाय, यह प्रतिज्ञा करे कि हम आगामी चुनावों में भ्रष्ट, सांप्रदायिक, स्वार्थी और पदलोलुप लोगों का डटकर विरोध करेंगे।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी से भारत के प्रत्येक प्रांत के नवयुवकों को प्रेरणा मिलेगी और वे भ्रष्ट नेताओं को जड़मूल से मिटाकर राष्ट्र का नवनिर्माण करने में सफल होंगे।

—महेश बी. शर्मा, झालावाड़, राजस्थान

० ० ०

प्रो. विजयेंद्र स्नातक के सुंदर लेख 'विवेक और आस्था की अमूल्य निधि' (अप्रैल अंक) में पृष्ठ ४७ पर रामायण की जो चौपाइयां उद्धृत हैं, वे विभीषण को संबोधित करके लिखी गयी हैं; वे सुग्रीव को संबोधित नहीं हैं, जैसा कि लेख में छपा है। वैसे मुझे अंक पसंद आया—अलेक्जांडर सोल्जेनित्सिन के 'गुलाग आर्किपेलेगो' का परिचय विशेषतः।

—अखिल शुक्ल, इटावा, उ. प्र.

० ० ०

मार्च के नवनीत में स्व. महावीरप्रसाद द्विवेदी विषयक लेख पढ़कर पुरानी स्मृतियां जागृत हो गयीं। मैंने उसके लेखक श्री देवीरत्नजी अवस्थी की सेवा में बधाई का पत्र भेज दिया है और एक चिट्ठी श्री कमलाकिशोरजी को भी भेजी है। मैंने आचार्य द्विवेदीजी के प्रथम दर्शन सन १९१७ में (आज से ५७ वर्ष पूर्व) जुही, कानपुर में किये थे और तत्पश्चात् १९२४ में दौलतपुर की प्रथम तीर्थयात्रा की थी। उसके बाद दो बार और भी वहां गया था। उनके ७०-७२ पत्र मैंने नेशनल आर्काइव्ज़ में रखवा दिये हैं। नवनीत पुराने साहित्यसेवियों को याद कर लेता है, यह बड़ी बात है।

'साहित्य-जगत्' शीर्षक के अधीन प्रतिमास चार-पांच पृष्ठ का लेख आप दे सकें तो अत्युत्तम हो। उसमें हिन्दी-संसार पर विहंगम दृष्टि डाली जा सकती है। बयासी की वय में ऐसा लेख लिखना मेरे लिए तो कठिन है, पर आप तो उसे आसानी से लिख सकते हैं।

—बनारसीदास चतुर्वेदी, ज्ञानपुर, वाराणसी

० ० ०

अप्रैल अंक में छपा लेख 'कलागुरु जगन्नाथ अहिवासी' (लेखक : वासुदेव स्मार्त) मूलतः गुजराती पत्रिका 'कुमार' में प्रकाशित हुआ था। लेख के साथ इस तथ्य का उल्लेख नहीं हो पाया, इसका हमें खेद है।

मार्च अंक में छपे लेख 'उपग्रहों का उपयोग' (लेखक : डा. जगदीश लूथरा) से संबंधित कुछ जानकारी उसी अंक के पृष्ठ १७ पर दी गयी थी, जिसमें कहा गया था—'संचार-उपग्रह ४० किलोमीटर की ऊंचाई पर चक्कर काटता है और पृथ्वी का केवल १२० डिग्री भाग देख पाता है। इसलिए एक साथ तीन संचार-उपग्रह स्थापित करने पड़ते हैं।' संचार-उपग्रह ४० हजार किलोमीटर की ऊंचाई पर चक्कर काटता है और यदि सारी पृथ्वी को 'कवर' करना हो, तो ही तीन संचार-उपग्रह स्थापित करने पड़ते हैं।

—संपादक

० ० ०

जनवरी अंक में पृष्ठ १५ पर 'छः-छह' संबंधी पत्र के उत्तर में आप कहते हैं कि शुद्ध रूप छह है। ज्ञानमंडल काशी का बृहत् हिन्दी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोश 'छह' और 'छः' दोनों रूप देता है। हिन्दी शब्दसागर में 'छह' दिया तो है, पर साथ ही लिखा है 'दे. छः'। मानक हिन्दी कोश भी 'छह' शब्द नहीं देता। उसने 'छः' को ही प्रामाणिक रूप माना है। हिन्दी लिखते समय किसे प्रामाणिक माना जाये ? तीनों कोश अपना स्थान रखते हैं। आपने एक और कठिनाई बढ़ा दी।

—रवींद्र पांडिचेरी

*जब कोशों में मतभेद हो या कोश में दिये गये रूप की शुद्धता पर संदेह उठाया जाता हो, वहां तर्क का आश्रय लेना पड़ता है। संस्कृत के तत्सम शब्दों से अन्यत्र हिन्दी में विसर्ग नहीं है, यह निश्चित बात है। इसलिए 'छह' शब्द भी हकार-युक्त ही होना चाहिये। श्री किशोरीदास वाजपेयी ने भी अपने 'हिन्दी शब्दानुशासन' में यही मत व्यक्त किया है। —संपादक

० ० ०

नवनीत मार्च ७४ के अंक में श्री त्रि. शूलपाणि का लिखा परिचयात्मक लेख 'गीतगिरीशम्' पढ़ने को मिला। लेख का आरंभ इन शब्दों से होता है— 'पीयूषवर्षी कवि जयदेव का "गीतगोविंद" संस्कृत काव्य के रसिकों में बहुत समादृत है अपनी अत्यंत-रसमय और गेय गीतात्मक शैली के कारण।'

विद्वान लेखक ने 'गीतगोविंद' के रचयिता को पीयूषवर्षी कवि जयदेव बताया है। पीयूषवर्षी कवि जयदेव प्रसिद्ध अलंकार-ग्रंथ 'चंद्रालोक' के प्रणेता थे। उन्होंने 'प्रसन्नराघव' नाटक भी लिखा। वे गीतगोविंदकार जयदेव से भिन्न थे।

—कन्हैयालाल जोशी, बिचून—जयपुर, राज.

* इस ओर ध्यान खींचने के लिए धन्यवाद। गीतगोविंदकार जयदेव और 'पीयूषवर्षी' उपाधिधारी आलंकारिक एवं कवि जयदेव अलग-अलग व्यक्ति थे। लेखक ने गीतगोविंदकार के लिए 'पीयूषवर्षी' शब्द शायद विशेषण के रूप में लिखा है, जिससे पाठक भ्रम में पड़ सकते हैं। संपादन में उसे हटाया जाना चाहिये था। —संपादक

० ० ०

नवनीत से मेरी दो आकांक्षाएं रही हैं— १. कुछ दार्शनिक लेख; और २. जीवंत समस्याओं पर सूचनापूर्ण लेख। हर अंक में इनकी पूर्ति होती रही है। लेकिन नवनीत ने भारत के विभिन्न अभिशप्त अंचलों के बारे में कुछ नहीं छापा। देश में बढ़ते हुए आर्थिक असंतुलन की ओर भी आपका ध्यान जाना परमावश्यक है। भारत के बंदियों के जेल-जीवन पर भी कुछ छपना चाहिये।

—गुंजेश्वरी प्रसाद, कौड़ीराम, गोरखपुर

० ० ०

नवनीत का मैं नियमित पाठक हूं। ऐसी सुसंपादित पत्रिका द्वारा राष्ट्र की बड़ी सेवा हो रही है। अप्रैल का अंक आकर्षक था। 'भगवान महावीर', 'महर्षिकल्प मैक्स मुल्लर', 'गंगा के प्रथम दर्शन', 'क्या है स्त्री-सौंदर्य', 'यादों की महक', 'जब देश ने पुकारा' आदि लेख सुंदर थे। यदि लघुकथाएं भी दी जायें, तो अंक की सुंदरता बढ़ जायेगी।

—उदयशंकर भंडारी, मुजफ्फरपुर, बिहार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्च अंक में 'स्पेन : जीर्णशीर्ण व्यवस्था' नामक लेख के पृष्ठ २० पर '८१ वर्षीय बूढ़े तानाशाह जनरल फ्रांसिस्को फ्रांको' लिखा है और आगे 'राजनेताओं के अराजनैतिक खेल' नामक लेख में पृष्ठ १८८ पर छपा है कि 'स्पेन के जनरल फ्रैंको अब ८८ के हो चले हैं।' सही उम्र किसे मानें ?

—शिवकुमार राय, गोटेगांव (नरसिंहपुर), म. प्र.

* जनरल फ्रांको का जन्म ४ दिसंबर १८९२ को हुआ। —संपादक

० ० ०

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप आयुर्वेद-चिकित्सा विषयक एक स्तंभ प्रारंभ करें। जो आयुर्वेद-जगत् के मूर्धन्य विद्वान हैं, उनसे लेख लिखवाकर इसमें छापें। इससे हम-जैसे चिकित्सकों को, जो ग्रामीण अंचलों में सेवा में रत हैं, कुछ नूतन विचार मिल सकेंगे।

—काशीप्रसाद शर्मा, पोखरा-बस्ती, उ. प्र.

० ० ०

मार्च के नवनीत में प्रकाशित 'नजराना' में आज सर्वत्र व्याप्त घूसखोरी का जो यथार्थवादी चित्रण है, वह प्रशंसनीय है। विशेषतः यह अंश—'वरखुरदार ! अब सिर्फ रोने-चिल्लाने से दूध नहीं मिलेगा, पहले नजराना निकालो। इसी प्रकार गुजराती कहानी 'एक चेहरा माओ का' बंगाल व देश के अन्य प्रांतों में व्याप्त राजनैतिक व सामाजिक अव्यवस्था का हृदयस्पर्शी वर्णन करती है। उसे पढ़कर ऐसा लगता है, रुपये की कीमत के साथ ही इंसान के प्राणों की भी कीमत गिर गयी है। ताजे विषयों पर सामग्री देने के कारण नवनीत आज की परिस्थितियों का दर्पण हो गया है।

—प्रेम कौशिक, हुरड़ा-भीलवाड़ा, राजस्थान

० ० ०

मुझे दो सुझाव आपको देने हैं। मुझे आशा है कि अन्य पाठक-बंधु भी समर्थन करेंगे। पहला, 'डाइजेस्ट' शब्द का हिन्दीकरण करें दूसरा, नवनीत में से प्रतिवर्ष 'चयनिका' प्रकाशित करें।

—सुखीराम यादव, लमका खुर्द, जि. रायपुर, म. प्र.

० ० ०

जनवरी के नवनीत में श्री ललितचंद्र चंदोला का लेख था—'किरणों का राजहंस'। उसमें पृष्ठसंख्या ५६ पर एक वाक्य था—'. . . . . तथा दूसरा बल है नाभिक से दूर ले जाने वाला अभिकेंद्री (सेंट्रि पीटल) बल, जो, इलेक्ट्रान की गति से उत्पन्न होता है।' होना तो चाहिये था—अपकेंद्री (सेंट्रीफ्यूगल) बल।

पिछले वर्ष (अगस्त १९७३) एक लेख पढ़ा था—'लोकनृत्य छो' उसमें एक स्थान पर सरायकेला को उड़ीसा में बताया गया था। सरायकेला तो बिहार में है।

—श्यामकिशोर प्रसाद, डालटनगंज, बिहार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबसे बड़ा संकट

आचार्य राममूर्ति

देश हिंसा के ऐसे घेरे में घिर गया है, जो उसे दबाता, कसता चला जा रहा है। सरकार की हिंसा, विद्यार्थियों की हिंसा, गुंडों की हिंसा..... इन सब हिंसाओं का मुकाबला देश एक साथ कैसे करे? इसलिए सरकार और विद्यार्थी दोनों से देश जानना चाहता है कि वे अपना जहर उसके सिर क्यों उतार रहे हैं?

अभी १८ मार्च को पटना और बिहार में जो कुछ हुआ, उससे तो यही लगता है कि देश की चिंता न सरकार को रह गयी है, न विद्यार्थियों को। जरूर, विद्यार्थियों की कई मांगें ऐसी थीं, जो सही और मानने लायक थीं। लेकिन उस दिन तो उनकी खास जिद यही थी कि राज्यपाल विधान-मंडल के संयुक्त अधिवेशन में अपना अभिभाषण पढ़ने न जायें। राज्यपाल के अभिभाषण को उन्होंने इतना महत्त्व क्यों दिया? राज्यपाल रोज एक भाषण दें तो क्या बिगड़ता है, और न दें तो क्या बनता है?

सरकार ने जिद से जिद का जवाब दिया। दोनों ओर से डटने का ही निश्चय हुआ। सरकार ने हथियारबंद सैनिक बुला लिये। विद्यार्थियों के नेता यही कहते रहे कि हमारा प्रदर्शन और घेराव शांतिपूर्ण होगा। लेकिन वे यह नहीं समझ सके कि मूंछ की लड़ाई कभी शांति के साथ नहीं होती। मूंछ और विवेक का सह-अस्तित्व नहीं होता। इसलिए जहां विवेक नहीं होता, वहां शांति कैसे रह सकती है?

ऐसी स्थिति में परिणाम वही हुआ, जो होना चाहिये था। सशस्त्र सैनिकों से घिरकर राज्यपाल महोदय विधानसभा-भवन गये और उन्होंने निश्चित हो अपना अनमोल अभिभाषण पढ़ा। बावजूद सारे बंदोबस्त के सभा-भवन में भी शांति नहीं रह सकी और बाहर शहर में तो पूरे पांच घंटे जैसे कोई सरकार रही ही नहीं। न पुलिस का पता था, और न सेना का। मालूम नहीं सबके सब बंदूकधारी सैनिक कहां रह गये?

उधर उपद्रव पर उतारू (सब नहीं) विद्यार्थियों के साथ घुल-मिलकर गुंडों ने (जिनमें कुछ 'भद्र' भी समझे जाते हैं) जो चाहा किया। प्रेस जलाये, होटल जलाये, कार्यालय जलाये, तोड़-फोड़ की, गाड़ियां फूंकीं, दुकानें लूटीं। यह सब बिहार के अनेक स्थानों पर हुआ; किंतु सबसे अधिक स्वयं राजधानी में हुआ।

जब सब कुछ हो चुका, तो सरकार की ओर से कार्रवाई शुरू हुई। गोली चलने

['भूदान-यज्ञ' से साभार]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगी, कर्फ्यू लागू किया गया, गश्त चालू करदी गयी, गिरफ्तारियां होने लगीं। इतना होने पर रेडियो बोलने लगा—'अब शांति है, स्थिति काबू में है।' उपद्रव जब हो चुकता है, तो शांति के सिवा दूसरा होता क्या है ?

जब आग लग चुकी और लाखों की संपत्ति को जलाकर बुझ चुकी, तभी सरकार की ओर से बताया जाने लगा कि आग लगाने वाले कौन थे। कहा गया कि वे ऐसे लोग थे, जो लोकतंत्र और समाजवाद के शत्रु हैं, जो सरकार के 'क्रांतिकारी' कामों से नाराज हैं, जो चुनावों में हारकर अपनी खिसियाहट मिटाना चाहते हैं, जो देश के पुराने आदर्शों और नये मूल्यों को मलियामेट करने पर उतारू हैं। ये तत्त्व देशी भी हैं, और विदेशी भी। ये बातें पटना और दिल्ली में बार-बार कही गयीं।

लेकिन किसी ने यह नहीं बताया कि पटना में १८ मार्च को जब लपटें उठ रही थीं और लूट हो रही थी, तो इतने घंटों तक सरकार की पुलिस और सेना कहां थी ? क्यों 'सर्चलाइट' और 'इंडियन नेशन' जैसे पत्रों को फोन पर एक भी अधिकारी नहीं मिला, जिससे वे कह सकते कि उनके प्रेस जलाये जा रहे हैं ? कहां चले गये थे ये लोग? या, कहीं ऐसा तो नहीं था कि स्वयं सरकार के घर में दरार पड़ गयी थी, और संकट की घड़ी में कोई किसी की सुन और मान नहीं रहा था ..... मुख्यमंत्री की भी नहीं।

सरकार के खुफिया विभाग को भी क्या पहले से पता नहीं था कि १८ मार्च को कौन क्या करने वाला है ? किस प्रकार गुंडे चुपके-चुपके इस पैमाने पर संघटित हो गये ? कहां से अचानक इतने 'विदेशी तत्त्व' पैदा हो गये ?

एक युवक, जिसका उल्लेख मुख्यमंत्रीजी ने बिहार विधानसभा में षड्यंत्र का रहस्योद्घाटन करते हुए किया, वह न विदेशी है, न विध्वंसक। वह वर्षों से सर्वोदय का एक जाना-माना खुला और निर्भीक कार्यकर्ता है। जन्म जरूर उसका केन्या में हुआ था; लेकिन उसके माता-पिता अब भारत में ही रहते हैं। कुछ भी हो, जनता को सरकार से यह पूछने का अधिकार है कि अगर वह ऐसे खुले उपद्रव से जनता की रक्षा नहीं कर सकती, तो कानून और व्यवस्था के नाम से करोड़ों रुपये टैक्स में क्यों लेती है ?

जब सब कुछ हो चुका, तो सरकार और शासक-दल के नेताओं को जैसे 'इलहाम' हुआ कि जनसंघ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और आनंदमार्ग के लोग देश के शत्रु हो गये हैं। यह कहकर सरकार अपनी जिम्मेदारी से बरी कैसे होना चाहती है ?

देश के सामने इससे बड़ा संकट क्या होगा कि जनता को अपने ही प्रतिनिधियों पर भरोसा न रह जाये और मंत्रियों की मंत्रणा सुनने के लिए किसी के कान तैयार न हों ! इससे भी अधिक, सरकार के कहने में खुद उसके आदमी न हों !

क्या सरकार यह कहना चाहती है कि सिवा उसके और उसके दल के नेताओं के, अब देश में दूसरा कोई देश के प्रति वफादार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं रह गया है? अगर चुनाव में हारने वाले आग लगाने पर उतारू हो गये हों, तो सोचने की बात है कि दलों को चुनाव का ऐसा खेल खेलने ही क्यों दिया जाये कि जनता के सामने अपने घर और दुकान से हाथ धोने की नौबत आ जाये? क्यों न प्रतिनिधित्व की कोई दूसरी पद्धति सोची जाये?

एक प्रश्न और है। क्या हमारे नेता—सरकार और विरोध दोनों के—कभी अपनी अंतरात्मा को टटोलते हैं? क्या वे कभी यह सोचते हैं कि देश को आज की स्थिति तक पहुंचाने में उनकी क्या जिम्मेदारी है? नीचे से ऊपर तक हर दल के लोग यही कहते रहते हैं कि जो उनके साथ नहीं है, वह देश-द्रोही है। सत्ता की जो राजनीति वे चला रहे हैं, उसमें वे अपने दल की सत्ता को लोकसत्ता मान लेते हैं, इसलिए उनके दल की सत्ता उनके लिए साध्य बन जाती है और हर उपाय—चाहे वह जितना गलत हो—साधन बन जाता है।

काले पैसे और झूठे प्रचार के बल पर वे स्वयं जनता को दल की सत्ता का साधन बना लेते हैं। जनता को ही नहीं, गुंडों को भी। कैसे हमारी देश की राजनीति में गुंडे प्रतिष्ठित हो गये? जब चुनाव जीतने के लिए गुंडों से 'बूथ कैप्चर' करा लिया गया, तो क्या उन्हें दुकान लूटने, घर जलाने, स्मगलिंग और चोरबाजारी करने से रोका जा सकता है? क्या वे रोकने से रुकेंगे?

क्या हमारे नेता बता सकते हैं कि कैसे हमारी राजनीति सारे मूल्यों और मान्यताओं को छोड़कर एक 'संघटित अपराध' बन गयी? गुंडों की सेवा लेने वाले नेताओं को गुंडों का संरक्षक बनने में कितनी देर लगती है! और, अब तो गुंडे अपने नेता भी तैयार करने और उन्हें चुनाव जिताकर मुखिया से एम. पी. तक बनने लगे हैं।

लोकतंत्र का स्वांग रचने वाला यह दलतंत्र देश के लिए आज सबसे बड़ा खतरा बन गया है। इसने राजनीति को अपराध और सरकार को जन-विरोधी बना दिया है। ऐसे लोकतंत्र की छत्रछाया में वे सारे तत्त्व पल रहे हैं, जो स्वार्थी और समाज-विरोधी हैं। स्वाभाविक है कि इस प्रकार बनी सरकारें जनता की शक्ति से कहीं अधिक अपनी गोली पर भरोसा करेंगी। आज वे यही तो कर रही हैं—दुहाई वे चाहे जिन सिद्धांतों, मूल्यों और आदर्शों की दें।

इसी भूमिका में देश ने गुजरात के आंदोलन को देखा था, जिसमें युवकों की अगुआई में जनता ने एक भ्रष्ट और जन-विरोधी सरकार को अस्वीकार किया था। वही ध्वनि बिहार में भी प्रकट हुई थी। लेकिन बिहार के युवक चूक गये। बिहार में अंदर से जर्जर सरकार तथा दलीय राजनीति और विद्यालयों के भ्रष्ट कुप्रभाव में पले कुछ विद्यार्थी, दोनों समाज के 'शत्रु' सिद्ध हुए।

वहां न सरकार शांति कायम रख सकी और न विद्यार्थी 'क्रांति' को आगे बढ़ा सके। दोनों का 'पाप' समाज के सिर उतरा। सरकार समझती रही कि जनता को अलग रख-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर केवल सैनिकों के बल पर शांति रखी जा सकती है। और विद्यार्थी समझते रहे कि जनता को अलग रखकर केवल उपद्रव के बल पर क्रांति की नींव डाली जा सकती है। दोनों ने समान रूप से जनता की शक्ति में अविश्वास प्रकट किया और उसका दंड भोगा समाज ने।

सैनिक शक्ति पर आधारित सरकार का 'कल्याणवाद' और दलीय राजनीति की प्रेरणा से चलने वाला युवकों का 'संघर्षवाद' दोनों अंत में परिवर्तन-विरोधी यथास्थिति-वादी ही सिद्ध होते हैं।

युवक सोचें कि इस स्थिति में उन्हें क्या करना है। यह कहना काफी नहीं है—'आग हमने नहीं लगायी, असामाजिक तत्त्वों ने लगायी।' जो लोग शांतिपूर्ण क्रांति करना चाहते हैं, उन्हें सैनिकों और गुंडों दोनों की हिंसा पर काबू रखना सीखना होगा। यह तभी हो सकता है, जब जनशक्ति साथ होगी।

जनशक्ति के अभाव में समाज के किसी एक अंग का आंदोलन बुनियादी सामाजिक परिवर्तन का वाहन नहीं बन सकेगा। गुजरात में जनता आंदोलनकारियों के साथ थी, बिहार में नहीं। और १८ मार्च के अनुभव के बाद तो जनता को साथ लेना पहले से कहीं अधिक कठिन हो जायेगा। बिहार की घटनाओं ने युवकों के पक्ष को कमजोर किया है।

कुशल है कि वहां के युवकों में एक धारा प्रकट हो गयी है, जो शांति की शक्ति को समझती है। ऐसे युवकों को अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिये।

किसी समस्या के समाधान के लिए अगुआई छात्रों की हो या अन्य किसी की, आज की सामाजिक परिस्थिति में कोई समस्या ऐसी नहीं रह गयी है, जो समाज की सभी शक्तियों के सहयोग के बिना हल हो सके। शांतिपूर्ण क्रांति का यह मंत्र है। सहयोग की खोज में प्रसंग के अनुसार असहयोग क्या, अवज्ञा तक आवश्यक हो सकती है; किंतु अंतिम चिंता सहयोग की ही करनी होगी।

सहयोग के वृत्त के भीतर समाज के साथ-साथ सरकार भी आती है। ऐसा सहयोग दलबंदी का दिल और दिमाग रखने से नहीं प्राप्त किया जा सकता। न ही सरकार प्राप्त कर सकती है, और न विद्यार्थी। लेकिन यदि समाज सरकार को निरंकुश छोड़ देगा, तो उसे अपनी निष्क्रियता का दंड भोगना ही पड़ेगा।

शिक्षण विद्यार्थियों का विशेष क्षेत्र है। निकम्मा शिक्षण ग्रहण करने से इन्कार करने का उन्हें पूरा अधिकार है। मौजूदा शिक्षण सौ फीसदी निकम्मा है, इस प्रश्न पर अब देश में दो रायें नहीं रह गयी हैं। कोई भी सरकार विद्यार्थियों को इन विद्यालयों में, जहां विद्या का लय होता हो, रहने के लिए विवश नहीं कर सकती।

इसी तरह स्वतंत्र और निष्पक्ष बालिग मताधिकार है। इस अधिकार को सुरक्षित रखने की चिंता हर एक को होनी चाहिये। युवकों को सबसे अधिक; क्योंकि इसके साथ उनका पूरा भविष्य जुड़ा हुआ है।

[शेष पृष्ठ २७ पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युद्धरत देश केवल प्रहारों और धमकियों का ही आदान-प्रदान नहीं करते; कभी-कभी उनके बीच ऐसी चिट्ठियों का भी आदान-प्रदान होता है, जिनमें दर्द, सहानुभूति और समवेदना होती है। उदाहरण है, काहिरा, बेरूत और तेल अवीव के अखबारों में हाल में प्रकाशित दो पत्र, जो महाभारत के स्त्रीपर्व की याद दिलाते हैं। ये पत्र गत अक्टूबर के अरब-इस्रायल युद्ध के दौरान एक इस्रायली अध्यापिका और मिस्र के राष्ट्रपति की पत्नी ने एक दूसरे को लिखे थे और हरकारे का काम किया था अंतर-राष्ट्रीय रेड क्रास ने।

श्रीमती आर्फिया तोरेम उत्तर इस्रायल के बंदरगाह आकर में अध्यापिका हैं। उनका भाई एली किम्शे इस्रायली नौसेना में गोताखोर था और पोर्ट सईद के आक्रमण में मृत्यु को प्राप्त हुआ। श्रीमती तोरेम ने मिस्री राष्ट्रपति की पत्नी श्रीमती जिहान सआदत को पत्र लिखकर भाई के शव का पता लगाने में सहायता मांगी।

अध्यापिका तोरेम ने मिस्र की अग्रगण्य महिला को उस पत्र में लिखा था :

'हमारा परिवार इस युद्ध के छिड़ने तक एक सामान्य इस्रायली परिवार था। साथ ही हमारी मां अन्य सभी माताओं की तरह बहुत चिंतित थीं और मोर्चे से फोन-कॉल आने की व्यग्र प्रतीक्षा कर रही थीं और द्वार पर जब भी दस्तक होती, सहम जाती थीं। जिस बात का डर था, वह १९ अक्टूबर को हो ही गयी। खबर आयी कि आपका

खेत रहा हर जवान हमारा बेटा है

△ हरिशंकर △

बेटा एली किम्शे पोर्ट सईद में नौसेना की कमांडो-कार्रवाई में खो गया है।

'मेरे मायके में मानो उस दिन से समय अचल हो गया है। मेरे प्यारे माता-पिता अपने दुःख को छिपाने और इस समाचार को बहादुरी से झेलने की चेष्टा कर रहे हैं, हालांकि उनके हृदय शोक से आक्रांत हैं। मैंने उनसे बहुत कहा कि रोकर हृदय को जरा हल्का कर लें।'

अरबों से उनके परिवार ने कभी द्वेष नहीं किया था, यह बात बताते हुए श्रीमती तोरेम ने आगे लिखा है—'हम ऐसे परिवार में पले थे, जिसमें अरब-इस्रायली संघर्ष के मूल कारण निष्पक्षता से समझाये जाते थे। अरबों और यहूदियों की मिली-जुली बस्ती आकर के पुराने परिवारों में से एक होने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के कारण अक्सर हमें अरब घरों में निमंत्रित किया जाता और हमारे यहां अरब मेहमान आया करते। हमें सिखाया गया था कि मानव मात्र से प्रेम करो और दूसरों को समझने की कोशिश करो।

'मेरे पिताजी अरब मित्रों से घिरे हुए हैं। मेरे भाई के खो जाने की खबर का पता चलने पर आकर के काजी ने रमजान के अंत में मुसलमानों को सदा की भांति आशीर्वाद नहीं दिया। पिताजी से उन्होंने कहा कि एली के लापता हो जाने से मेरा हृदय आनंदशून्य है।'

श्रीमती तोरेम ने लिखा है कि उन्होंने अपने बाल-छात्रों को यही बताया था कि इस्रायली और अरब सैनिक इसलिए नहीं लड़े कि उन्हें आपस में द्वेष था; बल्कि इसलिए लड़े कि उन्हें लड़ने की आज्ञा दी गयी थी। अपने भाई के खो जाने के बाद भी क्लास में वे बच्चों को यही समझाती हैं; क्योंकि 'ये शब्द मेरी आत्मा के अंग हैं।'

श्रीमती जिहान सआदत ने श्रीमती तोरेम के पत्र का उत्तर देते हुए उन्हें सूचित किया कि उन्होंने एली किम्शे के बारे में पता लगाने की भरपूर कोशिश की। 'मुझे पता चला है कि हमारी सेनाएं एली का शव ढूंढ़ने में असफल रहीं, क्योंकि लहरें उसे दूर समुद्र मे बहा ले गयीं।'

गोताखोर एली किम्शे की मां के प्रति समवेदना प्रकट करते हुए श्रीमती सआदत ने लिखा—'अल्लाह से मेरी प्रार्थना है कि बेटे की मृत्यु के हर्जाने के रूप में वह ऐसा भविष्य दे, जिसमें वे शांतिपूर्वक जी सकें। आपकी मां के दर्द ने मेरे हृदय को गहराई से छुआ है—क्योंकि मैं भी मां हूं; क्योंकि मैं भी अपने देश में उन माता-पिताओं से मिली हूं, जिनके बेटे इस युद्ध में मारे गये हैं; और क्योंकि मैंने अस्पताल में अपने घायल बेटों की सेवा की है।

'युद्ध में असल में न कोई जीतता है, न कोई हारता है। क्षति दोनों पक्षों की होती है, दोनों पक्षों को भयंकर और दर्दनाक कीमत चुकानी पड़ती है। वह कीमत है—हजारों युवकों की बलि; माताओं, बहनों और पिताओं के हृदय का शोक और दुःख। एक भी युवक या एक भी बच्चे की मृत्यु से हमारे हृदय दर्द से विंध जाते हैं।'

श्रीमती सआदत ने पत्र में यह भी याद किया है कि युद्ध के प्रथम दिन ही उनका देवर, जो मिस्री सेना में पायलट अफसर था, मारा गया था, और लिखा है—'रमजान की दसवीं तारीख के युद्ध में खेत रहा हर जवान हमारा बेटा है, हमारे हृदय का टुकड़ा है।....मैं यह बात आपको और यह पत्र पढ़ने वाले हर किसी को हृदयंगम कराना चाहती हूं कि सच्ची, न्यायपूर्ण और स्थायी शांति के लिए हम जो-जो कदम उठा रहे हैं, ईमानदारी से उठा रहे हैं। हम नव-निर्माण और विकास करना चाहते हैं; हम चाहते हैं कि हमारी जनता सुखी परिवार और सुखी घर के स्वप्न को साकार कर पाये।'

परंतु मिस्री राष्ट्रपति की पत्नी अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पति और अपने देश की हिमायत करने से अपने को पूरी तरह बचा नहीं पायी हैं। पत्र में उन्होंने कहा है—'मेरे पति राष्ट्रपति, जिनके विषय में मैं अच्छी तरह जानती हूं कि वे प्रेमल और शांतिप्रेमी आदमी हैं, अक्सर कहा करते थे कि हम लड़कर अपनी विजित भूमि को मुक्त करा सकते हैं, परंतु हम लड़ना नहीं चाहते। हम युद्ध नहीं चाहते थे, हम शांति चाहते थे; इसलिए जब भी शांति का कोई मार्ग हमें दिखाई दिया, हम शांति के द्वार खटखटाते रहे।

'मगर मुझे दुःख है कि इस्रायल के शासकों ने, जो कि सेना-संघटन के कमांडर हैं, तमाम दरवाजों पर ताले जड़ दिये और अपने कान बंद कर लिये.....युद्ध हम पर थोपा गया, हम तो केवल शांति चाहते थे।

'शायद युद्ध का नतीजा इस्रायल के शासकों से यह मनवा सकेगा कि शांति जीवन का एकमात्र साधन है; पड़ोसीपन-भरे संबंध द्वेष और विनाश द्वारा नहीं पनपाये जा सकते; सुखी घर शासक और प्रजा का उद्देश्य होना चाहिये; ऐतिहासिक तर्क के विपरीत नहीं चला जा सकता; दूसरों के दुःख से अपने लिए सुख नहीं खरीदा जा सकता; दूसरों की जिंदगी छीनकर अपनी आजीविका नहीं जुटायी जा सकती।'

बेशक ये पंक्तियां प्रचार-भाषण की याद दिलाती हैं; लेकिन इस युद्ध से पूर्व इस्रायल का जो रवैया था, उसे याद करें, तो ये शब्द सर्वथा अर्थहीन और अप्रासंगिक भी नहीं हैं।

[पृष्ठ २७ का शेष]

लोकतंत्र की अंतिम शक्ति लोकशक्ति ही है। समाज की अन्य सभी शक्तियां उसका अंग हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि शिक्षण और लोकतंत्र के दो प्रश्नों पर वे लोकशक्ति को जगाने और उसे साथ लेने का प्रयत्न करें। इस प्रयत्न में पहला काम यह है कि गांव की ग्रामसभा, नगर में मुहल्ला-सभाएं, हर विद्यालय की विद्यालय सभा, तथा कार्यालय और कारखाने में अपनी अपनी सभाएं स्थापित हों, जो अपनी जगह आंतरिक जीवन के लिए जिम्मेदारी लें। ये इकाइयां संघटित होकर, एक होकर परिवर्तन की दिशा में पहल करें। जितना परिवर्तन स्वयं कर सकती हैं, करें। जहां आवश्यक हो, परिवर्तन के लिए सरकार पर दबाव डालें।

यह प्रश्न देश का होगा, देशव्यापी होगा, शांति के साथ होगा, संघटित होगा—न किसी दल का होगा, न जाति और वर्ग का होगा। इसमें शरीक होने के लिए सरकार को भी आमंत्रण होगा। यह देश की बात है। शांतिपूर्ण क्रांति की राह भी यही है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राचीनतम राजतंत्र की

संसार का एक प्राचीनतम साम्राज्य इन दिनों गंभीर राजनैतिक संकट में से गुजर रहा है। उत्तर-पूर्व अफ्रीका में स्थित इथियोपिया में इस वर्ष जनवरी-मार्च में सैनिक विद्रोह, मजदूर-हड़ताल, पादरियों की हड़ताल और छात्र-अध्यापक आंदोलन का सिलसिला चलता रहा।

इक्यासी वर्षीय सम्राट हेली सेलासी ने मार्च के दूसरे सप्ताह में एक बार स्थिति नियंत्रण में कर भी ली। उन्होंने मंत्रिमंडल बदल दिया; श्रमिकों, अध्यापकों व सैनिकों के वेतन में वृद्धि की घोषणा की; नये भूमि-सुधारों का आश्वासन दिया। किंतु मार्च के अंतिम सप्ताह में फिर सेना के एक हिस्से ने बगावत कर दी। अब तो यह आशंका होने लगी है कि सम्राट को अपनी जीवन-संध्या में अपदस्थता न भोगनी पड़ जाये।

बुढ़ापे में एकाकी वयोवृद्ध सम्राट सेलासी, जिन्होंने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं और जिनका दावा है कि वे पौराणिक राजा सालोमन और रानी शेबा के वंशधर हैं।

इथियोपिया अनेक कारणों से अनोखा देश है। आज तो वह संसार के अल्पतम विकसित २५ देशों में से एक है; लेकिन अतीत में उसने संपन्नता और वैभव के शिखर भी चूमे हैं। ईसा की दूसरी शताब्दी में अदन के जलमार्ग पर अधिकार करके वह अरब सागर और लाल सागर के रास्ते होने वाले समुद्री व्यापार पर छा गया था। चौथी सदी में उसने ईसाई धर्म अपनाया और इस्लाम के प्रचार के प्रबलतम दौर में भी ईसाई बना रहा। आज भी ईसाइयत उसका राजकीय धर्म है और वहां का ईसाई संप्रदाय काप्टिक चर्च कहलाता है।

असल में इस्लामी पड़ोसियों के बीच अपनी अस्मिता बनाये रखने के यत्न में ही तेरहवीं शती से लेकर सोलहवीं शती के आरंभ तक उसने स्वर्ण-युग देखा। इस अवधि में अम्हारी भाषा के साहित्य और कलाओं का विकास हुआ और यह विषमतल भूमि समृद्धि के नये धरातल पर पहुंची।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्याएं

*

कृष्णानंद

*

उसके पश्चात् की कहानी सांस्कृतिक जड़ता, आर्थिक ह्रास और राजनैतिक पराभव की ही कहानी है। विपदा का क्रूरतम प्रहार हुआ १८८० में, जब इटली ने इरिट्रिया प्रांत पर कब्जा कर लिया। १९३६ में इटली का इस प्राचीन देश पर कमोवेश अधिकार हो गया।

तब भी हेली सेलासी इथियोपिया (उन दिनों के अबीसीनिया) के सम्राट थे। अपने देश की मुक्ति के लिए उन्हें भागकर ब्रिटेन में शरण लेनी पड़ी थी। निर्वासन के उन दिनों में अपना खर्च चलाने के लिए उन्हें अपने साथ लाये हुए चांदी के बरतन तक नीलाम करने पड़े थे।

वस्तुतः इथियोपिया पर मुसोलिनी का आक्रमण द्वितीय महायुद्ध की पीठिका का हिस्सा था। इसी प्रकरण में ही लीग आफ नेशन्स की आंतरिक दुर्बलता जगजाहिर हुई। जो देश गरीब इथियोपिया पर हुए आक्रमण के खामोश तमाशबीन रहे, स्वयं उन्हें तीन ही वर्ष बाद धुरी राष्ट्रों के आक्रमण का सामना करना पड़ा। धुरी राष्ट्रों के कब्जे से सबसे पहले (१९४१ में) स्वतंत्र भी इथियोपिया ही हुआ।

निस्संदेह हेली सेलासी विश्व के सर्वाधिक संमानित शासकों में से हैं। ५८ वर्षों से वे राज्य कर रहे हैं। सन १९१६ में जब वे इथियोपिया के युवराज बने, तब रूस में जारशाही थी और लिंडन जान्सन (जो बाद में अमरीका के राष्ट्रपति बने) चौथी कक्षा के विद्यार्थी थे। युवराज का नाम रास ताफरी था और राजकाज महारानी जौदितु के नाम से चलता था। चौदह वर्ष बाद १९३० में महारानी जौदितु की मृत्यु के अनंतर वे हेली सेलासी नाम से सिंहासनारूढ़ हुए और अगले वर्ष उन्होंने इथियोपिया को पहला संविधान दिया और देश का क्रमिक आधुनिकीकरण आरंभ किया।

लेकिन आज के जमाने में ४३ वर्ष बहुत लंबी अवधि है। सन १९३१ में उदारवादी प्रतीत होने वाले सम्राट हेली सेलासी अब १९७४ के मध्यवर्गीय इथियोपियाइयों को अतिशय परंपरावादी, रूढिग्रस्त और दकियानूस प्रतीत होते हैं। यों सम्राट ने लोकदिखावे के लिए संसद और मंत्रिमंडल की व्यवस्था कर रखी है; लेकिन सबको पता है कि सारी सत्ता सम्राट और उन्हीं के अम्हारा कबीले के शक्तिशाली जमींदारों के हाथों में सिमटी हुई है।

जमींदारों के हाथों किसानों के शोषण का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

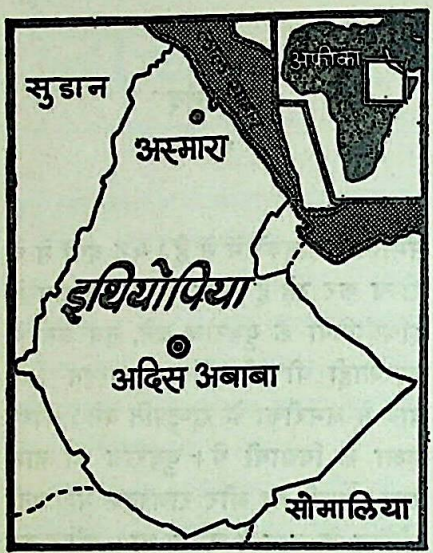

यह हाल है कि फसल का ८५ प्रतिशत तक वे हड़प लेते हैं। इन्हीं जमींदारों के बेटे-भतीजे सेना में अफसर नियुक्त होते हैं और भूमि-सुधारों की मांग का विरोध करने को हरदम तैयार रहते हैं।

भूमि-सुधारों की उपेक्षा का बड़ा बुरा फल इथियोपिया को भुगतना पड़ा है। अकाल तो वहां की वर्षचर्या का अंग हैं। पिछले साल भयानक अकाल के कारण उत्तरी प्रांतों में ५० हजार से अधिक नागरिक भूख से मर गये। विदेशी पत्रकारों ने तो मरने वालों की संख्या १० लाख तक आंकी है। चाहे पहली संख्या ही सच हो, तो भी कुल २ करोड़ ६० लाख की आबादी वाले देश के लिए यह बहुत बड़ी विपदा थी।

विपदा अभी खत्म नहीं हुई है। राजधानी अदिस अबाबा से ब्रिटिश संवाददाताओं ने आशंका प्रकट की है कि इस साल और भी भयानक अकाल पड़ेगा—विशेषत: गेमुगोफा, सिदामो, बेल और हर्रार आदि प्रांतों में, जहां करीबन २० लाख नागरिकों को अन्न-दान की आवश्यकता होगी। पिछले साल जिन तीन उत्तरी प्रांतों (शोआ, वाल्लो और तिगरे) में अकाल पड़ा था, उनके १० लाख नागरिकों के लिए खुराक जुटाना तो पहले से ही मुश्किल है।

परिस्थिति की विकटता का अंदाज गेमु-गोफा के छह गांवों के सर्वेक्षण से लग सकता है। उन गांवों में कुल ३९७ कुटुंब हैं। दिसंबर के अंत में इनमें से सिर्फ १५ के पास खाने के लिए अनाज था। खुद सरकारी सूत्रों के अनुसार इस साल करीबन २ लाख आदमी भुखमरी के शिकार हो सकते हैं, जबकि राहत-कार्यकर्ता ५ लाख तक की बात कर रहे हैं। इन इलाकों में अधिकांश गांव सड़कों से बीस-बीस मील दूर हैं; बरसात शुरू होने के बाद तो विदेशों से मिला अनाज वहां तक पहुंचाना कठिन हो जायेगा।

संकट सिर्फ अकाल का ही नहीं है, अर्थ-व्यवस्था की तरह ही राज्यव्यवस्था भी रोगग्रस्त ह। इथियोपिया अनेक कबीलों और बोलियों का देश ह। मध्यवर्ती प्रांत शोआ में ही करीबन ३० बोलियां बोली जाती हैं। अदिस अबाबा का नागरिक तो राजधानी से पचास या सौ मील दूर जाने पर विदेशी-जैसा मान लिया जाता है।

देश के मध्य में स्थित पठार के अम्हारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और गेला, उत्तरी पर्वत-क्षेत्रों के तिगरियन और इरिट्रिया के लोग अरबी तथा हिब्रू से मिलती-जुलती भाषाएं बोलते हैं। उनकी अपनी-अपनी लिपियां हैं। पूर्वी भागों में बसे डेनाकिल और ओगादेन की मरुभूमि के कबायलियों से उनका कोई साम्य नहीं, जो बकरी के दूध के साथ रक्त मिलाकर पीते हैं। दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिमी हिस्सों में नीग्रो-वंशीय शेंकाल्लोक रहते हैं, जो नस्ल तथा संस्कृति से केन्याई या सुडानी लगते हैं।

नाना नस्लों और संस्कृतियों की इस प्रजा को जोड़ने वाली एकमात्र शक्ति है सम्राट हेली सेलासी—'राजाधिराज, जूडा कबीले के विजयी सिंह और ईश्वर के प्रतिनिधि!' परंतु व्यवहार में इथियोपिया की सारी राजनैतिक-आर्थिक शक्ति अम्हारा लोगों के हाथों में सीमित है। वे ही ऊंची सरकारी नौकरियों पर पहुंचते हैं; वे ही बड़े भूस्वामी भी हैं। स्वाभाविकतया दूसरे लोगों में व्यापक असंतोष है, जो कभी भी राजतंत्र को संकट में डाल सकता है।

किसी हद तक संकट शुरू भी हो गया है। इरिट्रिया के छापामार अपने प्रदेश को इथियोपिया से स्वतंत्र कराने को लड़ रहे हैं। इधर पड़ोसी देश सोमालिया लगभग एक तिहाई इथियोपिया पर अपना अधिकार जतलाता है और सीमा-संघर्ष चलाता रहता है। ऐसी हालत में यदि कोई सम्राट यह भविष्यवाणी करे कि मेरी मृत्यु के बाद साम्राज्य विघटित हो जायेगा, तो उसे अहंमन्य या अंधविश्वासी तो नहीं कह सकते।

सम्राट वृद्धावस्था में एकाकी हो गये हैं। उनकी पत्नी और छह में से तीन बच्चे परलोक सिधार चुके हैं। सन १९६० में जब वे विदेश-यात्रा पर गये हुए थे, उनके पुत्र और उत्तराधिकारी अस्फा वोस्सेन ने बूढ़े पिता को अपदस्थ करके स्वयं शासक बनने का विफल प्रयास किया था। इस बार के विद्रोह में उनके पौत्र और नौसेना के कमांडर इस्कंदर देस्ता को गश्ती बोट में बैठकर 'फ्लैगशिप इथियोपिया' से भागना पड़ा, उसने एक फ्रांसीसी नौसैनिक जहाज में शरण ली।

देश का सामाजिक तंत्र भी भीतर से चरमराने लगा है। सम्राट के अतिरिक्त देश को जोड़ने वाला दूसरा बड़ा घटक है कॉप्टिक चर्च। लेकिन वह परिवर्तन और प्रगति का घोर विरोधी है। गिरजों की विशाल जमींदारियां हैं; इसलिए गिरजे भूमि-सुधारों के विरोधी हैं। (वैसे आम पादरियों की हालत खराब है और दो लाख पादरियों ने वेतन-वृद्धि के लिए हड़ताल की धमकी भी दी थी।)

इन कट्टरपंथी प्रवृत्तियों के बीच भी अब इथियोपिया में एक नये मध्यम वर्ग का उदय हुआ है, जो विचारों में अनुदारवादी होते हुए भी सामंतों, राजपरिवार के सदस्यों तथा चर्च के धर्माधिकारियों के हाथों में केंद्रित राजनैतिक-आर्थिक सत्ता में हिस्सा चाहता है। मार्च का सैनिक-विद्रोह इसी मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं का प्रतिफल था।

इस विद्रोह में सक्रिय भाग वरिष्ठ सैनिक अधिकारियों ने नहीं, अपितु कनिष्ठ सैनिक अधिकारियों ने लिया था। इन्होंने वेतन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृद्धि की मांग के पर्चे सेना में बांटे और कई वरिष्ठ अधिकारियों को गिरफ्तार भी कर लिया। इनमें से कुछ ने तो ब्रिटिश पत्रकार डेविड मार्टिन से मार्च में यह भी कहा था कि आवश्यकता पड़ने पर हम देश का शासन भी अपने हाथों में ले सकते हैं।

आमूल परिवर्तन के असली पक्षधर तो हैं इथियोपियाई छात्र। किंतु व्यापक अशिक्षा वाले उस देश में उनकी संख्या छोटी ही है। पूरे देश में सिर्फ एक विश्वविद्यालय है—अदिस अबाबा का हेली सेलासी विश्वविद्यालय। आंदोलनकारी छात्र राजतंत्र और काप्टिक चर्च दोनों से एक साथ मुक्ति का नारा लगाते हैं। लेकिन पढ़ाई पूरी होते ही उन्हें राजतंत्र के अंतर्गत कोई न कोई नौकरी करने की विवशता आ घेरती है और क्रांति की शब्दावली भूलकर वे स्थापित व्यवस्था के अंग बन जाते हैं। आज शांति और व्यवस्था का जिम्मा उठाने वाले कई युवा सरकारी कर्मचारी अभी कल तक विद्रोही छात्रनेता थे!

आंतरिक समस्याओं के बावजूद हेली सेलासी ने अपनी विदेश-नीति में काफी सफलता पायी है। वे अफ्रीकी एकता संघटन के अग्रणियों में से हैं। अपने देश को उन्होंने भरसक गुट-निरपेक्ष रखा है। बेशक उन्होंने अमरीका को केग्न्यू (अस्मारा) में एक बड़ा संचार-केंद्र खोलने की अनुमति दी और बदले में १५ करोड़ डालर की सामरिक सहायता ली है। लेकिन चीन से भी उनके संबंध अच्छे रहे हैं और चीन से इथियोपिया को ४ करोड़ डालर की सहायता मिली है। हां, रूस से विशेष सहायता नहीं मिली है। कुछ समय से अमरीकी सहायता में भी कटौती हो गयी है; क्योंकि अमरीका ने केग्न्यू के बजाय दियागो गार्सिया के संचार-केंद्र को अधिक उपयोगी पाया है। कहा जाता है कि विदेशी सहायता में यह कटौती भी सेना में असंतोष का एक कारण है। फिलहाल देश के बजट का करीबन ६० प्रतिशत प्रतिरक्षा पर खर्च होता है, जिससे आर्थिक विकास के लिए साधन रह हीन हीं जाते।

इस २३ जुलाई को सम्राट हेली सेलासी ८२ वर्ष के हो जायेंगे। लेकिन जीवन के इस अंतिम प्रहर में क्या वे अत्यावश्यक सुधारों की योजना क्रियान्वित कर पायेंगे? उनके देश का भविष्य इस प्रश्न के उत्तर पर ही निर्भर है।

*

प्रो. नील्स बोर कलकत्ता विश्वविद्यालय के साहा इंस्टिटयूट आफ न्यूक्लियर फिजिक्स के सभागार में भाषण दे रहे थे। प्रो. सत्येन बसु अध्यक्ष-पद पर आसीन थे और अपनी थकी आंखों को आराम देने के लिए उन्हें बंद करके बैठे हुए थे। देखने वालों को ऐसा लगता था कि वे सोये हुए हैं। बोलते-बोलते एक स्थल पर प्रो. बोर बोर्ड के सामने रुके और बोले—'शायद प्रो. बोस यहां मेरी मदद कर सकें।' फौरन सत्येन बसु ने उठकर गणित का वह मुद्दा समझाया और फिर बैठकर नेत्र मूंद लिये और समाधि साध ली। —रबीन बनर्जी ('सायंस टुडे' में)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन

प्रेमोपचार

लोगों के बीच काम करते हुए इन वर्षों में मैं इस बात को अधिकाधिक अनुभव करने लगी हूं कि किसी इंसान को जो सबसे भयंकर बीमारी हो सकती है, वह है—अवांछित होने की अनुभूति। अब कोढ़, तपेदिक आदि तमाम बीमारियों के लिए औषध और इलाज निकल आये हैं। मगर यह जो अवांछित होने की भयंकर बीमारी है, उसका इलाज मेरे खयाल से तब तक संभव नहीं, जब तक सेवा करने को तत्पर हाथ और प्यार करने को तत्पर हृदय न हों। —मदर टेरेसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृद्ध ने कहा

विलियम नेविल

ऐसा लगता था, मानो वसंत व शिशिर संग-संग चले जा रहे हों। वृद्ध अपने जीवन के अर्थ और अनुभवों की चर्चा कर रहा था। तरुण ने वृद्ध पर नजरें टिका दीं और कहा :

'आपका लगभग तीन चौथाई सदी का जीवन बड़ा भरा-पूरा रहा है। उसके बारे में मुझे बताइये, ताकि आपके अनुभवों से मैं भी कुछ सीख सकूं। मुझे मालूम है, अपने दिनों में आप बहुत घूमे हैं और अपने मन की हर मर्जी आपने पूरी की है।'

वृद्ध ने तरुण की ओर मुड़कर कहा :

'मैं बोलता जाऊंगा, तुम चाहो तो सुनो। मगर मुझे इसमें शक है कि तुम सुनोगे; क्योंकि शायद हर एक को अपने ही अनुभव से सीखना होता है, और शायद हर पीढ़ी को अपनी राह अलग से बनानी होती है।

'यह सच है कि मेरी जिंदगी भरी-पूरी रही है; पर उसमें मेरे पिता की नसीहतें भी भरी थीं, जो मैंने अनसुनी कर दीं। अव्वल, मेरी जिंदगी चुनौतियों से भरी रही है, और उन चुनौतियों के अर्थ को पूरी तरह समझ पाने से पहले कई बार मैं उनके बोझ-तले कराहा भी हूं।

'मगर हर बार मुझे अपने भीतर कोई आवाज यह कहती सुनाई दी—"जिस अनुभव में से तुम गुजर रहे हो, वह जरूरी है। तुम्हें सामना करना चाहिये, तुम्हें इस समस्या को सुलझाना चाहिये, ताकि जीवन-पथ पर अग्रसर होते हुए तुम फल-फूल सको। विश्वास रखो कि जितना तुम झेल सकते हो, उससे ज्यादा तुम्हें मैं कभी नहीं दूंगा; इसलिए हर अवस्था में गहरी नजर से अच्छाई को तलाशो।" और तब मैंने देखा, जब वह सब गुजर चुका, तो मैं पहले से ज्यादा मजबूत और समझदार बन गया था।

'मगर और भी चुनौतियां आयीं और कई तो मुझे एकदम असहनीय जान पड़ीं। कई बार मैं रो उठा—"हे पिता, यह प्याला टल जाने दो।" मगर जवाब मिला—"यह जरूरी है कि तुम इस कड़वे लगने वाले अनुभव में से गुजरो, ताकि नये जीवन में तुम्हारा पुनरुत्थान हो। तब तुम जीवन की एकात्मता अनुभव करोगे।"

'इस तरह मेरा जीवन आलोक से भर गया। मैं समस्त जीवन का असली अर्थ और सामंजस्य देखने-समझने लगा। और तब मैंने जाना कि जीवन पूर्ण हो, इसके लिए आवश्यक है कि वह साथी मानवों के प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेम से परिपूर्ण हो। सो मैंने फौरन अपने गरजमंद भाई की ओर हाथ बढ़ाया और इसके द्वारा मैंने उसे यह अनुभूति करायी कि वह भी समस्त जीवन के परम स्रष्टा का प्यारा बेटा है।

'इस तरह प्राप्त आनंद से जब मेरा भाई मुस्करा उठा, तो उसका आनंद मेरी आत्मा में विकीर्ण हो उठा और मैं प्रसन्न हो गया।

'और तब मैं बोल उठा—"हर चुनौती का सामना करने में मुझे जो कष्टकारी श्रम करना पड़ा और जीवन में मैंने जो भी अभाव और निषेध अनुभव किये थे, वे सब मेरी चेतना से धुल-पुंछ गये हैं।"

'तब से मेरी आत्मा चमकते आलोक से भर गयी है, जो कि इस निजी ज्ञान से उपजा है कि परमात्मा अपने सब बच्चों से प्यार करता है। यह प्रेम मुझमें काम कर रहा है और समस्त मानव-बंधुओं के प्रति बह रहा है।

'इस तरह मेरा हृदय एक आनंद से भर उठा, जो परमात्मा और अपने मानव-बंधुओं को समर्पित मेरी आध्यात्मिक सेवा का परिणाम था। मेरी काया से वह पूर्णता चमकने लगी और दुःख-शोक सदा के लिए मिट गये। इससे उपजे आनंद में निर्दोष

काया, निर्दोष मन और निर्दोष आत्मा प्रकट हुई। हां, मेरा जीवन परिपूर्ण रहा है।

'और तब कहीं जाकर मैं यह समझ पाया कि जीवन कभी समाप्त नहीं होता। यही शाश्वत जीवन की परिपूर्णता है, जिसका आदि नहीं, अंत नहीं। यह है मेरे जीवन की सच्ची कहानी।

'मगर तुम अपने जीवन को मेरे जीवन के नक्शे पर नहीं गढ़ सकते; क्योंकि तुम्हें अपनी आत्मा को इसकी छूट देनी होगी कि वह तुम्हें अपने जीवन के पूर्णत्व पर पहुंचाये।

'पहले अपने भीतर गहरे छिपे समस्त निषेध और अभाव को धो डालो, फिर शांति से सुनो। तुम भी पूर्ण जीवन का अनुभव पाना सीख जाओगे।'

('प्रोग्रेस' से 'मीरा' में उद्धृत)

❀

* असली विवेक उसे जानने में है, जो सर्वाधिक ज्ञातव्य है, और उसे करने में जो सर्वाधिक करणीय है।
—लारेल हंफ्री

* सयाने आदमी को जितने अवसर मिलते हैं, उनसे अधिक तो वह स्वयं निर्माण कर लेता है।
—फ्रांसिस बेकन

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

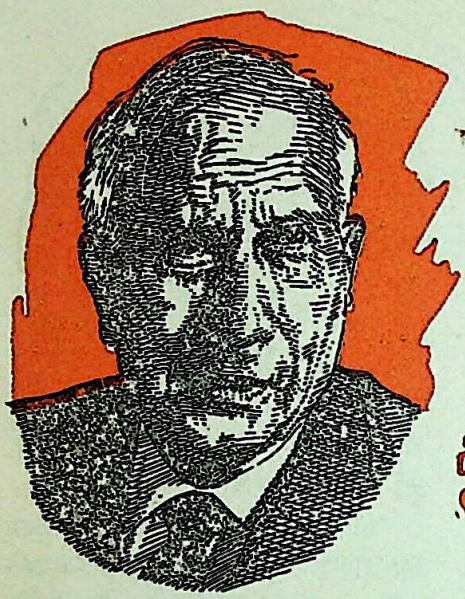

विरला इंस्टिटयूट पिलानी के छात्रों के समक्ष दिये गये एक भाषण का सार

घनश्यामदास विरला

मेरे युवा मित्रो!

मैं आज के लड़कों की 'इम्पेशेन्स' (अधैर्य) को समझ सकता हूं; क्योंकि यह युवकों का गुण है, अवगुण नहीं। जहां धीरज ज्यादा हुआ, वहां काम रुक जाता है। इसलिए आप लोग परेशान हो जाते हैं और धीरज खो बैठते हैं, यह कोई बुरी बात नहीं है। क्योंकि जब आप नयी जिंदगी में कदम रखेंगे यहां से निकलने के बाद, तो आपके सामने ऐसी परिस्थितियां आयेंगी कि आज आप लोग जिस भाषा में बोलते हैं, वैसे ही दूसरे लोग आपसे बोलेंगे।

घर में जायेंगे, कमाने की चिंता करेंगे, शादी होगी, तो बीवी को देखना पड़ेगा, मां-बाप को भी देखना पड़ेगा और बीवी की दस बातें सुननी पड़ेंगी। ऐसा मत समझना कि सबका संतोष आप कर सकेंगे।

लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि पढ़ाई का जो समय आपको अब मिला है, वह आगे कभी मिलने वाला नहीं है। इसलिए इस बुनियाद को मजबूत बनाइये।

यह मैं मानता हूं कि अच्छी शिक्षा और अच्छी बुनियाद छात्रों पर और अध्यापकों पर निर्भर है। अच्छे अध्यापक जुटाने में तनख्वाह का सवाल नहीं है। खर्चे का भी सवाल नहीं है। सवाल है आदमियों का। आप जानते हैं कि बहुत-सी चीजें दुकान पर मिलती हैं; मगर आदमी दुकान पर नहीं मिलते।

मुझे आपके वर्तमान की चिंता है और आपके भविष्य की चिंता है। इसलिए उस संबंध में मैं कुछ थोड़ी-सी बातें—आगे आपका जो जीवन होगा, उसमें आप कैसे चलेंगे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अपना अनुभव भी बता देना चाहता हूं।

जो जीवन और जो दुनिया मेरे जैसे पुराने आदमियों ने देखी है, वह आपको नहीं मिलने वाली है। संसार बदल गया, जमाना बदल गया; किंतु कुछ साधारण नियम ऐसे हैं, जो सब समय और हर एक स्थिति में लागू होते हैं।

मान लीजिये कि आपमें से कुछ लोग बड़े कारखाने के अधिकारी बनेंगे। आपके घर में भी एक तरह की डेमॉक्रेसी है। अगर कुटुंब में दस आदमी हों, तो दस एक विचार के नहीं होते। जिसे 'आर्ट ऑफ कॉम्प्रोमाइज़' कहते हैं, वह आपको सीखना पड़ेगा। 'आर्ट ऑफ कॉम्प्रोमाइज़' यानी समझौते के ये मानी नहीं कि आप सिद्धांत के मामले में समझौता करें। 'कॉम्प्रोमाइज़' के मानी यह हैं कि आपको दिल्ली जाना है तो आप दादरी होकर जाना चाहते हैं या कि रोहतक होकर जायेंगे—इस संबंध में आपको अपने साथियों से मशविरा करके निश्चय करना पड़ेगा। ऐसी बातों में 'कॉम्प्रोमाइज़' नहीं करेंगे, तो काम बिगड़ेगा।

इस मुल्क में टीम-वर्क नहीं है। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि टीम का सही पर्यायवाची हमारी भाषा में है ही नहीं। हमारा प्राचीन जीवन 'इंडिविज्वलिस्टिक' अर्थात् व्यक्तिगत रहा है। हमें टीम-वर्क की जरूरत ही नहीं पड़ी। किंतु इस जमाने में जब हम उन्नति करना चाहते हैं, तो आपको टीम-वर्क की जरूरत पड़ेगी।

मैं कारखाने चलाता हूं और सफलता के साथ चलाता हूं। किंतु अगर मुझसे कोई यह पूछे कि इसकी सफलता का श्रेय किसे है; तो मैं कहूंगा कि इसकी सफलता का श्रेय मुझे नहीं, हमारी टीम को है। हमारे जो अफसर हैं, उन्हें मैं सदा यही सिखाता हूं कि जैसे फुटबाल में टीम होती है, उस तरह से एक टीम बनकर एक दूसरे से मिलकर काम करो।

यह कभी संभव नहीं कि दस आदमियों के स्वभाव एक-से हों। स्वभाव अलग-अलग होते हैं। आपके घर में भी स्वभाव अलग-अलग होंगे। आप शादी करेंगे तो पायेंगे कि बीवी का स्वभाव अलग और आपका स्वभाव अलग। तो आपको कुछ समझौता (कॉम्प्रोमाइज़) करना ही होगा—वह यह कि सब मिल-जुलकर काम करें। जहां 'कॉम्प्रोमाइज़' की बात आयी, उसके बाद फिर टीम-वर्क की बात अपने-आप आ जाती है।

एक बात और मैं अपने अनुभव से कहता हूं कि बुद्धिमत्ता (इन्टेलिजेन्स) और कार्य-क्षमता (एफिशेन्सी) इन सबकी कीमत है; लेकिन सबसे बड़ी कीमत जो है, वह कैरेक्टर यानी चरित्र की है। बड़ा आदमी इसलिए नहीं बनता है कि वह बड़े ओहदे पर है, या बड़ा राजनीतिज्ञ है, या उसके पास बहुत धन है। बड़ा आदमी वह है, जो बड़ी अच्छाई करता है।

आप यह ध्यान रखियेगा कि सफलता की कुंजी ईमानदारी (ऑनेस्टी) में है, 'एफिशेन्सी' में नहीं है। बुद्धिमत्ता चाहिये, कार्य-क्षमता चाहिये; किंतु अंत में आपका जो सिक्का जमेगा, वह आपके कैरेक्टर (चरित्र)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के कारण जमेगा। यह सब बात ध्यान में रखकर आप अपना कदम आगे बढ़ाइये। ईश्वर आपको अवश्य सफलता देगा।

अधीर (इम्पेशेन्ट) मत बनें। अपने स्वभाव में गुस्से को मत लायें। किसी से भी दलील कर रहे हों और किसी को गुस्सा आता हो, तो हंसें और यह समझें कि बड़ा मूर्ख मालूम होता है, जो गुस्सा करता है! क्योंकि अगर आप गुस्सा करेंगे, तो आप अपना स्वभाव खो बैठेंगे और सफलता नहीं मिलेगी।

बर्नार्ड शा का नाम आपने सुना ही है—बड़ा भारी लेखक, नाटककार था। उसका एक बड़ा प्रख्यात नाटक स्टेज पर आया। हजारों आदमियों की भीड़ थी। और जिन्होंने देखा, उन्होंने भारी कद्रदानी की, तालियां बजायीं और शाबाशी के नारे लगाये और कहा कि शा साहब को स्टेज पर आकर हमारी बधाई स्वीकार करनी चाहिये।

बर्नार्ड शा जब स्टेज पर पहुंचा, बड़े जोर से शाउटिंग हुई, बड़े जोर से तालियां बजीं, बड़े जोर से वाह-वाही मिली। किंतु एक आदमी खड़ा होकर बोला कि किस चीज की वाह-वाही देते हो? यह तो 'बफून' है, भांड है, महामूर्ख है। इसका खेल किसी काम का नहीं है।

तब बर्नार्ड शा चुपके-से बोला कि हां भाई, जो तुम कहते हो, वह सब सच है; किंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि दस हजार के मजमे में तुम और मैं दो ही ऐसे हैं, जो ऐसा सोचते हैं, बहुमत हमारे खिलाफ है। शा ने गुस्सा नहीं किया। बड़े आदमी इसी तरह से कुछ 'विट' (विनोद-भाव) रखते हैं। आलोचना भी होती है, तो उन पर तो अच्छा ही प्रभाव पड़ता है।

हमारे यहां पंडित जवाहरलालजी आये थे। मैंने कहा कि पंडितजी, हम आपका जुलूस निकालना चाहते हैं शहर में से। मोटर से निकालें या घोड़ों पर? (मैं जानता था कि वे घोड़े पसंद करेंगे, क्योंकि वे घोड़ों के शौकीन थे।) उन्होंने कहा कि घोड़ों पर। दस-बारह घोड़े थे। एक अच्छी घोड़ी थी। उस पर मैंने उन्हें चढ़ाया, एक पर मैं भी चढ़ा और शहर से निकलने लगे। जोर-जोर से फूल फेंके जाने लगे और जोर-जोर से तालियां शुरू हुईं।

वह घोड़ी, जिस पर पंडितजी सवार थे, जरा तेज थी। वह चमकने लगी, तो मुझे डर हुआ कि यह घोड़ी भड़क गयी है, कहीं पंडितजी गिर न जायें। और कहीं गिरेंगे तो उन्हीं को चिंता होगी; पर यहां गिरेंगे तो मुझे चिंता होगी। मैंने जोर से चिल्लाकर कहा कि पंडितजी, जरा संभलकर रहियेगा, घोड़ी भड़कती है। इस पर पंडितजी ने बड़े चुपके-से जवाब दिया—'भाई साहब! घोड़ी क्या, जब इतना मजमा इकट्ठा होकर वाह-वाही करता है और फूल फेंकता है, तो आदमी भी भड़क उठता है। यह तो घोड़ी है।'

मैं बताना यह चाहता हूं कि बड़े आदमियों का 'सेंस आफ ह्यूमर' कैसा होता है। शाम को हमारी बड़ी मीटिंग हुई—बीस-पचीस हजार आदमी थे। हमारे पांडेजी खड़े होकर माइक से चिल्लाकर कहने लगे कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'भाइयो, बैठ जाओ, बैठ जाओ, बैठ जाओ, बैठ जाओ।' लेकिन लोग सुनने तो नहीं आये थे, दर्शन करने आये थ। कोई बैठा ही नहीं। पांच-छह दफा पांडेजी कह गये कि 'भाइयो, बैठ जाओ, बैठ जाओ!'

पंडितजी ने खड़े होकर कहा—'पांडेजी आप बैठ जाइये, नहीं तो आपका गला बैठ जायेगा।' सब लोग हंसने लगे और फौरन बैठ गये।

मैं कहना यह चाहता हूं कि जब कोई गुस्सा करे, तो आपमें 'सेंस आफ ह्यूमर' होना चाहिये और आपको मन में यह सोचना चाहिये कि यह कैसा बेवकूफ है, जो गुस्सा कर रहा है! हम तो बेवकूफ नहीं हैं।

मैं सारी दुनिया में घूमा हूं। आदमियों से मिला हूं। हमारे मुल्क के आदमियों में जितना दिमाग है, जितनी समझ है, जितनी शांति है, वह मैंने कहीं नहीं देखी। यूरोप, अमरीका में बेवकूफ ज्यादा हैं हम लोगों से। पैसे उनके पास हमसे ज्यादा हैं, तो कोई बात नहीं।

मेरा पौत्र आदित्य विक्रम एम. आई. टी. से डिग्री लेकर आया, तो मैंने उससे पूछा कि तुम्हारा अमरीकी छात्रों के बारे में क्या 'इम्प्रेशन' है? उसने कहा कि दिमाग में हमारे लड़के सबको 'बीट' करते हैं और गणित में हमारे लड़के बहुत तेज हैं। लेकिन 'जनरल नॉलेज' में हमारे लड़के कमजोर हैं।

इसका कारण यह है कि आप खाली टेक्स्ट बुक की तरफ ही देखते हैं। टेक्स्ट बुक के अलावा भी आपको जानना चाहिये कि दुनिया कहां जा रही है। खैर, ये तो मामूली बातें हैं।

मेरे पास कुछ नाम आये थे भारतीय प्रोफेसरों के, जो अमरीका में हैं। मैंने अपने आदमी को लिखा कि इनसे जरा पूछना भारत में आते हों तो? आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा, उन्होंने कहा कि हमें जाना ही नहीं, यहां आराम से बैठे हैं। लेकिन यह तो गलती है। अदूरदर्शिता है। मैं साल में दो मर्तबा यूरोप जाता हूं और बराबर कहता हूं कि 'नथिंग लाइक इंडिया'। इस मुल्क में जैसा आराम, जैसा दिमाग, जैसी भलमनसाहत, जैसी भाई-बिरादरी है, वैसी कहीं नहीं है।

आपका यह सौभाग्य है कि आप इस मुल्क में पैदा हुए। इसलिए यहां पर आप अच्छी तरह से अपनी नींव जमाइये।

अपने यहां जो उपनिषद् हैं, उनमें एक मंत्र है:

युवा स्यात् साधु। युवाध्यायकः।
आशिष्ठो दृढिष्ठो बलिष्ठः।
तस्येयं पृथिवी सर्ववित्तस्य पूर्णा स्यात्॥

'युवा स्यात् साधु'—जवान आदमियों को चाहिये कि वे अपना चरित्र बनायें। 'युवाध्यायकः'—जवान आदमियों को चाहिये कि वे खूब पढ़ें। 'आशिष्ठो'—आशावादी हों, पेसिमिस्ट न हों, पूरे आप्टिमिस्ट हों, 'दृढिष्ठो'—यानी दृढ़निश्चयी हों, और 'बलिष्ठः'—'विगरस' हों। ये सब अगर हों तो कहते हैं, 'पृथ्वी सर्ववित्तस्य पूर्णा स्यात्'—अर्थात् पृथ्वी का सारा धन आपकी हाजिरी देगा।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह सुर सदा याद रहेगा

•रवि बसु•

कई वर्ष पहले की बात है। बड़े गुलाम अली खां के देहावसान पर मर्माहत अमीर खां ने शोकविह्वल स्वर में कहा था—'सुर के अंतिम सम्राट चले गये।' इसके जवाब में बड़े गुलाम अली के सुयोग्य पुत्र मुनव्वर खां ने कहा था—'लेकिन हिन्दुस्तान में अभी भी एक बादशाह हैं—शेर अमीर खां। हम लोग उनकी ओर ही देख रहे हैं।

सुर के वही बादशाह अकस्मात्, अत्यंत मर्मांतक तरीके से सुर-जगत में एक विराट शून्य की सृष्टि करके चले गये। सिर्फ ६२ वर्ष की उम्र में उनका जीवनांत हुआ। वह भी साधारण रूप से नहीं, एक मोटर-दुर्घटना में। दुःख इसलिए और भी गंभीर रूप से बींध रहा है।

अब कभी किसी उत्सव में या बैठक में अमीर खां का स्वर उनके प्रिय राग मारवा, मुलतानी, दरबारी कानड़ा, शुद्ध कल्याण, ललित अथवा कलाश्री, बैरागी भैरव या स्वयंरचित चंद्रमधुर (चंद्रकोश और मधुकोश का मिश्रण) रागों में नहीं सुना जा सकेगा।

इंदौर घराने के इस कलाकार को कलकत्ता से बहुत प्यार था। कोई जलसा हो या नहीं, अक्सर कलकत्ता आते रहते थे। इसी कलकत्ता में १९४२ में आल बंगाल म्यूजिक कान्फरेंस में गाकर उन्होंने प्रथम श्रेणी के कलाकारों में अपना स्थान बनाया था। इसी कलकत्ता में ही उन्होंने रेडियो के लिए प्रथम बार गाया था, इसी कलकत्ता में १९७४ की १४ फरवरी को उन्होंने अंतिम श्वास लिया।

सन १९१२ के अप्रैल महीने में इंदौर राज्य में अमीर खां का जन्म हुआ था। कहते हैं, उन्होंने किसी की विधिवत् शागिर्दी नहीं की यानी किसी से गंडा नहीं बंधवाया। उनकी शिक्षा मुख्यतः उनके पिता शमीर खां के पास हुई। शमीर खां उर्फ शम्भू थे नामी बीनकार और सारंगिये। अमीर खां के पितामह छंगे खां गवैया थे; इंदौर घराने के स्रष्टा के रूप में उनका नाम लिया जाता है। अतः अमीर खां भी इंदौर घराने के कलाकार हुए। कई लोग उन्हें किराना घराने के कलाकार कहते-मानते हैं। एक ही कलाकार को दो घरानों का मानने का कारण? इसका भी एक इतिहास है।

किराना घराने की प्रथम शाखा के प्रवर्तक थे अब्दुल करीम खां और उनके भानजे अब्दुल वहीद खां। इन्हीं वहीद खां साहब के चरणों में बैठकर संगीत-शिक्षा लेना चाहते थे अमीर खां। लेकिन कारण चाहे जो भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो, वहीद खां ने इनकी ओर ध्यान नहीं दिया। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है, वहीद खां की क्लास में अमीर खां सारे समय घुटने मोड़कर बैठे रहते। एक शब्द न बोलते, चुपचाप रियाज सुनते रहते। दूसरों को जो सिखाया जाता, उसे सुनते। खां साहब अपने शागिर्दों से कहते—'बेटा यहां से चीजें मारकर ले तो जाना चाहता है, लेकिन बच्चू को यह नहीं पता कि इन चीजों को गले में बैठाने में जीभ बाहर निकल आयेगी।' लेकिन उनका अंदाज गलत निकला।

वहीद खां के अंतिम दिनों की घटना है। उस दिन रेडियो पर मुलतानी राग का खयाल चल रहा था। शय्यारूढ़ खां साहब सुनते-सुनते हठात् चिल्ला उठे—'मेरी जवानी के दिनों का गाना इन्हें कहां से मिला ?' गाने के अंत में गायक के नाम की घोषणा हुई—अमीर खां। विस्मय से आर्तनाद-सा करते वहीं वे बोल उठे—'तुम सब मेरे फालतू चेले हो। असल शागिर्द वह गा रहा है, सुनो! सबको पीछे छोड़ आखिर में वही आगे निकल गया, तुम लोगों में से कोई भी उसे पिछाड़ नहीं पाया।'

लेकिन घरानों के विषय में स्वयं अमीर खां क्या सोचते थे ? एक बार एक संगीत-संमेलन में उन्हें विभिन्न घरानों की विशिष्टता एवं उसके प्रभाव के संबंध में बोलने को आमंत्रित किया गया। वहां उन्होंने जो कुछ कहा, उसका सार यह है—कलाकार में आत्मसमीक्षा, संगीत-चेतना और विरामहीन अनुशीलन का तत्त्व जितना अधिक होगा, समय बीतने के साथ उतना ही उस कलाकार की गंडे की संकीर्णता का ह्रास होगा। क्रमेण वह अपनी कुलपरंपरा या गुरुपरंपरा से प्राप्त 'फार्म' के प्रभाव का अतिक्रम करके अर्जित ज्ञानलब्ध संपदा से अपनी 'स्टाइल' गढ़ेगा। अंत में वह खुद ही अपने घराने की सृष्टि करेगा। वस्तुतः प्रज्ञा और परिणति ही कलाकारों का काम्य है, किसी विशेष प्रकार के अभ्यास या 'कल्चरल मैनरिज्म' के प्रति वफादारी या आसक्ति नहीं। यह तो सर्वविदित सत्य है कि दासत्व से मुक्ति ही कला का लक्ष्य है।

जाहिर है, अमीर खां के ये विचार बहुतों को खुश नहीं कर पाये; लेकिन इस चिंतन की वास्तविकता को नकारना भी असंभव है।

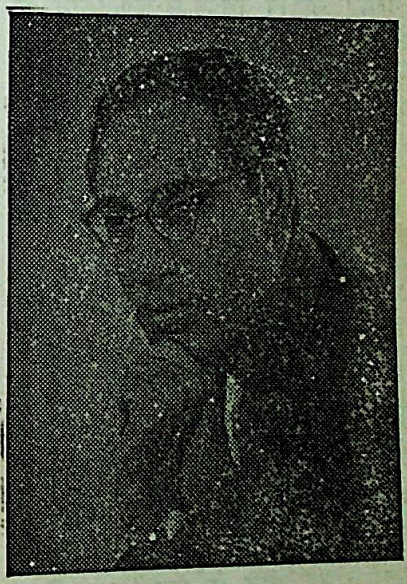

स्व. उस्ताद अमीर खां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमीर खां किसी जलसे में ठुमरी नहीं गाते थे। इसे लेकर बहुतों को शिकायत है। इसका कारण पूछने पर वे कहते—'पब्लिक परफॉरमेन्स में मैं ठुमरी नहीं गाता। इसके अलावा ठुमरी गाने का अलग से कोई प्रयोजन है, ऐसा मैं नहीं समझता। कारण, ठुमरी की विशेषता सूक्ष्म मींड़, जटिल सरगम और लीलामय पदक्षेप इन सबका खयाल में प्रयोग होता ही है।'

वे कहते—'दुनिया के शेष सब रसों को हल्की नजर से देखने की बात मुझे अच्छी नहीं लगती। शृंगार रस की चपलता को आदमी इतना क्यों महत्त्व दे! आनंद का अर्थ सिर्फ उत्तेजना, उन्माद, इक्सॉटिक फन तो नहीं है।..... श्रीकृष्ण जैसे एक महान विश्व-पुरुष! उन्होंने बचपन में कब किसी का आंचल पकड़कर खींचा है या नहीं, पत्थर मारकर किसकी कलसी फोड़ी, किसकी आंखों में रंग-गुलाल डाला है—इन सबको लेकर ही गानों की धूम है। मुझे तो लगता है कि इससे हम योगेश्वर कृष्ण के नाम का अगौ-रव करते हैं।'

इसी प्रसंग में बड़े गुलाम अली खां साहब की बात उठी थी। अमीर खां अफसोस प्रकट करते हुए बोले—'जिसके गोदाम में हीरे-जवाहरात ठसाठस भरे हुए हैं, उससे हम चार चमकीले रंगीन पत्थर और झूठे मोती लेकर ही नाचते रहे हैं। उनका खयाल सुन-कर पत्थर पिघल जाता है, फिर भी सब सिर्फ नाजुक चीज ही सुनना चाहते हैं।'

इसी सिलसिले में इन दोनों कलाकारों में एक बार जो बातचीत हुई थी, वह भी उल्लेखनीय है। अमीर खां ने थोड़ा दुःखित होकर ही मुझे सुनाया था—'मैं ठुमरी नहीं गाता यह जानकर भी खां साहब बार-बार कहने लगे—"जो ठुमरी नहीं गाता है, उसके खयाल में जान नहीं...।" मैं पहले चुप रहा, फिर सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। अंत में समय देखकर मैंने उनसे कहा—"हुजूर, गुस्ताखी माफ करें। आप हिन्दुस्तान के सिंह हैं, आपकी आवाज से पशु-पक्षी तक मुग्ध हो जाते हैं। असली बात तो यह है कि जो आपकी तरह सिद्ध नहीं हुए हैं, वे भी जब आपका अनुकरण करके 'बाई ठुमरी' गाते हैं, तब गाने-बजाने का भविष्य सोचकर मैं कांप उठता हूं...।" गुलाम अली चुप रह गये, फिर मेरा हाथ पकड़कर बोले—"तुमने ठीक ही कहा है।"...'

अमीर खां के खयाल का ध्यान-गंभीर रूप सहज ही भूलने वाला नहीं। उनकी गायकी में करुण रस और शांत-वैराग्य का प्रभाव अधिक था। विषादघन रागों के प्रति उनका पक्षपात था। कोई जल्दबाजी नहीं, आराम से, काफी आराम से राग का रूप उद्घाटित होता है। वे अपने गानों के संबंध में पर्वता-रोहण की उपमा देते थे। वे कहते थे—'पहाड़ पर चढ़ने के लिए धीरज चाहिये और निरंतर चढ़ते रहना चाहिये। ठहरते ही पांव फिसल जायेंगे। दौड़कर चढ़ने पर लुढ़क जाओगे। जिन्होंने तुम्हारी दौड़ देखकर ताली बजायी थी, वे ही तुम्हारा असहाय पतन देख तालियां बजायेंगे व कहेंगे—बेटा, करामात दिखा रहे

● 'देश' से साभार ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे! उससे अच्छा तो आओ न, पहाड़ पर ही चढ़ें। कष्ट है, लेकिन आनंद भी तो अफुरंत है। तुम आनंद पाओ और मुग्ध होओ। तुम्हारे पास उस आनंद की खबर पूछने सब आयेंगे। तुम्हारी आंखों में मुग्धता की तस्वीर देखकर सब उसमें हिस्सा बंटाना चाहेंगे।'

विशुद्ध रस की सृष्टि करने से श्रोता उसे पसंद न कर पायेंगे, इस भय से मिश्रित या सस्ती चीज देने की कोशिश अमीर खां को पसंद नहीं थी। उनके गानों की 'फिलासफी' अलग थी। वे कहते—'मैं खुद को जानना चाहता हूं। उस जानने का नाम आनंद है। मैं उसी का हिस्सा श्रोताओं को देना चाहता हूं। लोगों के मनोरंजन की इच्छा मिटाने के लिए मैं सस्ती चीज लेकर नीचे क्यों उतरूं? जरूरत होने पर उन्हें हाथ पकड़कर ऊपर खींच लूंगा.....संगीत कोई अमीर खां के बाप की दौलत तो नहीं, यह तो सबका खजाना है।'

आजीवन इसी की तो साधना की अमीर खां साहब ने। उनमें अहंकार नाममात्र को नहीं था। छोटा हो या बड़ा, हर कलाकार के लिए उनमें अगाध स्नेह और आदर था। रेडियो पर गाना बज रहा है। कोई साधारण-सा गायक है। 'बेसुरा' समझकर किसी ने बंद कर दिया, तो चट-से बिगड़ पड़े—'यह क्या! एक आदमी गा रहा है। ठीक हो, गलत हो, अच्छा लगे, बुरा लगे, तुम अंत तक सुनोगे नहीं? इतना अधैर्य क्यों? अच्छा ठीक है, जरा विश्लेषण करके बताओ तो कि वह कहां गलत गा रहा है? सावधान रहो, तुमसे भी कहीं यहीं भूल न हो। गलत नहीं सुनोगे, तो आत्मसमीक्षा का भाव कैसे जागेगा! हर क्षण अपने आपको न सुधारने पर कोई दक्ष कलाकार नहीं हो सकता।'

यह उनका उपदेश नहीं, उपलब्धि थी।

एक बार एक संमेलन में तय हुआ था कि खां साहब विहाग गायेंगे। वहां आकर उन्होंने देखा कि एक छोटी लड़की विहाग-खमाज बजा रही है। खां साहब ने राग बदल दिया, बोले—'न, उस छोटी कलाकार के राग का "इफेक्ट" नष्ट करना ठीक नहीं होगा। मैं पूरिया कल्याण गाऊंगा।'

कलाकार के रूप में ही नहीं, मनुष्य के रूप में भी वे कितने बड़े थे, यह इस छोटी घटना से समझा जा सकता है। इसीलिए उनकी मृत्यु पर हम सिर्फ एक बड़े कलाकार का नहीं, विशाल हृदय वाले एक महान व्यक्ति का अभाव सर्वांतःकरण से अनुभव करते हैं।

मृत्यु के संबंध में एक बार बात हो रही थी। अमीर खां ने अपनी नब्ज पकड़कर कहा—'मौत, यानी यहां लय रुक जाती है...' और सीने पर हाथ मारकर बोले थे—'यहां से सुर छूट जाता है—इतना ही न?'

अर्थात् हृदय में सुर नहीं, नाड़ी में छंद नहीं, इसी का नाम तो मृत्यु है।

सुर के बादशाह को वह मृत्यु कभी स्पर्श नहीं कर पायेगी। कलाकार अमीर खां अमर हैं।

बंगला से अनुवाद : सुरेश सिन्हा

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर मजदूर की पगार

शरद कारखानीस

हेनरी फोर्ड ने जब एक दिन अपने मोटर-कारखाने के मजदूरों का वेतन तेरह गुना बढ़ा दिया, तो अमरीका में ही नहीं, पूरे औद्योगिक विश्व में खलबली मच गयी। दूसरे मोटर-कारखानों के मालिक घबरा उठे। तुरंत विरोधी प्रचार शुरू हो गया। किसी ने कहा कि हेनरी को भिखारी बनने का शौक चर्राया है; तो किसी ने फोर्ड कंपनी के दिवालिये होने की भविष्यवाणी कर दी। परंतु हेनरी फोर्ड का आत्मविश्वास डिगा नहीं। फिर एक समय जब मोटरों की मांग घटने लगी थी, उनके मजदूर ही उनकी मोटरों के ग्राहक बने।

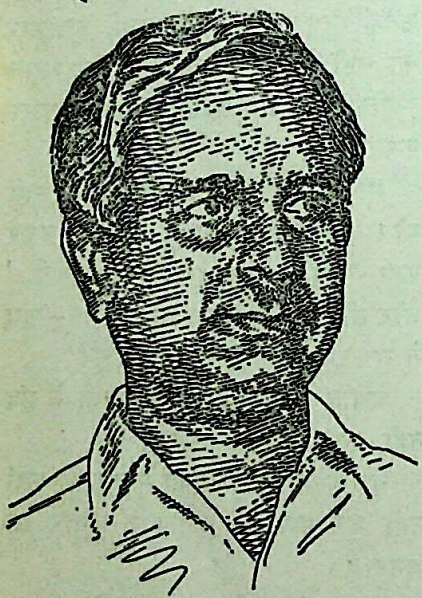

पंडितराव कुलकर्णी

पिछले साल आपने यह समाचार अखबारों में पढ़ा होगा कि इचलकरंजी (महाराष्ट्र) के एक कारखाने 'फ्युएल इंस्ट्रुमेंट्स एंड इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड' ने अपने सभी २४० कर्मचारियों को लूना स्कूटर दिया है; उसके श्रमिकों का औसत मासिक वेतन अब १,२४० के आस-पास हो गया है; ड्राइवर व माली को भी हजार रुपये मिलता है। कारखाने के मालिक पंडितराव कुलकर्णी से मेरा अच्छा परिचय रहा है; उनकी प्रगति की सारी मंजिलें मैंने निकट से देखी हैं।

सदाबहार उत्साह के धनी पंडितराव मध्यम वय के गृहस्थ हैं। लगभग बीस साल पहले सिर्फ एक लेथ मशीन—सो भी किराये की लेकर उन्होंने छोटा-सा कारखाना शुरू किया था। आज वही कारखाना 'फ्यूएल इंस्ट्रुमेंट्स एंड इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड' नाम से २४० लोगों को रोजगार दे रहा है। २२देशों को, जिनमें जापान भी शामिल है, उसकी मशीनों का निर्यात होता है।

पंडितराव १९५३ में भाड़े की लेथ पर १२ से १६ घंटे तक स्वयं काम करते थे। कई महीने बाद उन्होंने एक मजदूर रखा और फुरसत के समय शोधकार्य भी करने लगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम से कम एक हजार

फ्युएल इंजैक्शन इक्विपमेंट बनाने की उनकी तीव्र इच्छा थी और उन्होंने इस नाम की कंपनी भी बनायी। मशीनों की कमी थी, मशीनें खरीदने के लिए धन की कमी थी, और इसकी भी कोई कल्पना नहीं कि इस व्यवसाय में कितनी गुंजाइश है। सो वे विविध यंत्रों के स्पेयर पार्ट बनाने लगे।

दस वर्ष के प्रयत्न के बाद एक से दो लेथ हो गयीं। १९६१ में इचलकरंजी में ही कारखाने की अपनी इमारत बन गयी।

परंतु केवल पार्टों के बनाने से काम नहीं चलने वाला था। इसलिए १९६३ में उन्होंने 'हार्डनेस टेस्टर' बनाया। इस यंत्र का आयात होता था और इसकी कीमत काफी थी। इसलिए अनेक मित्र उनके पीछे पड़ गये कि वे उन्हें यह यंत्र बनाकर दें। उसी साल इस यंत्र को पारेख पारितोषिक मिला। इसके अलावा भारत सरकार के उद्योग विभाग ने भी आयात के विकल्प की खोज के उपलक्ष्य में पारितोषिक दिया।

आयात का विकल्प प्रस्तुत कर देना भर पंडितराव की महत्त्वाकांक्षा नहीं थी। 'हार्डनेस टेस्टर' से संबंधित एक आस्ट्रेलियाई कंपनी से उन्होंने पत्र-व्यवहार करके एक मशीन का आर्डर प्राप्त किया। इनकी मशीन वहां पहुंचते ही और नौ मशीनों का आर्डर मिल गया। आज भी आस्ट्रेलिया को यह निर्यात जारी है। आस्ट्रेलिया में पंडितराव की मशीन का एक मात्र प्रतिस्पर्धी था जापान। यह तथ्य स्वयं बहुत कुछ कह देता है। पोलैंड और हंगरी के अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनों में पंडितराव अपने 'हार्डनेस टेस्टर' के साथ स्वयं शामिल हुए और चेकोस्लोवाकिया जैसे साम्यवादी देशों से उन्होंने एक सौ मशीनों का आर्डर प्राप्त किया।

निजी अनुभव से पंडितराव कुलकर्णी को विश्वास हो गया कि उत्तम भारतीय माल के लिए निर्यात-बाजार मिल सकता है। सो

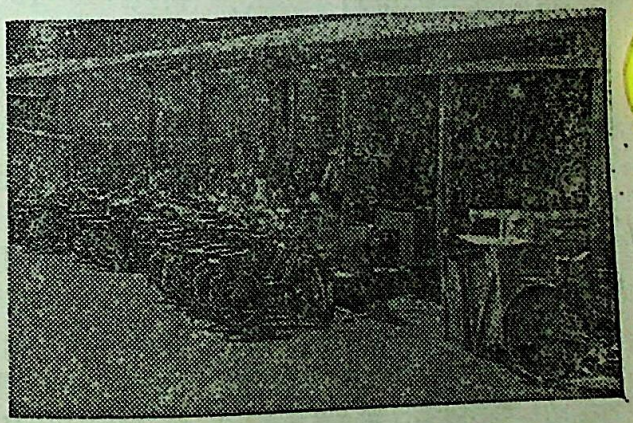

कारखाने के अहाते में कर्मचारियों के स्कूटर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

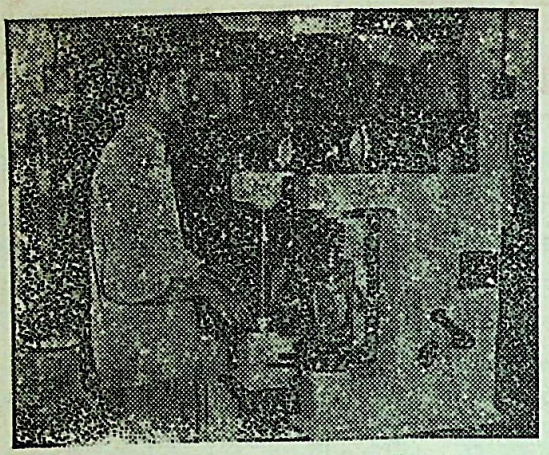

हार्डनेस टेस्टर जांचता हुआ कर्मचारी

वे परिश्रम में जुट गये। अब तो संसार के किसी भी कोने में होने वाली अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रदर्शनियां उन्हें त्योहार जैसी लगती हैं।

उन्होंने उत्साही विशेषज्ञ इंजीनियरों का एक जत्था तैयार कर लिया है। १९६५ से ये इंजीनियर विभिन्न देशों में घूमकर इस कारखाने के विकास में लगे हैं।

सन १९६६-६७ में इस कारखाने ने 'डाइनेमिक वैलेंसिंग मशीन' बनाने में सफलता प्राप्त की। तब तक इस मशीन का आयात होता था। इसलिए केंद्र सरकार ने कारखाने को आयात-विकल्प का पारितोषिक दिया। अब फ्युएल इंस्ट्रुमेंट्स भारतीय रेल्वे के लिए ३ टन वजनी यंत्र से लेकर टेपरेकार्डर में लगने वाले २० ग्राम वजन की मशीन तक तैयार करता है। इसके अलावा टाटा और किर्लोस्कर को भी यहां से अनेक खुदरा पार्टों की पूर्ति की जाती है।

सन १९७० में कारखाने ने अपना इलेक्ट्रानिक्स विभाग खोला। तब से 'स्पेशल पर्पस मशीन टूल' के विकास का प्रयत्न चल रहा है।

कारखाने का जितना माल स्वदेश में बिकता है, उससे कई गुना ज्यादा निर्यात होता है। शायद कुछ ही वर्षों में सारा ही माल निर्यात होने लगेगा। निर्यात-वृद्धि के लिए पंडितराव ने स्वयं संसार के बहुत हिस्सों का दौरा किया है। टोकियो विश्वविद्यालय में उन्होंने भाषण भी दिया है।

विदेशी वितरक फ्युएल इंस्ट्रुमेंट्स की मशीनों का विदेशी अखबारों में धड़ल्ले से विज्ञापन करते हैं। कई बार ऐसा भी हुआ है भारतीय इंजीनियरों-उद्योगपतियों ने किसी विदेशी कारखाने में किसी यंत्र के बारे में पूछा और उन्हें बताया गया कि यह आपके ही देश में इचलकरंजी में बना है।

कारखाने के विकास में श्रमिकों के निष्ठापूर्ण योगदान को पंडितराव कुलकर्णी अच्छी तरह जानते और मुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं। तभी तो आज यहां प्रत्येक श्रमिक को कम से कम एक हजार रुपये वेतन मिलता है। अनेक श्रमिकों को विशेष दक्षता दिखाने पर ३०० से ४०० रुपये तक अतिरिक्त धन प्रोत्साहनार्थ प्रतिमास दिया जाता है। यहां के सभी कर्मचारी आयकरदाता हैं। सभी स्वास्थ्य-सुविधाएं मुफ्त दी जाती हैं। किसी

● साप्ताहिक 'गोमंतक', पणजी, से साभार ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रमिक की आकस्मिक मृत्यु हो जाये, तो उसके वेतन का आधा हिस्सा उसके परिवार को बतौर पेंशन तब तक दिया जाता है, जब तक उसके बच्चे कमाने योग्य न हो जायें और कारखाने की भरती में उन्हें प्राथमिकता दी जाती है।

कारखाने में टाइमकीपर नहीं हैं, वाचमैन नहीं हैं, कार्ड पंच करने की पद्धति नहीं है, मेमो नहीं जारी किये जाते, कारखाने में आते-जाते समय तलाशी नहीं ली जाती। अपने काम की रिपोर्ट श्रमिक स्वयं देते हैं, अपना दायित्व समझते हुए काम करते हैं।

कारखाने में चपरासी नहीं हैं। पत्रों में टिकट लगाना, पते चिपकाना आदि काम क्लर्क युवतियों को स्वयं करने पड़ते हैं। किंतु वेतन उनका एक हजार से कम नहीं है। एक बार ऐसी चार-पांच युवतियों ने सोचा कि एक चपरासी हम स्वयं रख लें और हममें से प्रत्येक अपने वेतन में से पचास-पचास रुपये उसे दे। इसकी स्वीकृति लेने वे पंडितराव के पास गयीं।

पंडितराव बोले—'कल्पना बड़ी अच्छी है। परंतु ५० के बदले २०० या २५० रुपये तुम लोग अपने-अपने वेतन में से निकालो। चपरासी को कम से कम एक हजार रुपये वेतन दो, बस।' बात वहीं खत्म हो गयी।

यहां की कतिपय क्लर्क-कुमारियों को चिंता है कि उन्हें एक हजार से अधिक कमाने वाला पति कैसे मिल पायेगा? कुछ लड़कियां समझौता करने को तैयार हैं; कम वेतन वाला उन्हें स्वीकार है, बशर्ते वह इचलकरंजी में ही आकर रहे। विवाह के लिए वे नौकरी छोड़ने को तैयार नहीं हैं।

पंडितराव कुलकर्णी का दावा है—'मेरे श्रमिकों की उत्पादन-क्षमता किसी भी अन्य कारखाने के मजदूरों की अपेक्षा डेढ़ गुनी है। हमारे कारखाने में चपरासी आदि अनुत्पादक कर्मचारी नहीं हैं। इसी कारण २४० लोगों का यह कुटुंब सुखपूर्वक चल रहा है। हमने मजदूर नेताओं को चैलेंज दे रखा है कि वे कभी हमारे कारखाने में हड़ताल की नौबत लाकर तो दिखायें; क्योंकि हम सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से कई गुना अधिक वेतन दे रहे हैं।

श्री पंडितराव कुलकर्णी रसज्ञ और साहित्यप्रेमी व्यक्ति हैं। अभी तो भारत का सबसे बड़ा साहित्यिक पुरस्कार १ लाख रुपये का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार है। परंतु पंडितराव मराठी साहित्य के लिए सवा लाख रुपये का वार्षिक पारितोषिक देने की एक योजना श्री पु. ल. देशपांडे की सलाह से तैयार कर रहे हैं। अपने कारखाने के मुनाफे का १० प्रतिशत वे ऐसे कामों में लगाना चाहते हैं।

जब फ्युएल इंस्ट्रुमेंट्स ने जापान को यंत्रों का निर्यात शुरू किया, तो 'फाइनेंशियल एक्सप्रेस' के संवाददाता के नाते मैंने जो संवाद भेजा था, उसका अंग्रेजी शीर्षक था—'इचलकरंजी ऑन वर्ल्ड इंजीनियरिंग मैप।' आज पंडितराव नया इतिहास गढ़ रहे हैं और अब संसार के विभिन्न नक्शों पर उनका इचलकरंजी पहुंचने वाला है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाक्यदीप

सत्य तो रत्न है — उस पर रंग नहीं चढ़ाना चाहिये; मगर उसे इस तरह जड़ा और रोशनी में दिखाया जा सकता है कि वह बढ़िया लगे।

जब भी बुद्धि किसी सत्य को सूत्रबद्ध कर लेती है, छोटा-सा विजयोत्सव मनाती है।

ऐसे अधिकांश प्रश्न, जिनका उत्तर दे पाना मनुष्य की शक्ति से परे है, प्रकृति की कृपा से मनुष्य को सूझते ही नहीं हैं।

जो बीती को याद नहीं रख पाता, वह उसे पुनः-पुनः जीने को अभिशप्त है।

समाज हवा की तरह है — सांस लेने के लिए आवश्यक, मगर जीने के लिए अपर्याप्त।

फैशनेबल होना किसी भी विचार के लिए खतरनाक है; क्योंकि फिर उसे 'ओल्ड-फैशन्ड' होना ही पड़ेगा।

ध्येय को भुला बैठने के बाद अपने उत्साह को दुगुना कर लेना— यही कठमुल्लापन है।

उस कला से बढ़कर कंगाल और मनहूस कुछ नहीं, जिसे अपने में ही दिलचस्पी है, और अपनी विषय वस्तु में नहीं।

—जार्ज सांटायना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'जा की कृपा पंगु गिरि लंघै अंधरे को सब कछु दरसाई, बहरो सुनै, मूक पुनि बोलै .....' वे भक्त-कवि के लिए तो हरिराई अर्थात् भगवान ही हो सकते हैं; परंतु आज के अपंग के लिए वे कोई सर्जन भी हो सकते हैं। वैसे, हमारे पुरखे औषध-सेवन करते समय वैद्य को भगवान घोषित करते हुए कहते ही थे—वैद्यो नारायणो हरिः।

नष्ट या निकम्मे हो चुके अवयवों की जगह नये कृत्रिम अंग लगाकर काम चलाने की कल्पना और कोशिश मानव ने सहस्राब्दियों पूर्व ही आरंभ कर दी थी। देववैद्य अश्विनीकुमारों ने हमारे पुराणों में ऐसे अनेक चमत्कार किये हैं। मगर शायद आप पुराणों के मिथक नहीं, बल्कि ऐतिहासिक तथ्य सुनना चाहते हैं। लीजिये :

लकड़ी का ठूंठनुमा पांव लगाकर चलने की शुरूआत ई. पू. ६०० में ही हो गयी थी। धातु के बने हाथ पहले-पहल ईसा की सोलहवीं सदी में एक लूले की बांह में लगाये गये थे। बनावटी दांतों का इतिहास भी कई सदी पुराना है।

मगर इधर कुछ दशकों में विज्ञान ने ऐसी-ऐसी वस्तुओं से ऐसे-ऐसे कृत्रिम अवयव बनाकर मानव के शरीर में बैठाना शुरू कर दिया है कि विस्मित रह जाना पड़ता है।

जापानी सर्जनों ने टाइटैनियम तथा अन्य नवीन मिश्रधातुओं से जांघ की हड्डी तैयार की है। टोक्यो के डा. इटामी ने टाइटैनियम और पालीथाइलीन से निर्मित हड्डी एक आदमी की जांघ में बैठायी है। क्षतिग्रस्त

अर्धकृत्रिम मानव

स्वरूप दत्त

कंडरा (टेन्डन, यानी मांसपेशी को अस्थि से जोड़ने वाली शिरा) के स्थान पर बुनी हुई डेक्रान की तांत इस्तेमाल की गयी है। अमरीकी डा. हैरिसन ने अलग हुए कंधे को इस विधि से जोड़ दिया है।

ब्रिटेन के डा. जान चार्नली ने १९६२ में प्लास्टिक और फौलाद से कूल्हे का जोड़ तैयार किया। अब प्रतिवर्ष २५ हजार नर-नारियों को इस प्रकार के कृत्रिम कूल्हे के जोड़ लगाये जा रहे हैं। पुराने संधिशोथ

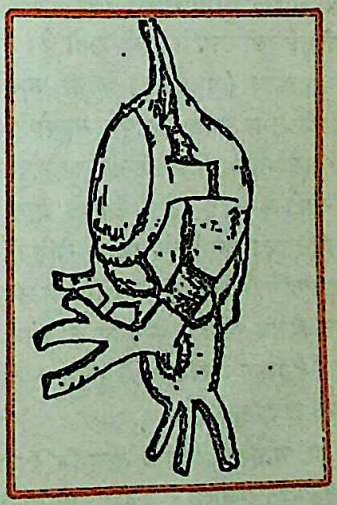

डा. देबाकी द्वारा विकसित कृत्रिम हृदय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(आर्थराइटिस) से पीड़ितों को इससे लाभ हो रहा है। आपरेशन, अस्पताल का शुल्क सब मिलाकर इसमें १८हजार रुपये लगते हैं।

अब तो उंगलियों के टूटे हुए या बेकार हो चुके जोड़ों की जगह फौलादी जोड़ लगाये जा रहे हैं। कई हजार रोगियों के घुटनों में कृत्रिम जोड़ बैठाये गये हैं, जिससे वे चलने-फिरने लगे हैं। टखने के कृत्रिम जोड़ बनाने-बैठाने के प्रयोग भी चल रहे हैं। शिकागो के माइकेल रीस अस्पताल में दो औरतों के कंधों में स्टेनलेस स्टील के बने कृत्रिम जोड़ बैठाये गये हैं।

कृत्रिम धमनियां लगाने की शुरूआत १९५३ में अमरीकी डाक्टर हफनेजल ने की। इसके लिए उन्होंने आर्लान की नली का उपयोग किया था। पहले उन्होंने फेमोरल धमनी बदली। फिर महाधमनी भी बदली। अब आर्लान की नली की जगह डेक्रान की बुनी हुई नली काम में लायी जाती है।

हाउस्टन (अमरीका) के डा. माइकेल देबाकी तथा उनके भूतपूर्व सहयोगी एवं वर्तमान प्रतिस्पर्धी डा. डेन्टन कूली दुनिया के चोटी के हृदय-सर्जनों में गिने जाते हैं। उन्होंने अब तक कई हजार रोगियों की महाधमनियां बदली हैं। उन दोनों ने लगभग आठ हजार रोगियों के हृदय के वाल्व भी बदले हैं। इस आपरेशन में कुल ४० हजार रुपया खर्च आता है।

डा. माइकेल देबाकी शल्य-चिकित्सा में जितने प्रतिभाशाली हैं, यंत्रों के निर्माण में भी उतनी ही सूझ-बूझ के धनी हैं। कृत्रिम हृदय बनाने के उनके प्रयोग-परीक्षण सफलता की दहलीज पर आ पहुंचे हैं।

टेक्सास हार्ट इंस्टिटयूट (अमरीका) के डाक्टर तीन प्रकार के हृदय-पंप बना रहे हैं। इनमें से एक वायुयुक्त (न्यूमैटिक) है; यह क्षतिग्रस्त हृदय को थोड़े समय तक राहत देने के लिए है। दीर्घकालीन राहत के लिए बिजली और नाभिकीय शक्ति से चलने वाले दो और पंप तैयार किये गये हैं। पिट्सबर्ग के डा. मैगवर्न हृदय के पंपिंग-कक्ष (वेंट्रिकल) के स्थान पर नाभिकीय शक्ति काम में लाने का परीक्षण कर रहे हैं।

गत वर्ष ऊटा (अमरीका) के डा. कोल्फ और उनके साथियों ने एक बछड़े के हृदय की जगह पूर्णतः कृत्रिम हृदय लगाकर देखा। बछड़ा आपरेशन के बाद उठकर चलने लगा और चारा चरने लगा था। मगर अट्ठाईस दिन बाद खून का थक्का जम जाने से उसकी मृत्यु हो गयी। इन्हीं डा. कोल्फ ने पहला गुर्दा-यंत्र तैयार किया था। अब वे दस्ती (पोर्ट्रेबल) गुर्दा-यंत्र बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। वे चाहते हैं कि यह यंत्र इतना छोटा हो कि आदमी उसे झोले में कंधे से लटकाकर ले जा सके।

आपरेशन द्वारा जिनके स्वरयंत्र और स्वरनलिका निकाल दिये गये हों, उन्हें बोलने में मदद देने के लिए कई प्रकार के कृत्रिम स्वरयंत्र बनाये गये हैं। इनमें से एक है डा. स्टैनली टाब का बनाया वाल्वयुक्त उपकरण। यह छाती पर लगाया जाता है और गर्दन में तथा श्वासनलिका में बनाये गये दो छेदों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन पुस्तकालय, काशी, वाराणसी।

वायुसंचरण का इस तरह नियंत्रण करता है कि बाहर निकलने वाली वायु अन्न-नलिका के ऊतकों को गति देती है, जिससे आदमी बोल पाता है। अलबत्ता यह आवाज फुस-फुसाहट जैसी होती है।

लास एंजल्स के इयर रिसर्च इंस्टिटयूट में पांच बहरों के कानों में इलेक्ट्रानिक उत्तेजक लगाये गये हैं, ताकि वे सुन सकें। ऊटा बायो-मेडिकल इंजीनियरिंग इंस्टिटयूट में ऐसा कृत्रिम श्रवण-उपकरण विकसित किया जा रहा है, जो सीधा मस्तिष्क के श्रवण-केंद्र को उत्तेजित करेगा और बहरों को सुनने में समर्थ बनायेगा।

और अंधों के लिए क्या किया जा रहा है? कोशिशें कई की जा रही हैं। उनमें से एक यह है कि कांच की आंख की पुतली में एक अतिसूक्ष्म टेलिविजन कैमरा बैठाया जाये और चश्मे के फ्रेम में एक अतिसूक्ष्म कंप्यूटर लगाया जाये और इन दोनों को विद्युदग्रों (इलेक्ट्रोड) के जरिये मस्तिष्क से जोड़ा जाये। इससे मस्तिष्क का दृष्टि-कार्टेक्स उत्तेजित होकर दृश्यबिंब को ग्रहण करेगा। वैसे, डाक्टर यह नहीं तय कर पाये हैं कि दीर्घकाल तक बिजली से उत्तेजित किये जाने से मस्तिष्क को नुक्सान तो नहीं होगा।

उन्होंने साधारण टेलिविजन, कंप्यूटर और विद्युदग्रों की मदद से दो अंधों पर परीक्षण करके देखा। अंधों को वस्तुओं की रूपरेखा दिखाई दी, जो प्रकाश-बिंदुओं से निर्मित थी। इस रूपरेखा से वे वस्तुओं को पहचानने में सफल रहे।

कृत्रिम मानव बनाने में विज्ञानियों को शायद अभी बहुत समय लगे, मगर अर्ध-कृत्रिम मानव यानी ऐसे मानव जिनके आधे अवयव कृत्रिम हों, शायद इसी सदी में ही आपको सड़कों पर घूमते नजर आयें।

❀

जार्ज बर्नार्ड शा बूढ़े होने से बहुत पहले ही दीर्घजीवी होने की चिंता में पड़ गये थे। एक दिन वे बकिंग्हमशायर (इंग्लैंड) के एक गांव एयोट सेंट लारेन्स के कब्रिस्तान में सुस्ताने के लिए बैठे। वहां कब्रों पर लिखी इबारतें पढ़ते हुए यह बात उनके ध्यान में आयी कि वहां के बहुत-से लोग बहुत लंबी उम्र जीकर खुदा को प्यारे हुए थे। बर्नार्ड शा ने उस स्थान के शांत वातावरण और शुद्ध हवा को इसका कारण माना और खुद वहां आ बसे और ९४ बरस तक जिये। यूरोप में सबसे अधिक शांत वातावरण और शुद्ध हवा शायद फिनलैंड के उत्तर केरेलिया में है, जो झीलों और जंगलों से भरा प्रदेश है। बर्नार्ड शा की दलील के अनुसार तो वहां के लोगों को खूब दीर्घजीवी होना चाहिये। मगर आंकड़े कुछ और ही कहते हैं। वहां शेष स्कैंडिनेविया की तुलना में दुगुने लोग हृद्‌रोगों से मरते हैं। २० से ६० वर्ष की उम्र के लोगों में वहां १० हजार के पीछे ९३ आदमी हृद्‌रोगों से मरते हैं, जब कि देश की राजधानी में हेलसिंकी इन रोगों से मरने वालों की संख्या १० हजार के पीछे ५३ है। डाक्टरों ने इसके तीन कारण माने हैं—अधिक धूम्रपान, रक्त में कालेस्टेरोल की अधिकता, और उच्च रक्तचाप।

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उम्रचोरों के गांव में

• रमेशदत्त शर्मा •

वे कम खाते हैं, गम खाते हैं और 'रम' पीते हैं तथा सौ साल की उम्र उनके लिए बड़ी मामूली बात है। दो-चार नहीं, पूरा का पूरा गांव शतजीवी! इनमें से सबसे ज्यादा प्रचार पाया है रूस की कोहकाफ (काकेशस) पर्वतमाला में बसे जार्जिया और अजरबेजान गणतंत्र के शतजीवियों ने। सन १९७० की जनगणना के अनुसार, इस क्षेत्र में सौ से ऊपर की उम्र वालों की तादाद ४,५०० से ५,००० तक थी। इनमें से १,८४४ जार्जिया गणतंत्र में और २,५०० अजरबेजान में रहते हैं। जार्जिया में शतजीवियों का अनुपात एक लाख के पीछे ३९ और अजरबेजान में एक लाख के पीछे ६३ है।

शतजीवियों की बस्तियों की खोज के क्रम में सबसे ताजा नाम दर्ज हुआ है, विल्कावांवा का। यह ईक्वाडोर (दक्षिण अमरीका) में स्थित एक बड़ी घाटी है। इस घाटी में भी सौ की उम्र मामूली बात है। मूलतः यह रेड इंडियनों का इलाका था। विल्कावांबा नाम भी उन्हीं का दिया हुआ है। बाद में स्पेनी लोग यहां आ बसे।

रूसी प्रदेश की तुलना में यहां के शतजीवियों की उम्र अधिक विश्वसनीय मानी जाती है; क्योंकि ये लोग रोमन कैथोलिक हैं, उनके बपतिस्मे की तारीखें यहां के गिरजों में दर्ज हैं। इन प्रमाण-पत्रों के अनुसार यहां के सबसे बड़े जवांमर्द हैं जोसे डेविड, जिनकी उम्र १४३ साल है। इनके बाद नंबर आता है मिगुइल कार्पिओ का, जिनकी उम्र १२४ साल है। आज भी दोनों को अपने खेतों पर काम करते हुए देखा जा सकता है।

शतजीवी चाहे पाक-अधिकृत कश्मीर की कराकोरम पहाड़ियों में बसे हुंजा के लोग हों; या रूस के अबखजस्काया पहाड़ी क्षेत्र के जार्जियन हों या विल्कावांवा के निवासी हों; उनके दीर्घ जीवन के पीछे अनेक साझे कारण हैं। सबसे पहली चीज है जलवायु। ये सब पहाड़ी इलाके हैं, जहां की खुली हवा एक बार तो मुर्दे में भी जान डाल दे।

विल्कावांवा को ही लीजिये। समुद्रतल से इसकी ऊंचाई १,५०० मीटर है। यहां की हवा में आपेक्षिक नमी ६७ प्रतिशत है और तापमान प्रायः १९ अंश शतांश रहता है। घाटी के तीन ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं और विल्कावांबा नगर में तीन नदियों का संगम है। राजनैतिक व भौगोलिक दोनों दृष्टियों से यहां सदियों से कोई खास उथल-पुथल नहीं हुई है। यह क्षेत्र भूकंप की सीमा में नहीं आता। एक-सी रफ्तार से एक ही दिशा में बहता हुआ मंद समीर यहां के शांतिप्रिय लोगों को सदियों से दुलराता आ रहा है।

इन्हें कोई और हवा लगे भी तो कैसे? ज्यादातर लोगों ने कुल ५२ कि. मी. दूर बसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नगर लोजा तक जाने का भी कष्ट नहीं उठाया। रक्तचाप या दिल के दौरे या कैन्सर का किसी ने नाम भी नहीं सुना। मृत्यु अक्सर किसी दुर्घटना की शक्ल में आती है। बाहर से पहुंचने वाले यात्री अपने साथ नयी सभ्यता की सौगात के रूप में इन्फ्लुएंजा ले आते हैं; तो इस घाटी के निवासियों की भी नाक में दम हो जाता है।

आबोहवा के बाद दूसरी चीज है खान-पान। आखिर जो हम खाते-पीते हैं, उसी से तो हमारी देह बनती है। विल्कावांबा के निवासियों के खानपान का डा. गिलेर्मो वेला ने विशेष अध्ययन किया है। उनका कहना है कि यहां बड़ी उम्र के लोग औसतन १,२०० कैलोरी ऊर्जा प्रदान करने वाला भोजन करते हैं। (वैसे 'न्यू सायंटिस्ट' में प्रकाशित एक लेख में डा. डेविड डेवीज ने लिखा है कि ये लोग दैनिक आहार से १,७०० कैलोरी ऊर्जा प्राप्त करते हैं।) डा. वेला के अनुसार, इनके भोजन में ३५ से ३८ ग्राम प्रोटीन, चिकनाई सिर्फ १२ से १९ ग्राम होती है और २०० से २६० ग्राम तक कार्बोहाइड्रेट होते हैं। ज्यादातर लोग प्रोटीन व चिकनाई शाकाहार द्वारा प्राप्त करते हैं।

विल्कावांबा के कुछ निवासियों का दावा है कि वे कुछ जड़ी-बूटियों का काढ़ा चाय की तरह पीते हैं, और यही उनके दीर्घ जीवन का रहस्य है। लेकिन वैज्ञानिकों को इस दावे में कोई दम नहीं नजर आता।

सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह है कि विल्कावांबा के निवासी दिन-भर में दो से चार प्याले तक रम और ४० से ६० तक सिगरेट पी जाते हैं। ये रम और सिगरेट दोनों ही घर पर बने हुए होते हैं। अपने ही खेत में उगी तंबाकू को मक्का की पत्तियों में लपेटकर बनायी गयी सिगरेट के कश भरना और बीते दिनों के किस्से बखानना बूढ़ों का आम शौक है।

गर्मियों में ये लोग मुख्यतः गेहूं, मक्का, यूका (एक प्रकार का कंद), फलियां व आलू खाते हैं। इनके अलावा संतरा, केला और खंडसारी का भी यथारुचि सेवन करते हैं। सब्जियां ये लोग खूब खाते हैं, जब कि मांस औसत आदमी हफ्ते-भर में मुश्किल से एक

इसाबेल क्वेजेंदा मेंदिएता (१०३ वर्ष) आज भी काम करती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औंस खाता है। कुल मिलाकर आहार में चिकनाई का अंश कम ही होता है। दूध इन्हें बहुत कम मिल पाता है और लगभग सारे दूध का पनीर बना लिया जाता है। मोटापा यहां कहीं नजर नहीं आता।

दूसरी ओर रूस की काकेशस पहाड़ियों के वृद्ध निवासियों में दैनिक आहार की ऊर्जा-मात्रा १,७०० से १,९०० कैलोरी प्रतिदिन है। चिकनाई तो वे भी ४० से ६० ग्राम तक लेते हैं। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि सामान्यतः इस उम्र के सामान्य व्यक्ति की देह में कोलेस्टेरोल की मात्रा जितनी होती है, इनमें उससे आधी है। आपको मालूम है, कोलेस्टेरोल की अधिक मात्रा हृदय के लिए घातक होती है। अधिक मात्रा में घी-मक्खन खाने से कोलेस्टेरोल की मात्रा में वृद्धि होती है।

ये देहाती लोग बड़ा सादा जीवन व्यतीत करते हैं और कड़ा शारीरिक परिश्रम उनके दैनिक जीवन का अंग है। मेहनत की आदत उन्हें बचपन से ही पड़ जाती है। पहाड़ियों पर चढ़ना-उतरना ही काफी मशक्कत का काम है। आखिरी सांस तक कर्मरत रहना इनके जीवन का क्रम बन गया है। लगातार कर्मठ बने रहने से इनके फेफड़े ज्यादा आक्सिजन खींचते हैं और दिल ज्यादा तंदुरुस्त रहता है।

डा. अलेक्जेंडर लीफ नामक एक डाक्टर ने विल्काबांबा, हुंजा (पाकिस्तान) और अबखजस्काया (रूस) के दीर्घजीवियों के बीच रहकर वैज्ञानिक अध्ययन किया है। वे लिखते हैं:

'मैं अबखजस्काया गया, तो वहां गांव में मुझे पता लगा कि एक वृद्ध देहाती सारी गर्मियां अपनी बकरियां साथ लेकर १,५०० से लेकर १,८०० मीटर की ऊंचाई पर चरागाहों में बिताता है। मुझे बताया गया कि इसकी उम्र सौ से ऊपर है। लिहाजा मैंने तय किया कि मैं उससे वहीं जाकर मिलूंगा।

'सुबह ही मैं चल पड़ा। रास्ता कीचड़ से भरा, फिसलन वाला, ऊबड़-खाबड़ तथा कहीं-कहीं बिलकुल सीधी चढ़ाई वाला था। मेरे साथ आये दो अमरीकी डाक्टर तो घबराकर वापस लौट गये। मैं किसी तरह हिम्मत करके करीब एक बजे ऐसी जगह पहुंचा, जहां जंगल खत्म हो गया था और घास से ढंका ढलवान दिखाई दिया। थोड़ी देर में कोस्टा काशिग से मुलाकात हुई, जो अपने आपको १०६ साल का बताता था। जिस रास्ते से चढ़कर ५२ साल का मैं सुबह का चला दोपहर तक यहां आ पाया था, उसी रास्ते को इस आदमी ने मुझसे आधे समय में तय किया था।'

दीर्घायु वाले लोग हर जगह बड़ा सक्रिय सामाजिक जीवन बिताते हैं। मकान उनके भले ही कच्चे हों, परंतु समाज में उनकी खासी साख है। संयुक्त परिवारों में, सबसे बड़ी उम्र का होने के कारण हर बात में उनकी सलाह सिरमाथे ली जाती है। पास-पड़ोस में भी 'सबसे बड़े' की चलती है।

सुखमय वैवाहिक जीवन भी दीर्घायु के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण है। अजरबेजान के एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौ-साला जवांमर्द ने एक भेंट में बताया था–'मेरी पहली छह बीवियां बड़ी नेक थीं। लेकिन यह सातवीं बड़ी गुस्सैल है। इससे शादी करने के बाद तो मेरी उम्र दस साल कम हो गयी है। अगर पत्नी भली और दयावान हो, तो सौ साल की उम्र पाना बड़ा आसान है।'

जीते चले जाने की बलवती इच्छा भी दीर्घ जीवन के लिए बहुत जरूरी है। आमतौर पर शहरी लोग साठ-सत्तर से ज्यादा जीने की इच्छा नहीं रखते। मगर इन पहाड़ी गांवों में जिससे मिलिये वही सौ से कम की बात ही नहीं करता। आखिर ये लोग बचपन में सौ-सवा सौ साल के दादा-परदादाओं की दाढ़ियों से झूल चुके हैं।

देखा गया है कि अधिकांश दीर्घजीवियों के परिवार में कोई न कोई पूर्वज सौ से भी ऊपर की धाई छूकर गया था। पूरे १०४ वर्ष की स्वस्थ उपयोगी जिंदगी जीने वाले हमारे ही देश के महर्षि कर्वे कहा करते थे कि दीर्घकाल तक जीने की कोई खास कोशिश मैंने नहीं की; दीर्घ जीवन की परंपरा हमारे कुल में है। इसलिए कुछ वैज्ञानिक दीर्घायुष्य को वंशपरंपरा की देन मानने पर तुले हुए हैं।

लेकिन आज तक दीर्घायुष्य को नियंत्रित करने वाले 'जीन' का पता नहीं चला है। हां, ऐसे 'जीन' तो पता चले हैं, जो जान जाने के खतरे बढ़ाते हैं।

हाल में साइबेरिया के बर्फ से आच्छादित याकूतिया और अल्ताई पहाड़ों में भी दीर्घजीवियों का पता चला है। लेकिन इनमें सौ से अधिक साल के लोग इने-गिने ही हैं। इन्हें खाने को रेंडियर का मांस ही मिल पाता है, जिसमें चिकनाई की मात्रा बहुत होती है।

शराब, निकोटिन और चिकनाई जीवन हवन करने की समिधा माने गये हैं। फिर भी कुछ लोग इनका सेवन करते हुए भी उम्र की झोली में से साल चुरा ले जाते हैं! हो सकता है, विल्कावांबा के निवासियों के चार-चार प्याले रम और हाथ की बनी ४०-४० सिगरेटें उस नदी का पानी हजम कर देती हों, जिनकी वैज्ञानिक जांच जारी है। सो दीर्घायुष्य का कोई नुस्खा तजवीज करने से पहले अभी बहुत बड़े पैमाने पर वैज्ञानिक खोजबीन की जरूरत है।

–ए ५/४, राणा प्रताप बाग, दिल्ली–७

❀

जर्मन रसायनज्ञों को आशा हो चली है कि शायद कृत्रिम इन्सुलीन का कम खर्च में निर्माण संभव हो जायेगा। मधुमेह की दवा के रूप में प्रयुक्त होने वाली इन्सुलीन प्राणियों के शरीर की पैंक्रिया ग्रंथियों से निकाली जाती है और ५१ अमीनो-अम्लों के मिलने से बनती है। इन्सुलीन के प्रत्येक अणु में अमीनो-अम्लों की दो शृंखलाएं होती हैं, जो दो स्थलों पर 'गंधक पुल' (सल्फर-ब्रिज) द्वारा जुड़ी हुई होती है। प्रयोगशाला में इन पुलों को तैयार करना अब तक असंभव प्रतीत होता था। परंतु फ्रैंकफर्ट और आखेन के शोध-विज्ञानी अब इसमें सफल हो गये हैं। अब कृत्रिम इन्सुलीन का निर्माण आसान हो जायेगा।

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

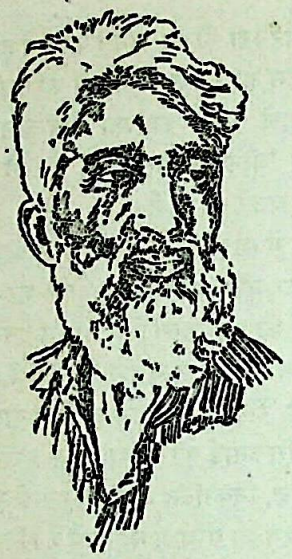

हुसैन की

[१]

नीली रात
उसकी चादर पर से फिसलती है
उसकी जांघ पर
एक निशान डाल जाती है।
वे दूर
जिस्मों के पीले भूरे रंग
कश्तियों के पीछे लरजते हैं।
अचानक एक सफेद रंग
क्षितिज को काटता है
उससे नीचे का दृश्य
अवाक् रह जाता है।
सलेटी रंग की रेत
उसकी चादर से
ढकी रहती है।

[२]

मेरे पत्र
जलती हुई आवाजों के निशान,
पूरा महीने की बर्फानी ठंड
तुम्हारे नक्काशीदार दरवाजे के अंदर
शायद आग को बुझा दे।
अपने दरवाजे को ताला लगा लो
चाबियां एक तरफ फेंक दो
मेरा पत्र अनपढ़ा रहने दो।

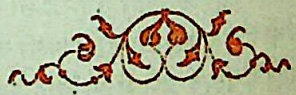

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुवाद : सुखवीर
पोर्ट्रेट: डा. विष्णु भटनागर

चार कविताएं

[३]

मुझे आसमान की बर्फ-ढंकी चादर भेजो
जिस पर कोई दाग न हो।
तुम्हारी अनंत उदासी के घेरे को
मैं सफेद फूलों से
कैसे चित्रित करूं ?
जब मैं चित्र बनाने लगूं
तो आसमान को अपने हाथों में पकड़ लेना
क्योंकि मैं अपने कैन्वास के
फैलाव से अनजान हूं।

[४]

जब जवान पत्ते
चिमनियों के धुएं में
पिघलते हैं
और आसमान का गीला कागज
बरियों वाले खंभों पर
झुक जाता है,
छलकते हुए दूध की भरी हुई गाड़ी
रास्ते को रोशन करती है।
और एक लड़का
मंदिर की सीढ़ियों पर
नंगे पांव चलता हुआ
खाली शहर को
खाना शुरू करता है।
वहां अस्तित्व की
गूंजती हुई आवाज
हंसी में फूट पड़ती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

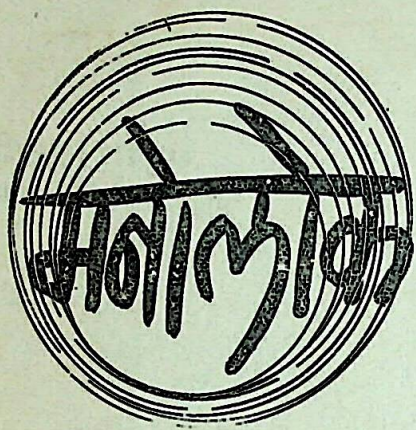

विमलेंदु श्रीवास्तव

किसी ज्ञानी से पूछा गया—दुर्भाग्य की अक्सीरी दवा क्या है ? उत्तर मिला हंसना। हास्य जीवन की सबसे मूल्यवान संपदाओं में से है। चालीस करोड़ देश-वासियों की हितचिंता का बोझ ढोते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि अगर मुझमें हास्यवृत्ति न होती, तो मेरी कभी की मृत्यु हो चुकी होती।

सौभाग्य से हास्यवृत्ति भगवान ने कलेजे और जिगर की तरह हर आदमी को दी है। मगर कोई उसे खूब विकसित कर लेता है, जबकि किसी में वह अविकसित अवस्था में ही रह जाती है।

जिसने भी उसे विकसित कर लिया है, उसका जीवन अधिक सुखमय हो उठता है। साथ ही वह दूसरों के जीवन को भी आनंद-मय बनाता है।

मुस्कराता मुखड़ा और विनोदपूर्ण वचन तनाव को तोड़कर अपने और दूसरों के मन को मुक्त कर देते हैं—विवाद-विग्रह की जड़ काट देते हैं और उस विषवृक्ष पर द्वेष के फलने की नौबत ही नहीं आने देते।

हास्यवृत्ति जन्मजात भी होती है, विक-सित भी की जा सकती है। उसके मूल में ये बातें हैं :

क. सही परिप्रेक्ष्य

जो कुछ अच्छा-बुरा (विशेषतः बुरा) हो गुजरा हो, हो रहा हो, या होने वाला हो, उसे सही परिप्रेक्ष्य में देखें। प्रायः हर चीज जो उस क्षण बहुत तीव्र, बहुत बड़ी लगती है, समय बीतने के साथ मंद और छोटी होती चली जाती है। बचपन में खिलौना टूटने पर या हाथ की आइस्क्रीम छूटकर मिट्टी में गिर जाने पर ऐसा लगता था कि बस आसमान टूट गया; मगर अब उसे याद करके आपको मजा आता है। यही बात आज के अधि-कांश दुःखों और चिंताओं के बारे में आप बीस साल बाद अनुभव करेंगे। सो अभी सही परिप्रेक्ष्य में देखना शुरू कर दीजिये।

ख. तनिक तटस्थता

चीजों को जरा निर्लिप्त होकर देखना सीखिये, जैसे आप किसी और के साथ कुछ होते देख रहे हों—जैसे और ही किसी का अपमान किया गया हो, जैसे और ही किसी के प्रति अन्याय किया गया हो, और ही किसी के सामने कोई संकट आ पड़ा हो। इससे आप ज्यादा आवेश या उद्वेग में फंसे बिना सम-स्याओं और स्थितियों पर दृष्टि डाल सकेंगे। और तब उनमें जो विसंगतियां और अटपटे-पन हैं, उन पर आपका ध्यान जायेगा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शायद हंसी भी आ जाये आपको।

ग. अहंकेंद्रित न रहें

जब भी कभी कुछ होता है, हमारी पहली मानसिक प्रतिक्रिया यह होती है—जानूं, इसका मेरे हित या स्वार्थ पर क्या प्रभाव होगा ? अर्थात् हम अपने आपको संसार के समस्त व्यवहारों का केंद्रबिंदु मानते हैं—वह अक्ष जिस पर धरती घूमती है। इस भ्रम से छुटकारा पाने का सबसे बढ़िया उपाय है अपने आप पर हंस लेना; जब अपनी हंसी उड़ायी जा रही हो, तब उसमें शामिल हो जाना। यों भी सोचिये, हमें अपने साथियों, मित्रों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों आदि में कई अटपटी, उपहासास्पद-सी बातें नजर आती हैं। जब सभी में ऐसी बातें हैं, तो हममें भी ऐसा ही कुछ अवश्य होगा। तो उसका भी आनंद क्यों न उठायें ? जो आदमी अपने पर हंस सकता है, वह दूसरों के साथ हंस सकता है। और हंसने वाला आदमी दुर्भाग्य को हंसकर झेल सकता है।

घ. दुनिया हास्य-भरी है

जीवन को बेहद गंभीर मामला मत मान बैठिये। बेशक जीवन में बहुत कुछ पवित्र होता है; धार्मिक अनुष्ठान की तरह। जीवन में कर्तव्य भी हैं। मगर उससें खेल-खिलवाड़ भी होता है। सब कुछ सिरजने वाले भगवान ने दुनिया में हास्य भी सिरजा है, यह क्यों भूल जाते हैं ?

जरा ध्यान से देखिये तो, दुनिया में हंसने को कितना कुछ है ! मेरा मतलब लोगों के अंग-विकार आदि से नहीं है। उससे कहीं अधिक मजेदार और परिष्कृत हास्य-कारण हमारे आस-पास बिखरे पड़े हैं—बच्चों का नटखटपन, बूढ़ों का बचकानापन, स्त्रियों के नाज-नखरे, युवकों का यह भ्रमपूर्ण घमंड कि वे सदा ऐसे ही बने रहेंगे, छोटी-छोटी तात्कालिक बातों का बतंगड़ बनाकर एक-दूसरे पर बिगड़ने और दूसरों से झगड़ने की हम सबकी नादानी-भरी आदत—क्या वस्तुतः ये सब हंसने योग्य चीजें नहीं ?

ङ. दोषों को बिसार दें

जीवन में हास्य के क्षेत्र को संकुचित करने वाली एक घातक चीज है—दोष-दर्शन। अरे, वह तो अपने को बड़ा आलिमफाजल मानता है, इसकी आवाज बड़ी कड़वी है, अमुक को उठने-बैठने का शऊर नहीं है, फलाने की मुस्कान में बनावटीपन है—यही सब देखते फिरेंगे तो आपको हंसने की तो क्या, जीने की भी फुरसत नहीं मिलेगी।

दूसरों की अच्छाइयां देखना शुरू कीजिये। मन प्रसन्न होगा और प्रसन्न मन का प्रसाद स्वच्छ हास्य के रूप में चांदनी बनकर फूटेगा।

और यह चांदनी-सी मुस्कान लेकर जब आप अन्य लोगों के पास जायेंगे, उन्हें आपसे मिलने में सुख होगा। और उसके बाद वे स्वयं आया करेंगे आपसे मिलने—अपना सुख आपके साथ बांटकर भोगने, अथवा अपना उदासी का क्षण आपकी सोहबत में भुलाने। इस प्रकार आप जीवन में अधिक आनंद और अधिक सार्थकता अनुभव करेंगे। तब दुःख, अभाव, दुर्भाग्य आदि आपको असहनीय और भयानक नहीं लगेंगे।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री, पुरुष, स्त्री+पुरुष

एलेक वोर्न

इने-गिने ही पुरुष पूरे के पूरे पुरुष होते हैं; इसी तरह थोड़ी ही स्त्रियां ऐसी होती हैं, जो पूरी की पूरी स्त्री हों। सेक्स के तारतम्य की तुलना हम वर्णक्रम (स्पेक्ट्रम) के प्रकाश से कर सकते हैं। निचले छोर पर रंग होता है लाल, जो चुपचाप प्राथमिक रंगों में परिवर्तित होता हुआ ऊपरी छोर पर आसमानी बन जाता है। इसी तरह सेक्स के वर्णक्रम के एक सिरे पर वह विरला जीव है, जो पूरा का पूरा पुरुष है। इस सिरे और वर्णक्रम के मध्यबिंदु के बीच में सामान्य पुरुषों का विशाल समूह है; जबकि केंद्र में थोड़े-से ऐसे लोग हैं, जो या तो पुरुष व स्त्री दोनों हैं, या दोनों में से कुछ भी नहीं हैं अर्थात् नपुंसक हैं। इससे आगे बढ़ने पर हमें स्त्रियों का बहुत बड़ा वर्ग मिलता है, और अंत में मिलती है पूरी की पूरी स्त्री।

दोनों सेक्सों के अधिकांश व्यक्तियों के व्यक्तित्व में अपने विपरीत सेक्स की ज्यादा या कम रंगत होती है। उदाहरण के लिए, ऐसे कई इतिहास-प्रसिद्ध पुरुष हैं, जिनमें स्पष्ट ही स्त्रीत्व का पुट था। अनेक महान कलाकार मुझे याद आते हैं, और कई महान सेनापति भी—जैसे कि नेल्सन। किंतु कुल मिलाकर इतिहास-प्रसिद्ध सेनापति सेक्स-वर्णक्रम के पुरुषत्व के छोर पर रहे हैं—यही उनकी युद्धदक्षता और पराजितों के प्रति कभी-कभी उनके द्वारा दिखायी जाने वाली क्रूरता का कारण है। ये परले सिरे के पुरुष अपरिष्कृत, मूर्ख और सृजन-क्षमता से सर्वथा शून्य होते हैं। अपनी निष्ठुरता और लगन के कारण वे अपने चुने हुए पेशे में कार्यकुशल होते हैं, दूसरी दिलचस्पी उन्हें नहीं सताती।

यही बात स्त्रियों के विषय में भी है, यद्यपि मेरा खयाल है कि औसत स्त्री में उतना पुरुषत्व नहीं होता, जितना कि औसत पुरुष में स्त्रीत्व होता है। सेक्स-वर्णक्रम के इस छोर पर हम परले सिरे की स्त्री को देखते हैं, जो सेक्स-प्रदर्शन और प्रजनन-क्षमता के अलावा सिफर होती है; क्योंकि मानसिक दृष्टि से वह बांझ होती है।

यह बात असंदिग्ध है कि जिन सौभाग्यशाली पुरुषों में स्त्रीत्व का कुछ अंश होता है, वे सामान्यतः कलाप्रेमी और बहुत बार कलासर्जक भी होते हैं, और सामान्यतः बहुत सूझबूझ वाले होते हैं। इसी तरह वे स्त्रियां, जो कोरमकोर स्त्रियां नहीं होतीं, वे व्यापार, शिक्षा डाक्टरी में दक्ष होती हैं।

[लेखक इंग्लैंड के सबसे बड़े प्रसूती चिकित्सकों में से हैं।
प्रस्तुत प्रसंग उनकी पुस्तक 'ए डाक्टर्स क्रीड' में से है।]

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञान-बिंदु

केजिता

मनुष्य का निजी चिंतन कभी समकालीन चिंतन-प्रवाह से अछूता नहीं रह सकता, यह मानसशास्त्रीय तथ्य है। बाहरी परिवेश एवं व्यक्ति के अंतर्जगत् का परस्पराश्रय यों भी सहज तथा तर्कसंमत लगता है। हाल में हुई कतिपय वैज्ञानिक शोधों से भी इसकी पुष्टि-सी होती है। अब यह तथ्य काफी स्पष्ट हो गया है कि चिंतन-प्रक्रिया मस्तिष्क की वैद्युत गतिविधियों का परिणाम है। साथ ही बमरीकी वैज्ञानिक डा. डब्ल्यू. रौस ऐडे और उनकी टोली के शोधकार्य से यह प्रकट हुआ है कि बाह्य जगत् में मानव द्वारा निर्मित विद्युतक्षेत्र हमारे टेलिविजन के परदे पर ही नहीं हमारे मूड, चिंतन, व्यवहार और यहां तक कि हमारी नींद पर भी असर डाल सकता है। सारी बात तरंगदैर्घ्य और बावृत्ति (फ्रीक्वेंसी) की है।

कभी-कभी हमारे वातावरण में भी लगभग उसी आवृत्ति के दुर्बल विद्युत-क्षेत्र बन जाते हैं, जिस आवृत्ति पर मस्तिष्क-तरंगों का निर्माण होता है। आवृत्ति में मिलते-जुलते इन दोनों क्षेत्रों में परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया का होना स्वाभाविक है। हो सकता है, इसका नतीजा यह हो कि नींद के लिए आवश्यक तरंग-लय (रिद्म) ही विचलित हो जाये और आदमी नींद के लिए रात-भर छटपटाता रह जाये। माइक्रो-तरंग, हाईपावर लाइन तथा राडार की आवृत्ति में निस्संदेह इस प्रकार की संभावनाएं हैं।

विद्युत का प्रयोग हमारे जीवन में निरंतर बढ़ता जा रहा है। दफ्तरों-घरों में विद्युत-चलित उपकरणों का उपयोग बढ़ता जा रहा है। इससे संभावित खतरों से हम अभी तक बेखबर रहे हैं, जो अब डा. ऐडे की शोधों से सामने आने लगे हैं। आदमी का चिंतन अनियंत्रित हो जाये, उसके काबू के बाहर हो जाये, यह कितना बड़ा खतरा है! मगर इस खोज से पश्चिम के खुशहाल परिवारों को एक लाभ भी हो सकता है। अब ऐसे विद्युत-कंबल बनाये जा सकेंगे, जो शरीर को गर्म रखने के साथ सही आवृत्तियों द्वारा आदमी को मीठी नींद में सुला भी सकेंगे। तब शायद नींद की गोली की मांग कम होने लगेगी।

जेट मच्छर

विश्व स्वास्थ्य संघटन ने हाल में मच्छरों की उड़ान-क्षमता के संबंध में विस्तृत अध्ययन कराया। मच्छरों की ओलिंपिक-सी की गयी, जिसमें दुनिया के हर मुल्क के मच्छरों को शामिल किया गया। आपको जानकर हैरानी होगी और बेशक खुशी भी कि इंसानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेल-कूदों में नये-नये कीर्तिमान स्थापित करके दर्जनों स्वर्ण-पदक हथिया लेने वाले बड़े-बड़े देशों के मच्छरों को यहां झक मारकर रह जाना पड़ा। अमरीका और दूसरे देशों के मच्छर एक बार में ५०० गज से अधिक उड़ान भरने में नाकामयाव रहे और हिन्दुस्तान का मच्छर सभी प्रतिस्पर्धियों को धराशायी करके बाजी मार ले गया। हमारा मच्छर एक दफा में ५०० मील तक की उड़ान भर सकता है।

मगर बेइंसाफी की हद देखिये, किसी ने इसके लिए हिन्दुस्तान को स्वर्ण-पदक देने की घोषणा नहीं की। उलटे यह तोहमत सिर मढ़ दी कि भारत-उपमहाद्वीप से अगर मलेरिया का सफाया पूरी तरह से नहीं किया जा सका है, तो इसकी वजह यही है कि यहां का मच्छर बड़ा काइयां है। जहां खुद पाया जाता है, वहां से पचासों मील तक उसके अंडों का अता-पता नहीं चल पाता। गजब का हवाबाज जो ठहरा!

जल-मंजन

जन-संपर्क के प्रबल साधनों के जरिये विभिन्न उपभोग्य उत्पादनों के धुआंधार प्रचार के आधार पर आम आदमी जो धारणाएं बना बैठता है, वे कितनी निर्मूल हो सकती हैं, इसका एकदम ताजा उदाहरण लंदन के 'टाइम्स', में प्रकाशित एक रिपोर्ट से मिलता है।

यह रिपोर्ट ब्रिटेन की एक प्रसिद्ध उपभोक्ता-पत्रिका द्वारा विभिन्न टूथपेस्टों के प्रभाव के संबंध में किये गये अध्ययन पर आधारित थी। उक्त अध्ययन से यह प्रकट हुआ कि ब्रश को नल के ताजे पानी में भिगोकर यदि दांतों पर फिराया जाये, तो उससे भी दांतों की सफाई उतनी ही अच्छी होती है, जितनी कि कीमती टूथपेस्ट से। अध्ययनकर्ताओं ने ब्रिटेन में प्रचलित ५१ प्रमुख टूथपेस्टों पर परीक्षण करके यह परिणाम निकाला। ब्रिटिश डेंटल एसोसिएशन के सचिव ने उक्त रिपोर्ट से सहमति जताते हुए कहा है—'टूथपेस्ट पर पैसा खर्च किये जाने के पीछे एक मनोवैज्ञानिक कारण है। यह उन्हें नियमित रूप से दांत साफ करने के लिए प्रोत्साहित करता रहता है।'

निरापद कीटाणुनाशी

लंदन के समीप स्थित 'रोदस्मटेड ऐक्सपेरिमेंटल स्टेशन' ने घोषणा की है कि वहां पाइरेथ्राइड नामक एक नये कीटाणुनाशी का विकास किया गया है, जो आज के बहुप्रचलित कीटाणुनाशी डीएलड्रिन तथा डी. डी. टी. से सौ गुना अधिक प्रभावशाली है।

पाइरेथ्राइड की बाबत यह भी बताया गया है कि यह पर्यावरण को संदूषित नहीं करता, कोई अपशिष्ट (रेसिडयू) भी नहीं छोड़ता तथा सामान्य प्रयोग के दौरान स्तनधारी जीवों पर कोई अवांछनीय प्रभाव नहीं डालता।

हिम-ड्रिल

पिछले दिनों हिमालय के उच्च भागों में हिमनदों (ग्लेशियर) का अध्ययन करने वाले भारतीय भौमिकीविदों ने पहली बार स्वदेश में निर्मित हिम-ड्रिल का प्रयोग किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिमनदों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए सबसे पहली आवश्यकता है तैरती हुई बर्फ की चट्टान की मोटाई का पता लगाना। इस कार्य के लिए एक विशेष यंत्र का उपयोग किया जाता रहा है, जो हमें विदेशों से मंगवाना पड़ता था।

जियोलाजिकल सर्वे आफ इंडिया के 'केंद्रीय ड्रिलिंग डिविजन' ने अब खुद अपने यहां इस विद्युत-चालित यंत्र का निर्माण कर लिया है। इसमें विद्युत-ऊर्जा ऊष्मा में परिवर्तित हो जाती है और यंत्र के 'हाट पाइंट' को काफी गर्म कर देती है। यह 'हाट पाइंट' बर्फ को तत्काल बेधता हुआ उसकी वास्तविक मोटाई को मापने का काम करता है।

विटामिन

कौंसिल आफ सायंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च की एक प्रेस-विज्ञप्ति के अनुसार, पूना की राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला विटामिन बी-६ की संश्लेषण-विधि के विकास में सफल हो गयी है। विटामिन बी-६ एक बहुप्रयुक्त औषध है। देश में अब तक इसका उत्पादन संभव नहीं था और प्रतिवर्ष लगभग ६४ लाख रुपये खर्च करके इसे विदेशों से आयात किया जाता रहा है।

परमाणु-घड़ी

पिछले दिनों समाचारपत्रों में छपा था कि फ्रांस की नौसेना ने स्विट्जलैंड की किसी फर्म से २ करोड़ फ्रांक देकर एक परमाणु-घड़ी खरीदी है। खबर में बताया था कि यह घड़ी इतना शुद्ध समय देगी कि तीन शताब्दियों में अधिक से अधिक एक सेकेंड का फर्क पड़ सकता है।

यह घड़ी विश्व की दो चल परमाणु-घड़ियों में से एक है। अब तक शुद्धतम इलेक्ट्रानिक घड़ियों का निर्माण क्वार्ट्ज क्रिस्टल की सहायता से होता था। उपर्युक्त परमाणु-घड़ी में 'रुबिडियम स्टैन्डर्ड' का प्रयोग किया गया है। इसे उसी स्विस फर्म ने तैयार किया है, जिसके साथ भारत सरकार ने बेंगलूर में इलेक्ट्रानिक घड़ियों के निर्माण के लिए समझौता किया है।

आकाश-धूल

हमारी पृथ्वी पर धीरे-धीरे धूल की परत जमती जा रही है। रूस के 'कीव इंस्टिटयूट आफ जियोकेमिस्ट्री' के शोधकर्ताओं के अनुसार, यह धूल अंतरिक्ष से गिरती है और अनादि काल से गिरती चली आ रही है। अनुमान है कि प्रतिवर्ष लगभग २० लाख मेट्रिक टन धूल हमारे ग्रह को इस तरह प्राप्त होती है। इस धूल के अत्यधिक बारीक कण पृथ्वी के वायुमंडल एवं परिवेश में समाते रहते हैं और पृथ्वी की चट्टानों में घुल-मिलकर उनका अंश बन जाते हैं।

रूसी शोधकर्ताओं ने अटलांटिक महासागर की तह तथा यूरोप की उच्चतम पर्वत-चोटियों के हिमनदों के संस्तरों का विस्तृत अध्ययन किया है, जिससे हमारी पृथ्वी और सौर मंडल की संरचना पर नया प्रकाश पड़ने की संभावना है। अब तक हमें अपने ग्रहों के वितलीय संस्तरों के घटक पदार्थों की संरचना का कोई प्रामाणिक ज्ञान नहीं है। अनुमान है कि इस अध्ययन से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह अनजाना पक्ष भी उजागर हो सकेगा।

ब्रेन ड्रेन

'अगर विकासशील देशों से डाक्टरों और प्रशिक्षित नर्सों का आना रुक जाये, तो अमरीका और ब्रिटेन के बहुत से अस्पताल ठप हो जायें।' ये शब्द राष्ट्रसंघ के महामंत्री डा. कुर्ट वाल्डहाइम ने 'ब्रेन ड्रेन' संबंधी एक नयी रिपोर्ट में लिखे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, अकेले १९७२ में ७,००० विदेशी डाक्टर अमरीका में आ बसे। अमरीका में एक डाक्टर तैयार करने में ५० हजार डालर खर्च होते हैं, इस तरह ३५ करोड़ डालर के खर्च की बचत अमरीका को उस एक वर्ष के डाक्टरी आयात से हो गयी। डा. वाल्डहाइम ने इसे विकसित देशों को अविकसित देशों का तोहफा कहा है। उनका कहना है कि विकसित देशों को इसकी क्षतिपूर्ति करनी चाहिये। उन्होंने यह भी सुझाव दिया है कि विकासशील देशों को सरकारी खर्चे पर बाहर जाकर पढ़ने और फिर वहीं बस जाने वाले डाक्टरों पर विशेष कर लगाना चाहिये, और डाक्टरों को देश छोड़ जाने से हतोत्साहित करना चाहिये।

गीत पाटी का रहस्य

मिट्टी की यह टूटी हुई पाटी, जिस पर सुम्मेर सभ्यता की कीलाकार लिपि में पंक्तियां अंकित हैं, कोई पंद्रह साल पहले भूमध्य सागर के किनारे सीरिया के रास-शम्रा शहर में मिली थी। इस पर क्या लिखा हुआ है, यह अब तक रहस्य ही था। अब यह रहस्य खोला है बर्कले विश्वविद्या-

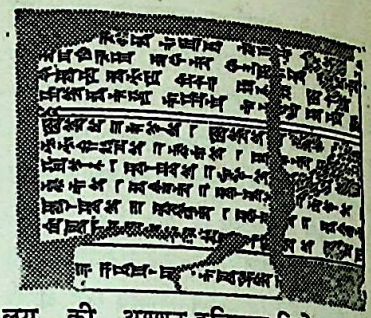

लय की अश्शुर-इतिहास-विशेषज्ञ डा. किल्मर ने। उन्होंने इसे पढ़कर बताया कि असल में यह एक प्रेमगीत और उसकी स्वरलिपि है। गीत पाटी की उपरली चार पंक्तियों में लिखा है, निचली छह पंक्तियों में उसकी स्वरलिपि है। गीत के साथ उस स्वरलिपि को भी पढ़ने में वे सफल हो गयीं। इसके बाद बर्कले के ही भौतिकीविज्ञ ने प्राचीन पुरातात्त्विक नमूनों के आधार पर सुम्मेर लोगों की ११ तार वाली वीणा तैयार की। उस पर गीत को बजाया गया। श्रोताओं का कहना है कि गीत की स्वरावली लोरी जैसी थी और कुल मिलाकर वह गीत पश्चिमी संगीत से ज्यादा मिलता था, न कि पूर्वी संगीत से। इस पर से यह कल्पना की जा रही है कि पाश्चात्य संगीत का मूल सुम्मेर संगीत से निकला है, न कि यूनानी संगीत से। इस तरह पाश्चात्य संगीत का इतिहास लगभग आठ सदी और पुराना हो जाता है। अभी तक प्राप्त प्राचीनतम यूनानी स्वरलिपियुक्त गीत ६०० ई. पू. का है, जब कि मिट्टी की इस तख्तियों का लेखनकाल इतिहासज्ञों ने १४०० ई. पू. के आस-पास कूता है।

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

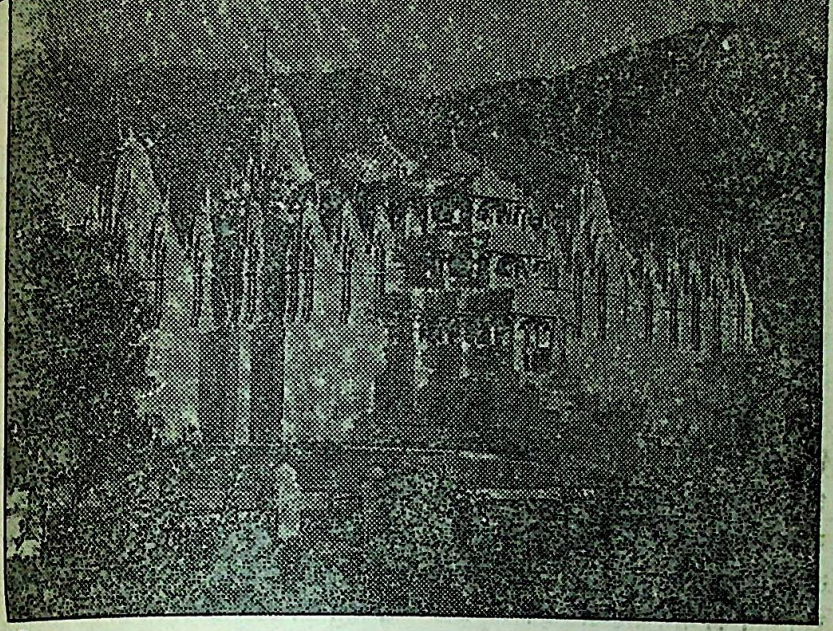

शौर्य, त्याग और बलिदान की गाथाओं से गुंजित राजस्थान में एक ओर शुष्क रेगिस्तान हैं, तो दूसरी ओर प्राकृतिक सुषमा से आच्छादित ऐसे स्थल भी हैं, जहां हरित पहाड़ियों में स्थित धवल मंदिरों की कलात्मकता संमोहित करती है।

इस प्रदेश के शासक हमेशा आपसी युद्धों में जूझते रहे थे। भूमि भी काफी बंजर थी; परंतु यहां के कलाकारों ने युद्ध और अभाव के दिनों में जो भव्य एवं कलात्मक निर्माण किये हैं, वे इस नियम का अपवाद हैं कि कला-विकास के लिए समृद्धि और शांति आवश्यक हैं।

राजस्थान के धर्मानुरागी जैनों ने अपनी भक्ति-भावना प्रदर्शित करने के लिए अनगिनत जैन मंदिरों का निर्माण कराया है और उनमें तीर्थंकरों व उनसे संबद्ध कथाओं को पाषाण में मूर्त करवाकर प्रतिष्ठा की है।

राजस्थान में पाली जिले के सादड़ी कस्बे से छह मील दूर दक्षिण-पूर्व में अरावली पर्वतमालाओं से घिरे राणकपुर या रणकपुर में सुरम्य प्रकृति की गोद में मघाई नदी के किनारे स्थित जैन चौमुखी मंदिर का मध्यकालीन शिल्प-वैभव दर्शनीय और अनूठा है। हरी-भरी पहाड़ियों के बीच मुख्य मंदिर का भवन जमीन से ३६ सीढ़ियों की ऊंचाई

शिल्प और स्थापत्य का कोष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर तीन मंजिल में स्थित है, जो ४८ हजार वर्गफुट की जमीन के घेरे में १९८ फुट की लंबाई और २०५ फुट की चौड़ाई में बना हुआ है। मंदिर का पूरा क्षेत्रफल ५९ बीघा है।

राणा कुंभा के शासन-काल में सेठ धन्नाशाह और रत्नाशाह नामक पोरवाल जैनों ने संवत् १४३३ में इस मंदिर की नींव डलवायी। सिद्धहस्त शिल्पियों ने ६५ वर्ष तक निरंतर श्रम करके मूक संगमरमर को शृंगार और भक्ति की रसधारा से ओतप्रोत रूपाकार दिया और १४९८ में मंदिर में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) की अभिराम मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा हुई।

कहा जाता है कि इन मंदिरों के निर्माण पर सेठ धन्नाशाह ने करीब ९० लाख स्वर्ण-

इस लेख के छायाकार : कांति राका; फोटो-सौजन्य : गोडवाड टाइम्स, रानी, जि. पाली, राजस्थान।

मोहरें खर्च कीं और राणा कुंभा ने १२ लाख रुपये दिये। इसलिए इस स्थान का नाम राणापुर रखा गया, जो आगे चलकर राणकपुर या रणकपुर बन गया।

गोडवाड के पंचतीर्थों में राणकपुर के अलावा नाडोल, नारलाई, बरकाना और मुछाला हैं, जहां कलामय जैन मंदिर हैं। परंतु राणकपुर का जैन मंदिर अधिक कलात्मक और ख्यात है। शिल्पकला की दृष्टि से यहां का चौमुखी मंदिर आबू के देलवाड़ा, कुंभारिया एवं चंद्रावती आदि के जैन मंदिरों की विकसित परंपरा में आता है।

संगमरमर की नफ़ीस नक्काशी

१,४४४ खंभों पर टिका यह भव्य तिमंजिला मंदिर स्थापत्य और मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना है। ४४ घुमावों में से होते हुए एक के बाद एक कलाकृति को निहारने के बाद भी थकावट अनुभव नहीं होती। २४ मंडपों और ५४ देवकुलिकाओं की पच्चीकारी दर्शनीय है। यहां का समूचा सौंदर्य दर्प में उद्धत नहीं, अर्चना में विनीत है।

इस मंदिर की प्रमुख प्रतिमा है प्रथम तीर्थंकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषभदेव की। खंभों की भरमार के बावजूद इस प्रतिमा के दर्शन सभी जगहों से होते हैं।

छतों की कलात्मकता देलवाड़ा मंदिरों की कला की टक्कर की है। जालियों और झरोखों की नक्काशी में कलाकारों का कठोर श्रम झलकता है।

मुख्य मंदिर के खंभों पर बेलबूटों के सुंदर काम के अलावा कल्पवृक्ष की पत्ती और सहस्रनाग की आलंकारिक बनावट बहुत चित्ताकर्षक है।

मंदिर की परिक्रमाओं की मूर्तियां ललित भावों से युक्त होने के कारण अधिक आकर्षित करती हैं। इनमें सरस्वती, विष्णु, रामकथा, कृष्णलीला, उपदेश देते योगी-तपस्वी और मिथुन-मूर्तियों का पशु-पक्षियों तथा बेलबूटों सहित सुंदर अंकन हुआ है।

मध्य-कालीन काव्य में वर्णित नारी की समस्त भाव-भंगिमाएं यहां अंकित की गयी हैं-शृंगारमग्न, सीमंत में आभूषण सजाते हुए, सुकोमल पांव में चुभे कांटे को निकालते हुए, एक पांव की पायल निकालते हुए तथा दूसरे पांव की निकालकर हाथ में लिये हुए (ताकि पायल की मधुर झंकार कहीं अभिसार में बाधक न हो), शिशु के साथ क्रीडा में निमग्न, प्रियसंग उल्लसित, संगीत-नृत्य में लीन, पक्षियों से बतियाते हुए आदि।

परिक्रमाओं के शिल्पों में शृंगार-विषयक शिल्पों की बहुलता है। गर्भगृह में तो प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव विराजमान हैं। धरणेंद्र नाग-नागिन के छत्रों से आच्छादित पार्श्वनाथ-प्रतिमा में सुंदर नक्काशी की गयी है।

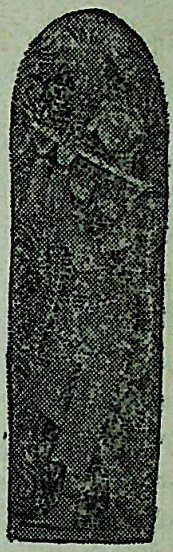

मूर्ति-सौष्ठव

कहा जाता है, एक गृहस्थ 'मुनि' बनने के पहले वेश्या के यहां जाया करता था। वहां के कामोत्तेजक दृश्यों को मंदिर के बाहर चारों ओर उसने इस प्रयोजन से बनवाया कि सांसारिक पुरुष उन्हें देखकर विरक्त हों और मंदिर के अंदर प्रवेश करके जब वे तीर्थंकर की विशाल तेजोमय प्रतिमा के दर्शन करें, तो उन्हें कौन-सा मार्ग अपनाना है—इसका निर्णय तत्काल हो जाये।

इस मंदिर के पास ही दो जैन मंदिर और हैं—एक भगवान पार्श्वनाथ का और दूसरा भगवान नेमिनाथ का। कहा जाता है कि पार्श्वनाथ-मंदिर का निर्माण किसी सेठ-साहूकार ने नहीं करवाया, वरन आदिनाथ-मंदिर का निर्माण करने वाले शिल्पकारों ने स्वयं उसका निर्माण किया। यह भी उल्लेख मिलता है कि यहां के मंदिरों के प्रधान-शिल्पी का नाम दीपा था। राणा कुंभा ने यहीं सूर्य-मंदिर और शिव-मंदिर निर्मित कराये। ये चारों मंदिर भी भव्य और कलात्मक हैं।

इन सभी मंदिरों की कला श्रेष्ठ कोटि की है। फिर भी चौमुखी मंदिर की ख्याति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वाधिक ह। इतिहासकार कर्नल टाड ने इन मंदिरों के कलावैभव को देखा और अपनी पुस्तक में लिखा :

'जब मैं जोधपुर से चला, तब दोपहर हो गयी थी। कुछ ही समय बाद मंदिर की ऊंची गुंबज दृष्टिगोचर हुई, मेरा हृदय आनंद से भर गया और पुरातन ज्ञानी (आर्श-मीदस) की तरह मैं अनायास कह उठा—मिल गया, मिल गया!'

इन मंदिरों तक पहुंचने के लिए बसों की समुचित व्यवस्था है। यह क्षेत्र उदयपुर से ९५ मील, जोधपुर से ८८ मील और मारवाड़ जंक्शन—अहमदाबाद रेल—लाइन के फालना स्टेशन से १४ मील की दूरी पर स्थित है। माऊंट आबू से भी सीधी बस जाती है। यदि यहां जेनरेटर लगाकर बिजली की व्यवस्था भी कर दी जाये, तो यात्रियों को और सुविधा हो जायेगी। अब तो धर्मशाला आदि का भी निर्माण हो गया है, जिससे यात्रियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

इस प्रकार इन मंदिरों का अप्रतिम सौंदर्य, भव्यता एवं विशालता देखते ही बनती है। वास्तुविदों तथा शिल्पकारों ने हथौड़ियों और छेनियों के सहारे अपने बुद्धि-चातुर्य, कला-कौशल, श्रम एवं दक्षता से पत्थरों में अनोखी सौंदर्यराशि बिखेर दी है। मानो कोई स्वप्न, कोई साधना एकाएक पत्थरों में सजीव हो उठी हो। ये मंदिर उदार राणा कुंभा, श्रद्धालु सेठ धन्नाशाह, प्रधान-शिल्पी दीपा और अन्य शिल्पकारों की श्रद्धा और साधना का परिचय दे रहे हैं।

[**'गोडवाड टाइम्स', रानी (राजस्थान) में छपे श्री भूरचंद जैन और श्री सुभाष रावल के लेखों के आधार पर।**]

*

दयनीय बनने के नुस्खे

पादरी हेगप्सील ने एक जगह लिखा है—'मनुष्य यदि चाहे तो बहुत सरलता से "दयनीय स्थिति" को पहुंच सकता है।' फिर कटु शब्दों में हेगप्सील लिखता है—'दयनीय बनने के लिए निम्नांकित कुछ अचूक नुस्खे :

अपने बारे में ही बोलिये ;
"मैं" शब्द का अधिक से अधिक प्रयोग कीजिये;
दूसरों को जी भरकर उपदेश दीजिये;
दूसरों से प्रशंसा मांगिये;
अपने लिए अच्छे और ऐश्वर्यपूर्ण दिनों की कामना करते रहिये;
अपने कर्तव्य कम से कम निभाइये;
दूसरों के प्रति, जितना संभव हो, अनुदार बनिये;
अपने आपसे बेहद प्यार कीजिये;
स्वार्थी बनिये।'.....

जरा सोचिये, क्या आप भी दयनीय स्थिति में जी रहे हैं?

—भूषण वनमाली

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुंकुम-कथा

पृथ्वीनाथ मधुप

कुंकुम, केशर अथवा केसर का वनस्पति-शास्त्रीय नाम है—क्रोकस सैटिवस। यह आइरिस परिवार का पौधा है। संस्कृत में इसका एक और नाम 'काश्मीरज' है; जिससे प्रकट होता है कि भारत में केसर पर कश्मीर की प्राचीन काल से ही इजारा-दारी है।

यों तो प्राचीन मिस्रवासी भी एक प्रकार के नकली केसर से परिचित थे; मगर असली केसर की खेती पुराने जमाने में एशिया माइनर के सिलीशिया, ईरान व कश्मीर में होती थी। कश्मीर में केसर की खेती पांपुर नामक गांव में होती है। पांपुर (प्राचीन पद्मपुर, जिसे महाराजा ललितादित्य के मंत्री पद्म ने बसाया था) श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय मार्ग पर श्रीनगर से सोलह किलोमीटर दूर है। पांपुर के अलावा कश्मीर के किश्तवाड में भी केसर की खेती होती है; लेकिन बहुत कम।

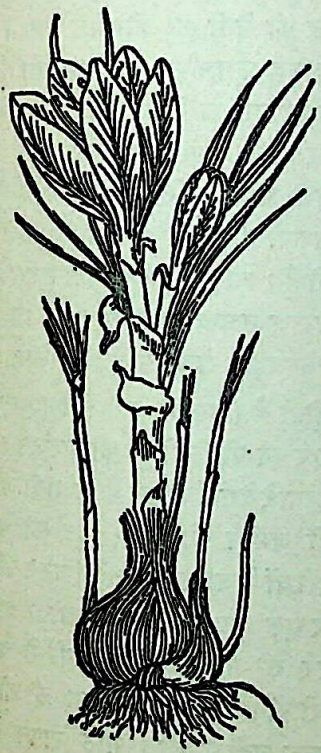

केसर का पौधा गांठ समेत

प्राचीन हिन्दू युग में कश्मीर में केसर की खेती काफी बड़े पैमाने पर होती थी; फलतः केसर का उत्पादन भी उसी अनुपात में होता था। यह बहुतों की आजीविका का साधन था और राज्य को इससे काफी आय होती थी। हिन्दू युग के बाद उसका उत्पादन काफी घट गया।

मुगलों के जमाने में फिर वृद्धि हुई। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आईने अकबरी' में अबल फजल ने लिखा है कि उस जमाने में कश्मीर में १०-१२ हजार बीघे भूमि में केसर उगाया जाता था।

अफगानों के समय में फिर ह्रास हुआ। डोगरा राजाओं ने इस ओर विशेष ध्यान दिया, विशेषतः महाराजा रणवीर सिंह ने।

बीच में अंग्रेजों के शासन-काल में तत्का-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीन सेटलमेंट कमिश्नर वाल्टर आर. लारेंस ने अपनी पुस्तक 'द वैली ऑफ कश्मीर' में सन १८८७ में किये गये सर्वेक्षण के आधार पर लिखा थ कि यहां ४,५२७ एकड़ भूमि में केसर की खेती की जा सकती है, लेकिन इसमें से केवल १३२ एकड़ में ही केसर उगाया जाता है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् इसके उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है। विदेशों में भी इसकी मांग बढ़ रही है।

केसर को हिन्दू मांगलिक द्रव्य मानते हैं। अनेक धर्मप्राण हिन्दू अपने ललाट पर इसका तिलक लगाते हैं। पुराने जमाने में किसी अभियान पर निकलने के पहले हिन्दू केसर का टीका लगाकर निकलते थे। आज भी वह परंपरा काफी हद तक कायम है। यहां तक कि जब महात्मा गांधी ऐतिहासिक दांडी-यात्रा आरंभ कर रहे थे, उनके माथे पर केसर का तिलक लगाया गया था। इसका प्रयोग दवाओं और सुगंधियों आदि में भी किया जाता है।

पांपुर में केसर की खेती कब और कैसे आरंभ हुई, इस संबंध में 'राजतरंगिणी' में एक कथा मिलती है। महाराज ललितादित्य के समय (६४९–७३६ ई.) में पद्मपुर में एक प्रसिद्ध वैद्य रहते थे। उनका नाम था वाघभट्ट। एक बार नागराज तक्षक नेत्र-रोग से पीड़त होकर मनुष्य का रूप धारण करके वाघभट्ट के पास इलाज कराने आये। बहुत दिनों के उपचार से भी कुछ लाभ न हुआ, तो वाघभट्ट को संदेह हुआ। उन्होंने तक्षक से उनकी असलियत पूछी।

जब उन्हें ज्ञात हुआ कि उनका मरीज तो वास्तव में एक नाग है, तो उन्हें यह समझने में देर न लगी कि तक्षक की आंखों में लगायी गयी औषधियां उसके मुख से निकलने वाली विषाक्त सांस के कारण ही निष्प्रभाव हो गयी होंगी। वाघभट्ट ने तुरंत तक्षक की आंखों पर पट्टी बांध दी, ताकि जहरीली सांसों से आंखों का बचाव हो सके। तक्षक शीघ्र ही ठीक हो गया और उसने वाघभट्ट को केसर की एक गांठ पारितोषिक के रूप में दी। वाघभट्ट ने प्याज की जड़ जैसी इस गांठ को रोपा और इस प्रकार पांपुर में केसर की खेती का श्रीगणेश हुआ।

अबुल फजल ने 'आईने अकबरी' में इस बात का उल्लेख किया है कि पांपुर के लोग केसर की खेती आरंभ करने से पहले 'ज्यवन' नामक गांव के निकट निर्मल जल वाले 'तक्षकनाग' नामक एक बड़े कुंड की यात्रा करते हैं। आज भी अनेक लोग इस कुंड पर नागराज तक्षक की पूजा करने जाते हैं।

केसर की खेती ऊंची और समतल भूमि में होती है। इसकी खेती के लिए एक खास प्रकार की पीली मिट्टी की जरूरत होती है, जो हमारे देश में पांपुर में ही पायी जाती है। पहले जमीन को ५x५ फुट की वर्गाकार क्यारियों में बांटा जाता है, फिर उसके चारों ओर एक फुट गहरी नाली खोदी जाती है। केसर की गांठ उन क्यारियों में चार इंच गहरी रोपी जाती है। सिंचाई की कोई खास जरूरत नहीं पड़ती। गांठ रोपने के बाद किसान को ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़ती। न खाद-पानी ही देना पड़ता है। अलबत्ता जमीन की गोड़ाई जरूर दो-चार बार करनी पड़ती है, जिसमें इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि गांठों को क्षति न पहुंचे। गांठों की रोपाई जुलाई-अगस्त में होती है।

केसर का पौधा काफी छोटा होता है — करीब छह इंच ऊंचा। इसके पत्ते घास जैसे होते हैं। अक्टूबर के मध्य में केसर के पौधों में फूल लगते हैं, जो दूर से देखने पर कुमुदिनी का आभास देते हैं। छह पंखुरियों (तीन बड़ी और तीन छोटी) वाले ये फूल अतीव मनोहर एवं बैंगनी रंग के होते हैं। शरत्-काल की कुनकुनी धूप में दूर तक फैले हुए केसर-पुष्पों को देखना बड़ा ही सुखद अनुभव होता है। कहते हैं कि कार्तिक पूर्णिमा की चांदनी में केसर-पुष्पों को देखने में विशेष आनंद आता है।

केसर-कुसुमों को तोड़कर धूप में सुखाया जाता है। फिर प्रत्येक पुष्प से तीन डंडियों (पुंकेसरों) को हाथ से अलग करते हैं। डंडियों का ऊपरी भाग लाल-नारंगी रंग का होता है और निचला भाग श्वेत। केसर का ऊपरी हिस्सा 'शाही जाफरान' कहलाता है और यही प्रथम श्रेणी का केसर है। निचला हिस्सा द्वितीय श्रेणी का केसर है, जो 'मोंगरा' या 'मोंगला' कहलाता है।

शाही जाफरान तथा मोंगरा चुनने के बाद फूलों को छड़ियों से धीरे-धीरे पीटा जाता है और पानी में डाला जाता है। जो हिस्सा

केसर-पुष्प बीनती कश्मीरी कृषक-ललनाएं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पानी में डूब जाये, उसे इकट्ठा करके रखा जाता है। जो भाग तैरता रहे, उसे फिर से धूप में सुखाकर पीटा जाता है और पुनः पानी में डाला जाता है। यह क्रम तीन बार दोहराया जाता है।

पानी में डूबे हुए केसर को 'निवल' कहते हैं। उक्त क्रम के दोहराने से घटिया किस्म की निवल बनती है। पहली बार पीटने से प्राप्त निवल को तीसरी बार प्राप्त निवल से मिलाया जाता है और घटिया किस्म का केसर बनाया जाता है, जो मोंगरा की अपेक्षा हल्के रंग एवं कम सुगंध वाला होता है। इसे 'लच्छा' कहा जाता है। केसर की मिलावट को परखना बहुत मुश्किल काम है। केवल बहुत अनुभवी एवं तेज नजर का आदमी ही मिलावट को परख सकता है।

माना जाता है कि केसर की गांठ रोपने पर उससे अधिक से अधिक दस वर्ष तक उपज होती है। लेकिन पांपुर के वृद्ध एवं अनुभवी केसर-उत्पादकों का कहना है कि एक बार की गांठ से १४ वर्षों तक फसल ली जा सकती है। होता यह है कि पुरानी गांठ सड़ जाती है। और नयी गांठ अपने आप ही पैदा हो जाती है।

केसर की बीज-गांठों को रोपने के लिए खास तरह की ढलुआ जमीन की जरूरत होती है। तीन वर्ष बाद बीज-गांठों को निकालकर छोटी-छोटी वर्गाकार समतल क्यारियों में रोपा जाता है। केसर की पैदावार बंद हो जाने पर उन खेतों में आठ वर्षों तक गेहूं और जौ की खेती होती है।

विदेशों में स्पेन, फ्रांस, सिसली एवं ईरान में केसर की पैदावार होती है। स्पेन इसका सबसे बड़ा निर्यातक है। वहां अरबों ने इसकी खेती १०वीं सदी में आरंभ की थी। बीच में कुछ समय लोग इसे भूले रहे। फिर क्रूसेडरों ने वहां इसका फिर प्रचलन किया। अंग्रेजी का 'सैफ्रन' शब्द अरबी के 'जाफरान' शब्द से निकला है।

अठारहवीं शताब्दी तक इंग्लैंड की वाल्डन नामक जगह में भी इसकी खेती होती थी। कहते हैं, इसकी गांठ एक यात्री त्रिपोली से छिपाकर वहां लाया था। यह वाल्डन लंदन से ४४ मील दूर है और आजकल सैफ्रन वाल्डन के नाम से जाना जाता है।

केसर के मोहक रंग व सौरभ का कारण है उसमें रहने वाली क्रोसिन, क्रोसिटिन, कैरोटिन, लिकोपिन, जिथाक्सैंथिन और पिक्रोक्रोसीन नामक रासायनिक वस्तुएं तथा सुगंधित तेल।

—द्वारा, श्री मदनलाल,
३४७, तेलीवाड़ा, दिल्ली-३२

*

सर्दी के दिन थे और सुमित्रानंदन पंत ढेर सारे कपड़े अपने ऊपर लपेटे थे। यह देखकर मित्र बच्चनजी ने हंसी करते हुए पूछा—'पंतजी! आप तो पहाड़ी हैं, फिर इतने सारे गर्म कपड़े क्यों पहनते हैं?' पंतजी ने हंसते हुए उत्तर दिया—'मैं पहाड़ी तो हूं, पहाड़ तो नहीं हूं।'

—मेवाराम गुप्त

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वभारती (शांतिनिकेतन) में राष्ट्रपति राधाकृष्णन् आ रहे हैं और उसके कुलपति डा. सत्येंद्रनाथ वसु (सत्येन बोस) रिक्शे में बैठकर उनके स्वागतार्थ आयोजित सभा में शामिल होने को जा रहे हैं। सुरक्षा-अफसर उन्हें नहीं पहचानता। वह रिक्शे को रास्ते में ही रोककर पीछे ठेल देता है। वसु महोदय अपना भारी शरीर लिये पैदल ही सभास्थल को चल पड़ते हैं। तभी डा. राधाकृष्णन् की नजर उन पर पड़ती है और तुरंत वे उतरकर उनके पास आते हैं और उनके कंधे पर हाथ रखकर चल पड़ते हैं। सुरक्षा-अफसर बेचारा पानी-पानी हो जाता है!

और एक घटना, वहीं की। डा. सुधीन घोष अंग्रेजी के बहुत अच्छे प्राध्यापक एवं लेखक हैं। दोष सिर्फ इतना है कि बेचारे पाश्चात्य रीति-नीति के कुछ अधिक भक्त हैं। शांतिनिकेतन में 'इंग्लिश सोसायटी' स्थापित करते हैं। शाम को आधुनिक फैशन के रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर और हाथ में खूबसूरत छड़ी लेकर घूमते हैं। एक बार एक नाटक की रिहर्सल के वक्त कलाकार-कलाशिक्षक रामकिंकर और उनमें कुछ मनोमालिन्यपूर्ण झड़प हो जाती है। कलाकार के भक्त छात्र उद्दंडता से डा. सुधीन घोष पर हाथ छोड़ बैठते हैं।

कुलपति वसु को रवींद्र के 'आश्रम' में यह अशिष्टता सह्य नहीं होती। 'आनंद बाजार पत्रिका' आदि कुछ समाचारपत्र छात्रों का पक्ष लेकर बसु और घोष के खिलाफ बाका-

श्रद्धांजलि :

श्रेष्ठ विज्ञानी और श्रेष्ठ मानव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदा 'प्रचार' शुरू कर देते हैं। कुलपति बसु तंग आकर त्यागपत्र दे डालते हैं। विश्वभारती से विदाई के समय वे कहते हैं– 'मेरा किसी से वैर नहीं है, न किसी पर क्रोध, न किसी से झगड़ा। मैंने कभी किसी का अहित नहीं सोचा। जो ठीक और सच समझा, वही करने की चेष्टा की है सदा।'

यही बात तब थी, जब वे कलकत्ता विश्वविद्यालय में विज्ञान-संकाय के अध्यक्ष थे। उस वर्ष एम. ए. व एम. एस-सी. के छात्रों ने चाहा था कि परीक्षा की तारीखें आगे को बढ़ा दी जायें। कला-संकाय के अध्यक्ष से तो छात्रों ने मनवा लिया, लेकिन बसु महोदय ने साफ कह दिया – 'तुम लोगों की परीक्षा बाद में लेने का कोई भी युक्तिसंगत कारण मुझे नहीं दीखता। अतः मैं राजी नहीं हो सकता।' छात्रों के नेता ने अपनी शान रखने के लिए अनशन की धमकी दी, तो उन्होने हंसकर कहा कि तुम लोगों के अन्याय के खिलाफ मुझे भी तब ऐसा ही करना पड़ेगा।

छात्रनेताओं ने उनके घर के घेराव का डर दिखाया। बस, फिर तो बसु महोदय की मुखमुद्रा बदल गयी। वे अपनी गंभीर आवाज में कड़क के साथ बोले–देखो, मैंने जीवन में न तो कभी अन्याय किया, न सहा। जब तक मुझे यह ठीक नहीं लगता, मैं राजी नहीं हो सकता। मैं विश्वविद्यालय छोड़ने को तैयार हूं; किंतु तुम लोगों का अन्याय किसी भी तरह सहने को प्रस्तुत नहीं।' छात्र चुपचाप कमरे से निकल गये। परीक्षा तिथियां बदली नहीं गयीं।

कवि विष्णु दे ने सत्येन बसु को 'मनीषा का मिथकीय चरित्र' कहा था। उपनिषदों में वर्णित ज्ञानी महात्मा के समान जीवन के अंतिम दिन तक उनमें निश्छल सरलता और असीम जिज्ञासा वृत्ति बनी रही।

विज्ञान में गणित-भौतिकी उनका अपना विषय था, जिसमें वे अल्बर्ट आइंस्टाइन को अपना गुरु मानते थे। एकलव्य की तरह उन्होंने इन विदेशी द्रोणाचार्य को अपनी महान 'गुरुदक्षिणा' भी दी थी। जिस दिन उनकी मृत्यु की खबर सुनी, उसी दिन बसु ने बड़े परिश्रम से तैयार किया हुआ अपना एक निबंध, जिसमें 'एकीकृत क्षेत्र' की विवेचना करते हुए आइंस्टाइन की कई भ्रांतियां दिखायी थीं, नष्ट कर दिया। यह निबंध वे सबसे पहले आइंस्टाइन को दिखाना चाहते थे; परंतु उनके देहावसान के बाद बसु महोदय उसे प्रकाशित करने से भी कतरा गये। वैज्ञानिक दृष्टि से यह शायद ठीक नहीं था, लेकिन उन्हें इसका कभी अफसोस नहीं हुआ। (इस विषय पर उनका कार्य शायद अब शीघ्र ही सामने आयेगा।)

यों आलोचकों का कहना था, वे बड़े 'आलसी' थे.....तभी तो इतना कम लिखा; पिछले तीस वर्ष में आरंभिक बीस वर्षों के समान काम नहीं किया; पिछले पंद्रह वर्ष से वे विज्ञान के राष्ट्रीय प्राध्यापक थे, लेकिन इस दौरान देश को उन्होंने क्या दिया? ..... इन आलोचकों को क्या पता कि बसु महोदय अपना काम छोड़कर किस तरह हफ्तों तक दूसरों के काम में मदद करते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकीकृत क्षेत्रतत्त्व (यूनिफाइड फील्ड थियरी) के अतिरिक्त, उनकी वैज्ञानिक देन वृत्तच्छेदीय समीकरण, अपरिज्ञात भौतिक मूलतत्त्व कणों का अनुनाद, क्वांटम क्षेत्र-तत्त्व की आधारभूमि के निर्णय और मूल पदार्थ-कणों के पारस्परिक साम्य तथा ऐसे ही अन्य कितने ही अति जटिल विषयों में रही है। ऊष्मिक दीप्ति (थर्मो-ल्युमिनिसेंस) के बारे में उनके शोधछात्रों का काम विश्व-विदित है। उनकी वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में 'सायंस टुडे' (फरवरी १९७४) में विशद लेख छपा है।

इस साल १ जनवरी को उनकी अस्सीवीं जन्मतिथि के अवसर पर वसु-सांख्यिकी की पचासवीं वर्ष गांठ भी मनायी गयी थी। प्रधान मंत्री के प्रयत्न से एक राष्ट्रीय समिति भी रची गयी, जो आगामी जुलाई में बेंगलूर में एक महीने तक भौतिकी की मूलतात्त्विक विवेचना करायेगी और आगामी दिसंबर में एक अंतरराष्ट्रीय भौतिकी संमेलन का आयोजन करेगी और सत्येंद्र बसु के जीवन-कार्य का परिचय प्रकाशित करेगी।

स्वयं सत्येंद्रनाथ विज्ञान के तथ्यों एवं तत्त्वों की जानकारी सर्वसाधारण में फैलाने के हिमायती थे। वे चाहते थे कि जनसाधारण अपनी मातृभाषा के जरिये संसार की आधुनिकतम ज्ञानराशि पा ले। इसी दृष्टि से उन्होंने आज से पचीस वर्ष पूर्व 'ज्ञान ओ विज्ञान' पत्रिका तथा 'वंगीय विज्ञान परिषद' का प्रवर्तन किया था; स्वयं स्नातकोत्तर कक्षाओं को बंगला में पढ़ाया था।

उन्होंने अपने दीक्षांत-भाषणों में भी कहा कि स्वतंत्र भारत में ऐसे कुछ विश्वविद्यालय अवश्य खोले जायें, जिनमें सामाजिक, वैज्ञानिक एवं विज्ञानतात्त्विक सभी विषयों का उच्चतम स्तर तक पठन-पाठन मातृभाषा में ही हो। यों वे अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इतालवी एवं संस्कृत जानते थे और विषय-विशेष के अध्ययनार्थ किसी भी भाषा को सीखने के समर्थक थे; किंतु संचित ज्ञान को अपनी मातृभाषा में ही परोसने के पक्षपाती थे।

वे मानते थे कि देश में मौलिक रचनाशील वैज्ञानिक प्रतिभा का उत्तरोत्तर उदय तभी हो सकता है, जब धर्म की तरह विज्ञान भी जन-मानस में अपना घर बनाये, और गिने-चुने लोगों की ही बपौती न बना रहे। इसके लिए कस्बों में और गांवों में भी मंदिर-मस्जिदों की तरह विज्ञान-गृहों की जरूरत है, तभी हमारी जहालत, हमारा दारिद्र्य, हमारा पिछड़ापन और हमारी अव्यवस्था मिटेगी।.....

किसी को, चाहे वह कोई भी हो, वे कभी यह महसूस नहीं होने देते थे कि वह 'छोटा' या 'कम जानकार' है। वे कहा करते थे—'प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति अनंत संभावनाओं का आगार है, तुम पारखी तो बनो। तुच्छ अहं की कारा में कैद न रहो। मानवीय सद्भाव का साथ न छोड़ो। आत्मविश्वास भी न खोओ। स्वतःस्फूर्त सहानुभूति को जागृत रखो।' कर्ज लेकर भी वे जरूरतमंद की मदद करते थे। जीवन में सब-कुछ के प्रति अनुराग और साथ ही एक तरह की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्येंद्रनाथ बसु का वैज्ञानिक कार्य

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्ष भौतिकी के इतिहास में संभवतः सर्वाधिक स्मरणीय रहेंगे। उन दिनों विकिरण के स्वरूप को समझने के जोरदार प्रयत्न चल रहे थे। ऊंचे ताप पर की कृष्णिका (ब्लैक बॉडी) में से विकिरण निकलता है, जिसमें भिन्न-भिन्न आवृत्ति वाले विकिरण की प्रखरता (इंटेन्सिटी) भिन्न-भिन्न होती है। मूल प्रश्न था—प्रखरता एवं आवृत्ति का ताप के साथ संबंध स्थापित करना।

दिसंबर १९०० में मैक्स प्लैंक ने एक नियम खोजा। उन्होंने मुख्यतः दो बुनियादीबातों को मानकर यह नियम प्रस्थापित किया था—१. विकिरण कणों का समूह है (इन कणों को 'फोटॉन' कहा गया); २. कणों के बीच ऊर्जा का अंतरण (ट्रान्सफर) सतत न होकर किसी छोटी इकाई के पूर्ण गुणन द्वारा ही हो सकता है। इन मान्यताओं द्वारा प्लैंक ने आज के क्वांटम सिद्धांत की आधार शिला रखी।

इसी सिद्धांत पर प्लैंक के तरीके के अतिरिक्त अन्य तरीकों से भी पहुंचने के प्रयास किये गये। १९१७ में आइंस्टाइन ने विकिरण और पदार्थ के बीच संतुलन की गतिकी पर आधारित प्लैंक-नियम प्राप्त किया।

सत्येंद्रनाथ बसु ने भी इसी प्लैंक-नियम को एक अन्य तरीके से १९२४ में सिद्ध किया। ऐसा करते हुए उन्होंने ऐसी कुछ मान्यताएं स्थापित कीं, जो आगे चलकर क्वांटम सांख्यिकी की आधारशिला बनीं।

उन्होंने कृष्णिका-विकिरण को मुक्त फोटॉनों की गैस माना। इस गैस के गुण प्राप्त करने के लिए उन्होंने सांख्यिकी का प्रयोग किया। तब तक उपयोग में आ रही मैक्सवेल-बोल्ट्ज़मन सांख्यिकी का उपयोग करके प्लैंक-नियम पर पहुंचना संभव नहीं था, यह बात उन्हें ज्ञात थी। अतः उन्होंने उसे छोड़कर अन्य सांख्यिकी का प्रयोग किया, जो आगे चलकर उनके और आइंस्टाइन के नाम पर बोस-आइंस्टाइन सांख्यिकी कहलायी।

उनके कार्य को समझने के लिए निम्न उदाहरण लीजिये :

मानिये कि दो प्रकार की गेंदें तीन खड्डों क, ख और ग में रखनी हैं। अगर दोनों गेंदों में भेद किया जा सके (जैसे एक पर सफेद और दूसरे पर काला रंग लगाया जा सके), तो निम्न परिस्थितियां संभव हैं :

चरम निर्लिप्तता उनकी विशेषता थी। यही था उनका स्वभाव और स्व-धर्म।..... महाविज्ञानी से पहले वे मानव थे।.....

उन्होंने कभी देशी-विदेशी विश्वविद्यालयों से डिग्रियां अथवा वैज्ञानिक संस्थानों से प्रशस्तियां बटोरने की चेष्टा नहीं की।

मई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१. दोनों गेंदें क खड्डे में
२. दोनों गेंदें ख खड्डे में
३. दोनों गेंदें ग खड्डे में
४. सफेद गेंद क खड्डे में, काली गेंद ख खड्डे में
५. सफेद गेंद ख खड्डे में, काली गेंद ग खड्डे में
६. सफेद गेंद क खड्डे में, काली गेंद ग खड्डे में
७. काली गेंद क खड्डे में, सफेद गेंद ख खड्डे में
८. काली गेंद ख खड्डे में, सफेद गेंद ग खड्डे में
९. काली गेंद क खड्डे में, सफेद गेंद ग खड्डे में

परंपरागत सांख्यिकी में उपर्युक्त नौ अवस्थाएं भिन्न अवस्थाएं हैं। इस सांख्यिकी में कणों (ऊपर के उदाहरण में गेंदों) में एक प्रकार के होते हुए भी आपस में भेद किया जा सकता है। अगर गेंदों में भेद करना संभव न हो, तो उपर्युक्त ४ और ७ अवस्थाएं समान मानी जायेंगी। इसी प्रकार ५ और ८ अवस्थाएं और ६ और ९ अवस्थाएं समान मानी जायेंगी। सत्येंद्रनाथ बसु ने कहा कि दो कणों में भेद करना संभव नहीं (क्योंकि ऐसा करने के लिए किसी प्रयोग की आवश्यकता है, जो किया नहीं जा सकता)। इस मान्यता के आधार पर उन्होंने प्लैंक-नियम प्राप्त किया।

आगे की खोज ने यह दरशाया कि ऐसे कई कण हैं (फोटॉन के अतिरिक्त) जिन पर बोस सांख्यिकी लागू होती है। ऐसे कणों को 'बोसॉन' कहा जाता है।

एक अन्य खोज ने दिखाया कि ऐसे कण भी होते हैं, जिन पर बोस-आइंस्टाइन सांख्यिकी लागू नहीं होती। इन कणों पर फर्मी-डिराक द्वारा प्रतिपादित सांख्यिकी लागू होती है। इन कणों को फर्मियॉन कहा जाता है। इस सांख्यिकी में १, २ और ३ अवस्थाएं निषिद्ध हैं।

अब तक की स्थिति इस प्रकार है। विश्व में जितने भी कण हैं, वे बोस-आइंस्टाइन या फर्मी-डिराक सांख्यिकियों में किसी एक सांख्यिकी को मानते हैं। पूर्ण स्पिन वाले कण बोस-आइंस्टाइन सांख्यिकी मानते हैं और अर्द्धविषम स्पिन (जैसे १/२, ३/२, ५/२.....) वाले कण फर्मी-डिराक सांख्यिकी मानते हैं। वर्तमान भौतिकी में यह विभाजन करने का श्रेय निस्संदेह सत्येंद्रनाथ बसु के मूल कार्य को है। —मोहन रामचंदाणी

विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियां, रायल सोसायटी का फेलोशिप (१९५८), पद्म-विभूषण अलंकरण (१९५४) सब स्वयं ही उनके द्वारे आये। जीविकोपार्जन में उन्हें अपना बहुत-सा समय लगाना पड़ा, परंतु किसी से शिकायत नहीं की; और १९५९ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब सरकारी राष्ट्रीय प्राध्यापक-वृत्ति शुरू हुई तो सिर्फ इतना कहा—'मुक्ति मिली अब। किंतु मनीषा तो बहुत कुछ म्लान हो चली है। आंखों की रोशनी भी कम हो रही है। फिर भी पुकार तो सुननी ही पड़ेगी।'

इसी वर्ष २२ जनवरी को कलकत्ता में विज्ञान कांग्रेस की विज्ञान-प्रदर्शनी में अपनी वक्तृता देने आये थे, तब किसने सोचा था कि यह उनकी आखिरी पुकार है! उस दिन भी उनके भाषण का मूल स्वर यही था कि विज्ञान के सर्वांगीण प्रचार-प्रसार में ही देश का कल्याण है।

आइंस्टाइन ने उनके दो लेख स्वयं अनूदित करके जर्मन पत्रिकाओं में छपवाये थे। पेरिस में मदाम क्यूरी की प्रयोगशाला में भी वे एक वर्ष रहे थे और वहां एक्सरे और मणिभ-विज्ञान (स्फाटिकी) से संबंधित समस्याओं पर वे मौलिक गवेषणाएं कर रहे थे। मदाम क्यूरी को आश्चर्य हुआ था कि वे संपीडन विद्युत्-प्रभावों की कई कठिन माप-जोख कैसे कर सके थे! मगर वे सैद्धांतिक विज्ञान में ही खोये नहीं रहे। उन्होंने एक रासायनिक प्रक्रिया द्वारा सल्फोनामाइड की आंतरिक आणविक संरचना में ऐसा परिवर्तन संभव कर दिया कि उससे एक ऐसा यौगिक बन सका, जो आंखों की दवा के रूप में काम आता है। कपूर बेचने वाले एक व्यापारी को उन्होंने ऐसा तरीका बताया, जिससे कपूर की सफेद टिकियां तैयार हो सकें।

साहित्य और संगीत, इतिहास और भाषा-विज्ञान सभी के महारथी उनकी प्रतिभा का लोहा मानते थे। रवींद्रनाथ ने अपनी पुस्तक 'विश्वपरिचय' उन्हीं को अर्पित की थी। युवावस्था से ही वे 'सबुज-पत्र' दल के सदस्यों में रहे। 'परिचय' की गोष्ठियों में वे प्रायः शामिल होते थे। अन्नदाशंकर राय की 'बारह-आदमी' बैठकों में भी उनका योगदान रहता था। एसराज बजाने में वे उतने ही उस्ताद थे, जितने आइंस्टाइन वायलिन बजाने में थे। 'झंकार' (संगीत-चक्र) और 'कैलकटा अकादमी आफ इंडियन म्यूजिक' के कई बार सभापति चुने गये थे।

कभी वे जापानी शिल्पकला का अध्ययन करते थे तो कभी महर्षि रमण की जीवनी पढ़ते; और कभी दांते के महाकाव्य का मूल भाषा में रसास्वादन करते। डा. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने कई बार स्वीकार किया है कि उन्हें अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'बंगला भाषा की उत्पत्ति और विकास' की रचना के दौरान सत्येन से कई महत्त्वपूर्ण सुझाव मिले थे।

अन्नदाशंकर राय ने उन्हें इतिहास का 'दरदी विवेचक' कहा है, जो समालोचक से कहीं ज्यादा अच्छा होता है। श्री राय ने उन्हें प्राकृत व्याकरण, भास, कालिदास और विशाखदत्त के नाटक पढ़ते भी देखा था और 'फ्रांस की क्रांति का आंखों देखा वर्णन' भी। उनका कहना है कि 'विद्या, चाहे वह कोई भी हो, सत्येंद्रनाथ की श्वासवायु है।'

साधक दिलीप कुमार राय ने उनके बारे में कहा है—'मिलने-जुलने से वह बहुत भई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ संग्रह करता था इसीलिए तो इतना दे पाता था।'..... 'कितने ही तो अपनी समस्याओं के समाधानार्थ सत्येन बसु के यहां धरना दे डालते थे! इतना यारबाश मुझे अपने पिता को छोड़कर दूसरा कभी नहीं दिखाई पड़ा। एक बार जिसे उसने दोस्त बना लिया, उसकी खोज-खबर लेना वह अपना फर्ज समझ लेता था।'

स्व. धूर्जटिप्रसाद मुखर्जी ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि सत्येन बसु १९४४ में जब भारतीय विज्ञान कांग्रेस के सभापति होकर दिल्ली गये थे, तो वायसराय लार्ड वैवेल के यहां रात्रिभोज के निमंत्रण को नहीं निबाह पाये, चूंकि इसी बीच उन्हें अपना एक बचपन का दोस्त मिल गया था और उनकी वह रात उस मित्र के परिवार के साथ बंगाली भोजन और गपशप में बीती थी।

उनका एक मित्र एवरेस्ट शिखर के प्रथम अन्वेषक राधानाथ शिकदार के बारे में तथ्य एकत्र करने में उनकी मदद चाहता था। सत्येन बसु ने दिल्ली के राष्ट्रीय अभिलेखागार से उनके लिए बहुमूल्य सूचनाएं और अपने खर्चे पर एक फोटो जुटा दिये।

लेकिन अपने ही एक अंतरंग मित्र की एक योजना के विरोध में संमति देने में भी उन्होंने हिचक नहीं दिखायी, यद्यपि मित्र ने उनसे सहमति लिखने का आग्रह किया था, चूंकि सरकार से उस पर कई लाख रुपये मिलने वाले थे। उन्हें चीन की सप्तदिवसीय यात्रा पर निमंत्रित किया गया था। परंतु पहले दिये गये आश्वासन के विरुद्ध जब उनसे कहा गया कि वहां से आकर उन्हें उसके बारे में लिखना होगा, तब वे वहां जाने को राजी नहीं हुए। उनका उत्तर था— 'सात दिन में कोई इतने बड़े देश का "नाड़ी-नक्षत्र" क्या समझ सकता है!'

उनके बड़े बेटे ने शिवपुर के इंजीनियरिंग कालेज और खड्गपुर के आइ-आइ-टी दोनों में दाखिले की अर्जी भेजी। आप उस वक्त विदेश जा रहे थे। दोनों संस्थाओं के प्रधानों से निजी परिचय था, लेकिन अपने लड़के के लिए एक शब्द नहीं कह गये। बोले— 'अपनी योग्यता के बल पर प्रवेश पाने की कोशिश करो।'

सन १९३९-४० में वे ढाका विश्वविद्यालय में प्रोफेसर तो थे ही, ढाका हाल के 'प्रोवोस्ट' भी थे। सांप्रदायिक दंगा होने पर कई सौ स्त्रियों-बच्चों की उन्होंने रक्षा की। १९४६ में कलकत्ते के दंगे में भी वे अपनी कार लिये अल्पसंख्यकों की मदद करते फिरे। अपने जैसी मनोवृत्ति के एक साहसी छात्र को उन्होंने यह कहकर बांहों में भर लिया— 'ज्ञानी और गुणी तो अली-गली सर्वत्र मिलते हैं; लेकिन साहसी लड़के कहां और कितने हैं हमारे यहां?'

नेताजी सुभाषचंद्र बसु के अंतिम देशत्याग के बाद ढाका विश्वविद्यालय की पत्रिका 'शतदल' में उनकी एक फोटो छपी। तब छात्र-संपादक को पुलिस से सत्येन बसु ने ही बचाया था। १९४२ में छात्रों की जिद पर उन्होंने ढाका हाल पर तिरंगा झंडा भी फहराने दिया था। और नेताजी का बर्लिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से प्रसारित प्रथम रेडियो भाषण भी ढाका विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला के उच्च-शक्तिसंपन्न रिसीवर पर सुना जाकर ही ढाका में और बाद में भारत में प्रचारित हो पाया था। बसु महोदय इसके विषय में विशेष कुछ पूछे जाने पर बस मुस्करा देते थे।

मगर काम में डूबने पर उन्हें दीन-दुनिया की सुध नहीं रहती थी। तब वे किसी से भी कह सकते थे– 'भागो, भागो।' जो उन्हें जानते थे, वे इसका बुरा नहीं मानते थे। कभी-कभी तो किसी को स्वयं बुलाकर भी उसके आने पर यह खयाल नहीं आता कि इसे किसलिए बुलवाया था। यानी विज्ञानी के साथ जो भुलक्कड़पन जोड़ा जाता है, उससे वे बरी नहीं थे।

उनका जीवन-दर्शन भी स्पृहणीय था। विज्ञान को वे सिर्फ स्वदेश ही नहीं, सारी मानवजाति के हित में प्रयुक्त देखना चाहते थे। अतींद्रिय जगत की ओर उनका कोई झुकाव या रुझान नहीं था; किंतु दूसरों को वे इसमें निरुत्साह नहीं करते थे। उनका कहना था कि अप्रत्याशित विभूतियों की ललक में बाकी सब-कुछ को छोड़ना श्रेयस्कर नहीं होता। 'सृष्टि का रहस्य तो अभी कोई स्पष्ट नहीं कर पाया।'

इसलिए वे कहते थे–'विज्ञानी के लिए तो यह जगत सदा ही विस्मयकर रहता है। अपने कौतूहल और जिज्ञासा को जिलाये रखना ही उसका परम काम्य होता है। यों वह जानता है कि प्रत्येक अभिज्ञता की व्याख्या प्राकृतिक नियमों द्वारा ही नहीं की जा सकती; लेकिन उसे तो लाखों-करोड़ों जीवों में दीख पड़ने वाला प्रकाश और उसके जरिये युक्ति और संगति की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ना अच्छा लगता है।'

आत्ममुक्ति के अन्वेषण के नाम पर संसार को मिथ्या मानने वालों के वे कभी पक्षधर नहीं रहे। ऊंचे विचार उचारते हुए निम्नस्तरीय जीवन जीना उनकी निगाह में मात्र भ्रम की बात थी। व्यक्ति की अपेक्षा सारे समाज और देश तथा मानवता का भला उत्तरोत्तर जीवनलक्ष्य बनता जाये, यह उनका आस्था- बिंदु था। बुद्ध और विवेकानंद उन्हें प्रिय थे। वे कहते थे कि कीचड़ में फंसे मानवता के रथ के पहिये सरकाने के लिए हमें अपनी कमर कसकर तैयार रहना चाहिये। 'मानव-सभ्यता को हमें प्रकृति के शक्तिकोष से संगृहीत ज्ञान पर आधारित करना है।'

वे मानते थे, आदमी को आदमी समझकर आदमियत से बरताव न करने को त्याज्य समझना विज्ञान की कृपा से हुआ है। राष्ट्र एवं धर्म, इन दोनों से ऊपर उठकर मानव-जीवन के अच्छे भविष्य की ओर सक्रिय कदम विज्ञान के द्वारा ही संभव हुए हैं। यदि कभी सार्वभौम 'मानव' की परिकल्पना व्यवहार्य बनायी जा सकी, तो वह विज्ञान से ही हो सकेगी। 'सबके ऊपर मानव है' इस कविकल्पना को विज्ञान ही यथार्थ के धरातल पर लायेगा।

सत्येन बसु अपने तरीके से इसी उद्देश्य की पूर्ति में आजीवन लगे रहे।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लुई रेने लुद्वेनकिर्वेन

सहारा से बढ़ते मरुस्थल

फ्रांसीसी अन्वेषक लेनों दे वेलेफोंद्स ने १८२१ में भी उत्तर सुडान में जंगल और झाड़-झंखाड़ वाले प्रदेश देखे थे। उन्हीं के अभियान-दल के अन्य सदस्यों ने उत्तर सुडानी कस्बे डोंगोला के इर्द-गिर्द के जंगल में सिंहों की दहाड़ सुनी थी। १८८५ तक भी सुडान की राजधानी खरतूम के उत्तर में सिंहों के निवास के उपयुक्त परिस्थितियां थीं। परंतु अब न वे सिंह बचे हैं, न वे जंगल। रेगिस्तान ने वहां अपने पंजे फैला दिये हैं।

रेगिस्तान के बेरोकटोक प्रसार ने हिरनों के वे विशाल झुंड भी नष्ट कर दिये हैं, जो गुस्टाव निश्टिगाल ने १८७० में उत्तर चाड में देखे थे। कुछ सौ साल पहले सहारा में १४ वीं अक्षांश रेखा पर अनेक किलेबंद बस्तियां थीं। उनके कुएं जाने कब के सूख चुके।

सहारा रेगिस्तान की पुरानी सीमा आज की तुलना में दो या शायद पूरे तीन सौ मील उत्तर में थी। यहां के दृश्य बड़ी तेजी से बदले हैं। चाड की राजधानी फोर्ट लैमी अभी तीस साल पहले भी घने जंगलों के बीच थी। पर आज वह रेगिस्तान से घिरी हुई है और अब ईंधन तीस से लेकर सौ मील तक की दूरी से लाना पड़ता है।

विशाल सहारा रेगिस्तान अपने दक्षिणी किनारे पर जाने कितने कुओं, नखलिस्तानों और बस्तियों को लील गया है—खासकर नाइजर प्रदेश में। और सहारा का बढ़ना उत्तर में नाइजीरिया में भी स्पष्ट देखा जा सकता है। कुएं सूख रहे हैं, नखलिस्तान मर रहे हैं। केन्या और इथियोपिया की सीमा पर स्थित झील रुडाल्फ के चौगिर्द के हरे-भरे ऊंची घास वाले उपजाऊ सवाना प्रदेश ऊसर बियाबान बन गये हैं।

अफ्रीका के बाहर भी हालात बहुत अच्छे नहीं हैं। इस सदी के आरंभ में भी उत्तर मेक्सिको के चीहुआहुआ रेगिस्तान के बहुत बड़े इलाके में घास के मैदान थे और उनमें मवेशियों के झुंड विचरा करते थे। अभी चालीस साल पहले पाकिस्तान में सिंध के रेगिस्तान की सीमा पर कितने ही गांव जंगलों से घिरे हुए थे। वे जंगल लुप्त हो चुके हैं और रेगिस्तान उन बस्तियों के निकट आ पहुंचा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यही बात ईरान के लुट रेगिस्तान में भी हो रही है। उसके किनारों पर के नखलिस्तान और गांव भी मरते-उजड़ते जा रहे हैं। आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के रेगिस्तान भी अपने पांव पसार रहे हैं। उनसे सटे हुए प्रदेशों में पानी की सतह गिर रही है, कुएं सूख रहे हैं।

भूगोलज्ञ, वनस्पतिशास्त्री और पारिस्थितिकीविज्ञ देख रहे हैं कि अब जबर्दस्त पारिस्थितिक अव्यवस्था के कारण दुनिया में सभी रेगिस्तानों का धीरे-धीरे विस्तार हो रहा है। ब्रिटिश पारिस्थितिकीविज्ञ प्रो. जान लियोनार्ड क्लाउडस्ली-टाम्सन का कहना है कि अब रेगिस्तानों ने खतरनाक रफ्तार से बढ़ना शुरू कर दिया है। जर्मनी के प्रमुख रेगिस्तान-विशेषज्ञों में गिने जाने वाले प्रो. हाइनरिश वाल्टर उनसे सहमत हैं। प्रो. वाल्टर ने मध्य एशिया के अलावा संसार के सभी भागों के रेगिस्तानों की वैज्ञानिक जांच-पड़ताल की है।

पृथ्वी का लगभग एक चौथाई भूभाग अब रेगिस्तानों या अर्धरेगिस्तानों से आच्छादित है। प्रोफेसर वाल्टर बताते हैं कि अगर अल्प उर्वरता वाले घास के मैदानों को भी शामिल करें, तो यह प्रतिशतक ३५ तक पहुंच जायेगा।

रेगिस्तानी और अर्धरेगिस्तानी क्षेत्र वे हैं जिनमें सामान्यतः सालाना १० इंच से कम बारिश होती है। सामान्यतः इनका उद्भव उन क्षेत्रों में होता है, जिनमें व्यापारी हवाएं बहती हैं, अथवा जो समुद्रों से बहुत दूर और पूरी तरह भूमि से घिरे हुए हैं।

आस्ट्रियाई रेगिस्तान-विशेषज्ञ अल्फोन्स गैब्रियल ने ईरानी रेगिस्तानों की छानबीन की है और उनकी मान्यता है कि भूमध्यरेखा के उत्तर और दक्षिण में ३० और ३५ अक्षांश रेखाओं के बीच पायी जाने वाली शुष्क और निरंतरवाही व्यापारी हवाएं ईरान से लेकर सहारा तक के रेगिस्तानों के लिए जिम्मेदार हैं और कई अमरीकी रेगिस्तान भी (जैसे कि निचले कैलिफोर्निया में कोलोरैडो नदी के इर्द-गिर्द का रेगिस्तान) इन्हीं हवाओं की देन हैं।

इसी तरह प्रो. गैब्रियल का कहना है कि गोबी के कुछ हिस्से, अराल-कास्पियन प्रदेश के रेगिस्तान और आस्ट्रेलिया के भीतरी इलाकों के रेगिस्तान समुद्र से अतिदूरवर्ती क्षेत्रों की जलवायु के फल हैं।

रेगिस्तान के फैलने के आंकड़े जुटाना सुलभ नहीं है; क्योंकि इस बारे में पुरानी सूचनाओं पर सदा विश्वास नहीं किया जा सकता। परंतु फ्रांसीसी उपनिवेश विभाग के जुटाये हुए तथ्यों से प्रकट होता है कि सत्रहवीं सदी से सहारा रेगिस्तान प्रतिवर्ष एक किलोमीटर के हिसाब से दक्षिण की ओर बढ़ता रहा है। और विश्व खाद्य-कृषि संघटन ने हिसाब लगाया है कि सहारा के बढ़ने की रफ्तार सालाना १॥ से लेकर १० किलोमीटर तक है।

सहारा के दक्षिणवर्ती सहेल देशों (सेनेगाल, मारिटानिया, नाइजर, अपर वोल्टा, माली और चाड) में हाल में आया संकट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो आरंभिक चेतावनी है। आगे और भी संकट आयेंगे।

मगर आंकड़ों के विश्लेषण में और भविष्यवाणियां करने में सावधानी बरतना जरूरी है। सहारा का विशेष अध्ययन करने वाले कोलोनवासी भूगोलज्ञ डा. हाइनरिश शिफर्स का विश्वास है कि सहारा रेगिस्तान मुख्यतः तीन प्रदेशों में दक्षिण की ओर बढ़ रहा है और सहारा की जलवायु पिछले पांच हजार वर्षों में विशेष बदली नहीं है। प्रो. वाल्टर और प्रो. क्लाउडस्ले-टाम्सन भी इसकी पुष्टि करते हैं। नवपाषाण युग के एकदम बाद सहारा शायद अपेक्षाकृत नम प्रदेश था—तब वहां आज से २-२॥ इंच ज्यादा सालाना बारिश होती थी। तब वहां नदियों के किनारे झाड़ियां, जंगल और घास के मैदान थे और सारे क्षेत्र में घनी आबादी रही थी। अनेक झीलों और घास-मैदानों के प्राणियों से भरे इस प्रदेश में तब शिकारी और बाद में पशुपालक घूमा करते थे। यहां मिले अनेक शिलाचित्र और प्रस्तर-उपकरण इस बात के सूचक हैं कि सात हजार साल पहले यहां घनी आबादी थी।

रेगिस्तान के बढ़ने का असली कारण क्या है? वह है—मनुष्य। मनुष्य ने रेगिस्तानों के साथ लगे प्रदेशों की पारिस्थितिकी को गड़-बड़ा दिया है। मनुष्य की इन भूलों और अपराधों की लंबी सूची है।

रेगिस्तानों के किनारे के इलाके मनुष्य के हाथों रेगिस्तान में परिवर्तित होते जा रहे हैं। जब आदमी रेगिस्तान के साथ लगे ऊंची घास वाले उपजाऊ मैदानों (सवाना) में से सब झाड़ियां और छितराये हुए जंगलों का सफाया कर देता है, तो वे छोटी घास वाले बंजर मैदानों (स्टेपी) में बदल जाते हैं। ये मैदान फिर अर्धरेगिस्तान बन जाते हैं और बची-खुची वनस्पति भी विलुप्त हो जाती है।

इस दृष्टि से सबसे अक्षम्य अपराध हैं—जंगलों की अत्यधिक चराई, घास-मैदानों का जलाया जाना, वृक्षों का काटा जाना और भूमि का कृषि में अत्यधिक दुरुपयोग। इससे जमीन की सतह सारा ह्यूमस गंवाकर, नमी को अपने में रोके रखने में असमर्थ होकर बहुत गर्म और सख्त हो जाती है।

प्रो. गैब्रियल का कहना है कि बकरियों के रेवड़ों द्वारा जंगल और घास-मैदानों की तमाम वनस्पति का चर लिया जाना रेगिस्तान को फैलने में बढ़ावा देता है। यह बात अफ्रीका के सहेल क्षेत्र में ही नहीं, उत्तर मेक्सिको, पाकिस्तान, भारत, आस्ट्रेलिया और दक्षिण अमरीका में भी रेगिस्तानों से सटे हुए इलाकों में हुई है।

इन सभी इलाकों के निवासी ईंधन या इमारती उपयोग के लिए तमाम झाड़ियां और वृक्ष काट डालते हैं; घास-मैदानों की आग से वनभूमि को नष्ट होने देते हैं, क्योंकि उपजाऊ राख अगली फसल में सहायक होती है। इस प्रकार जगह-जगह बने मानव-निर्मित रेगिस्तानी खंड धीरे-धीरे आपस में जुड़ जाते हैं और एक वनस्पतिशून्य, जीव-जंतु-विरोधी भूभाग तैयार हो जाता है। इसके बाद जलवायु बदलते लगता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह प्रदेश तेजी से सारी नमी खोने लगता है। जमीन के भीतर पानी की सतह गिर जाती है। पानी के स्रोत सूख जाते हैं। बचे हुए इक्के-दुक्के जलकुंडों पर मवेशियों का जमघट लग जाता है। सहेल देशों में देखा गया कि जो कुएं छह सौ पशुओं को पानी पिला सकते हैं, उन पर छह हजार पशु आ जुटते हैं। कुछ ही साल पहले सहेल क्षेत्र में ५० या १०० फुट गहरा कुआं खोदने पर पानी मिल जाता था। आज तीन सौ और कई बार तो छह सौ फुट खोदना पड़ता है।

सहारा के दक्षिणी किनारे पर जो गिनी-चुनी झीलें हैं, उनमें गाद भर रही है, उनका पानी छिछला होता जा रहा है। चाड झील का क्षेत्रफल मौसम और वर्षा के अनुसार बदलता रहता है; सहारा के दक्षिणी प्रदेश की जलवायु के निर्धारण में उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रहती है। अगर यह झील न रहे, तो रेगिस्तान को और आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक पायेगा।

सहेल प्रदेश और भारत-पाकिस्तान में अब उल्लेखनीय वन बहुत कम रह गये हैं। पाकिस्तान की कुल भूमि का केवल २.८ प्रतिशत अब वनों से आच्छादित है। सहेल क्षेत्रों में यह प्रतिशतक ४ से १२ तक है, मगर यह वनभूमि अनुर्वर और छोटे झाड़-झंखाड़ वाली है। वनों के उच्छेद और विनाश से जमीन का तेजी से कटाव हो रहा है। प्रति वर्ष प्रति वर्ग किलोमीटर भूमि पर से एक दो हजार टन तक उपजाऊ ऊपरी मिट्टी हट जाती है। परिणाम होता है अन्नसंकट।

हरियाली के नष्ट होने और शिकार के जारी रहने से हिरन, चिकारा, शुतुरमुर्ग और हिंस्र पशु आदि अनेक जीव-जातियों का लोप होने लगता है। प्राणिविज्ञानियों ने देखा है कि पिछले चालीस वर्षों में सहेल देशों में और दक्षिण सुडान के सवाना मैदानों में प्राणिसंख्या भयंकर रूप से घट गयी है।

इसका इलाज क्या है? भूगोलशास्त्री रावर्ट गैन्सेन का कहना है कि निम्नलिखित कदम उठाये जाने चाहिये:

'शुष्क सवाना पट्टियों में वनस्पति की कमी और परिणामतः वहां की भूमि में ह्यूमस का अभाव (और उससे उपजा भूमि-कटाव का खतरा) खेती को सर्वथा वर्जित कर देते हैं, अन्यथा वहां अत्यंत उग्र भूमि-कटाव होगा। जमीन को परती छोड़कर उसका सुधार किया जा सकता है। इस प्रकार के उपाय अपनाने से वहां की वनस्पति सुरक्षित रहेगी, जिससे जमीन में ह्यूमस बढ़ेगा। जमीन धूप के दुष्प्रभाव से अधिक बचेगी।'

रेगिस्तानों को फैलने से रोकने का बुनियादी उपाय है उनके पास की जमीन का कृषि-उपयोग पर नियंत्रण और वृक्षों और झाड़ियों की कटाई पर एकदम प्रतिबंध। सहारा के दक्षिणी छोर के इलाकों की प्राकृतिक वनस्पति को फिर से उगने-पनपने का अवसर मिलना चाहिये।

इस दिशा में छोटे पैमाने पर पहली सफलता मारिटानिया ने पायी है। उसने कई क्षेत्रों के चारों ओर बाड़ बनाकर उनमें

[शेष पृष्ठ ९१ पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टी. एस. राजु शर्मा

तमिलनाडु के जैन तीर्थों में

मित्रवर कांगेय ने कहा कि चलिये, इस बार हम आपको कांची और मदुरै के जैन तीर्थ दिखा लाते हैं। सुनकर मेरी बांछें खिल गयीं। तमिल साहित्य को पंच महाकाव्यों और पंच लघुकाव्यों का उपहार देने वाले, तमिल संस्कृति को अपनी बहुविध देनों से समृद्ध करने वाले जैन मुनियों और उनके महान धर्म के प्रति गहरे आदरभाव के कारण मैं मित्रवर कांगेय से काफी समय से आग्रह कर रहा था कि मुझे यह तीर्थयात्रा करा दें। अब उसका सुयोग आया।

हमारी पहली मंजिल थी जैनकांची, जो कांची से पांच मील दूर है। मद्रास से बस से आराम से यहां पहुंचा जा सकता है।

आजकल तो यात्री और पर्यटक प्रायः शिवकांची और विष्णुकांची को देखकर ही लौट जाते हैं। किंतु किसी समय जैनकांची सारे भारत में विद्या और धर्मसाधना का विख्यात केंद्र थी।

कहते हैं, सातवीं सदी में यहां तीन सौ जैन उपाश्रय थे। यहां के कडिकै जैन विश्वविद्यालय में दस हजार जैन मुनि और विद्यार्थी ज्ञानसाधना करते थे। उसमें संस्कृत और प्राकृत के समस्त वाङ्मय का अध्ययन-अध्यापन होता था। दिङ्नाग के योगसूत्रों के अध्ययन के लिए दूर-दूर से विद्वान यहां आते थे। अनुश्रुति के अनुसार, यह वही जैन पुण्यतीर्थ है, जहां महाकवि भारवि और दंडी ने अपने ग्रंथों को विद्वत्समाज द्वारा प्रमाणित कराया था।

यहां दो मुख्य जैन मंदिर हैं—चंद्रप्रभालय और त्रैलोक्यनाथालय। इनमें से पहला आकार में छोटा है और रेतीले पत्थर का बना है। इसमें आठवें तीर्थंकर भगवान चंद्रप्रभदेव की मूर्ति है। दूसरा मंदिर बड़ा है और उसमें भगवान वर्धमान महावीर की विशाल मूर्ति प्रतिष्ठित है। कहते हैं कि यह मंदिर मल्लिसेन वामनाचार्य के शिष्य पुष्पसेन वामनाचार्य के हाथों से १३३७-३८ में निर्मित हुआ। आज भी इसके भीतर स्थलवृक्ष के नीचे पुष्पसेनजी के पदपद्मों के चिह्न हैं, जिनका दर्शन करके यात्री कृतार्थता अनुभव करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनके गुरु मल्लिसेन ने ही 'मेरुमंदिर-पुराण' की रचना की थी, जो तमिलभाषी जैनों का धर्मग्रंथ होने के साथ-साथ तमिल साहित्य की शोभा है। यह १,४०६ पदों का विशाल ग्रंथ है। इसके दो पद 'शांतिपुराण-पद' कहलाते हैं। यह पुरातन वृत्त में निबद्ध है और इसमें अनेक जन्मों की कथा है। इसके अलावा, मल्लिसेन ने 'नीलकेशि' नामक जैन ग्रंथ की विशाल व्याख्या भी लिखी थी।

हमारी अगली मंजिल थी चित्तणवासल की गुफाएं, जो तिरुचिरपल्ली के समीप हैं। तिरुचिरपल्ली तक रेल में, फिर बस में यात्रा करके वहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।

रास्ते में कडलूर या तिरुप्पादिलि-पुलियूर पड़ा, जो सातवीं सदी ई. तक पाटलीपुरम् नाम से प्रसिद्ध जैन क्षेत्र था। एक दिन के लिए हम यहां ठहर गये। यहां का जैन-मंदिर और उपाश्रय सारे दक्षिण भारत में विख्यात था। ऐसा विदित होता है कि चौथी सदी ई.से भी पहले ही यह बहुत बड़ा शिक्षा-केंद्र बन गया था। पल्लव राजा सिंहवर्मा (४५८ ई.) का इससे बड़ा अनुराग था। जैनाचार्य सर्वनंदी ने यहां के उपाश्रय में रहते हुए 'लोकविभाग' नामक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का संस्कृत में अनुवाद किया।

इसके लगभग डेढ़ सौ वर्ष बाद धर्मसेन नामक एक कुशाग्रमति युवक यहां आया। शिक्षा-दीक्षा पाकर वह इस उपाश्रय का प्रमुख भी बना। किंतु बाद में वह शैवमत में दीक्षित हो गया; आगे चलकर तिरुनाडक्करश नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने राजा महेंद्र पल्लव को शैवमतावलंबी बना लिया। धार्मिक असहिष्णुता के कारण महेंद्र पल्लव ने पाटलीपुरम् का विध्वंस कर दिया। नगर तो नष्ट हो गया; परंतु महेंद्र पल्लव वहां पर वैसा दूसरा विद्याकेंद्र स्थापित नहीं कर सका। कहते हैं, गुणवतीश्वर क्षेत्र का शिव-मंदिर जैन उपाश्रयों और मंदिरों को तोड़कर उनके पत्थरों से ही बनाया गया था।

मित्रवर कांगेय से यह सब विवरण सुनकर मन खिन्नता से भर गया। कडलूर के डाक बंगले के पास चार फुट ऊंची एक भव्य जैन मूर्ति देखने को मिली। वहां के शिव-मंदिर में भी एक जैन प्रतिमा है।

कांगेय ने बताया—'यहां के निकट ही तिरुवदिकै में खेत की जुताई के समय दो जैन मूर्तियां निकली थीं। एक ४॥ फुट की है और पद्मासनस्थ है। यह तिरुवीश्वर शिवालय में रखी हुई है। दूसरी मूर्ति ३॥ फुट की है और धर्मशाला में रखी है।'

उसी दिन रात की गाड़ी से हम तिरुचिरपल्ली पहुंच गये और अगले दिन प्रातःकाल चित्तणवासल के जैन तीर्थ को देखने गये।

'उधर देखिये! प्राकृतिक ढंग से बनी उस गुफा में अनेक जैन मुनियों ने ज्ञानसाधना की थी।' कांगेय ने कहा। उनके साथ मैंने गुफा में प्रवेश किया। भीतर सत्रह प्रस्तर-शय्याएं बनी हुई थीं, एक दूसरे से पर्याप्त अंतर रखते हुए। आदमी आराम से लेट व सो सके, इतनी बड़ी थी प्रत्येक। कहते हैं, सत्रह महान जैन विद्वान यहां रहते थे। शय्याओं के नीचे ब्राह्मी लिपी में उनके नाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी खुदे हैं, जिनके लिप्यंतर अब तमिल और रोमन में दे दिये गये हैं। इनमें से कुछ नाम हैं—कडउळन्, तिरुप्पूरणन्, तिरुच्चा-त्तन्, श्रीपूर्णचंद्रन्। ये सभी सातवीं सदी ई. के रहे होंगे।

पास की पर्वतगुहा में जैन मंदिर है, जिसमें तीन तीर्थंकर-मूर्तियां विराज रही हैं—तीनों त्रिछत्रधारी। १० फुट लंबा, १० फुट चौड़ा और १०॥ फुट ऊंचा देवालय वाला महामंडप एक ही विशाल पत्थर को खोदकर बनाया गया है। इसका फाटक सुंदर है और ५ फुट ७ इंच ऊंचा व २॥ फुट चौड़ा है। कहा जाता है कि महेंद्र पल्लव प्रथम ने ६००-६३० में इसका निर्माण कराया था। इसकी दीवारों पर अंकित चित्रों के रंग धुल गये हैं। चित्र तीर्थंकरों और शलाका-पुरुषों के हैं।

एक और गुफा करीब २३ फुट लंबी और १२ फुट चौड़ी है। इसके बाहर करीब ३ फुट चौड़े दो स्तंभ हैं। ये सभी एक ही बड़े प्रस्तर-खंड को तराश-कर बनाये गये हैं। भीतर दो भव्य मूर्तियां को देखकर भक्तिभाव से हमारे सिर स्वयं नत हो गये। दक्षिण पार्श्व में भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति विराजमान है, उत्तरी भित्ति पर त्रिछत्र-धारी तीर्थंकर भक्तजनों को शांति प्रदान करते दिखाई देते हैं।

मंडप के वितान (ऊपरी भाग) में तीर्थं-करों के रंगीन चित्र अंकित हुए थे, जो ठीक देखभाल न होने से अब धुंधले पड़ गये हैं। यहां खुदे एक शिलालेख के अनुसार, नौवीं सदी में श्रीवल्लभ नामक राजा ने इस गुफा की मरम्मत करायी थी और बाहर एक शिलामंडप भी बनवाया था।

पास के बगीचे में एक भव्य किंतु खंडित तीर्थंकर-प्रतिमा है। कहा जाता है कि इसे टकोरने पर इससे सप्तस्वर निकलते हैं। संभव है, स्वरलोभी दर्शकों के प्रहारों से ही यह खंडित हो गयी हो।

श्री कांगेय ने बताया कि अनेक जैन मुनि संथाराव्रत लेने के लिए यहां आते थे और कुशा के आसन पर बैठकर निर्जल उपवास करते हुए देह-विसर्जन कर देते थे।

चित्तणवासल ने मेरे मन को चिंतनमग्न कर दिया। वन-पर्वतों में रहने वाले अपरि-ग्रही आचार्यों के चरणों में बैठकर हमारे पूर्वज विद्या और शील अर्जित करते थे।

महेंद्र पल्लव, रानी (पीछे) और मृत्य (चित्तणवासल)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नर्तकी (चित्तणवासल)
वी. एन. ओके रचित रेखानुकृति

जब कि आज करोड़ों की लागत से बने सुख-सुविधापूर्ण भव्य भवनों से अधिकांश छात्र विद्या के नाम पर एक कागजी प्रमाणपत्र लेकर लौट आते हैं। कितनी बड़ी विडंबना है!

उसी दिन शाम की गाड़ी से हमने मदुरै को प्रस्थान किया। ऐसी मान्यता है कि मदुरै के आस-पास के आठ पर्वतों पर आठ सहस्र जैन मुनि तपस्या और आत्मसाधना करते हुए धर्म, दर्शन, आयुर्वेद तथा कलाओं की शिक्षा सहस्रों विद्यार्थियों को दिया करते थे।

हमने सबसे पहले दर्शन किये यानै मलै (हस्ति गिरि) के, जो मदुरै से छह मील की दूरी पर है। इस पर अनेक गुफाएं हैं। इनमें ब्राह्मी लिपि में कई शिलालेख हैं, जो दूसरी सदी ई. के बताये जाते हैं। सन ७७० तक यहां जैनों का निवास रहा। उसी वर्ष यहां का जैन मंदिर विष्णु मंदिर बना दिया; जिसका प्रमाण हमें मंदिर के अभिलेख में मिलता है।

शमण मलै मदुरै से पांच मील दूर है। इस पर चढ़ने पर यत्र-तत्र तीर्थंकर-प्रतिमाएं दृष्टिगोचर होती हैं और मन भक्तिभाव से भर उठता है। शायद इन प्रतिमाओं के कारण ही इसका नाम 'शमण मलै' अर्थात् श्रमण-गिरि पड़ा है।

एक गुफा में हमने चित्तणवासल जैसी ही चिकने काले पत्थर की शय्याएं देखी। गुफा की छत पर ब्राह्मी लिपि में शिलालेख है, जो ईसा पूर्व का बताया जाता है। शय्याओं के निकट एक बड़े पीठ पर महावीर स्वामी की प्रतिमा शांत मुद्रा में अभय और आशीर्वाद दे रही है।

शमण मलै से हम चेट्टीप्पोडा पहुंचे, जहां का 'पेच्चि पळ्ळम्' (उपदेश-मंडप) दर्शनीय है। २५० श्रोता इसमें आसानी से बैठ सकते हैं। मंडप में तीर्थंकरों की मूर्तियां खुदी हुई हैं। यहां आठवीं-नौवीं सदी ई. का एक शिलालेख है। एक जैन मंदिर के खंडहर भी हमें यहां देखने को मिले। समीप की पहाड़ी चोटी पर एक बड़ा दीपस्तंभ है, जिसके अधोभाग में ग्यारहवीं शताब्दी का कन्नड शिलालेख है।

यहां से हम चेट्टिपोडवु गुफा में गये। प्रवेश-द्वार के निकट एक बृहत्काय तीर्थंकर-मूर्ति खुदी है। गुफा की छत अर्धचंद्राकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं और उस पर पांच मूर्तियां अंकित हैं। एक चतुर्भुज मूर्ति यक्ष की है, जो सिंहासनारूढ है। उसके चारों हाथों में हथियार हैं। सामने एक गजारूढ प्रतिमा है। इसके बाद त्रिछत्र-धारी तीर्थंकर हैं।

हम सिद्ध पर्वत भी गये। तमिल में जैन मुनियों को 'सिद्ध' कहा जाता है। यहां भी गुफाएं और उनमें शिलाशय्याएं देखने को मिलीं। यहां पर सप्त समुद्र नामक झील है। 'तक्कयाभरणी' नामक तमिल ग्रंथ के अनुसार जैन मुनियों ने मंत्रबल से झील का निर्माण किया था।

मदुरै से तीन मील दूर तिरुप्पुरंकुन्रम् में भी जैन मुनियों के निवास के प्रमाण-स्वरूप गुफाएं और शिलाशय्याएं हैं। यहां भी हमने तीर्थंकर-मूर्तियों के दर्शन किये और प्राचीन शिलालेख देखे।

परशु मलै, नाग मलै, वृषभ मलै आदि अन्य पहाड़ियों पर भी जाने की हमारी इच्छा थी; किंतु समय कम था और शरीर भी थकावट की शिकायत कर रहा था।

इसी कारण हमने वळ्ळि मलै और तिरु-नेलवेली के जैन क्षेत्रों की यात्रा भविष्य के लिए स्थगित कर दी।

कांगेय विषाद-भरे स्वर में बता रहे थे—'सातवीं शताब्दी तक मदुरै और उसके आस-पास जैन धर्म की बड़ी प्रतिष्ठा थी। राजा कून पांडियन जैन धर्मावलंबी हुआ। उसी के शासन के अंतिम काल में जैन धर्म को दक्षिण में काफी कष्ट उठाने पड़े। संभव है, राजाश्रय पाने से कतिपय जैन उद्दंड हो उठे हों। परंतु उससे जनित धार्मिक विद्वेष के कारण जैन धर्म के साथ जो व्यवहार किया गया, वह न्यायसंगत नहीं दीखता।'

दुर्भाग्यपूर्ण जैन-शैव संघर्ष में मदुरै का जैनधर्म केंद्र उजाड़ दिया गया। यह इसका दर्दनाक प्रमाण है कि किस प्रकार मनुष्य अपने राग-द्वेष को धर्म में भी घसीट लाता है, जो कि इन क्षुद्रताओं और दुर्बलताओं से ऊपर उठने के लिए ही वरणीय होता है।

मुझे तमिलनाडु के जैन क्षेत्रों की पावन यात्रा कराने वाले श्री कांगेय की कुलकथा भी कम रोचक नहीं है। उन्हीं से सुनिये :

'पंद्रहवीं सदी में चेंजी गढ़ के राजा कृष्णप्प नायक की बड़ी विचित्र रुचि थी। वह प्रत्येक धर्म और जाति की एक-एक लड़की से विवाह करना चाहता था। जब कोई भी जैन कन्या उससे विवाह करने को तैयार नहीं हुई, तो उसने अपने राज्य के तमाम जैनों के वध की आज्ञा दे दी। जैनों ने पहले तो डटकर मुकाबला किया; परंतु जब अत्याचार सीमा को पार कर गया, तो वे या तो भाग निकले, या जैन धर्म छोड़ बैठे। वीरसेनाचार्य नामक एक जैन विद्वान ने कर्नाटक के श्रवणबेळगोळ में शरण ली। कई वर्ष बाद हमारे पूर्वज जाकर उन्हें वापस लाये और उन्होंने राज्यभय से शैव या वैष्णव बने कई परिवारों को फिर जैन धर्म में दीक्षित किया। तब से यहां के जैन समाज में हमारे घराने को प्रथम स्थान प्राप्त है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुकुंदराय पाराशर्य

जलकमलवत् कमलजलवत्

अनासक्त व्यवहार के दृष्टांत के रूप में 'जलकमल' की उपमा दी जाती है। जिस प्रकार जल में जनमा कमल, जल में रहकर जल से ही पोषण प्राप्त करता हुआ भी जल से लिप्त नहीं होता, अपितु प्रसन्नतापूर्वक आत्मविकास करता हुआ जीवन जीता है, उसी प्रकार अनासक्तवृत्ति वाला मनुष्य संसार में रहता हुआ भी सांसारिक विषयों में लिप्त हुए बिना आत्मोत्कर्ष साधता है।

यह उपमा सुंदर और बोधात्मक है। इस उपमा-वाक्य के 'जल' और 'कमल' दो शब्दों का स्थान परस्पर पलटकर 'कमलजलवत्' कहें, तो उससे एक विशिष्ट बोधात्मक उपमा बन जाती है।

कमल का उद्भव कीचड़ में होता है। पानी की प्रचुरता के बिना कमल का उद्भव या विकास असंभव है। इसीलिए कीचड़ वाले ताल-तलैयों में ही कमल होता है। कमल के पत्ते और उसकी नाल का ऊपरी भाग पानी से बाहर निकल आते हैं। कमल का फूल सतह पर खिलता है। पानी कमल का माता-पिता है। उसके विकास में जलतत्त्व ही प्रधान है। फिर भी पानी उस पर अपना प्रभाव इतना अधिक कभी नहीं डालता कि खिलता हुआ कमल सड़ जाये। संस्पर्श की इच्छा से वह बिंदु रूप में कभी उसके पत्तों पर तो कभी उसकी पंखुड़ियों पर ही आ बैठता है और कमल की शोभा बढ़ा देता है; और सूखने पर उस पर दाग भी नहीं छोड़ता। अपने में से ही कमल का विकास करके अपना तत्त्व उसे जितनी मात्रा में चाहिये उतना ही देता है। दूसरे की पात्रता से अधिक देने का उसका कोई प्रयत्न नहीं रहता। स्वयं स्थिर, निश्चल और प्रशांत रहकर वह उसके प्रफुल्ल विकास को देखता हुआ अपने हृदय में उसके प्रतिबिंब को धारण करता हुआ प्रसन्न रहता है।

यह दृष्टांत माता-पिता पर भी लागू हो सकता है। समझदार माता-पिता अपने बच्चे के विकास में उसके बीजभूत सत्त्वों के स्वयं विकसित होने के लिए जितनी मात्रा में वात्सल्य, ज्ञान, लालन-पालन आदि के तत्त्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवश्यक हैं, उससे अधिक देने से अपने आपको संयमपूर्वक, दीर्घदृष्टिपूर्वक रोकते हैं। बालक का श्रेय चाहने वाले माता-पिता अपनी यह या वह संपत्ति जबरन देकर बालक को अभिभूत करके उसे विकृत नहीं करते। अपितु उसके व्यक्तिगत विकास में अपनी शक्ति-मर्यादा के अनुसार वह जितना पचा सके उतना लेने देकर, उसका जितना भी उत्तरोत्तर विकास हो, उसे देखकर संतोष अनुभव करते हैं।

यही बात साहित्य-सर्जक तथा उसके सर्जन पर और उसी तरह कलाकार और उसकी कला पर भी लागू होती है। कलाकार जो बीजरूप विचार या भाव विकसित करे, उसमें उसे केवल उसी बीज के अनुकूल जो-जो तत्त्व उसके चित्ततंत्र में हों, उन सबको, उस विचार या भावना के पूर्ण विकास में जितनी मात्रा में चाहिये उस मात्रा में लगा देना चाहिये। परंतु बीज के अनुकूल तत्त्वों की भरभार न हो जाये, यह दृष्टि कलाकर के स्वभाव में होनी चाहिये। भाव या विचार के बीज के अनुकूल अपने में जो मौलिक तत्त्व हैं और जो तत्त्व अपने को अत्यंत उपयोगी और अलौकिक लगते हैं, उनसे उस बीज को बलात् बहुत अधिक सींचने का यत्न या मोह कलाकार बनने की इच्छा रखने वाले को छोड़देना चाहिये।

जो असली कलाकार होता है, उसे अपनी कला की प्रतिष्ठा और उसका विकास ही अभीष्ट होता है। इसलिए उसमें यह प्रवृत्ति होती ही नहीं कि आत्मगौरव की प्रतिष्ठा के लिए अपने चित्त को उत्कृष्ट अलौकिक और मौलिक लगने वाले तत्त्वों को अपनी कलाकृति में उसके सौंदर्य की हानि या अपकर्ष होने पर भी भरे। कलाकार कलाकृति का गढ़ने वाला नहीं, अपितु उपासक होता है। कला का आविर्भाव, अपनी कलाकार-निरपेक्ष कलाकृति की जगत् में प्रतिष्ठा—यही कलाकार का स्वभाव होता है। ऐसी कलाकृति के सर्जन में कलाकार की कृत कृत्यता है, सार्थकता है।

गुजराती से अनुवाद: गिरिजाशंकर त्रिवेदी

*

[पृष्ठ ८४ का शेष]

चराई रोक दी। उन इलाकों में घास फिर अंकुरित हो गयी। तेजी से वन लगाना भी बहुत जरूरी है। प्रो. शिफर्स ने अपील की है कि सहारा को बढ़ने से रोकने के लिए 'हरी दीवार' खड़ी की जाये। चाड में छोटे-छोटे जंगल लगाने का कार्यक्रम शुरू किया गया है। सेनेगाल को तो सत्तर वाले दशक की समाप्ति तक अपनी वनभूमि को द्विगुणित कर लेने की आशा है।

नये कुएं खुदवाना, नये-पुराने कुओं की अच्छी देखभाल, नखलिस्तानों की स्थापना और रक्षित भूमियों की अधिक अच्छी रखवाली येभी जरूरी है।

आवश्यक है कि रक्षित भूमियों पर दबाव घटे यानी कम आदमी और पशु उन पर जियें, और ज्यादा वृक्ष-वनस्पतियां उन पर पनपें। यदि ऐसा पारिस्थितिक संतुलन फिर से कायम नहीं किया गया, तो अनावृष्टियों और अकालों का सिलसिला चलता रहेगा।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सागर पर तैरते नगर

कुलदीप शर्मा

कल्पना कीजिये कि आप समुद्र के किनारे खड़े हैं, नगर की घिचपिच से दूर खुली हवा में सांस ले रहे हैं। आपके मन में यह बात आती है कि काश, यह खुली हवा हमेशा के लिए अपनी हो सकती! काश, अपना घर सागर के ऊपर होता।

कल्पना के घोड़े जरा और दौड़ाइये। घर ही क्यों? क्या सागर की सतह पर नगर नहीं बसाया जा सकता? यों तो बंबई जैसे अनेक नगरों में नगर-विस्तार के लिए सागर-तट को कुछ दूर तक पाटकर जमीन निकाल ली गयी हैं। लेकिन इससे न तो उत्तरोत्तर बढ़ती हुई जमीन की जरूरत पूरी होती है, न प्रदूषण से मुक्त बस्ती में रहने की इच्छा। इसलिए समुद्र पर तैरते नगरों की कल्पना स्वाभाविक है।

मगर क्या यह कल्पना साकार भी हो सकती है? जी हां, अवश्य। कल के नगर शायद सागर पर ही कमल-पुष्पों की तरह विकसित होंगे। जापान का एक वास्तुकार कियोनोरी किकुताके पिछले दस-बारह वर्षों से यह सपना देख रहा था और अमरीका का एक नौसेना-इंजीनियर जान क्रेवन ऐसा ही सपना देखकर उसे साकार करने की कोशिश में था। कुछ वर्ष पूर्व जब ये दोनों हवाई द्वीप में मिले, तो सागर पर नगर एक वास्तविक संभावना बन उठा।

किकुताके ने अपनी पुस्तक 'समुद्री नगर' में वेलेल्ला नामक एक समुद्री जीव का रेखा-चित्र देकर उसे समुद्री नगर के माडल के रूप में पेश किया है। लेकिन जान क्रेवन को समुद्री नगर की प्रेरणा 'फ्लिप' नामक जलपोत से मिली, जो वास्तव में सागर में लंबवत् तैरने वाली एक मानव-युक्त प्रयोगशाला है।

वेलेल्ला की देह से जुड़ी स्पर्शिकाएं नीचे की ओर लंबवत् झूलती रहती हैं और जल की सतह पर तैरती हुई देह का संतुलन बनाये रखती हैं। उधर 'फ्लिप' नामक जलपोत सागर में लट्ठे की तरह उतराता हुआ किसी वांछित स्थान पर पहुंचकर सीधा हो जाता है—यों कि लंबवत् होने पर उसका अधिकांश भाग पानी में डूब जाता है और सतह पर उसका एक सिरा थोड़ा-सा दिखाई देता है।

जान क्रेवन अमरीकी नौसेना से सेवामुक्त होने के बाद हवाई में सागरीय मामलों के विशेषज्ञ के पद पर नियुक्त हुए, तो उन्हें पहला काम यह सौंपा गया कि वे हवाई की स्वातंत्र्य-घोषणा के द्विशतवार्षिक समारोह (१९७६) के लिए और कैप्टन कुक द्वारा हवाई द्वीपों की खोज की द्विशतवार्षिकी (१९७८) के लिए एक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तैयार करें। क्रेवन ने अपने बरसों पुराने सपने को साकार करने की सोची। क्यों न यह प्रदर्शनी सागर की सतह पर तैरते हुए एक विशाल मंच पर लगायी जाये? और उन्होंने काम शुरू कर दिया।

क्रेवन का कहना है कि उद्योगतंत्र ने इतनी प्रगति कर ली है कि सागर पर ऐसे मंच बनाये जा सकते हैं, जो तूफानी समुद्र में भी अडिग रह सकें। इन मंचों का आकार चाहे जितना बड़ा हो सकता है—बशर्ते आपके पास उसके लिए पैसा हो। और लागत भी जमीन पर मकान बनाने से ज्यादा नहीं आती, अगर आप जमीन की कीमत भी उसमें जोड़ लें।

सागर की सतह पर ही नहीं, आदमी चाहे तो सागर के भीतर भी—कितनी भी गहराई में—घर बनाकर रह सकता है। कम से कम ६०० से १,००० फुट की गहराई में अपना आशियाना बनाकर आप कई-कई दिनों तक रह सकते हैं। नगरों में भयंकर रूप से व्याप्त प्रदूषण की समस्या से मुक्ति!

जान क्रवन ने सागर की सतह पर तैरती प्रदर्शनी की कल्पना कुछ इस प्रकार की है—

जल पर उतराता हुआ एक विशाल मंच होगा, जिसके किनारों से मालवाहक पोत और बजरे लगे रहेंगे और साथ ही तीव्रगामी नौकाएं और होवरक्राफ्ट भी रहेंगे; जो प्रदर्शनी को निकटस्थ भूमि से जोड़ रहेंगे।

फिर १९७१ में जब जापानी वास्तुकार किकुताके हवाई विश्वविद्यालय में अतिथि प्रोफसर के रूप में आये, तो क्रेवन की आशाएं बहुत बढ़ गयीं। तब तक वे जल पर तैरते मंच पर लगी प्रदर्शनी लगाने की बात ही सोच पाये थे। किकुताके ने जल पर उतराते हुए एक पूरे नगर का नक्शा उनके सामने खींच दिया।

इस जापानी वास्तुकार का कहना है—'पृथ्वी पर जनसंख्या तो खतरनाक रफ्तार से बढ़ती जा रही है, लेकिन निवास-योग्य जमीन नहीं बढ़ती। आबादी का घनत्व

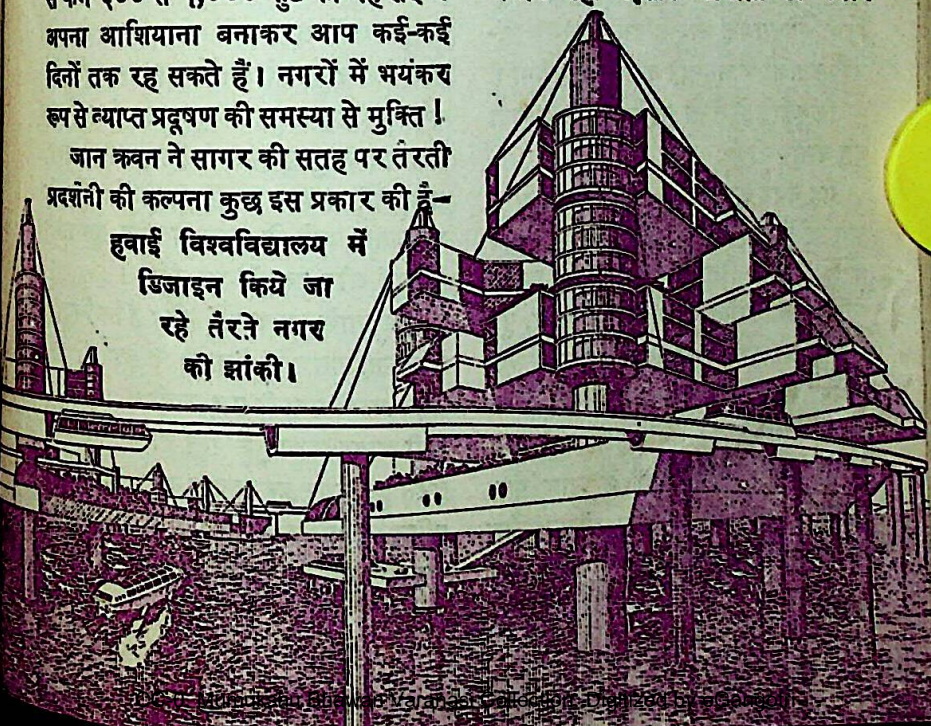

हवाई विश्वविद्यालय में डिजाइन किये जा रहे तैरते नगर की झांकी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

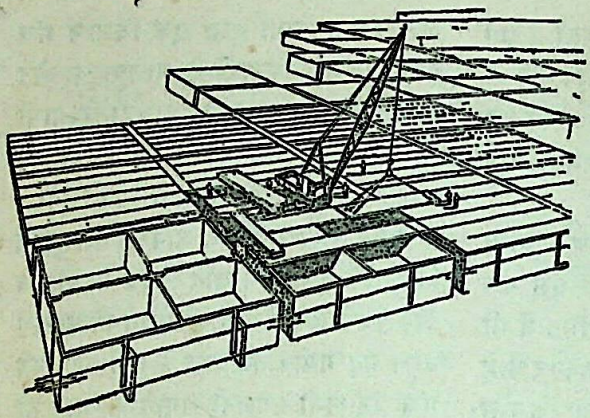

स्वातंत्र्य-घोषणा की द्वितीय शतवार्षिकी का स्मारक तैरता नगर रीइन्फोर्स्ड कंकरीट के बक्सों से बनेगा।

बढ़ता है और परिणामस्वरूप बढ़ती है घुटन। इस घुटन से बचने के लिए हमें अंततः समुद्र पर जाना ही होगा, जिसकी सतह भूमि की सतह से कहीं अधिक है। भविष्य में इस पानी की सतह पर ही नगर बसेंगे। और वे नगर वर्तमान नगरों से बेहतर भी होंगे; क्योंकि उन्हें मनुष्य की परिवर्तनशील मानसिक, संवेगात्मक और सौंदर्यबोधात्मक आवश्यकताओं के अनुसार बदला जा सकेगा।'

किकुताके ने तैरते हुए नगर की कल्पना इस प्रकार की है :

यह नगर लगभग ६० वर्गमील के क्षेत्रफल का होगा। इस पर जनसंख्या का घनत्व प्रति एकड़ दो-तीन सौ मनुष्य होगा। इसका निर्माण व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, पूरे समाज के हित को ध्यान में रखकर किया जायेगा, अतः इसका स्वरूप एक संपूर्ण जैविक इकाई जैसा होगा। इसमें सौंदर्य को उपयोगिता और कार्यक्षमता के साथ गूंथा जायेगा। नगर की संरचना अंतरराष्ट्रीय ढंग की होगी। प्रत्येक घर के ऊपर खुले आसमान का एक टुकड़ा होगा और नगर का प्रत्येक निवासी सूर्योदय-सूर्यास्त देख सकेगा।

इस तैरते हुए नगर में बेलनाकार मीनारें होंगी, जिनके प्रत्येक खंड में एक परिवार बसेगा—अर्थात् एक घर में माता-पिता और दो बच्चों के रहने के लिए पर्याप्त स्थान होगा। घर की कुल जगह यद्यपि उतनी ही रहेगी, किंतु बच्चों के कमरों की लंबाई-चौड़ाई-ऊंचाई उम्र बढ़ने के साथ बदली जा सकेगी। नगर में आवागमन का मुख्य ढंग होगा पैदल चलना। परंतु सुगमता के लिए चल-पट्टियां, चल-सीढ़ियां और लिफ्टें भी होंगी। नगर से भूमि तक जाने के लिए जलपोत, द्रुतगामी नौकाएं और पनडुब्बियां रहेंगी।

किकुताके इस बारे में सचेत हैं कि विज्ञान और उद्योगतंत्र के विकास के कारण चीजें बहुत जल्दी पुरानी पड़ जाती हैं, जीवन में नयी आवश्यकताएं उत्पन्न हो जाती हैं। सो तैरते हुए नगर इस प्रकार बनाये जायेंगे कि परिवर्तन आवश्यक हो उठे तो उन्हें खोल-खालकर नये ढंग से निर्मित किया जा सके।

मई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि यह संभव न हो, तो पुराने नगर को सागर में डुबाकर नये नगर का निर्माण कर लिया जाये। इसलिए उनका सुझाव है कि ऐसे नगरों की उम्र पचास वर्ष मानकर चला जाये और रहाइशी मीनारें इसी मियाद को ध्यान में रखकर बनायी जायें।

किकुताके और क्रेवन से पहले १९६७ में बकमिस्टर फुलर ने भी तैरते नगरों का एक फार्मूला दुनिया के सामने पेश किया था। उनका नगर तो पानी पर ९,००० फुट की ऊंचाई तक जाता था। उन्होंने रीइन्फोर्स्ड कंकरीट के तैरते हुए विशाल खोखले बक्सों की कल्पना की थी, जिनमें दस लाख मनुष्य बाल्कनी-युक्त घरों में रह सकते थे और प्रत्येक घर का अपना खुला आसमान होता। लेकिन फुलर का यह नगर सपना ही रहा।

किकुताके की कल्पना का तैरता नगर फुलर की कल्पना के नगर जैसा दो मील ऊंचा महाकाय नगर तो नहीं था; लेकिन जितना भी था जान क्रेवन और उनके सहयोगियों को अभिभूत कर लेने के लिए काफी था।

क्रेवन ने किकुताके के साथ मिलकर एक योजना बनायी और काम शुरू कर दिया। हवाई में प्रभावशाली पद पर होने के कारण क्रेवन को इसके लिए आवश्यक प्रशिक्षित व्यक्ति और धन दोनों मिल गये और होनोलूलू विश्वविद्यालय के छात्रों ने तैरते नगर का एक माडल बना डाला।

इस माडल में पानी से ऊपर रहने वाला नगर-भाग इतना ऊंचा नहीं है, जितने की कल्पना किकुताके ने की थी और जलमग्न

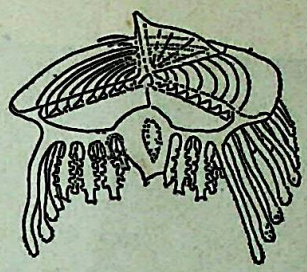

तैरते स्पर्शकों के जरिये अपना संतुलन रखने वाले जलचर वेलेल्ला से जापानी वास्तुकार किकुताके ने प्रेरणा पायी है।

भाग का ढांचा फ्लिप जलपोत की तरह का है। यह नमूना माड्यूलों से मिलकर बना है, जिनमें से प्रत्येक तोरणों के एक त्रिकोण पर टिका है (देखिये पृष्ठ ९३)। हर एक माड्यूल एक पूरे नगर-खंड का प्रतिनिधित्व करता है। तोरणों की कुल लंबाई ४५० फुट होगी, जिसमें से २०० फुट पानी के नीचे रहेगी। जल में डूबे प्रत्येक बेलन का व्यास ८० फुट होगा और जल से ऊपर २७ फुट।

सागर पर प्रदर्शनी लगाने के लिए जान क्रेवन ने ऐसा ही नगर बनाने का निश्चय किया है। प्रदर्शनी के लिए उपयुक्त नगर बनाने के लिए उन्हें कम से कम दस माड्यूल चाहिये—बीस मिल जायें तो और अच्छा। उनकी इस योजना पर होने वाले भारी व्यय को देखते हुए जब उचित धनराशि मिलने में कठिनाई हुई, तो क्रेवन ने कहा—'अगर इतने माड्यूल मुझे न मिल पाये, तो मैं सिर्फ एक माड्यूल पर समझौता कर लूंगा।' परंतु क्रेवन की मूल योजना स्वीकृत हो गयी है और उस पर काम हो रहा है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुखौटों से जरा हटकर

अगर जिंदगी का अर्थ
चौबीस घंटे के लिए चाबी-भरी घड़ी ही है
तो, ओ समय-देवता,
यह जिंदगी तुम्हें मुबारक !
अगर सांसों का अर्थ
लुहार की धौंकनी ही है
तो, ओ गति की गरिमा,
ये सांसें तुम पर निछावर !
अब हमारे गांव और देश का मतलब
सत्र हंसना, गाना और खेत ही है
तो, ओ मेरी सफलो,
यह अभिलाषा तुम्हें अर्पित करता हूं !
मेरी विवशताओ,
मेरे पास वह क्षण रहने दो
जो मुझे मेरे होने का एहसास कराता है,
ओ मेरी आस्थाओ,
मेरे पास वह एहसास रहने दो
जो मेरे चलना सिखाता है,
सब कुछ तुम ले लो
ओ मेरे नकली अस्तित्व ! तुम ले लो !

विश्वनाथ

—नवभारत टाइम्स, बंबई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फीरोजाबाद का चूड़ी उद्योग

रमेश प्रसाद शर्मा

राजा टोडरमल को १५६६ में आसिफाबाद में कुछ लुटेरों ने परेशान किया था। अकबर ने खबर पाते ही फीरोजख्वाजा को लुटेरों का दमन करने भेजा। लुटेरों का आतंक समाप्त करके फीरोजख्वाजा ने फीरोजाबाद की बस्ती बसायी, जो आज कांच-उद्योग और विशेषतः कांच की चूड़ियों के लिए विख्यात है।

फीरोजाबाद की स्थापना के साथ ही शीशगर नामक मुस्लिम जाति के लोग वहां बड़ी संख्या में आ बसे। ये लोग सीसा, रांगा, जस्ता, तांबा आदि धातुओं को रेह के साथ फूंककर उसकी भस्म से कांच की विभिन्न रंगों की बहुत साधारण किस्म की चूड़ियां छाल की भट्ठियों में बनाते थे।

आज से लगभग सौ वर्ष पहले विदेशों से आयात किये हुए कांच के टुकड़ों को इन्हीं छाल-भट्ठियों में गलाकर चूड़ियां बनायी गयीं, जो पहले की चूड़ियों से काफी अच्छी थीं। यहां अच्छा कांच बनाने का प्रयास आस्ट्रिया से आये विशेषज्ञ कारटूस ने १९०८ में किया। एक जापानी विशेषज्ञ की सलाह से चूड़ी-निर्माण में रोलर का प्रयोग किया जाने लगा, जिससे एक कारखाना दिन में सैकड़ों तोड़े तैयार करने लगा।

लखनऊ की अखिल भारतीय औद्योगिक एवं कृषि-प्रदर्शनी (१९३६-३७) में फीरोजाबाद की कांच की चूड़ियां बहुत पसंद की गयीं और इस उद्योग को बढ़ावा मिला। चीन के चीना कांच से नयी डिजाइन की फैंसी चूड़ियों का निर्माण शुरू हुआ। जब द्वितीय विश्वयुद्ध में चीना कांच का आना बंद हो गया, तो उसे यहीं बनाने का प्रयत्न किया गया। लेकिन १९६४ में ही चीना कांच भारत में बनाया जा सका।

सामान्यतः कच्चे माल की सुविधा जहां हो, वहीं पर उद्योग विकसित होते हैं। किंतु फीरोजाबाद के कांच-उद्योग पर यह बात लागू नहीं होती। इस उद्योग के लिए आवश्यक कच्चा माल फीरोजाबाद के आस-पास कहीं नहीं मिलता। यहां इसके विकास का सारा श्रेय कारीगरों और उद्योगपतियों की लगन और मेहनत को है। लगभग ७५,००० स्त्री-पुरुष इस उद्योग में लगे हुए हैं और छोटे-बड़े लगभग ८० कारखानों में प्रतिदिन ढाई लाख रुपये का माल बनता है।

कामिनियों की कलाइयों में खनकने वाली कांच की चूड़ियां अनेक प्रक्रियाओं से गुजरकर लुभावना रूप हासिल कर पाती हैं।

सोडा, रेता और कलई से कांच बनता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। कांच बनाने मे प्रयुक्त होने वाला सोडा पोरबंदर (सौराष्ट्र) में रेह से बनाया जाता है। कांच-निर्माण की कच्ची सामग्री में यही सबसें कीमती होता है। दानेदार रेता, जिसमें मिट्टी का अंश कम तथा पत्थर का अंश अधिक होता है, राजस्थान, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र से मंगवाया जाता है। रेते में लोहे का अंश कितना है, इस पर कांच का रंग निर्भर रहता है। गोटन में बनी कलई कांच बनाने के लिए अच्छी रहती है। कलई के बजाय संगमरमर का उपयोग करने पर उम्दा कांच बनता है।

कांच बनाने के लिए इन पदार्थों का अनुपात यह रखा जाता है—सोडा १८ किलोग्राम, रेता ४० किलोग्राम तथा कलई ३ किलोग्राम। अनुभवी राज कांच गलाने की गोलाकार भट्ठी जबलपुर की ईंटों से बनाते हैं। भट्ठी के निचले भाग में लकड़ी अथवा कोयले की आग जलायी जाती है। तापमान १,२०० से १,५०० अंश शतांश रखा जाता है। इससे कम आंच पर कांच गलता नहीं है। मिश्रण को गलकर कांच बनने में २४ घंटे लगते हैं। रंगीन कांच बनाने के लिए रंग तथा उसे घोलने वाले रासायनिक पदार्थ भी भट्ठी की नांदों में रखे मिश्रण के साथ मिला दिये जाते हैं।

चूड़ी के लिए कांच लबिया (चार सूत मोटी लोहे की छड़) से निकाला जाता है। लबिया से थोड़ा-सा द्रव कांच निकालकर उसे ठंडा करके उसकी घुंडी बनाते हैं। घुंडी बनी हुई लबिया पर दूसरा कारीगर फिर से कांच लपेटता है। इस बार कुछ अधिक कांच निकाला जाता है, जिसे 'बवल' कहते हैं। ('बबल' बनाने वाला 'बबलवाल' कहलाता है।)

अब तीसरा कारीगर बवल के ऊपर कुछ और कांच लपेटता है। इस प्रकार जो आकार बनता है, उसे 'लोम' कहते हैं। (इसे बनाने वाला कारीगर 'लोमवाल' कहलाता है।) लोम एक और कारीगर को दे दी जाती है, जो कांच को कुछ ठंडा करके लोहे के टुकड़े पर खुरपी-जैसे दस्ते से गाय की पूंछ-जैसा आकार देता है।

चूड़ी जितने रंगों की बनानी हो, उतने ही रंगों की अलग-अलग बत्तियां लोम पर लगा दी जाती हैं। बत्तियां लगाने में समय लगता है, जिससे लोम ठंडी हो जाती है। इसलिए उसे गर्म करके तार बनाने के लिए तार लगाने वाले कुशल कारीगर के पास ले जाया जाता है। तार की मोटाई और गोलाई में समानता रहना नितांत आवश्यक है। तार खींचने वाले कारीगर को आजकल ७० से ८० रुपये तक दैनिक मजदूरी दी जाती है।

तार खींचने का काम लोहे के खांचेदार गोल बेलन पर होता है। इसे एक और कुशल कारीगर (जिसे 'बिलनिया' कहा जाता है) चलाता है। घूमते बेलन पर चूड़ियों का स्प्रिंग-जैसा मुट्ठा तैयार होता है, जिसे एक और कारीगर उतार लेता है और ठंडा करने के लिए लोहे के तसले में रख देता है।

एक मुट्ठे में लगभग ५०० चूड़ियां होती हैं, जिन्हें हीरे की कनी अथवा कुंरड (मसाले की बनी कनी) से काटते हैं। काटने के बाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चूड़ियों को २८८ चूड़ियों के एक तोड़े या गट्ठे में गिनकर बांधा जाता है। थोड़ी-सी गर्मी देकर मिट्टी के तेल के लैंप से चूड़ियां जोड़ ली जाती हैं।

कटाई-कारखाने में, घूमते गोल सान-पत्थर से चूड़ी पर विभिन्न प्रकार की कटाई करके डिजाइनें बनायी जाती हैं। यह काम करने वाले कारीगर को 'कटैया' कहते हैं।

जिन चूड़ियों पर हिल्ल (सुनहरा मुलम्मा) करवानी होती है, उन्हें हिल्ल करने वाले के पास भेज देते हैं। हिल्ल सोने का रासायनिक घोल है। पहले यह इंग्लैंड या जर्मनी से आती थी; अब यहीं बनने लगी है। हिल्ल को चूड़ी के कटे भाग में लगाकर फिर सिकाई-भट्ठी पर गर्म करते हैं, तो सुनहरी चमक आ जाती है।

चूड़ी-निर्माण का काम बड़ा नाजुक है, जरा चूके कि चूड़ी चटाक् से टूटी; और यह टूटना कभी न टूटने वाला क्रम है। यह टूट-फूट भंगार कहलाती है, जिसे मजदूर रंगों के अनुसार अलग करते हैं, ताकि गलाकर उसका कांच फिर से काम में लाया जा सके।

—१३१०, पूर्वी रोहतास नगर, शाहदरा,
दिल्ली ११००३२

*

मुझे लाभ हुआ है

मार्क ट्वेन की एक परिचित महिला ने उन्हें पत्र लिखा कि मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती। ट्वेन ने तुरंत उत्तर में लिखा कि एक चुंबकीय स्वास्थ्य कमरपेटी खरीदकर इस्तेमाल करें।

कमरपेटी को कुछ दिन पहनने के बाद महिला ने ट्वेन को लिखा—'मैंने आपकी सलाह के अनुसार चुंबकीय कमरपेटी खरीदकर इस्तेमाल की, किंतु उससे मुझे तो कुछ भी लाभ न हुआ।'

ट्वेन ने तार द्वारा उत्तर दिया—'आपके कमरपेटी खरीदने से मुझे लाभ हुआ है। उस कंपनी में मेरी पूंजी लगी हुई है। मैं उसका मालिक हूं।'

—गोविंद राम गुप्ता

० ० ०

लोकसभा-अध्यक्ष, डा. गुरदयाल सिंह ढिल्लों जितने विनोदप्रिय हैं, उतने ही हाजिर-जवाब भी हैं। कुछ समय पूर्व एक संसदीय प्रतिनिधि मंडल में कई संसद-सदस्यों के साथ मुझे भी उनके नेतृत्व में दक्षिण-पूर्व एशिया के कई देशों में जाने का मौका मिला। हांगकांग में एक सरदारजी उनसे मिलने आये और उन्होंने डा. ढिल्लों से कहा कि आप आज से बीस साल पहले जैसे लगते थे, आज भी वैसे ही लगते हैं। डा. ढिल्लों ने मुस्कराते हुए सहज रूप से उन्हें जवाब दिया—'हां जी, बात सही है। बहुत मुश्किल से अपनी जवानी बरकरार रखता हूं। अगर लोकसभा में सदस्यों को पता चल जाये कि मैं बूढ़ा हो गया हूं, तो वे एक मिनिट भी मुझे अपनी कुर्सी पर नहीं बैठने दें!' और उपस्थित समुदाय ठहाके से गूंज उठा।

—शंकर दयाल सिंह (संसद-सदस्य)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिरीशरंजन

एक बंबई की ही बात नहीं, आज छोटे-बड़े हर शहर में आपको कुछ स्थान ऐसे मिल जायेंगे, जहां आप इत्मीनान से बाकायदा बैठकर जुआ खेल सकते हैं। यह जुआ ताश खेलने का भी हो सकता है, पासे फेंकने का भी, अथवा किसी अन्य तरह का भी; लेकिन इनमें सर्वाधिक प्रचलित है ताश खेलना। जगह-जगह आपको 'सोशल क्लब' के नाम से ऐसी जगहें मिलेंगी, जहां आप ताश के खेल पर पैसों का लेन-देन कर सकते हैं। ऐसे क्लब अथवा जुआघर चलाना आज कई लोगों की जीविका का साधन है। इसके लिए बाकायदा लाइसेंस भी मिलता है।

ताश का खेल जहां भी होता है, बेईमानी होती ही है। क्लबों या जुआघरों की बात जाने दीजिये, जब चंद 'दोस्त' दिल बहलाने के लिए ताश खेलते हैं और आपस में पैसों का लेन-देन करते हैं, तब भी।

ताश के खेल में दूसरों को ठगने के लिए तरह-तरह के तरीके ईजाद कर लिये गये हैं। पत्ताचोर (कार्डशार्पर) इन तरीकों से भली भांति वाकिफ होते हैं और जब जैसा मौका होता है, उन्हें काम में लाते हैं। उनके लिए विभिन्न प्रकार के साधन भी तैयार किये जाते हैं। विदेशों में तो चिह्नित ताश बनाना अथवा ताश के पत्तों की पहचान करने वाले यंत्रों का निर्माण करना-बेचना एक अच्छा-खासा उद्योग बन गया है।

पत्ताचोरों द्वारा काम में लाये जाने वाले ठगी के विभिन्न उपकरणों में एक है 'शाइनर'। हिन्दी में इसे हम 'चकमक' कह सकते हैं; क्योंकि पत्तों की छवि इस पर बखूबी चमक उठती है। 'शाइनर' देखने में बहुत ही छोटा होता है, जिसे अंगूठी या 'कफलिंक' में आसानी से 'फिट' किया जा सकता है। इसे लगाकर चतुर पत्ताचोर जब ताश बांटने लगता है, तो इसमें हर पत्ते की तस्वीर उभर आती है; इससे उसे पता लग जाता है कि बांटे गये ताशों में कौन-सा पत्ता इक्का है, कौन बादशाह और कौन बेगम!

दूसरे उपकरण का नाम है 'होल्ड आउट मशीन'—वांछित पत्ते अपने पास सुरक्षित रखने वाला यंत्र। यह यंत्र पत्ताचोर की बांह में, उसके कपड़ों के नीचे बंधा होता है और इसकी मदद से वह अपने काम के पत्ते तब तक अपने पास छिपाये रखता है, जब तक अपने हाथ के पत्ते से बदलने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुविधा उसे नहीं मिल जाती। फिर ऐसे-ऐसे यंत्र भी होते हैं, जिनके जरिये पत्ताचोर अभीष्ट पत्तों को पहचान के लिए छोटे-छोटे अदृश्य-से छिद्रों से अथवा अन्य तरीकों से चिह्नित कर सकता है।

ताश के खेल में ठगी का बेहतरीन तरीका है ऐसे पत्तों से खेलना, जो पहले से ही चिह्नित हों। ये चिह्न ऐसी सफाई से बने हुए और ऐसे कलात्मक होने चाहिये कि दूसरे पत्ताचोर को भी दीक्षा पाये बिना इनका पता न चले।

अचिह्नित पत्तों को खेल के दौरान भी चिह्नित करने के तरीके काम में लाये जाते हैं। बहुत-से पत्ताचोर विभिन्न उपकरणों की मदद से पत्तों में छिद्र बना देते हैं अथवा खरोंच का निशान लगा देते हैं। निशान ऐसे होते हैं, जिन्हें वे स्पर्श मात्र से पहचान जाते हैं। दूसरे तरीके में रसायनों की मदद ली जाती है। ताश के चंद पत्तों के पृष्ठभाग का रंग अपेक्षाकृत कुछ धूमिल या गाढ़ा कर दिया जाता है, अथवा उन पर रंगीन कलात्मक धब्बे बना दिये जाते हैं। उन रंगों या धब्बों के जरिये पत्ताचोर पत्ता पहचान जाते हैं। दोनों तरीकों में सिर्फ बड़े पत्ते ही (इक्का, बादशाह, बेगम आदि) चिह्नित किये जाते हैं।

स्त्री-पत्ताचोरों को कहीं अधिक सुविधा होती है। वे अपने लंबे नाखूनों से ही अपना काम बना सकती हैं। किसी एक उंगली के नाखून के किनारे अधिक तीक्ष्ण करके आसानी से चुनिंदा पत्तों पर अपनी पहचान के चिह्न अंकित किये जा सकते हैं, अथवा उनके किनारों को दूसरे पत्तों की तुलना में थोड़ा खुरदरा बनाया जा सकता है। अन्य खिलाड़ियों को उन पत्तों की कोई पहचान नहीं होगी।

मर्द बड़ा नाखून रखे, तो औरों के मन में संदेह पैदा हो जायेगा। अतः उसे अन्य तरीकों से काम लेना पड़ता है। कुछ पत्ताचोर एक विशेष प्रकार की टेप के अत्यंत छोटे चौकोर टुकड़े की मदद से अपने अंगूठे में सूईनुमा बारीक चीज चिपका लेते हैं और मौका मिलते ही उसकी मदद से पत्तों पर अपनी पहचान के छिद्र अंकित कर देते हैं।

इस प्रकार के साधनों में एक है 'पोकर रिंग'। देखने में बिलकुल साधारण अंगूठी की

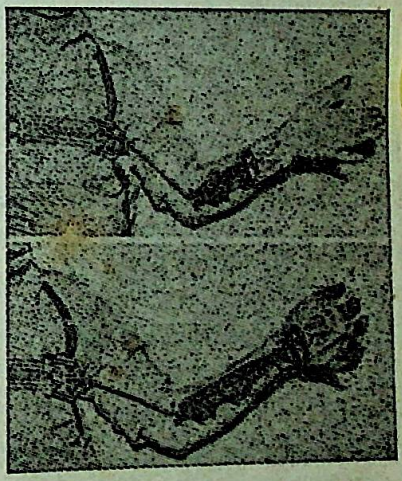

'चेस्ट होल्ड आउट मशीन'..... गहरी सांस खींची तो पत्ता अंदर, और छोड़ी तो पत्ता वापस हाथ में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पालन-पोषण सही कीजिए; बच्चों को बोर्नविटा दीजिए!

पढ़ने लिखने में सर्वश्रेष्ठ... खेलकूद में आगे

पढ़ने और खेलने में बच्चों की ख़र्च हुई शक्ति की सही पूर्ति न हो तो इनका मानसिक और शारीरिक विकास अधूरा रह जाता है। रोज़ बोर्नविटा पीने से बच्चों की शक्ति बनी रहती है। पौष्टिक कोको, दूध, मॉल्ट और शक्कर के मिश्रण से बना हुआ बोर्नविटा बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

पौष्टिक बोर्नविटा में कोको है जो स्वास्थ्यप्रद है और स्वादिष्ट भी!

शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए—कैडबरिज़ **बोर्नविटा!**

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह–बिलकुल निर्दोष। 'पोकर' (ताश का एक खेल) खेलने वाले पत्ताचोर इसका व्यवहार करते हैं, इस कारण इसका यह नाम पड़ा है। इसके निचले हिस्से में एक अत्यंत नुकीली सूई छिपी रहती है–एक इंच के ६४ वें हिस्से जितनी लंबी। पत्ताचोर जब पत्ते अपने हाथों में लेता है, अंगूठी पर अपने दायें-बायें किसी भी अंगूठे का हल्का दबाव डालकर मनचाहे पत्ते को चिह्नित कर सकता है।

छूकर पहचाने जा सकने वाले चिह्न बनाने में दोष यह है कि जब पत्ताचोर पत्ते न बांट रहा हो, तब उसे दूसरे खिलाड़ियों के पत्तों की जानकारी नहीं हो पाती। अपने हाथ के बनाये हुए अदृश्य चिह्नों को वह उंगलियों के स्पर्श से ही पहचान पाता है और यह सुविधा सिर्फ पत्ते बांटने के समय ही मिल सकती है। वैसे भी इतनी सूक्ष्म स्पर्श-शक्ति सबमें नहीं होती।

इसलिए कई पत्ताचोर पत्तों की पहचान के लिए दूसरा ढंग काम में लाते हैं। वे 'डॉब' का सहारा लेते हैं। 'डॉब' गोंद की तरह का एक लसीला पदार्थ होता है, जिसका शुमार सौंदर्य-सामग्रियों में किया जाता है। पत्ताचोर उसे टाईक्लिप, कफलिंक अथवा ऐसी ही अन्य किसी चीज में लगा लेते हैं। बाद में मौका मिलते ही उंगली से उसका स्पर्श करके, वह उंगली ताश के इच्छित पत्तों के पृष्ठभाग पर रख देते हैं। यह बात उन्होंने पहले से ही तय कर रखी होती है कि पत्ता अगर इक्का ह तो अमुक जगह

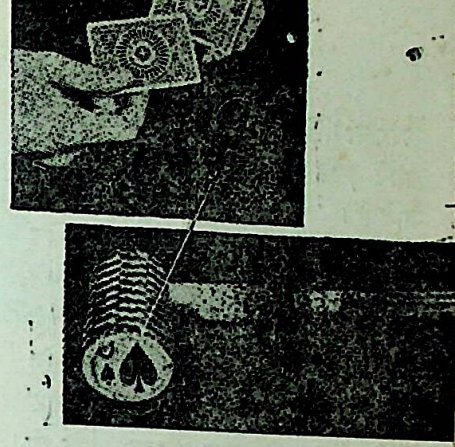

पाइप में फिट 'शाइनर' बड़े आराम से यह बता देता है कि कौन-सा पत्ता किसके पास गया।

पर उंगली रखनी है, बादशाह है तो अमुक जगह पर। जहां पर उंगली रखी जाती है, वहां का रंग अपेक्षाकृत कुछ गहरा हो जाता है; पर इतना गहरा भी नहीं कि स्पष्ट झलक उठे और दूसरे भांप लें। वस्तुतः यह अंतर इतना सूक्ष्म होता है कि सिर्फ पत्ताचोर ही पहचान पाता है।

सौंदर्य-सामग्रियों में ही गिनी जाने वाली एक और चीज का भी लाभ पत्ताचोर उठाते हैं। उसका उपयोग वे सबसे बड़े माने जाने वाले पत्ते यानी इक्के पर ही करते हैं। जिस पत्ते पर यह चीज लगा दी जाती है, वह औरों की अपेक्षा ज्यादा चिकना हो जाता है। पत्ता बांटते समय पत्ताचोर ताश की गड्डी को तीन-चार बार अलग-अलग हिस्सों में बांटकर फेंटता ह और इसके दौरान अत्यधिक चिकनाहट के कारण चारों इक्के फिसलकर अन्य पत्तों से अलग निकल आते हैं। पत्ताचोर अपने इच्छानुसार उन्हें पूरी गड्डी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर या नीचे रख देता है और ताश बांटते समय उसके सधे हाथ अपना कमाल दिखा जाते हैं।

'होल्ड आउट' यंत्र के आविष्कार का श्रेय या अपश्रेय आप 'पोकर' के खेल को दे सकते हैं। इस खेल की बढ़ती लोकप्रियता ने ही धूर्तों को इस दिशा में सोचने और ऐसा यंत्र बनाने के लिए प्रेरित किया। वस्तुतः 'पोकर' के खेल में एक भी अच्छा पत्ता हाथ में हो, तो आप लाभान्वित हो सकते हैं। 'पोकर' में ब्रिज की तरह गड्डी के पूरे पत्ते नहीं बांट दिये जाते और जब तक पूरी गड्डी गिन न ली जाये और एक-एक पत्ते की जांच न कर ली जाये, यह कहना मुश्किल होता है कि उसमें से अमुक रंग का इक्का या बादशाह ग़ायब है।

'होल्ड आउट टेक्नीक' यानी पत्ता छिपाकर रखने का तरीका। इसका सर्वप्रथम सफल प्रयोग करने वाले खिलाड़ी की कहानी भी कम दिलचस्प नहीं है। वह जब भी खेलने बैठता, उसकी पीठ दीवार की ओर रहती। खेल शुरू होने के थोड़ी देर बाद हमेशा ही वह बुरी तरह 'थक' जाता था, रह-रहकर जम्हाइयां लेने लगता था और अपने हाथ आगे या ऊपर की ओर फैलाकर 'थकान' दूर करने की चेष्टा करता था। इन चेष्टाओं की मदद से वह ताश का एक पत्ता हथेली में छिपा लेता था और बाद में उसे अपने कोट के कालर के पीछे पहुंचा देता था। जरूरत पड़ने पर एक जम्हाई आती, हाथ ऊपर की ओर उठकर पीछे कालर की तरफ जाता और छिपाया हुआ पत्ता हाथ के अन्य पत्तों के साथ आ मिलता।

इन दिनों कोट के कालर के बजाय, घुटनों के मोड़ में पत्ते छिपाने का प्रचलन है। कुर्सी आगे या पीछे खिसकाने अथवा पतलून के पायंचे ठीक करने के बहाने अपना हाथ मेज के नीचे ले जाने भर की देर है कि छिपाया हुआ पत्ता चोर के हाथ में। ताश के खेल में किसी भी खलाड़ी की ऐसी 'निर्दोष' हरकतों को संदिग्ध दृष्टि से देखने की आदत डाल लीजिये।

एक और यंत्र भी पत्ते छिपाने के लिए काम में लाया जाता है। यह पत्ताचोर के सीने पर कपड़ों के नीचे बंधा होता है व

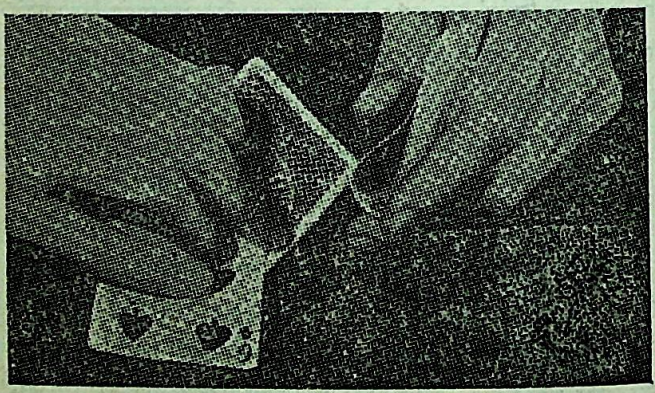

पत्तों के कोने चिह्नित करने का एक ढंग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

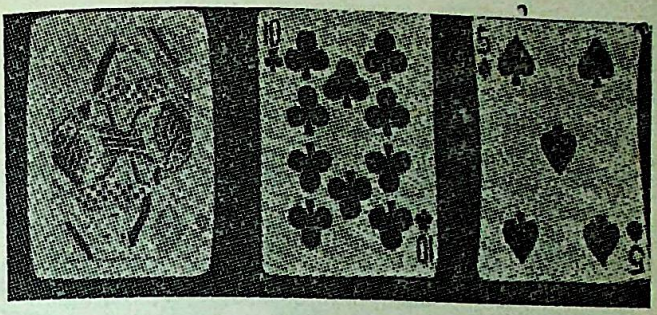

ताश के तीन पत्ते, तीनों अलग-अलग ढंग के, लेकिन चिह्नित—सिर्फ पत्ताचोर ही फर्क पहचान सकते हैं।

इसका एक हिस्सा पत्ताचोर की एक हथेली तक फैला होता है। यंत्र का संचालन वह अपनी सांस के जरिये करता है। जोर से सांस खींची, और पत्ता हथेली से खिसककर हाथ में ऊपर की ओर चला आता है। सांस छोड़ी कि पत्ता वापस हथेली में। (चित्र: पृष्ठ १०१)

पत्ते चाहे कितनी कुशलता से चिह्नित किये गये हों, एक बहुत ही आसान तरीके से आप पता लगा सकते हैं कि गड्डी में चिह्नित पत्ते हैं या नहीं। गड्डी को हाथ में ले लीजिये और पत्तों के ऊपरी हिस्से पर बड़े आहिस्ते से उंगलियां फिराते हुए गड्डी को दो हिस्सों में बांटकर इस तरह आपस में मिलाइये कि एक हिस्से के हर पत्ते का एक कोना दूसरे हिस्से के एक-एक पत्ते पर गिरे। अब अगर आपकी आंखों को ताश के पत्तों पर बनी डिजाइन कुछ हिलती-डुलती अथवा ऊपर की ओर उछलती प्रतीत हो, तो समझ जाइये कि पत्ते निश्चित रूप से चिह्नित किये हुए हैं।

पत्तों को चिह्नित करने की कला अब तो इतनी आगे बढ़ चुकी है कि इस तरह के ताश के सेट ही तैयार किये जाते हैं, जिनका हर पत्ता चिह्नित होता है। पत्तों के पृष्ठ-भाग की डिजाइन में ही हर पत्ते की पहचान के लिए अलग-अलग निशान बने होते हैं। बाद में बड़े स्वाभाविक ढंग से इन सेटों को जहाजों, होटलों अथवा क्लबों में बेच दिया जाता है—बाजार में उपलब्ध अन्य ताशों के मुकाबले कम दाम पर।

निर्दोष दिखने वाले ये ताश लेकर कोई आदमी खेलने बैठ सकता है। तब इसका लाभ उन धूर्तों को ही मिलेगा, जिन्हें पहले से इसकी जानकारी होती है और जो इन्हीं की प्रतीक्षा में होते हैं। अगर चिह्नित गड्डी खेल में नहीं लायी गयी, तो पहले से ही तैयार रखी हुई गड्डी चुपचाप पुरानी गड्डी की जगह रख दी जाती है। यह 'महत्त्वपूर्ण' कार्य प्रायः ऐसा आदमी करता है, जो ताश नहीं खेल रहा होता है और जिसे पत्ताचोरों की जमात में 'स्विचमैन' कहते हैं। यह 'स्विच-मैन' क्लब का वेटर भी हो सकता है अथवा यों ही 'निर्लिप्त' भाव से खेल देख रहा कोई भी आदमी। एकाकी पत्ताचोर लाभ की रकम के १० प्रतिशत तक के वादे पर 'स्विच-मैन' की सेवा प्राप्त कर लेते हैं।

कुछ ताशों में पत्तों के पृष्ठभाग पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओरिएन्ट

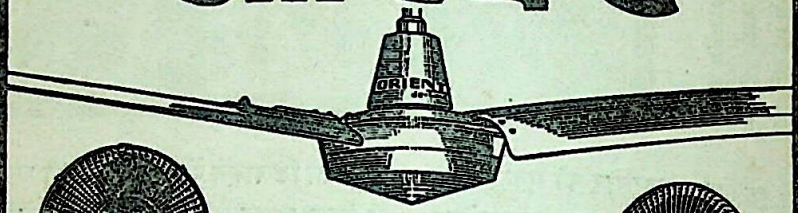

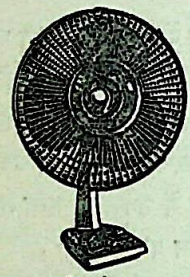

डेस्क पंखा

मजबूत
बेआवाज
निर्भरयोग्य

ओरिएन्ट पंखे आधुनिक घरों, आफिसों व इमारतों की आवश्यकताओं के अनुरूप ही खूबसूरत डिजाइनों में मिलते हैं। आपकी जरूरतों के लिये सीलिंग, टेबल, डेस्क, स्टैण्ड, वॉल-परपज और एग्जास्ट पंखें उपलब्ध हैं। भारत के सबसे अधिक अनुभवी पंखा-निर्माता द्वारा निर्मित ओरिएन्ट पंखे देश-विदेश में क्वालिटी में अद्वितीय माने जाते हैं। सभी पंखों पर दो वर्ष की गारन्टी।

सबसे अधिक बिकनेवाला पंखा—ओरिएन्ट

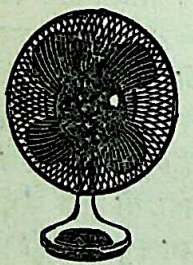

डुपर डीलक्स टेबल पंखा

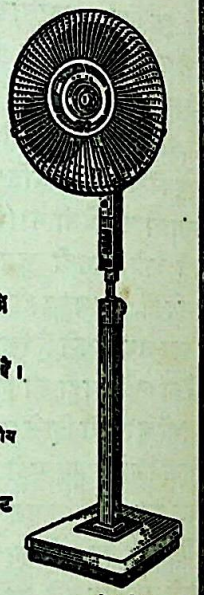

स्टैण्ड पंखा

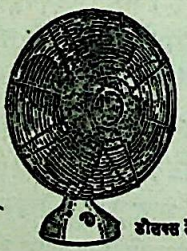

डीलक्स टेबल पंखा

वॉल परपज पंखा

ओरिएन्ट पंखा

विश्व विख्यात

ओरिएन्ट जनरल इन्डस्ट्रीज़ लि० ६, ग्रेट बीबी लेन, कलकत्ता-१४

फैक्ट्री : कलकत्ता और फरीदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाल रंग के बड़े-बड़े अंक बने होते हैं, जो लाल रंग का एक विशेष प्रकार का शीशा आंखों पर चढ़ाने पर ही दिखाई देते हैं। खासकर रात्रि में इस तरह के रंगीन चश्मे लगाना संदेह पैदा कर सकता है, अतः पत्ता-चोर बहुधा अपनी आंखों में लाल रंग का कांटैक्ट लेंस लगाये रहते हैं। लेकिन जहां खेल चल रहा है, वहां पर्याप्त प्रकाश हो, तो कांटैक्ट लेंसधारी पत्ताचोर की आंखों की पुतलियों के इर्द-गिर्द लाल रंग की झलक नजर आ जायेगी। ध्यान से देखने पर उसकी आंखों के केंद्र में हल्का-सा उभार भी नजर आयेगा।

और भी एक पहचान है। साधारणतः मनुष्य मिनिट में १४ बार पलक झपकाते हैं। अगर किसी खिलाड़ी की पलकें २० बार या उससे अधिक झपकती हों, तो समझ लीजिये कि उसने कांटैक्ट लेंस लगा रखा है।

पत्तों पर रंगों का गोलमाल इस तरह भी किया जा सकता है कि लाल रंग का शीशा या लेंस न लगाना पड़े। पत्तों पर की डिजाइन के किसी अत्यंत छोटे हिस्से के रंग की झाईं कुछ गहरी कर दी जाती है; पतली-सी एक या दो अतिरिक्त लाइनें इस तरह और ऐसी जगह बना दी जाती हैं कि वे डिजाइन का ही हिस्सा नजर आयें। डिजाइन में जितने चौकोर खाने बने होते हैं, उनके अतिरिक्त कुछ और खाने बना दिये जाते हैं; डिजाइन के कुछ हिस्से, जिन्हें सफेद होना चाहिये, रंगीन बना दिये जाते हैं; जिन पत्तों पर किनारों की तरह लाइनें खिंची होती हैं,

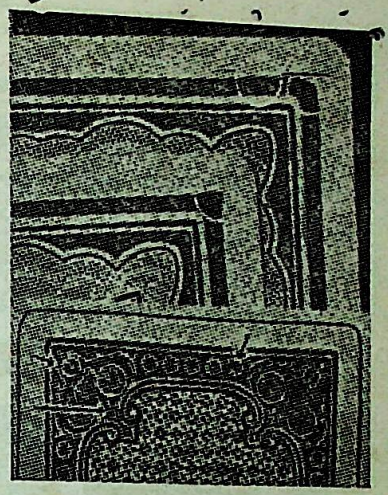

पत्तों को चिह्नित करने के दो तरीके—ऊपर चिह्नित जगह को अर्धगोलाकार निशान बताते हैं और नीचे तीर के निशान।

उनमें कुछ लाइनें अपेक्षाकृत मोटी बना दी जाती हैं।

पत्तों को चिह्नित करने के दो अत्यंत पुराने तरीके आज भी काम में लाये जाते हैं। एक में बड़े पत्तों के पिछले भाग की चमक 'स्टीम आयरनिंग' (बाष्प इस्तरी) के द्वारा अपेक्षाकृत धूमिल कर दी जाती है। दूसरे में ऐसे पत्तों को कड़ी धूप में उलटकर घंटे-दो घंटे के लिए छोड़ दिया जाता है, जिससे उनमें हल्का पीलापन आ जाता है। मगर जिन्हें पहले से मालूम न हो, उन्हें कोई अंतर नजर नहीं आता।

पत्ते चिह्नित करने का अत्यधिक सफल-लोकप्रिय तरीका है बड़े पत्तों के किनारों को खुरचकर उन्हें अन्य पत्तों से जरा-सा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो

जल्द घुल जाता है
जल्द जज़्ब हो जाता है

इसलिए साधारण दर्द-विनाशक गोलियों की अपेक्षा

दर्द से दो गुना जल्दी आराम पहुंचाता है

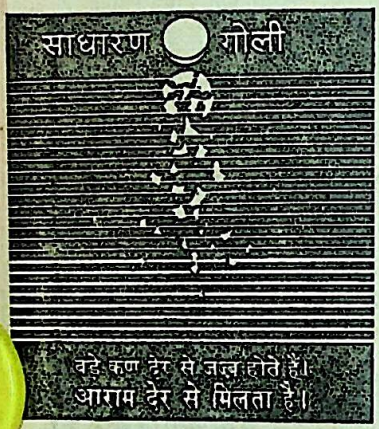

ऐस्प्रो के बारीक कण साधारण गोलियों की अपेक्षा जल्द जज़्ब हो जाते हैं। दर्द के स्थान पर जल्द पहुंचते हैं और आपको जल्द आराम मिलता है।

इन तकलीफ़ों के लिए माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो लीजिए:
सिरदर्द • शरीर का दर्द • सर्दी-जुकाम • फ्लू • जोड़ों का दर्द • गले की खराश • दांत का दर्द

खुराक: प्रौढ़: दो गोलियां—आवश्यकता होने पर दो और लीजिए। बच्चे: एक गोली या डाक्टर की सलाह के अनुसार।

सिर्फ़ ऐस्प्रो ही माइक्रोफ़ाइन्ड है इसलिए यह दर्द को जल्दी खींच निकालता है

निकोलस (N) उत्पादन

A.G.S.10

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(चौड़ाई में १ इंच के ३२ वें भाग तक) छोटा कर देना। इसमें कई बार महत्त्वहीन पत्तों के किनारे भी खुरचे जाते हैं और उनके चारों कोनों का रूप उसी अनुपात में खुरच दिया जाता है; किंतु तब पत्तों में यह खुरचन हर ओर न होकर अलग-अलग जगहों पर होती है। किस जगह की खुरचन किस पत्ते के लिए है, यह पहले से ही तय होता है। पत्ते फेंटते समय उन पत्तों को अपनी वांछित जगह पर रखने और बांटते समय मनचाहे व्यक्ति के पास पहुंचाने की हस्तकला की बारी उसके बाद आती है।

पत्ताचोरों को कई बार पत्तों को पहले से चिह्नित करने का मौका नहीं मिलता। तब वे खेल के बीच में ही बड़े पत्तों के किनारों को बड़ी सफाई से जरा-सा मोड़ देते हैं, ताकि बाद में उन्हें देखकर अथवा छूकर आसानी से पहचाना जा सके।

*

तीन घंटे से एक पागल दीवार के साथ कान लगाये कुछ सुनने की कोशिश कर रहा था। वार्डन ने उसे दो-तीन बार टोका भी, पर हर बार उसने मुंह पर उंगली रखकर उसे चुप रहने को कहा। कुछ देर तक तो वार्डन सहन करता रहा। परंतु जब उससे नहीं रहा गया, तो वह सीधा डाक्टर के पास पहुंचा—'डाक्टर साहब, उन्नीस नंबर का मरीज तीन घंटे से दीवार के साथ कान सटाये खड़ा है। जब पूछता हूं कि क्या सुन रहा है, तभी मुंह पर उंगली रखकर मुझे चुप रहने को कहता है।'

'अच्छा-अच्छा, तुम चलो। मैं अभी उसे देखता हूं।' डाक्टर ने कहा और कुछ ही देर बाद वह उस मरीज के पास पहुंचा—'क्यों, क्या सुन रहे हो भई?'

'शू...शू...शू' कर इस बार उसने डाक्टर को भी चुप रहने को कहा। डाक्टर ने सोचा कि शायद दीवार में कोई कंपन-जैसी आवाज आ रही होगी। उसने भी दीवार से कान लगाकर सुनने की कोशिश की। लेकिन जब उसे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ा, तब वह मरीज से बोला—'भई, मुझे तो कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता!'

यह सुनते ही पागल मुस्कराया और बोला—'तीन घंटे से तो मैं दीवार से चिपका खड़ा हूं..... मैं तो कुछ सुन नहीं पाया और तुम सिर्फ एक-दो मिनिट में ही उसे सुन लेना चाहते हो! बहुत होशियार हो न! आखिर डाक्टर जो ठहरे!'

—नरेंद्र भारद्वाज

० ० ०

एक बार बेधड़क बनारसी तथा श्री हेमवतीनंदन बहुगुणा लखनऊ चिकित्सालय में साथ ही दाखिल हुए। संयोग की बात यह कि दोनों ही दुर्घटनाग्रस्त थे। बेधड़कजी का दायां अंगूठा और बहुगुणाजी का पैर कट गया था, जिसका आपरेशन होने वाला था। बेधड़कजी ने जब सर्जन को आते देखा, तो गाने लगे—

जग भले रूठे मगर, तुझको न रूठा चाहिये।
बहुगुणा को पैर औ, मुझको अंगूठा चाहिये॥

—पांडेय आशुतोष

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह प्यार है?

• अल्बर्ती मोराविया •

आज वे फिर उसी रास्ते से जा रहे हैं, जिस पर से छह वर्ष पहले अनेक बार गुजर चुके हैं। और वे लड़ते चले जा रहे हैं—जिद और रुखाई के साथ।

'क्या मतलब तुम्हारा कि "हम कितने सुखी हो सकते थे ?" हम जितने और जब हो सकते थे, सुखी थे—बस।'

'तुम्हारी समझ में आने से रहा। काम में चाहे जितने होशियार हो, दिल के मामले में एकदम भोंदू हो !'

'भोंदू तुम हो !'

'अगर हम तब समझ गये होते कि यही हमारी जिंदगी के सबसे बढ़िया साल हैं, इनका पूरा फायदा उठाना चाहिये, तो हम बहुत-बहुत सुखी हो सकते थे। पर हमने सब कुछ खो दिया।'

'वही रटा-रटाया भाषण ! आखिर खो क्या दिया हमने ?'

'अपना प्रेम ! सिर्फ प्रेम ही नहीं—सब-कुछ।'

'कैसे ?'

'तुम अच्छी तरह जानते हो—कैसे।..... लड़ाई-झगड़ा, चिड़चिड़ापन, उदासीनता, गाली-गलौज, मारपीट !'

'मारपीट ? ..... पर मैंने तुम्हें कभी भी नहीं मारा।'

'मारा नहीं ? उस दिन जब मैं कमरे में बंद हो गयी थी और बाहर आने से इन्कार कर रही थी, तुमने मुझे दीवार पर दे मारा था और मेरा सिर फूटते-फूटते बचा था।'

'नहीं, मैंने तुम्हें मारा थोड़ा ही था। मैं तो दरवाजा तोड़ रहा था। उसके लिए

• अनुवाद : मृदुला गर्ग •

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पल्लों पर जोर तो दिया ही था। तुम उनके ठीक पीछे थीं, सो अनजाने में दीवार से टकरा गयीं।'

'उससे क्या ? तुम बाल की खाल मत निकालो। मैं तो यही जानती हूं कि हम बहुत-बहुत सुखी हो सकते थे, पर नहीं हुए। हमारी जिंदगी के सबसे सुनहरे दो वर्ष बरबाद हो गये, बिलकुल-बिलकुल बरबाद हो गये।'

'बहुत-बहुत सुखी।..... बरबाद हो गये—बिलकुल-बिलकुल बरबाद हो गये.....इतना दोहराने की क्या जरूरत है ?'

'भाड़ में जाओ तुम !'

अब तक आधा रास्ता तै हो चुका था। वे भूरे पत्थरों की बनी नीची दीवारों के बीच से गुजर रहे थे। झुंड के झुंड नाशपाती के कंटीले झाड़ उनके ऊपर छाये थे। और उनके पीछे थी शुष्क, उजाड़ और बंजर पहाड़ी, जिस पर कहीं-कहीं जैतून के छोटे विकृत पेड़ दिखाई दे रहे थे। बीच-बीच में दूरी पर मुस्कराता नीला समुद्र दिख जाता था—स्वच्छ चमकीला और शांत—इस कदर शांत कि वह विस्तृत शांति कुछ उबाऊ हो चली थी।

युवती ठिठककर खड़ी हो गयी और सामने फैले समुद्र को देखकर गुनगुना उठी—'ओह, हम कितने सुखी हो सकते थे! हम दोनों बाईस वर्ष के थे, नवविवाहित थे, सब-कुछ था हमारे पास। जानते हो किसी-किसी रात, जब तुम सोये होते हो—सोये क्या, खर्राटे भर रहे होते हो—मैं रो उठती हूं, उस सुख को याद करके, जो हमारा हो सकता था, पर नहीं हुआ।'

उसने शब्दों में इतनी कटुता भर दी थी कि सिल्वियो को भी अनुताप होने लगा। शायद वह ठीक ही कह रही थी। पर शीघ्र ही उसने अपने आप पर काबू पा लिया और खीज के साथ बोला—'तुम्हारे खयाल से वह "सुख" होना कैसा चाहिये था ?'

'एक-दूसरे को हरदम प्यार करना, क्षण-भर भी न रुकना—एक-दूसरे की आराधना करना, दो के बजाय एक हो जाना।' पत्नी ने भावावेश से धीमे-धीमे कहा।

'तुम्हारा सुख अस्पष्ट और कृत्रिम है', सिल्वियो फौरन बोला—'पता है उससे मुझे किसकी याद हो आती है ?'

'किसकी ?'

'किराने की दुकान पर बिकने वाले चमकीले-भड़कीले चित्रित पोस्टकार्डों की। जानती हो, जिन पर एक बना-ठना छैला खूब कजरारी आंखों वाली छोकरी को बांहों में लिये रहता है; और कोने में गुलाब या गेंदे का फूल बना रहता है।'

'भोंदू !'

'भोंदू तुम हो। कम से कम तुम्हारा प्रेम तो ऐसा ही है। जानती हो, मैं "सुख" के बारे में क्या सोचता हूं ?'

'मैं नहीं जानना चाहती।'

'तुम्हें सुनना पड़ेगा।'

'नहीं, मैं नहीं सुनना चाहती', जिद में उसने हाथों से कान बंद कर लिये और दूर समुद्र की ओर ताकने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिल्वियो का पारा चढ़ गया। उसने उसके हाथ झटककर कानों पर से हटा दिये और उसे पकड़कर अपने पास खींच लिया। फिर जल्दी-जल्दी कहने लगा—'सुख होता है, जो हम हैं वह होने में—गहराई से, सचाई से, बिना समझौता किये, बिना दुःख से डरे। समझीं ? हम उन दो वर्षों में सुखी थे, क्योंकि हम एक-दूसरे से प्रेम करते थे। और प्रेम का अर्थ यही है कि स्त्री और पुरुष जो सचमुच हैं, हो सकते हैं। उन्हें किताबों के अनुसार चलने की जरूरत नहीं है। क्योंकि हम झगड़ते थे, गाली देते थे, मार-पीट करते थे, इसीलिए हम सुखी थे। समझीं ?'

'छोड़ो मुझे !'

'और जब मैं कुछ कहूं तो कान खुले रखो, समझीं ? मैं जब तुम्हारी बेवकूफी-भरी बातें भी सुनता हूं, तो तुम्हें मेरी समझ-दारी की बातें सुननी होंगी।'

'छोड़ो मुझे।'

सिल्वियो ने उसके ओंठों के कोने चूम लिये प्यार से या गुस्से से, वह खुद नहीं जानता था। फिर अलग होकर यों चलने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

अब रास्ते के सामने बंगले का द्वार दिखने लगा था। नन्ही पत्तियों और छोटे नीले पुष्पों वाली लताओं से वह आधा ढंका हुआ था। उनके ऊपर सफेद सादे बंगले का कुछ हिस्सा दिख रहा था। सीधी कंगनी, जमीन तक आती पानी की नाली और हरे रंग की खिड़कियां। खिड़कियां उसी कमरे की हैं, जिसमें सिल्वियो अपनी पत्नी के साथ दो वर्ष बिता चुका है। सहसा उसका दिल पिघल उठा। सचमुच इसी कमरे में उन दोनों ने एक-दूसरे को प्यार किया था और सुख पाया था। पत्नी के किताबी खयालों के अनुसार नहीं, पर एक तीव्र, उग्र सुख।

'चलो, अब वापस चलें।' पत्नी ने अधीर होकर कहा।

'नहीं, मैं भीतर जाना चाहता हूं।'

'पर क्यों ?'

'क्योंकि मैं जानता हूं कि यहां हमने एक दूसरे को प्यार किया था। मैं अपनी प्यार की जगह दुबारा देखना चाहता हूं।'

'वह प्यार था ?'

सिल्वियो ने कंधे झटक दिये और घंटी की रस्सी खींच दी। फौरन दूसरी ओर घंटी की तीखी पर मैत्रीपूर्ण जानी-पहचानी टन-टन सुनाई दी। कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद लताओं के झुरमुट में हलचल हुई, द्वार खुला और एक पंद्रह-वर्षीया लड़की बाहर निकली। उसका कद नाटा था, पर बदन खूब गठीला था। वह नीचे गले का तंग स्वेटर और ऊंची स्कर्ट पहने थी। चेहरे से वह बड़ी उम्र की औरत के समान लग रही थी। उसकी लंबी सूजी-सूजी आंखों में सदय व्यंग्य का भाव था और मोटे ओंठ कुछ कालिमा लिये हुए थे।

'क्या चाहिये ?' उसने पूछा—'मालकिन घर पर नहीं हैं।'

'वे किराये पर कमरे देती हैं ?'

'हां।'

'हम एक कमरा देखना चाहते हैं।'

'कमरा खाली नहीं है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कोई बात नहीं, बाद में खाली होगा, सभी के लिए देखना चाहते हैं।'

'अच्छा आइये।'

वही पुराना बेतरतीब झाड़-झंखाड़-भरा उद्यान, वही पुरानी सीढ़ियां जिनकी टाइलों के फूल फीके पड़ चुके थे। ऊपर झुके देवदार से झड़ी तीलियां जहां-तहां बिखरी पड़ी थीं। लड़की चूल्हे पर रखी हांडी के बारे में कुछ कहकर भाग गयी। सिल्वियो और उसकी पत्नी सीढ़ियां चढ़कर गये, फिर रंगीन कांच लगे एक दरवाजे से होकर कमरे में पहुंच गये। दो खिड़कियों वाला यह बड़ा-सा कमरा उनका रहा था। अभी तक सब-कुछ वैसे का वैसा था। लंबा-चौड़ा पलंग, उस पर मिट्टी के रंग का पलंगपोश, अंग्रेजी छाप की मेज-कुर्सियां, लाल टाइलों का फर्श, सफेद सादी दीवारें। कमरे में आजकल शायद कोई दंपति रह रहे थे। यहां-वहां जनाने और मर्दाने कपड़े टंगे थे और कुछ कुर्सियों पर भी पड़े थे। एक मेज पर तेल, क्रीम, पाउडर आदि शृंगार का सामान बड़ी तरतीब से लगा हुआ था। तकिये के नीचे से एक गुलाबी क़मीज और एक नीला कमीज-पाजामा झांक रहे थे। सिल्वियो द्रवित हो उठा।

'मैं जानता हूं, हम यहां सुखी थे।' उसने ऐसे कहा, जैसे अपने आपसे बोल रहा हो।

सहसा पत्नी आपे से बाहर हो गयी। 'चुप रहो! यह रहा तुम्हारा सुख!' और उसने झुककर फर्श पर थूक दिया।

सिल्वियो जानता था कि वह यह सब महज उसे गुस्सा दिलाने के लिए करती है, उसके स्वप्न और आदर्श चाहे जो भी हों। हर बार वह मन ही मन प्रतिज्ञा करता था कि इस फंदे में नहीं फंसेगा, बिलकुल शांत रहेगा, पर हर बार चूक जाता था। अब भी यही हुआ। बिनासोचे-विचारे उसने उसकी गोल-गोल उघड़ी बांहें पकड़कर इतने जोर से खींच लीं कि ऊपर खिंच आये उसके भारी वक्ष ब्लाउज के बाहर फूटने को हो गये। फिर उसके सुंदर, परेशान और रोषपूर्ण मुख के ऊपर फुंकार-कर बोला—'तुम खुद प्रेम के बारे में कुछ नहीं जानतीं। इस कमरे में हम पूरे दो साल रहे और यहां आकर तुम्हारा दिल नहीं पिघला! उलटे थूक रही हो!'

चित्र : स. चव्हाण

लाचारी और गुस्से के मारे उसने इतने मजेदार और आकर्षक तरीके से मुंह बिच-काया कि सिल्वियो का मन उसे चूमने को हो आया। पर उसके बजाय उसने उसे धक्का देकर बिस्तर पर गिरा दिया और मुंह के बल गिर जाने पर उसके कंधे पर एक जोरदार मुक्का जड़ दिया। फिर वह खिड़की पर जाकर बाहर झांकने लगा।

उसे लगा, उसका प्रेम मरा नहीं है। पिछले छह वर्ष के लड़ाई-झगड़े के दौरान हर बार वह यही हरकत करता आया है। जो सदा किया है, वही अब भी कर रहे हैं। उसकी सांस चढ़ आयी थी। सामने सूर्य के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाश से भरे उद्यान की नीरवता देख वह सोच रहा था कि वह उसके अपने मन की हलचल में कितनी विपरीत है। तभी उसने पत्नी का व्यंग्यपूर्ण स्वर सुना—'यही प्रेम है। क्यों?'

'प्रेम उग्र ही होता है', वैसे ही खड़े-खड़े उसने कहा—'तुम खुद सबसे पहले चाहती हो कि वह उग्र हो।'

'जरा अपने चारों तरफ तो देखो। असली प्रेम यह है।'

'क्या मतलब?' सिल्वियो घूम गया।

'मेरा मतलब उन लोगों के प्यार से है, जो आजकल यहां रह रहे हैं।'

'तुम्हें कैसे मालूम?'

'मैं महसूस कर सकती हूं। इस पूरे माहौल में हम महान और सच्चे प्रेम का अनुभव कर सकते हैं।'

तभी सीढ़ियों का दरवाजा खुला और वही लड़की भीतर आयी।

'देख लिया कमरा?' उसने कहा—'ये साहब-बीवी परसों जा रहे हैं।'

'कौन लोग हैं ये?' सहसा सिल्वियो पूछ बैठा—'विदेशी हैं? एक-दूसरे को बहुत प्यार करते हैं?'

'क्या मतलब?' लड़की ने साश्चर्य पूछा।

'वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं न?'

'सो तो भगवान ही जाने।'

'पर जब दो इंसान आपस में प्यार करते हैं, तो तुम्हें भी तो पता चलता होगा!'

लड़की असमंजस में पड़ गयी। 'कह नहीं सकती.....वे दोनों काफी बूढ़े हैं, सीधे-सादे लगते हैं—साथ-साथ घूमते-फिरते हैं।

'बूढ़े? कितने बूढ़े?'

'पता नहीं। बस बूढ़े।'

'समझ गया', सिल्वियो ने कहा—'और तुम? तुम्हारी मंगनी हो गयी?'

'हां।'

'तुम्हारा अपने मंगेतर के साथ ठीक चलता है?'

'चलता भी है, नहीं भी।'

'क्या मतलब?'

'उसका मिजाज कुछ ऐसा ही है।'

'और तुम?'

'वह कहता है मेरा मिजाज कुछ ऐसा है।'

'पर तुम एक-दूसरे को प्यार तो करते हो न!' उसने पूछा।

'प्यार नहीं करते, तो साथ क्यों रहते!' लड़की ने कहा।

*

इल्म, दौलत और शराफत

एक बार इल्म, दौलत और शराफत कहीं इकट्ठा हो गये। मजलिस खत्म होने पर दौलत ने कहा—'मैं तो अब जा रही हूं। अगर कहीं मेरी जरूरत हो तो मैं इस शानदार महल में मिलूंगी।' इल्म ने भी जाते हुए कहा—'अगर तुम्हें कभी मेरी जरूरत पड़ जाये, तो मैं फलां दारुल-उलूम (विश्वविद्यालय) में मिलूंगा।' शराफत खामोश रही। दोनों साथियों ने अब हैरत से पूछा—'बड़ी बी, आपने नहीं बताया कि आप कहां मिलेंगी?' बड़ी बी यानी शराफत ने कुछ उदासी के साथ कहा—'मुझे फिर कहीं ढूंढ़ने की कोशिश मत करना; क्योंकि मैं कहीं भी नहीं मिलूंगी।'

—मेवाराम गुप्त

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौत की जुस्तजू

अनंत

इटली के दक्षिण-पूर्व में भूमध्यसागर के बीच एक प्रसिद्ध द्वीप है—सारडीनिया। उसके एक नगर कगिलियारी में लुइजी मोरालिस इमारती लोहे का धंधा करता था। वह कोई ४८ बरस का था, मगर चुस्ती-फुर्ती में जवानों जैसा। स्वजन और मित्र उसे प्यार से नीनो कहकर पुकारते थे।

बात १५ मार्च १९६८ की है। उस रोज शुक्रवार था। शाम के समय नीनो और उसकी पत्नी रोजा घर में बैठे दिन-भर की बिक्री की रकम गिन रहे थे और हिसाब मिला रहे थे। बीच में रोजा अपनी कार में से कुछ कागज लेने के लिए क्लर्क आल्डो के साथ बाहर निकली।

नीनो भीतर बैठा था; अचानक उसने रोजा की चीख सुनी और वह बाहर आया। वहां उसने देखा कि ऊनी नकाब ओढ़े हुए तीन आदमी रोजा को घेरे खड़े हैं, उनके हाथों में बंदूकें हैं। नीनो के बाहर आते ही उन आततायियों ने तीनों को भीतर चलने को कहा। भीतर जाकर नीनो ने नोटों की एक गड्डी उन लोगों के सामने उछाली, जिसे उनमें से एक ने लपक लिया। उसके बाद वे नीनो के लारी-ड्राइवर की प्रतीक्षा करते रहे। उसके पहुंचते ही डाकुओं ने अहाते में ही उसे पकड़ लिया और चारों को रोजा की स्पोर्ट्स कार की ओर धकेलना शुरू किया। अब नीनो की समझ में आया कि यह डकैती नहीं, यह तो अपहरण-कांड है।

डाकुओं ने नीनो, रोजा और आल्डो को पीछे की सीट पर बैठाया और ड्राइवर को सामान भरने की डिकी में बंद कर दिया। स्वयं तीनों डाकू आगे की सीट पर बैठे। उनमें से एक ने कार चलायी और एक पीछे की ओर बंदूक ताने रहा। वे कार को लेकर उत्तर की ओर चले। नीनो घबराया नहीं, सावधानी से सारा कांड देखता रहा। उसने देखा कि ड्राइवर भारी बदन का है और बहुत कुशलता से कार चला रहा है।

कार शीघ्र ही मुख्य सड़क से हटकर एक तंग सड़क पर आ गयी और कुछ आगे जाकर एक कच्चे रास्ते के पास खड़ी ट्रक की बगल में रुक गयी। ट्रक में ईंटें भरी थीं। रोजा, आल्डो और ट्रक-ड्राइवर को डाकू एक ओर ले गये और उन्हें रस्सियों से बांधकर वहीं छोड़ दिया। नीनो की आंखों पर पट्टी बांधी गयी, नकाब ओढ़ा दिया गया और ईंटों के बीच थोड़ी-सी जगह में उसे लिटा दिया गया।

डाकुओं के जाने के बाद, रोजा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके साथी दो घंटों की कोशिशों के बाद अपने बंधनों से छूट पाये। छूटते ही रोजा ने पुलिस को फोन किया और अपहरण की सूचना दी।

उधर ट्रक तेजी से चली जा रही थी। नीनो को यह तो लगा कि ट्रक चढ़ाई पर जा रही है, लेकिन वह यह नहीं समझ पाया कि उसे किस इलाके में ले लाया जा रहा है।

अंततः ट्रक रुकी और वहां से पैदल-यात्रा शुरू हुई। रास्ते में पत्थर की एक नीची दीवार पार करते समय नीनो गिर पड़ा और उसकी टांग में से खून निकलने लगा। क्षण-भर के लिए डाकुओं ने उसकी आंखों पर से पट्टी हटायी, ताकि वह अपने घाव पर पट्टी बांध सके। जब नीनो पट्टी बांधने को झुका, तो उसे दूर बायीं ओर रोशनी की एक कतार दिखाई दी।

डाकू नीनो को लेकर पूरी रात और अगले दिन शाम तक चलते रहे। बीच-बीच में वे रुक जाते थे, जिससे कि यदि उनका पीछा किया जा रहा हो, तो पीछा करने वाला धोखा खा जाये। शाम के ५ बजे डाकुओं ने नीनो से नकाब उतारने और पट्टी खोलने को कहा तथा उसे खाने को रोटी और पनीर दिया।

नीनो ने देखा कि वे एक छोटी-सी घाटी में हैं तथा चारों ओर छोटे-बड़े ग्रेनाइट पत्थर बिखरे पड़े हैं। उसे अपने दायीं ओर एक बड़ी-सी लाल इमारत दिखाई दी। खाने के बाद उनकी पदयात्रा फिर शुरू हुई। थोड़ी ही देर बाद वे एक नीची-सी गुफा में घुसे।

गुफा में पहुंचने पर एक डाकू ने नीनो से कहा कि सीन्योर मोरालिस (श्रीमान मोरालिस), हम ठिकाने पर पहुंच गये हैं; अब बात की जा सकती है। बात बहुत सीधी है, तुम हमें पैसा दो या अपनी जान दो। तुम अपनी पत्नी को लिखो कि वह पैसा तैयार रखे, पुलिस से बात न करे और हमारे आदेशों का पालन ठीक से करे।

डाकुओं ने २६॥ लाख रुपये (२० करोड़ लीरा) की मांग की थी।

नीनो ने अपनी पत्नी को पत्र तो लिखा, लेकिन उसमें केवल यही लिखा कि मैं जीवित और स्वस्थ हूं। धमकियों के बावजूद, उसने पत्र में रकम लिखने से मना कर दिया। अतः डाकुओं में से एक ने पत्र छीनकर उसके पीछे अपने हाथ से कुछ लिखा। नीनो को लगा कि रकम का उल्लेख अपने हाथ से न करके उसने एक मोर्चा जीत लिया है।

वह थक गया था, अतः लेट गया और सोने की कोशिश करने लगा। उसके मन में क्रोध उमड़ रहा था। उसे लग रहा था कि मैंने कठोर परिश्रम करके धन कमाया है और ये डाकू उसे छीनने की कोशिश कर रहे हैं।

नीनो दब्बू आदमी नहीं था। पहले तो उसने वहां से भागने की बात सोची; लेकिन धीरे-धीरे उसके मस्तिष्क में अधिक व्यावहारिक विचार उभरे। उसने निश्चय किया कि इन डाकुओं में से प्रत्येक के बारे में जो भी ब्योरा पता चले उसे याद रखा जाये, उनके स्वभावों का पता लगाया जाये और छूटने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के बाद उस जानकारी के आधार पर उन्हें पकड़वाया जाये।

उधर रोजा नीनो को डाकुओं के चंगुल से छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। सौदेबाजी करके १०॥ लाख रुपये के बराबर रकम देकर उसने अपहरण के ठीक ३२ दिन बाद अपने पति को छुड़ा लिया। रिहाई के समय नीनो को एक डाकू की एक झलक दिखाई पड़ गयी, जो बाद में उसे पहचानने के लिए काफी थी।

अपहरण के मानसिक आघात से उबरते ही नीनो ने याददाश्त के आधार पर अपने अपहरणकर्ताओं के बारे में कुछ नोट्स तैयार किये। उनके असली नाम उसे मालूम नहीं थे, अतः उसने उन्हें काल्पनिक नाम दिये–जिसने उससे पत्र लिखवाया था उसे 'लेख-चतुर' का, अन्य डाकू जिसे कप्तान के नाम से पुकारते थे उसे 'कप्तान' का, जो नीनो के साथ ठीक व्यवहार करता था उसे 'मित्र' का, और जो बहुत ही कठोर था उसे 'जल्लाद' का।

बंदी-काल में समय बिताने के लिए नीनो डाकुओं के साथ काफी समय तक बातें करता रहता था। बातों ही बातों में वह उनके चरित्र का पता भी लगाता चल रहा था। उसे लगा कि 'मित्र' कार चलाने में होशियार है और उसका शौकीन भी है; 'जल्लाद' स्नायु-तनाव से पीड़ित रह चुका था, उसने बेहोशी की बहुत-सी दवाइयां खायी थीं और घोड़े पर से गिर जाने से उसके तीन दांत टूट गये थे। रिहाई के समय नीनो डाकुओं का सहारा लेकर खड़ा था, उस समय उसने भांप लिया कि उनमें से एक उससे लंबा और पतला है तथा दूसरा मोटा और नाटा।

इस कांड में वह नीली कार भी एक बड़ा सूत्र थी, जिसमें फिरौती का सौदा करने एक पुरुष और एक महिला जाते थे। नीनो की ओर से सौदा करने वालों ने बताया कि जब भी वे बातचीत के लिए जाते, उस नीली फियेट में एक पुरुष और एक महिला उन्हें खुली सड़क पर मिलते थे। इस कार पर बरसाई की नंबर प्लेट लगी होती थी।

इधर नीनो सब सूत्रों को पिरो रहा था, उधर पुलिस, जासूस और मजिस्ट्रेट उससे तरह-तरह से पूछताछ कर रहे थे। उन्होंने उसे सैकड़ों फोटो दिखाकर अपहरणकर्ताओं को पहचानने को कहा; किंतु नीनो यह जानता था कि पिछले अपहरण-कांडों में पुलिस किसी अपराधी को पकड़ नहीं पायी थी। अतः उसने स्वयं अपने ढंग से काम करने और डाकुओं को पकड़वाने का निश्चय कर लिया।

उसने स्थानीय जनता के बीच रहने वाले पुलिस-चौकीदारों के साथ मेलजोल बढ़ाना शुरू किया। उनमें प्रमुख था साल्वातोर सेरा। वह एक लंब-तड़ंग और सुदृढ़ लांस-कारपोरल था और उस क्षेत्र में काफी लंबे समय से रह रहा था। साल्वातोर ने नीनो को बताया कि अपहरणकर्ता अपहृत व्यक्ति को आम तौर पर अपने ही इलाके में छिपाते हैं।

अब नीनो को यह धुन लगी कि पहले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ते बचपन का साथी – इन्क्रिमिन*!

ये छलकता उत्साह, ये चुस्ती, ये फुर्ती...ये हंसते खेलते तन्दरुस्त बच्चे...इन दिनों जब इनका शरीर दिन दुगनी रात चौगुनी गति से बढ़ता और विकसित होता है, इन्हें इन्क्रिमिन जरूर दीजिये। लाभदायक विटामिन, लोहतत्व और आवश्यक अमीनो एसिडस युक्त इन्क्रिमिन बढ़ते बच्चों के लिये बहुत आवश्यक है।

इन्क्रिमिन*

इन्क्रिमिन टॉनिक – बढ़ते बच्चों के लिये वरदान!

डॉक्टरों का विश्वासपात्र नाम सायनामिड इन्डिया लिमिटेड का एक विभाग।

* अमेरिकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

SISTA'S-INC-B HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस गुफा का पता लगाया जाये, जिसमें उसे बंदी बनाकर रखा गया था। उसने सब सूत्रों पर विचार करके अनुमान लगाया कि वह गुफा बारबेगिया क्षेत्र में होनी चाहिये। उस क्षेत्र में कई गांव और पहाड़ियां थीं। उसने उन गांवों के पुलिस-चौकीदारों को अपने घर बुलाया और उनसे कहा कि मुझे दो निशानियों की तलाश है—एक तो पुराने ढंग की रोशनी की कतार की, और दूसरी एक पहाड़ी घाटी के पास की लाल इमारत की। पैर पर पट्टी बांधते हुए नीनो ने रोशनी की जो कतार देखी थी उसमें पीलापन था, अतः उसने उसी समय यह समझ लिया था कि वह रोशनी पुराने ढंग की है, क्योंकि उसमें नियान-प्रकाश सरीखा नीलापन न था।

कई दिन तक पुलिस-चौकीदार दोनों निशानियां खोजते रहे। तीसरे दिन एक चौकीदार ने फोन करके नीनो से कहा कि मेरा खयाल है कि दोनों निशानियां मिल गयी हैं, आप यहां आयें। नीनो शीघ्र ही उसके पास जा पहुंचा। चौकीदार ने उसे एक सड़क के किनारे पुराने ढंग की रोशनी की कतार दिखायी। वे जिस पहाड़ी घाटी को खोज रहे थे, वह भी वहीं पास में थी। लाल इमारत एक गिरजाघर की थी।

इतना भेद मिलने पर तो नीनो के उत्साह का वारापार न रहा और उसने दिन-रात एक करके वह गुफा भी खोज निकाली, जिसमें उसने कैद के ३२ दिन बिताये थे। गुफा फौनी नगर के समीपवर्ती गांव ओल्लोलाई से अधिक दूर नहीं थी।

गुफा के मिल जाने पर नीनो के सामने डाकुओं की खोज की समस्या उठ खड़ी हुई। उसे विश्वास था कि वे आस-पास में ही कहीं मिलेंगे। उसने साल्वातोर सेरा को साथ लेकर उस क्षेत्र में घूमना शुरू किया। वे दोनों गांवों के कहवाघरों में बैठते और वहां के लोगों के साथ मेलजोल बढ़ाने तथा उनका विश्वास प्राप्त करने की कोशिश करते। नीनो ने पुराने कबीलों के मुखियों से भी दोस्ती गांठ ली। वे लोग धनी गड़रिये थे और अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित माने जाते थे।

नीनो के इस काम से उसके शत्रु अकेले पड़ते जा रहे थे। निश्चय ही वे उसकी गति-विधि पर नजर जमाये हुए थे।

एक दिन एक गड़रिये ने नीनो के घर फोन करके उसे एक कहवाघर में मिलने को बुलाया। उसने बताया कि तुम्हारे अपहरण में फौनी के फाल्कनी-बंधुओं का अवश्य ही कुछ न कुछ हाथ रहा होगा। उनमें से एक भाई गिसेप्पी चरवाहा है, दूसरा साल्वातोर होटल में बैरा रह चुका है और मिलान की एक जमींदार महिला के घर पर काम कर चुका है। तीसरा भाई जेविनो डाके के अपराध में जेल भुगत रहा है।

नीनो और सेरा ने यह भी पता लगाया कि जिन दिनों नीनो गुफा में बंद था, उन दिनों गिसेप्पी और साल्वातोर घर पर नहीं थे, फरार थे। गिसेप्पी देसिमोपुत्ज में काम करता था। वहां पता लगाया, तो मालूम हुआ कि उन दिनों वह काम पर भी नहीं गया था। वे गिसेप्पी से मिले और उससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछताछ की। वह घबरा गया और बहके-बहके उत्तर देने लगा। नीनो को विश्वास हो गया कि गिसेप्पी फाल्कनी ही 'कप्तान' है। चौकीदार ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

इसके बाद, दूसरा भाई साल्वातोर फाल्कनी जहाज पर चढ़ता हुआ पकड़ा गया। उसकी लिखावट की जांच करने पर ज्ञात हुआ कि उसने ही नीनो के पत्र पर पीछे की ओर कुछ लिखकर उसकी पत्नी रोजा को भेजा था। नीली फियेट कार उसी की थी। अब यह समस्या बाकी रही कि उस कार में जाने वाली महिला कौन थी।

नीनो और सेरा मामले की छानबीन में निरंतर लगे रहे। एक दिन एक मदिरालय के मालिक ने उनके कान में कहा कि मैंने साल्वातोर फाल्कनी को कासूला के साथ देखा था। जेसूनो कासूला ट्रक-ड्राइवर था, उस पर पहले से भी पुलिस को संदेह था। मार्च के अंत में वह छिप गया था। छिपने का उससे अच्छा उपाय क्या हो सकता है कि जिसका अपहरण किया गया हो, उसी के साथ रहा जाये।

नीनो को याद आया कि वह जिस डाकू को 'मित्र' कहता था, उसे कार चलाने का शौक था। कासूला को भी यह शौक था और उसके पास रोजी की कार जैसी ही आल्फा रोमियो-ज्यूलियट थी। जनवरी १९६९ में जेसूनो रोम में पकड़ा गया और उसे विमान द्वारा कगिलियारी लाया गया।

कार वाली महिला का भेद भी धीरे-धीरे खुला। जेसूनो की एक बहन आंतोनियेत्ता का विवाह आंत्योको मोरो से हुआ था। आंत्योको सीमेंट के ब्लाकों का छोटा-सा धंधा करता था। वह लंबा-तड़ंगा था और पता चला कि घोड़े पर से गिर जाने के कारण उसके तीन दांत टूट गये थे। नीनो जिस डाकू को जल्लाद कहता था, जेसूनो आंत्योको के लक्षण उससे बहुत मिलते थे।

नीनो के अपहरण में आंतोनियेत्ता और आंत्योको की साझेदारी उस समय पूरी तरह सिद्ध हो गयी, जब आंतोनियेत्ता ने तीन लाख लीरा का एक चेक पचास-पचास हजार लीरा के छह नोट देकर भुना दिया। उन नोटों पर पुलिस के हस्ताक्षर थे, वे नीनो को छुड़ाने के लिए चुकायी गयी फिरौती में से थे। पुलिस ने आंत्योको के साथ उसकी पत्नी और पत्नी की दो बहनों को भी गिरफ्तार कर लिया। उनमें से ही एक महिला नीली कार में जाया करती थी।

इस प्रकार नीनो ने ३ लाख लीरा वापस प्राप्त कर लिये और उसके अपहर्ताओं को १२ जून १९७१ को ४० से ६० वर्ष तक के कठोर कारावास का दंड दिया गया।

सारडीनिया के इतिहास में यह पहला वाकया था कि एक अपहृत व्यक्ति अपने अपहर्ताओं को पकड़वा पाया था। इस सफलता के पीछे देहाती पुलिस चौकीदारों और गड़रियों का बड़ा हाथ रहा। उन्होंने नीनो का साथ किस कारण दिया? इस प्रश्न का उत्तर एक गड़रिये के इस उद्गार से मिल जाता है—'हम उसका आदर करते हैं, जो अपने साथ हुए अन्याय के विरुद्ध लड़ता है।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुकरण

सुरेश पांडेय

खानदेश के एक शहर में एक चमार रहता था। उसका नाम मुद्रा था। वह अपने काम में बहुत होशियार था। धीरे-धीरे उसके पास काफी धन इकट्ठा हो गया। जूता बनाने के काम से वह ऊब गया था। उसने फैसला किया कि मैं खेती करूंगा।

मुद्रा ने निकट के ही गांव में जमीन खरीद ली। उसके पड़ोसी किसान का नाम कलिंग था। कलिंग बुद्धिमान और मेहनती था। उसने आकर मुद्रा से पूछा—'खेती के बारे में तुम जानते तो हो न?'

मुद्रा ने कहा—'खेती करने के लिए उसके बारे में जानकारी क्या जरूरी है! मैं सब कर लूंगा।'

कलिंग मुस्कराता हुआ वापस चला गया। मुद्रा ने सोचा कि कलिंग एक अच्छा किसान है। मैं उसी का अनुकरण करूंगा।

कुछ समय बाद की बात है। कलिंग ने कपास की खेती की। जैसा कलिंग ने किया, ठीक वैसा ही मुद्रा ने किया। दोनों की फसल बहुत अच्छी हुई। एक दिन मुद्रा की कलिंग से मुलाकात हुई। मुद्रा ने कहा—'तुमने पूछा था न, मैं खेती के बारे में जानता तो हूं। देखो, मेरी फसल भी कितनी अच्छी हुई है।'

फसल तैयार थी। संध्या को जब कलिंग के नौकर खेतों से लौटे, तो कलिंग ने उनसे कहा—'कल सुबह सीधे खेतों पर ही जाना। पौधों से कपास निकालकर बाजार पहुंचा देना। सारा काम कल ही पूरा कर लेना।'

अगले दिन सुबह मुद्रा दीवार से कान लगाये खड़ा था कि कलिंग नौकरों को क्या हुक्म देता है। पर नौकर आये ही नहीं। कुछ देर बाद मुद्रा ने सोचा कि शायद कलिंग ने अपने नौकरों को छुट्टी दे दी है। उसने भी अपने नौकरों को छुट्टी दे दी और दूसरे दिन आने को कहा।

दूसरे दिन उसने कलिंग को कहते सुना—'कपास के सब पौधे उखाड़कर उन्हें खेतों के कोनों में जमा कर दो।'

मुद्रा ने भी अपने नौकरों को यही आदेश दे दिया। दोपहर तक उसके नौकरों ने कपास सहित सभी पौधों को उखाड़कर कोने में जमा कर दिया। सारी कपास नष्ट हो गयी।

अगले दिन कलिंग मुद्रा के यहां आया। मुद्रा ने उससे पूछा—'आज तुम्हारे नौकर क्या

* बाल-पाठकों के लिए काठियावाडी लोककथा *

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Rawsilin has arrived for those few men out there

A new suiting. For those men dwelling in the sunnier side of life. Men who settle for nothing but the best. A versatile suiting warm in winter, cool in summer ideal for Indian climatic conditions. RAWSILIN is a suiting for those particular men with those particular tastes.

JIYAJEE SUITING

Jiyajeerao Cotton Mills Ltd. Birlanagar (M.P.)

कर रहे हैं ?' कलिंग ने जवाब दिया—'आज उनकी छुट्टी है। वे सारी कपास निकालकर बाजार पहुंचा आये और उन्होंने कल खेत भी साफ कर दिये। आज वे आराम कर रहेहैं।'

मुद्रा को आश्चर्य हुआ, पूछा—'यह कब हुआ ?'

कलिंग ने कहा—'परसों। तुम अपनी फसल देखो, सब चौपट हो गयी है !'

मुद्रा ने अपनी गलती मान ली। बोला—'सभी कामों में अनुभव चाहिये। तुम्हें चुनौती देने के बजाय, मुझे तुमसे उस समय सलाह लेनी चाहिये थी।'

*

कहावती फल

फल दूसरों के लिए पकता है।.....फल खाओ, पेड़ मत गिनो। .....वृक्ष के अनुरूप फल होता है। .....फल छांव में नहीं पकता। ..... फलदार पेड़ पर ही लोग पत्थर फेंकते हैं। .....सूखे पेड़ पर फल नहीं लगते।..... फल देकर पेड़ अमर हो जाता है। ..... मीठे फल को ही कीड़े खाते हैं। .....पेड़ लगाकर ही फल की आशा करो।..... फल लगने पर शाखा झुक जाती है।..... फल डंठल से दूर नहीं रहता।..... बेमौसम का फल स्वाद नहीं देता।

—ललिता कुप्पुस्वामी

० ० ०

पूर्णिया श्रावक को अपने जीवन में अनेक बार सपत्नीक भूखा रहना पड़ा! वे अभावग्रस्त रह सकते थे, परंतु अपनी मानसिक शांति किसी भी शर्त पर खोने को तैयार न थे। जब तक वे अपने अतिथि को भोजन न करा देते, स्वयं न करते थे।

एक दिन सुबह के समय पूर्णिया स्वाध्याय में रत थे। पर बीच-बीच में स्वाध्याय का क्रम टूट जाता, मन उचट जाता, और विचार की शृंखला टूट जाती। नये सिरे से फिर से पढ़ना शुरू करते। प्रयास करने पर भी मन में स्थिरता नहीं आ रही थी। स्वाध्याय का निर्धारित समय पूर्ण हो गया और वे अपने आसन से उठ बैठे। उनकी पत्नी ने उनके चेहरे पर ऐसा उतार-चढ़ाव कभी नहीं देखा था, पूछ बैठी—'आज क्या स्वास्थ्य ठीक नहीं ?'

'शरीर तो ठीक है, पर मन की अस्वस्थता ने एकाग्रता आने ही नहीं दी। मानसिक घबराहट का कारण जानते हुए भी मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि क्या बात है! आज अपने घर में अनीति से अर्जित कोई वस्तु तो नहीं आ गयी ? क्योंकि भोजन के अनुसार ही मन के संस्कार बनते-बिगड़ते रहते हैं।'

पत्नी को एक बात याद आयी और दूसरे ही क्षण वह बोली—'क्षमा कीजिये, आज भूल हो गयी। मैं पड़ोसी के यहां चूल्हा जलाने के लिए आग लेने गयी थी। कंडा अपने साथ ले नहीं गयी थी। उसी के कंडे पर आग ले आयी थी और जल्दी में लौटाना भूल गयी।'

पैसे-दो पैसे की चीज ने पूर्णिया के विचारों में कैसा गतिरोध पैदा कर दिया था! उन्हें अपनी मानसिक अस्वस्थता का कारण मालूम हो गया। उन्होंने एक कंडा पड़ोसी के यहां वापस भेज दिया।

—डा. गोपालप्रसाद 'वंशी'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे मास्टरजी

एम. दंडपाणि

चालीस साल पहले की हमारे ही कस्बे के हाईस्कूल की घटना है। हमारे एक अध्यापक थे रेवरेंड अरुलस्वामी। ऊंचे-पूरे और देखने में भव्य आदमी थे वे। विद्यार्थियों से वे बहुत प्रेम करते थे और हम विद्यार्थी भी उन्हें बहुत चाहते थे। वे गणित पढ़ाया करते थे और बहुत अच्छी तरह पढ़ाया करते थे।

एक दिन उन्होंने हमें चार सवाल देकर कहा कि घर से कर लाना। अगले दिन हम सब करके ले आये। मगर हममें से एक लड़का सवाल करके नहीं लाया और उसे इस बात की लज्जा भी नहीं थी। बल्कि वह सबसे कहता फिर रहा था कि सर पूछकर तो देखें कि सवाल क्यों नहीं किया; मैं उन्हें बढ़िया जवाब दूंगा।

रेवरेंड अरुलस्वामी क्लास में आये। बारी-बारी से एक-एक लड़का जाकर उन्हें अपनी कापी दिखाने लगा। वे सवाल जांचते और नंबर देते। अब उस लड़के की बारी आयी। वह खड़ा हुआ। हम सबके मुंह उसकी ओर फिर गये।

'सर, मैंने सवाल नहीं किये हैं।'

'क्यों? क्या कारण है?'

'बस, ऐसे ही नहीं किये।'

'मैं पूछ रहा हूं, क्यों नहीं किये? क्या तुम्हें आते नहीं थे?'

'आते थे, पर नहीं किये।'

कुछ देर तक ऐसे ही सवाल-जवाब चलते रहे। अंत में रेवरेंड अरुलस्वामी ने लड़के से कहा—'जरा हेडमास्टर साहब के कमरे में जाकर छड़ी लाओगे?'

'अच्छा सर!'

लड़का जाकर छड़ी ले आया। रेवरेंड अरुलस्वामी ने लड़के को बोर्ड के पास आने को कहा। लड़के ने समझा कि अब उसे हाथ आगे करने को कहा जायेगा। वह निश्चय कर चुका था कि मुझ पर छड़ी उठायी गयी, तो मैं कमरे में दौड़-दौड़कर मास्टर साहब को छकाऊंगा।

मगर रेवरेंड अरुलस्वामी बोले—'देखो मैंने यह अपराध किया कि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध होमवर्क करने को दिया। यानी मैंने तुम्हें नाराज किया है। सो तुम्हें यह अधिकार है कि मुझे दंड दो। यह लो छड़ी और मुझे नसीहत दो।' और वे लड़के के आगे हथेली फैलाकर खड़े हो गये।

क्लास में सन्नाटा छा गया। लड़का हक्का-बक्का खड़ा रह गया। उसकी सारी शरारत और उद्दंडता छूमंतर हो गयी। उसकी आंखों में आंसू छलछला आये।

रेवरेंड अरुलस्वामी उसके आगे हथेली फैलाये खड़े थे। वे कह रहे थे—'छड़ी मारो,

● 'भवन्स जर्नल' से साभार ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मारते क्यों नहीं ? अच्छा मेरी आज्ञा नहीं मानोगे तुम ?' उन्हें कई बार कहना पड़ा।

अंत में लड़के ने कांपते हाथों से छड़ी की नोक उनकी हथेली से छुआ दी और रोता हुआ उनके पैरों में गिर पड़ा। हम सबके भी आंसू निकल आये। तभी घंटी बजी और गणित का वर्ग समाप्त हुआ।

उस दिन से वह लड़का बहुत मन लगाकर पढ़ने लगा और क्लास का सबसे मेधावी और सुशील विद्यार्थी माना जाने लगा।

*

जो तेरे दिल को कह गया

आषाढ का महीना और रेगिस्तान दोनों मिलकर दोपहर को गर्म तवा बना रहे थे। चारों तरफ धूल ही धूल। एक बुढ़िया सिर पर गठरी लिये इस निर्जीव सन्नाटे में मार्ग तय कर रही थी, काफी थक गयी थी; इसलिए उपलब्ध एकमात्र पेड़ के नीचे बैठ गयी विश्राम के लिए। असहाय भाव से चारों तरफ दृष्टि घुमायी। इंसान तो क्या दूर-दूर तक कोई जानवर भी नजर नहीं आया।

एक दीर्घ निःश्वास छोड़ वह फिर से चलने को ही थी कि उसे पीछे से कुछ हलचल सुनाई दी। एक ऊंट-सवार भागता हुआ उसी तरफ आ रहा था। वह रुक गयी।

पास आने पर ऊंट-सवार ने कुशल-क्षेम पूछी। बुढ़िया ने अपनी थकान का जिक्र किया। यह भी बताया कि पास के गांव में अपनी बेटी के यहां जा रही है। जल्दी पहुंचना जरूरी है।

'भाई ! हो सके तो मुझ पर दया करके ऊंट पर बैठा लो।'

'मांजी ! मेरा ऊंट दुबला है। दो का बोझ नहीं झेल सकता।'

'अच्छा ! तो यह जोखिम की गठरी तो ले लो, जिससे मेरी तकलीफ कुछ तो कम हो !'

'मांजी ! मैं अभी अकेला हूं। इस बियाबान रास्ते पर दूसरों की जोखिम कहां संभालूं।'

'बेटा ! सिर्फ अगले गांव तक की ही तो बात है.....'

परंतु ऊंट-सवार काफी अनुनय-विनय करने पर भी राजी नहीं हुआ। एड़ लगायी और थोड़ी देर में ही रेत के बादल के पीछे ओझल हो गया। काफी दूर चलने पर उसे खयाल आया कि मैंने एक सुनहरा मौका खो दिया।

ऊंट को वापस मोड़कर वह बुढ़िया के पास पहुंच गया, लेकिन इस बार बुढ़िया के चेहरे पर परेशानी की जगह मुस्कान की रेखाएं थीं।

'मांजी ! लाइये, गठरी मुझे दे दीजिये, ताकि आपको कुछ तो राहत मिले।'

'नहीं बेटा ! अब तो मैं ही ले चलूंगी इसे। पर अचानक विचार कैसे बदल गया ? यह सुनसान राह और जोखिम.....'

'मांजी ! थोड़ी दूर चलने पर अचानक मेरे दिल से कोई कहने लगा—इस विपदा में तुम्हें मांजी की मदद अवश्य करनी चाहिये.....'

'लेकिन बेटा ! वही बाद में मुझे भी कुछ कह गया, जो तेरे दिल को कह गया.....'

ऊंट-सवार के चेहरे पर आषाढ की उस गर्म तवे-सी दोपहरी में धुंध-सी छलक आयी। क्षण भर भी रुके बिना उसने ऊंट को एड़ लगायी तथा आंखों से ओझल हो गया।

—गोपीकृष्ण सोनी द्वारा संकलित

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किशोरों के लिए विज्ञान :

अंतरिक्ष में हमारे भेदिये

डा. जगदीश लूथरा

पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काटते हुए मानव-निर्मित उपग्रहों के बारे में तुमने पिछले अंकों में पढ़ा। आओ, आज प्रोबों के बारे में कुछ जानें। प्रोब एक प्रकार के यान हैं, जिनका मुख्य कार्य है—दूर अंतरिक्ष या ऊपरी वायुमंडल के बारे में जानकारी एकत्र करना और उसे पृथ्वी पर भेजना।

विशेष उड़ान-मिशन को ध्यान में रखकर इन यानों की रचना की जाती है। जो कार्य प्रोब को करने होते हैं, उनका सामूहिक नाम मिशन है।

प्रोब ऊपरी वायुमंडल से लेकर अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों तक के बारे में छान-बीन के लिए काम में लाये जाते हैं। एक प्रकार से ये भेदिये का काम करते हैं। इन्हीं के द्वारा चंद्रमा की सतह के चित्र १,००० फुट की ऊंचाई से पृथ्वी को वापस भेजे गये थे, जिससे चंद्रमा पर मानव का अवतरण संभव हो सका।

इसी प्रकार मंगल, शुक्र आदि दूसरे ग्रहों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रोबों का उपयोग किया जा रहा है।

अंतरिक्ष-यानों में सबसे कम प्रसिद्ध, किंतु सबसे अधिक संख्या में छोड़ा जाने वाला यान ह—साउंडिंग राकेट यानी टोही राकेट। यह ऊर्ध्वाधर किस्म का प्रोब ह। (ऊर्ध्वाधर इसे क्यों कहते हैं, यह बात इसी लेख में आगे समझायी गयी है।) इसमें रखे यंत्रों के पैकेट (राकेट द्वारा) ऊपरी वायुमंडल या निम्न अंतरिक्ष में पहुंचाये जाते हैं। सामान्यतः यह एक-दो स्टेज (चरण) वाले राकेटों द्वारा भेजा जाता है।

यंत्रों के पैकेट को नोक (नोज) में रखा जाता है। पैकेट राकेट से अलग भी हो सकता है। जब प्रोब अपना कार्य कर चुके, तब यदि यंत्र पैकेट को वापस प्राप्त करना जरूरी हो, तो पैकेट पैराशूट की सहायता से पृथ्वी पर वापस आ जाता है और उसमें लगे यंत्रों द्वारा जुटायी गयी जानकारी हमें मिल जाती है। यंत्रों के लिए आघात को जज्ब करने वाले खोलों या छतरियों की व्यवस्था की जाती है, ताकि यंत्रों को पृथ्वी पर वापस आने के दौरान कोई क्षति न पहुंचे और वे सही-सलामत वापस आ जायें।

इस प्रकार के टोही राकेट काफी ऊंचाई पर वायुमंडल के घनत्व, तापमान, रासायनिक रचना, सूक्ष्म उल्कापात का क्रम, मौसम, सूर्य के वर्णक्रम और ब्रह्मांड-किरणों इत्यादि के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं।

ये प्रोब बहुत थोड़े समय काम करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रायः कुछ ही मिनिट। इनका आय-भार (पे-लोड) कुछ पौंड का ही होता है। इस प्रकार के प्रोब किसी विशेष कक्षा में नहीं भेजे जाते। इनके राकेट में इतना धक्का (प्रणोद) तो होता है कि ये इच्छित ऊंचाई तक पहुंच सकें, परंतु वह इतना धक्का नहीं होता कि ये किसी कक्षा में स्थापित किये जा सकें। ये पहले सीधे ऊपर जाते हैं, उसके बाद थोड़ा पेराबोलीय पथ तय करते हैं और वापस नीचे की ओर गिर जाते हैं। इसका पथ रोमन अक्षर यू (U) से उलटे आकार का होता है।

उड़ान के दौरान यंत्रों द्वारा किये गये माप-जोख प्राप्त करने के लिए टेलिमीटरी (दूरमापी) प्रणाली की व्यवस्था की जाती है। अर्थात् यंत्रों से तापमान, घनत्व इत्यादि जानकारी को विद्युत-संकेतों में बदलकर ट्रांसमिटर द्वारा पृथ्वी पर भेजा जाता है।

इस प्रकार के यान काफी सरल और कम खर्चीले होते हैं और इनसे संबंध और इनकी गतिविधि का हिसाब रखने वाले भू-स्टेशन जटिल नहीं होते।

इस सरल प्रोब की तुलना में अंतरिक्षप्रोब काफी जटिल होता है और उसके डिजाइन, संरचना इत्यादि में काफी सूझ-बूझ से काम लेना होता है। यह स्वाभाविक भी है; क्योंकि इसे लाखों मील की यात्रा करके ग्रहों के नजदीक पहुंचकर उनके बारे में जानकारी जुटाकर पृथ्वी को भेजनी होती है।

अंतरिक्ष प्रोबों का मुख्य मकसद है ग्रहों, उपग्रहों और अंतरिक्ष की गहराइयों के बारे में जानकारी प्राप्त करना। उनके द्वारा प्राप्त जानकारी को ध्यान में रखकर अगले मिशनों के बारे में सोचा जाता है। कुछ प्रोब इस प्रकार के बनाये जाते हैं कि वे ग्रह पर उतर जायें, जबकि दूसरे ग्रह के नजदीक से गुजर जाते हैं और भिड़ंत के दौरान सूचनाएं प्रेषित करते हैं।

ये यान स्वयंपूर्ण और स्वयंचलित होते हैं, इनमें ऐसा पावर जनरेटर होता है, जो सूर्य या न्यूक्लीय पावर रीएक्टर से ऊर्जा लेकर उसे उपयोगी शक्ति (बिजली) में बदल देता है। फिर यह बिजली विभिन्न इलेक्ट्रानिकी उपकरणों को चलाती है।

अंतरिक्ष के विभिन्न पिंडों की छानबीन करने वाले मिशन को दो भागों में विभाजित किया जाता है। पहला है यात्रा (क्रूज); और दूसरा भिड़ंत (मिलन)। दोनों चरणों केलिए अलग अलग-तरह की यंत्रसज्जा होती है।

अंतरिक्ष प्रोब का संपर्क पृथ्वी से हमेशा

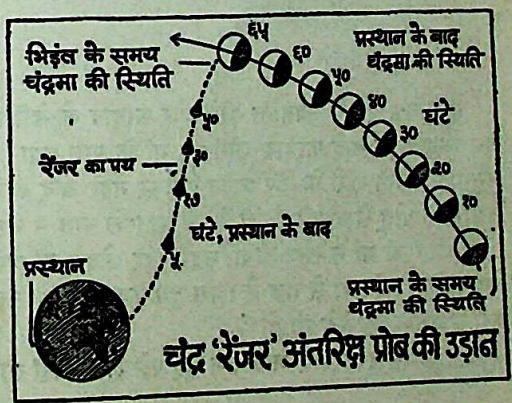

चंद्र 'रेंजर' अंतरिक्ष प्रोब की उड़ान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बना रहता है। प्रोब एक पूर्वनिर्धारित पथ पर चलता है। निर्धारित पथ और असली पथ के बीच में अंतर हो जाये, तो उसे ठीक करने की व्यवस्था भी होती है। यह कार्य या तो पृथ्वी पर से आदेश भेजकर किया जाता है, या यान स्वयं ही यह कार्य कर लेता है। प्रोबों में ताप-नियंत्रण की व्यवस्था भी रहती है, ताकि यंत्र इत्यादि सही ढंग से कार्य कर सकें।

यात्रा के दौरान पृथ्वी पर जानकारी भेजी जाती है और पृथ्वी से आदेश ग्रहण किये जाते हैं, ताकि यान अपने को सही मार्ग पर रख सके। भिड़ंत के दौरान ग्रह (या चंद्रमा) के बारे में विविध आवश्यक जानकारी प्राप्त की जाती है—अब सतह कैसी है? वहां गर्मी और आर्द्रता कितनी है? वहां का वायुमंडल कैसा है? किस प्रकार के विकिरण वहां पर हैं? इत्यादि। तापमान और आर्द्रता आदि सब बातें जानना बहुत जरूरी है; क्योंकि इन्हीं प्रश्नों के उत्तरों के अनुसार अगली उड़ानों में आवश्यक परिवर्तन किये जाते हैं।

—भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, बंबई-४०००८५

[अगला लेख : राडार]

अंडे की मां

पंडित मोतीलाल नेहरू के यहां कुछ अतिथि ठहरे हुए थे। भोजन के समय उनके लिए शाकाहारी भोजन आया, पर पंडितजी की थाली में अंडे रखे हुए थे। यह देखकर एक अतिथि आश्चर्य से बोला—'पंडितजी, आप अंडे भी खाते हैं!'

'घबराइये नहीं, अभी इनकी मां भी आ रही है।' पंडितजी ने हंसकर उत्तर दिया।

—प्रेमप्रकाश वर्मा

० ० ०

आधुनिक युग में अवतरित शीरीं और फरहाद को डेटिंग करते हुए कई दिन गुजर गये थे। एक दिन सभ्यता के नाते फरहाद शीरीं की मां के पास गया। उसने शीरीं के साथ अपने विवाह की अनुमति चाही। शीरीं के लिए पहाड़ काटकर नहर खोद लाने का वायदा किया। (कारण, सिंचाई-विभाग के बाबू से उसकी दोस्ती है, सो बात की बात में नहर खुद जायेगी।)

शीरीं की मां ने कहा-'भैया, नहर-वहर खोदने की अब आवश्यकता नहीं है। हमारे यहां तो नगरपालिका की कृपा से नल है। बस तुम केवल एक काम कर दो; यह लो एक रुपये का नोट और कहीं से इसके छुट्टे पैसे ला दो।'

.....और फरहाद आज तक छुट्टे पैसे लेकर नहीं लौटा है।

—जोजफ आर्थर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रथाएं कुछ ऐसी भी हैं

श्यामजी पंडित

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में सोन नदी के दक्षिण कुछ द्राविड जन-जातियां रहती हैं, जिन्हें कोरवा कहते हैं। छोटा नागपुर में भी इस जाति के लोग पाये जाते हैं। इनके पुरुष कोरकू कहे जाते हैं और स्त्रियां कोरके। ये रूढिवादी, प्राचीन परंपराओं के अंधभक्त और अंधविश्वासी हैं। इनमें बहुत-सी रोचक प्रथाएं प्रचलित हैं।

कोरवा लोगों में लड़के के विवाह की व्यवस्था उसकी बहन करती है। वधू के चुनाव में उसकी सुंदरता नहीं, बल्कि उसकी कार्यक्षमता पर ही ध्यान दिया जाता है। वर-पक्ष चावल देकर वधू का मूल्य अदा करता है। सगाई हो जाने के बाद किसी भी कारण से विवाह-संबंध तोड़ा नहीं जा सकता, भले ही वर बुद्धिहीन हो, पागल हो, नपुंसक हो या विकलांग हो।

बरात निकलने के बाद विवाह से इन्कार करने पर पंचायत फैसला करती है, जिसे सबको मान्य करना ही पड़ता है। विवाह के समय वहां उपस्थित सबसे बूढ़ा पुरुष लड़की को बुलाकर कहता है—'हम अमुक वर के साथ तुम्हारा विवाह कर रहे हैं। कैसी भी मुसीबत में तुम उससे संबंध तोड़ना नहीं और कभी भी अन्य जाति के आदमी के साथ संबंध जोड़ करके परिवार के संमान को धक्का न पहुंचाना।' सिंदूरदान के बाद लड़की का पिता बिरादरी के लोगों को बकरी के गोश्त और भात की दावत देता है।

विवाह के उपरांत लड़की को आजीविका के लिए जंगल का एक टुकड़ा शिकार के लिए सौंप देते हैं। पंचायत उस टुकड़े पर उसका स्वामित्व दर्ज कर लेती है और उसमें शिकार खेलने, कंद-मूल खोदने और जंगली फल तोड़ने का उसे अधिकार दे देती है।

पंचायत 'भैयारी' कहलाती है। उसके सदस्य अपने को राजा मानते हैं। उन्हें असाधारण अधिकार होते हैं। व्यभिचार-संबंधी अपराधों पर पंचायत ही विचार

चित्र : सतीश चव्हाण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करती है और अपराधी को भोज का दंड देती है। यदि अपराधी पंचायत के आदेश का पालन न करे, तो उसे जाति-बहिष्कृत करके उससे सारे अधिकार छीन लिये जाते हैं। स्त्री के साथ दुर्व्यवहार करने वालों को पंचायत कठोर दंड देती है।

पंचायती कानून के विरुद्ध आचरण करने पर तलाक दिया जा सकता है; परंतु तलाक-शुदा स्त्री को दुबारा शादी करने का अधिकार नहीं होता। विधवा किसी कुंवारे लड़के से विवाह कर सकती है, किसी विधुर से नहीं। साथ ही, विधवा अपने देवर की अनुमति के बिना विवाह नहीं कर सकती।

इन लोगों में पिता पांच दिन तक अपने नवजात शिशु को देख नहीं सकता। बारहवें दिन बिरादरी के लोग इकट्ठे होकर बच्चे का नामकरण करते हैं। नाम प्रायः किसी पूर्वज के नाम पर ही रखा जाता है; क्योंकि इनकी यह मान्यता है कि कोई न कोई पूर्वज ही शिशु के रूप में उनके यहां जन्म लेता है।

जिसकी मृत्यु निकट हो, उसे खुली हवा में लिटाया जाता है। शव जलाने के लिए घर से उत्तर-पूर्व की दिशा में ले जाये जाते हैं। मृतक की आत्मा की शांति के लिए कोई उत्सव आदि नहीं किया जाता, बल्कि उसकी चिता या कब्र के पास उसकी कुल्हाड़ी और उसके सभी आभूषण रख दिये जाते हैं। इनका दृढ़ विश्वास है कि ये सभी वस्तुएं मृतक को अगले जन्म में मिल जाती हैं। अंतिम संस्कार के दिन ये लोग स्वयं बाल बनाते हैं—नाई से नहीं बनवाते।

चंडोल नामक देवता को ये पूजते हैं और फागुन महीने में उसे मुर्गा, सिंदूर और फूलों की भेंट चढ़ाते हैं।

भूत-प्रेत में इन्हें बड़ा विश्वास है। उससे बचाव करने वाले को बैगा (ओझा) कहते हैं। बैगा साल में एक बार मादक द्रव गिराते हुए पूरे गांव की परिक्रमा करके जादू की रेखा खींच देता है। माना जाता है कि भूत इसे पार नहीं कर सकते। कभी-कभी मादक द्रव पीकर बैगा गिर पड़ता है, तो यही माना जाता है कि किसी बाहरी भूत ने आकर उस पर आक्रमण कर दिया है।

यदि किसी पर भूत चढ़ जाये, तो उसे बेहोशी आने लगती है। तब बैगा झाड़-फूंक से उसे ठीक करता है। यदि रोगी कोई जवान स्त्री हो, तो उसे देवालय में ले जाया जाता है, जहां बैगा लोहे से बनी हुई जंजीर (गुरदा) से मारकर उसका भूत उतारता है।

चेचक या हैजा फैलने पर बैगा रोब शक्कर और मक्खन की बलि चढ़ाता है। ये मानते हैं कि भूत और पिशाच के कारण ही ज्वर होता है। ये अपने पूर्वजों की पूजा तो नहीं करते; लेकिन यदि कोई असाध्य रूप से बीमार हो जाये, तो उसके दिवंगत माता-पिता को प्रसन्न करने के लिए बकरे की बलि चढ़ाई जाती है।

बृहस्पतिवार और शुक्रवार इनके लिए शुभ दिन हैं। उत्तर-पूर्व की दिशा विशेषतः शुभ समझी जाती है। आषाढ़ में प्रथम बीज ये शुक्रवार के दिन ही बोते हैं। इनका यह भी विश्वास है कि यदि सांप बोले, या मधु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मक्खियां कुंड में इकट्ठी हों, तो वर्षा होगी।

कोरवा जाति के लोगों में सांप, चीता, लकड़बग्घा, छिपकली, सियार, गिद्ध और टिड्डियों का मांस वर्जित माना जाता है। लेकिन बैल, सूअर, भालू, बंदर, भैंस, हिरन का मांस वे शौक से खाते हैं। बहेड़ा, रेशम के कोये, लाख आदि वनोत्पादनों, बीजों तथा अपने हाथ से बनाये हुए रंगों के विनिमय आदि से ये जीविका चलाते हैं।

कोरवा जाति के लोग मां के सिवा किसी की शपथ नहीं लेते और छोटे भाई की स्त्री को बहन मानकर उसका स्पर्श करना भी घोर पाप समझते हैं।

भारत में ऐसी कई जन-जातियां हैं, जिनके अजीबोगरीब रीति-रिवाज, रहन-सहन और त्योहार आदि हैं। वे आज भी आधुनिक जीवन से बिलकुल अनभिज्ञ हैं, उनके विकास के लिए गंभीरता से कुछ किया जाना चाहिये।

—४४, मोरी, दारागंज, इलाहाबाद-६

*

कूड़े से बिजली

कूड़े को ठिकाने लगाना बहुत बड़ी समस्या है अमरीका में। अनुमान है औसत अमरीकी नागरिक एक दिन में छह पौंड कूड़ा फेंकता है। उसे बटोरना, बस्ती से दूर ले जाकर फेंकना या जलाना खर्चीला काम है और उससे प्रदूषण भी होता है भूमि और वायुमंडल का। सो क्या किया जाये कूड़े का ?

विशेषज्ञों ने विश्लेषण करके पाया है कि शहरी कूड़े में अधिक हिस्सा कागज, प्लास्टिक, रेशे और कार्बनिक तत्त्वों का होता है, जिन्हें जलाकर कोयले के ताप के ५० प्रतिशत जितना ताप प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए सोचा गया है कि कूड़ा जलाकर उससे उत्पन्न ताप से मकानों को गर्म रखने व वातानुकूलित रखने का काम लिया जाये। डेन्वर शहर के एक शराब कारखाने ने शहरी कूड़े से अपनी भट्ठियां जलाने का निश्चय किया है। सेंटलुई की यूनियन इलेक्ट्रिक कंपनी ने २३ महीने परीक्षण करके अपने ताप-बिजली कारखानों की भट्ठियों में नौ हिस्से कोयले के साथ एक हिस्सा कूड़ा मिलाकर जलाने का निश्चय किया है। इसके लिए वह नगर का सारा कूड़ा—लगभग ८ हजार टन प्रतिदिन ले लिया करेगी। हां, कूड़े को जलाने से पहले उसमें से लोहा, अल्युमिनियम, कांच आदि के टुकड़े बीन लिये जायेंगे। जिन्हें गलाकर फिर से ढाला जा सकता है। ऐसी व्यवस्था की जायेगी कि भट्ठी से विषाक्त धुआं न निकले। हिसाब लगाया गया है कि अगर यह उपाय बड़े पैमाने पर काम में लाया जाये, तो अमरीका में प्रतिवर्ष २९० बैरल पेट्रोल की बचत हो सकेगी और ७-८ अरब रुपये की कीमत का लोहा, अल्युमिनियम और कांच पुनः उपलब्ध हो जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल रात सिनेमा देखते समय जब अजय ने अम्मा का हाथ खींचा और अपनी नन्ही हथेलियों में रखे रहना चाहा, तो अम्मा ने अपनी वह डांट-जैसी बात फुस-फुसाकर दोहरा दी, जो उन्होंने पिछले महीने से शुरू कर रखी है—'अब तुम बड़े हो गये हो।' फिर हाथ वापस चला गया और परदे की औरत अजय को घूरने लगी।

दिन में दस बार अजय सुनता है कि वह अब बड़ा हो गया है और इसलिए उसे अमुक काम नहीं करना चाहिये। अजय सोचता रह जाता है—इस घर में क्या-क्या बड़ा है? पपीते का पेड़, पिताजी की कुर्सी, चीनी का डिब्बा.....आखिर वह किसकी तरह बड़ा हो रहा है?

अजय जब कुछ भी करता है, उसे पहले शक होता है कि वह अपनी उम्र के लायक काम कर रहा है कि नहीं। कभी-कभी सोचता है कि अगर वह काम अभी नहीं करेगा, तो फिर कभी कर भी पायेगा कि नहीं? अम्मा का हाथ अब क्या वह कभी नहीं खींच सकेगा? कुर्सी के नीचे अब कभी नहीं घुस सकेगा? ऊपर वाले कमरे की खिड़की पर घोड़े की तरह कभी नहीं बैठ सकेगा? इतनी ढेर सारी चीजें हैं, जिन्हें वह अभी नहीं छोड़ना चाहता। लेकिन यह बड़े होने का भूत!

यह भूत जैसे उसका हर वक्त का साथी हो गया है। वह कुछ भी करे, उसे लगता है कि कोई उसे देख रहा है। वह चौकन्ना होकर यों ही इधर-उधर देखता रहता है। कहीं कोई नहीं होता, पर लगता है जरूर कोई कहीं न कहीं छिपा होगा और अभी एकदम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामने आकर कहेगा—यह काम इतने बड़े बच्चे को नहीं करना चाहिये।

कक्षा में भी मास्टर साहब अक्सर कहते हैं—यह तो तुम लोगों को दो बरस पहले ही पढ़ लेना चाहिये था। अजय सोचता रह जाता है कि जो दो बरस पहले नहीं पढ़ा, वह क्या अब नहीं पढ़ा जा सकता? या शायद मास्टर साहब वह सब पढ़ा देना चाहते हैं, जो इसी समय पढ़ा जाना चाहिये, जिससे कोई दो बरस बाद फिर से यह न कहे कि ये बातें तुम्हें दो बरस पहले पढ़ लेनी चाहिये थीं। दो-दो के टुकड़े आखिर कब तक चलेंगे? वह जिस टुकड़े में है, उसे कैसा होना चाहिये—छोटा या बड़ा?

रात में पेशाब करना हो या दिन में टट्टी, अजय का हर काम जैसे एक पहरेदार की आंख बचाते-बचाते होता है। स्कूल का काम करते-करते कापी पर स्याही का एक धब्बा लग जाये, तो अजय घबरा जाता है। अम्मा, मास्टर साहब, शायद पिताजी भी—सब जैसे एक साथ चिल्ला पड़ेंगे—'इतने बड़े बच्चे की कापी पर धब्बा नहीं लगना चाहिये।'

स्याही-सोख्ता ढूंढ़ने के लिए अजय सारी किताबें पलटता है। हड़बड़ी में कुछ नहीं मिलता, तो घबराकर पहले कमरे का दरवाजा बंद करता है, फिर कोने से मिट्टी लेकर स्याही के फफोले पर डाल देता है। स्याही का सूखता घेरा!.....

.....ठीक ऐसे ही उसके कितने घाव सूखे होंगे, जो अकेले में लगे और अकेले में उसने सुखा दिये—पाजामे के नीचे। एक बार ब्लेड से हाथ कट गया था, तो तीन दिन तक उसने अपना हाथ निकर की जेब में छिपाये रखा था। अम्मा ने समझा होगा कि बड़े लड़कों की तरह जेब में हाथ रखने की आदत डाल रहा है!

सच तो यह है कि वह किसी को परेशानी नहीं देना चाहता। वह कुछ कर बैठता है, तो जैसे सारे घर में कोहराम मच जाता है। सब लोग उसके सिर पर इकट्ठे हो जाते हैं। आखिर लोग अपने काम से काम क्यों नहीं रख सकते? वही बचा है दुनिया में देखने को? देखो, देखो, डटकर देखो कि मेरा दांत टूट गया है, मुझे बुखार चढ़ा है, मेरा माथा चूल्हे की तरह गर्म है और मैं एक सजे-धजे घोड़े पर धम्म-से कूदकर तुम्हारे सारे दरवाजे एक साथ तोड़कर भाग जाऊंगा।

.....घोड़ा टप-टप करता हुआ वापस आता है, तो सारे दरवाजे ठीक-ठाक और बंद मिलते हैं। घोड़े में इतनी ताकत नहीं कि

हिन्दी कहानी:

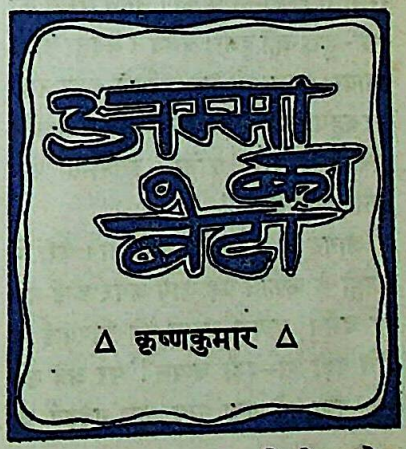

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर से उन्हें तोड़ दे। इतनी जल्दी इन लोगों ने ये दरवाजे कैसे ठीक करवा लिये? शायद हर वक्त कोई मिस्त्री काम पर लगा रहता है—ठक, ठक, ठक, ठक, ठक, ठक—इस ठक-ठक के मारे अजय किसी काम में मन कैसे लगाये? पर इतना सारा काम करना है! क्या ही अच्छा हो कि वह कुछ न करे। वह न कुछ करेगा, न कोई देखेगा। वह लगातार सोता रहेगा—तकिये की तरफ मुंह करके। नहाना, खाना कुछ नहीं। लेकिन फिर घर में लोग इकट्ठे होंगे.....अजय को शायद बुखार है; इतना सुस्त क्यों है? सुबह से लेटा है।.....

× × ×

सुबह से लेटे-लेटे अजय एक बजे जगा। देखा, अम्मा सोयी पड़ी थीं। बाहर बेहद गर्मी थी। खाने के बाद अम्मा देर तक बैठ नहीं पातीं। चार-पांच बजे तक सोती हैं। अजय ने सोचा कितना अच्छा है कि अम्मा कुछ देर आराम कर लेती हैं।

वह चुपके-से खाट से कूदा। खाट की रस्सी ने हल्की-सी चूं की। उसने अम्मा को देखा—कुछ नहीं हुआ। अजय ने अगला कदम बढ़ाया। अम्मा की चारपाई पर नजर रख-कर वह पास खड़ी मेज के नीचे से गुजरा और हल्के-से दरवाजा खोला। इतनी-सी परे-शानी, और बाहर!

आंगन में धूप बरस रही थी। पैरों में स्याही के फफोले पड़ जायें अगर कोई नंगे पैर चले। चप्पल अम्मा की चारपाई के नीचे पड़ी थी—बड़ी चप्पल! पर अब उसे लेने गया, तो क्या पता कुछ गड़बड़ हो जाये! कमरे में इतनी सारी चीजें रखी रहती हैं और सब कोई न कोई आवाज निकालने को तैयार। चर्र, चूं, ठक, या यों ही कुछ; और अम्मा इन सब आवाजों को पहचानती हैं।

आंगन के पार जहां अमरूद का पेड़ है, गेहूं सूख रहा था। वहां छाया थी। अमरूद पर गिलहरी होगी, गेहूं पर चिड़ियां फुदक रही थीं। चिड़ियों के पैरों में भी स्याही के फफोले पड़ें, तो कितना मजा आये! सारा का सारा गेहूं रंग जाये! अमरूद के नीचे गर्मी नहीं है। गिलहरियों को तो वैसे भी गर्मी नहीं लगती। देखा नहीं, कैसे फिसलकर चिलचिलाता आंगन पार कर लेती हैं।

गिलहरी जैसे वह क्यों नहीं फिसलता? धूप होती तो शायद जरूर फिसलता। लेकिन अम्मा ने बताया है कि जमीन के खेल अच्छे नहीं होते। उनसे चोट लग जाती है। चोट न भी लगे तो धूल लग जाती है।.....पर सड़क पर तो हर वक्त बच्चे खेलते रहते हैं। बड़े-बड़े सुथने और फटी बनियानें पहने बच्चे लकड़ी के गेंद से हाकी खेलते हैं। कौन हैं ये? छोटे या बड़े? अम्मा इन्हें 'सड़क वाले बच्चे' कहती हैं। धूल में सड़क वाले बच्चे ही खेलते हैं! गाली भी वे ही दे सकते हैं। बारिश में नहा भी वे ही सकते हैं। नीम पर चढ़ भी वे ही सकते हैं। अजय कुछ नहीं कर सकता। वह पड़ा रहेगा, बस, पड़ा रहेगा, कुछ नहीं करेगा। क्योंकि वह सड़क वाला बच्चा नहीं है। वह कैसा बच्चा है?

.....अपनी अम्मा का बेटा। सड़क वाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चो और उसके बीच' मानो अम्मा खड़ी हो जाती हैं। उनका मुस्कराता चेहरा उसकी तरह होता है। अजय को अम्मा के इस बिचौलियेपन से कभी-कभी नफरत-सी हो जाती है। अम्मा मुस्करा रही हैं और वह उनके पीछे धूल में खेल रहे बच्चों को देखे जा रहा है। फिर अम्मा उसका हाथ पकड़कर अंदर ले जाती हैं। बाहर बड़ी धूप है, जिसमें घूमने से बुखार चढ़ जाता है।.....

न, वह कभी गिलहरी की तरह नहीं फिसल सकेगा; क्योंकि अब वह बड़ा हो गया है।.....

तभी उसका ध्यान गेहूं के पास स्टोव साफ करती प्रेमा पर गया। प्रेमा घर की नौकरानी है। अम्मा शायद यह कहकर सोयी हैं कि स्टोव आज ही साफ हो जाना चाहिये। वरना इतनी गर्मी में प्रेमा भी क्यों नहीं सो जाती? हर वक्त काम करने वाली बूढ़ी प्रेमा के लिए क्या वह कुछ भी नहीं कर सकता?

अजय के मन में एक शानदार खयाल आया और उसका दिल जैसे आंगन के गर्म पत्थरों पर कूद पड़ा। वह स्टोव साफ करेगा! प्रेमा कोई और काम कर लेगी, या वहीं अमरूद की छाया में या बरामदे में आराम कर लेगी।

दिल की एक छलांग और अजय नंगे पांव दौड़ता हुआ अमरूद के नीचे जा पहुंचा। गेहूं चुग रही सारी चिड़ियां फुर्र-से उड़ गयीं और कुछ दाने अजय के पैरों से लगकर फर्श पर फैल गये। वह सकपका गया; क्योंकि उसे मालूम था कि प्रेमा कुछ न कुछ कहेगी।

'भैया देखो, सब बगरा दिया तुमने।'

'क्या हुआ? जरा-सा तो बिखरा है!'

वह वहीं खड़ा-खड़ा पैरों से गेहूं के दाने समेटने लगा।

'लो अब और फैलाओगे? बस रहने दो, मैं समेट लूंगी।'

प्रेमा स्टोव के पास पड़े कपड़े से हाथ रगड़कर उठी। अजय ने देखा कि उसकी मंजिल खाली हो गयी है—कुछ करने का वक्त आ गया है। गंदा कपड़ा और तेल! इस वक्त कोई नहीं देख रहा सिवा प्रेमा के, और प्रेमा से वह डरता नहीं। कभी कहा है प्रेमा ने कि वह इतना बड़ा हो गया ह वगैरह?

अजय गेहूं को लांघकर स्टोव के पास पहुंचा और बैठकर उस पर झुक गया। प्रेमा ने सिर मोड़कर देखा—'अरे, तुम फिर हैरान करने लग गये! अंदर जाकर सो रहो। अभी तो तुम्हें बुखार चढ़ा था।'

'मैं साफ करूंगा। बुखार उतर गया है।'

'तुम्हारे बस का नहीं है भैया! गंदा तेल है—सब कपड़े भिड़ा जायेंगे। बुखार से उठकर आराम करना चाहिये।'

'कोई बात नहीं। मैं साफ करूंगा। तुम पंद्रह मिनिट बाद आना। जाओ, थोड़ा सो लो। .....नहीं सोना तो कुछ और करो।'

प्रेमा समझ गयी कि भैया जिद पकड़ गये हैं। अम्मा सो रही हैं, इसलिए डर नहीं। और इतनी गर्मी में वह भी कुछ देर के लिए बैठी रहना चाहती थी। सुबह से दम मारने की फुरसत नहीं मिली—न कभी मिलती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ों की उजली धुलाई के लिये!

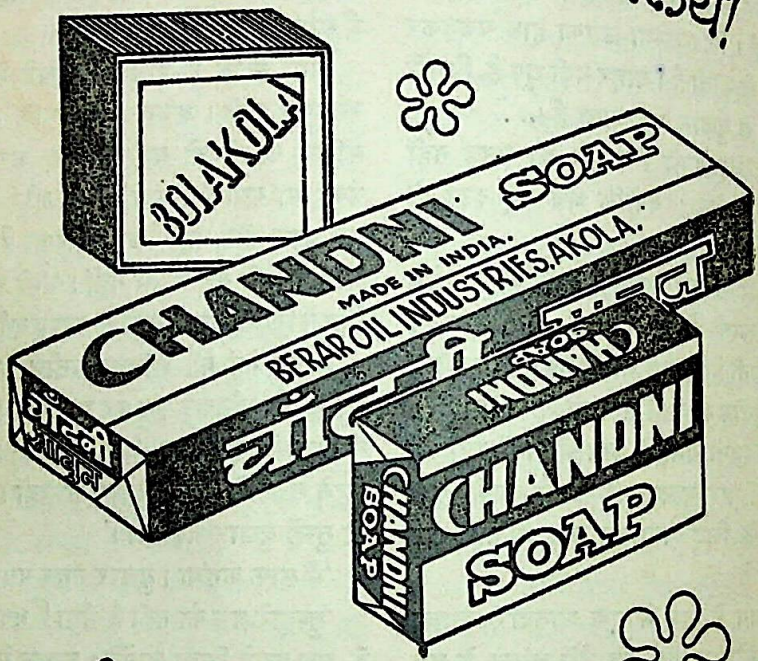

चाँदनी

साबुन

निर्माता- बरार ऑयल इंडस्ट्रीज. अकोला (महाराष्ट्र)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गेहूं बटोरकर जाने लगी, तो फिर कुछ मन में आया.....

'देखो, ज्यादा गंदे नहीं होना। मैं अभी आती हूं।'

अजय का मन जैसे किसी ने फाड़कर खोल डाला—नहाते वक्त बुशशर्ट के बटन एक-एक करके खोलने में कितनी तकलीफ होती है! प्रेमा को जाने देने के लिए सारे दरवाजों की सिटकनियां अपने आप चट-चट गिरी पड़ रही हैं। पीछे-पीछे बंद भी होती चलती हैं।

अजय अकेला हो गया है, अकेला कुछ करेगा! कोई देखने वाला नहीं कि उसकी उम्र का काम है कि नहीं। कह लो, कह लो जो कहना है—यह काम अम्मा के बेटे का है या सड़क वाले बच्चों का। थोड़ी देर ही सही, वह बिलकुल अकेला रहेगा और अपना मन-पसंद काम करेगा। अमरूद के नीचे। गिल-हरियों के साथ।

उसने आराम से अपने सफेद पाजामे का नाड़ा ढीला किया और कमीज के बटन खोले—ठीक उस अंदाज में जैसे उसने मोटरों की सफाई करने वालों को देखा था। फिर कपड़े एक तरफ रखकर दोनों हाथों की उंगलियां बालों में फिरायीं। बाल कैसे सूखे-सूखे, पर अच्छे-अच्छे लग रहे हैं! एक क्षण में जैसे अजय के सिर पर बालों के लच्छे हो आये।

उसने एक गहरी सांस ली और स्टोव पर झुक गया। शीशी का कवर अलग किया, शीशी सीधी की, उसका स्प्रिंग वाला ढक्कन खोला। अरे! यह गंदा तेल ढक्कन में फंसा

था? अजय ने अपनी सफेद चड्डी देखी, जिस पर एक धब्बा बन गया था। चितकबरा धब्बा—कापी के फफोले से बिलकुल अलग, क्योंकि यह धब्बा फैलने लगा। स्याही-सोख्ते का फफोला! धब्बे के साथ अजय के मन में भी कुछ फैलने लगा—डर या संतोष?

उसने अपनी गदेली दाग पर रगड़ दी। इससे दाग हटना तो दूर रहा, उंगलियों के निशान सफेदी के और बड़े इलाके में लग गये। दाग हटाना कौन चाहता था? अब इतनी सारी गंदगी देखकर अजय की घबरा-हट—घबराया कौन था?—एकदम से साफ हो गयी, जैसे छलनी में जमी चाय हटा देने के बाद सारा पानी बह जाये।

अजय ने एक बार फिर अपनी उंगलियां बालों में फिरायीं। इस बार उनमें गंदा तेल लगा था। माथे पर आने की कोशिश करते बालों को अंगूठे से झटक दिया। इससे माथे पर भी गंदे तेल का दाग लग गया। यह दाग अजय को नहीं दिखा, पर वह जान गया कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आराम की ऊंचाइयां

बजाज बहार डीलक्स पंखों से

बिना आवाज चलनेवाले।
अधिकतम हवा देनेवाले।
नवीनतम डिजाइनों मे।

यूनीवर्सल पंखा

ब्यूटी पंखा

बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
४५-४७ वीर नरिमन रोड, बम्बई-४०००२३
भारत भर में शाखाएँ

bajaj

heros' BE-201

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाग लगा है। अम्मा का टीका! अब कोई डर नहीं और उसके मुंह से दूसरी गहरी सांस निकल गयी। फिर से चेहरा स्टोव पर झुक गया।

अब की बार तेल की नली, उसका स्क्रू और लोहे की जाली साफ होनी थी। झाड़न को हाथ में लपेटकर गोल जाली के भीतर घुमाने में कितना मजा आता है! गर्म फर्श पर फिसलती गिलहरी!

तभी एक खटका हुआ और अजय के अंदर रहने वाला भूत रबर के बूढ़े की तरह खड़ा हो गया। वही भूत जिसे घुट्टी पिलाकर अजय अपना छोटे-से छोटा काम कर पाता है। इतनी गर्मी में भूत? यह क्या—भूत गरज रहा है! इतनी गंदगी के बीच, इतना सामान बिखराकर अजय मानो अम्मा के बेटे से कोसों दूर बैठा था—वह भी बिना पाजामे के। भूत चिल्लाता गया और अजय की आंखों ने आंगन के पार कमरे से निकलती अम्मा को देखा। लोहे की सपाट जाली में जैसे कहीं कील निकल आयी। गिलहरी घोड़े की टाप के नीचे आ गयी।

अम्मा कमरे से निकलीं और उन्होंने जोर से प्रेमा को आवाज लगायी। अजय को जैसे कुछ सुनाई न दिया। सुने कैसे? यह भूत जो इतनी जोर से गरज रहा है। अजय किसी अदृश्य बल के उछाल से खड़ा हो गया, जैसे थोड़ी देर पहले उसका भूत खड़ा होकर गरजने लगा था। अजय अपनी कलाइयों को चड्डी पर रगड़ने लगा। गदेलियां गंदी थीं और अब वह चड्डी और ज्यादा गंदी नहीं करना चाहता था.....

एक सेकेंड में क्या-क्या साफ हो जायेगा? इतने सारे दरवाजे एक साथ कैसे बंद हो जाते हैं? खुलने में कितनी दिक्कत हुई थी! अब तो खटखटाने का भी वक्त नहीं है और खटखटायेगा ही तो कितने दरवाजों पर। खोलो, खोलो, घोड़ा प्यासा है। देखते नहीं, मुझे बुखार चढ़ा है?

जितनी तेजी से वह खड़ा हुआ था, उतनी ही तेजी से उसके दिमाग में यह खयाल घुसा कि वह कपड़े नहीं पहने है, लगभग नंगा है। अम्मा का बेटा सड़क वाले बच्चों जैसा नहीं दिखना चाहिये। उसकी एकबारगी इच्छा हुई कि कूदकर कपड़ों में घुस जाये। पर वह जान गया कि अब देर हो चुकी है।

लेकिन वहां इस तरह खड़े रहने से बेहतर है कि वह फिर अपने काम में लग जाये। पर अब अम्मा देखेंगी। देखें, देखें, क्या देख लेंगी? कि मैं नंगा हूं, यही न? यह गंदा काम कर रहा हूं, यही न? क्यों न वह ही कुछ कह दे—'अम्मा देखो, मैं कितनी अच्छी तरह स्टोव साफ कर रहा हूं।'

यह कहकर अजय का दिल कुछ फैला। भूत को घुट्टी पिलाने की जगह क्यों न एक घूंसा दिया जाये? अजय की मुलायम मुट्ठी कसी कि अम्मा बरामदे से निकलती प्रेमा पर बरस पड़ीं।

अजय को फिर कुछ सुनाई नहीं पड़ा। अम्मा इतनी जोर से गरजीं, पर अजय के चेहरे पर शिकन नहीं। क्या इसलिए कि डांट प्रेमा पर पड़ रही थी? अजय को भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़ जाये—और शायद पड़ ही जाये—तो क्या ? उसे लगा कि अम्मा और भूत एक साथ गरज रहे हैं। गरज-गरजकर उसे दबा देंगे। तभी अम्मा का आखिरी वाक्य उसके कानों में पड़ा—'चल बेटे, उठ। देख तेरे कपड़े कितने गंदे हो रहे हैं !'

अजय ने हाथ झाड़े। उसका भूत विश्राम की हालत से 'अटेन्शन' में आ गया था। उसने अपनी चड्डी देखी। सचमुच कितनी गंदी हो गयी थी ! बनियान के बाजुओं में से झूलती अपनी बांहें और चड्डी के घेरे में सिमटी जांघें उसे दुबली मालूम हुईं। अश्लीलता का शैशवाभास उसकी आंखों में तैर गया। वह गेहूं के ऊपर से कूदा और चिड़ियां फिर 'फुर्र' हो गयीं। गेहूं के पार फर्श की गर्मी तलवों में चुभ गयी। गिलहरी की तरह बच्चे नहीं फिसला करते .....

—क्यू ३१, माडल टाउन, दिल्ली-९

*

कितनी जमीन ?

आदमी को कितनी जमीन चाहिये ? तालस्ताय अपनी एक विश्वविख्यात कहानी में उत्तर देते हैं—सिर्फ उतनी, जितने में उसका मुर्दा दफनाया जा सके, याने कोई तीन-एक फुट चौड़ी और छह-एक फुट लंबी जगह। लेकिन मरे हुए आदमी का इतनी जमीन अनंत काल तक रोके रखना अब समस्याएं पैदा करने लगा है।

इंग्लैंड में अब बहुत लोग अपने शव के दफनाये जाने के बजाय उसका जलाया जाना पसंद करने लगे हैं। फिर भी वहां प्रतिवर्ष मृतकों को २०० एकड़ नयी जमीन चाहिये। पुराने कब्रिस्तान भर गये हैं। पर पुरानी कब्रें बिना गृहमंत्रालय की विशेष अनुमति के तोड़ी नहीं जा सकतीं। उत्तर लंदन के सेंट मेरी कैथलिक कब्रिस्तान जैसे कुछ कब्रिस्तानों ने पुरानी कब्रों पर कई फुट ऊंची मिट्टी डलवाकर नयी जमीन बनवा ली है। मगर कितने ही कब्रिस्तानों में कब्रों की जमीन शाश्वत पट्टे पर बेची गयी होती है। उन पर मिट्टी नहीं डाली जा सकती। आस्ट्रिया और स्विट्जलैंड के कुछ कब्रिस्तानों ने यह समस्या यों हल की है—उनमें शव केवल १५साल कब्र में रहता है, फिर अस्थिशेष निकालकर निकट के समाधिगृह में रख दिये जाते हैं।

अमरीका में टेनेसी राज्य के नैशविल नगर में सुप्रसिद्ध कब्र-व्यापारी रे लिग्नान ने २० मंजिल का एक समाधिगृह बनाया है। जिसका नाम लोगों ने 'डेथ-हिल्टन' रख दिया है। इसमें आले हैं। लगभग दो लाख रुपये में कोई भी अपना शव वहां कयामत के दिन तक के लिए रखवा सकता है। सारे परिवार के लिए ५ लाख रुपये में बड़ा आला मिलता है। अभी आला 'बुक' कराकर किस्तों में भी पैसा भर सकते हैं। मजाक में लोगों ने नारा बनाया है—अभी पैसा भरिये, मरिये बाद में (पे नाउ डाइ लेटर)। १ लाख ३० हजार लोगों ने 'बुकिंग' करा भी ली है। पुराने ढंग के कब्रिस्तान में इतने मुर्दों के लिए १९२ एकड़ जमीन चाहिये। मगर 'डेथ हिल्टन' में सिर्फ सात एकड़ जमीन में सब समा जायेंगे। (संडे टाइम्स)

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यादों की महक

एक युवा मित्र किसी नौकरी के लिए कहीं अर्जी दे रहे थे; उसका मसविदा ठीक करवाने मेरे पास लाये। मैंने पाया कि उसमें लिखी एक बात वास्तविकता से काफी भिन्न है। भाषा सुधारने के साथ-साथ मैंने वह बात काट दी और कहा—'मेरी तो यह नीति है कि अर्जी में मैं वही बातें लिखता हूं, जो जांच करने पर गलत न सिद्ध हो सकें।' मैंने 'नीति' शब्द ही इस्तेमाल किया था, मगर उस पर वजन ऐसा दिया था कि कानों को न सही, मन को वह 'सिद्धांत' ही सुनाई दे। युवा मित्र विवेकी थे, मेरा परामर्श मान गये।.....

अभी उस दिन किसी काम से मैं पुराने कागज-पत्रों की पेटी खोलकर बैठा था। एक फाइल में कुछ अर्जियों की नकलें थीं, जो मैंने कभी नौकरी पाने के लिए भेजी थीं। उनमें से कोई अठारह साल पुरानी एक अर्जी पर आंखें अटक गयीं। अपनी गुणावली गिनाने के बाद उसमें मैंने लिखा था कि पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर मेरे लेख छपे हैं और इनमें से अंतिम पत्रिका (जो कि एक नामी विद्यासंस्था का मुखपत्र है) में मैं नियमित रूप से लिखता रहा हूं।.....बहुत सोचा, मगर याददाश्त ने यही कहा कि उसमें तो बस तुम्हारी लिखी सिर्फ एक छोटी टिप्पणी छपी थी, और कुछ नहीं।

पंचतंत्र के एक मशहूर श्लोक में कहा गया है—'मनमुटाव मिटाकर मेल कराने में मंत्रियों की और सान्निपातिक ज्वर की चिकित्सा में वैद्यों की कुशलता प्रकट होती है; जब सब कुछ ठीक हो, तब भला कौन पंडित नहीं है!'

जब खासी नौकरी लगी हुई हो, तब भला नैतिक होने में—कम से कम, नैतिकता का दावा करने में—क्या लगता है?

—रणजीत चौधरी, मैसूर

० ० ०

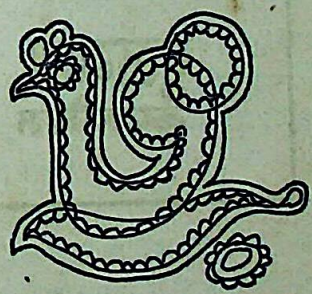

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुलगांव मिल्स का कपड़ा हर नागरिक के लिये, हर प्रसंग पर उपलब्ध है।

आकर्षक रंगों की पॉपलीन • बढ़िया किस्म की शर्टिंग • दफ्तर में पहनने के लिए कोटिंग्ज़ पेन्टों के लिए टिकाऊ ड्रिल्स • हर किस्म की धोतियां • सुन्दरियों की मनमोहक साड़ियां इस के अतिरिक्त लांग क्लॉथ और मारकीन्स

जब भी आप सूती वस्त्र खरीदें तो यह ट्रेडमार्क देख लें

पुलगांव
कॉटन मिल्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत मजा आया

मेरे पांच वर्षीय बेटे के जन्मदिन की पार्टी के बीच में उसके हमउम्र दोस्त चंदरू ने मुझे अलग बुलाकर बड़ी गंभीरता से कहा—'चाचीजी, मां ने मुझसे कहा है कि पार्टी से लौटने से पहले चाचीजी से कहना कि पार्टी में बहुत मजा आया। जब मैं घर जाने लगूं, तो इसी की याद मुझे दिला देंगी?' मैंने उसे आश्वासन दिया कि मैं जरूर याद दिलाऊंगी; तब वह निश्चिंत हुआ और फिर से खेलकूद में खो गया।

—वत्सला देसाई, अहमदाबाद

० ० ०

सप्रमाण

अध्यापकों की समिति में हमारी एक सहयोगी शिक्षिका ने दो-तीन बार बताया कि दूसरी क्लास में साल के बीच में भरती की गयी नयी लड़की सरला दूसरों की कापी में से सवाल वगैरह नकल करती है। हम लोगों ने उसे बुलाकर समझाया कि यह खराब काम है। फिर कुछ महीनों तक शिक्षिका ने सरला की कोई शिकायत नहीं की। एक दिन वह सामने पड़ गयी, तो मैंने उसे पास बुलाकर पूछा—'सरला, अब तो तुम नकल नहीं करती हो न?' बोली—'नहीं, भाईजी! चाहे तो मेरी कापी देख लीजिये। सब जगह लाल पेंसिल से "गलत-गलत" लिखा हुआ है, जबकि दूसरे सबकी कापियों पर "सही-सही" लिखा है।'

—चक्रधर पांडे, प्रयाग

चित्र : मगन पटेल

सांप्रदायिकता से दूर

मैं लगभग बारह वर्ष का था। अकेले ही रेलयात्रा करने का शौक चर्राया; घर वालों ने बहुतेरा मना किया, पर मैं कब मानने वाला था। आखिर उन्हें झुकना पड़ा। नौकर-चाकर रेल में बैठाकर चले गये। रेल चल पड़ी। मुझे कभी-कभी लगता था कि एक ओर झुक रही है। संतुलन ठीक रखने के लिए दूसरी ओर जा बैठता था। इस तरह मजे लेता हुआ और रेल को संभालता हुआ मैं डिब्बे में एक जगह से दूसरी जगह दौड़ता फिरता था। थोड़ी देर बाद टिकट-चेकर आया। मुझे किस बात का भय था! मेरा टिकट तो कोट की जेब में पड़ा ही था। मैं इधर-उधर घूमता रहा। चेकर मेरे पास आ धमका और बड़े रूखे स्वर में टिकट मांगा। मैंने जेब में हाथ डाला.....हे भगवान! मेरे पैरों तले से जमीन खिसक गयी। जेब से बटुआ नदारद!

मेरी खस्ता हालत देखकर चेकर शेर बन गया और लगा गालियों की बौछार करने। उसने यह भी धमकी दी कि अभी ट्रेन रुकवाकर बीच जंगल में तुझे उतरवा देता हूं। मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने लेखकों से

'श्री संपादकजी; कृपया मुझे बतायें कि नवनीत में आप कैसी रचनाएं लेते हैं ?' इस आशय के अनेक पत्र हमें प्रतिदिन मिलते हैं। नवनीत के कुछ अंक देखने से भी इस प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा; फिर भी यदि आप हमसे ही जानना चाहें, तो हम कहेंगे कि निम्नलिखित ढंग की रचनाएं हमें नहीं चाहिये :

क. जो जीवन में अनास्था जगायें, देश के विभिन्न समुदायों में स्नेहसूत्र तोड़ें, व्यक्तिगत आक्षेप करें, सहज-स्वस्थ सुरुचि को ठेस पहुंचायें; या जो कैलेंडर देखकर पर्वों, जयंतियों और पुण्यतिथियों के उपलक्ष्य में लिखी गयी हों।

ख. आपके अन्यत्र प्रकाशित लेख का नया संस्करण, कश्मीरी कविता का वाया तमिल उल्था, अलबर्टो मोरावियां के 'रोम की औरत' का भारतीय रूपांतर 'कौशांबी की कामकन्या', सर्वविदित हास्योक्तियों का श्रेय आपके जिना-महाकवि या तहसील-राजनेता को देने वाले विनोद-प्रसंग।

ग. इन विषयों से हमें परहेज है—वेदों में हृदय-प्रतिरोपण, कोसी कला के जंगल में जिराफ और नवरंगे की मुठभेड़, कामायनी में क अक्षर का प्रयोग, महावानर पुराण में गिर्जापुर का उल्लेख, कड़वी लौकी के रस से सर्वरोगों का उपचार, इत्यादि-इत्यादि।

* लेखमालाएं या मास-भविष्य लिखने के आश्वासन कृपया हमें न दें। न एक साथ सवा सत्ताईस कविताएं भेजें।

* रचना पर्याप्त हाशिया और पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान छोड़कर साफ अक्षरों में कागज के एक ओर लिखकर या टाइप करवाकर भेजें। भेजने से पहले उसे एक बार पूरे मनोयोग से अवश्य पढ़ लें, भले उस दिन के बजाय अगले दिन की डाक में भेजनी पड़े। कार्बन-कापी न भेजें। लेख के आरंभ या अंत में अपना पूरा डाक-पता दें।

* रचना के साथ टिकट लगा और पूरा पता लिखा लिफाफा अवश्य रखें; अन्यथा रचना लौटायी नहीं जायेगी, न उसके बारे में पत्रव्यवहार होगा।

* रचनाएं किसी व्यक्ति के नाम पर नहीं, निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक-नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट,
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंसुओं का बांध टूट गया। आस-पास बैठे लोग तमाशा देख रहे थे।

सहसा डिब्बे के दूसरे छोर से एक गरज सुनाई दी और मैला-सा तहमत बांधे एक वयस्क मुसलमान टिकट-चेकर की ओर लपके। टी. टी. घबरा गया। मुसलमान सज्जन ने कहा—'क्या आंखें नहीं हैं तुम्हारे, दिखता नहीं कि लड़का ईमानदार और मासूम है! बस उस पर रौब गांठे चले जा रहे हो! खबरदार जो उसे एक शब्द भी कहा! बोलो कितने रुपये लेने हैं इससे, मैं देता हूं तुम्हें।' उन्होंने सचमुच जेब से रुपये निकालकर टी. टी. को पकड़ा दिये और मेरा नया टिकट बनवाकर मुझे दे दिया।

टी. टी. अपना-सा मुंह लेकर चला गया। मेरे नये दोस्त ने मेरी पीठ पर हाथ रखा और बोले—'मियां, तुम सूरत से शरीफजादे मालूम होते हो। तुम्हारे चेहरे पर लिखा है कि तुम बेईमानी नहीं कर सकते। मैं गरीब आदमी हूं, मेरा पता रख लो, घर जाकर बिना किसी तकलीफ के और अब्बा की डांट खाये बगैर मेरा पैसा भेज सको तो भेज देना; वरना सारी बात भूल जाना।' मैंने उन्हें अपना पता देना चाहा, तो बोले इसकी जरूरत नहीं है, और यह कहकर वे अपनी जगह जा बैठे।

आज के दबे-दबे सांप्रदायिक विद्वेष के वातावरण में कोई मेरी बात पर विश्वास करेगा?

—रवींद्र, पांडिचेरी

निर्माण हो रहा है....!

बात सन साठ की है। मैं उन दिनों अध्यापक था। नित्य साइकल से स्कूल आता-जाता। उन्हीं दिनों उस सड़क को डामर का बनाया जा रहा था। निर्माण-कार्य की गति बड़ी असंतोषजनक थी। एक दिन मैंने चार शिकायती तार लिखे। पहले सोचा कि अपने ही नाम से तार दे दूं। लेकिन फिर सरपंच से बात चलायी। वह राजी हो गया और हस्ताक्षर कर दिये। साथ ही यह भी कहा कि मैं कल स्वयं पोस्ट आफिस जाकर तार कर आऊंगा। सो उस जन-प्रतिनिधि को वे भरे हुए तार के फार्म देकर मैं निश्चिंत हो गया। उस दिन शाम को स्कूल से लौटते हुए मैंने मजदूरों से कहा भी कि हमने आपके ढीले काम की शिकायत आपके अधिकारियों को तार द्वारा कर दी है।

मैं नहीं जानता कि ओवरसियर ने सरपंच को ढूंढ़ा या सरपंच ने ओवरसियर को। पर एक दिन ओवरसियर ने मुझसे कहा कि आपके कारण मुझे चार सौ रुपये का नुक्सान हुआ है। मेरे पूछने पर बोला कि सरपंच को शिकायती तार के वे चार फार्म फाड़ देने के मुझे चार सौ रुपये देने पड़े हैं। मैं सन्न रह गया। मेरे मुंह से निकला—'गांधी के देश का निर्माण हो रहा है'।

—रमेश 'कमल,' सांगोद, राजस्थान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आओ– एक सौदा करें!

मैं तुम्हें अपने सारे खिलौने देती हूं,
तुम मुझे दे दो—

गोला

टॉफियां और मिठाइयां

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि. मेलाघेरकांगाव, जि. खेरी, उ. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर. जे. एल.

मैत्री-मंत्र

दूसरों के साथ आपके संबंध सहज और सुखद बने रहें, इसके लिए प्रतिदिन ये पांच भावात्मक विचार मन में दोहराया कीजिये :

१. मैं अपने आपको स्मरण दिलाता हूं कि दूसरे लोग मेरे मित्र हों, इसके लिए मुझे स्वयं मित्र होना चाहिये। मैं सदा दूसरों के प्रति मैत्रीभाव बरतने को और यही नहीं, बल्कि दूसरों की खातिर कष्ट भी उठाने को सन्नद्ध रहता हूं।

२. मैं अपने सभी परिचितों के सद्गुणों को पुनः-पुनः स्मरण किया करता हूं। इसलिए मैं दूसरों की सराहना करने में, और दूसरों का उत्साह बढ़ाने में कृपण नहीं हूं। मैं यह छिपाता नहीं हूं कि मैं उनके अच्छेपन और उनके अच्छे कर्मों का प्रशंसक हूं।

३. मैं अच्छी तरह अनुभव करता हूं कि मेरे परिचितों से मेरी बहुत-सी समानताएं हैं। हम दोनों को मनुष्यता का साझा उपहार मिला हुआ है। हम विशाल मानव-परिवार में जनमे दो सगे भाई हैं। हमारे बीच गहरा नाता है।

४. मैं यह बात फिर से अपने ध्यान में ला रहा हूं कि संभव है, सामने वाला शरमा रहा हो, झिझक रहा हो, उसमें आत्मविश्वास की कमी हो। मैं ऊष्मा-भरे मैत्रीपूर्ण व्यवहार से उसे सहज, स्वस्थ-चित्त बनाऊंगा।

५. मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूं कि अगर दूसरों का व्यवहार मैत्रीपूर्ण नहीं है, तो उसका कारण यह है कि परिस्थितियों ने उन्हें दूसरों के प्रति अविश्वासी बना दिया है। सो दूसरों से झिड़कियां मिलें तो भी मैं उनके प्रति मैत्रीभाव बरतता रहूंगा।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी बात

पलाश जलने लगे
और निकल आयीं फलियां
होंगे वही फिर
ढाक के तीन पात !
अनजाने में ही सही
हमसे भूल हुई
जो टेसू के कुम्हलाने से पूर्व
पूरी न कर पाये अपनी बात !

एक विसंगति : स्वयं की

तुम-हम जब
रहते हैं साथ-साथ
मैं बहुत चाहते हुए भी
तुम्हारे लिए अवकाश
कुछ कम ही निकाल
पाता हूं !
और अब जब कि
तुम दूर हो किंचित्
तुम्हारे अतिरिक्त
अवकाश ही नहीं
पाता हूं !

बालमुकुंद गर्ग 'मुकुंद'
—हिन्दी विभाग, आर. बी.
महाविद्यालय, मनासा (म. प्र.)

पुरवाई

बाढ़ तोड़ घुस गयी अचानक—
खेतों को चरने पुरवाई,
देख न पाया वहां किनारे
पर बैठा पीपल चरवाहा,
मेंड़ों के झगड़ों के निर्णय
में ही व्यस्त रहा चौराहा।
देवदास सब ठगे रह गये—
कहां चली न्यौली भौजाई।
लापरवाह नजर दौड़ाकर
पगडंडी पनघट को चल दी,
बातूनी फूलों में सबको
थी अपने कहने की जल्दी।
बैठी हुई घास धूप में—
सहलाती रह गयी बिवाई।

—भारत जोशी
—मक्रीड़ी, चीनाखान, अलमोड़ा (उ.प्र.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब जरा हंस लें?

सत्यनारायण नाटे

तीन अपरिचित महिलाएं रेल के एक डिब्बे में यात्रा कर रही थीं। तीनों बहरी थीं; लेकिन वे यह प्रकट नहीं करना चाहती थीं।

एक ने कहा—'हवा बहुत तेज है। है न ?'

'नहीं, आज सोमवार नहीं, मंगल है', दूसरी ने उत्तर दिया।

तीसरी बोल उठी—'प्यास तो मुझे भी लगी है। अगले स्टेशन पर उतरकर सबसे पहले हम तीनों पानी पियेंगी।'

० ० ०

जोर का तूफान था। पत्नी की आंखों में नींद न थी, लेकिन पति बड़े मजे में सो रहा था। आखिर पत्नी ने पति को जगाते हुए कहा—'उठो जी, देखते नहीं मकान कैसा हिल रहा है, मानो अब गिरा!'

'तुम चैन से सोओ जी, हम क्यों फिक्र करें, हम तो किरायेदार हैं।' कहकर पति ने करवट बदल ली।

० ० ०

एक आदमी ने दूसरे से पूछा—'क्या बात है? तबीयत खराब है क्या?'

'चार रात से मैं सो नहीं सका हूं।' दूसरे आदमी ने कहा।

'क्यों, कोई खास बात?'

'हां, अगले सोमवार तक मुझे सात हजार रुपये का प्रबंध करना है। बस इसी चिंता से नींद नहीं आयी!'

'तब तुम मेरे पास क्यों नहीं आये! यह क्यों भूल जाते हो कि मैं तुम्हारा मित्र हूं।'

'यह तो मैं जानता हूं। तुम तो मेरे भाई से भी बढ़कर हो। पर क्या तुम इतने रुपये दे सकते हो?'

'नहीं भाई, मैं रुपये की बात नहीं कर रहा हूं। मेरे पास नींद की बहुत अच्छी गोलियां हैं।'

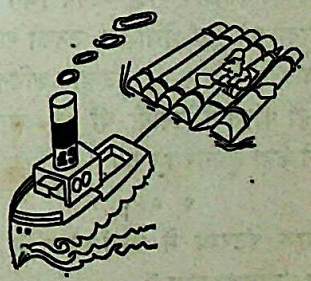

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक स्थिति

पालथी मारकर चुप बैठा हूं
एक आंख बंद एक खुली है।
अंदर तो बहुत मैल भरा है
बाहर की कमीज साफ धुली है।
शक्ल से बड़ा भला लगता हूं
मगर नीयत उतनी ही बुरी है।
हंसी के फरेब में न आना तुम
हंसी तो मेरी तेज छुरी है

—शिवशंकर वशिष्ठ
६१६।७, १४ वां रास्ता,
खार, बंबई—५२

एक स्त्री दुकानदार से बोली—'देखो अगर दाल अच्छी न हुई, तो पकी-पकाई वापस कर जाऊंगी।'

'बीबीजी, अगर ऐसी बात है तो आप सेर-दो सेर आटा भी ले जाइये और अच्छा न होने पर पकी-पकायी चपाती लाइयेगा।' दुकानदार ने उत्तर दिया।

० ० ०

एक कवि-संमेलन के संयोजक ने अपने मित्र को लिखा—'भाई, आपने जिन कवि महोदय को यहां भेजा था, उनकी कविता में वास्तव में जादू था। उन्होंने कविता की दो ही पंक्तियां सुनायी थीं कि श्रोतागण जाने कहां छूमंतर हो गये!'

० ० ०

एक इंटरव्यू में उम्मीदवार से पूछा गया—'तुम्हारा नाम?'

'सेर सिंह।' उम्मीदवार ने कहा।

अफसर ने राय दी—'अब सेर, छटांक से काम नहीं चलेगा। तुम्हें अपना नाम सेर सिंह से बदलकर किलो सिंह रखना पड़ेगा।'

० ० ०

एक आदमी, दूसरे से—'आपका बड़ा बेटा आजकल क्या करता है? मैं उससे अपनी बेटी की शादी करना चाहता हूं।'

'डेढ़ लाख की गाड़ी में घूमता है। बटुआ रुपयों से भरा रहता है।' उत्तर मिला।

'कौन-सा धंधा करता है?'

'धंधा कैसा? वह तो बस-कंडक्टर है।'

० ० ०

नये वकील ने कबाड़ी के यहां से पांच साल पुराने अखबार खरीदे। इस पर कबाड़ी ने पूछा—'आप इनका क्या करेंगे?'

'इन्हें मैं अपने आफिस में फाइलों में रखूंगा। लोग समझेंगे कि पुराना प्रैक्टिशनर हूं।' वकील ने कहा।

० ० ०

'श्याम! क्या तुम मुझे दस रुपये उधार दे सकते हो? मैं तुमसे उधार न मांगता, लेकिन क्या करूं, बस पकड़ने घर से निकला, जल्दी में बटुआ पुराने कोट में भूल आया।'

'कोई बात नहीं, दोस्तों की मदद करना तो मैं अपना फर्ज समझता हूं,' श्याम ने कहा—'यह लो दस पैसे, फौरन बस में जाओ और घर से बटुआ ले आओ।'

० ० ०

घर में लोगों को बुलाना पत्नी को अच्छा लगता था, लेकिन पति महाशय का कहना

मई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था कि इतने कम किराये वाले घर में किसी को बुलाना अपमानजनक होता है।

एक दिन पति घर लौटा, तो पत्नी ने एक लिफाफा उसके हाथ में देते हुए कहा—'लीजिये, अब मेहमानों को घर बुलाने में आपको हिचक नहीं होगी। मकान मालिक ने किराया ड्योढ़ा कर दिया ह।'

० ० ०

एक ने दूसरे से कहा—'अगर शाम तक पांच हजार रुपयों का प्रबंध न कर सका तो मुझे जहर पी लेना पड़ेगा। क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?'

'क्या कहूं भाई! मेरे पास तो एक बूंद भी जहर नहीं है,' दूसरे ने कहा।

० ० ०

एक नेता के भाषण में महज खलल डालने के लिए एक महाशय बार-बार कुछ न कुछ पूछते थे। एक बार यही पूछ बैठे—'वक्ता महोदय बहुत कुछ जानने का दावा करते हैं, क्या वे बता सकते हैं कि गधे के सिर पर कितने बाल होते हैं?'

सुनकर वक्ता मुस्कराये, बोले—'भीड़ में

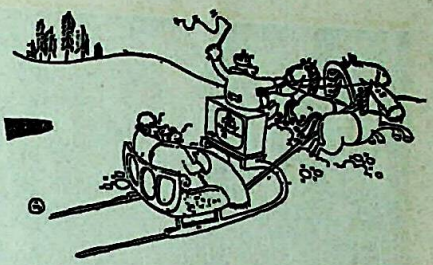

आपका सिर मुझे दिखाई नहीं दे रहा है।'

० ० ०

दुकान की सारी चीजें देखने पर भी जब ग्राहक को कुछ पसंद नहीं आया, तो दुकानदार ने पूछा—'आखिर आपको क्या चहिये?'

'मौका,' ग्राहक ने धीरे-से कहा।

० ० ०

'स्त्री क्या है?' किसी ने प्रश्न किया।

'स्त्री जोड़, घटा, गुणा और भाग है,' उत्तर मिला।

'सो कैसे?'

'वह पति की चिंताओं का जोड़ है, धन का घटा है, तापत्रयों का गुणा और संबंधियों के लिए भाग है।'

—नावा टोली, डालटनगंज (बिहार)

गलत स्थान से सड़क पार करने के अपराध में एक महिला को गश्ती अदालत में लाया गया। आते ही उसने जज से कहा—'माननीय महोदय, मैं एक स्कूल में अध्यापिका हूं। कृपया मेरे मामले पर जल्दी गौर कर लें, ताकि मैं समय पर स्कूल पहुंच सकूं।'

जज बोले—'अच्छा, आप स्कूल में अध्यापिका हैं। सामने बेंच पर बैठ जाइये और सौ बार लिखिये—मैं गलत स्थान से सड़क पार नहीं करूंगी।'

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

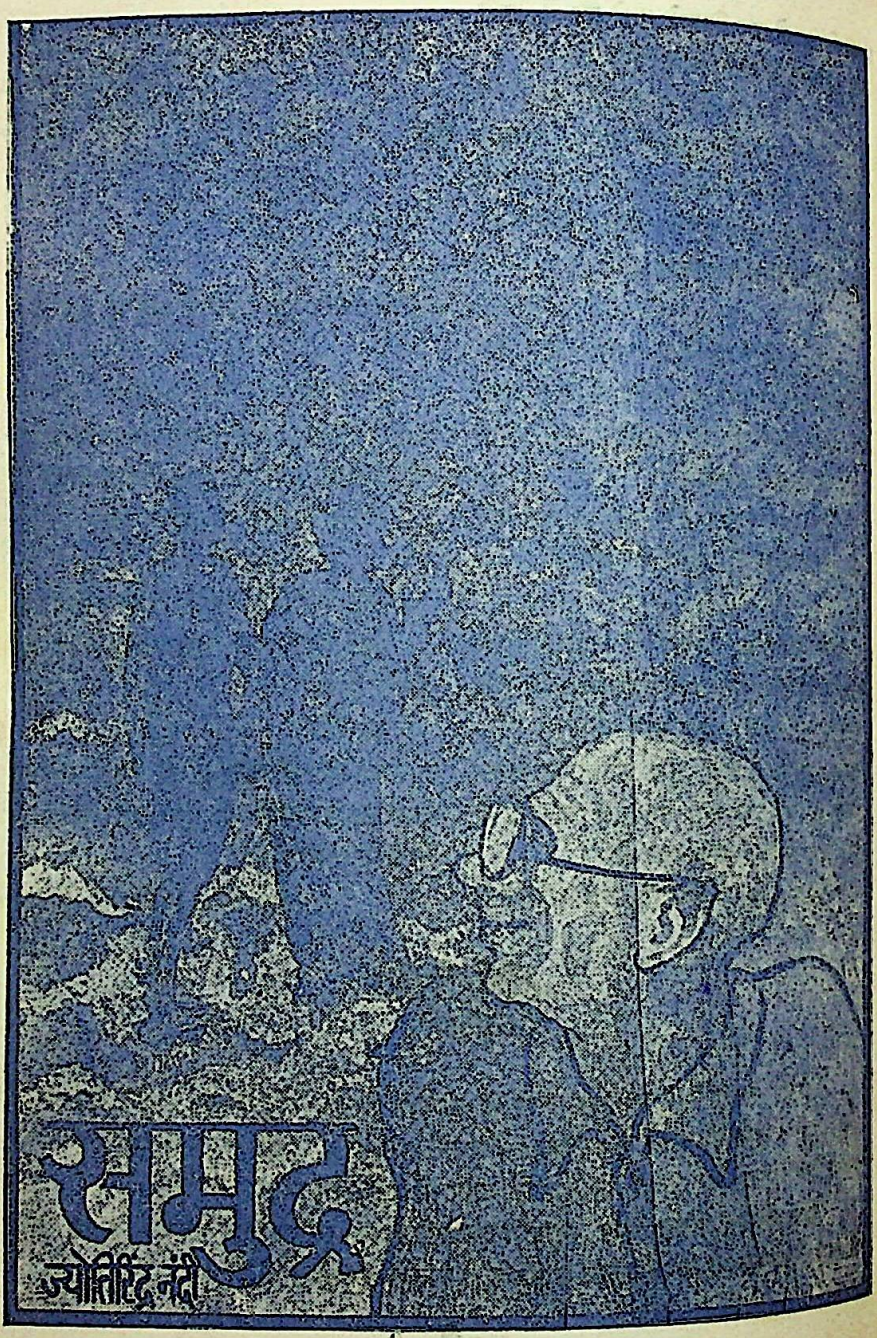

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस रात मैं सो नहीं सका; या यों कहूं, मैं सोना नहीं चाहता था। दो-तीन बार झपकी आयी थी; पर मैंने जबर्दस्ती आंखें खुली रखीं और उसके बाद फिर सारी रात नींद नहीं आयी। रात-भर मैं वह भयंकर आवाज सुनता रहा—अंधकार का गर्जन। जैसे अंधेरे की चादर ओढ़कर एक बादल दूर कहीं जमीन पर उतरकर सारी रात गड़-गड़ाता रहा था। बार-बार शरीर में रोमांच हो आता था। शायद वह आवाज सुनने के लिए ही मैं रात-भर जगता रहा था। लग रहा था, मानो दुनिया को कोई फिर नये सिरे से गढ़ रहा है। या कोई अदृश्य शक्ति इस सृष्टि को ध्वंस कर रही है।

दूर कहीं से इस विनाश-कार्य का आरंभ हुआ है। धीरे-धीरे यह आवाज यहां तक चली आयेगी। इस घर की दीवारें, छत, बुनियाद सब एक-एक करके ढह जायेंगे। भय से मुझे कंपकपी-सी महसूस हो रही थी; लेकिन फिर भी आश्चर्यमय सुख और निश्चितता से कान लगाकर मैं सुन रहा था। नयी सृष्टि की आवाज, नये विनाश का गर्जन सुनना किसे अच्छा नहीं लगता! तरस आ रहा था हेना पर। क्योंकि वह यह आवाज सुन नहीं पा रही थी।

सांझ के समय शायद उसने यह आवाज सुनी थी। नहीं तो भात खाते-खाते वह दो बार चौंक क्यों उठी थी? और मेरी ओर क्यों देख रही थी?

लेकिन शीघ्र ही उसकी आंखों की चमक बुझ गयी, हंसकर बोली थी—'हवाई जहाज?'

बंगला से अनुवाद :
सुशील कुमार सोमानी

मैंने उसके सवाल का जवाब नहीं दिया था। सोच रहा था—यहां हेना को न लाता तो बेहतर होता। बेचारी यहां कितनी छोटी लग रही है! दुबककर सोयी हुई है। फिर मैं उसे भूल गया। सोचकर आश्चर्य हो रहा था—यहां आकर कितनी आसानी से मैं उसे भुला दे पा रहा हूं!

यहां रात के दो बजे सिगरेट सुलगाकर उसे बिस्तर पर अकेली छोड़कर मैं कितनी आसानी से खिड़की के पास आ खड़ा होता हूं। दूर व पास के समुद्र की आवाज सुनता हूं। उस समय भात खाते-खाते हेना ने कहा था—'घर के पिछवाड़े शायद झाड़ियां हैं, इसीलिए हवा की ऐसी सूं-सूं आवाज आ रही है।' और तब मुझे दूसरी बार उस पर दया आयी थी।

मैंने मन ही मन कहा—ईश्वर का आशीर्वाद ही तो है कि तुम इतनी जल्दी सो गयीं और मैं एकाग्र होकर समुद्र की आवाज सुन पा रहा हूं। समुद्र के इतने पास रहते हुए भी उसे बिस्तर पर कुंडली बनाकर निश्चित आराम से सोते हुए देखकर घृणा की एक अजीब-सी लहर मेरे शरीर में दौड़ जाती है।

मुझे लग रहा था—मैं बड़ा हूं, बहुत बड़ा। सृष्टि और विनाश के गूढ़-गंभीर शब्द सुनने का अधिकार सिर्फ मुझे है, तुम्हें नहीं। तुम छोटी हो, बहुत छोटी। समुद्र को तुम समझती नहीं, पहचानती नहीं, समुद्र की आवाज तुम्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हवाई जहाज की आवाज या हवा की सू-सूं लगती है।

खिड़की से मैं उस विराट् का आश्चर्य-रूप देख रहा था। तारों-भरे आकाश के तले दिग्-दिगंत तक अंधेरे में जैसे प्रलय हो रही थी। ऐसा लग रहा था, जैसे अंधेरा टूट-टूटकर फूलों का गुलदस्ता बनकर हमारे पास दौड़कर आना चाहता है। पर आ नहीं पाता, उसके पहले ही खत्म हो जाता है—अदृश्य हो जाता है। जैसे मनुष्यों से उसे डर लगता है। अगाध, उत्ताल, फेनोच्छल, भयंकर सुंदर को मैंने प्रणाम किया। अंधेरे में सफेद चादर ओढ़कर सोयी हेना एक खरगोश-सी लग रही थी।

हवा का वेग बढ़ रहा था। उत्ताल समुद्र क्रुद्ध गर्जन करता हुआ किनारे की ओर दौड़ता आ रहा था। किनारे पर लहरें टूट रही थीं—एक के बाद एक।

कितने हजारों-लाखों सालों से लहरें इसी तरह किनारे की ओर दौड़ती आ रही हैं। गरजती हैं, और फिर हंसते हुए किनारे पर आकर चूर-चूर हो जाती हैं। याद आया, यही है वह अशांत-उद्धत, जिसे रामचंद्र तीर मारकर शांत करना चाहते थे। सीता का तो वे उद्धार कर लाये थे। मगर क्या राम-चंद्र को कभी शांति मिली? क्या उनके दांपत्य-जीवन में समुद्र का शाप लग गया था? मैं सोच रहा था, प्रकृति ने शायद उनसे बदला लिया था। समुद्र ने कभी उन्हें क्षमा नहीं किया था। हेना के लिए क्या मैं राम-चंद्र-जैसा काम कर सकूंगा? मुझमें इतनी शक्ति नहीं है। हालांकि शक्ति होने पर भी मैं ऐसा काम नहीं करूंगा। मुझे तो इस विशाल समुद्र की तुलना में स्वयं को पानी के एक बुलबुले की नाईं क्षीणायु कल्पना करके अच्छा लग रहा था।

इच्छा हो रही थी कि उस रेत के बिछौने पर सीपी बनकर मैं अनंत काल सोया रहूं। हेना नहीं, संसार का कोई भी मेरे पास न रहे। इच्छा तो हो रही थी, कल सुबह ही उसे कह दूं कि तुम वापस चली जाओ—मैं यहीं रहूंगा। तुम जब तक मेरे पास रहोगी, मेरा समुद्र-दर्शन पूरा नहीं होगा। तुम्हारी उप-स्थिति मुझे पीड़ा देती है—एक अतिरिक्त बोझ-सी लगती है।

मैं राम नहीं हूं, और न हेना ही मुझे समुद्र से अच्छी लगती है। सुनकर वह क्या करेगी? रूठ जायेगी, या मजाक समझकर जोर से हंस पड़ेगी। मैं अपनी भावना पर लगाम कसता हूं। उस रात उसके बारे में कुछ भी सोचने की इच्छा नहीं हो रही थी।

दूसरे दिन सुबह फिर मामा से मुलाकात हुई। आंखों पर ज्यादा पावर का चश्मा, शरीर पर अधमैली खद्दर की हाफ-शर्ट, पैरों में टायर की मोटी चप्पल—देखते ही लगता था कि वह रात-भर सोया नहीं है। आंखें धंसी हुई, कपाल पर असंख्य रेखाएं, चलने के ढंग में क्लांति का आभास। हम दोनों को देखकर कपाल पर हाथ लगाकर वह हंसा। एसिड लगे ऊबड़-खाबड़ दांत, पान खाने के कारण लाल। सिर पर जो थोड़े-से बाल हैं, वे भी चार-छह महीने में अवश्य अदृश्य हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायेंगे। उसे देखकर लग रहा था, जैसे कई दिनों से उपवास कर रखा हो या कई रोज से भर-पेट खाना न खाया हो। मगर भात का अभाव तो मामा को नहीं है, एक होटल का शायद वह मालिक ही है। शायद उसे कोई बीमारी हो।

इतने में मामा ने पास आकर कहा—'कहिये जनाब, कैसे हैं? कल रात नींद आयी?'

'बड़ा अच्छा कमरा मिला है। मैं तो कल शाम को ही सो गयी थी, और आज सुबह जाकर नींद खुली।' हाथ का बैग हिलाते हुए हेना हंस रही थी। हेना पर नजर पड़ते ही मामा को जैसे ठोकर लगी। कल रेल में आते वक्त वेशभूषा-प्रसाधन पर नजर देनें का समय और अवसर नहीं मिला था। रेल में धुएं से कपड़े गंदे हो जायेंगे, इस खयाल से हेना अधमैली साड़ी और ब्लाउज पहने यहां पहुंची। वह जब रिक्शे से उतरकर इस होटल के दरवाजे पर खड़ी हुई थी, तब उसके बिखरे बाल और सूखा मुंह देखकर मुझे लगा था—चौबीस घंटों में शायद उसकी उम्र काफी बढ़ गयी है। या वही उसका असली चेहरा था?

इसीलिए अब सजी-धजी हेना को देखकर मामा स्तब्ध हो गया था। उसकी आंखों की तीखी दृष्टि सह न पाकर मामा ने अपनी आंखें समुद्र की ओर फेर लीं। अंततः मुझे ही अपना मुंह खोलना पड़ा। मालूम नहीं, शायद उस रुग्णदेह नाटे आदमी को खुश करने के लिए ही मैं बोल पड़ा—'लेकिन मैं कल रात बिलकुल सो नहीं पाया।'

'क्यों? क्यों नहीं सो सके?' मामा ने मेरी ओर देखा—'इतना अच्छा कमरा मैंने आपको दिलवाया—एकदम समुद्र के ऊपर।'

मैंने एक गहरी सांस ली। कोई और सुन न पाये इसीलिए आहिस्ते-से बोला—'लहरें... लहरों की आवाज के कारण नींद नहीं आयी।' हेना हमारी ओर नहीं देख रही थी—वह समुद्र के किनारे की ओर बढ़ रही थी, जहां एक आदमी शंख-सीपी वगैरह बेच रहा था।

'समुद्र की आवाज से नींद नहीं आयी न!' उसकी आंखों में एक विचित्र चमक उभर आयी—'मैं भी रात को कभी सो नहीं पाता।'

'कभी नहीं?'

'हां, बीस साल से।'

मैं चुपचाप उसकी धंसी हुई आंखें, पिचके हुए गाल, कपाल की रेखाएं और हाथ-पैर की मोटी-मोटी नसें देख रहा था।

'विश्वास नहीं हो रहा है न!' उसके टूटे-फूटे गंदे दांत दिखाई दिये। फिर हंसते हुए बोला—'बीस साल से मैं रात-भर जागकर लहरों की आवाज सुनता आ रहा हूं।'

हेना अपने पर्स से रुपये निकाल रही है—इसी बीच शायद उसने कुछ शंख-सीपियां खरीद ली हैं।

'खैर, और कोई तकलीफ तो नहीं हुई?'

'नहीं।' मृदुकंठ से मैंने कहा—'आश्चर्य की बात है, नींद न आने के कारण मुझे तब या अब कोई थकावट महसूस नहीं हो रही है—बड़ी अच्छी लग रही थी वह आवाज। मैं तो अपनी इच्छा से जाग रहा था।'

'हूं'...मामा अब हंसा नहीं। तनिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंभीर हो गया। रेत की ओर देखते-देखते अस्पष्ट स्वर में वह कह रहा था—'पहले-पहल जबर्दस्ती रात को जागना पड़ता है। उसके बाद अपने आप आंखें खुली रहती हैं—तब समुद्र की आवाज के सिवा और कुछ अच्छा नहीं लगता.....तब.....'

उसकी शेष बातें सुनाई नहीं दीं। थोड़ी दूरी पर एक रिक्शा खड़ा था। बेडिंग-सूट-केस देखकर मामा समझ गया—नया यात्री आया है। वह उस तरफ दौड़ पड़ा। वैसे थोड़ी दूर जाकर ही हाथ उठाकर मुझे आश्वासन दे गया कि फिर मुलाकात होगी। मैं हंसा।

मामा फिर दौड़ रहा था।

'क्या बातें हो रही थीं अब तक ?'

'क्यों ?' अवाक् होकर मैंने हेना की ओर देखा।

अपने हाथ की शंख-सीपियां उसने मुझे दिखाने की कोशिश की; पर मैं समुद्र की ओर देखता रहा।

'बहुत बदमाश आदमी है। वह शंख वाला कह रहा था, जैसा चेहरा है वैसा ही चरित्र।' थोड़ी देर चुप रहकर फिर बोली—'कैसी गंदी नजरों से तब मेरी ओर देख रहा था।'

मेरी यह कहने की इच्छा हो रही थी—'मगर सिर्फ एक बार तुम्हारी ओर देखकर ही तो उसने अपनी आंखें फेर ली थीं। और फिर उसने हमें इतना अच्छा कमरा दिलवाया है, कृतज्ञता भी तो कुछ होनी चाहिये।' मगर मैंने कुछ नहीं कहा। हेना और मैं धीरे-धीरे साथ चल रहे थे। हालांकि मैं यह भूलने की कोशिश कर रहा था कि वह मेरे साथ है। वह कितनी छोटी है ! इतने बड़े समुद्र के सामने खड़ी होकर भी एक पुरुष की दृष्टि की समालोचना कर रही है, उसकी निंदा कर रही है। बेवकूफ, इस विराट् के सामने आकर तुम्हें क्या मिला ? मैं दांत पीसकर रह गया। इसी समय सूरज उठा। मेरा हृदय चंचल हो उठा। समुद्र चांदी का मुकुट पहने नाचते-नाचते आगे बढ़ रहा था। एक बड़ी लहर रेत पर दूध बिखेरकर वापस चली गयी।

'मैं नहीं नहाऊंगी। पानी में उतरने में डर लगता है।'

'मत नहाना', उसकी ओर देखे बिना ही मैंने जवाब दिया।

'मगरमच्छ और न जाने क्या-क्या हो-क्या मालूम ?' हेना बड़बड़ा रही थी। तनिक देर चुप रहकर फिर बोली—'कल रात होटल में समुद्र की मछली तो खाने को मिली नहीं ?'

मैंने गंभीर स्वर में कहा—'समुद्र की मछली मत खाना। पेट की बीमारी हो जायेगी।'

'मजाक कर रहे हो,' वह हंसी। उसके बैग में रखी सीपियां बज उठीं—'सभी तो समुद्री मछली खाना चाहते हैं—बड़ी स्वा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिष्ट होती हैं।' मैंने कठोर स्वर में उत्तर दिया—'समुद्र में नहाने की इच्छा भी तो सभी की होती है, फिर भी मगरमच्छ के डर से सभी नहीं नहाते।'

वह चुप हो गयी। आहत हुई। विस्तृत विस्फारित समुद्र के सामने खड़े होकर उसे चोट पहुंचाना मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। तब तक वहां भीड़ काफी बढ़ चुकी थी। लोग नहा रहे थे। कोई घुटनों तक पानी में, तो कोई कमर तक या गले तक। उससे आगे कोई नहीं बढ़ता। लहरों के धक्के सहन नहीं होते, कोई-कोई बहाव में गिर पड़ता है। एक काले-कलूटे नूलिये के सशक्त हाथों में फंसी एक युवती छटपटा रही है। विशाल तरंगें हा-हा करती दौड़ती आती हैं। युवती डर से आंखें बंद कर लेती है और नूलिया[१] उसका सिर पानी के नीचे दबा देता है। लहर उस पर से चली जाती है। नूलिये की सशक्त बांहों पर शरीर का भार छोड़कर भीगे हुए पेटीकोट-ब्लाउज लिये वह रूपसी हंसते-हंसते शराबी की तरह लड़खड़ाती हुई किनारे की ओर आ रही है। किसने उसमें नशा भर दिया—नूलिये के सशक्त हाथों की पकड़ ने ? या लहरों ने ? बालू पर बैठा पुरुष हंस रहा है। पति या संगी होगा। उसने सूखे साड़ी-ब्लाउज बढ़ा दिये।

हेना उस ओर देखकर फुसफुसाकर कुछ बोली। मैं दूसरी ओर देख रहा था—ध्यान देकर देख रहा था—एक तोंद वाले सज्जन घुटनों तक पानी में डुबकी लगाकर किस तरह खिचड़ी बालों में ढेर-सारी बालू लेकर कांपते-कांपते वापस किनारे की ओर आ रहे थे। समुद्र से इतना डर ! उन सज्जन को अब मैं पहचान पाया। कलकत्ता के एक प्रसिद्ध बैरिस्टर हैं। जमीन पर उनका सारा प्रताप है। राह चलते आदमी को चौंकाते हुए उनकी गाड़ी वेग से चली जाती है। मगर समुद्र के सामने शिशु हैं—असहाय शिशु !

'मैं उधर जा रही हूं।'

'जाओ।'

वह सीपियां खोज रही थी। शरीर टेढ़ा कर लंबी गर्दन झुकाकर बालू पर आहिस्ते-

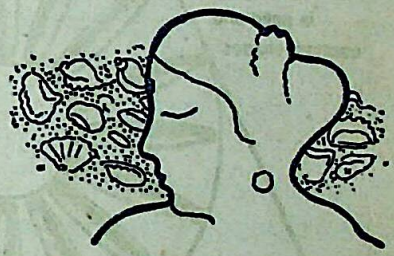

आहिस्ते वह बढ़ रही थी। मुझे चैन महसूस होता है। लवणगंधी हवा में उसकी वेणी हिल रही है, आंचल उड़ रहा है। उड़ने दो।

मैं सोच रहा था—समुद्र के किनारे आकर जिस पर सीपियां चुनने का शौक सवार हो जाता है, उसे बालू पर आंखें झुकाये ही चलना पड़ता है, दौड़ना पड़ता है। लहरों का नृत्य, पानी के रंगों का परिवर्तन वह नहीं देख पाता, बुरा क्या है !

म मन ही मन हंसा। समुद्र ढेर-सारी छोटी-छोटी चीजें किनारे पर छोड़ जाता है। जिसका मन छोटा है, वह उन छोटी चीजों के

१. यात्रियों को समुद्र में स्नान कराने वाला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

WEAVING YARN

Out of natural synthetic and man-made fibres in various styles

SOFT in multiplex shades for making curtains, cushions and covers
BRIGHT and **LUSTROUS** to motivate pretty crotchet sets
RESILIENT and **MOISTURE ABSORBENT** during spring

FIBRE DYED Weaving Yarn in solid and contrast shades

BLENDED weaving Yarn—Ployester-silk, Polyester-viscose, Nylon-viscose, Acetate-viscose, Acrylic-viscose etc

Staple Fibre Division of
BIRLA JUTE MANUFACTURING CO. LTD., 9/1, R. N. MUKHERJEE ROAD
CALCUTTA-700 001
Will be pleased to meet your choice and requirements.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संग्रह में डूबा रहता है। हेना, तुम सीपियां, शंख, मछली के कांटे या अंधेरे में खाये गये किसी निहत जीव के नाखून-दांत-हड्डी वगैरह से ही खुश रहो। ये समुद्र के लिए अपवित्र जूठन हैं, इसीलिए वह उन सबको किनारे पर फेंक जाता है। हेना, तुम इन जूठी अनावश्यक वस्तुओं को आंचल में, बैग में भरती जाओ। कल रात की तरह आज दिन में भी झामापुकुर लेन की इस औरत को मैं दया की दृष्टि से देख रहा था।

मुझे देखकर मामा चाय की दुकान के सामने खड़ा था। यह चाय की दुकान समुद्र के बहुत पास है—लहरों के थपेड़े यहां तक आकर टकराते हैं। समुद्र के इतने पास दूसरी कोई चाय की दुकान नहीं है। इसीलिए कल दोपहर को मैं हेना के साथ इस दुकान में चाय पीने आया था। छोटी—सी साधारण दुकान देखकर हेना ने नाक-भौंह सिकोड़े थे—हालांकि कल अगर हम यहां न आये होते तो मामा से मुलाकात न हुई होती, और होटल में इतना अच्छा कमरा भी न मिला होता।

'क्योंजनाब, इतनी जल्दी वापस आ गये?'

'चाय की प्यास लग गयी।'

'यों कहिये, चाय पीने वालों को घंटे-घंटे भर बाद चाय चाहिये।'

दुकान में घुसकर मामा ने हांक लगायी—'कहां गये रे, बाबू के लिए एक अच्छी-सी चाय बनाकर दे। बैठिये।'

एक बेंच पर हम बैठ गये।

'यह चाय की दुकान मेरे भानजे की है।'

मैंने मामा की ओर नजर फेरी। वह धंसी हुई रात-भर जगी आंखें मिचमिचाकर हंस रहा था।

'होटल करने की सलाह मैंने ही दी थी। पहले यहां चमड़े की दुकान थी। लड़ाई के दिनों चमड़े के बाजार में आग लगी हुई थी। चार रुपये का बैग चौदह में, दस रुपये के जूते पैंतीस में बिकते थे। वही तो फूलकर कुप्पा होने का समय था। पर मोची के पास पूंजी कम थी, साला दिवालिया हो गया। मैंने बीरेन को दुकान खरीदने का सुझाव दिया। यहां चाय की दुकान खूब चलेगी। बीरेन पहले तो राजी नहीं हुआ, पर मेरे कारण अंततः राजी हो गया। और अब देखिये, इसी चाय की दुकान की कमाई से होटल और दो-दो पक्के मकान खरीद लिये हैं।'

चाय आयी। मेरे लिए पूरा कप, मामा के लिए थोड़ी-सी।

'लिवर एकदम खराब हो गया है न! चाय सहन नहीं होती। हालांकि देखते ही पीने की इच्छा हो जाती है—इसलिए थोड़ी-सी चाय दी है। बैरे पर कड़ा हुक्म है, इससे ज्यादा चाय न देने के लिए।' फिर प्याले में से एक चुस्की लेकर बोला—'हां, क्या कह रहा था? बड़ा आदमी बनकर बीरेन अब इस गरीब मामा के साथ अच्छी तरह बात तक नहीं करता..... न करे..... मैंने हमेशा उसका भला ही किया है, और करता भी रहूंगा। देखा न आपने, उस समय जैसे ही यात्री पहुंचा, मैंने उसे पैराडाइज में भेज दिया।'

हंसकर मैंने मृदु स्वर में कहा—'हां, देखा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'अब समझ में आया सब इसे मामा क्यों कहते हैं। होटल-मालिक का मामा, अतः बोर्डरों का भी मामा—इसी तरह उसका यह नाम सबमें फैल गया है। सोच रहा था और देख रहा था सामने के अशांत समुद्र को—सुन रहा था उसकी आवाज।

'कौन-सा समुद्र आपको अच्छा लगता है—दूर का या पास का ?'

चौंक उठा, मेरी तरह वह भी पानी की ओर देख रहा था। चश्मे के उस पार फीकी आंखें मानो स्थिर हो गयी थीं। प्रश्न उसने हठात् किया था, लेकिन फिर भी बड़ा अच्छा लगा। ओंठों ही ओंठों में वह हंस रहा था। अब वह मेरी आंखों में आंखें डाले कह रहा था—'कहिये, सोलह घंटे आपने यहां बिता दिये। कौन-सा समुद्र आपको खींचता है—दूर का या किनारे पर ठोकर खा-खाकर गिरने वाला पास का समुद्र ?'

मैं चुप रहा। जैसे नये सिरे से रोमांच अनुभव कर रहा था। जैसे निश्चय नहीं कर पा रहा था के दूर के आकाश की गोद में सोया शांत नीले रहस्य से घिरा समुद्र ज्यादा अच्छा लगता है, या तरल हास्योच्छल खंडित-विक्षिप्त शुभ्र लहरों वाला पास का समुद्र ?

'निश्चित कुछ कह नहीं पा रहा हूं', असहाय दृष्टि से मैंने मामा की ओर देखा।

'हूं, यों कहिये झटपट इसका जवाब कोई नहीं दे सकता। जो लोग जवाब देते हैं, वे बिना समझे-बूझे बकते हैं। हूं, पूरे दो साल लगे थे मुझे इस सवाल का जवाब पाने में हा... हा... हा... !'

लेकिन मैं उसकी हंसी में साथ नहीं दे सका। विस्मय से अवाक् सोच रहा था—समुद्र के बारे में इस नाटे कद के रुग्ण व्यक्ति ने रात-दिन काफी कुछ सोचा है। तब कह रहा था न कि बीस साल से रात को जगकर वह लहरों का गर्जन सुनता रहा हूं।

'कहां गये रे, थोड़ी-सी चाय और देना', दुकान के कर्मचारी की ओर मामा की याचना-भरी नजरों को देखकर मुझे हंसी आ रही थी। लिवर का रोगी। अभी-अभी चाय पीकर फिर चाय मांग रहा है। मैं हंसा, और यह भी देखा कि कर्मचारी का मुंह अप्रसन्न हो उठा है। फिनाइल से वह उस तरफ की टेबल पोंछ रहा था। वहां की सारी मक्खियां अब हमारी टेबल पर आ गयीं।

'तू नाराज हो गया लगता है रे नीलांबर !' मामा ने और भी करुण स्वर में कहा—'दे दे, मैं पैसे दूंगा—तुम लोगों का नुक्सान नहीं होने दूंगा। तेरे मालिक ने दोनों वक्त दो कप चाय मेरे लिए तय कर रखी है। पर जब भी मैं ज्यादा पीता हूं, उसका तो मैं दाम दे देता हूं रे।'

नीलांबर बड़बड़ाने लगा—'आपसे पैसे कौन मांग रहा है ! आपके भानजे की दुकान है—जितनी चाहें पीजिये। मगर वक्त-बेवक्त भी तो है। दस बज रहे हैं—धोने-पोंछने का वक्त है तो भी बनाओ इनके लिए चाय।'

मामा ने मेरी ओर देखा—'समझे न ! असल में बीरेन ने मना कर रखा है। मैं सब समझता हूं—सैंतालीस वर्ष की उम्र हो गयी,

मई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और यह सीधी-सी बात समझ में नहीं आती? बीरेन अब मुझे पसंद नहीं करता.....न करे.....मगर मैं उसका भला ही करता रहूंगा—मैं उसके होटल के जितने बोर्डर जुगाड़ करता रहता हूं.....'

बात खत्म होने के पहले ही नीलांबर ने ठक् से उनके सामने चाय का प्याला रखा। चाय पाकर उसकी आंखों में चमक आ गयी। तत्क्षण एक चुस्की लेकर बोला—'हां, क्या कह रहा था? मैं उसकी संपत्ति वगैरह के बारे में कुछ नहीं जानता—न जानने की इच्छा ही है। मैं भिखारी हूं—भिखारी ही रहूंगा। अगर धन-संपत्ति की ओर नजर होती, तो मैं भी एक रेस्तरां या होटल खोल सकता था। बीस साल से यहां रह रहा हूं। मुझे कोई बांधकर नहीं रख सका। मुझे कुछ भी नहीं चाहिये। खाने को मिले तो अच्छी बात—न मिले तो न सही। कपड़ों की ओर कभी ध्यान नहीं देता.....कभी किसी बात की फिक्र नहीं करता.....' क्लांत-शीर्ण हाथ समुद्र की ओर करके उसने गहरी निःश्वास छोड़ी—'मैं हूं और वह है.....और कुछ नहीं चाहिये....और किसी की जरूरत नहीं है।'

श्रद्धा की आंखों से उसे मैं देख रहा था। जैसे हम गृहत्यागी संन्यासी, कवि या दार्शनिक को देखा करते हैं। मैंने भी उसकी निगाहों का अनुसरण कर समुद्र की ओर नजर फेरी।

उज्ज्वल धूप में समुद्र ने जैसे एक नया रूप धारण किया है। जैसे कुछ गला हुआ शीशा, थोड़ी-सी चांदी और पानी का मिश्रण गरजता हुआ किनारे की ओर दौड़ा आ रहा है।

'देख रहे हैं? चांदी और शीशे के साथ तनिक जाफरानी रंग भी मिला हुआ है।'

उसकी ओर बिना देखे मैंने सिर हिलाया।

'धूप जितनी तेज होती जायेगी, उतना ही इसका विक्रम भी बढ़ेगा।'

'हूं', मैंने कहा—'मछुहारों की नावें नहीं दिखाई दे रहीं?'

'सब वापस आ गये हैं', वह उल्लसित स्वर में कह रहा था—'अब अगर वे वहां रहें, तो यह नाव को तोड़-ताड़कर टुकड़े-टुकड़े कर देगा न! इसके साथ चौबीसों घंटे मजाक नहीं चल सकता।'

बात एकदम सीने में गुंथ गयी। तट लगभग निर्जन हो चुका था। बालू पर लहरों के टूट पड़ने की आवाज बढ़ रही थी। मगर तट पर आघात करके शायद उन्हें पछतावा होता है, इसीलिए तत्क्षण कुछ स्नेह का फेन, सांत्वना का शुभ्र प्रलेप लगाते-लगाते एक-एक लहर किनारे पर कितनी दूर तक चली जाती है। बड़ों का यही गुण है। किसी को चोट मत पहुंचाओ—हिंसा नहीं करनी चाहिये—लोट-पोट होतीं सफेद-सफेद लहरें बालू पर आवेगमय चुंबन अंकित करके वापस चली जाती हैं।

'लहरें देख रहा हूं—जूही के फूलों की तरह लग रही हैं।'

'अभी कुछ दिनों तक आप सागर-तट ही देखेंगे', वह गंभीर हुआ—'उसके बाद आपकी आंखें यहां नहीं रहेंगी, और कहीं दूर चली जायेंगी।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूर का समुद्र ! मेरे ओंठों की मुस्कराहट बुझ गयी। चुपचाप सहमा हुआ दूर दिगंत के नीले समुद्र की ओर देख रहा था, और लहरों की गुर-गुर आवाज सुन रहा था। नहीं, खेल देखना या सुनना ही नहीं—सीने में न जाने क्या हाहाकार कर रहा था। जैसे न जाने क्या चीज मेरे पास नहीं है, जैसे न जाने क्या चीज खो गयी है—या सारी जिंदगी जिस चीज की तलाश करता रहा हूं, वह अभी भी नहीं मिली है—दिल में एक टीस-सी उठी। मेरे कान के पास अपना मुंह लाकर वह कह रहा था—'आपके खून में यह आवाज पैठ जायेगी, और तब आपको और कोई काम अच्छा नहीं लगेगा.....नींद गायब हो जायेगी..... भूख धीरे-धीरे कम होती जायेगी.....'

'भयंकर नशा', ओंठों ही ओंठों में मैं बुद-बुदाया। अच्छा लग रहा था, मगर डर भी लग रहा था। बहुत आहिस्ते-आहिस्ते हम बात कर रहे थे—जैसे ये सब बातें जोर से बोलने की नहीं हैं—और कोई सुन न लें।

'कितने दिन आप यहां रहेंगे ?'

'सात दिन। उसके बाद छुट्टियां खत्म।' उसकी आंखों की ओर मैं देख रहा था। जैसे मेरी बात पर विश्वास न हुआ हो, इस तरह उसने सिर हिलाया।

'हूं, ये सात दिन धीरे-धीरे चौदह दिन हो जायेंगे। फिर महीना.....साल बीत जायेंगे।' तनिक रुककर वह बोला—'मैं केवल एक दिन की छुट्टी लेकर आया था.....फिर समुद्र देखते-देखते बीस साल बीत गये।'

मैं विह्वल-सा उसकी ओर देख रहा था। तो कभी यह भी नौकरी करता था ? शादी की थी ? मगर यह सब पूछने की इच्छा नहीं हुई। लगा, ऐसी बातें गैरजरूरी हैं। केवल समुद्र और यह रुग्ण-शीर्ण मनुष्य ये दो ही सत्य हैं—इन दोनों के सिवा और कुछ सत्य नहीं है। मैं भी तो कल रात ऐसा ही कुछ सोच रहा था.....कि मैं भी अगर इस गरजते हुए भयंकर सुंदर में खो जाऊं.....

अचानक वह उठ खड़ा हुआ। आंखों-ओंठों पर विरक्ति का चिह्न। चंद क्षण पहले का वह मुग्ध-आविष्ट भाव अब वहां नहीं था।

'क्या हुआ ?' धीरे-से मैंने पूछा।

'धत् और देखा नहीं गया.....अच्छा नहीं लग रहा है।'

'क्यों ?'

'आपके उन जूही-फूलों की ओर तो अब देखा नहीं जाता।'

'क्यों? 'मैंने डरते-डरते ओंठों पर मुस्कराहट लाने की कोशिश की।

'क्यों क्या ? फूल के ऊपर अगर एक मक्खी आ बैठे, तो क्या आपको अच्छा लगेगा ? वह देखिये! ' उंगली से उसने बालू-तट की ओर इशारा किया। बालू-तट पर कोई नहीं था। नहीं, है।

बादल के टुकड़ों की तरह उसका आंचल उड़ रहा था, वेणी हिल रही थी। एक बड़ी-सी लहर ने आकर उसके मेहंदी-लगे पांव धो दिये। हेना खिलखिलाती हंस रही थी। लहर वापस जाने पर वह फिर बढ़ती, झुक-कर सीपियां उठाती। फिर एक बड़ी लहर उसकी ओर बढ़ती, पर उसे छू नहीं पाती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह दौड़कर सूखी बालू पर चली जाती है और खिलखिलाकर हंसती है। जैसे समुद्र के साथ हंसने की प्रतिस्पर्धा कर रही हो।

'मजाक हो रहा है समुद्र के साथ।' उस ओर नजर रखे मामा बुदबुदा रहा था—'मजाक हो रहा है समुद्र के साथ.....तमाशा हो रहा है।'

मैं चुप था। शर्म से सिर ऊपर नहीं उठा पा रहा था। सचमुच इस तरह हंसने की क्या बात है? समुद्र देखकर जब हम विमूढ़-विस्मित हो रहे हैं, वहां हेना की यह चपलता कितनी अशोभन, कितनी असंगत लग रही थी! फूलों पर मक्खी.....लहरों के ढेर-ढेर फेन पर पैर रखकर फिर वहां से हटा लेना और दौड़कर पीछे हट जाना। हां, उपमा के लिए मैंने मन ही मन मामा की प्रशंसा की। हेना पर मुझे गुस्सा आ रहा था। मेरे बहुत करीब आकर वह कह रहा था—'इस तरह सज-धजकर पानी के पास जाना ठीक नहीं है। मैं पहले ही आपको कहने की सोच रहा था।'

वह इस तरह कह रहा था, जैसे मुझे सावधान कर रहा हो—जैसे अनिश्चित आतंक की ओर इशारा कर रहा हो। ज्यादा पावर के लेंस के उस पार की आंखों की ओर देखकर मैंने फिर समुद्र की ओर नजर फेर ली। 'अच्छा चलूं, फिर मुलाकात होगी', कहते हुए वह अचानक चला गया।

उसके जाने पर मुझे तनिक चैन मिली। हेना के कारण मैं लज्जित था। उसका समुद्र के साथ इस तरह छेड़खानी करना मुझे शर्मनाक लग रहा था। मैं मन ही मन सोच रहा था कि उसकी यह बेवकूफी किसी तीसरे व्यक्ति की नजर में न पड़े। एक विजातीय क्रोध, असीम घृणा, मेरे मन में घुमड़ रही थी और मैं सोच रहा था—समुद्र के साथ छेड़खानी करने का मजा हेना को कैसे चखाया जाये, ताकि वह ऐसी धृष्टता फिर कभी न करे।

'साब, वह अच्छा आदमी नहीं है। उसे ज्यादा मुंह न लगाइये', नीलांबर कह रहा था। न जाने वह कब मेरे पास आ खड़ा हुआ था। जब-तब मामा को चाय देने का दुःख वह कभी भी शायद भूल नहीं पाता।

'क्यों, मुझे तो वह अच्छा आदमी ही नजर आता है। दिन-भर समुद्र देखता रहता है, और रात-भर लहरों की गरज सुनता है—वही तो उसका काम है।'

'पाजी है सा'ब, महापाजी! बीरेनबाबू भले आदमी हैं—इसीलिए रोज दो वक्त खाने को दे देते हैं—और कोई होता तो कभी का भगा देता।'

'लेकिन होटल के बोर्डर वगैरह भी तो वह जुटा देता है?' मैंने प्रतिवाद करना चाहा। मगर फिर सोचा, दिन में दो-एक बोर्डर पकड़ लाना व्यापारी बीरेनबाबू या उसके कर्मचारी के लिए कोई अर्थ नहीं रखता। जो आदमी दिन-भर आवारा घूमता है, लहरें गिनकर समय बिताता है, वह तो उनकी नजरों में बिलकुल फालतू या पाजी तो होगा ही। 'स्साला शराबी, स्साला नशा-खोर.....' नीलांबर अभी भी गुस्से में बड़बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा था।

वह आदमी जो अभी तक मेरे पास बैठा था, जो पास और दूर के समुद्र का रहस्य समझता है, जिसके कारण मैंने समुद्र को अंतरंग तौर पर पहचाना है, उसे प्यार करना सीखा है—वह शराबी या नशेबाज है, यह जानकर भी मुझे कुछ बुरा नहीं लगा। इसके विपरीत, मैं यह सोच रहा था कि जो आदमी समुद्र के नशे में खोया रहता है, उसके लिए शराब या गांजे के नशे की क्या कीमत! बीस साल से वह जिस नशे में चूर है, वही उसका असली नशा है—उस भयंकर नशे की बात बीरेन या उसके नौकर या और किसी की समझ में नहीं आयेगी। मैं अपने को अपवाद सोचकर गौरव महसूस कर रहा था।

हूं, उसके बाद आधी साड़ी भिगोकर बालू-भरे पैर घसीटते-घसीटते जब हेना मेरे पास आयी, तो मैंने नफरत से आंखें दूसरी ओर फेर लीं। आंचल में वह सीपियां बांधकर लायी थी। धूप में तपकर मुंह लाल हो गया था, आंखों का काजल बह गया था, उनमें क्लांति की छाप थी। उसका चेहरा मुझे बीभत्स लग रहा था। एक मायाविनी डायन मेरा पीछा करते-करते समुद्र तट तक आ गयी थी।

'तुम जाओ, होटल वापस चली जाओ!' अपने स्वर की विकृति का एहसास मुझे भी हो रहा था।

'तुम नहीं आओगे? काफी वक्त हो गया है, खाना कब खाओगे?'.... भय नहीं, कुंठा नहीं—वही कंठस्वर। मेरी आंखें जल रही थीं—रोना आ रहा था मुझे। यहां भी खाने की बात!

'तुम जाओ, कपड़े-लत्ते बदलोगी तो? जाओ।' किसी तरह जवाब देकर उत्तप्त बालू पर तेज क़दमों से मैं दूसरी ओर चलने लगा।

समुद्र की मछली और भात भरपेट खाकर वह सारी दोपहर सोयी रही। लहरों की आवाज से कहीं नींद न टूट जाये, इसलिए खिड़की उसने बंद कर दी थी। मैंने प्रतिवाद नहीं किया। क्योंकि आंखों से न दिखाई देने पर भी पानी का गर्जन मेरे खून में ध्वनित हो रहा था। पानी की तस्वीर दिमाग में कैद हो गयी थी। उसके सिरहाने शंख, सीपियां वगैरह बिखरे हुए थे। इच्छा हो रही थी-इन सबको उठाकर बाहर फेंक दूं।

नींद टूटी तो उसने सबसे पहले कंघी व बालों की क्लिप की तलाश की।

'मुझे नहीं मालूम।'

'पाउडर का डिब्बा कहां गया?'

'मैंने देखा नहीं।'

'वाह' लिपस्टिक-काजल वगैरह कहां गये?'

'सचमुच मुझे नहीं मालूम।' अनुनय-भरी आंखों से मैंने पत्नी की ओर देखा। जरा ज्यादा गंभीर होकर दीवार पर टंगी तस्वीर की ओर नजर फेरी।

'बड़ी अजीब बात है! कमरे में क्या कोई चोर आया था?' हेना बुदबुदा रही थी। उंगलियों का सहारा लेकर गला बढ़ाकर उसने अलमारी के ऊपर देखा, फिर घुटने

मई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टेककर पीठ टेढ़ी कर खाट के नीचे देखा। 'नहीं, कहीं नहीं है—अजीब बात है।' फिर उसने मेरी ओर मुड़कर देखा।

'क्या हुआ ? तुम चुप क्यों हो ?'

'मुझे क्या मालूम?' मैंने डरते-डरते आंखें उठायीं।

'तुम्हीं ने छिपाया है—सिर्फ तुम्हारा ही यह काम हो सकता है।'

'सचमुच, नहीं।'

'ऊंहूं, और कौन आयेगा इस कमरे में। दरवाजा भीतर से बंद है, तुम कुर्सी पर झपकी ले रहे थे। सोने के पहले मैंने कान के रिंग खोलकर टेवल पर रखे थे। देखो, वे ठीक वहीं हैं। अगर चोर आता, तो वह सोने के रिंग छोड़कर लिपस्टिक-काजल क्यों ले जाता! और, चोर कमरे के अंदर आता भी कैसे ?' हेना ने मेरे कंधे को झटका देते हुए कहा—'यह जरूर तुम्हारी ही शरारत है। अच्छा, अब मजाक छोड़ो।'

तो काम कुछ कच्चा रह गया है। अब और गंभीर रहने का कोई मतलब न था, इसलिए मैं हंस पड़ा।

'कहां रखे हैं तुमने ? अरे वाह, इस तरह का मजाक कर तुम इतनी देर चुप कैसे रहे ?' हंसते-हंसते वह मेरे ऊपर आ पड़े इसके पहले ही मैंने कुरते की जेब में छिपाये हुए कंघी, बालों की क्लिप, लिपस्टिक वगैरह निकालकर उसे वापस दे दिये।

अब हंसते-हंसते बुरा हाल था हेना का। वह फर्श पर बैठ गयी थी। बाल बेतरतीब बिखर गये थे। मैंने फौरन आंखें फेर लीं। अपराधी-सा अनुभव कर रहा था मैं।

एक क्षण के लिए भी मैं उस प्रचंड, प्रमत्त, भयंकर सुंदर, पवित्र समुद्र-तरंगों को भूलना नहीं चाहता था। इसलिए कुर्सी से उठकर मैंने खिड़की खोल दी। हेना तब तक खड़ी हो चुकी थी। आंचल संभालकर कंघी से बाल संवार रही थी। मैं समुद्र की ओर देख रहा था।

'फिर गंभीर हो गये ?'

'ऐसे ही।'

'यह सब छिपाया क्यों था ?'

'ऐसे ही।'

'यहां आने के बाद से बीच-बीच में न जाने क्या हो जाता है तुम्हें ? तब "बीच" पर इस तरह तुमने धमका दिया.....'

'धमकाया तो नहीं था। कहा था, तुम जाओ, मैं आ रहा हूं।'

'अच्छा, सचमुच? ..... मैंने सोचा था.....' खिलखिलाने की आवाज।

'क्या सोचा था, सुनूं ?' समुद्र की ओर पीठ करके मुड़ना पड़ा। लहरों की आवाज उसकी खिलखिलाहट की आवाज से दब गयी, यह अनुभव कर मेरा दिमाग फिर गर्म होने लगा। इस तरह और कब तक चलेगा। मैं विह्वल-सा उसकी ओर देख रहा था। अवसर समझकर नारी ने अपूर्व भ्रूभंगी की—'इस तरह क्या देख रहे हो जी ?'

'कुछ नहीं।'

'जरूर देख रहे हो.....मुझे देख रहे हो ना?' जैसे बदला ले रही हो, ओंठों की हंसी बुझाकर वह गंभीर हो उठी। 'मुझे अब देखने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की क्या जरूरत है, समुद्र देखो। समुद्र मुझसे ज्यादा सुंदर है।'

अब और आघात नहीं किया जा सकता, यह सोचकर दयापूर्ण मुस्कराहट मेरे ओंठों पर खेल गयी।

'इतनी सज-धजकर कहां जा रही हो?'

'मैं सज-धजकर न निकलूं, यही तुम चाहते हो न? इसीलिए तो यह सब छिपाया था। क्यों? या यह कलकत्ता नहीं है, इसलिए यहां शृंगार करना मना है? यहां केवल तुम हो और समुद्र है—और है वह कुत्सित-सा तुम्हारा मामा।'

तनिक देर चुप रहकर वह शृंगार में रत रही, फिर बोली—'मैं तो सोच भी नहीं सकती, तुमने उस गंदे चरित्र के नीच आदमी से दोस्ती कैसे कर ली! उसके साथ चाय की दुकान पर तुम घंटा-भर गप्प मारते रहे। मुझे कुछ दिखाई नहीं देता, क्यों?'

इच्छा होने पर भी मैंने प्रतिवाद नहीं किया, चुप रहा, जैसे उस चाय की दुकान वाले नीलांबर की बात पर चुप रहा था। नीलांबर के न जानने पर भी हेना तो जानती है कि जिस आदमी ने पहले-पहल धर्म का प्रचार किया था, उसे भी गंदे चरित्र का नीच व्यक्ति ही समझा गया था। आकाश के ग्रह-नक्षत्रों का रहस्य जिसने समझाना चाहा था, उसे पागल तथा अपराधी घोषित कर दिया गया था। होटल-मालिक बीरेनबाबू के मामा के ओंठों पर समुद्र के सिवा और कोई बात नहीं है, विस्तृत नीले रंग के सिवा और कोई रंग नहीं है, और कोई स्वप्न नहीं है, अतः .....

'मैं मंदिर जा रही हूं। अभी तक मंदिर नहीं देख पायी। इस वक्त "बीच" की ओर नहीं जाऊंगी।'

'ठीक है, जाओ।' मैंने अस्फुट स्वर में कहा। मेरे शरीर को जैसे दक्षिणी हवा का स्पर्श हुआ। यहां आने के तीस घंटे बाद अब मैं पहली बार अपने आपको संपूर्ण स्वाधीन अनुभव कर रहा हूं।

सूरज ढल रहा है। समुद्र सीसे का रंग ओढ़ रहा है। बुझती रोशनी और नमक की गंध शरीर पर मलकर लहरों के सिर छू-छूकर हवा हू-हू करती दौड़ रही है। मैं स्थिर खड़ा हूं। मेरे पीछे सूखी बालू उड़ रही है। सामने की बालू लवणाक्त पानी पी भारी होकर सोयी पड़ी है, हवा उसे हिला नहीं पाती। उस भारी भीगी बालू पर किसी पैर के निशान नहीं हैं। कोई भी दाग नहीं—चिकनी, अकलंक। पानी हट रहा है, और यहीं जैसे पृथ्वी की पहली माटी दिखाई देनी शुरू हुई है। और मेरे पीछे कितने करोड़ों मनुष्यों के पैरों के नीचे आकर क्षत-विक्षत बालू पड़ी हुई है। युवक-युवतियों के पैरों के निशान। करोड़ों वृद्ध-वृद्धाएं, किशोर-किशोरियां, बच्चे इन पर से चलकर गये हैं। ऐसा लग सकता है, जैसे सब लोग यहां आकर समुद्र में विलीन हो गये हैं। ऐसा भी लग सकता है कि सारे लोग समुद्र से उठ आये थे, फिर जहां जी चाहा, वहां चले गये। और मैं सोच रहा था, असल में यही तो होता है—आदमी आते हैं, जाते हैं, और यह अकेला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समुद्र एक ही ढंग से गरजता रहता है। इसमें जीवन की चंचलता है, प्राण की उज्ज्वलता है और मृत्यु का निष्ठुर अंधकार उसके अतलस्पर्शी गर्भ में लाखों साजिशों का आवर्त भी रचता जाता है।

'क्या देख रहे हैं? किसे खोज रहे हैं?'

'आपको ही।'

'मैं तो यहीं हूं', हल्के शीर्ण हाथों को मेरे कंधों पर रखकर मामा हंसा—'देख रहा था, सब चले गये, अंधेरा हो गया, सिर्फ आप अकेले घूम-घूमकर पानी देख रहे हैं।'

'अच्छा लग रहा है, हालांकि डर भी लगता है।'

'पहले ऐसा ही होता है। फिर कुछ दिनों बाद मेरी तरह जब आगे-पीछे कोई नहीं रहेगा, तो यह डर भी खत्म हो जायेगा।' मैंने गहरी सांस ली। कोई चीज पांव से टकरायी।

'डाभ!' मामा हंसा। उसकी हंसी अच्छी नहीं लगी। लेकिन उसकी बातें जरूर सुनने लायक थीं।

'कोई चढ़ावे में चढ़ा गया है। समुद्र देखने आने वाले लोगों में फल-फूल वगैरह चढ़ाने की भी तो धूम पड़ जाती है।'

'मगर समुद्र ने उपहार रखा तो नहीं; वह फिर उन्हें बालू पर छोड़ जाता है।' मैं बुदबुदाया।

'हां, वह यह सब नहीं रखता।' तनिक देर चुप रहकर वह फिर बोला—'आप ही बताइये, क्यों रखेगा! डाभ में होता ही क्या है, न गिरी, न ही पानी। अभी काफी छोटी ही तो है, इसे कौन पियेगा? आप नहीं, मैं भी नहीं। जब इसमें पानी है ही नहीं, तो पिया कैसे जायेगा? इसलिए समुद्र ने वापस कर दिया है। फूल? फूल-बेलपत्ते..... न आप चबाते-खाते हैं, न मैं। पर ये मूर्ख इन्हें लहरों पर फेंककर सोचते हैं कि समुद्र को बहुत कुछ दे दिया।'

'हां, ठीक।' मुझे उसका समर्थन करना पड़ा।

'पत्थर का देवता नहीं, मिट्टी का माधो भी नहीं—समुद्र तो एक जीवित प्राणी है।'

मैंने सोचा—हां, सचमुच, तारे-भरे आकाश के तले लहरों का यह अशांत गर्जन बार-बार यही तो घोषणा करता है—मैं जीवित हूं।

'मैं जब भी यहां किनारे पर घूमने आता हूं, जेब में कुछ भुनी हुई मछलियां, पाव रोटी या दूसरी कोई खाने की चीज साथ जरूर लाता हूं।'

मैं हंसा। मगर, उसने दोनों हाथों से मुझे इस बुरी तरह झकझोर दिया कि मैं चौंक पड़ा। इस दुबले-पतले आदमी में इतनी ताकत है!

'क्या विश्वास नहीं हो रहा है? मेरी-आपकी तरह उसे भी भूख लगती है—उसमें भी लोभ-इच्छा-रुचि है। वह देखिये, कैसे भूखे राक्षस की तरह मुंह फाड़े वह चला आ रहा है।'

मेरी हंसी बुझ गयी। सीने में भय की एक लहर उठी। सचमुच, इस गहन अंधकार को काटकर टुकड़े-टुकड़े करती हुई ये विशाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयानक लहरें राक्षस की तरह मुंह फाड़े ही तो आ रही हैं।

'आप तब जूही-फूलों की बात कर रहे थे न, अब आप गौर से देखिये, ये फूल नहीं, सफेद तीखे दांत हैं।'

मैं बेचैनी अनुभव कर रहा था। मुझे लग रहा था, तीखे निर्दय दांतों की कतार सामने बढ़ रही है। मेरी बगल में मामा नाक से आवाज करता हंस रहा है। उसकी वह बेहूदी हंसी जैसे मेरे दिमाग में प्रतिध्वनित हो रही है। रीढ़ में दर्द होने लगा है। क्षण-भर सोचा कि वह मेरे कंधों पर से अपने हाथ हटा क्यों नहीं लेता ?

'क्यों जनाब, एकदम चुप कैसे हो गये, मैं गलत कह रहा हूं ?'

'नहीं-नहीं', मैंने स्वाभाविक होने की कोशिश की—'ठीक कह रहे हैं। हमारी तरह उसे भी भूख लगती है। उसकी भी अपनी इच्छा रुचि है।'

'हां, वही तो मैं कह रहा था। बेलपत्ते वह नहीं खाता, फूल और कच्चे डाभ भी नहीं। मैं जब भी यहां आता हूं, जेब में भुनी हुई मछलियां-समोसे-पावरोटी कुछ न कुछ साथ जरूर लाता हूं।' एक सांस में कहकर वह चुप हो गया और कंधों पर से हाथ हटा लिये।

अंधेरा काफी गाढ़ा हो गया था। मैंने अब होटल वापस जाने की इच्छा प्रकट की। रात ज्यादा होने पर होटल का गेट बंद हो जायेगा हम दोनों चुपचाप बालू पर चल रहे थे। अंधेरे को पीछे छोड़ रास्ते की रोशनी के दायरे में आ गये, तो वह बोला—'यही मेरा नशा है, समुद्र को खिलाने का नशा। लोग बेलपत्र-डाभ-फूल वगैरह चढ़ाते हैं तो मैं उन्हें मूर्ख, पागल कहता हूं। जवाब में वह भी काफी कुछ मेरे नाम पर कहते हैं, मैं पाजी-बदमाश हूं, शराबी हूं.....'

'क्यों आप तो.....' कहते-कहते मैं सहसा रुक गया। अजीब अनुभव-शक्ति है उसमें। मेरी आंखों में आंखें डाल हंसा। रोशनी में उसके कपाल की रेखाएं स्पष्ट दिख रही थीं।

'ठीक कह रहे हैं आप। मैं तो किसी को कोई नुक्सान नहीं पहुंचाता। अपने खयालों में डूबा रहता हूं। मगर क्या किया जाये साहब, लोग फिर भी मुझे नहीं छोड़ते। मेरा भानजा वीरेन, आज वह काफी धनी है इसी-लिए अपने धन के अहंकार में मुझे कुछ नहीं समझता, मुझ पर खफा है—बताऊं क्यों ?'

'कल सुनूंगा।'

'अरे जनाब, यह क्या कोई समुद्र का गर्जन है कि आज-कल-परसों सारी जिंदगी सुनने पर भी जिसका अंत न हो। मेरी बात थोड़ी-सी है। अभी खत्म हो जायेगी। सुनिये, बीरेन कलकत्ता से विलायती कुत्ते का एक पिल्ला खरीद लाया था। बड़े जतन से उसे रखता था। एक दिन सहसा पिल्ला खो गया। काफी खोज करने पर भी नहीं मिला। हूं, अब बीरेन मुझ पर शक करता है।'

'क्यों, आप कुत्ते को क्या करते ?'

'और क्या.....' नाक से हंसते हुए वह बोला—'उसे शक है कि मैंने समुद्र को दे दिया है। करीब चार साल हो गये। उसका शक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभी भी मिटा नहीं है। हालांकि उसे अच्छी तरह मालूम है कि मैं मछली, अंडा, रोटी-केक के सिवा और कुछ इसे खाने को नहीं देता। अच्छा चलूं, काफी रात हो गयी है।'

आज मुझे स्वीकार करना ही होगा कि उसने मुझमें न जाने क्या संक्रमित कर दिया था। फिर दूसरी रात भी मैंने जागकर बितायी। हेना ने जम्हाई लेते हुए कहा था—'उस फालतू आदमी के साथ रह-रहकर तुम्हारी यह हालत हुई है। तुम पर भी पानी का नशा चढ़ने लगा है।'

मैंने जवाब नहीं दिया। महान को प्यार करने के लिए, विराट के साथ अपने को एकात्म करने के लिए संयम का अभ्यास करना जरूरी है। इसीलिए मैंने उसकी बातों का जवाब नहीं दिया। मगर हेना कहती जा रही थी—'वह मामा भयंकर निष्ठुर आदमी है। बगल के कमरे की भद्र महिला कह रही थीं, उससे अपने पति को दूर रखिये।'

मेरे संयम का बांध टूट गया। 'क्यों, निष्ठुर क्यों है? क्या किया है उसने?' मैं तेजी से बिस्तर के पास आया। डांट सुनकर और मेरे चेहरे की ओर देखकर वह सहम गयी थी। उसने चुपचाप आंखें बंद कर ली थीं। 'यह कलकत्ता का घर नहीं है कि जल्दी-जल्दी खाकर रोशनी बुझाकर सो गये, तो फिर बाहर घूमने क्यों आये हैं!' अंतिम वाक्य जरा नर्मी से कहा। मगर उस बेचारी ने फिर आंखें नहीं खोलीं। और यही तो मैं चाहता था।

खिड़की के बाहर अंधकार में समुद्र गरज रहा था। और मेरे दिमाग में एक पिल्ला घूम रहा था। मैं साफ देख रहा था—वीरेन-बाबू का मामा पिल्ले को होटल से चुराकर चुपके-से समुद्र में फेंक रहा है। अट्टहास करते-करते सबसे बड़ी लहर उसे उठाकर ले जाती है। इसीलिए कह रहा हूं, उसने मेरे अंदर न जाने क्या संक्रमित कर दिया था। शायद इसीलिए बाहर उन्मत्त-अशांत समुद्र का गर्जन सुनते-सुनते मैं बिस्तर के पास आ खड़ा हुआ था—हेना की पिंडलियों के मुलायम मांस को छूकर देखा था—नाखून धंसाकर मांस की कोमलता अनुभव करने की कोशिश की। और नींद में ही वह दर्द से 'ऊंह' कर उठी। तभी मैंने अपना हाथ वापस खींच लिया।

अगले दिन वह एक साधुबाबा का आश्रम देखने चली गयी। साथ में शायद बगल के कमरे की भद्र महिला गयी होंगी। आकाश में बादल घिर आये थे। उनकी छाया समुद्र में पड़ रही थी, जिससे वह और भी भयंकर लग रहा था। हंसी उच्छ्वास नहीं, क्रोध से केवल गर्जन और गर्जन। मगर मेरा मन इसलिए खराब था कि सुबह से मामा दिखाई नहीं पड़ा। काफी देर खोजता रहा। कहीं नहीं मिला। समुद्र का मिजाज सही न देखकर नहाने की बात तो दूर रही, लोगों की उसके पास फटकने तक की हिम्मत नहीं हो रही थी। मछली पकड़ने मछुए भी नहीं आये थे। मामा नहीं मिला।

निराश होकर उस चाय की दुकान पर आया। नहीं, वहां भी नहीं था। आज चाय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीने ही नहीं आया वह। 'शायद रात को खूब चढ़ायी होगी—अभी तक नशे में धुत पड़ा होगा।' चाय बनाते-बनाते नीलांबर कह रहा था—'मामा हैं, इसलिए बीरेनबाबू कुछ नहीं कहते। नहीं तो जूतों से खबर लेकर साले को कभी का भगा चुके होते।' पर मैं उसकी बातों पर गौर नहीं कर रहा था। उदास सूनी आंखों से लहरों का खेल देख रहा था।

मेरे बगल में वह नहीं है, कान के पास मुंह लाकर समुद्र के बारे में नहीं बता रहा है; इसीलिए समुद्र अपरिचित है, दुर्बोध्य लग रहा है। दो दिन में ही उसने समुद्र से मेरा घनिष्ठ परिचय करा दिया था; पर आज सुबह उसकी अनुपस्थिति में न जाने कैसे समुद्र फिर से मेरा अपरिचित हो गया है। आम लोगों की तरह मैं समुद्र देख रहा हूं। पानी की एक ही-सी आवाज शायद अब थोड़ी ही देर में मुझे उकता देने वाली लगने लगे! शायद अब मैं इस समुद्र को भूलकर मठ-मंदिर-आश्रम देखने में पुरी-प्रवास के ये बाकी दिन बिता दूं। मुंह में तीता-सा कुछ लग रहा है। दूर की धूसर रेखा काली होने लगी है, हवा का वेग बढ़ रहा है, बादल फटने लगे हैं, लहरों का गर्जन गंभीर होने लगा है, तूफान आयेगा क्या?' पर मैं तब चाय की दुकान में बेंच पर बैठा झपकी ले रहा था।

न जाने कितनी देर मैं वहां बैठा-बैठा सोता रहा। शायद चाय की दुकान के पिर्च-प्यालों की आवाज से मेरी नींद टूट गयी। धड़फड़ाकर उठा। किसी तरह आंखें खोलकर बाहर की ओर देखा।

आकाश में कहीं बादलों का चिह्न तक नहीं था। धूप उठ आयी थी। एक विराट नीला-प्याला जैसे समुद्र पर उलटकर रखा हुआ था। उस प्याले से भर-भरकर धूप नीचे आ रही थी, और उस धूप को सोख लेने के लिए लहरों में जैसे प्रतियोगिता हो रही थी। उनमें होड़ लगी हुई थी और वे छीना-झपटी कर रही थीं, और एक-दूसरे से टकराकर टूट जाती थीं।

अब शायद मामा दिखाई देगा। जल्दी से मैं दुकान से बाहर निकला।

अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। ऊपर स्वच्छ आकाश, सामने फेनोच्छल, लहरें, दायें-बायें प्रखर उत्तप्त बालू—और कोई नहीं, और कुछ नहीं दिखाई पड़ा। सिर्फ एक के सिवा—एक मूर्ति। वेणी हिल रही थी—शरद् के बादल-खंड की तरह आंचल उड़ रहा था। हेना खिलखिलाती हंस रही थी। लहरें किनारे पर थपेड़े खाकर टूट रही थीं। पर आज वह लहरों से डरकर भाग नहीं रही थी। उसने पैर लहरों में डुबो रखे थे। पानी का स्पर्श शायद उसमें रोमांच जगा रहा था। खुशी से वह हंस रही थी। उसे देखते-देखते मुझ पर जैसे नशा-सा सवार होने लगा था। धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। घुटनों तक साड़ी-पेटीकोट उठाये हेना ने भी पानी की ओर पैर बढ़ाये।

'और जरा एक-दो कदम और आगे बढ़ जाओ।' मेरे साथ नजर मिलते ही वह मुस्करायी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'डर लगता है।'

'किस बात का ? मैं जो तुम्हारे साथ हूं।'

'तुम मेरा हाथ पकड़ो।'

मैंने उसका एक हाथ पकड़ा।

'इस्, कितनी बड़ी लहर !' डर से उसने आंखें बंद कर लीं। जरा-सा धक्का देकर मैंने उसे और थोड़ी दूर ठेल दिया। मैंने उसका हाथ हालांकि अभी भी कसकर पकड़ रखा था। अपनी ऊंगलियों से उसकी बांहों की मुलायम मांसलता अनुभव कर पा रहा था—अनुभव करना अच्छा लग रहा था। बालू की अंतिम सीमा पर हम पहुंच चुके थे। हमारे सामने था सिर्फ समुद्र—और कुछ नहीं। सफेद तीक्ष्ण दांतों की कतार लिये सूं-सूं करती लहरें दौड़ती आ रही थीं। मैं उसे जरा-सा धक्का देकर एक कदम और आगे बढ़ा देता हूं।

'ऐई, क्या कर रहे हो ?' डर से वह कांप उठती है।

'एकदम बच्ची हो', मुलायम स्वर में मैं झिड़कता हूं-'मैं तो तुम्हारे साथ हूं—फिर डर किस बात का ?'

'नहीं-नहीं', हेना को सहसा कुछ याद आया। बिजली की तेजी से उसने मुड़कर मेरी आंखों में देखा—और फिर मेरे पीछे बालू की ओर देखकर वह आर्तनाद कर उठी—'हूं, ठीक। जो सोच रही थी, सही निकला। वह शैतान वहां खड़ा हंस रहा है। उसकी सलाह से ही तुम ऐसा काम करना चाहते थे.....'

'क्या मतलब ?' मेरे गले से आवाज निकलने के पहले ही अपना हाथ छुड़ाकर मुझे धक्का देकर वह किनारे की ओर दौड़ गयी। अब मैंने मुड़कर देखा। वह कांप रही थी। उसका चेहरा उतरा हुआ था—आंखों में आंसू आ गये थे। मैंने गौर किया कि काले रुग्ण अपरिष्कृत चेहरे का वह आदमी—बीरेनबाबू का मामा—तेजी से मुड़कर हमारी ओर पीठ किये चला जा रहा था।

हमें देखकर क्या वह हंस रहा था ? नहीं मालूम।

उस दिन शाम को ट्रेन जब साक्षीगोपाल स्टेशन पर रुकी, तभी मैं स्वाभाविक हो पाया था। हेना के हाथ में मिठाई का दोना देते हुए मैंने कहा था—'मगर तुम्हें मुझे पहले ही कहना चाहिये था कि वह इतना भयंकर और निष्ठुर है—अपनी पत्नी को उसने समुद्र में धकेल दिया था।'

हेना ने जवाब नहीं दिया। खिड़की के बाहर अंधेरा देख रही थी वह। फिर मेरी ओर आंखें फेरकर धीमे-से हंसी—'बताने में डर लग रहा था—कहीं उसके रोग की छूत तुम्हें भी न लग जाये।' फिर जरा रुककर बोली—'समुद्र देखकर जिस तरह पागल हो उठे थे !'

मैं चुपचाप बाहर देख रहा था। कैसे अस्वीकार करूं ? क्या सचमुच मेरे अंदर कुछ संक्रमित होने लगा था ?

नहीं, अब लहरों का गर्जन सुनाई नहीं देता। झींगुरों की आवाज आ रही थी। झींगुर और नारियल के पत्तों की आवाज सुनते-सुनते मैंने एक सिगरेट सुलगा ली।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* पूर्णावतार
* चार दिन की
* जुगनू का जन्म
* चलता जा
* पारसी-हिन्दी रंगमंच
* ठहरो क्षण भर

पुस्तकास्वादन

*** पूर्णावतार * लेखक : प्रमथनाथ बिशी; अनुवादक : हंसकुमार तिवारी; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, बी /४५-४७ कनाट प्लेस, नयी दिल्ली; पृष्ठसंख्या : ३१२; मूल्य : १५ रुपये।**

सुविख्यात बंगला लेखक प्रमथनाथ बिशी का यह उपन्यास पौराणिक होकर भी पौराणिक नहीं है। पूर्णावतार हैं वासुदेव श्रीकृष्ण, इस उपन्यास के नायक। घटना-स्थल है द्वारिका और घटना-काल है यादवी कलह के बाद जब बच गये थे 'जईफ ये नन्हे-नादान शिशु और युवती पुरनारियां।' बलभद्र ने योग द्वारा शरीर त्याग दिया था और श्रीकृष्ण एक व्याध द्वारा धोखे से चलाये गये तीर का शिकार हो गये थे। शुरुआत ही जरा नामक व्याध का तीर लगने से श्रीकृष्ण के देहावसान से होती है। यानी 'पूर्णावतार' का नायक आद्योपांत यवनिका के पीछे तिरोहित रहता है। लेकिन जैसा कि पुस्तक के आवरण-पृष्ठ पर छपी पंक्तियों में कहा गया है, सचमुच ही पुस्तक पढ़ते समय पाठक पग-पग पर उसका सान्निध्य पाता चलता है-अदृश्य, अगोचर; किंतु अनुभूति में व्याप्त।

परंतु उपन्यास का आरंभ जिस अंतिम बिंदु से होता है, वह आज की स्थिति से कुछ अधिक भिन्न नहीं लगती। राजनैतिक, सामाजिक उथल-पुथल के बीच विनाश की परिपूर्णता की उसी प्रक्रिया का प्रारंभ आज भी नजर आता है। 'पूर्णावतार' के व्याध 'जरा' की तरह ही आज का इंसान सर्वाधिक करुणा का पात्र बनकर रह गया है। जरा और उसकी पत्नी जरती के व्याकुल संसार के सृजन की जो कल्पना प्रमथबाबू ने की है, वह आज के इंसान की मनोभावना का सही रूप ही तो है। यही प्रमथबाबू की विशेषता है और 'पूर्णावतार' की सफलता।

यदुकुल की काम-क्षुधा से पीड़ित नारियों द्वारा पुरुष के शिकार का वर्णन पाठकों को बहुत-कुछ सोचने को बाध्य कर देता है। और भी ऐसे कई प्रसंग हैं, जो मन में कई प्रश्नचिह्न पैदा कर देते हैं। इस रोचक और पठनीय उपन्यास में चंद और बातों को

मई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी बढ़ी खूबी से उजागर किया गया है—'मानव चाहता है मुक्ति; किंतु क्या सचमुच मृत्यु के पथ से मुक्ति प्राप्त हो सकती है? पाप और पुण्य क्या हैं? मृत्यु का वरण ही क्या इनका निवारण है?'

हंसकुमार तिवारी का नाम पाठकों के लिए अनजाना नहीं है। उन्होंने बंगला से अनेक पुस्तकों का अनुवाद किया है। उनका यह अनुवाद भी सुंदर है। किंतु इस बार अगर वे हिन्दुस्तानी पुट से अनुवाद को बचा सकते, तो वह कथा-वातावरण के अधिक अनुकूल रहता। स्वच्छ छपाई के साथ ही आवरणपृष्ठ सादा, पर आकर्षक है।

—रमेश सिन्हा

० ० ०

*** चार दिन की * लेखिका : शिवानी; प्रकाशक : शब्दकार, २२०३ गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली-११०००६; पृष्ठसंख्या: १६४; मूल्य : सात रुपये।**

लेखिका ने पुस्तक के 'दो शब्द' में लिखा है—'एक बार श्री सुमित्रानंदन पंतजी ने मुझसे कहा था—तुम अधिक से अधिक ऐसे ही संस्मरण लिखा करो, भूले-बिसरे चेहरों को भी तुम जीवंत बना देती हो।' और आगे बताया है—'.....उन व्यक्तियों को जिन्हें मैंने बहुत निकट से देखा है, अपनी लेखनी से स्मृतिबद्ध करना, उतना ही दुरूह प्रतीत होता है।'

लेखिका को यह कार्य दुरूह भले ही प्रतीत होता हो, लेकिन 'चार दिन की' में पंतजी के शब्दों को अक्षरशः सही साबित कर दिया है। पुस्तक का प्रत्येक संस्मरण अपने आप में अनूठा है। पढ़ते समय चलचित्र-सा आंखों के समक्ष उजागर हो उठता है। और पाठक को लगता है, मैं स्वयं इसका एक पात्र हूं।

'कालू', 'चंद्रन', 'आमि जे बनलता' 'दाना मियां', 'भूली कहां हूं', 'ताजमहल, अमरूद या भाभी' हृदय पर अमिट छाप छोड़ते हैं। 'ताजमहल, अमरूद या भाभी' में शोभा भाभी का भारतीय रूप अंतर की दबी भावना को प्रकट करने को विवश कर देता है—काश, हमारी आज की भाभियां शोभा भाभी जैसी होतीं।

'भूली कहां हूं' के पंडितजी ने एक बार शिवानी को लिखा था—'तुममें छोटी-छोटी' किंतु महत्त्वपूर्ण आत्मीयताव्यंजक बातों के द्वारा संपूर्ण को जीवंत बनाने की बड़ी क्षमता है।' 'चार दिन की' पढ़ने के बाद यही कहूंगा कि गुरु ने शिष्या को एकदम सही पहचाना, कहीं कोई अत्युक्ति नहीं। —सुरेश सिन्हा

० ० ०

*** जुगनू का जन्म * लेखिका : सत्यवती शर्मा; प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६; पृष्ठसंख्या: ४८; मूल्य: २ रुपये ५० पैसे।**

हमारे परिवारों में पीढ़ियों से चली आ रही राजा-रानियों की कहानियां हमारे बाल-साहित्य का बहुत बड़ा आधार रही हैं। नानी-दादी के मुंह से उन्हें सुनकर बच्चे आनंद ही नहीं, जीवन-बोध भी पाते रहे हैं; क्योंकि इनमें पराक्रम और एडवेंचर है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीति-उपदेश हैं, पशु-पक्षियों का वर्णन है। जब ये कथाएं छंदबद्ध हों, तो उनका आनंद और बढ़ जाता है। लेखिका ने बच्चों की पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी अपनी आठ काव्य-कथाओं का इसमें संकलन किया है। चित्रों और स्वच्छ छपाई ने पुस्तक को बालपाठकों के लिए और आकर्षक बना दिया है।

० ० ०

***चलता जा *कवयित्री : शीला गुजराल; प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६; पृष्ठसंख्या : ५२; मूल्य : ३ रुपये।**

कवयित्री ने साफ-सुथरी छपी इन छोटी-छोटी ४५ कविताओं में बच्चों के भोलेपन, उनकी स्वच्छंद चंचल-क्रीड़ा, मधुर मुस्कान और निस्वार्थ मन का स्वाभाविक चित्रण किया है, जिन्हें पढ़ते समय बच्चों के साथ खेलने का-सा आनंद मिलता है। भूमिका में लेखिका ने कहा है—'मेरी कविता में कोई पांडित्य नहीं भरा और नही इसमें नयी दिशा ज्ञान कराने की क्षमता है। ये तो बालकों के स्वाभाविक सरल रुझान का केवल मानचित्र मात्र हैं।' बच्चों द्वारा गायी जा सकने वाली इन कविताओं की सफलता का यह भी बहुत बड़ा कारण है।

—गिरिजाशंकर त्रिवेदी

० ० ०

***पारसी-हिन्दी रंगमंच *लेखक : डा. लक्ष्मीनारायण लाल; प्रकाशक : राजपाल एंड संस; पृष्ठसंख्या : २१६; मूल्य : बीस रुपये।**

पारसी-हिन्दी रंगमंच अपने आपमें एक बहुत बड़ा युग रहा, एक आंदोलन, जिसने ऐतिहासिक और पौराणिक दर्पण दिखाकर पराधीन भारत के जन-मानस को झकझोरा, हिन्दी-हिन्दुस्तानी को देशव्यापी लोकप्रियता दी। बंगाल, महाराष्ट्र और गुजरात से उपजा यह आंदोलन हिन्दी को हिन्दी-प्रदेश में लेकर पहुंचा। लेकिन हिन्दी वाले लोग बरसों इसे पराया-सा ही मानते रहे। भले ही हिन्दी प्रदेश के कुछ पंडितों और मुंशियों ने पारसी रंगमंच के लिए नाटक लिखे हों, परंतु उस पर न तो हिन्दी-प्रदेश का कोई नामी निर्देशक उभरा, न कोई नामी अभिनेता। पारसी रंगमंच की इतिश्री के साथ लोकप्रिय हिन्दी रंगमंच मर गया। यही क्यों, न उस काल के रंगमंच की व्यवस्थित समीक्षा की गयी, न पारसी-हिन्दी रंगमंच का कोई सिलसिलेवार इतिहास लिखा गया।

यदि पं. राधेश्याम कथावाचक ने 'मेरा नाटक काल' और पंडित नारायणप्रसाद 'बेताब' ने 'महाभारत की भूमिका' या 'बेताब चरित' न लिखा होता या 'माधुरी' आदि पत्रिकाओं में पारसी-हिन्दी रंगमंच के विषय में कुछ फुटकर लेख न प्रकाशित हुए होते, तो आज शायद हम हिन्दी नाटक के उस युग का मूल्यांकन ही न कर पाते। यह मूल्यांकन इसलिए आवश्यक है कि पारसी नाटक भाषा और शिल्प में चाहे कितने ही फूहड़ और अति नाटकीय रहे हों, पर उन्होंने परवर्ती हिन्दी नाटक और हिन्दी फिल्मों की पूर्वपीठिका का काम किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस दृष्टि से हिन्दी नाटक और रंगमंच से जुड़े डा. लक्ष्मीनारायण लाल की इस पुस्तक का स्वागत होना चाहिये। लेखक ने पुस्तक का जो विषय-विन्यास किया है, उसमें कुछ दुहराव और बिखराव आ गया है; परंतु इसे पढ़ने पर पाठक पारसी रंगमंच के इस स्वरूप को अच्छी तरह समझ जाता है कि इस अभिनय में वह सम या संगीत नहीं है, जो संस्कृत नाटकों में है, यहां चरित्र के संघर्ष की वह चरम परिणति भी नहीं है जैसा कि शेक्सपियर की त्रासदियों में है। यहां सब कुछ केवल चरम सीमा के उद्देश्य से अभिनीत है। —सतीश वर्मा

० ० ०

*** ठहरो क्षण भर * लेखक : राजेंद्र मिलन; प्रकाशक : यूनिको पब्लिकेशन्स, आगरा-३; पृष्ठसंख्या : १०४; मूल्य : आठ रुपये।**

लीक से कुछ हटकर लिखी गयी कविताओं का संकलन।.....भौतिक और यांत्रिक प्रगति ने मानव के अस्तित्व को ऐसी भयावह स्थिति में लाकर छोड़ दिया है, जहां वह उचित ढंग से सोचने-समझने में भी अक्षम हो चुका है; इसमें व्यक्ति-मानव को इतनी फुरसत ही नहीं होती कि वह सूक्ष्म जीवन-मूल्यों को तो क्या अपने ही अस्तित्व को अनुभव कर सके। इन कविताओं में जीवन के आंतरिक पहलुओं को समझने का प्रयास भी है और सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रश्नों का बोध भी है; कवि में आक्रोश भी है और नये निर्माण का स्वप्न भी; और इनकी रस्साकशी भी। कवि में सदाबहार उत्साह है—चाहे उसका विषय पुरातन का ध्वंस हो, या नूतन का जन्म। उसने स्वयं कहा है कि उसे उस सूनी-सूखी बौद्धिकता का आकर्षण नहीं जो प्रायः वंध्या होती है। कवि ने एक साथ बहुत-से विषय जुटाना, चाहा है, जिससे संकलन में एकरूपता नहीं है। अभिव्यक्ति की स्फुटता इन कविताओं का गुण है, दोष है कलात्मक अभिव्यक्ति का अभाव। —विष्णु निवसरकर

*

शिल्प ? मैं बंबई में वरसोवा के समुद्र-तट पर पत्थर बटोरता फिरता हूं। महासमुद्र उन पत्थरों में नाना विचित्र मूर्तियां रच देता है। निसर्ग-चट्टानों में ऐसा गहन, विराट् शिल्पांकन पा जाता हूं कि मानवी कौशल के तमाम औजार हाथ से छूट जाते हैं। बहती नदी शिलाओं में अपने प्रवाह से जाने कैसे अलौकिक चित्र आंक जाती है ! लहरों में ऐसी नव-नूतन लयों के दर्शन पाता हूं कि स्वयं ही उनमें लयीभूत हो जाता हूं। फूल नहीं जानता कि कल वह किस नये रूपरंग में खिलेगा, कैसे मुस्करायेगा। बस, खिलता है और मुस्कराता है। पत्ती को नहीं मालूम, जाने कितनी बारीक नसों की चित्रकारी से वह भर उठी है - एक पूरा ब्रह्मांड-हर पत्ती में! ..... रचना मानो मैं नहीं करता, मुझमें से कोई करता है। प्रत्येक अनुभव विलक्षण होता है—वह कथन में स्वयं ही अपना विलक्षण शिल्प होकर प्रकट होता है। अलग से शिल्पन करने की सतर्कता, सावधानी मेरे वश की नहीं रही।" —वीरेंद्रकुमार जैन ('कल्पना' में)

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताक़त

मर्द की शान मर्द की पहचान

इस ताक़त को बनाये रखने के लिए, सदाबहार चुस्ती, फुर्ती और नौजवानी की सी उमंग के लिए ओकासा स्वास्थ्यदायक टॉनिक टिकियाँ लीजिये। ओकासा टॉनिक टिकियों की अनोखी शक्ति से आपके शरीर और दिमाग़ को लगातार नयी ताक़त मिलती है।
ओकासा की टिकियों पर चांदी चढ़ी रहती है।

ओकासा

टॉनिक टिकियाँ
पुरुषों के लिए चांदी वाली
हार्मो-फ़ार्मा लिमिटेड लंदन-बर्लिन का उत्पादन
सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहां मिलता है।
OKASA CO. PVT. LTD., 12A Gunbow Street, P. B. No. 396, Bombay-400001

भस्सी, वाराणसी।

बवासीर

की पीड़ा
और जलन से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिए

हडेन्सा

मरहम
इस्तेमाल कीजिए!

OBM: 2670 HIN

सफेद बाल क्यों?

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक केश पलीतारी (सुगंधित) तेल से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तेल दिमाग और आंखों की कमजोरी के लिए लाभप्रद है। हजारों मनुष्यों ने व्यवहार किया और लाभ उठाया है। प्रति शीशी १० रु.

मुफ्त! मुफ्त!! मुफ्त!!!

सफेद दाग

श्वेतरी में करीब ३१ वर्षों से श्वेत दाग के रोगियों को पूर्ण लाभ पहुंचाकर संसार में ख्याति प्राप्त किया है। आप भी लगाने की दवा एक पैकेट मुफ्त मंगाकर पूर्ण लाभ प्राप्त करें। दाग का विवरण सहित पत्र लिखें।

पत्ता—मृत्युन्जय सुधा औषधालय,
(न) पो. कतरी सराय (गया)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्वालियर रेयॉन

निर्मित स्टेपल फ़ाइबर से ७ करोड़ लोगों के लिये एक साल के कपड़े का निर्माण

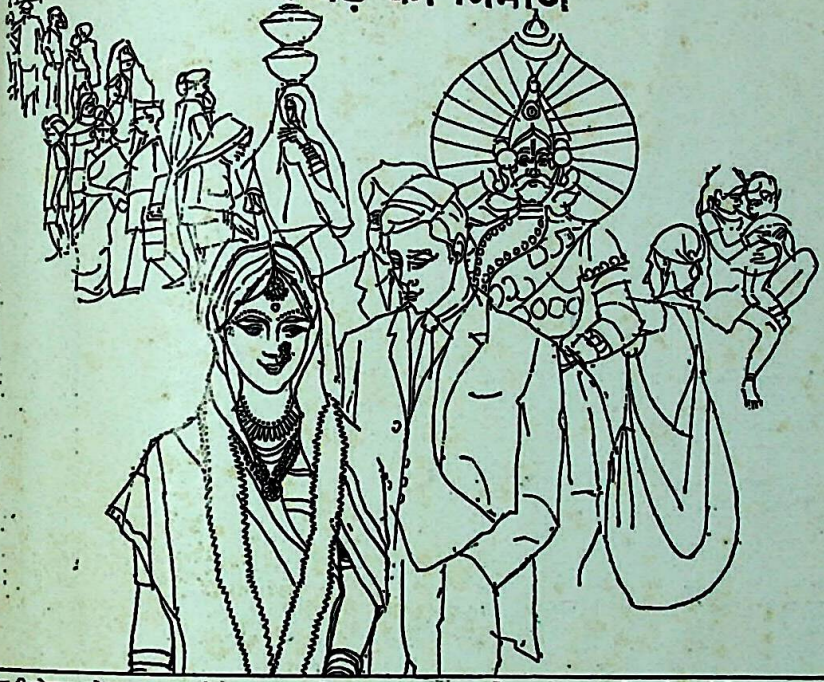

एक किलोग्राम स्टेपल फ़ाइबर से लगभग १५ मीटर कपड़ा तैयार होता है। इतना कपड़ा एक व्यक्ति की एक साल की ज़रूरत को पूरा करता है। ग्वालियर रेयॉन हर साल ७ करोड़ किलोग्राम स्टेपल फ़ाइबर का निर्माण करता है यानी ७ करोड़ लोगों की एक साल की कपड़े की आवश्यकता को पूरा करता है। लेकिन ग्वालियर रेयॉन का योगदान सिर्फ धागे के निर्माण के क्षेत्र में ही नहीं है। वह अनाज पैदा करने के लिये ज्यादा ज़मीन का बन्दोबस्त भी करता है, क्योंकि जो उपजाऊ ज़मीन कपास पैदा करने के काम में लायी जाती है, उस पर अनाज पैदा किया जा सकता है। इसके अलावा ग्वालियर रेयॉन के लिये विदेशी यंत्र-सामुग्री और कच्चे माल की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। ज़रूरत की हर चीज़ वह अपने देश में ही प्राप्त करता है। अपने रेयॉन ग्रेड पल्प का निर्माण भी ग्वालियर रेयॉन खुद करता है और उसका इंजीनियरिंग विभाग ज़रूरत की बारीक से बारीक यंत्र-सामुग्री भी खुद ही बनाता है।

ग्वालियर रेयॉन द्वारा राष्ट्रीय सम्पत्ति का निर्माण

GR
GRASIM

दि ग्वालियर रेयॉन सिल्क मैन्यूफैक्चरिंग (वीविंग) कंपनी लि.

नागदा...मावूर...ग्वालियर

Sobhagya GR-51 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मई (१-५-१९७४) मूल्य रु. २-००

Regd No. BYW 3

प्रोपॅक

साल्टीज

आपके स्वास्थ्य के लिए
आवश्यक शक्तिदायक बिस्किट

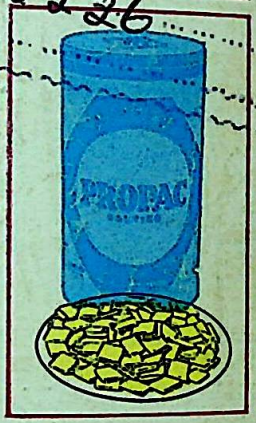

प्रोपॅक : वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया
३-गुना शक्तिदायक बिस्किट

★ दूध व ग्लुकोज— त्वरित शक्ति
★ सोया व मूंगफली—
रगपुट्ठों की मजबूती के लिए प्रोटीन
★ विटामिन, लोह व कैल्शियम—
स्वस्थ रक्त और मजबूत हड्डियों के लिए

प्रोपॅक

साल्टीज

स्वास्थ्य के लिए आवश्यक
प्रोटीन से भरपूर

यूनिकेम का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक ..... 1436 .....
दिनांक .....

मुमुक्षु भवन वेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थालय
आगत क्रमांक ... 202 ...
दिनांक .....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri